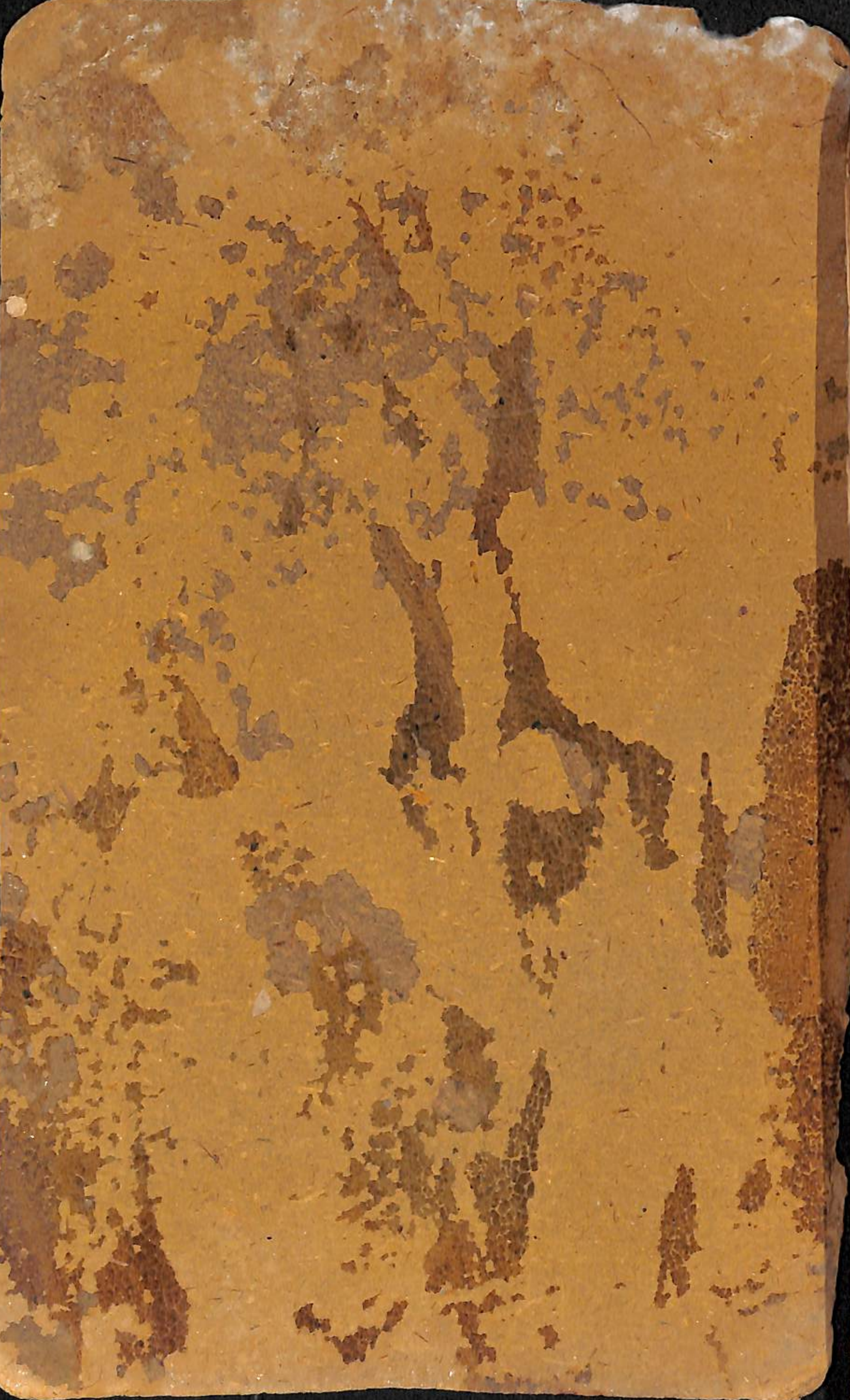




२१ चि॰। कुछ काल मार्ग में बिताकर रामलक्ष्मण सहित विश्वामित्र को निज आश्रम में पहुँचकर यज्ञ का अनुष्ठान करने के अर्थ शिष्यों से सामान उपस्थित कराना व यज्ञारम्भ होना जान दोनों भाइयों को धनुषबाण ले यज्ञकुल रक्षार्थ खड़ा होना और निशिचर समूह ले यज्ञ विध्वंस सहित मारीच और सुबाहु का आगमन और रामचन्द्र करि मारीच को बिनफर बाण मारना और निशिचरों का नाश व सुबाहु को अग्निबाण मारना व मारीच सुबाहु को बाण बेग से उड़कर सिंधु पार गिरना और निर्विघ्न मुनि यज्ञ पूर्ण होना व मुनि करि रामचन्द्र को सम्पूर्ण अस्त्र देना वर्णन है॥



नं॰ २२ सगरपुत्र भस्म ॥

२२ चि॰। कुछ काल श्रीरामलक्ष्मण दोनों भाई विश्वामित्र जी के आश्रम पर निवासकर मुनियों को आनन्द देते रहे-और वेदपुराण आदि की कथा वार्त्ता श्रवण करते रहे किञ्चित् समय व्यतीत भे पश्चात् मिथिलापुर में धनुष यज्ञारम्भ जान सहित राम लक्ष्मण विश्वामित्र जी वहाँ को गमन करते हुए मार्ग में जाते हुये अहल्याश्रम देख रामने प्रश्न किया तब विश्वामित्र ने समाधान किया-कि यह स्त्री जो शिलारूप हो गई है वह गौतम ऋषि की पत्नी है यह गौतम ऋषि वहाँ एक थे किसी समय में इन्द्र ने गौतम का रूप धर आकर छल सों इस से भोग किया और गौतमऋषि को विदित हुवा तब इन्द्र को शाप दिया कि तेरे शरीर में सहस्र भग हो जावें और अहल्या को शाप दिया कि तू उपल हो जा - यह शाप सुन रामचन्द्र करि अहल्या शापोद्धार - अगाड़ी चलकर रामचन्द्र ने श्री गंगा जी को देख मुनि सों उत्पत्ति पूँछी और मुनि ने समाधान किया -कि तब कुल का राजा सगर उनके सुमति केशिनी दो स्त्री पुत्र करि विहीन रहे तब वन को सहित स्त्रियों कें तपस्या करने चले गये वहाँ भृगुमुनि ने प्रसन्न होकर दान दिया - अवध में आ केशिनी से असमंजस पुत्र हुआ और सुमति से एक तुंबरि में ६०००० साठि हजार पुत्र उत्पन्न हुये उस में असमंजस बड़ा दुष्ट हुआ उसको राजा ने देश त्याग कर दिया उसके अंशुमान पुत्र बड़ा शीलवान हरिभक्त हुआ राजा सगर ने यज्ञ करने का इरादा कर अश्व छोड़ा उसे इन्द्र चुराकर पाताल में जहाँ कपिलदेव मुनि तपस्या करते थे बाँधि आये रक्षकों ने आ राजा से कहा राजा ने अश्व खोजने के लिये पुत्रों को आज्ञा दी तब वे पृथ्वी तल खोजि हारे पुनः महि खोदना शुरूअ किया चारों दिशा खोदि वहाँ गये जहाँ कपिल जी तपस्या करते थे और पीछे अश्व बँधा था - इन्हों ने दुष्ट बचन कहे कपिलदेव जी ने नेत्र उघारि दृष्टि से शाप दिया भस्म हो गये - यह वर्णन है ८५ म॰ त॰ ॥



२३ चि॰। जब पुत्रों सहित अश्व को खोजन लगा तब राजा ने अंशुमान को आज्ञा दी अंशुमान खोजने के अर्थ इधर उधर पूँछते चला मार्ग में चारों दिग्गजों के दर्शन कर पश्चात् गरुड़ से मुलाक़ात हुई उन्होंने सब चरित्र बताया - तब अंशुमान वहीं स्नान कर उनको तिलांजलि देता भया पुनः गरुड़ ने उपदेश किया कि हे पुत्र यह उपाय करो कि जिसमें पृथ्वी तल में गंगा आवें तब इन की मोक्ष हो - तब सहित गरुड़ मुनि समीप आ प्रणाम कर वृत्तान्त कह अश्व ले सगर के समीप प्राप्त हुआ और सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा राजा ने यज्ञ पूर्ण की और पुनः अंशुमान को राज्य दे तपस्या को चले गये कुछ काल राज्य कर अंशुमान भी अपने पुत्र दिलीप को राज्य दे वन को चला गया - दिलीप के भगीरथ पुत्र हुआ बहुत काल दिलीप राज्य कर भगीरथ को राज्य दे आप भी तपस्यार्थ बन को गये - और मन में अनुमान किया कि कदापि गंगाजी पृथ्वी तल में आवैंगी तो वहीं प्राण दे दूंगा - बहुत काल तपस्या करते २ प्राण त्याग कर दिये - पुनः भगीरथ भी अपने पुत्र काकुत्स्थ को राज्य दे गंगा लाने के अर्थ तपस्या को गये। एक हज़ार वर्ष एक पैर ऊर्द्ध बाहु रहे तब उग्र तपस्या देख ब्रह्मा ने आन कर कहा वर माँगो तब दो बरदान माँगे एक तो संतान की वृद्धि हो और दूसरे गंगा पृथ्वी तल में आवें ब्रह्मा ने कहा यह महादेव के किये होगा तब शिव की तपस्या बहुत काल तक भगीरथ ने की - शिव ने दर्शन दिया और कहा वरदान माँगो वही वरदान शिव से भी माँगा शिव ने कहा गंगा का आना सहज है परन्तु वेग सँभारना कठिन काम है तब भगीरथ ने स्तुति की ब्रह्मा ने छोड़ दिया त्रैलोक्य में शोर घोर हुआ सुरसरी आके शिव जटा में एक वर्ष रहीं पुनः भगीरथ ने शिव स्तुति की तब शिव ने जटा से एक बुन्द छोड़ दिया उस से त्रय धारा हुईं एक आकाश में गई उसका मन्दाकिनी नाम हुआ दूसरी पताल में गई उसका प्रभावती नाम हुआ तीसरी जो पृथ्वी तल में आईं उन्हें गंगा नाम धरा गया तब भगीरथ सुन्दर रथ पर चढ़ा कर ले चले वही हरद्वार प्रयाग काशी हो सिन्धु में मिलि गईं - पुनः सगर सुत सह परिवार तर जाते हुये - और भगीरथ का यश जग विख्यात हुआ और गंगा का भागीरथी यह नाम हुवा - ६८ सफ़ा तसवीर -



२४ चि०। गंगा उत्पत्ति कथा कह पुनः विश्वामित्र सहित दोनों भाई कुछ समय मार्ग में व्यतीत कर मिथिलापुर सन्निकट पहुँचे - और पुरी की निकाई अवलोकन कर बड़े प्रसन्न हुये और सुन्दर दिव्य बाग विलोकि वहीं विश्राम किया - मुनि आगमन के समाचार पा जनक जी सहित सभासदों व ब्राह्मणों के आनकर मिलते हुये और राम लक्ष्मण को देख आनंद सिन्धु में मग्न हो गये पुनः पूछा किये किसके लड़के हैं तब मुनि ने बतलाया किये अयोध्याधिप दशरथ के पुत्र हैं पुनः जनक जी नगर में लाकर मुनि को सुन्दर रमणीक जगह बास दे गृह गये पुनः मुनि आज्ञा ले दोनों भाई जनक नगर देखने के लिये गये नगरान्तर जा निज रूप छबि दिखा सब के लोचन तृप्त किये और सम्पूर्ण नगर बजार चौहट और धनुष मख शाला आदि पुरबालकों के साथ अवलोकन कर मुनि के पास लौटि आये और रात्रि जानि संध्यावंदनादि कर मुनि सेवा कर आयसु पा विश्राम किया प्रातः काल उठ मुनि आज्ञा ले जनक वाटिका में पुष्प लेने को गये - और उसी समय सखिन सहित गिरिजा पूजनार्थ जानकी आगमन और परस्पर एक २ के रूप की छबि निरखि अलौकिक प्रीति उत्पन्न होना और राम वरार्थ जानकी को गिरिजा से वरदान माँगना वर्णन है २८६

चित्र संख्या २५ सम्बन्ध पृष्ठ ११८



२५ चि० । जानकी रूप छबि सिंधु में मग्न राम सह लक्ष्मण पुष्प ले मुनिसमीप आन पु-
ष्प दिये मुनिने पूजा की पश्चात् कथा वार्ता कहते दिन व्यतीत किया सायंकाल की
कृत्य कर रैनि को विश्राम से बिगत किया प्रातः काल सतानन्द के आगमन से स-
हित मुनिवृन्द रामचन्द्र स्वयम्बर में गये जहाँ कि अनेक राज समाज प्राप्त थी-दोनों
भाइयों को मुनिसहित सहादर दिव्य आसन पर बैठाया - जिसके जैसी भावना थी
उसने वैसा राम को देखा पश्चात् साधु राजा और दुष्ट राजाओं का सम्वाद और स्व-
यम्बर में जानक्यागमन बन्दीजनों करि जनक प्रण कथन उसे श्रवण कर
सहस्त्रशः रावण बाणादि भूपतियों का गर्व गह धनुष उठाना और न उठना
तब जनक ने निन्दित बचन कह शूरबीरों का अपमान किया - पश्चात निंद्य
बचन सुन लक्ष्मण उर कोपाङ्कुर जमना और रामचन्द्र कृत निवारण पुनः
मुनिनिदेश सों रामचन्द्र का धनु समीप आगमन और राम को कोमल गात बि-
लोकि स्त्रियों हृदय वैकल्यता होना और लषण करि दिग्गजादिकों को सजग
करना और जानकी दुखित लखि रामचन्द्र करि धनुष भंग करना और देवताओं
करि आकाश से पुष्प वृष्टि होना वर्णन है ॥ ११८ स० तक ॥

चित्र संख्या ९६ सम्बन्ध पृष्ठ २२७



नं.९६ धनुषसंधान ॥

९६ चि० । जब रामचन्द्र ने धनु विदीर्ण किया तब सबको आनंद हुवा और हर्ष सह जानकी ने जयमाल पहिनाया और ब्राह्मणों ने मंगलार्थ वेदध्वनि किया पश्चात् धनुभंगशब्द सुन भृगुपत्यागमन और हरेक राजा को आनकर भययुत प्रणाम करना राम लषण सह विश्वामित्र भी मिले पुनः धनु के युग खण्ड देखि कोपकर पूँछा कि जनक यह धनुष किसने तोड़ा और तत्क्षण कोपाग्नि में प्रचण्ड हो कुठार सँभारना और लक्ष्मण से बिबिध भाँति वीररसांतर्गत वाद बिवाद होना - और असह्य वार्त्ता सुन और भी विशेष कोप में प्रचंड होना पुनः राम प्रभाव देखि निज करका धनु चढ़ाने को दिया उसे राम ने सहजही में चढ़ा दिया - तब ध्यान करि रामावतार जानि स्तुति करि तपस्यार्थ बन जाना वर्णन है - २२७ सफ़ा तक ॥



१७ चि० । परशुराम गमन पश्चात् सहजानकी विदेह रानी आदि

व पुरवासियों को हर्षोत्साह होना - विश्वामित्र की आ-
ज्ञा से जनक ने वृद्ध सज्जनादि सम्मत ले श्री अयोध्याधिप
दशरथ निकट दूत भेजा - और अत्युत्तम नगर रचना कराई-पुन
दूत ने जाके राजा दशरथ कोराम लक्ष्मण जी की पत्रिकादई
और सिया स्वयम्बर रंग और धनुभंग भूपों की जंग और भृगु-
पति गर्वमथनादि सब राजा से कहा - तब राजा ने रामचन्द्र के हाथ
की पाती पा और सुत सुकृत सुयश सुन बड़ा ही आनन्द किया.
और भरत व शत्रुघ्न दोनों भाइयों को बुला राम लक्ष्मण की पत्रि-
का दई वह पत्र विलोकि परमानन्द हुये और रनिवास तक खबर
होगई माताओं ने बड़ा ही उत्सव किया - और अवध में मंगल-
उछाह होने लगा राजा ने अपने सुहृदों को पत्रिका भेज २ बरात
के अर्थ निमंत्रण दिया और अनेकन शिविका सुखपाल
ध्वजा, पताका, चवर, गज, बाजि, स्यन्दन, ऊँट, बेसर, वृषभादि
सुवर्णालंकारों से सज सज सहित कुल गुरु बशिष्ठ के सम्पू-
र्ण राज समाज साज सों रामचन्द्र के ब्याहने हेतु दिव्य वा-
हनों पर चढ़ि चढ़ि और अनेक बाद्य बजाते जनकपुर को
बरात चलना वर्णन है ॥

१३२ सफ़े तक ॥



चित्र. १८ सं. पृ. २४४



नं. १८ रामसीता व्याह लीला

१८-चि० । अवधपुर से राम व्याह हित बरात जाती देख सुन्दर देव बिमानों सम-
जहूसरी बरात इन्द्र लेकर नभ पन्थ सों चले - कुछ समय मार्ग में व्यतीत कर बरात
जनक नगर में पहुँची जनक ने अमित विधान सों अगवानी व द्वाराचार कर राज
भवन में जनवास दिया - समयानुकूल देवता पुष्प वृष्टि करते थे - और इन्द्राणी
शारदा पार्वती लक्ष्म्यादि कपट से स्त्री बेष कर रामव्याहावलोकनार्थ जनक भवन
में आईं - उस मणि मय मण्डप के नीचे सम्पूर्ण राज समाज भी बिराजी - और प्र-
थम जनक ने वशिष्ठ बिश्वामित्र बामदेवादि ऋषियों सहित दशरथ का पूजन किया
उसी समय रामव्याहावलोकनार्थ ब्रह्मा बिष्णु महेश सूर्य्य चन्द्र दिगपालादि कपट
बेष कर प्राप्त हुये - लग्न समय जान पुरोहित राम जानकी को मण्डप में लाये -
और प्रथम गौरी गणेश को स्थापन कर पूजन कराया और लोक वेद कृत्य करा-
कर जनक ने जानकी को राम से पाणिग्रहण कराया और सप्तभाँवरी हुईं पश्चात् ज-
नक के भाई कुशकेतु की दो कन्या माण्डवी व श्रुतिकीर्त्ति का व्याह किया अर्थात् मांडवी
से भरत जी का व्याह हुवा व उर्मिला से लक्ष्मण जी का यह जानकी की लघु भगिनी थी व
श्रुतिकीर्त्तिका शत्रुघ्न से हुवा - जनक ने अपरिमित कन्यादान दिया - पुनः संपूर्ण व्याह
रीति कर और सहादर दशरथ समाज को कुछ दिन जनकपुर में निवास कराके सहित सन्मान
के विदा करना यह वर्णन है - १६० बालकाण्ड समाप्त ॥

चित्र सं· २९ सं· पृ· २७०



२९-चि० । जनकपुर से बिदा हो श्रीदशरथ महाराज का राज समाज सह अवधपुर आकर संपूर्ण लोक वेदविधि मंगलोत्सव करना-और दिन प्रति नया उछाह होना-पश्चात अपना चतुर्थपन जानि श्रीदशरथ गुरु मंत्रियों का सम्मत ले रामचंद्र को युवराज देने को सामान किया-और उसी समय देवतों को सरस्वती की प्रेरणा करि मंथरा की मति फेरना कि कोई ऐसा वितर्क हो जिस से रामचन्द्र वन को जायँ नहीं तो असुरों का नाश कैसे होगा यह अन्य जगह का संवाद दर्शाते हैं-कि जब रामचन्द्र को व्याहि कर दशरथ जी गृह आये तब कैकेयी ने रामचन्द्र जानकी को निज राजभवन में रक्खा और बड़ी प्रीति करती थी उसी समय संपूर्ण देवताओं ने यह आनकर कहा कि हम जानकी के हाथ का बनाया हुवा भोजन करेंगे कैकेयी को खबर हुई उत्तर दिया कि यह असम्भवित है जो जानकी सूर्य्य किरण से विह्वल होती है वह जानकी अग्नि सन्मुख बैठकर भोजन कैसे बनावेगी देवताओं ने यह सुन शाप दिया कि जिस मुख से तूने यह स्नेह सनी वार्त्ता कही उसी मुख से कहै कि रामजानकी वन जायँ - पुनः मंथरा के प्रबोध से भरत राज प्रति कैकेयी का कोप भवन में जाना-और दशरथ कृत शिक्षापन देना वर्णन है ॥

२७० सफ़े तक ॥



२०-चि॰। कोपभवन में दशरथ का आगमन और कैकेयी को पूर्व स्थापित द्वै वरदान माँगना
और राजा को देना - यह वरदान - एक समय देवासुर संग्राम में दशरथजी युद्ध करने को गये
थे और साथही कैकेयी भी थी - संग्राम करते समय रथकी धुर टूट गई तब कैकेयीने अपना
पैर आरोपण कर स्यन्दन को साधा तब दशरथ ने कहा वर मांगो कैकेयी ने कहा अवसर
पर माँगोंगी - वही वरदान माँगे कि एक तो तपस्वी वेष हो रामचन्द्र जी चौदह वर्ष
वनवास करैं और दूसर भरत को राज्य तिलक देव यह सुनि दशरथ का बिकल हो-
मूर्च्छित होना और सम्पूर्ण हाल सुन हर्ष सहित रामचन्द्र को वन गमन जाने के लिये
पिता समीप जा आज्ञा माँगना पिता को सुत स्नेह में बिकल हो बिह्वल होना पश्चात
माता से आज्ञा लेना और राम वन गमनार्थ वार्त्ता सुन पुरवासियों का शोक समुद्र
में डूबना - राजाज्ञा से और सुमन्त मंत्री को रथ तय्यार करके लाना कैकेयी को
सुहृदगणः धिक्कार देना - पुनः सहर्ष मात आयसु ले लक्ष्मण का रामचन्द्र के संग-
जाने को तय्यार होना और सम्पूर्ण दासी दास पुरजन परिजन व मातादिकों धीर्य
दे आशिष देना और ब्राह्मण गुरु कुल इष्ट आदिकों के चरण मनाकर गणपति
गौरि शिव ध्यान करि श्री वशिष्ठ जी से विदा हो लक्ष्मण जानकी सहित रामचन्द्र-
को दिव्य रथ पर चढ़ वन गमन करना वर्णन है - ९८१ स॰ त॰ ॥

चित्रसं॰ २१ सं॰ पृ॰ १९९



नं॰ २१ राम केवट वार्त्तालाप ॥

२१-चि॰ । अवध को माथ[illegible]ना रामचन्द्र का चलना और सम्पूर्ण पशुपक्षी पुरजन परिजनों का विकल होना और रामरथ के पीछे २ चलना और प्रथम निवास तमसा नदी के तीर करना और रात्रि को अचानक उठ पुरवासियों से विलग हो चलना और पुरवासियों को जागकर विकल हो अवध लौटि आना पुनः रामचन्द्र को शृंगबेरपुर पहुँचना और गंगाजी को विलोकि प्रणाम करना और रामागमन की सुधि पाकर सकुटुम्ब फल मूल भेट ले गुह नाम निषाद को आकर राम से मिलना और रामचन्द्र करि कुशल प्रश्न पूँछि आशिष देना। पुनः रामचन्द्र को पुर ले जाने के लिये बिबिध भाँति बिनय करना और रामचन्द्र करि उपदेश- और शिंशिपा वृक्ष के नीचे विश्राम करना और निषाद को सर्व विधि सेवकाई करना और राम लक्ष्मण जानकी को निरखि पुरवासियों को बिलाप। पुनः प्रातःकाल राम लक्ष्मण को उठ स्नान कर शौच सहित बटक्षीर मँगाकर जटा बनाना तब सुमन्त को विकल हो लौटाने के लिये राम से विनय करना और राम करि उपदेश दे विदा करना- और गंगा पार उतरने के लिये निषाद से कहना- तब राम लक्ष्मण जानकी के चरण धोय चरणामृत ले नौका पर चढ़ा कर गंगा पार उतरना वर्णन है - १९८ सफ़े तक ॥

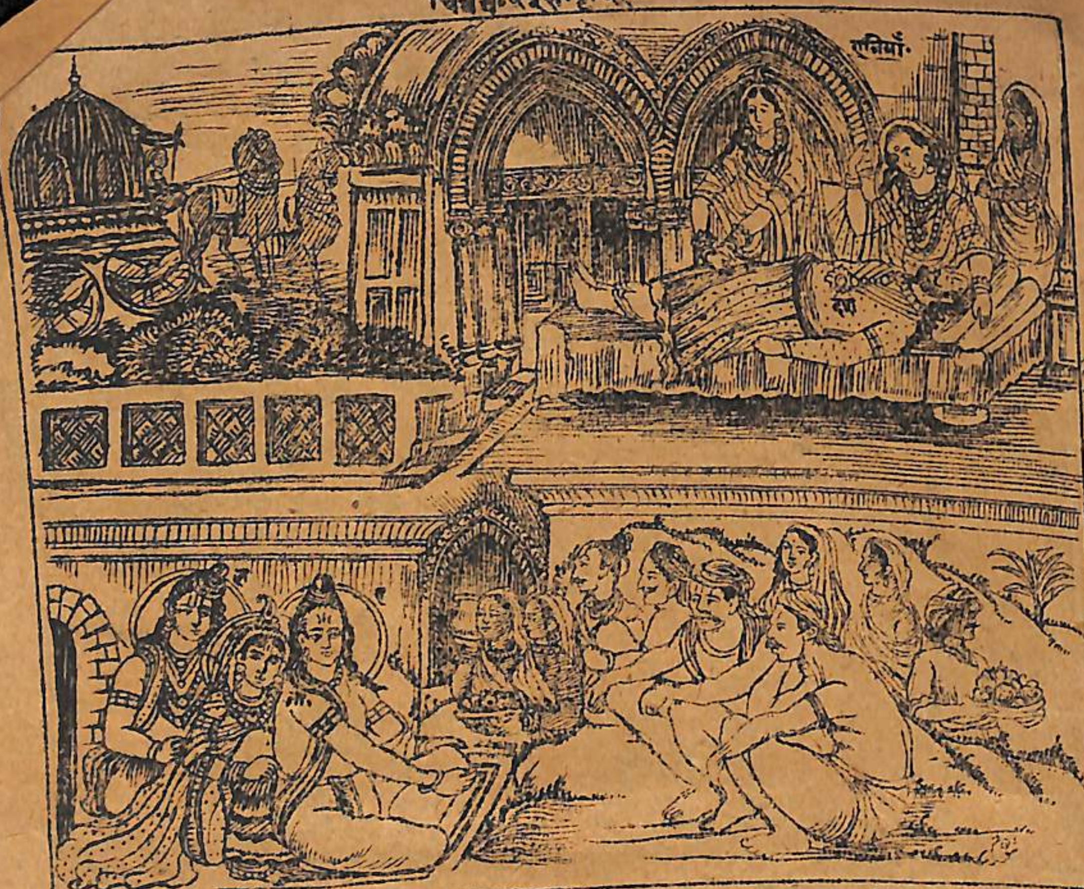
चित्र सं॰ २२ सं॰ पृ॰ २०७



२२-चि॰। गंगा पार उतरकर रामचन्द्र करि निषाद को निज पद भक्ति दे विदा करना और जानकी जी की पूजा करना और सहित लषण जानकी रामचन्द्र को तीर्थराज दृष्टिगोचर करि अक्षयवट तर विश्राम करना और त्रिवेणी स्नान करि भरद्वाज जीसे मिलना और भरद्वाज करि रामचंद्र का सत्कार करना पुनः विदा हो मुनि शिष्यों सहित अनेक ग्राम मार्ग में अवलोकन करते हुये और ग्राम्यजनों को शरद चन्द्रानन दिखा कृतार्थ करते हुये शायंकाल समय वटवृक्ष तर आश्रम करना और मुनि शिष्यों को विदा कर प्रभातकाल श्री वाल्मीकि जी के आश्रम में पहुँचना और महादर मुनि से मिल विश्राम करना और मुनि करि श्री रामचन्द्र लषण जानकी का अतिथि सत्कार करना वर्णन है -

२०८ सफ़े तक ॥

चित्र सं०-२३ सं०-पृ०-२१९



नं. २३ दशरथ स्वर्गगमन ॥

२३ चि०। वाल्मीकि आश्रम में कुछ काल रह मुनि से अनेक तरह की शिक्षा लेना और रहने के लिये मुनि से आश्रम पूँछना और मुनि को बताना तब मुनि से बिदा हो परम-रम्य चित्र कूटाश्रम में आ सुन्दर पर्णकुटी निर्मित करि राम लषण जानकी को वि-श्राम करना - और देवनाग किन्नर दिग्पालादिकों का चित्रकूट में आनकर राम-लषण जानकी के दर्शन करना पुनः सुधि पाकर भेटलै लेकर कोल भिल्लों का आगमन रामचन्द्र से सन्मान पा पाकर बिदा होना पुनः अति बिह्वल दशा से सुमन्त का अवध को लौटना और सूर्य्यास्त समय अवधपुर भीतर आना और खबर पाकर राम बिरह व्यथित पुरवासियों का दशरथ द्वार आ आकर खाली रथ निरखि बिलाप करना और पुरजन परिजन मातादिकों को आरत हो २ राम-चन्द्र का हाल सुमन्त से पूँछ २ कर अधिक बिलाप करना पुनः सुमन्त को दशरथ समीप जाना और दशरथ को राम राम हा राम इत्यादि शब्दों से उच्चारण करि बिकल होके पूछना और सुमन्त को सम्पूर्ण हाल कहना सो श्रवण कर राम बिर-ह में बिकल हो राजा दशरथ को प्राणत्याग कर स्वर्ग जाना वर्णन है-२१८ स.नं.॥

चित्रसं॰ २४ सं॰ पृ॰ २३८



२४-चि० । श्रीदशरथ का प्राणान्त होने पश्चात् तेल की नौका में शरीर धरना और भरत
के निकट दूतों को जाकर संपूर्ण खबर करना तब गुरु आज्ञा सुन बहुत शीघ्र भरत-
शत्रुघ्न को वहाँ से चलकर अवध में आना और मार्ग में अनेकाशुभ होना और अवध-
पुर भयार्त देख सन्देहित होना - भरतागमन सुनि द्वार पर आके कैकेयी को मिलना
और सम्पूर्ण हाल कहना सो श्रवण कर दोनों भाइयों को विह्वल होना और कै-
केयी को धिक्कार देना - पुनः शत्रुघ्न को मथरा के चरण प्रहार करना - पुनः कौश-
ल्या निकट जा शपथ करना - और वामदेव वशिष्ठादि मुनि व पुरवासियों का आना
और सरयू निकट जा महाराज दशरथ का किया कर्म करना - पुनः राज्य हित वशि-
ष्ठ कृत भरत को उपदेश और भरत कोन मान रामदर्शन हित चलने के लिये आ-
यसु माँगि सहित माता व पुरजन परिजन गुरु आदि संग ले प्रस्थान करना
और प्रथम दिन तमसा निकट विश्राम कर दूसरे दिन गोमती तट विश्राम होना
पुनः शृंगबेरपुर जा निषाद सों मिलना और रात्रि को विश्राम कर प्रभात उठ
गंगा स्नान कर चलकर प्रयाग में पहुँचना और सहित समाज स्नान कर भरद्वाजाश्र-
म को आ भरद्वाज से मिल अतिथि भाव स्वीकार करना वर्णन है - २३८ सफ़े तक ॥



नं.२५ क. चित्रकूट में भरत मिलाप

२५ चि॰। भरद्वाज से उपदेश पा और तीर्थराज में स्नान कर मुनि से आयसु ले भरत
सहित निषादराज को विदा होना और जिस मार्ग से रामचन्द्र गये थे उसी मार्ग से
चलना और जिस जगह रामचन्द्र ने विश्राम किया था उसी जगह विश्राम स-
सनेह ग्रसित करना पुनः यमुना जी के निकट जा विश्राम करना और प्रभात काल सहित
समाज उतरकर स्नान कर चलना और ख़बर पा पा कर मार्ग निकट ग्रामबासियों को-
भरत जी के दर्शनार्थ आ आकर लोचन तृप्त करना और वहाँ श्री लक्ष्मण को कुस्वप्न-
होना - और रामचन्द्र से सम्पूर्ण हाल कहना पुनः उत्तर दिशा से धूरि उठी हुई देख सं-
देहित होना उसी समय कोल्ह किरातों को जा भरतागमन की ख़बर राम-
चन्द्र से करना - और लक्ष्मण को कोप करना पुनः रामचन्द्र को समाधान।-
करना - और आकाश वाणी का होना - उसी समय चित्रकूटाश्रम समीप आ।-
भरत को पायँ प्यादे उतर चलकर रामचन्द्र के दर्शन कर दण्डाकार विह्वल हो
पृथ्वी तल में गिर पड़ना और रामचन्द्र भरत को उठाय कण्ठ लगाकर मिलना
वर्णन है -

२५१ स॰ तक ॥



२६ चि०। भरत से मिल रामचन्द्र लक्ष्मण जानकी गुरू आगमन जानि बहुत शीघ्र मि-
ल चरण पखारि पुनः पुर परिजन माताओं से मिलना और सबको विश्राम लेना पुनः पितामह
कृत्य सुनि शुद्ध स्नान करना-पुनः सर्व समाज मंत्र शोधि भरत को रामचंद्र से अवधपुर लौटने
के लिये बिनय करना उसी समय जनक के प्रेरित दूतों को चित्रकूट आकर संपूर्ण चरित्र लखि
पुनः लौटजाना सो सब हाल श्रवण कर जनक का चित्रकूट आगमन और गुरू बशिष्ठ
सहित चारि भाइयों को मिलना और देवताओं को सरस्वती की प्रार्थना पुनः सरस्वती
को आकर भरत की मति फेरना पुनः ऋषिमुनि करि भरत उपदेश पुनः रामचन्द्र
करि चरण पादुका दे भरत को सहित समाज गुरू व माता व पुरजन परिजन
मिथिलापति आदि को सन्मानि बिदा करना पुनः अवध में आय भरत को ता-
पसवेष कर सिंहासन पर रामचन्द्र की चरण पादुका स्थापित कर नन्दिग्राम
में बास करना पुनः चित्रकूट में बायस वेष धरि जयंत को आना और सीता चरण चोंच मारि
भागना और रामचन्द्र करि सींक धनुष बाण संधान एक नेत्रहीन करना वर्णन है-

२८४ सफ़ेनक ॥

चित्र सं॰ २७ सं॰ पृ॰ २८७



२७ चि०। इसीप्रकार बहुत काल तक श्री रामचन्द्र मय श्री लक्ष्मण वप-
रमशक्ति जानकी के वशिष्ठ से बताये हुये परम पावन रमणीक चित्रकूटा-
श्रम पर विश्राम करते रहे और आरण्यचारी खग मृग जीव जन्तु व मुनिजनों को
सर्वप्रकार कारुणीक कल्याणदायक सुख देते रहे और कर कमल में तीव्र
संधानित धनुषबाण से निज भक्तों के विद्रोहियों राक्षसों को मार मार-
कर निज धाम को पठाते रहे पश्चात् कुछ चित्त में यह अनुमान कि-
या कि अब यह मेरा आश्रम प्रसिद्ध हो गया इतस्ततः सब को विख्यात
हो गया मनुष्यों का आगमन बहुत रहैगा यह विचार मय भ्राता
व प्रियेजानकी सह पयान कर बनशोभा देखते हुये अत्रि जी के आश्रम में
प्राप्त होकर मुनि से अतिथिभाव स्वीकार किया और मुनिपत्नी अनुसूया
से श्री जानकी जी को लौकिक वैदिक स्त्रियों के धर्म्म का ज्ञान पाना वर्णि-
नहै - २८७ सफ़े तक ॥



२८ चि॰ । कुछ काल अत्रि आश्रम में बासकर मुनि से बिदाहो अन्यमुनिगणों के आश्रम में प्राप्त हो दर्शन देना और बिदाहो हो अगाड़ी चलना मार्ग में चलते समय बिराध से जानकी का हरना पुनः रामचन्द्र कर देह नाश हो बैकुण्ठधाम जाना और रामचन्द्र को आगे चलकर शरभंग मुनि के आश्रम में आना और मुनि को सहादर मिलना पुनः शरभंग को निज धाम दे सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में आना और मुनि से अतिथि भाव स्वीकार करना पुनः वहाँ से बिदा हो अगस्त्याश्रम में आबिश्राम करना और निवास करने के लिये अगस्त्य से आश्रम ढूंढ़ना और अगस्त्य को बतलाना पुनः मुनि से बिदा हो पंचवटी में आवास करना - तब सूर्पणखा को आनकर अनेक तरह के मायिक चरित्र देखलाना पुनः लक्ष्मण करि नाक कान बिदीर्ण करना वर्णन है -
२९८ सफ़े तक ॥



२९ चि०। नाक कान बिहीन सूर्पणखा को खरदूषण के पास आना और सम्पूर्ण हाल कहना - पुनः अनेक सेना दानवों की ले खरदूषण को रामचन्द्र से लड़ने के लिये आना और दूतों को भेज रामचन्द्र को सजग करना पुनः रामचन्द्र को लड़ने के लिये संग्रामभूमि में उपस्थित होना रामचन्द्र करि संग्राम में दानवों का नाश होना वर्णन है -





३० चि०। संग्रामभूमि में रामचंद्रसे विनशे हुये खरदूषण
आदि का कौतुक श्रवणकर सूर्पणखा परमव्याकुलतावश
होती हुई और यह जानती हुई कि ये कोई ईश्वरांश हैं भूमिभार उतारि
बे हेतु और धर्मियों की रक्षा व दुष्टों के नाश करिबे के लिये अवतार
धर वन में विचरने हेतु आये हैं यह जान भय ग्रहीत।
आनकर लंका में प्राप्त हुई और रावण के दरबार में
जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त निज नासिका और कर्णच्छेदन
का हाल व खरदूषणादि के नाश होने का हाल कह-
ना वर्णन है - २०३ सफ़े तक ॥



नं. ३१ जानकी हरण

३१ चि०। सूर्पणखा से सम्पूर्ण हाल श्रवण कर खरदूषणादि के बध की शोच समझ रावण हृदय में संदेहित होता भया और यह मन में अनुमान किया कि अब मैं जाकर तिनको देखूं जो तो कोई राजकुमार होंगे तोतो जीत कर नारी ले आऊंगा - और जो कदापि ईश्वर होंगे तो उन्हीं से विरोधकर अपनी मुक्ति का उपाय करूंगा यह विचार कर चारिखरों का रथ जोतकर चलना और मारीचाश्रम में आना और संपूर्ण हाल विदित करना - और रामाज्ञा से जानकी को अग्नि में वासकरना और मारीचकृत रावणोपदेश और रामचन्द्र का ईश्वरत्व कहना - पुनः कोपित हो मारीच से रावण को क्रोध करना पुनः राम हाथ बध मुक्ति जानि दशानन संग मारीच को चल रामाश्रम निकट आना और कपटमृग हो आगे को निकलना तब जानकी के बचनों को मान धनु बाण ले मृग बध हेतु रामचन्द्र को चलना और दूर जाकर मृग का बध करना तब लक्ष्मण राम का नाम ले मारीच की देह त्याग बैकुण्ठ जाना और लक्ष्मणनाम की आवाज सुन विस्मित जानकी को राम को देखने के लिये लक्ष्मण को भेजना उसी समय यती भेष धर रावण आन जानकी से भिक्षा माँगना वर्णन है -



३२ चि० । लक्ष्मण की खींची हुई रेख से बाहर निकल कर जानकी को भिक्षा देना और उसी समय रावण को निज रूप बदल जानकी को ले रथ पर बिठाकर ले चलना और राम लक्ष्मण नाम ले ले जानकी को आरतबश बिलाप करना सो सुन और रामचन्द्र की प्रिया जान गृद्धराज जटायू का आना और घोर शोर रावण से युद्ध करना और रावण प्रेरित अग्निबाण से व्यथित होना वर्णन है -





३३-चि०। गृद्धराज को व्यथित कर रावण को आकाश मार्ग से रथ ले चलना गिरि पर कपियों का समूह बिलोकि सीता को वस्त्रत्यक्त करना पुनः लंका में पहुँच रावण सीता को अशोक बाटिका में रखना विधि व इन्द्र परस्पर मंत्र ठान इन्द्र को आनकर जानकी को हव्य खिलाना - लक्ष्मण को राम से मिलना पुनः जानकी अकेली जान संदेहित हो शीघ्रता से पंचवटी में आन जानकी को न देख बिलाप करना और वृक्षलता खग मृगादिकों से पूँछते हुये बन को चलना आगे अरन्यास्त्र सों व्यथित बसुधा तल में परे हुये गृद्धराज को देख पीड़ित जान पाणि स्पर्श करना पुनः गृद्धराज से सम्पूर्ण हाल श्रवण करना और निज चरणों की भक्ति वर दे स्वर्ग को पठै जटायू का क्रिया कर्म कर आगे चलना पुनः कवन्धनाश करि निजधाम दे शबरी के आश्रम में आकर अतिथि भाव स्वीकार करना वर्णन है —

आरण्यकांड स० ३१८ स०॥

चित्र सं॰ ३४ सं॰ पृ॰ ३२६



३४-चि॰। शवरी को निज धाम दे पुनः जानकी का खोज करते हुये ऋष्यमू-
क पर्वत समीप आना रामलक्ष्मण को आते देख संदेहित हो सुग्रीव करि हनु-
मान जी को रामचन्द्र के निकट भेजना और ब्राह्मण का वेष धर हनुमान को
रामाग्र आना और परस्पर हाल पूँछ दोनों भाइयों को ऋष्यमूक पर्वत पर
सुग्रीव सन्निकट ले आना सुग्रीव करि रामचन्द्र को जानकी का पट देना-
और रामचन्द्र से सुग्रीव से अग्नि साक्षी करि परस्पर मयत्री होना और नि-
ज निज हाल परस्पर कहना और रामचन्द्र को बालि के मारने के लिये प्रण
करना पुनः बालिवध परीक्षार्थ दुंदुभी अस्थि ताल ढहाना और निर्भय-
करि सुग्रीव को संग ले पंपापुर में जा रामचन्द्र की आज्ञा पा सुग्रीव को लड़ने के
लिये जाना ताराकृत बालि उपदेश पुनः बालि सुग्रीव युद्ध और वृक्ष ओट से
रामचन्द्र करि बालि बध लक्ष्मण करि सुग्रीव को राज्यतिलक होना वर्णन है
३२६ सफ़े तक ॥

चित्र सं॰ ३५ सं॰ पृ॰ ३३२



नं. ३५ कि. संपाति संवाद

३५-चि॰। सुग्रीव को राज्य तिलक दे रामचन्द्र लक्ष्मण को प्रवर्षण गिरि पर वास करना - कुछ काल पश्चात् सुग्रीव को राज्यमदासक्त जान कोप करि लक्ष्मण को पंपापुरी भेजना और सीता खोजनार्थ हनुमान करि सुग्रीव को उपदेश पुनः लक्ष्मण क्रोधयुक्त जान तारा व हनुमानादिकों का विनय करि मंदिर में लाय सत्कार करना पुनः सुग्रीव को समापन दे सहित वानर सैन्य हनुमान अंगदादि युक्त रामचरण शरणागमन और रामाज्ञा से संपूर्ण वानर कटक सर्व दिशाओं को जानकी खोजनार्थ भेजना मार्ग में तृषार्त हो हनुमानादिकों का विवर में पैठना और एक स्त्री से मुलाकात होना और संपूर्ण हाल कह सुन वानराओं का बाहर आना व स्त्री को बदरीबन जाना पुनः आगे सम्पाति से मिलना और परस्पर वार्त्तालाप होना और समुद्र निकट आ संपाति करि जटायु को तिलांजलि देना व सम्पूर्ण हाल जानकी का वर्णन करना है -

किं॰ कां॰ स॰ ३३२ स॰ त॰ ॥

चित्र संख्या ३६ सं. मू. ३४२



३६ चि०। समुद्र तट सम्पूर्ण बानर व जामवन्तादिकों का

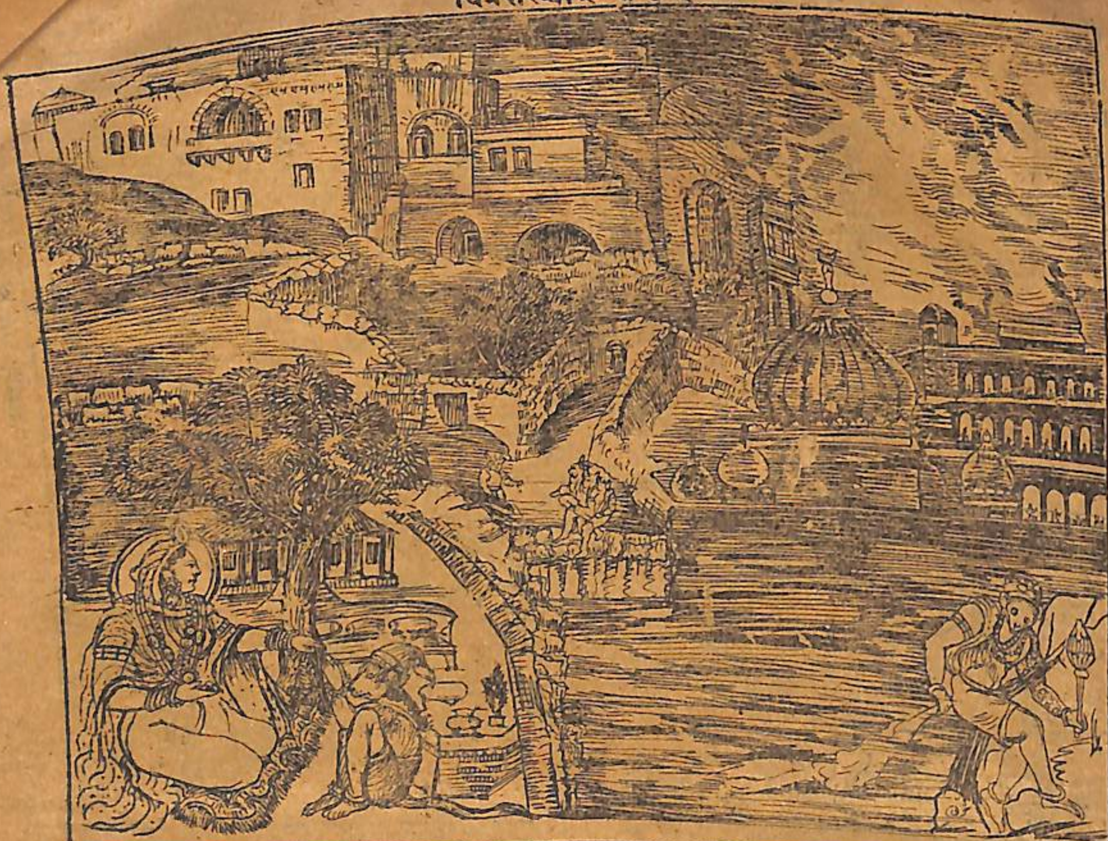
पार जाने को बिचारना और निज २ बल अनुमान करना पश्चात् हनुमान जी को सिन्धु नाँघि चलना समुद्रान्तर्गत मैनाक मिलन पुनः समुद्र में देवतों की पठाई हुई सुरसा से मिलाप होना उसके शरीर में पैठना बल अनुमानकरि सुरसाकोदेवताओं के निकट जाना और एक जन्तुका नाशकर पार जा लंका संनिकट प्राप्त होना और पर्वतारूढ़ हो लंका अवलोकन करना और मशक कारूप धर लंका में प्रवेश करना और लंकिनी निशाचरीका नाश होना पुनः दशानन मन्दिर में जा शोभा देखचकित गृह गृह अवलोकन कर बिभीषण से मिलाप करना और सीता की ख़बर पा पुष्प वाटिका में आन कर अशोकारूढ़ हो राक्षसियों से सेवित जानकी को देखना उसी समय सहित मंदोदरी रावण काआना और सीता को भय दिखाना बर्णन है –

२४२ स॰ त॰ ॥



२७ चि० । रावण के जाने पश्चात् अशोक से हनुमान जी को रामचंद्र की मुद्रिका डारना और तिसे अवलोकि जानकी को विस्मित होना पुनः हनुमान से परस्पर वार्तालाप और अपना भयंकर रूप जानकी को दिखलाना पुनः आज्ञा ले रावण वाटिका में आ फल फूल खाना और तरु निपातना और रक्षकों को मारना पश्चात् घायल हुये राक्षसों को रावण से आकर सम्पूर्ण हाल कहना और रावणनिदेश कृत अक्षय कुमार को वाटिका में आनकर हनुमान से युद्ध कर नाश होना पुनः ससैन्य मेघनादागमन और हनुमान से युद्ध और हनुमान को नागफाँस से बाँध रावणाग्र दरबार में उपस्थित करना वर्णन है - ३४५ स० त० ॥

चित्रसंख्या २८ सं·पृ·३५७

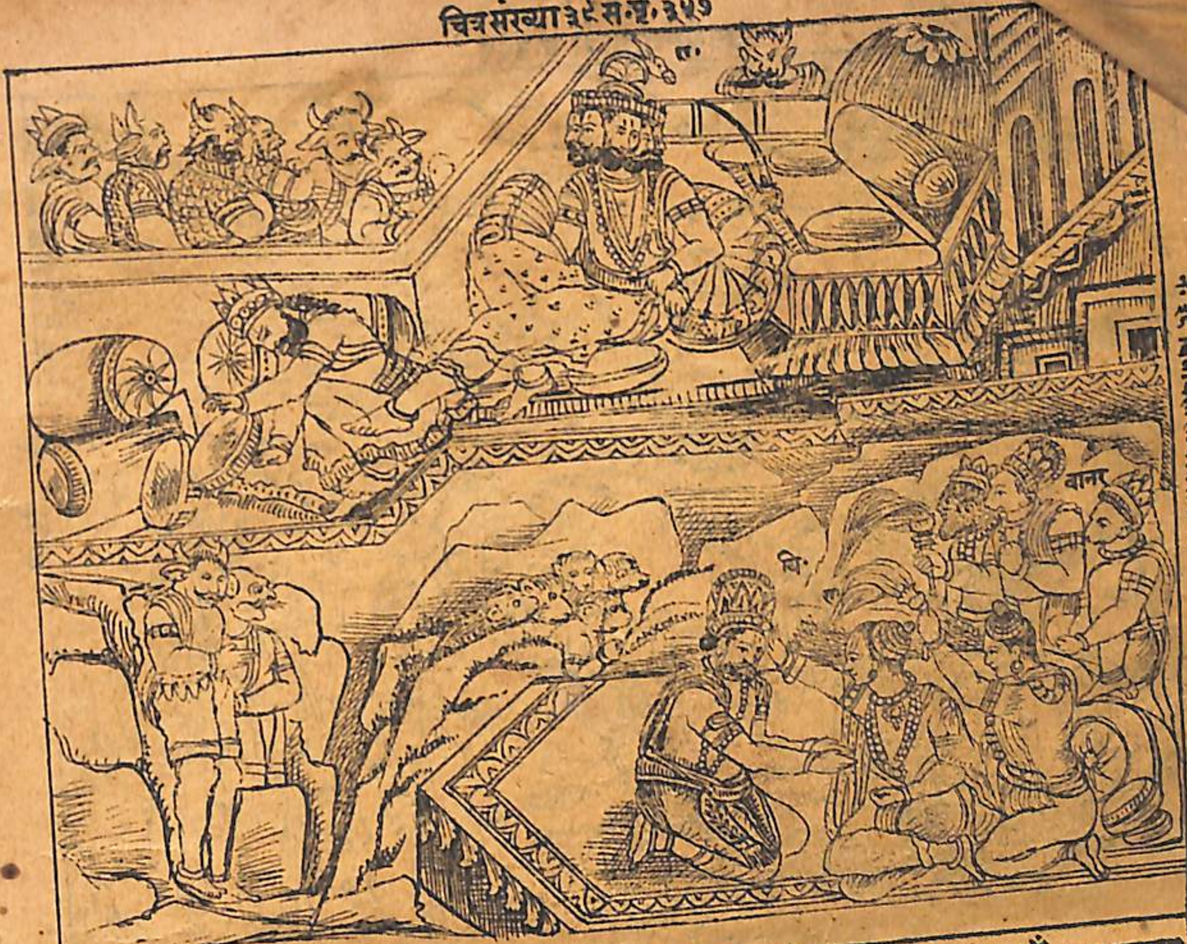


सं२८ लंका दहन ॥

२८ चि०। हनुमान रावण से परस्पर वार्त्तालाप होना पुनः हनुमान को मारने के लिये प्रयत्न करना उसी समय विभीषण को आनकर वर्जित करना और सर्व समातठान रामचन्द्र दूत जान पुच्छ भस्मार्थ रावण कृत निदेश और निशाचरों करि पुच्छ में तेल पटाच्छादित करि। अग्नि से प्रज्वलित कर छोड़ना और हनुमान को अटाओं पर चढ़कर लंका भस्म करना वर्णन है -

३५७ स· त· ॥

चित्र संख्या ३९ सं.पृ. ३५१



३९ चि०। लंका दहन करि समुद्र में फाँद शरीर का परिश्रम दूर करव पूँछ बुझाय हनुमान को जानकी समीय आना और जानकी को धीर्य दे चूड़ामणि ले बिदा हो समुद्र पार आ सम्पूर्ण बानरों से मिल जानकी मिलन की कथा कह हर्षित हो मधुबन में आन फल खाना और रक्षकों को आनकर सुग्रीव से कहना पुनः सर्व बानर गण आन सुग्रीव से मिल सम्पूर्ण हाल कह रामचन्द्र के पास आना और हनुमान को जानकी की चूड़ामणि दे सम्पूर्ण हाल कहना और लंका दहन सुन रामचन्द्र प्रसन्न होकरि हनुमान को आशीर्वाद देना पुनः बानरी सैन्य सहित रामचन्द्र को सिन्धु तट आगमन मन्दोदरीकृत रावणोपदेश पुनः समस्त मंत्रिगणों करि सम्मत और जानकी देने के अर्थ विभीषण कृत रावणोपदेश तव कुपित हो विभीषण पर चरण प्रहार करना पुनः सचिव सहित विभीषण का रामशरणागमन रावणबंधु जान और निज चरण भक्त रत जानि सिन्धु तट रामचन्द्र करि विभीषण को राज्य तिलक होना वर्णन है-सुं.का.स. ३६२ सफ़े तक ॥

चित्र संख्या ५० से पृ० २६३



५० चि०। विभीषणागमन पश्चात् रावण प्रेरित दो दूतों का आना और कपियों से ग्रसित है राम सन्मुख आना और लक्ष्मण को रावणार्थ पत्र देना और सैन्य विलोकि रावण से जा सम्पूर्ण हाल कहना और लक्ष्मण दत्त पत्रिका देना और जानकी देने के लिये उपदेश और रावण कृत चरण प्रहार पुनः दूत का राम शरण आगमन और गति पाकर सुरधाम जाना पुनः मंत्र विचारि समुद्र से मार्ग माँगना लक्ष्मण को कोपित हो समुद्र शोषणार्थ धनुषवाण सन्धान पुनः समुद्र को आनकर सम्पूर्ण हाल कहना और नल नील को सेतु बाँधना सेतुबंध पश्चात् रामचन्द्र करि सेतुबंध रामेश्वर स्थापित करना वर्णन है - यह अन्य पुराण का हाल है - कि रामचन्द्र जब सेतुबंद रामेश्वर की स्थापना करने लगे हैं तब शिव प्रतिष्ठा कराने के लिये रावण को निमंत्रण दिया है तब सहित जानकी रावण ने आनकर प्रतिष्ठा कराई है -

२६४ सफ़े तक ॥

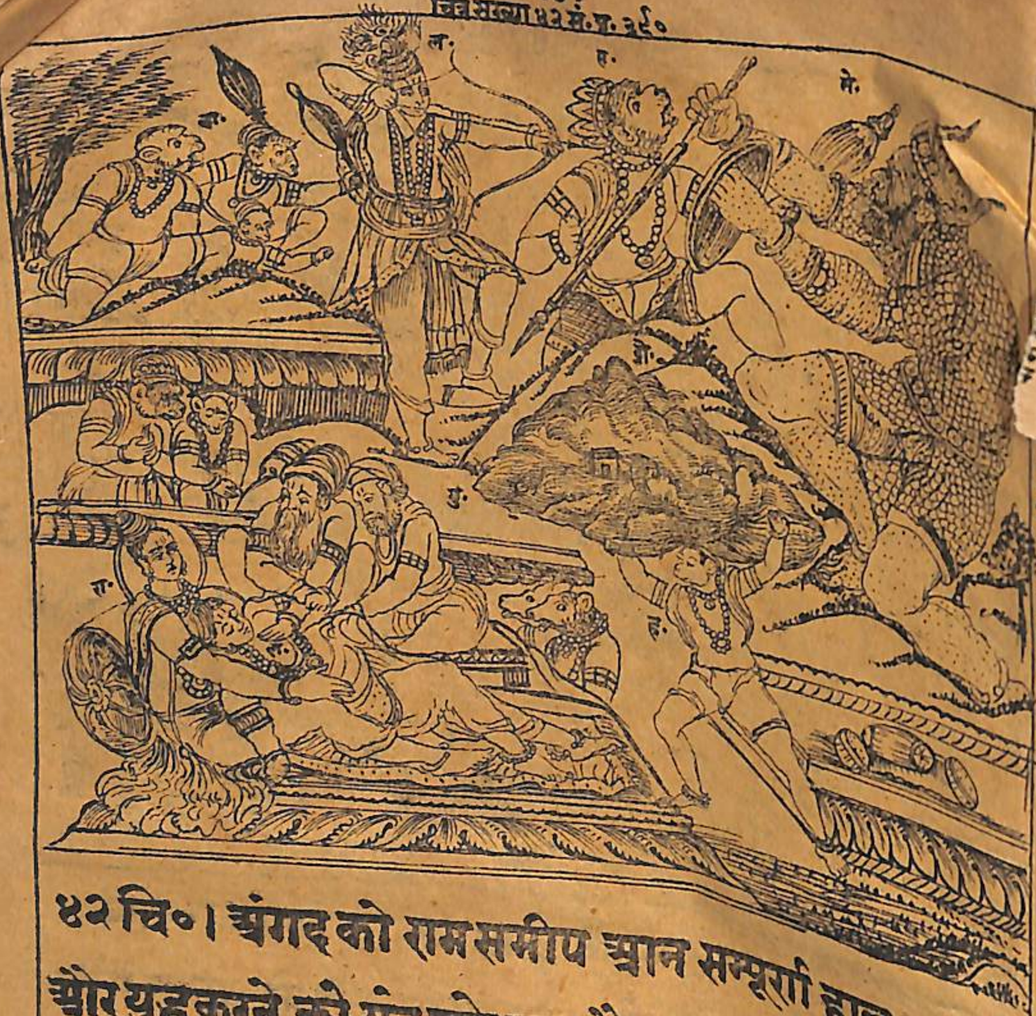
चित्रसंख्या ४९सं॰पृ॰ ३८१



नं॰ ४९ अंगदपदरोपण ॥

४९ चि०। ससैन्य रामचन्द्र को सिन्धु पार आवास होना और सेतुबंध-
नजान मन्दोदरी कृत रावणोपदेश रावण मन्दोदरी को आगार में बैठा
हुआजान धनुष बाण सन्धान रामचन्द्र को मन्दोदरी सहित रावण के
छत्र मुकुट कर्ण फूलादि गिराना-पुनः मन्दोदरी को रामचन्द्र का विरा-
ट रूप वर्णन पुनः रावण धवरहर पर चढ़ रामचन्द्र की बानरी सैन्या-
वलोकन करना और सारन दूत करि रावण से बानरों का वर्णन पुनः
सर्व मंत्रियों सहित रामचन्द्र को मंत्र शोधि अंगद को लंका भेजना ।
और अंगद को रावण की सभा में आना और रावण अंगद से परस्पर वार्ता-
लाप पुनः अंगद कृत भूमि में हस्त प्रहार और रावण के मुकुट गिरना सो
अंगद करि राम समीप मुकुट चलाना व सभा में प्रण करि पद रोपना व-
र्णन है — ३८१ सफ़े तक ॥

चित्रसंख्या ४२ सं. पृ. ३९०



४२ चि०। अंगद को राम समीप आन सम्पूर्ण हाल कहना और युद्ध करने को मंत्र शोधना और सम्पूर्ण बानरी सैन्य तय्यार होना पुनः लक्ष्मण को युद्ध में जाने के लिये रामचन्द्र से उपदेश पाना और सहित अंगद हनुमान सुग्रीव बिभीषण जाम्बवान् नल नील मयन्द द्विविदादि बानरों को साथ लै लंका के चारों द्वारे रोकना पुनः रावण उपदेश पाय संपूर्ण निशाचरों का कटक ले मेघनादागमन और मेघनाद व लक्ष्मण से परस्पर युद्ध होना बर्णन है ॥

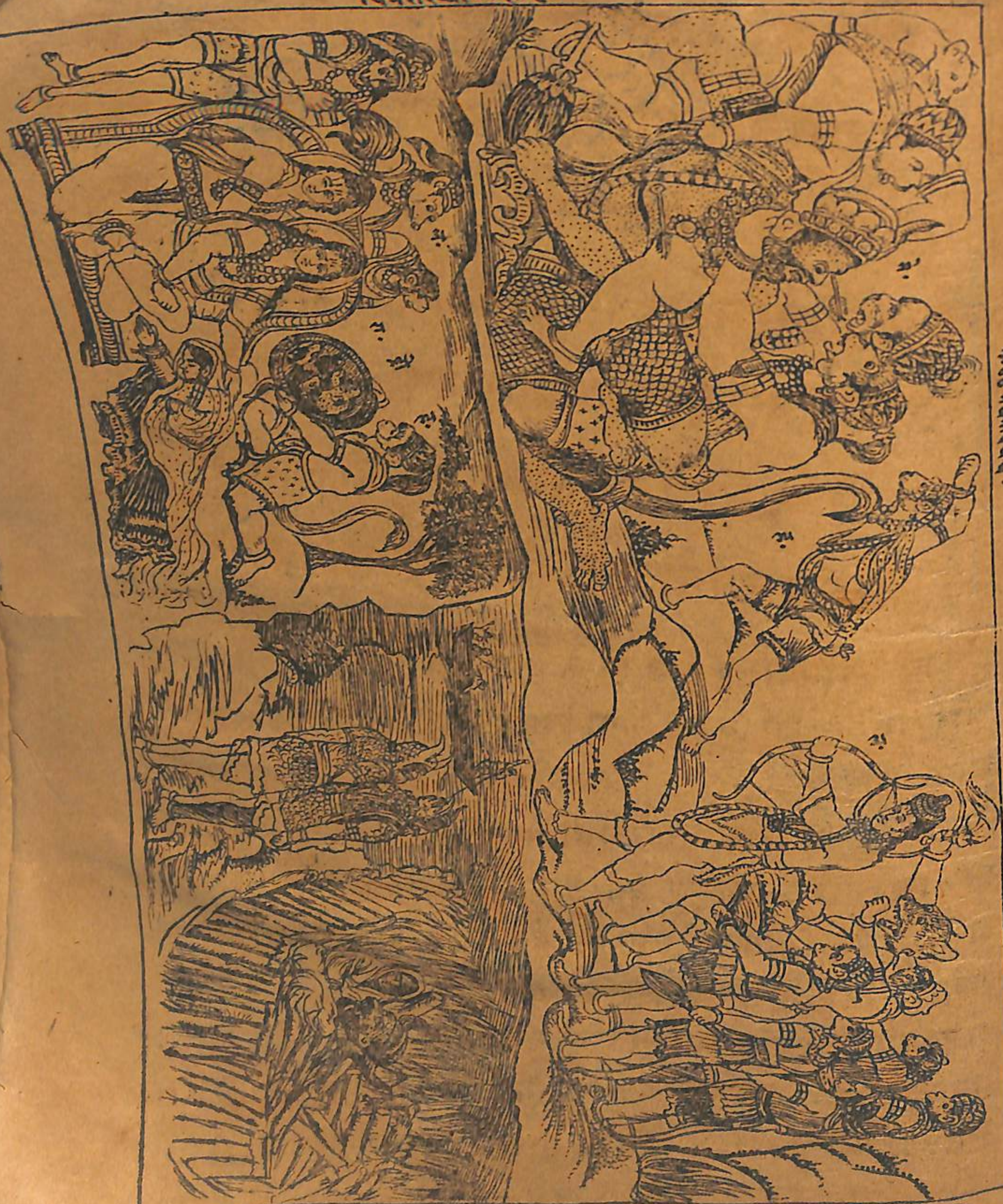
३९० सफ़े तक ॥

चित्र संख्या ४३ सं॰ पृ॰ ३९७



४३ चि॰। मेघनाद व लक्ष्मण के युद्ध में लक्ष्मण के शक्ती लगना और रामचन्द्र को बिकल होना पुनः हनुमान करि सुषेण वैद्य का आना और मूर्छा जाने के लिये युक्ति बताना हनुमान को मूरि सजीवन लेने के लिये जाना मार्ग में रावणोपदेशित कालनेमि निशाचर का बध करना पुनः द्रोणागिरि परजा औषधि न पाय द्रोणागिरि उठाकर ले चलना और अवध ऊपर आना भरतकरि बाणप्रहार हनुमान का व्यथित होना पुनः भरत हनुमान से वार्तालाप पुनः मूरि सजीवन लाकर लक्ष्मण को मूर्छा से बिगत होना तब रावण को युद्ध के लिये कुम्भकर्ण का जगाना पुनः कुम्भकर्णकृत रावणोपदेश और दैववश आनकर संग्राम में रामचंद्र से कुम्भकर्ण का घोर युद्ध व बध होना वर्णन है –

चित्रसंख्या४४सं.पृ.



सं.४४ मेघनादवध.

४४-चि०। कुम्भकर्णनाश पश्चात मेघनाद को।

फिर आनकर आकाश मार्ग से मायिक युद्धकर-
ना और रामचन्द्र सहित सैन्य को नाग फाँस में
में बाँधन पुनः गरुड़ागमन और नाग फाँस से
निर्मुक्त होना व युद्ध में जाम्बवान के चरण प्रहार
से मेघनाद का मूर्च्छित होना पुनः संग्राम से जाकर
यज्ञ करने के लिये सामान करना और बानरों की
यज्ञ विध्वंस करना पुनः संग्राम में आनकर लक्ष्म-
ण से कठिन युद्ध व बध होना वर्णन है –





५५-चि०। मेघनाद का भुजा आनकर रनिवास में गिरना और ईश्वरमय कीरति राम लक्ष्मण की सुलोचना को जताना पुनः सुलोचना को रावण मंदोदरी के पास जाय संपूर्ण हाल कहना व मंदोदरी उपदेश से रामचन्द्र से आनकर शिर मेघनाद का माँगना व सुलोचना परीक्षार्थ मेघनाद का शिर बिहँसना व रामचन्द्र से शीश ले लंका में आन सुलोचना को सती होना पुनः शिवमन्दिर में जाय रावण को मंत्रा कर्षण कर अहिरावण को बुलाना और रावण समीप आन अहिरावण को सम्पूर्ण हाल श्रवण करना पश्चात् रावणोपदेश अहिरावण आनकर रामलक्ष्मण को हरण करि पाताल में जाना और देवी का बलिप्रदानार्थ सामान रचना रामचन्द्र लक्ष्मण को न देख सम्पूर्ण सैना को बिलाप करना और पातालपुरी में हनुमानागमन और मकरध्वज से युद्ध पुनः देवीरूप में आसक्त हो सम्पूर्ण बलिभक्षण करना अहिरावण करि राम लक्ष्मण को देवी के अग्र बलिप्रदानार्थ लाना और उसी समय हनुमानं को निज रूप प्रकट कर अहिरावण को मार रामलक्ष्मण को ले आना वर्णन है -

४१९ सफे तक ॥



४६-चि॰। हनुमान आनि रामलक्ष्मण को सम्पूर्ण सैन्य से मिल हर्ष देना और अहिरावण बध सुनि दशकन्धर को विलाप करना पुनः मंत्री के उपदेशों से दूत के हाथ पत्रिका भेज नारान्तक को बुलाना पुनः काकभुशुण्ड को गरुड़ से नारान्तकादि उत्पत्ति वर्णन करना पुनः धूम्रकेतु दूत को नारान्तक की सभा में जा दशमुख की पत्रिका दे संपूर्ण हाल वर्णन करना तब सहित सैन साज समाज सो लंका में आ दशकंध आज्ञा ले संग्रामभूमि में आना और रामचन्द्र की आज्ञा ले संपूर्ण बानरी सैन्य सहित लक्ष्मण जी को आनकर नारान्तक से युद्ध होना पुनः एक एक योद्धा सों भिन्न भिन्न जाम्बवान करि नारान्तक को शूल प्रहार सों मूर्छित करि लंका में फेकना और बड़े बड़े घोर युद्ध होना और नारान्तक को अजित जान रामचन्द्र से प्रेरित हनुमान को सिन्धु समीप धौरागिरि पर जा सुग्रीव के पुत्र दधिवल को लाना पुनः दधिवल को रामचन्द्र से मिल संग्राम भूमि में जा नारान्तक से युद्ध करि नारान्तक को बध करना वर्णन है -



४७-चि०। दधिबल को भक्तिवरदान दे रामचन्द्र को विहावलपुर को राज्य करने के अर्थ पठाना व नारान्तक का शिर माँगने के लिये विन्दुमती व चित्ररेखा नारान्तक की स्त्रियों को रामशरण आना और स्तुति कर नारान्तक का शिर ले चिता बनाय सत्ती होना पुनः सैन्य साजि रावण को युद्धभूमि में आन रामचन्द्र से युद्ध व रावण करि लक्ष्मण के शक्ति लागना और मूर्च्छित होना लक्ष्मण को ले जाने के लिये रावण कौ उठाना पुनः हनुमान के मुष्टिक प्रहार सो रावण को मूर्च्छित होना और लज्जित हो यज्ञारंभ करना तब विभीषण से खबर पाय हनुमान अंगदादि बानरों को जाकर यज्ञ विध्वंस करना वर्णन है —

४५९ स० तक ॥

चित्रसंख्या ४८ सम्बन्ध पृष्ठ ५७०



४८-चि०। यज्ञविध्वंसजान रावरा कोकोपित हो संग्राममें आनकर राम सन्मुख युद्ध करना और रामचन्द्र को निवहिन देखि इन्द्रको रथ भेजना व रथारूढ़ हो रामचन्द्र से युद्ध होना और रावरा के शिरों की वृद्धि होना पुनः मायायुक्त युद्ध होना त्रिजटा कोजानकी निकट आ सम्पूर्ण हाल कहना पुनः भयंकर समर मध्य रामचन्द्र करि रावरा वध होना वर्णन है - ५७० सफ़े तक ॥

चित्रसंख्या४९सं०पृ०४७२



नं० ४९ विभीषणराज्यतिलक॥

४९-चि०। रावण वध जानि देवतों को आनन्द हो वाद्य बजाना और पति शिर देखि मंदोदरी को बिलाप करना रामचन्द्रोपदेश से बिभीषण कोरावणकाक्रियाकर्म करना पुनः रामाज्ञा से अंगद सुग्रीव हनुमान जाम्बवानादि सहित लक्ष्मण को लंका में जाय सिंहासनोपविष्ट करि बिभीषण को राज्यतिलक करना वर्णन है –

४७२ सफ़े तक॥

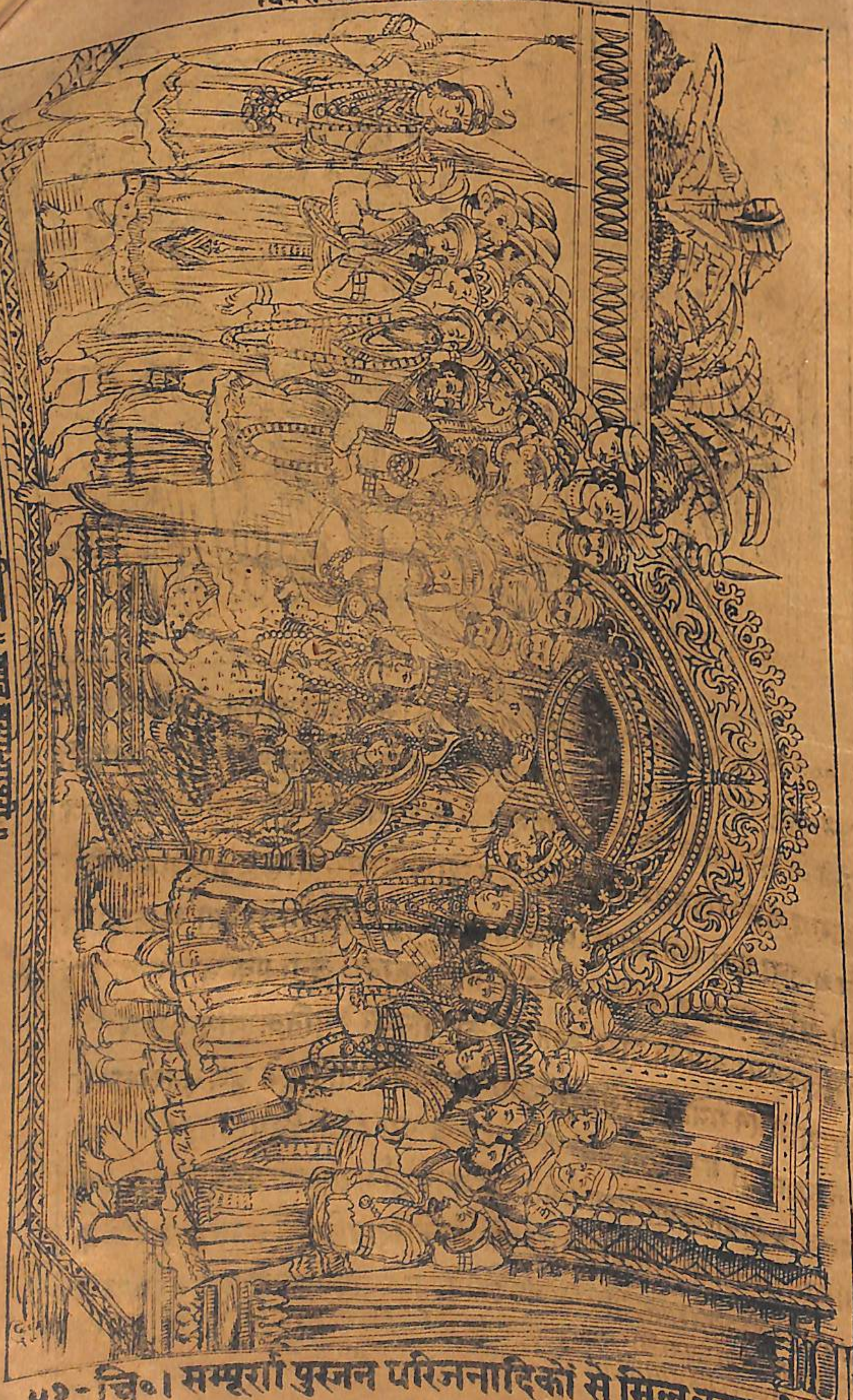
चित्र संख्या ५० सं० पृ० ४८५



चि० ५० उ० भरत मिलाप ॥

५० - चि० । रामाज्ञा सों हनुमान को जानकी सन्निकट जा संपूर्ण कुशल कहना पुनः हनुमान को राम समीप आ जानकी की कुशल कह आज्ञा पाय जानकी लेने के लिये जाना बिभीषणोपदेश से निशाचरियों करि जानकी को स्नान कराय बसनालंकार से भूषित कर शिविका पर आरूढ़ करि राम समीप ले चलना पुनः रामाज्ञा सों पायँ पियादे आना और रामोपदेश से लक्ष्मण को अग्नि प्रकट करि सीता प्रवेश हो साक्षी करना - पुनः एक आसन आसीन राम लक्ष्मण जानकी देखि देवताओं को आनकर स्तुति करना पुनः रामदर्शनार्थ दशरथागमन रामोपदेश से बिभीषण को नभ में जा बानरों के अर्थ रत्न लक्ष्मण ज्ञानक्षमणि वस्त्रों की वर्षा करना पुनः बानरों सहित बिमानारूढ़ हो सब जगह जानकी को दिखाते हुए अयोध्यागमन मार्ग में अगस्त्याश्रम व चित्रकूट वय-मुना गंगा प्रयाग भरद्वाज आश्रमादि जानकी को दिखाते हुये अवध समीप प्राप्त हो हनुमान को भरत समीप जाय रामागमन का संदेश कहना पुनः भरत को आन अयोध्या में रामागमन का संदेश कहना और सहित राजसमाज मंगल उछाह सों पुरजन परिजन मुनि ब्राह्मण गुरु आदि मंगल सों राम भरत मिलाप होना वर्णन है - ४८५ सफ़े तक ॥

चित्र संख्या ५२ सं. पृ. ४९९



५२-चि०। सम्पूर्ण पुरजन परिजनादिकों से मिल कृतार्थकरि

रामचन्द्र को राजभवन में आनि सम्पूर्ण माताओं से मिलना और जानकी को सम्पूर्ण सासुओं से मिल-चरण स्पर्श करना पुनः बशिष्ठ आज्ञा पाय सुमन्तु राम राज्य तिलकार्थ सम्पूर्ण सामान इकट्ठाकरना पुनः शुभ दिन मुहूर्त्त लग्न शोधि बशिष्ठ कृत सिंहासनोपस्थ राम राज्य तिलक होना वर्णन है -

४८९ सफ़े तक ॥



चित्र संख्या ५२ सं॰ पृ॰ ५११



५२-चि॰। रामजानकी सिंहासनोपस्थ लखि सम्पूर्ण देवता व बन्दी वेष धरि वेदों को आनकर स्तुति कर निज२ धाम जाना पुनः सुग्रीव अंगद विभीषणादि को रामाज्ञा पाय बिदा होना और रामचन्द्र को सुख पूर्वक राज्य करना पुनः कागभुशुंड प्रति महादेव से पार्वती का संबाद- और रणमें मेघनादकृत नागफाँस बंधन से ससैन्य रामचन्द्र को मुक्त करि गरुड़ के मोहांकुर जमना तब कागभुशुराड के पास जाना व कागभुशुराड गरुड़ का सम्बाद होना वर्णन है - ५११ सफ़े तक ॥

इति ॥

मालिक मतबा मुंशी नवलकिशोर मुक़ाम लखनऊ।

मसवासी निवासि पं॰ बन्दीदीन दीक्षित निर्मित रामायण संक्षेप सम्पूर्णास सन् १८८८ ई॰ ॥



रामायण तुलसीकृत ॥

—— * ——

बालकाण्ड ॥

श्लोक

वर्णानामर्थसंघानांरसानांछंदसामपि ॥ मंगलानांचकर्त्तारौ वंदेबाणीबिनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशंकरौवंदेश्रद्धाबिश्वासरूपि णौ ॥ याभ्यांबिनानपश्यंतिसिद्धाःस्वांतस्स्थमीश्वरम् ॥ २ ॥ वंदेबोधमयंनित्यंगुरुं शङ्कररूपिणं ॥ यमाश्रितोहिवक्रोपिचंद्रस्स र्वत्रवंद्यते ॥ ३ ॥ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वंदे विशुद्धविज्ञानौकवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥उद्भवस्थितिसंहारकारि णींक्लेशहारिणीं॥सर्वश्रेयस्करींसीतांनतोहंरामवल्लभां॥५ ॥ यन्मा यावशवर्त्ति विश्वमखिलंब्रह्मादिदेवाःसुरायत्सत्वादमृषैवभातिस कलंरज्जौयथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादःप्लवमेवभातिहिभवांभोधेस्तिती र्षावतां वंदेहंतमशेषकारणपरंरामाख्यमीशंहरिं ॥६ ॥ नानापुरा णनिगमागमसंमतंयद्रामायणेनिगदितंक्वचिदन्यतोपि ॥स्वांतस्सु खायतुलसीरघुनाथगाथाभाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति ॥ ७॥

सो० ज्यहिसुमिरतसिधिहोइ गणनायककरिवरबदन ।
करौअनुग्रहसोइ बुद्धिराशिशुभगुणसदन ॥ १ ॥
मूक होइ बाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन ।
जासुकृपासुदयालु द्रवौसकल कलिमलदहन २ ॥
नीलसरोरुह श्याम तरुण अरुण बारिज नयन ।

करौसोममउरधाम सदा क्षीरसागर शयन ॥ ३ ॥
कुंद इंदु सम देह उमा रमण करुणा अयन ।
जाहि दीनपर नेह करौकृपा मर्द्दन मयन ॥ ४ ॥
बंदौं गुरुपद कंज कृपासिंधु नर रूप हरि ।
महामोहतमपुंज जासुबचन रविकरनिकर ॥ ५ ॥

बंदौं गुरुपद पद्म परागा । सुरुचिसुबास सरस अनुरागा ॥
अमिय मूरि मय चूरण चारू । शमनसकलभवरुजपरिवारू ॥
सुकृतशम्भुतन बिमल बिभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥
जन मन मंजु मुकुरमलहरणी ।कियेतिलकगुणगणवशकरणी ॥
श्रीगुरुपदनख मणिगणज्योती । सुमिरतदिब्य दृष्टिहियहोती ॥
दलन मोहतम सोसु प्रकासू । बड़े भाग्य उरआवहिं जासू ॥
उघरहिंबिमलबिलोचनहियके । मिटहिंदोष दुख भवरजनीके ॥
सूझहिंरामचरित्र मणिमाणिक । गुप्तप्रकटजहंजोजेहिखानिक ॥

दो० यथा सु अंजन आंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखहिं शैल बन भूतल भूरि निधान ॥

गुरुपद रज मृदु मंजुल अंजन । नयनअमियदृगदोषविभंजन ॥
तेहिकरिबिमलबिबेकबिलोचन । बरणौं रामचरित भवमोचन ॥
बंदौं प्रथम महीसुर चरणा । मोहजनित संशय सबहरणा ॥
सुजनसमाज सकल गुणखानी । करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी ॥
साधुचरित शुभसरिस कपासू । निरसबिशदगुणमयफलजासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । बंदनीय जेहि जगयशपावा ॥
मुदमंगल मय संत समाजू । ज्योंजग जंगम तीरथ राजू ॥
राम भक्ति जहं सुरसरि धारा । सरस्वतिब्रह्म बिचार प्रचारा ॥
बिधिनिषेधमयकलिमलहरणी । कर्म्मकथा रबिनंदिनिबरणी ॥
हरिहर कथा बिराजत बेनी । सुनत सकलमुदमंगल देनी ॥
बट बिश्वास अचल निजधर्मा । तीरथराज समाज सुकर्मा ॥
सबहिंसुलभ सबदिन सबदेशा । सेवतसादर शमन कलेशा ॥

अकथ अलौकिक तीरथ राऊ । देइ सद्य फल प्रकट प्रभाऊ ॥

दो० सुनिसमुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारफल अछततनु साधु समाज प्रयाग ॥

मज्जन फल देखिय ततकाला । काक होहिं पिक बकहु मराला ॥
सुनि आश्चर्य करहि जनि कोई । सतसंगति महिमा नहिं गोई ॥
बालमीकि नारद घटयोनी । निज निज मुखन कही निज होनी ॥
जलचर थलचर नभचर नाना । जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥
मतिकीरति गति भूति भलाई । जबजेहियतन जहांजेहिपाई ॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ । लोकहु वेद न आन उपाऊ ॥
बिनु सतसंग बिवेक न होई । रामकृपा बिनुसुलभ न सोई ॥
सतसंगति मुद मंगल मूला । सोइफलसिधसबसाधनफूला ॥
शठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परसि कुधातु सुहाई ॥
बिधिबशसुजनकुसंगतिपरहीं । फणिमणिसमनिजगुणअनुसरहीं ॥
बिधिहरिहर कबिकोविद बानी । कहत साधुमहिमासकुचानी ॥
सो मोसन कहि जात न कैसे । शाकबणिकमणिगुणगणजैसे ॥

दो० बंदौं संतसमान चित हित अनहित नहिं कोउ ।
अंजलिगतशुभसुमनजिमि सम सुगंधकरदोउ ॥
संतसरलचित जगतहित जानिसुभाव सनेहु ।
बालबिनय सुनि करिकृपा रामचरण रतिदेहु ॥

बहुरि बंदि खलगण सतिभाये । जे बिन काज दाहिने बांये ॥
परहित हानि लाभ जिन्हकेरे । उजरे हर्ष बिषाद बसेरे ॥
हरि हर यश राकेश राहुसे । पर अकाज भट सहसबाहुसे ॥
जेपर दोष लखहिं सह साखी । परहितघृतजिनके मनमाखी ॥
तेज कृशानु रोष महिषेशा । अघअवगुणधनधनिकधनेशा ॥
उदय केतु सम हित सबहीके । कुम्भकरण समसोवत नीके ॥
परअकाजलगि तनुपरिहरहीं । जिमिहिमउपलकृषीदलगरहीं ॥
बंदौं खल जस शेष सरोषा । सहस बदन बरणै परदोषा ॥

पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना । परअघ सुनै सहसदशकाना ॥
बहुरि शक्र सम बिनवौं तेही । संतत सुरानीक हित जेही ॥
बचन बज्र जेहि सदा पियारा । सहसनयन परदोष निहारा ॥
दो० उदासीनअरि मीतहित सुनत जरहिं खलरीति ।
जानुपाणियुगजोरि करि बिनती करौं सप्रीति ॥
मैं आपनि दिशि कीन निहोरा । तिननिजओरनलाउबभोरा ॥
बायस पालिय अति अनुरागा । होहिनिरामिषकबहुंकिकागा ॥
बंदौं संत असज्जन चरणा । दुखप्रदउभयबीचकछुबरणा ॥
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं । मिलतएक दारुण दुखदेहीं ॥
उपजहिं एकसंग जलमाहीं । जलजजोंकजिमिगुणबिलगाहीं ॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू । जनक एक जगजलधिअगाधू ॥
भलअनभलनिज निजकरतूती । लहतसुयश अपलोकबिभूती ॥
सुधा सुधाकर सुरसरिसाधू । गरलअनलकलिमलसरिव्याधू ॥
गुण अवगुण जानत सबकोई । जोजेहि भाव नीक तेहिसोई ॥
दो० भले भलाईपै लहहिं लहहिं निचाई नीच ।
सुधा सराहिय अमरता गरलसराहिय मीच ॥
खलअघअगुणसाधु गुणगाहा । उभय अपार उदधिअवगाहा ॥
तेहिते कछु गुण दोष बखाने । संग्रहत्याग न बिनुपहिंचाने ॥
भलेउ पोच सबबिधि उपजाये । गनि गुणदोष वेदबिलगाये ॥
कहहिं वेद इतिहास पुराना । बिधि प्रपंचगुणअवगुणसाना ॥
दुख सुख पापपुण्य दिन राती । साधु असाधुसुजातिकुजाती ॥
दानव देव ऊंच अरु नीचू । अमियसजीवनिमाहुरमीचू ॥
माया ब्रह्म जीव जगदीशा । लक्ष अलक्ष रंक अवनीशा ॥
काशि मगह सुरसरिकर्मनाशा । मरु मालवमहिदेव गवाशा ॥
स्वर्ग नरक अनुराग विरागा । निगमागमगुणदोषविभागा ॥
दो० जड़ चेतन गुणदोषमय बिश्व कीन्ह करतार ।
संतहंसगुण गहहिंपय परिहरि बारिबिकार ॥

असबिबेक जब देहि विधाता । तब तजि दोषगुणहिंमनराता ॥
काल स्वभाव कर्म बरिआई । भलेउ प्रकृतिवश चूकभलाई ॥
सो सुधारि हरिजनजिमिलेहीं । दलिदुखदोष विमल यशदेहीं ॥
खलउ करहिं भलपाइ सुसंगू । मिटहि न मलिन सुभाव अभंगू ॥
लखि सुवेष जग बंचक जेऊ । वेष प्रताप पूजियत तेऊ ॥
उघरहि अन्त न होइ निबाहू । कालनेमि जिमि रावण राहू ॥
किये कुवेष साधु सनमानू । जिमिजग जामवन्त हनुमानू ॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू । लोकहु वेद विदित सब काहू ॥
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा । कीचड़ मिलइ नीचजलसंगा ॥
साधु असाधु सदन शुकसारी । सुमिरहिंराम देहिंगनिगारी ॥
धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिय पुराणमंजुमसिसोई ॥
होइ जलअनलअनिल संघाता । होइ जलद जगजीवनदाता ॥

दो० ग्रह भेषज जल पवनपट पाइ कुयोग सुयोग ।
होइकुबस्तु सुबस्तुजग लखहिंसुलक्षणलोग ॥
समप्रकाशतम पापदुहुं नामभेद विधिकीन्ह ।
शशिपोषकशोषकसमुझिजगयशअपयशदीन्ह ॥
जड़ चेतन जग जीवजे सकल राममयजानि ।
वन्दौं सबके पदकमल सदाजोरि युगपानि ॥
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व ।
वन्दौं किन्नर रजनिचर कृपा करहु अबसर्व ॥

आकर चारि लाख चौरासी । जात जीवनभजलथल वासी ॥
सियाराममय सब जग जानी । करौं प्रणाम जोरियुग पानी ॥
जानि कृपाकरि किंकर मोहू । सबमिलिकरहुछांड़िछलछोहू ॥
निजबलबुधिभरोसमोहिंनाहीं । ताते विनय करउं सबपाहीं ॥
करनचहौं रघुपति गुणगाहा । लघुमतिमोरिचरितअवगाहा ॥
सूझन एकौ अंग उपाऊ । मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥
मति अतिनीच ऊंचरुचिआछी । चहियअमिय जगजुरैनछाछी ॥

क्षमिहहिं सज्जन मोरिढिठाई । सुनिहहिं बालवचन मनलाई ॥
ज्यों बालक कह तोतरि बाता । सुनहिंमुदितमनपितुअरुमाता ॥
हंसिहहिं कूरकुटिलकुविचारी । जे पर दूषण भूषण धारी ॥
निजकवित्त केहिलाग न नीका । सरसहोउ अथवा अतिफीका ॥
जे पर भणित सुनत हरषाहीं । ते वर पुरुष वहुत जगनाहीं ॥
जग वहु नर सुरसरिसम भाई । जे निज बाढ़बढ़हिं जलपाई ॥
सज्जन सुकृतसिन्धु सम कोई । देखि पूरविधु वाढ़इ जोई ॥
दो० भाग छोट अभिलाषबड़ करों एक विश्वास ।
पैहहिंसुखसुनिसुजनजन खलकरिहैंउपहास ॥
खल परिहास होत हित मोरा । काककहहिंकलकण्ठकठोरा ॥
हंसिहहिंबकदादुरचातकही । हंसहिंमलिनखलविमलबतकही ॥
कवितरसिक न राम पद नेहू । तिनकहं सुखद हासरस एहू ॥
भाषा भणित मोरिमति भोरी । हंसिवे योग हंसे नहिं खोरी ॥
प्रभुपदप्रीति नसामुझिनीकी । तिनहिंकथासुनिलागिहिफीकी ॥
हरिहरपदरतिमतिन कुतरकी । तिनकहं मधुरकथा रघुवरकी ॥
रामभक्ति भूषित जिय जानी । सुनिहहिं सुजनसराहिसुवानी ॥
कविनहोउंनहिं चतुरप्रवीना । सकल कला सब विद्या हीना ॥
आखिर अर्थ अलंकृत नाना । छन्द प्रबन्ध अनेक विधाना ॥
भाव भेद रस भेद अपारा । कवितदोषगुण विविधप्रकारा ॥
कवित विवेक एक नहिं मोरे । सत्यकहौं लिखि काग़ज़ कोरे ॥
दो० भणित मोर सबगुणरहित विश्वविदित गुणएक ।
सोविचारिसुनिहहिंसुमति जिनकेविमलविवेक ॥
इहिमहं रघुपति नाम उदारा । अतिपावन पुराणश्रुतिसारा ॥
मंगल भवन अमंगल हारी । उमासहितजेहिजपुत्रिपुरारी ॥
भणितविचित्र सुकविकृतजोऊ । राम नामबिनु सोह न सोऊ ॥
बिधु बदनी सबभांति संवारी । सोह न बसनबिना वर नारी ॥
सब गुणरहितकुकविकृतवानी । राम नामयश अंकित जानी ॥

सादर कहहिं सुनहिं बुधताही । मधुकरसरस सन्तगुणग्राही ॥
यदपि कवित गुण एको नाहीं । राम प्रताप प्रकट इहिमाहीं ॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा । केहिन सुसंग बड़ापन पावा ॥
धूमउ तजै सहज करुवाई । अगर प्रसंग सुगन्ध बसाई ॥
भणित भदेश वस्तु भलिवरणी । रामकथा जग मंगल करणी ॥

छं० मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसीकथारघुनाथकी ।
गतिकूरकविता सरितकी ज्यों परमपावन पाथकी ॥
प्रभुसुयशसंगतिभणितभलि होइहिसुजनमनभावनी ।
भवभूत अंगमसानकी सुमिरत सुहावनि पावनी ॥

दो० प्रियलागहिंअतिसबहिंममभणितरामयशसंग ।
दारुविचारकिकरइकोउ वन्दियमलयप्रसंग ॥
श्यामसुरभिपयविशदअतिगुणदकरहिंतेहिपान ।
गिराग्रामसियरामयशं गावहिंसुनहिं सुजान ॥

मणिमाणिक मुक्ता छवि जैसी । अहिगिरिगजशिरसोहनतैसी ॥
नृप किरीट तरुणी तनपाई । लहहिंसकल शोभाअधिकाई ॥
तैसेहिसुकविकवितबुधकहहीं । उपजहिंअनतअनतछविलहहीं ॥
भक्तहेतु विधि भवन बिहाई । सुमिरत शारद आवत धाई ॥
रामचरित सर बिनुअन्हवाये । सो श्रमजाइ न कोटि उपाये ॥
कबि कोविद अस हृदयविचारी । गावहिंहरिगुणकलिमलहारी ॥
कीन्हे प्राकृत जन गुण गाना । शिरधुनिगिरालगतपछितान॥
हृदय सिन्धु मतिसीप समाना । स्वाती शारदकहहिं सुजाना ॥
जो बरषै बरबारि विचारू । होहिंकवितमुकतामणिचारू ॥

दो० युक्ति वेधि पुनि पोहिये राम चरित बरताग ।
पहिरहिंसज्जनविमलउर शोभाअतिअनुराग ॥

जे जनमे कलिकाल कराला । करतब वायस वेष मराला ॥
चलत कुपंथ वेदमग छांड़े । कपट कलेवर कलिमलभांड़े ॥
बंचक भक्त कहाइ रामके । किंकर कंचन कोह कामके ॥

तिनमहं प्रथम रेख जगमोरी । धृक धर्मध्वज धन्धक धोरी ॥
जो अपने अवगुण सबकहऊं । बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊं ॥
ताते मैं अति अल्प बखाने । थोड़े महं जानिहहिं सयाने ॥
समुझिविविधविधिबिनतीमोरी । कोउनकथासुनि देइहिखोरी ॥
एतेहु पर करिहहिं जे शंका । मोहिंतेअधिकते जड़मतिरंका ॥
कवि न होउंनहिंचतुरकहाऊं । मति अनुरूप रामगुण गाऊं ॥
कहं रघुपतिके चरित अपारा । कहंमतिमोरि निरत संसारा ॥
जेहि मारुत गिरिमेरु उड़ाहीं । कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥
समुझत अमित राम प्रभुताई । करत कथा मनअति कदराई ॥
दो० शारद शेष महेशविधि आगमनिगम पुरान ।
नेतिनेतिकहिजासुगुण करहिंनिरन्तर गान ॥
सब जानत प्रभु प्रभुता सोई । तदपि कहे बिन रहा न कोई ॥
तहां वेद अस कारण राखा । भजन प्रभाव भांतिबहुभाषा ॥
एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानन्द परधामा ॥
व्यापक विश्वरूप भगवाना । तेइ धरिदेह चरित कृतनाना ॥
सो केवल भक्तन हित लागी । परम कृपाल प्रणत अनुरागी ॥
जेहिजनपर ममता अरु छोहू । तेहिकरुणानिधिकीन्हनकोहू ॥
गये बहोरि गरीब निवाजू । सरल सबल साहिब रघुराजू ॥
बुध बरणहिंहरियशअसजानी । करहिंपुनीतसुफल निजबानी ॥
तेहिबल मैं रघुपतिगुण गाथा । कहिहौं नाइ रामपद माथा ॥
मुनिन्ह प्रथमहरि कीरतिगाई । तेहिमगचलतसुगममोहिंभाई ॥
दो० अति अपारते सरितवर जो नृप सेतु कराहिं ।
चढ़िपिपीलिकापरमलघु बिनुश्रमपारहिजाहिं ॥
यहि प्रकार बल मनहिं दृढ़ाई । करिहौं रघुपति कथा सुहाई ॥
व्यास आदि कवि पुंगवनाना । जिन्हसादरहरिचरितबखाना ॥
चरण कमल वन्दौं सब केरे । पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ॥
कलिके कबिन करौं परणामा । जिन्हबरणे रघुपतिगुणग्रामा ॥

जे प्राकृत कबि परम सयाने । भाषाजिन हरिचरित बखाने ॥
भये जे अहहिं जे होइहैं आगे । प्रणवउंसबहिंकपटछलत्यागे॥
होउ प्रसन्न देहु बरदानू । साधुसमाज भणित सनमानू ॥
जे प्रबंध बुध नहिं आदरहीं । ते श्रमबादि बालकबिकरहीं ॥
कीरति भणितभूतिभलि सोई । सुरसरि समसबकहंहितहोई ॥
राम सुकीरति भणित भदेशा । अस मंजसअसमोहिं अंदेशा ॥
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउमोरे । सियनि सुहावनि टाट पटोरे ॥
करहु अनुग्रह असजियजानी । बिमलयशहिअनुहरहुसुबानी ॥
दो० सरलकबित कीरतिबिमल सोइआदरहिंसुजान ।
सहज बैर बिसरायरिपु जोसुनिकरहिं बखान ॥
सोन होइबिनुबिमलमति मोहिंमतिबलअतिथोरि ।
करहुकृपा हरियशकहौं पुनिपुनि करहुनिहोरि ॥
कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल ।
बाल बिनय सुनिसुरुचिलखि मोपरहोहु कृपाल ॥
सो० बंदौं मुनिपद कंज रामायण जिन निर्मयउ ।
सखरसकोमल मंजु दोषरहित दूषण सहित ॥
बन्दौं चारोंवेद भव बारिधि बोहित सरिस ।
जिनहिं न सपनेहुंखेद बरणतरघुपति बिमलयश॥
बन्दौं बिधिपदरेनु भवसागर जिन कीन्ह यह ।
संत सुधाशशि धेनु प्रकटे खलबिष बारुणी ॥
दो० बिबुध बिप्रबुधगुरु चरण बन्दि कहौंकरजोरि ।
होइ प्रसन्न पुरवहुसकल मंजुमनोरथ मोरि ॥
पुनि बन्दौं शारद सुर सरिता । युगल पुनीत मनोहरचरिता ॥
मज्जन पान पाप हर एका । कहत सुनत इकहरअबिबेका ॥
गुरुपितु मातु महेश भवानी । प्रणाउं दीनबन्धु दिन दानी ॥
सेवक स्वामि सखा सिय पीके । हितनिरूपसब बिधितुलसीके ॥
कलिबिलोकिजगहितहरगिरिजा॥शावरमंत्रजाल जिनसिरजा ॥

अनमिल आखर अर्थ नजापू । प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू ॥
सो महेश मोपर अनुकूला । करौं कथा मुद मंगल मूला ॥
सुमिरिशिवा शिवपाय पसाऊ । बरणौं रामचरित चितचाऊ ॥
भणित मोरिशिवकृपाबिभाती । शशिसमाजमिलिमनहुंसुराती ॥
जो यह कथा सनेह समेता । कहिहैंसुनिहहिंसमुझिसचेता ॥
होइहहिं रामचरण अनुरागी । कलिमल रहितसुमंगलभागी ॥
दो० सपनेहुं सांचहु मोहिंपर जो हरि गौरि पसाउ ।
तौफुरहोउजो कहहु सब भाषा भणित प्रभाउ ॥
बन्दौं अवधपुरी अति पावनि । सरयूसरिकलिकलुषनशावनि॥
प्रणऊं पुर नर नारि बहोरी । ममता जिनपरप्रभुहिनथोरी ॥
सियनिन्दक अघओघ नशाये । लोक बिशोक बनाइ बसाये ॥
बन्दौं कौशल्या दिशि प्राची । कीरतिजासु सकलजगमाची ॥
प्रकट्यो जहंरघुपतिशशिचारू । विश्वसुखदखलकमलतुषारू ॥
दशरथ राउ सहित सब रानी । सुकृत सुमंगल मूरति जानी ॥
करौं प्रणाम करम मनबानी । करहु कृपासुत सेवक जानी ॥
जिनहिं बिरचिबड़भयउबिधाता । महिमाअवधिरामपितुमाता ॥
सो० बन्दौं अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि रामपद ।
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनतृणइव परि हरेउ ॥
प्रणवौं परिजन सहित बिदेहू । जाहि राम पद गूढ़ सनेहू ॥
योग भोग महं राखेउ गोई । रामबिलोकत प्रकटेउ सोई ॥
प्रणवौं प्रथम भरत के चरणा । जासु नेम ब्रत जाइन बरणा ॥
राम चरण पंकज मन जासू । लुब्ध मधुप इव तजै न पासू ॥
बन्दौं लक्ष्मण पद जल जाता । शीतल सुभग भक्तसुखदाता ॥
रघुपति कीरतिबिमल पताका । दण्ड समान भयो यशजाका ॥
शेष सहस्त्र शीश जग कारन । जो अवतरेउ भूमि भयटारन ॥
सदा सो सानुकूल रह मोपर । कृपासिन्धु सौमित्रि गुणाकर॥
रिपुसूदन पद कमल नमामी । शूरसुशील भरत अनुगामी ॥

महाबीर बिनऊं हनुमाना । राम जासु यश आप बखाना ॥

सो० बन्दौं पवनकुमार खल बनपावक ज्ञान घन ।
जासु हृदय आगार बसहिं रामशर चापधर ॥

कपिपति ऋक्षनिशाचर राजा । अंगदादि जे कीश समाजा ॥
बन्दौं सबके चरण सुहाये । अधमशरीर राम जिन पाये ॥
रघुपति चरण उपासक जेते । खग मृगसुरनर असुरसमेते ॥
बन्दौं पद सरोज सब केरे । जे बिनु काम राम के चेरे ॥
शुकसनकादिआदि मुनिनारद । जे मुनिवर बिज्ञान बिशारद ॥
प्रणऊं सबहिं धरणिधरिशीशा । करहुकृपा जन जानिमुनीशा ॥
जनकसुताजगजननि जानकी । अतिशयप्रियकरुणानिधानकी ॥
ताके युग पद कमल मनाऊं । जासुकृपा निर्मल मति पाऊं ॥
पुनिमन बचनकरम रघुनायक । चरणकमल बन्दौंसबलायक ॥
राजिव नयन धरे धनुशायक । भक्तबिपतिभंजन सुखदायक ॥

दो० गिराअर्थजलबीचिसम कहियतभिन्न न भिन्न ।
बन्दौं सीताराम पद जिनहिं परमप्रिय खिन्न ॥

बन्दौं राम नाम रघुवर के । हेतु कृशानु भानु हिम करके ॥
बिधि हरिहर मयबेद प्राणसे । अगुण अनूप गुणनिधान से ॥
महा मंत्र जो जपत महेशू । काशी मुक्ति हेतु उपदेशू ॥
महिमा जासु जान गण राऊ । प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥
जानि आदिकबि नाम प्रतापू । भयउ शुद्ध करि उलटाजापू ॥
सहस नामसमसुनि शिववानी । जपि जेईं शिव संग भवानी ॥
हर्ष हेतु हेरि हरिही को । कियभूषण तिय भूषण तीको ॥
नाम प्रभाव जान शिवनीके । काल कूट फल दीन अमीके ॥

दो० बरषाऋतु रघुपति भगति तुलसीशालिसुदास ।
राम नाम बर बरण युग श्रावण भादौं मास ।

आखर मधुर मनोहर दोऊ । बरणबिलोचन जनजियजोऊ ॥
सुमिरत सुलभसुखद सबकाहू । लोक लाहु परलोक निबाहू ॥

कहतसुनत सुमिरत सुठिनीके । रामलषणसमप्रिय तुलसीके ॥
बरणत बरण प्रीति बिलगाती । ब्रह्मजीव सम सहज संघाती ॥
नर नारायण सरिस सुभ्राता । जग पालक विशेष जनत्राता ॥
भक्तिसुतियकलकरणविभूषण । जगहितहेतु बिमल बिधुपूषण ॥
स्वादतोष सम सुगति सुधाके । कमठ शेष सम धर बसुधाके ॥
जन मन मंजु कंज मधुकरसे । जीह यशोमति हरि हलधरसे ॥
दो० एक छत्र इक मुकुट मणि सब वर्णन पर जोउ ।
तुलसी रघुवर नाम के वर्ण विराजत दोउ ॥
समुझत सरस नाम अरु नामी । प्रीतिपरस्पर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप दोउ ईश उपाधी । अकथअनादि सुसामुझसाधी ॥
को बड़ छोट कहत अपराधू । सुनि गुणभेद समुझिहैंसाधू ॥
देखिय रूप नाम आधीना । रूपज्ञान नहिं नाम बिहीना ॥
रूप विशेष नाम बिनु जाने । करतलगत न परहिं पहिंचाने ॥
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे । आवत हृदय सनेह विशेषे ॥
नाम रूप गति अकथ कहानी । समुझत सुखदनजातबखानी ॥
अगुणसगुणबिच नामसुसाखी । उभय प्रबोधक चतुरदुभाखी ॥
दो० राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरो जो चाहसि उजियार ॥
नाम जीह जपि जागहिंयोगी । बिरति विरंचि प्रपंच वियोगी ॥
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा । अकथ अनामयनाम न रूपा ॥
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ । नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ॥
साधक नाम जपहिंलय लाये । होहिंसिद्धि अणिमादिक पाये ॥
जपहिं नाम जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिंसुखारी ॥
राम भक्त जग चारि प्रकारा । सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहुंचतुरन कहं नाम अधारा । ज्ञानी प्रभुहिं विशेष पियारा ॥
चहुंयुग चहुं श्रुतिनाम प्रभाऊ । कलि विशेष नहिंआनउपाऊ ॥
दो० सकल कामना हीन जे राम भक्ति रस लीन ।

नाम सुप्रेम पियूष हृद तिनहुं किये मन मीन ॥
अगुण सगुण दोब्रह्म स्वरूपा । अकथ अगाधअनादि अनूपा ॥
मोरे मत बड़ नाम दुहूते । कियजेहियुगनिजबशनिजहूते॥
प्रौढ़ सुजन जनजानहिंजनकी । कहहुंप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी ॥
एक दारु गत देखिय एकू । पावक युग सम ब्रह्म विवेकू ॥
उभय अगम युगसुगम नामते । कहउं नाम बड़ ब्रह्म रामते ॥
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी । जड़ चेतन घन आनंद राशी ॥
असप्रभुहृदय अछतअविकारी । सकल जीव जनदीन दुखारी ॥
नाम निरूपण नाम यतनतें । सोउप्रकटतजिमिमोलरतनतें ॥

दो० निर्गुणते इहि भांतिबड़ नाम प्रभाव अपार ।
कहउं नामबड़ रामते निजबिचार अनुसार ॥

राम भक्त हित नरतनु धारी । सहिसंकटकिय साधुसुखारी ॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा । भक्त होहिं मुद मंगल वासा ॥
राम एक तापस तिय तारी । नामकोटि खलकुमतिसुधारी ॥
ऋषि हित राम सुकेत सुताकी । सहितसेनसुतकीन्ह बेबाकी ॥
सहित दोष दुख दास दुराशा । दलैनामजिमिरविनिशिनाशा॥
भंज्यो राम आप भव चापू । भवभय भंजन नाम प्रतापू ॥
दंडकवन प्रभु कीन्ह सुहावन । जनमनअमितनामकियपावन॥
निशिचर निकरदले रघुनंदन । नामसकलकलिकलुषनिकंदन॥

दो० शबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ ।
नामउधारे अमितखल वेद विदित गुणगाथ ॥

राम सुकण्ठ बिभीषण दोऊ । राखे शरण जान सब कोऊ ॥
नाम अनेक गरीब निवाजे । लोक वेद बर बिरद बिराजे ॥
राम भालुकपि कटक बटोरा । सेतु हेतु श्रमकीन्ह न थोरा ॥
नाम लेत भवसिन्धु सुखाहीं । करहु बिचार सुजन मनमाहीं ॥
राम सकुल रण रावण मारा । सीयसहित निजपुरपगुधारा ॥
राजा राम अवध रजधानी । गावतगुण सुरमुनिवर बानी ॥

सेवक सुमिरत नाम सप्रीतो । बिनश्रमप्रबलमोहदलजीती ॥
फिरत सनेह मगन सुख अपने । नाम प्रताप शोचनहिं सपने ॥

दो० ब्रह्म रामते नामबड़ बरदायक बरदानि ।
रामचरितशतकोटिमहं लियमहेशजियजानि ॥

नाम प्रसाद शम्भु अविनाशी । साज अमंगल मंगल राशी ॥
शुक सनकादिसिद्ध मुनियोगी । नाम प्रसाद ब्रह्म सुखभोगी ॥
नारद जानेउ नाम प्रतापू । जगप्रियहरिहरहरिप्रियआपू ॥
नाम जपत प्रभुकीन्ह प्रसादू । भक्त शिरोमणिभे प्रहलादू ॥
ध्रुव सगलानि जप्यो हरिनामू । पायउ अचल अनूपम ठामू ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू । अपने बश करि राख्यो रामू ॥
अपर अजामिलगजगणिकाऊ । भये मुक्त हरिनाम प्रभाऊ ॥
कहउं कहांलगि नाम बड़ाई । रामन सकहिं नाम गुणगाई ॥

दो० राम नामको कल्पतरु कलिकल्याण निवास ।
जो सुमिरत भये भागते तुलसी तुलसीदास ॥

चहुंयुग तीनिकाल तिहुंलोका । भयेनामजपि जीव विशोका ॥
वेद पुराण सन्त मत येहू । सकल सुकृतफल रामसनेहू ॥
ध्यान प्रथम युग मख युगदूजे । द्वापर परितोषत प्रभु पूजे ॥
कलि केवल मल मूल मलीना । पाप पयोनिधि जनमनमीना ॥
नाम कामतरु काल कराला । सुमिरतसमनसकलजगजाला॥
रामनाम कलि अभिमत दाता । हितपरलोक लोकपितुमाता ॥
नहिं कलिकर्म न भक्ति विवेकू । राम नाम अवलम्बन एकू ॥
कालनेमि करि कपट निधानू । राम सुमति समरथहनुमानू ॥

दो० राम नाम नर केशरी कनककशिपु कलिकाल ।
जापकजनप्रहलादजिमि पालहिंदळ सुरसाल ॥

भाय कुभाय अनख आलसहू । नाम जपत मंगलदिशिदशहू ॥
सुमिरि सोनाम रामगुणगाथा । करौं नाइ रघुनाथहि माथा ॥
मोरि सुधारहिं सोसब भांती । जासु कृपानहिं कृपाअघाती ॥

राम सुस्वामि सुसेवक मोसे । निजदिशिदेखिदयानिधिपोसे ॥
लोकहुं वेद सुसाहब रीती । विनय सुनतपहिंचानतप्रीती ॥
गनी गरीब ग्राम नर नागर । पण्डित मूढ़ मलीन उजागर ॥
सुकविकुकविनिजमतिअनुसारी । नृपहिंसराहत सबनर नारी ॥
साधु सुजान सुशील नृपाला । ईश अंशभव परम कृपाला ॥
सुनिसनमानहिं सबन सुबानी । भणितभक्तिमतिगतिपहिंचानी ॥
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ । जानि शिरोमणि कोशलराऊ ॥
रीझत राम सनेह निसोते । कोजगमन्द मलिनमतिमोते ॥

दो० शठ सेवककी प्रीति रुचि रखिहहिंराम कृपालु ।
उपलकियेजलयानजेहिसचिवसुमतिकपिभालु ॥
हैंहु कहावत सब कहत राम कहत उपहास ।
साहेब सीतानाथसे सेवक तुलसी दास ॥

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी । सुनिअघ नरकहुनाकसिकोरी ॥
समुझिसहमिमोहिंअपडरअपने । सोसुधिरामकीन्हनहिंसपने ॥
सुनिअवलोकिसुचितचखुचाही । भक्तिमोरिमतिस्वामिसराही ॥
कहतनशाइ होइ अति नीकी । रीझत राम जानि जनजीकी ॥
रहत न प्रभु चित चूक कियेकी । करत सुरत सौबार हियेकी ॥
जेहिअघबधेउव्याधजिमिबाली । फिरिसुकंठसोइकीन्हकुचाली ॥
सोइ करतूति बिभीषण केरी । सपने सो न राम हिय हेरी ॥
ते भरतहिं भेंटत सनमाने । राज सभा रघुवीर बखाने ॥

दो० प्रभु तरुतर कपिडारपरते किय आप समान ।
तुलसी कहूं न रामसे साहब शील निधान ॥
राम निकाई रावरी है सबहीको नीक ।
जो यह सांचीहै सदा तौ नीको तुलसीक ॥
यहिविधिनिजगुणदोषकहि सबहिंबहुरिशिरनाय ।
बरणौं रघुबर विशदयश सुनिकलि कलुषनशाय ॥

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई । भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई ॥

कहिहैं सोइ सम्बाद बखानी । सुनहुसकलसज्जनसुखमानी ॥
शम्भु कीन्हयहचरित सुहावा । बहुरि कृपाकरिउमहिं सुनावा॥
सो शिवकाकभुशुण्डहिदीन्हा । रामभक्त अधिकारी चीन्हा ॥
तेहिसनयाज्ञवल्क्य मुनिपावा । तिन पुनि भरद्वाज प्रतिगावा ॥
ते श्रोता बकता सम शीला । समदरशी जानहिंहरिलीला ॥
जानहिं तीनिकाल निजज्ञाना । करतलगत आमलक समाना ॥
औरौ जे हरिभक्त सुजाना । कहहिंसुनहिंसमुझहिंबिधिनाना॥

दो० मैं पुनि निज गुरुसन सुनी कथा सुशूकर खेत ।
समुझिनहींतसुबालपन तबअतिरहेउं अचेत ॥
श्रोता बकता ज्ञान निधि कथा रामकी गूढ़ ।
किमिसमुझैंयहजीवजड़कलिमलग्रसितविमूढ़ ॥

तदपि कही गुरु बारहिं बारा । समुझिपरीकछुमतिअनुसारा॥
भाषा बन्ध करब मैं सोई । मोरेमन प्रबोध जेहि होई ॥
जसकछु बुधि विवेक बलमोरे । तस कहिहैं हिय हरिके प्रेरे ॥
निज सन्देह मोह भ्रम हरणी । करौं कथा भवसरितातरणी ॥
बुध विश्राम सकलजन रंजनि । रामकथाकलिकलुषबिभंजनि ॥
राम कथा कलि पन्नगभरणी । पुनि विवेक पावककहं अरणी ॥
राम कथा कलि कामद गाई । सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥
सोइ बसुधातल सुधातरंगिनि । भवभंजनिभ्रमभेक भुवंगिनि ॥
असुरसेनसमनरकनिकन्दिनि।साधुबिबुधकुलहितगिरिनंदिनि ॥
सन्त समाज पयोधि रमासी । विश्व भारधर अचलक्षमासी ॥
यमगणमुहंमसिजगजमुनासी । जीवन मुक्ति हेतु जनु काशी ॥
रामहिं प्रियपावनि तुलसीसी । तुलसिदासहितहियहुलसीसी॥
शिवप्रिय मेकल शैल सुतासी । सकल सिद्ध प्रतिसंपतिराशी ॥
सदगुण सुरगणअंबअदितिसी । रघुवर भक्ति प्रेम परमितिसी ॥

दो० रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेहबन सिय रघुबीर बिहारु ॥

राम चरित चिन्तामणि चारू । संतसुमतितियशुभगशृंगारू ॥
जग मंगल गुण ग्राम रामके । दानि मुक्तिधन धर्म धामके ॥
सदगुरु ज्ञान बिराग योगके । बिबुध बैद भव भीम रोगके ॥
जननि जनकसिय रामप्रेमके । बीज सकल ब्रत धर्म नेमके ॥
शमन पाप संताप शोकके । प्रिय पालक परलोक लोकके ॥
सचिव सुभट भूपति बिचारके । कुम्भजलोभ उदधि अपारके ॥
कामक्रोहकलिमल करिगणके । केहरि शावक जनमन बनके ॥
अतिथि पूज्यप्रीतम पुरारिके । कामद घनदारिद दवारिके ॥
मंत्रमहामणि बिषय व्यालके । मेटत कठिन कुअंक भालके ॥
हरण मोह तम दिनकर करसे । सेवक शालिपाल जलधरसे ॥
अभिमत दानि देव तरवरसे । सेवतसुलभ सुखद हरिहरसे ॥
सुकविशरदनभमन उड़गणसे । रामभक्त जन जीवन धनसे ॥
सकल सुकृत फलभूरि भोगसे । जगहितनिरुपधिसाधुलोगसे ॥
सेवक मन मानस मराल से । पावन गंग तरंग माल से ॥

दो० कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपटदण्ड पाखण्ड ।
दहन राम गुण ग्रामइमि इंधन अनल प्रचण्ड ॥
राम चरित राकेशकर सरिस सुखद सबकाहु
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिशेषबड़लाहु ॥

कीन्ह प्रश्न जेहि भांति भवानी । जिहि बिधिशंकर कहाबखानी ॥
सो सब हेतु कहब मैं गाई कथा प्रबंध बिचित्र बनाई ॥
जिनयह कथा सुनी नहिंहोई । जनि आश्चर्य्य करैं सुनिसोई ॥
कथाअलौकिकसुनहिंजेज्ञानी । नहिंआश्चर्य्यकरहिंअसजानी ॥
राम कथाकीमिति जगनाहीं । असप्रतीति जिनके मनमाहीं ॥
नाना भांति राम अवतारा । रामायण शतकोटि अपारा ॥
कल्प भेद हरि चरित सुहाये । भांति अनेक मुनीसन गाये ॥
करिय न संशय अस उरआनी । सुनियकथासादर रतिमानी ॥

दो० राम अनन्त अनन्त गुणअमित कथाबिस्तार ।

सुनि आश्चर्य्य नमानिहहिं जिनके बिमल बिचार ॥
इहिबिधि सबसंशय करिदूरी । शिर धरिगुरुपद पंकजधूरी ॥
पुनि सबही बिनवौं कर जोरी । करतकथाजेहि लागनखोरी ॥
सादर शिवहि नाइ अब माथा । बरणौं बिशदरामगुणगाथा ॥
संवत सोरह से इकतीसा । करौं कथाहरिपदधरिशीशा ॥
नौमी भौमवार मधु मासा । अवधपुरी यहचरित प्रकाशा ॥
जेहिदिनरामजन्म श्रुतिगावहिं । तीरथसकलतहांचलिआवहिं ॥
असुर नाग खग नर मुनिदेवा । आयकरहिं रघुनायकसेवा ॥
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना । करहिंरामकल कीरतिगाना ॥
दो० मज्जहिं सज्जन वृन्द बहु पावन सरयू नीर ।
जपहिं रामधरि ध्यानउर सुन्दर श्याम शरीर ॥
दरश परस मज्जन अरुपाना । हरै पाप कह वेद पुराना ॥
नदी पुनीतअमितमहिमाअति । कहिनसकैशारदाबिमलमति ॥
राम धामदा पुरीसुहावनि । लोकसमस्तबिदितजगपावनि ॥
चारि खानि जग जीव अपारा । अवध तजेतनु नहिं संसारा ॥
सब बिधि पुरी मनोहर जानी । सकल सिद्धिप्रदमंगलखानी ॥
बिमल कथाकरकीन्ह अरम्भा । सुनतनशाहिं काम मददम्भा ॥
राम चरित मानस यह नामा । सुनत श्रवण पाइय बिश्रामा ॥
मनकर बिषय अनलबन जरई । सोई सुखीजो इहि सरपरई ॥
रामचरित मानस मुनिभावन । बिरचेउ शम्भु सुहावनपावन ॥
त्रिबिधिदोषदुखदारिददावन । कलिकुचालिकलिकलुषनशावन
रचि महेश निज मानस राखा । पाइसुसमय शिवासनभाखा ॥
ताते राम रचित मानस बर । धरेउनाम हियहेरिहरषिहर ॥
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई । सादर सुनहु सुजन मनलाई ॥
दो० जस मानस जेहिबिधिभयो जग प्रचार जेहिहेतु ।
अब सोइ कहौं प्रसंग सब सुमिरि उमा वृषकेतु ॥
शम्भुप्रसादसुमतिहियहुलसी । रामचरित मानसकबितुलसी ॥

करउं मनोहर मति अनुहारी । सुजनसुचितसुनिलेहु सुधारी ॥
सुमति भूमिथल हृदय अगाधू । वेद पुराण उदधि घन साधू ॥
बर्षहिं राम सुयश घन बारी । मधुर मनोहर मंगल कारी ॥
लीला सगुणजोकहहिं बखानी । सोइ स्वच्छताकरै मलहानी ॥
प्रेम भक्ति जो बरणि न जाई । सोइ माधुरता शीतलताई ॥
सो जलसुकृत शालि हित होई । राम भक्ति जग जीवन सोई ॥
मेघा महिगत सोजल पावन । सिमिटिश्रवणमगुचलेउसुहावन॥
भरेउ सुमानसशिथिलथिराना । सुखदशीतरुचिचारुचिराना ॥

दो० सुठि सुन्दर सम्बादबर बिरचेउबुद्धि बिचारि ।
ते यहि पावन सुभगशर घाट मनोहर चारि ॥

सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना । ज्ञाननयन निरखतमनमाना ॥
रघुपति महिमा अगुणअबाधा । बरणब सोइबरबारिअगाधा ॥
रामसीयसम सलिल सुधासम । उपमावीचि बिलासमनोरम ॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई । युक्ति मंजु मणिसीप सुहाई ॥
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा । सोइ बहुरंगकमलकुलसोहा ॥
अरथ अनूप सुभाव सुबासा । सोइ पराग मकरंद सुबासा ॥
सुकृत पुंज मंजुल अलिमाला । ज्ञान बिराग बिचार मराला ॥
धुनि अवरेव कवित गुण जाती । मीन मनोहर ते बहु भांती ॥
अर्थ धर्म्म कामादिक चारी । कहब ज्ञान बिज्ञान बिचारी ॥
नवरस जप तप योग विरागा । ते सब जलधरचारु तड़ागा ॥
सुकृती साधु नाम गुण गाना । ते विचित्र जलविहगसमाना ॥
संत सभा चहुं दिशि अंबराई । श्रद्धा ऋतु बसंत सम गाई ॥
भक्ति निरूपणविविधिविधाना । क्षमा दया द्रुमलता विताना ॥
संयम नियम फूल फल ज्ञाना । हरिपद रतिरसवेद बखाना ॥
औरौ कथा अनेक प्रसंगा । तेइशुकपिकबहुवरणविहंगा ॥

दो० पुहुप बाटिका बागवन सुख सुविहंगविहारु ।
माली सुमन सनेहजल सींचत लोचन चारु ॥

जे गावहिं यह चरित संभारे। तेयहि ताल चतुर रखवारे ॥
सदा सुनहिं सादर नरनारी। ते सुरवर मानस अधिकारी ॥
अति खलजे विषयी बककागा। इहसरनिकटनजाहिं अभागा ॥
शंबुक भेक सिवार समाना। इहां न विषय कथारसनाना ॥
तेहि कारण आवत हियहारे। कामी काक बलाक बिचारे ॥
आवत इहिसर अति कठिनाई। राम कृपा बिनु आइ न जाई ॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला। तिनकेवचनव्याघ्रहरिव्याला ॥
गृह कारज नाना जंजाला। तेइ अतिदुर्गम शैल विशाला ॥
बन बहु विषय मोह मद नाना। नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥
दो० जे श्रद्धा सम्बल रहित नहिं संतनकर साथ।
तिनकहंमानसअगमअति जिनहिंन प्रियरघुनाथ ॥
जो करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहि नींद जुड़ाई होई ॥
जड़ता जाड़ विषम उर लागा। गयहु न मज्जनपावअभागा ॥
करि न जाइ सर मज्जन पाना। फिरिआवहिंसमेतअभिमाना ॥
जो बहोरि कोउ पूछन आवा। सर निन्दाकरिताहि सुनावा ॥
सकलविघ्नव्यापहिंनहि तेही। राम कृपाकरिचितवहिं जेही ॥
सोइ सादर सर मज्जनकरहीं। महाघोर त्रयताप न जरहीं ॥
तेनर यह सर तजहिं न काऊ। जिनके रामचरित भल भाऊ ॥
जो नहाइ चह इहिसर भाई। सो सतसंग करौ मन लाई ॥
अस मानस मानस चख चाही। भइकविबुद्धिविमलअवगाही ॥
बढ्यो हृदय आनंद उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू ॥
चली सुभग कविता सरतासों। रामबिमलजल भरितातासों ॥
सरयू नाम सुमंगल मूला। लोक वेद मतमंजुल कूला ॥
नदी पुनीत सुमानसनंदिनि। कलिमलतृणतरुमूलनिकंदिनि ॥
दो० श्रोता त्रिबिधिसमाजपुर ग्रामनगर दुहुंकूल।
संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगलमूल ॥
राम भक्ति सुरसरि तेहि जाई। मिली सुकीरति सरयुसुहाई ॥

सानुज राम समर यश पावन । मिलेउमहानदशोणसुहावन ॥
युग विच भक्तिदेव मुनिधारा । सोहतिसहितसुविरतिबिचारा॥
त्रिविध ताप त्रासकत्रिमुहानी । राम सरूप सिंधु समुहानी ॥
मानस मूल मिली सुरसरिही । सुनतसुजनमनपावनकरिही॥
बिचबिच कथा बिचित्रविभागा । जनु सरितीरतीर बनबागा ॥
उमा महेश बिवाह बराती । तेजलचर अगणितबहुभांती ॥
रघुबर जन्म अनन्द बधाई । भंवर तरंग मनोहरताई ॥

दो० बाल चरित चहुं बंधुके बनज बिपुल बहु रंग ॥
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारि बिहंग ॥

सीय स्वयम्बर कथा सुहाई । सरित सुहावनि सोछबिछाई ॥
नदी नाव बटु प्रश्न अनेका । केवट कुशल उतर सविवेका ॥
पुनि अनुकथन परस्पर होई । पथिक समाज सोहसरिसोई ॥
घोर धार भृगुनाथ रिसानी । घाट सुबन्ध रामबर बानी ॥
सानुज राम बिबाह उछाहू । सोशुभउमंग सुखदसबकाहू ॥
कहतसुनतहरषहिं पुलकाहीं । तेसुकृती जन मुदितनहाहीं ॥
राम तिलकहितमंगल साजा । पर्व योग जनु जुरेउ समाजा ॥
काई कुमति केकयी केरी । परी जासुफलबिपति घनेरी ॥

दो० समनअमित उतपातसब भरतचरित जपयाग ।
कलिअघखलअवगुणकथनतेजलमलबककाग ॥

कीरति सरित छहूं ऋतु रूरी । समय सुहावनि पावनिभूरी ॥
हिम हिमशैल सुताशिव ब्याहू । शिशिरसुखदप्रभुजन्मउछाहू ॥
बरणब राम विवाह समाजू । सो मुदमंगल मयऋतुराजू ॥
ग्रीषम दुसह राम वन गवनू । पंथ कथा खर आतप पवनू ॥
बर्षा घोर निशाचर रारी । सुरकुल शांति सुमंगलकारी ॥
राम राज सुख बिनय बड़ाई । बिशदसुखदसोइ शरदसुहाई ॥
सतीशिरोमणिसिय गुणगाथा । सोइगुणअमलअनूपमपाथा ॥
भरत सुभाव सुशीतल ताई । सदा एक रस बरणिनजाई ॥

दो० अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परस्परहास ।
भायप भलि चहुं बंधुकी जल माधुरी सुबास ॥
आरति बिनय दीनता मोरी । लघुताललित सुबारिनथोरी ॥
अद्भुत सलिलसुनत गुणकारी । आस पियासमनो मलहारी ॥
राम सुप्रेमहिं पोषत पानी । हरतसकलकलिकलुषगलानी ॥
भव श्रम शोषक तोषक तोषा । शमनदुरितदुख दारिददोषा ॥
काम क्रोध मद मोह नशावन । बिमल विवेक विरागबढ़ावन ॥
सादर मज्जन पान कियेतें । मिटत पाप परिताप हियेतें ॥
जिन यह बारि न मानश धोये । तिनकायर कलिकालबिगोये ॥
तृषितनिरखि रबिकरभवकारी । फिरहिंमृगाजिमिजीवदुखारी ॥
दो० मतिअनुहारि सुबारिगुण गणगुण मनअन्हवाइ ।
सुमिरि भवानी शंकरहि कहकबि कथा सुहाइ ॥
भरद्वाजजिमि प्रश्नकिय याज्ञवल्क्य मुनि पाय ।
प्रथम मुख्य सम्बाद सोइ कहिहौं हेतु बुझाय ॥
अब रघुपति पदपंकरुह हिय धरि पाय प्रसाद ।
कहौंयुगुलमुनिबर्य्यकर मिलन शुभग सम्बाद ॥
भरद्वाजमुनि बसहिं प्रयागा । जिनहिंरामपद अतिअनुरागा ॥
तापस सम दम दया निधाना । परमारथ पथ परम सुजाना ॥
माघ मकर गत रबि जब होई । तीरथ पतिहिं आव सबकोई ॥
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी । सादरमज्जहिं सकलत्रिबेणी ॥
पूजहिं माधव पद जलजाता । परसि अक्षयबट हर्षितगाता ॥
भरद्वाज आश्रम अति पावन । परमरम्यमुनिवर मनभावन ॥
तहां होइ मुनि ऋषयसमाजा । जाहिं जेमज्जन तीरथराजा ॥
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा । कहहिं परस्परहरिगुणगाहा ॥
दो० ब्रह्मनिरूपण धर्मबिधि बरणहिंतत्त्व बिभाग ।
कहहिं भक्ति भगवन्त की संयुतज्ञान बिराग ॥
इहि प्रकार भरिमकर नहाहीं । पुनिसबनिजनिजआश्रमजाहीं ॥

प्रति सम्बत अस होइ अनंदा । मकरमज्जि गवनहिंमुनिवृंदा ॥
एक बार भरि मकर नहाये । सबमुनीश आश्रमनिसिधाये ॥
याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी । भरद्वाज राखेउ पद टेकी ॥
सादर चरण सरोज पखारे । अति पुनीत आसन बैठारे ॥
करि पूजा मुनि सुयश बखानी । बोले अतिपुनीत मृदु बानी ॥
नाथ एक संशय बड़ मोरे । करतल बेदतत्त्व सब तोरे ॥
कहत मोहिं लागत भयलाजा । जो न कहौंबड़होइ अकाजा ॥

दो० सन्तकहहिं असनीतिप्रभु श्रुतिपुराण जो गाव ।
होइ न विमल विवेकउर गुरुसन कियेदुराव ॥

असबिचारि प्रगट्यो निजमोहू । करहुनाथ करि जनपरछोहू ॥
राम नाम कर अमित प्रभावा । सन्त पुराण उपनिषद गावा ॥
सन्तत जपत शम्भु अविनाशी । शिवभगवानज्ञान गुणराशी ॥
आकर चारि जीव जगअहहीं । काशीमरत परमपद लहहीं ॥
सोकि राम महिमा मुनिराया । शिवउपदेश करतकरिदाया ॥
राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं । कहहुबुझायकृपानिधि मोहीं ॥
एक राम अवधेश कुमारा । तिनकरचरितविदित संसारा ॥
नारि विरह दुखलहेउ अपारा । भये रोष रण रावण मारा ॥

दो० प्रभुसोइरामकिअपरकोउ जाहिजपतत्रिपुरारि ।
सत्यधाम सर्वज्ञ तुम कहहु विवेक विचारि ॥

जैसे मिटै मोह भ्रम भारी । कहहु सो कथानाथ विस्तारी ॥
याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई । तुमहिंविदित रघुपतिप्रभुताई ॥
राम भक्त तुम मन क्रम बानी । चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥
चाहहु सुना राम गुण गूढ़ा । कीन्हेउ प्रश्नमनहुं अतिमूढ़ा ॥
तात सुनहु सादर मन लाई । कहहुं रामकी कथा सुहाई ॥
महा मोह महि शेष विशाला । रामकथा कालिका कराला ॥
रामकथा शशिकिरण समाना । सन्तचकोर करहिंतेहिपाना ॥
ऐसे संशय कीन्ह भवानी । महादेव तब कहा बखानी ॥

दो० कहौंसो मति अनुहार अब उमा सम्भु सम्वाद ।
भयउसमयजेहिहेतुजेहि सुनिमुनिमिटहिंबिषाद ॥

एक बार त्रेता युग माहीं । शम्भुगये कुम्भज ऋषिपाहीं ॥
संग सती जग जननि भवानी । पूजे ऋषि अखिलेश्वरजानी ॥
राम कथा मुनिवर्य्य बखानी । सुनीमहेश परम सुखमानी ॥
ऋषि पूंछी हरिभक्ति सुहाई । कही शम्भु अधिकारी पाई ॥
कहतसुनत रघुपति गुणगाथा । कछुदिन तहांरहे गिरिनाथा ॥
मुनिसन बिदा मांगि त्रिपुरारी । चले भवन संग दक्षकुमारी ॥
तेहि अवसर भंजन महिभारा । हरि रघुबंश लीन्ह अवतारा ॥
पिता बचन तजि राज उदासी । दण्डकबनविचरतअबिनाशी ॥

दो० हृदय विचारत जातहर केहिबिधि दरशन होइ ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गये जान सब कोइ ॥

सो० शङ्कर उरअति क्षोभ सती न जानहिं मर्मसोइ ।
तुलसी दरशन लोभ मन डर लोचन लालची ॥

रावण मरण मनुजकर यांचा । प्रभुविधिबचनकीनचहसांचा ॥
जो नहिं जाउं रहै पछितावा । करतबिचार न बनतबनावा ॥
यहि बिधि भये शोच बशईशा । ताही समय जाय दशशीशा ॥
लीन्ह नीच मारीचहि संगा । भयेउतुरत सोइकपट कुरंगा ॥
करि छल मूढ़ हरी वैदेही । प्रभुप्रतापउर बिदित नतेही ॥
मृगबधिबन्धु सहितहरिआये । आश्रमदेखि नयन जलछाये ॥
बिरह बिकल नर इव रघुराई । खोजतबिपिनफिरतदोउभाई ॥
कबहूं योग बियोग न जाके । देखा प्रकट बिरह दुख ताके ॥

दो० अति बिचित्र रघुपति चरितजानहिं परमसुजान ।
जे मतिमन्द बिमोहबश हृदय धरहिं कछुआन ॥

शम्भु समय तेहि रामहिं देखा । उपजा हिय अतिहर्षबिशेखा ॥
भरि लोचन छबिसिन्धु निहारी ।कुसमयजानिनकीन्हचिन्हारी ॥
जय सच्चिदा नन्द जग पावन । असकहिचलेमनोजनशावन ॥

चले जात शिव सती समेता । पुनिपुनि पुलकितकृपानिकेता ॥
सती सो दशा शम्भुकी देखी । उर उपजा संदेह बिशेषी ॥
शंकर जगत बन्द्य जगदीशा । सुरनर मुनि सब नावतशीशा ॥
तिनन्नृपसुतहिकीन्हपरणामा । कहि सच्चिदानन्द परधामा ॥
भयेमगन छबितासु विलोकी । अजहुंप्रीति उररहति न रोकी ॥

दो० ब्रह्म जो व्यापक बिरजअज अकल अनीह अभेद ।
सोकि देह धरि होइनर जाहि न जानत वेद ॥

विष्णु जो सुरहितनरतनु धारी । सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरारी ॥
खोजत सो कि अज्ञ इव नारी । ज्ञान धाम श्रीपति असुरारी ॥
शम्भु गिरापुनि मृषा न होई । शिव सर्वज्ञ जान सब कोई ॥
अस संशय मन भयउ अपारा । होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा ॥
यद्यपि प्रकट न कहेउ भवानी । हर अन्तर्यामी सब जानी ॥
सुनहु सती तव नारिसुभाऊ । संशय असन धरिय उरकाऊ ॥
जासु कथा कुंभजऋषि गाई । भक्तिजासु मैं मुनिहिं सुनाई ॥
सोइ मम इष्ट देव रघुबीरा । सेवत जाहि सदा मुनिधीरा ॥

छं० मुनि धीरयोगीसिद्ध सन्तत बिमल मनजेहिध्यावहीं ।
कहिनेति निगम पुराण आगम जासुकीरति गावहीं ॥
सोइ राम व्यापक ब्रह्मभुवन निकायपतिमायाधनी ।
अवतरेउ अपने भक्त हितनिजतंत्र नितरघुकुलमनी ॥

सो० लागन उर उपदेश यदपि कहेउ शिव बारबहु ।
बोले बिहंसि महेश हरिमाया बल जानि जिय ॥

जोतुम्हरे मन अति सन्देहू । तौ किन जाइ परीक्षा लेहू ॥
तबलगि बैठि रहौं बट छाहीं । जबलगि तुमऐहहु मोहिंपाहीं ॥
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी । करहु सोयतन विवेक विचारी ॥
चली सती शिव आयसुपाई । करहि विचार करौंका भाई ॥
उहांशम्भु असमन अनुमाना । दक्षसुता कहं नहिं कल्याना ॥
मोरेहु कहे न संशयजाहीं । विधि विपरीत भलाईनाहीं ॥

होइहि सोइ जोरामरचिराखा । कोकरि तर्क बढ़ावहि शाखा ॥
असकहि जपनलगे हरिनामा । गई सती जहंप्रभु सुखधामा ॥
दो० पुनिपुनि हृदय विचारकरि धरि सीताकर रूप ।
आगे होइ चलि पंथ तेहि जेहि आवत सुरभूप ॥
लक्ष्मण दीख उमा कृतवेषा । चकित हृदय भ्रमभयउविशेषा ॥
कहिनसकतकछु अतिगंभीरा । प्रभु प्रभाव जानत मतिधीरा ॥
सती कपट जानेउ सुरस्वामी । समदर्शी सब अन्तर्यामी ॥
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना । सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना ॥
सती कीन्ह चह तहउं दुराऊ । देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ ॥
निज मायाबल हृदय वखानी । बोले विहंसि राम मृदु बानी ॥
जोरि पाणि प्रभुकीन्ह प्रणामू । पिता समेत लीन्ह निजनामू ॥
कहेउ बहोरि कहां वृषकेतू । विपिनि अकेलिफिरहुकेहिहेतू ॥
दो० राम वचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोच ।
सती सभीत महेश पहंचली हृदय बड़ शोच ॥
मैं शंकर कर कहा न माना । निज अज्ञान राम पहं आना ॥
जाइ उतर अब देहौं काहा । उर उपजा अति दारुण दाहा ॥
जाना राम सती दुख पावा । निज प्रभाव कछु प्रकटजनावा ॥
सती दीख कौतुक मग जाता । आगे राम सहित सिय भ्राता ॥
फिर चितवा पाछे प्रभु देखा । सहित बंधु सिय सुंदर वेषा ॥
जहंचितवहिंतहंप्रभुआसीना । सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना ॥
देखे शिव विधि विष्णु अनेका । अमित प्रभाव एक ते एका ॥
बन्दत चरण करत प्रभु सेवा । विविध वेष देखे सब देवा ॥
दो० सती विधात्री इन्दिरा देखी अमित अनूप ।
जेहिजेहिवेषअजादिसुर तेहितेहितनु अनुरूप ॥
देखे जहं तहं रघुपति जेते । शक्तिन सहित सकल सुरतेते ।
जीव चराचर जे संसारा । देखे सकल अनेक प्रकारा ॥
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु वेषा । रामरूप दूसर नहिं देखा ॥

अवलोके रघुपति बहुतेरे । सीता सहित न वेष घनेरे ॥
सोइरघुबर सोइलक्ष्मणसीता । देखि सती अतिभईं सभीता ॥
हृदय कम्प तनु सुधिकछुनाहीं । नयन मूंदि बैठीं मग माहीं ॥
बहुरि विलोकेउ नयन उघारी । कछु नदीख तहं दक्ष कुमारी ॥
पुनि पुनि नाइ रामपदशीशा । चलीं तहां जहंरहे गिरीशा ॥
दो० गईं समीप महेश तब हंसि पूंछी कुशलात ।
लीन परीक्षा कवन बिधि कहहु सत्यसबबात ॥
सती समुझि रघुवीर प्रभाऊ । भयबशशिवसनकीन्हदुराऊ ॥
कछु न परीक्षा लीन्ह गुसाईं । कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहनाईं ॥
जो तुमकहा सो मृषा नहोई । मोरे मन प्रतीति अस सोई ॥
तब शंकर देखेउ धरिध्याना । सतीजो कीन्हचरितसबजाना ॥
बहुरि राममायहि शिर नावा । प्रेरि सतिहिजेहिझूठकहावा ॥
हरि इच्छा भावी बलवाना । हृदय बिचारत शम्भुसुजाना ॥
सती कीन्ह सीता करबेषा । शिव उर भयउबिषादबिशेषा ॥
जो अब करौं सती सन प्रीती । मिटै भक्ति पथ होइ अनीती ॥
दो० परम प्रेमनहिं जाइतजि किये प्रेम बड़ पाप ।
प्रकट न कहत महेशकछु हृदय अधिक संताप ॥
तबहिं शम्भु प्रभु पदशिरनावा । सुमिरतरामहृदय असआवा ॥
यहितन सतिहि भेंट मोहिंनाहीं । शिव संकल्पकीन्हमनमाहीं ॥
असविचारि शंकर मति धीरा । चलेभवन सुमिरत रघुवीरा ॥
चलत गगनभइ गिरा सुहाई । जयमहेश भलि भक्ति दृढ़ाई ॥
असप्रण तुमबिन करैकोआना । रामभक्त समरथ भगवाना ॥
सुनि नभगिरा सती उरशोचू । पूछा शिवहि समेत संकोचू ॥
कीन्ह कवन प्रणकहहु कृपाला । सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥
यदपि सती पूंछा बहुभांती । तदपि न कहेउत्रिपुरआराती ॥
दो० सती हृदय अनुमान किय सब जाना सर्बज्ञ ।
कीन्ह कपट मैं शंभुसन नारि सहज जड़ अज्ञ ॥

सो० जलपय सरिसबिकाइ देखहुप्रीतिकि रीतिभल ।
बिलग होइ रस जाय कपट खटाई परतही ॥
हृदय शोचसमुझत निजकरणी । चिन्ताअमितजाइनहिंबरणी ॥
कृपासिन्धु शिव परम अगाधा । प्रकट न कहेउ मोरअपराधा ॥
शंकर रुख अवलोकि भवानी । प्रभुमोहिंतजेउहृदयअकुलानी ॥
निजअघसमुझिनकछुकहिजाई । तपै अवां इव उर अधिकाई ॥
सतिहि सशोच जानि वृषकेतू । कहेउ कथा सुंदर सुखहेतू ॥
वरणत पंथ विविध इतिहासा । विश्वनाथ पहुंचे कैलासा ॥
तहंपुनिशम्भुसमुझिप्रणआपन। बैठे बटतर करि कमलासन ॥
शंकर सहज स्वरूप संभारा । लागि समाधि अखंड अपारा ॥
दो० सती बसहिं कैलासतब अधिक शोच मनमाहिं ।
मर्म न कोऊ जानकछु युगसम दिवस सिराहिं ॥
नित नव शोच सती उरभारा । कब जैहौं दुख सागर पारा ॥
मैं जोकीन्ह रघुपति अपमाना । पुनिपतिबचन मृषाकरिजाना ॥
सो फलमोहिं बिधाता दीन्हा । जोकछु उचित रहासो कीन्हा ॥
अबबिधिअसबूझियनहि तोहीं । शंकर बिमुख जियावहु मोहीं ॥
कहि न जाय कछुहृदयगलानी । मनमहंरामहिं सुमिरिसयानी ॥
जो प्रभु दीनदयाल कहावा । आरति हरण वेद यशगावा ॥
तौ मैं बिनय करौं करजोरी । छूटै बेगि देह यह मोरी ॥
जो मोरे शिवचरण सनेहू । मन क्रम वचन सत्य ब्रतयेहू ॥
दो० तौ समदर्शी सुनिय प्रभु करौ सो वेगि उपाइ ।
होइमरण जेहि बिनहिंश्रमदुस्सह बिपतिबिहाइ ॥
यहिबिधि दुखितप्रजेशकुमारी । अकथनीय दारुण दुखभारी ॥
बीते संवत सहस सतासी । तजी समाधिशंभुअबिनासी ॥
राम नाम शिव सुमिरण लागे । जानेउ सतीजगत पतिजागे ॥
जाइ शम्भुपद बन्दन कीन्हा । सन्मुख शंकर आसन दीन्हा ॥
लगे कहन हरि कथारसाला । दक्ष प्रजेश भये तेहि काला ॥

देखाबिधि बिचारि सबलायक । दक्षहि कीन्हप्रजापतिनायक ॥
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा । अति अभिमानहृदयतबआवा ॥
नहिंकोउ असजन्मेउजगमाहीं । प्रभुता पाइ जाहि मदनाहीं ॥
दो० दक्ष लिये मुनि बोलितब करन लगे बड़याग ।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ॥
किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्वा । बधुन समेत चले सुर सर्वा ॥
बिष्णु बिरञ्चि महेश बिहाई । चले सकल सुर यान बनाई ॥
सती बिलोकेउ गगनबिमाना । जातचले सुन्दर बिधि नाना ॥
सुर सुन्दरी करहिं कल गाना । सुनतश्रवण छूटहिंमुनिध्याना॥
पूछेउ तब शिव कहेउ बखानी । पिता यज्ञ सुनि के हरषानी ॥
जो महेश मोहिं आयसु देहीं । कछुदिन जाइ रहौंमिसएहीं ॥
पतिपरित्याग हृदय दुखभारी । कहै न निज अपराधबिचारी ॥
बोली सती मनोहर बानी । भय संकोच प्रेम रस सानी ॥
दो० पिता भवन उत्सव परम जो प्रभु आयसुहोय ।
तौ मैं जाउं कृपायतन सादर देखन सोइ ॥
कहेउ नीक मोरे मन भावा । यहअनुचितनहिंनेवतपठावा ॥
दक्ष सकल निज सुता बुलाई । हमरे बैर तुम्हैं बिसराई ॥
ब्रह्मसभा हम सन दुखमाना । तेहितेअजहुंकरहिंअपमाना ॥
जो बिन बोले जाहु भवानी । रहै न शील सनेह न कानी ॥
यदपिमित्र प्रभु पितु गुरु गेहा । जाइय बिनु बोले न संदेहा ॥
तदपि बिरोध मानजहं कोई । तहां गये कल्याण न होई ॥
भांति अनेक शम्भु समुझावा । भावी वश नज्ञान उर आवा ॥
कहप्रभुजाहु जो बिनहि बुलाये । नहिं भलि बात हमारेभाये ॥
दो० कहि देखा हर यत्नबहु रहै न दक्ष कुमारि ।
दिये मुख्य गण संगतब बिदा किये त्रिपुरारि ॥
पिता भवन जब गईं भवानी । दक्ष त्रास काहु नसनमानी ॥
सादर भलेहि मिली इकमाता । भगिनी मिलीबहुतमुसकाता ॥

दक्ष न कछु पूंछी कुशलाता । सतिहिबिलोकिजरेसबगाता ॥
सती जाय देखेउ तब यागा । कतहुं न दीखशंभु करभागा ॥
तब चितचढ़ेउ जो शंकरकहेऊ । प्रभुअपमानसमुझिउरदहेऊ ॥
पाछिल दुखनहृदयअसव्यापा । जसयह भयउमहापरितापा ॥
यद्यपिजग दारुण दुखनाना । सबतेकठिन जाति अपमाना ॥
समुझिशोचतिहिंभाअतिक्रोधा । बहुविधिजननीकीन्हप्रबोधा ॥
दो० शिव अपमान न जाइसहि हृदय नहोत प्रबोध ।
सकलसभहिंहठिहटकितबबोली बचन सक्रोध ॥
सुनहु सभासद सकल मुनिंदा । कही सुनी निज शंकरनिंदा ॥
सो फल तुरत लहब सब काहू । भली भांतिपछिताब पिताहू ॥
सन्त शम्भु श्रीपति अपबादा । सुनिय जहांतहंअसमर्य्यादा ॥
काटिय तासु जीभ जु बसाई । श्रवणमूंदिनहिं चलियपराई ॥
जगदातम महेश त्रिपुरारी । जगतजनकसबके हितकारी ॥
पिता मन्दमति निन्दत तेही । दक्ष शुक्र सम्भव यह देही ॥
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू । उर धरि चन्द्रमौलि वृष केतू ॥
अस कहि योग अग्नि तनुजारा । भयउ सकल मखहाहाकारा ॥
दो० सतीमरणसुनि शम्भुगण लगेकरणमखखीश ।
यज्ञ विध्वंस बिलोकि भृगु रक्षा कीन्ह मुनीश ॥
समाचार जब शंकर पाये । बीरभद्र करि कोप पठाये ॥
यज्ञविध्वंसजायतिन्हकीन्हा । सकलसुरन्हविधिवतफलदीन्हा ॥
भइजगबिदित दक्षगति सोई । जस कछु शम्भु बिमुखकीहोई ॥
यह इतिहाससकलजग जाना । ताते मैं संक्षेप बखाना ॥
सतीमरत हरिसन बर मांगा । जन्म जन्मशिवपद अनुरागा ॥
तेहिकारण हिमगिरि गृहजाई । जन्मी पारवती तनु पाई ॥
जब ते उमाशैल गृह आई । सकल सिद्धिसम्पति तहंछाई ॥
जहंतहं मुनिनसुआश्रम कीन्हे । उचित बास हिमभूधर दीन्हे ॥
दो० सदासुमनफल सहितसब द्रुमनव नानाजाति ।

प्रकृतीसुन्दर शैलपर मणिआकर वहुभांति ॥

सरिता सब पुनीत जल वहईं । खगमृग मधुप सुखीसबरहईं ॥
सहज बयर सब जीवन त्यागा । गिरिपरसकलकरहिंअनुरागा॥
सोहशैल गिरिजा गृह आये । जिमिनर राम भक्तिके पाये ॥
नित नूतन मंगल गृह तासू । ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू ॥
नारद समाचार सब पाये । कौतुकहिमगिरि गेहसिधाये ॥
शैलराज बड़ आदर कीन्हा । पद पखारिबर आसनदीन्हा ॥
नारिसहितमुनिपदशिरनावा । चरणसलिलसबभवनसिंचावा ॥
निजसौभाग्यबहुतगिरिबरणा । सुता बोलि मेलीमुनि चरणा ॥

दो० त्रिकालज्ञ सर्वज्ञतुम गति सर्बत्र तुम्हारि ।
कहहुसुताके दोष गुण मुनिवरहृदयबिचारि ॥

कह मुनिबिहँसि गूढ़मृदुबानी । सुतातुम्हारिसकलगुणखानी ॥
सुन्दरि सहज सुशील सयानी । नाम उमा अम्बिका भवानी ॥
सब लक्षण सम्पन्न कुमारी । होइहिसन्ततपियहि पियारी ॥
सदाअचल इहिकर अहिवाता । इहिते यश पैहहिं पितुमाता ॥
होइहि पूज्य सकल जगमाहीं । इहिसेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥
इहिकरनाम सुमिरि संसारा । तियचढ़िहहिंपतिब्रतअसिधारा ॥
शैलसुलक्षण सुता तुम्हारी । सुनहुजेअब अवगुणदुइचारी ॥
अगुण अमान मातु पितुहीना । उदासीन सब संशय छीना ॥

दो० योगी जटिल अकाम तन नगन अमंगल वेष ।
असस्वामी इहिकहंमिलिहि परीहस्त असरेख ॥

सुनिमुनिगिरा सत्यजिय जानी । दुखदम्पतिहिउमा हरषानी ॥
नारदहूं यह भेद न जाना । दशा एकसमुझतबिलगाना ॥
सकल सखीगिरिजा गिरिमैना । पुलक शरीर भरेजलनयना ॥
होय न मृषा देवऋषि भाषा । उमासोवचन हृदयधरिराखा ॥
उपजेउ शिव पद कमल सनेहू । मिलनकठिन मनयहसन्देहू ॥
जानि कुअवसर प्रीति दुराई । सखि उछंग बैठी पुनिजाई ॥

झूठि न होइ देवऋषि बानी । शोचहिंदम्पतिसखी सयानी ॥
उर धरि धीर कहै गिरिराऊ । कहहुनाथ काकरियउपाऊ ॥
दो० कहमुनीशहिमबंतसुनु जोविधिलिखालिलार ।
देव दनुज नरनाग मुनि कोउन मेटन हार ॥
तदपि एक मैं कहौं उपाई । होइ करै जो दैव सहाई ॥
जस बरमैं बरणेउ तुम पाहीं । मिलिहिउमहिंकछुसंशयनाहीं ॥
जे जे बरके दोष बखाने । तेसब शिव पहं मैं अनुमाने ॥
जो बिवाह शंकर सन होई । दोषहु गुण समकह सबकोई ॥
जो अहिसेज शयनहरि करहीं । बुध कछुतिनकहं दोषनधरहीं ॥
भानु कृशानु सर्व रस खाहीं । तिनकहं मन्दकहतकोउनाहीं ॥
शुभअरुअशुभसलिलसबबहहीं। सुरसरिकोउनअपावनकहहीं ॥
समरथकहं नहिं दोष गोसाईं । रबि पावक सुरसरि कीनाईं ॥
दो० जो अस ईर्षाकरहिंनर जड़बिबेक अभिमान ।
परहिं कल्प भरि नरक महंजीव कि ईशसमान ॥
सुरसरि जल कृतबारुणजाना । कबहुं नसंत करहिंतिहिपाना ॥
सुरसरि मिले सुपावन जैसे । ईश अनीशहि अंतर तैसे ॥
शंभु सहज समरथ भगवाना । इहिंबिवाहसबविधिकल्याना ॥
दुराराध्य पै अहहिं महेशू । आश तोष पुनि किये कलेशू ॥
जो तप करै कुमारि तुम्हारी । भाविउ मेटि सकैं त्रिपुरारी ॥
यद्यपि बर अनेक जगमाहीं । इहिकहंशिवतजिदूसरनाहीं ॥
बरदायक प्रणतारत भंजन । कृपासिंधु सेवक मन रंजन ॥
इच्छित फल बिनुशिवअवराधे । लहइ न कोटियोगजपसाधे ॥
दो० असकहिनारदसुमिरिहरिगिरिजहिदीन्हअशीश ।
होइहि सब कल्याण अब संशय तजहु गिरीश ॥
कहिअसब्रह्म भवन मुनिगयऊ । आगिलचरितसुनहुजसभयऊ ॥
पतिहि इकांत पायकहमयना । नाथ न मैंसमुझेउंमुनिबयना ॥
जो घरबर कुलहोइ अनूपा । करिय बिवाहसुता अनुरूपा ॥

नतु कन्या वरु रहै कुमारी । कन्त उमा मम प्राण पियारी ॥
जोनमिलिहिवरगिरिजहियोगू । गिरिजड़सहजकहहिंसबलोगू ॥
सो विचारि पतिकरहु विवाहू । जेहिन बहोरि होइ उरदाहू ॥
अस कहिपरो चरणधरि शीशा । बोले सहित सनेह गिरीशा ॥
वरु पावक प्रकटै शशि माहीं । नारद वचन अन्यथा नाहीं ॥
दो० प्रियाशोच परिहरहु सब सुमिरहु श्रीभगवान ।
पार्वती जिन निर्मयेउ सोइकरिहि कल्यान ॥
अब जो तुमहिं सुतापर नेहू । तौ अस जाइ सिखावन देहू ॥
करैसो तप जेहिमिलहिं महेशू । आनउपाय न मिटहिकलेशू ॥
नारद वचन समुझ सब हेतू । सुन्दरसब गुणनिधि वृषकेतू ॥
अस विचारितुमतजिसब शंका । सबहि भांतिशंकर अकलंका ॥
सुनि पति वचन हर्ष मनमाहीं । गईतुरत उठिगिरिजा पाहीं ॥
उमहि विलोकिनयनभरि वारी । सहित सनेह गोद बैठारी ॥
बारहि बार लेत उरलाई । गदगदकण्ठनकछुकहिजाई ॥
जगत मातु सर्वज्ञ भवानी । मातु सुखद बोली मृदुबानी ॥
दो० सुनहु मातु मैं दीख अस सपन सुनाऊं तोहिं ।
सुन्दर गौर सु विप्रवर अस उपदेशेउ मोहिं ॥
करहु जाय तप शैल कुमारी । नारद कहा सो सत्यविचारी ॥
मातु पितहि पुनि यहमतभावा । तपसुखप्रद दुखदोष नशावा ॥
तप बल रचै प्रपंच विधाता । तपबलबिष्णुसकलजगत्राता ॥
तपबल शम्भु करहिं संहारा । तपबलशेष धरहिं महिभारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भवानी । करहुजाइ तपअसजियजानी ॥
सुनत वचनविस्मित महतारी । सपनसुनायउगिरिहिहकारी ॥
मातु पितहि बहुबिधिसमुझाई । चली उमा तप हित हरषाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता । भयेविकल मुखआवनबाता ॥
दो० वेदगिरा मुनि आइ तबसबहिं कहा समुझाइ ।
पारवती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥

उरधरि उमा प्राणपति चरणा । जाइविपिनलागीं तपकरणा ॥
अति सुकुमारि न तनुतपयोगू । पतिपदसुमिरितजेउसबभोगू ॥
नित नवचरण उपज अनुरागा। बिसरी देह तपहि मनलागा ॥
सम्बत सहस मूलफल खाये । शाक खाइ शत बर्ष गंवाये ॥
कछुदिन भोजन वारि बतासा । कियेकठिनकछुदिनउपवासा ॥
बेल पात महि परे सुखाई । तीन सहस सम्बत सो खाई ॥
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्णा । उमा नाम तबभयउ अपर्णा ॥
देखि उमहिं तप क्षीण शरीरा । ब्रह्म गिराभइ गगन गंभीरा ॥

दो॰ भयेउमनोरथ सफलतव सुनुगिरिराज कुमारि ।
परिहरुदुसहकलेशसब अबमिलिहहिंत्रिपुरारि ॥

असतप काहुन कीन्ह भवानी । भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी ॥
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी । सत्यसदा सन्तत शुचिजानी ॥
आवैं पिता बुलावन जबहीं । हठ परिहर घरजायहु तबहीं ॥
मिलहिंतुमहिंजबसप्तऋषीशा । जानेहु तब प्रमाण बागीशा ॥
सुनतगिराविधिगगन बखानी । पुलकिगातगिरिजा हरषानी ॥
उमा चरित मैं सुन्दर गावा । सुनहु शम्भुकर चरितसुहावा ॥
जबते सती जाइ तनु त्यागा । तबते शिवमन भयउ विरागा ॥
जपहिं सदा रघुनायक नामा । जहँतहँ सुनहिं रामगुणग्रामा ॥

दो॰ चिदानंद सुखधाम शिव विगत मोहमद काम ।
विचरहिंमहिधरिहृदयहरिसकललोकअभिराम ॥

कतहुं मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना । कतहुं रामगुण करहिंबखाना ॥
यदपि अकामतदपि भगवाना । भक्तविरहदुखदुखितसुजाना ॥
यहिविधिगयउकाल बहुबीती । नित नव होइ रामपद प्रीती ॥
नेम प्रेम शंकर कर देखा । अविचल हृदयभक्तिकी रेखा ॥
प्रकटे राम कृतज्ञ कृपाला । रूप शील निधितेजविशाला ॥
बहुप्रकार शंकरहि सराहा । तुम बिनु असव्रतकोनिरबाहा ॥
बहुविधिरामशिवहिसमुझावा । पारबतीकर जन्म सुनावा ॥

अतिपुनीत गिरिजाकी करणी । विस्तरसहितकृपानिधिवरणी ॥

दो० अब विनती ममसुनहुशिव जोमोपर निजनेहु ।
जाइ बिवाहहु शैलजहि यह मोहिं मांगेदेहु ॥

कहशिवयदपिउचितअसनाहीं । नाथवचन पुनिमेटि न जाहीं ॥
शिरधरिआयसु करिय तुम्हारा । परम धर्म्म यह नाथ हमारा ॥
मातु पिता गुरु प्रभु की बानी । विनहिंविचारिकरियशुभजानी ॥
तुम सब भांतिपरम हितकारी । आज्ञा शिरपर नाथतुम्हारी ॥
प्रभु तोषेउ सुनि शंकर वचना । भक्ति विवेक धर्म्मयुत रचना ॥
कह प्रभुहर तुम्हारप्रण रहेऊ । अब उरराखेउ जो हमकहेऊ ॥
अन्तर्द्धान भये अस भाषी । शंकर सोइ मूरति उरराखी ॥
तबहिं सप्तऋषिशिव पहँ आये । बोलेप्रभु अस वचन सुहाये ॥

दो० पारबती पहँ जाइ तुम प्रेम परीक्षा लेहु ।
गिरिहि प्रेरि पठयहु भवन दूरकरेहु संदेहु ॥

ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी । मूरति वन्त तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुनु शैलकुमारी । करहु कवन कारण तप भारी ॥
केहि आराधहु का तुम चहहू । हम सन सत्यमर्म्म सबकहहू ॥
सुनत ऋषिनके वचन भवानी । बोलीं गूढ़ मनोहर बानी ॥
कहत मर्म्ममन अति सकुचाई । हँसिहहु सुनि हमारिजड़ताई ॥
मन हठ परा न सुनै सिखावा । चहत बारिपर भीति उठावा ॥
नारद कहा सत्यसोइ जाना । विनुपंखन हमचहहिं उड़ाना ॥
देखिय मुनि अविवेक हमारा । चाहत पति शंकर अविकारा ॥

दो० सुनत वचनविहँसे ऋषय गिरिसंभव तवदेह ।
नारद कर उपदेश सुनि कहहु बसेउ को गेह ॥

दक्ष सुतन उपदेशिन जाई । तिन फिरि भवन न देखाआई ॥
चित्रकेतु कर घर उन घाला । कनककशिपुकरपुनिअसहाला ॥
नारद शिखजुसुनहिं नरनारी । अवशिभवनतजिहोहिंभिखारी ॥
मनकपटी तनुसज्जन चीन्हा । आपसरिस सबहीं चहकीन्हा ॥

तेहिके वचन मानि विश्वासा । तुमचाहहुपति सहज उदासा ॥
निर्गुण निलज कुबेष कपाली । अकुलअगेह दिगम्बर व्याली ॥
कहहु कवन सुख असबरपाये । भल भूलिहु ठग के बौराये ॥
पंच कहैं शिव सती बिवाही । पुनि अब डोरि मराइन ताही ॥
दो० अबसुखसोवत शोचनहिंभीखमांगि भवखाहिं ।
सहज एकाकिनकेभवन कबहुंकि नारिखटाहिं ॥
अजहूं मानहु कहा हमारा । हम तुमकहँ वर नीक विचारा ॥
अतिसुन्दरशुचिसुखदसुशीला । गावहिं वेद जासु यश लीला ॥
दूषणरहित सकल गुण राशी । श्रीपति पुर वैकुंठ निवासी ॥
असवरतुमहिं मिलाउबआनी । सुनतबचनकह वचन भवानी ॥
सत्य कहहुगिरि भवतन एहा । हठ न छूट छूटै वरु देहा ॥
कनको पुनि पषाण ते होई । जारेउ सहज न परिहर सोई ॥
नारद वचन न मैं परिहरऊं । बसौ भवन उजरो नहिं डरऊं ॥
गुरुके वचन प्रतीति न जेही । सपनेहुसुगमनसुख सिधितेही ॥
दो० महादेव अवगुण भवन विष्णु सकल गुणधाम ।
जेहिकरमन रमजाहिसन ताहिताहि सनकाम ॥
जो तुममिलतेउ प्रथम मुनीशा । सुनतिउंशिखतुम्हारधरिशीशा ॥
अब मैं जन्म शम्भु हितहारा । को गुण दोषहि करै विचारा ॥
जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी । रहिन जाइ विनु किये वरेषी ॥
तौ कौतुकिअन्ह आलसनाहीं । बर कन्या अनेक जगमाहीं ॥
जन्म कोटिलगि रगर हमारी । वरौं शम्भु नतु रहौं कुमारी ॥
तजौं न नारद कर उपदेशू । आप कहहिं शतबार महेशू ॥
मैं पा परौं कहै जगदम्बा । तुम गृहगवनहु भयउ विलम्बा ॥
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी । जयजयजय जगदम्बभवानी ॥
दो० तुममायाभगवान शिव सकल जगत पितु मातु ।
नाइचरणशिर मुनिचले पुनिपुनि हर्षित गात ॥
जाइ मुनिन हिमवन्त पठाये । करिविनती गिरिजहिं गृहलाये ॥

बहुरिसप्तऋषि शिव पहँ जाई । कथा उमाकी सकल सुनाई ॥
भयेमगन शिव सुनत सनेहा । हरषि सप्तऋषि गवने गेहा ॥
मन थिरकरितब शंभु सुजाना । लगेकरन रघुनायक ध्याना ॥
तारकअसुर भयेउ तेहिकाला। भुज प्रताप बलतेज बिशाला ॥
ते सबलोक लोकपति जीते । भये देव सुख सम्पति रीते ॥
अजर अमर सो जीति न जाई। हारे सुर करि बिबिधलराई ॥
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे। देखे बिधि सब देव दुखारे ॥

दो० सबसनकहाबुझाइबिधि दनुजनिधन तबहोइ।
शंभु शुक्र सम्भूत सुत इहि जीतै रण सोइ ॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई । होइहि ईश्वर करिहि सहाई ॥
सती जो तजी दक्ष मखदेहा । जनमी जाइ हिमाचल गेहा ॥
तेइँ तपकीन्ह शंभुपति लागी। शिव समाधि बैठे सब त्यागी ॥
यदपि अहै असमंजस भारी। तदपि बातइक सुनहु हमारी ॥
पठवहु कामजाइ शिवपाहीं । करै क्षोभ शंकर मन मांहीं ॥
तबहम जाइशिवहिंशिरनाई । करवाउब बिवाह बरिआई ॥
यहिबिधिभले देवहित होई । मतिअति नीककहा सबकोई ॥
अस्तुतिसुरन्ह कीन्हअतिहेतू। प्रकट्यो बिषम बाण झषकेतू ॥

दो० सुरनकहीनिजबिपतिसबसुनिमनकीन्हबिचार।
शंभुबिरोधनकुशलमोहिं बिहँसिकहेउअसमार॥

तदपिकरबमैं काज तुम्हारा । श्रुतिकह परम धर्म उपकारा ॥
परहित लागि तजै जो देही। सन्तत सन्त प्रशंसहिं तेही ॥
असकहिचलेउसबहिंशिरनाई। सुमन धनुषकर सहितसहाई ॥
चलतमार असहृदयबिचारा । शिव बिरोधध्रुव मरणहमारा ॥
तब आपन प्रभाव बिस्तारा। निजबशकीन्ह सकलसंसारा ॥
कोपेउ जबहिं बारि चर केतू । क्षणमहं मिटेसकलश्रुतिसेतू ॥
ब्रह्मचर्य ब्रत संयम नाना । धीरज धर्म ज्ञान बिज्ञाना ॥
सदाचार जप योग बिरागा । सभयबिबेक कटक सबभागा ॥

छं० भागेबिबेकसहायसहितसोसुभटसंयुगमहिमुरे ।
सदग्रन्थपर्बतकंदरनमहं जाइतेहिअवसरदुरे ॥
होनिहारकाकरतारकोरखवारजगखरभरपरा ।
दुइमाथकेरतिनाथजेहिकहँकोपिधनुशरकरधरा ॥

दो० जेसजीव जग अचरचर नारि पुरुष असनाम ।
तेनिज निज मर्यादतजि भये सकल बशकाम ॥

सबके हृदय मदन अभिलाषा । लतानिहारि नवहिंतरुशाखा॥
नदी उमंगि अंबुधि कहं धाई । संगम करैं तलाव तलाई ॥
जहं असदशा जड़नकीबरणी । को कहिसकै सचेतन करणी ॥
पशु पक्षीनभ जलथल चारी । भये कामबश समय बिसारी ॥
मदनअंध ब्याकुलसबलोका ।निशिदिननहिंअवलोकहिंकोका॥
देव दनुज नर किन्नर ब्याला । प्रेत पिशाच भूत बेताला ॥
इनकी दशा न कहेउं बखानी । सदा काम के चेरे जानी ॥
सिद्ध बिरक्त महा मुनि योगी । तेपि काम बशभये बियोगी ॥

छं० भये कामबश योगीश तापस पामरनकी कोकहै ।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहै ॥
अबलाबिलोकहिंपुरुषमयजगपुरुषसबअबलामयं।
दुइदण्डभरिब्रह्मांडभीतर कामकृत कौतुक अयं ॥

सो० धरा न काहू धीर सबके मन मनसिज हरे ।
जेहिराखे रघुबीर ते उबरे तेहिकाल महं ॥

उभय घरीअस कौतुक भयऊ । जबलगि कामशंभुपहं गयऊ ॥
शिवहिं बिलोकिसशंकेउ मारू। भयउ यथाथिर सब संसारू॥
भये तुरत जग जीव सुखारे । जिमिमद उतरि गयेमतवारे ॥
रुद्रहि देखि मदन भयमाना । दुराधर्ष दुर्गम भगवाना ॥
फिरतलाजकछुकहि नहिंजाई। मरण ठानिमन रचेसिउपाई॥
प्रकटेसितुरतरुचिर ऋतुराजा। कुसुमित नवतरु राजबिराजा॥
बन उपबन बाटिका तड़ागा । परमसुभगसबदिशाबिभागा ॥

जहँतहँ जनु उमगत अनुरागा। देखिमुयहुमन मनसिजजागा ॥
छं० जागेउमनोभव मुए मनबन सुभगता न परै कही।
शीतलसुगन्धसुमन्दमारुत मदनअनलसखासही ॥
बिकसे सरन्हि बहुकंज गुंजत्त पुंजमंजुल मधुकरा।
कलहंसपिकशुकसरसरवकरिगाननचहिंअप्सरा ॥
दो० सकल कलाकरि कोटि बिधि हारेउ सेनसमेत।
चली न अचलसमाधि शिव कोपेउहृदयनिकेत ॥
देखि रसाल बिटप बर शाखा। तेहिपर चढ़ेउ मदनमन माखा ॥
सुमन चाप निज कर संधाने। अतिरिसताकि श्रवणलगिताने ॥
छांड़े बिषम बिशिख उरलागे। छूटि समाधि शम्भु तब जागे ॥
भयो ईश मन क्षोभ बिशेषी। नयनउघारि सकलदिशिदेखी ॥
सौरभ पल्लव मदन बिलोका। भयउकोप कम्पेउ त्रयलोका ॥
तब शिव तीसर नयन उघारा। चितवतकाम भयउजरिछारा ॥
हाहाकार भयउ जग भारी। डरपेसुर भये असुर सुखारी ॥
समुझि काम सुखशोचहिंभोगी। भये अकंटक साधक योगी ॥
छं० योगीअकंटकभये पतिगति सुनतिरति मुर्छितभई।
रोदतिबदतिबहुभांति करुणा करति शंकरपहँगई ॥
अतिप्रेमकरिबिनतीबिबिधविधिजोरिकरसन्मुखरही।
प्रभुआशुतोषकृपालुशिवअबलानिरखिबोलेसही ॥
दो० अबते रति तव नाथ कर होइहि नाम अनंग।
बिनुबपुब्यापिहिसबहिपुनिसुनुनिजमिलनप्रसंग ॥
जब यदुबंश कृष्ण अवतारा। होइहि हरण महा महिभारा ॥
कृष्ण तनय होइहि पतितोरा। बचन अन्यथा होइ न मोरा ॥
रति गवनी सुनि शंकर बानी। कथा अपर अब कहौं बखानी ॥
देवन समाचार जब पाये। ब्रह्मादिक बैकुण्ठ सिधाये ॥
सबसुर बिष्णु बिरंचि समेता। गये जहां शिव कृपानिकेता ॥
पृथक् पृथक्तिनकीन्हप्रशंसा। भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा ॥

बोले कृपासिंधु वृषकेतू । कहहु अमर आयहु केहिहेतू ॥
कह बिधि तुम प्रभुअंतर्यामी । तदपि भक्तिबश बिनऊंस्वामी ॥
दो० सकल सुरनके हृदयअस शंकर परम उछाह ।
निज नयनन देखाचहहिं नाथ तुम्हार विवाह ॥
यह उत्सव देखिय भरिलोचन । सोकछुकरियमदनमदमोचन॥
काम जारि रतिकहँ बरदीन्हा । कृपासिन्धुयहअतिभलकीन्हा ॥
सांसतिकरिपुनिकरहिं पसाऊ । नाथप्रभुनकर सहजस्वभाऊ ॥
पारबती तप कीन्ह अपारा । करहु तासु अब अंगीकारा ॥
सुनिबिधिबचनसमुझिप्रभुबानी। ऐसोइ होउ कहा सुखमानी ॥
तब देवन दुन्दुभी बजाई । बरषि सुमन जयजय सुरसांई ॥
अवसर जानि सप्तऋषि आये । तुरतहिं बिधिगिरि भवनपठाये ॥
प्रथम गये जहँ रहीं भवानी । बोले बचन मधुर छल सानी ॥
दो० कहा हमार न सुनेहु तब नारद कर उपदेश ।
अबभा झूंठ तुम्हार प्रण जारेउ काम महेश ॥
सुनि बोलीं मुसुकाय भवानी । उचितकहेउमुनिवरबिज्ञानी ॥
तुम्हरे जान काम हर जारा । अब लगि शंभुरहे सबिकारा ॥
हमरे जान सदा शिव योगी । अजअनवद्य अकाम अभोगी ॥
जो मैं शिवसेयउं असजानी । प्रीति समेत कर्म्म मनबानी ॥
तौहमार प्रण सुनहु मुनीशा । करिहहिंसत्यकृपानिधिईशा ॥
तुम जो कहा हरजारेउ मारा । सोअतिबड़अबिबेकतुम्हारा ॥
तात अनलकर सहज स्वभाऊ । हिमतेहिनिकटजाइनहिंकाऊ ॥
गयेसमीप सो अवशि नशाई । जिमिसंपाति निजपक्ष गवांई ॥
दो० हिय हरषेमुनिवचनसुनि देखिप्रीतिबिश्वास ।
चले भवानिहिंनाइशिर गयेहिमाचल पास ॥
सबप्रसंगगिरिपतिहिंसुनावा । मदनदहनसुनिअतिदुखपावा ॥
बहुरि कहेउ रतिकर बरदाना । सुनि हिमवंतबहुतसुखमाना ॥
हृदय बिचारि शंभु प्रभुताई । सादर मुनिवर लिये बुलाई ॥

सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई । वेगि वेदविधि लगन धराई ॥
पत्री सप्तऋषिन सोइ दीन्हा । गहिपदविनयहिमाचलकीन्हा॥
जायविधिहितिनदीन्हसोपाती । बांचतप्रीति न हृदयसमाती ॥
लगनबांचि अजसबहिं सुनाई । हरषे मुनि सब सुर समुदाई ॥
सुमन वृष्टि नभ बाजन बाजे । मंगलकलशदशहुदिशिसाजे ॥

दो० लगे संवारन सकलसुर वाहन बिबिधिविमान ।
होहिं सगुण मंगलसुभग करहिंअप्सरा गान ॥

शिवहिशम्भुगणकरहिंशृंगारा । जटामुकुट अहिमौर संवारा ॥
कुंडल कंकण पहिरे ब्याला । तन विभूति पटकेहरिछाला ॥
शशिल्लिलाट सुन्दर शिर गंगा । नयनतीनि उपवीत भुजंगा ॥
गरल कंठ उर नर शिर माला । अशिववेषशिवधाम कृपाला ॥
कर त्रिशूल अरु डमरु बिराजा । चलेवसह चढ़िबाजहिंबाजा ॥
देखिशिवहिसुरत्रिय मुसुकाहीं । बरलायकदुलहिनिजगनाहीं॥
विष्णु विरंचि आदि सुर ब्राता । चढ़ि चढ़ि बाहनचलेबराता ॥
सुर समाज सब भांति अनूपा । नहिं बरात दूलह अनुरूपा ॥

दो० विष्णुकहाअसविहंसितब बोलिसकलदिशिराज ।
बिलगबिलगहोइचलहुसबनिजनिजसहितसमाज॥

बर अनुहार बरात न भाई । हंसी करेहहु परपुर जाई ॥
विष्णु वचनसुनि सुरमुसुकाने । निजनिजसेनसहितबिलगाने ॥
मनहीं मन महेश मुसुकाहीं । हरिकेब्यंगवचन नहिं जाहीं ॥
अति प्रिय वचन सुनतहरिकेरे । भृंगोप्रेरि सकल गण टेरे ॥
शिव अनुशासनसुनिसबआये । प्रभुपदजलजशीशतिननाये ॥
नाना बाहन नाना बेषा । विहंसेशिवसमाज निजदेखा ॥
कोउ मुखहीन विपुलमुखकाहू । बिनुपदकर कोउबहुपदबाहू ॥
बिपुल नयन कोउनयनबिहीना । रिष्ट पुष्टकोउ अतितन छीना ॥

छं० तनुक्षीणकोउअतिपीनपावनकोउअपावनतनुधरे ।
भूषण करालकपालकर सबसद्यशोणिततनुभरे ॥

खरश्वानसुअरशृगालमुख गणवेषअगणित कोगनै ।
बहुजिन्निसिप्रेतपिशाचयोगिनिभांतिबरणतनहिंबनै ॥
सो० नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ।
देखतअतिबिपरीतबोलहिंवचनविचित्रविधि ॥
जस दूलह तस बनी बराता । कौतुकबिबिधिहोहिंमगजाता॥
इहांहिमाचल रचेउ बिताना । अतिविचित्रनहिंजायबखाना ॥
शैलसकलजहंलगि जगमाहीं । लघुविशालनहिंबरणिसिराहीं॥
बनसागर सब नदी तलावा । हिमिगिरिसबकहंनेवतपठावा॥
काम रूप सुन्दर तनु धारी । सहित समाजसहितबरनारी ॥
गये सब तुरत हिमाचलगेहा । गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥
प्रथमहिं गिरिबहुगृह संवराये । यथायोग जहंतहं सबछाये ॥
पुर शोभा अवलोकि सुहाई । लागै लघु विरंचि निपुणाई ॥
छं० लघुलागविधिकीनिपुणता अवलोकिपुरशोभा सही ।
बनबाग कूप तड़ाग सरिता शुभगता सककोकही ॥
मंगल विपुल तोरण पताका केतु गृहगृह सोहहीं ।
बनितापुरुषसुन्दर चतुरछबि देखिमुनिमनमोहहीं ॥
दो० जगदम्बा जहं अवतरी सोपुर बरणि न जाइ ।
ऋद्धिसिद्धिसम्पतिसकल नितनूतनअधिकाइ ॥
नगर निकट बरात जब आई । पुर शोभा खरभर अधिकाई ॥
करि बनाव सजि वाहन नाना । चले लेन सादर अगवाना ॥
हिय हरषे सुर सेन निहारी । हरिहिदेखिअतिभये सुखारी ॥
शिव समाज जब देखन लागे । बिडरिचले बाहन सब भागे ॥
धरि धीरज तहं रहे सयाने । बालक सबले जीव पराने ॥
गये भवन पूछहिं पितु माता । कहहिंवचन भयकंपित गाता ॥
कहियकहा कहिजाइ न बाता । यमकरधार किधौं बरियाता ॥
वर बौराह बरद असवारा । व्यालकपाल विभूषणछारा ॥
छं० तनछारव्यालकपालभूषणनगनजटिलभयंकरा ।

संगभूतप्रेतपिशाचयोगिनिबिकटमुखरजनीचरा ॥
जोजियतरहहिंबरातदेखतपुण्यबड़ तिनकरसही ।
देखहिंसोउमाबिवाहघरघरबातअसलरिकनकही ॥

दो० समुझिमहेशसमाज सबजननिजनक मुसकाहिं ।
बाल बुझायेबिबिध बिधि निडरहोउडरनाहिं ॥

लै अगवान बरातहि आये । दिये सबहि जनवास सुहाये ॥
मयना शुभ आरती संवारी । संग सुमंगल गावहिं नारी ॥
कंचन थार सोह बर पानी । परिछन चलींहरहिंहरषानी ॥
विकट वेष जब रुद्रहि देखा । अबलन उरभयभयउ विशेषा ॥
भागि भवन बैठी अति त्रासा । गये महेश जहां जनवासा ॥
मयना हृदय भयो दुख भारी । लीन्ही बोलिगिरीश कुमारी ॥
अधिक सनेह गोद बैठारी । श्यामसरोजनयन भरिबारी ॥
जेहिबिधितुमहिं रूपअसदीन्हा । तेइजड़वरबावर कसकीन्हा ॥

छं० कसकीन्हबरबौराहविधिजेइतुमहिंसुन्दरतादई ।
जो फलचहियसुरतरुहि सोबरबशबबूरहिलागई ॥
तुमसहितगिरितेगिरौंपावकजरौंजलनिधिमहंपरौं ॥
घरजाउअपयशहोउजगजीवतबिवाहनहौंकरौं ॥

दो० भई विकल अवलासकल दुखितदेखिगिरिनारि ।
करिबिलाप रोदति बदति सुतासनेह संभारि ॥

नारद कर मैं कहा बिगारा । भवन मोर जिन बसतउजारा ॥
अस उपदेशउमहिंजिनदीन्हा । बौरे वरहि लागितप कीन्हा ॥
सांचेउ उनके मोह न माया । उदासीन धनधाम न जाया ॥
परघर घालक लाज न भीरा । बांझकि जानप्रसवकी पीरा ॥
जननिहिंविकलबिलोकिभवानी । बोलीं युत विवेक मृदुबानी ॥
अस विचारि शोचहुमतिमाता । सो न टरै जो रचेउ विधाता ॥
कर्म्म लिखा जो बावर नाहू । तो कत दोष लगाइय काहू ॥
तुमसनमिटहिंकिविधिकेअंका । मातु व्यर्थ जनिलेहु कलंका ॥

छं० जनिलेहुमातुकलंक करुणापरिहरहु अवसरनहीं
दुखसुखजोलिखालिलारहमरे जावजहंपाउबतहीं
सुनिउमावचनविनीतकोमल सकलअबलाशोचहीं
बहुभांतिविधिहिलगाइदूषणनयनवारिविमोचहीं
दो० तेहि अवसर नारदऋषय औ ऋषि सप्त समेत ।
समाचार सुनितुहिनगिरि गवने तुरत निकेत ॥
तब नारद सबही समुझावा । पूरब कथा प्रसंग सुनावा ॥
मयना सत्य सुनहु मम बानी । जगदम्बा तव सुताभवानी ॥
अजाअनादिशक्तिअविनाशिनि । सदा शंभु अर्द्धंग निवासिनि ॥
जग संभवपालन लयकारणि । निजइच्छालीलावपुधारिणि ॥
जनमी प्रथम दक्ष गृह जाई । नाम सती सुन्दर तनु पाई ॥
तहउं शती शंकरहि बिवाहीं । कथाप्रसिद्धसकल जगमाहीं॥
एक बार आवत शिव संगा । देखेउ रघुकुल कमलपतंगा ॥
भयउ मोह शिव कहानकीन्हा । भ्रमवश वेषसीयकर लीन्हा ॥
छं० सियवेपसती जोकीन्हतेहिअपराध शंकरपरिहरी ।
हरविरहजाइबहोरिपितुके यज्ञयोगानल जरी ॥
अबजनमितुम्हरेभवननिजपतिलागिदारुणतपकिया ।
असजानि संशयतजहु गिरिजासर्बदा शंकर प्रिया ॥
दो० सुनि नारदके बचन तब सबकर मिटा विषाद ।
क्षण महं व्यापेउसकलपुर घरघरयहसम्बाद ॥
तब मयना हिमवंत अनन्दे । पुनि पुनि पारवती पद बन्दे ॥
नारि पुरुष शिशु युवासयाने । नगर लोग सब अतिहरषाने॥
लगे होन पुर मंगल गाना । सजे सबहिंहाटक घटनाना ॥
भांति अनेक भई जेवनारा । सूपशास्त्र जस कछु व्यवहारा॥
सो जेवनारकि जाइ बखानी । वसहिंभवन जेहिमातुभवानी॥
सादर बोले सकल बराती । विष्णु बिरंचि देव सबजाती ॥
बिबिधि पांति बैठी जेवनारा । लगे परोसन निपुण सुआरा ॥

नारि वृन्द सुर जेंवत जानी । लागीं देन गारि मृदुबानी ॥

छं० गारी मधुरसुर देहिं सुंदरि ब्यंग बचन सुनावहीं ।
भोजनकरहिंसुरअतिबिलंबबिनोदपुनिसुखपावहीं ॥
जेंवत जोबढ्यो अनंद सो मुख कोटिहू नपरै कह्यो ।
अचवाइ दीन्हें पान गवने बास जहं जाको रह्यो ॥

दो० बहुरि मुनिन हिमवंत कहं लगन जनाई आइ ।
समय बिलोकि बिवाह कर पठये देव बुलाइ ॥

बोलि सकलसुर सादर लीन्हें । सबहिं यथोचितआसनदीन्हें॥
वेदी वेद बिधान संवारी । सुभग सुमंगल गावहिंनारी॥
सिंहासन अति दिब्य सुहावा । जाहिन बरणिबिरंचिबनावा ॥
बैठे शिव बिप्रन शिर नाई । हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुराई॥
बहुरि मुनीशन उमा बुलाई । करिशृंगार सखी लै आई ॥
देखत रूप सकल सुर मोहैं । बरणैछबिअसजगकबिकोहैं ॥
जगदम्बिका जानि भवभामा । सुरनमनहिंमनकीन्हप्रणामा॥
सुंदरता मर्य्याद भवानी । जाहि न कोटिहुबदनबखानी॥

छं० कोटिहु बदननहिं बनै बरणत जगजननिशोभामहा ।
सकुचहिंकहत श्रुतिशेष शारद मंदमतितुलसी कहा ॥
छबिखानि मातुभवानि गमनी मध्य मंडपशिवजहां ।
अवलोकिसकहिनसकुचिपतिपदकमलमनमधुकरतहां ॥

दो० मुनि अनुशासन गणपतिहिं पूजे शंभुभवानि ।
कोउसुनिसंशयकरहिजनिसुरअनादिजियजानि॥

जस बिबाहकीविधि श्रुतिगाई । महा मुनिन सो सबकरवाई ॥
गहि गिरीश कुश कन्या पानी । शिवहिं समर्पी जानिभवानी ॥
पाणिग्रहण जब कीन्ह महेशा । हिय हर्षे तब सकल सुरेशा ॥
वेद मंत्र मुनिवर उच्चरहीं । जय जयजय शंकरसुरकरहीं ॥
बाजहिंबाजन विविध बिधाना । सुमनवृष्टि नभमें बिधिनाना ॥
हर गिरिजा कर भयहु बिवाहू । सकल भुवनभरि रहाउछाहू ॥

दासी दास तुरग रथ नागा । धेनु बसनमणिवस्तुबिभागा ॥
अन्न कनक भाजन भरि याना । दाइजदीन्ह न जाहिवखाना ॥
छं० दाइज दियोवहुभांति पुनिकरजोरिहिमभूधरकह्यो ।
का देउं पूरण काम शंकर चरण पंकजगहि रह्यो ॥
शिवकृपासागरश्वशुरकर परितोषसबभांतिनकियो ।
पुनि गहेउ पद पाथोज मयना प्रेमपरिपूरण हियो ॥
दो० नाथ उमा मम प्राण सम गृहकिंकरी करेहु ।
क्षमेहु सकल अपराध अव होइ प्रसन्नवरदेहु ॥
बहुविधि शंभु सासु समुझाई । गवनी भवनचरण शिरनाई ॥
जननी उमा बोलितव लीन्हीं । लैउछंग सुंदरसिख दीन्हीं ॥
करेउ सदा शंकर पद पूजा । नारिधर्म्मपति देव न दूजा ॥
वचन कहत भरि लोचन बारी । बहुरिलाइउरलीन्ह कुमारी ॥
कतविधि सिरजिनारिजगमाहीं । पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं ॥
भै अति प्रेम बिकल महतारी । धीरजकीन्ह कुसमयबिचारी ॥
पुनिपुनिमिलतपरतगहिचरणा । परम प्रेमकछु जाइनबरणा ॥
सब नारिन मिलि भेंटिभवानी । जाइजननिउर पुनिलपटानी ॥
छं० जननिहिंबहुरिमिलिचली उचितअशीषसबकाहूदई ।
फिरिफिरिबिलोकतिमातुतन तबसखीलैशिवपहंगई ॥
याचक सकल संतोषि शंकर उमासह भवनहिंचले ।
सब अमर हर्ष सुमन बरषिनिशाननभ बाजहिंभले ॥
दो० चले संग हिमवंत तब पहुंचावन अति हेतु ।
विविधभांति परितोष करिबिदाकीन्हवृषकेतु ॥
तुरत भवन आये गिरिराई । सकल शैल सरलिये बुलाई ॥
आदरदान बिनय बहु माना । सबकर बिदाकीन्हसनमाना ॥
जबहिं शंभु कैलासहिं आये । सुरसबनिजनिजधामसिधाये ॥
जगतमातु पितु शंभु भवानी । तेहिशृंगार न कहौं बखानी ॥
करहिंबिबिधबिधिभोगबिलासा । गणन समेतबसहिंकैलासा ॥

हरगिरिजाविहारनितनयऊ ।इहिविधिविपुलकालचलिगयऊ॥
तब जन्मे षट बदन कुमारा। तारक असुर समर जिनमारा॥
आगमनिगमप्रसिद्ध पुराना। षटमुख जन्म कर्म जगजाना॥
छं० जगजान षटमुख जन्मकर्म प्रताप पुरुषारथ महा।
तेहिहेतु मैं वृषकेतु सुतकर चरित संक्षेपहि कहा॥
यह उमाशम्भु विवाह जे नरनारिकहहिंजे गावहीं।
कल्याणकाज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं॥
दो० चरित सिन्धु गिरिजा रमण वेदन पावहिं पार।
बरणौ तुलसीदास किमि अति मतिमंद गंवार॥
शम्भु चरितसुनिसहजसुहावा।भरद्वाजमुनिअति सुखपावा॥
बहु लालसा कथापर बाढ़ी। नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी॥
प्रेम विवश मुख आवन बानी। दशादेखि हरषे मुनि ज्ञानी॥
अहो धन्य तव जन्म मुनीशा। तुमहिं प्राणसमप्रियगौरीशा॥
शिवपदकमलजिनहिंरतिनाहीं। रामहिंते सपनेहुं न सुहाहीं॥
बिनुछल विश्वनाथ पद नेहू। राम भक्त कर लक्षण येहू॥
शिवसमको रघुपतिव्रत धारी। बिनुअघतजी सतीअसि नारी॥
प्रणकरि रघुपति भक्ति दृढ़ाई। कोशिवसम रामहिंप्रिय भाई॥
दो० प्रथम कहेउंमैं शिव चरित बूझा मर्म्मतुम्हार।
शुचिसेवक तुम रामके रहित समस्त बिकार॥
मैं जाना तुम्हार गुण शीला। कहौं सुनहु अबरघुपतिलीला॥
सुनु मुनि आज समागम तोरे। कहिनजाइ जस सुखमनमोरे॥
रामचरितअतिअमित मुनीशा। कहिनसकहिंशतकोटिअहीशा॥
तदपि यथाश्रुतिकहैं बखानी। सुमिरि गिरापतिप्रभुधनुपानी॥
शारददारु नारि सम स्वामी। राम सूत्र धर अन्तर्यामी॥
जेहिपर कृपा करहिंजनजानी। कविउरअजिरनचावहिंबानी॥
प्रणवउं सोइ कृपाल रघुनाथा। बरणौं विशदतासुगुणगाथा॥
परम रम्य गिरिवर कैलासू। सदा जहां शिव उमानिवासू॥

दो० सिद्ध तपोधन योगिजन सुर किन्नर मुनिवृंद ।
बसहिं तहां सुकृतीसकलसेवहिंशिव सुखकंद ॥
हरिहर बिमुख धर्म रतनाहीं । ते नर तहां न सपनेहुं जाहीं ॥
तेहिगिरिपरबटविटपविशाला । नितनूतन सुन्दरसब काला ॥
त्रिविधिसमीरसुशीतल छाया । शिवविश्रामविटपश्रुतिगाया ॥
एक बार तेहितरप्रभुगयऊ । तरुविलोकिउरअतिसुखभयऊ ॥
निजकर डासि नागरिपुछाला । बैठे सहजहिं शम्भु कृपाला ॥
कुन्द इन्दु बर गौर शरीरा । भुज प्रलम्बपरिधनमुनिचीरा ॥
तरुण अरुण अंबुजसमचरणा । नखद्युतिभक्तहृदयतमहरणा ॥
भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी । आनन शरदचंद छविहारी ॥
दो० जटा मुकुट सुरसरितशिर लोचननलिनविशाल ।
नीलकंठ लावण्यनिधि सोह बालविधु भाल ॥
बैठे सोह काम रिपु कैसे । धरे शरीर शांतरस जैसे ॥
पार्वती भल अवसर जानी । गईं शम्भुपहं मातु भवानी ॥
जानि प्रियाआदर अतिकीन्हा । बामभागआसन हर दीन्हा ॥
बैठीं शिव समीप हरषाई । पूरब जन्म कथा चित आई ॥
पति हियहेतु अधिकअनुमानी । बिहंसि उमाबोलीप्रियबानी ॥
कथा जो सकललोकहितकारी । सोइपूंछनचहै शैल कुमारी ॥
विश्वनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवनमहिमाविदिततुम्हारी ॥
चर अरु अचर नागनर देवा । सकल करहिं पदपंकजसेवा ॥
दो० प्रभुसमरथ सर्वज्ञ शिव सकलकला गुणधाम ।
योगज्ञानवैराग्यनिधि प्रणत कल्पतरु नाम ॥
जो मोपर प्रसन्न सुखराशी । जानिय सत्यमोहिंनिजदासी ॥
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना । कहिरघुनाथकथा विधिनाना ॥
जासु भवन सुर तरु तर होई । सहकिदरिद्र जनित दुखसोई ॥
शशि भूषण असहृदयबिचारी । हरहुनाथममति भ्रम भारी ॥
प्रभुजे मुनि परमारथ बादी । कहहिं रामकहं ब्रह्म अनादी ॥

शेष शारदा वेद पुराना । सकलकरहिंरघुपतिगुणगाना ॥
तुम पुनि रामनाम दिनराती । सादर जपहु अनंग अराती ॥
रामसो अवधनृपति सुतसोई । की अजअगुणअलखगतिकोई ॥
॥ दो० जो नृप तनयतौब्रह्मकिमि नारिविरहमतिभोरि ।
॥ देखि चरितमहिमा सुनतभ्रमति बुद्धिअतिमोरि ॥
जो अनीह व्यापक विभुकोऊ । कहहु बुझायनाथ मोहिंसोऊ ॥
अज्ञ जानिरिसजनि उरधरहू । जेहिविधिमोहमिटैसोइकरहू ॥
मैं बन दीख राम प्रभुताई । अतिभयबिकलनतुमहिंसुनाई ॥
तदपि मलिन मनबोधनआवा । सो फल भलीभांति हमपावा ॥
अजहूं कछु संशय मन मोरे । करहुकृपा बिनवउं करजोरे ॥
प्रभु तबमोहिंबहुभांतिप्रबोधा । नाथसासमुझिकरहुजनिक्रोधा ॥
तब करअसबिमोहमोहिंनाहीं । राम कथा पर रुचि मनमाहीं ॥
कहहु पुनीत राम गुण गाथा । भुजगराज भूषण सुरनाथा ॥
॥ दो० बन्दौं पदधरि धरणिशिर बिनयकरौं करजोरि ।
॥ बरणहु रघुबर बिशदयश श्रुतिसिद्धांत निचोरि ॥
यदपियोषिता अनअधिकारी । दासी मन क्रम बचनतुम्हारी ॥
गूढ़ो तत्त्व न साधु दुरावहिं । आरतअधिकारी जहं पावहिं ॥
अति आरत पूंछौं सुर राया । रघुपति कथाकहहु करिदाया ॥
प्रथम सो कारणकहहुविचारी । निर्गुण ब्रह्म सगुण बपुधारी ॥
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा । बालचरितपुनि कहहु उदारा ॥
कहहु यथा जानकी बिवाहा । राज तजा सो दूषण काहा ॥
बन बसिकीन्हेउचरित अपारा । कहहु नाथ जिमिरावण मारा ॥
राजबैठ कीन्हो बहु लीला । सकल कहहुशंकर सुखशीला ॥
॥ दो० बहुरि कहहु करुणायतनकीन्ह जो अचरजराम ।
॥ प्रजासहित रघुबंशमणि किमिगवने निजधाम ॥
पुनि प्रभुकहहुसोतत्त्वबखानी । जेहिबिज्ञान मगन मुनिज्ञानी ॥
भक्ति ज्ञान बिज्ञानबिरागा । पुनि सबबरणहु सहितबिभागा ॥

औरौ राम रहस्य अनेका । कहहु नाथअति बिमलविवेका ॥
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई । सोउ दयाल राखहु जनिगोई ॥
तुम त्रिभुवन गुरु वेदबखाना । आन जीव पांवर का जाना ॥
प्रश्न उमाके सहज सुहाये । छलबिहीन सुनिशिवमनभाये ॥
हर हिय रामचरित सबआये । प्रेम पुलकि लोचन जलछाये ॥
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा । परमानन्द अमित सुखपावा ॥
दो० मग्न ध्यान रसदगड युगएनिमन बाहिर कीन्ह ।
रघुपति चरित महेश तब हर्षित बरणौ लीन्ह ॥
झूठौ सत्य जाहि बिनु जाने । जिमि भुजंग बिनुरजुपहिचाने॥
जेहि जाने जग जाइ हेराई । जागे यथा सपन भ्रम जाई ॥
बन्दौं बाल रूप सोइ रामू । सब बिधिसुलभजपतजगनामू ॥
मंगल भवन अमंगल हारी । द्रवौसोदशरथ अजिरबिहारी ॥
करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी । हरषि सुधासम गिराउचारी ॥
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी । तुम समाननहिंकोउउपकारी ॥
पूंछेहु रघुपति कथा प्रसंगा । सकल लोक यशपावनिगंगा ॥
तुम रघुबीर चरण अनुरागी । कीन्हेउप्रश्नजगतहितलागी ॥
दो० राम कृपाते पार्व्वती सपनेहु तव मनमाहिं ।
शोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछुनाहिं ॥
तदपि अशंका कीन्हेउ सोई । कहत सुनत सबकर हितहोई॥
जिन हरिकथा सुनीनहिं काना । श्रवणरन्ध्रअहिभवनसमाना ॥
नयनन सन्त दरश नहिं देखा । लोचन मोर पंख कर लेखा ॥
तेशिर कटु तूमर सम तूला । जेन नमत हरिगुरु पदमूला ॥
जिनहरिभक्ति हृदयनहिं आनी । जीवत शव समान ते प्रानी ॥
जे नहिं करहिं राम गुणगाना । जीह सुदादुर जीह समाना ॥
कुलिसकठोर निठुरसोइछाती । सुनिहरिचरित न जोहरषाती ॥
गिरिजा सुनहु रामकरिलीला । सुरहित दनुजबिमोहनशीला ॥
दो० रामकथा सुरधेनुसम सेवत सब सुखदान ।

सन्तसभा सुर लोक सम को न सुनै अस जान ।

राम कथा सुन्दर करतारी । संशय विहग उड़ावन हारी ॥
राम कथा कलिविटपकुठारी । सादर सुनु गिरिराज कुमारी॥
रामनाम गुण चरित सुहाये । जन्मकर्म अगणित श्रुतिगाये ॥
यथा अनन्त राम भगवाना । तथा कथा कीरति गुण नाना ॥
तदपियथा श्रुतिजसमतिमोरी । कहिहौं देखिप्रीति अतितोरी ॥
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई । सुखद सन्त सम्मत मुहिंभाई ॥
एक बात नहिं मोहिं सुहानी । यदपि मोहवश कहेउभवानी ॥
तुम जोकहा रामकोउ आना । जेहिश्रुतिगावधरहिंमुनिध्याना॥

दो० कहहिंसुनहिं असअधमनरग्रसेजो मोहपिशाच ।
पाखण्डी हरिपद विमुख जानहिं झूठ न सांच ॥

अज्ञ अकोविद अन्ध अभागी । सोई बिषय मुकुर मनलागी ॥
लम्पट कपटी कुटिल विशेषी । सपनेहु सन्त सभा नहिं देखी ॥
कहहिं ते वेद असम्मत बानी । जिनहिंन सूझ लाभनहिंहानी ॥
मुकुर मलिनअरुनयनविहीना । राम रूप देखहिं किमिदीना ॥
जिनके अगुणन सगुण विवेका । जल्पहिं कल्पित वचनअनेका ॥
हरिमाया वश जगत भ्रमाहीं । तिनहिंकहतकछुअघटितनाहीं॥
वातुल भूत ,विवश मतवारे । ते नहिं बोलहिं वचन संभारे ॥
जिन कृत महा मोहमदपाना । तिनकरकहा करियनहिंकाना ॥

सो० असनिज हृदयविचारि तजिसंशय भज रामपद ।
सुनुगिरिराजकुमारि भ्रमतम रविकरवचनमम ॥

सगुणहिंअगुणहिंनहिंकछुभेदा । गावहिं मुनि पुराण बुधवेदा ॥
अगुण अरूपअलख अज जोई । भक्त प्रेम वश सगुणसोहोई ॥
जो गुणरहित सगुण सो कैसे । जलहिम उपलविलगनहिंजैसे ॥
जासु नाम भ्रम तिमिरपतंगा । तिहिकिमिकहियविमोहप्रसंगा॥
राम सच्चिदानन्द दिनेशा । नहिं तहंमोह निशा लवलेशा ॥
सहज प्रकाश रूप भगवाना । नहिंतहं पुनिविज्ञानविहाना ॥

हर्ष विषाद ज्ञान अज्ञाना । जीवधर्म अहमिति अभिमाना ॥
राम ब्रह्मव्यापक जग जाना । परमानन्द परेश पुराना ॥
दो० पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रकट परावर नाथ ।
रघुकुलमणिममस्वामिसोइकहिशिवनायउमाथ ॥
निजभ्रमनहिंसमुझहिं अज्ञानी । प्रभुपर मोहधरहिं जड़प्रानी ॥
यथा गगन घन पटलनिहारी । झम्पेउ भानुकहहिं कुविचारी ॥
चितवत लोचन अंगुलि लाये । प्रकट युगलशशितेहिके भाये ॥
उमाराम विषयिक अस मोहा । नभतमधूम धूरि जिमिसोहा ॥
विषय करण सुर जीव समेता । सकल एक ते एक सचेता ॥
सबकर परम प्रकाशक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥
जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू । मायाधीश ज्ञान गुण धामू ॥
जासु सत्यता ते जड़ माया । भास्य सत्यइव मोह सहाया ॥
दो० रजतसीपमहंभास जिमि यथा भानुकर बारि ।
यदपिमृषातिहुंकालसोइ भ्रमनसकै कोउटारि ॥
इहिविधि जगहरि आश्रितरहई । यदपिअसत्य देतदुख अहई ॥
जो सपने शिर काटै कोई । बिनुजागे दुख दूरि न होई ॥
जासुकृपा अस भ्रममिटिजाई । गिरिजा सइ कृपालु रघुराई ॥
आदिअन्त कोउ जासुनपावा । मतिअनुमाननिगमअसगावा ॥
बिनुपद चलै सुनै बिनुकाना । कर बिनु कर्मकरै विधि नाना ॥
आनन रहित सकलरस भोगी । बिनुवाणी वक्ता बड़ योगी ॥
तनु बिनुपरश नयनबिनुदेखा । गहै घ्राण बिनु बास अशेषा ॥
अससबभांतिअलौकिककरणी । महिमा जासुजाय नहिं बरणी ॥
दो० जेहि इमिगावहिंवेदबुध जाहि धरहिं मुनिध्यान ।
सोइदशरथसुतभक्तहित कोशलपति भगवान ॥
काशी मरत जन्तु अवलोकी । जासु नामबल करौं विशोकी ॥
सोइप्रभु मोर चराचर स्वामी । रघुबर सब उर अन्तर्यामी ॥
विवशहु जासुनाम नर कहहीं । जन्मअनेकसंचित अघदहहीं ॥

सादर सुमिरण जो नर करहीं । भववारिधि गोपद इव तरहीं ॥
राम सो परमातमा भवानी । तहँभ्रमअतिअविहिततवबानी ॥
अस संशय आनत उरमाहीं । ज्ञानविराग सकलगुणजाहीं ॥
सुनि शिवकेभ्रम भंजन बचना । मिटिगइ सब कुतर्ककीरचना ॥
भइरघुपति पदप्रीति प्रतीती । दारुण असम्भावना बीती ॥

दो० पुनिपुनि प्रभुपद कमलगहि जोरि पंकरुहपानि ।
बोलीं गिरिजा वचन बर मनहुं प्रेम रस सानि ॥

शशिकर समसुनिगिरातुम्हारी । मिटामोह शरदा तप भारी ॥
तुम कृपालु सब संशय हरेउ । रामस्वरूपजानि मोहिंपरेउ ॥
नाथ कृपा अब गयउ विषादा । सुखीभइउं प्रभु चरणप्रसादा ॥
अबमोहिं आपनिकिंकरि जानी । यदपिसहजजड़ नारिअयानी ॥
प्रथम जो मैं पूंछा सो कहहू । जो मोपर प्रसन्न प्रभुअहहू ॥
राम ब्रह्म चिन्मय अविनाशी । सबरहित सब उरपुर बासी ॥
नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू । मोहिं समुझाइ कहहुवृषकेतू ॥
उमा बचन सुनिपरम विनीता । राम कथा पर प्रीति पुनीता ॥

दो० हिय हर्षे कामारि तब शंकर सहज सुजान ।
बहुबिधिउमहिं प्रशंसिपुनि बोलेकृपा निधान ॥

सो० सुनशुभकथा भवानि रामचरितमानसविमल ।
कहा भुशुंडि बखानि सुनाविहगनायकगरुड़ ॥
सोइसम्बाद उदार जेहिविधि भा आगेकहब ॥
सुनहुराम अवतार चरित परम सुन्दर अनघ ॥
हरिगुणनामअपार कथारूप अगणितअमित ।
मैं निजमति अनुसार कहौं उमासादर सुनहु ॥

सुनि गिरिजाहरिचरितसुहाये । बिपुल बिशदनिगमागमगाये ॥
हरि अवतार हेतु जेहि होई । इदमित्थं कहि जाय न सोई ॥
राम अतर्क बुद्धि मन बानी । मत हमार अससुनहु भवानी ॥
तदपि सन्त मुनिवेद पुराना । जसकछुकहहिंस्वमतिअनुमाना ॥

तब मैं सुमुखि सुनाओं तोहीं। समुझ परैं जस कारण मोहीं॥
जब जब होइ धर्म की हानी। बाढ़हिंअसुर अधम अभिमानी॥
करहिंअनीतिजाइ नहिं बरणी। सीदहिं विप्र धेनु सुर धरणी॥
तबतब प्रभुधरिविविधिशरीरा। हरहिं कृपानिधिसज्जनपीरा॥
दो० असुर मारि थापहिं सुरन्हि राखहिंनिजश्रुतिसेतु।
जग विस्तारहिं विशदयश रामजन्म करहेतु॥
सोइ यश गाइ भक्त भव तरहीं। कृपासिंधु जनहिततनुधरहीं॥
राम जन्म के हेतु अनेका। परम विचित्र एकते एका॥
जन्म एक दुइ कहौं बखानी। सावधान सुनुसुमति भवानी॥
द्वार पाल हरिके प्रिय दोऊ। जय अरु बिजयजानसबकोऊ॥
विप्र शाप ते दोनौं भाई। तामस असुर देह तिन पाई॥
कनककशिपुअरुहाटकलोचन। जगतविदितसुरपतिमदमोचन॥
विजयी समर वीर बिख्याता। धरि वराह बपु एक निपाता॥
होइ नर हरि वपु दूसर मारा। जनप्रहलाद सुयश बिस्तारा॥
दो० भये निशाचर जाइ ते महाबीर बलवान।
कुम्भकरण रावण सुभट सुरविजयी जगजान॥
मुक्त न भयउ हते भगवाना। तीनजन्मद्विजबचन प्रमाना॥
एक बार तिनके हित लागी। धरेउ शरीर भक्त अनुरागी॥
कश्यप अदिति तहां पितुमाता। दशरथ कौशल्या विख्याता॥
एक कल्प इहि विधि अवतारा। चरित पवित्र किये संसारा॥
एक कल्प सुरदेखि दुखारे। समरजलन्धर सनसबहारे॥
शम्भु कीन्ह संग्राम अपारा। दनुजमहाबल मरै न मारा॥
परम सती असुरा धिप नारी। तेहिबल ताहिन जीतपुरारी॥
दो० छल कर टारेउ तासुब्रत प्रभु सुरकारज कीन्ह।
जब तेइ जानेउ परम सब शाप कोपकर दीन्ह॥
तासु शाप हरि कीन्ह प्रमाना। कौतुकनिधि कृपालुभगवाना॥
तहां जलंधर रावण भयऊ। रणहतिरामपरम पद दयऊ॥

एक जन्म कर कारण एहा । जेहिलगि राम धरीनरदेहा ॥
प्रति अवतार कथा प्रभुकेरी । सुनिसुनि बरणोकबिनघनेरी ॥
नारद शाप दीन्ह इक बारा । कल्प एक तेहिलगि अवतारा ॥
गिरिजा चकितभई सुनिबानी । नारद बिष्णुभक्त मुनि ज्ञानी ॥
कारण कौनशाप मुनि दीन्हा । का अपराध रमापति कीन्हा ॥
यह प्रसंगमोहिं कहहु पुरारी । मुनिमनमोह सोअचरजभारी ॥

दो० बोले बिहँसि महेश तब ज्ञानी मूढ़ न कोइ ।
जेहि जस रघुपति करहिंजबसोतसतेहिक्षणहोइ ॥

सो० कहौं रामगुण गाथ भरद्वाज सादर सुनहु ।
भव भंजन रघुनाथ भजुतुलसीतजि मोहमद ॥

हिमगिरिगुहा एकअतिपावनि । बहसमीप सुरसरितसुहावनि ॥
आश्रम परम पुनीत सुहावा । देखिदेवऋषि मनअतिभावा ॥
निरखिशैलगिरिबिपिनिबिभागा । भयउरमापतिपदअनुरागा ॥
सुमिरतहरिहिश्वासगतिबांधी । सहजबिमलमनलागिसमाधी ॥
मुनिगति देखि सुरेश डराना । कामहिबोलि कीन्हसन्माना ॥
सहित सहाय जाहु ममहेतू । चलेउ हरषि हियजल चरकेतू ॥
सुना सीर मनमहं अतित्रासा । चहत देवऋषि ममपुरबासा ॥
जे कामी लोलुप जगमाहीं । कुटिलकाकइव सबहिंडराहीं ॥

दो० सूख हाड़लै भागशठ श्वान निरखि मृगराज ।
छीनिलेइजनिजानजड़ तिमिसुरपतिहिनलाज ॥

तेहिआश्रमहिं मदन जबगयऊ । निजमाया बसन्त निर्म्मयऊ ॥
कुसुमित्तविविध विटप बहुरंगा । कुंजहिं कोकिल गुंजहिं भृङ्गा ॥
चली सुहावन त्रिविधिबयारी । काम कृशानु बढ़ावन हारी ॥
रम्भादिक सुर नारि नवीना । सकल असमशरकलाप्रवीना ॥
करहिं गान बहु तान तरंगा । बहुविधि क्रीड़हिं पानिपतंगा ॥
देखि सहाय मदन हरषाना । कीन्हेसिपुनिप्रपंचविधिनाना ॥
कामकलाकछुमुनिहिनव्यापी । निजभय डरेउ मनो भवपापी ॥

सीम कि चापि सकै कोउतासू । बड़ रखवार रमापति जासू ॥
दो० सहित सहाय सभीत अति मानिहारिमनमैन ।
गहेसिजाइ मुनिवरचरण कहिसुठिआरतबैन ॥
भयउ न नारद मन कछु रोषा । कहिप्रियवचनकामपरितोषा ॥
नाइ चरण शिर आयसु पाई । गयउ मदन तव सहितसहाई ॥
मुनि सुशीलता आपनि करणी । सुरपतिसभा जाइ सबबरणी ॥
सुनि सबके मन अचरजआवा । मुनिहिंप्रशंसिहरिहिंशिरनावा॥
तव नारद गवने शिव पाहीं । जीतिकाम अहमितिमनमाहीं॥
मार चरित शंकरहि सुनावा । अतिप्रियजानिमहेशसिखावा॥
बारबार बिनवउं मुनि ताहीं । जिमियहकथा सुनायउमोहीं ॥
तिमिजनिहरिहि सुनावहुकवहूं । चलेहु प्रसंग दुरायहु तबहूं ॥
दो० शम्भु दीन्ह उपदेश हित नहिं नारदहिंसुहान ।
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान ॥
राम कीन्ह चाहैं सोइ होई । करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥
शम्भुवचन मुनिमननहिं नभाये । तब बिरंचि के लोक सिधाये ॥
एक बार करतल बर बीणा । गावत हरिगुण गानप्रबीणा ॥
क्षीरसिंधु गवने मुनि नाथा । जहंबसिश्रीनिवासिश्रुतिमाथा॥
हर्षि मिले उठि रमा निकेता । बैठे आसन ऋषिहि समेता ॥
बोले बिहंसि चराचर राया । बहुतदिननिकीन्हीमुनिदाया ॥
काम चरित नारद सब भाषे । यद्यपि प्रथम बरजिशिवराखे॥
अति प्रचंड रघुपति की माया । जेहिनमोह असकोजगजाया ॥
दो० रूख बदनकरि बचन मृदु बोले श्री भगवान ।
तुम्हरे सुमिरणते मिटहिं मोह मार मदमान ॥
सुनु मुनि मोह होइ मन ताके । ज्ञान बिराग हृदय नहिंजाके ॥
ब्रह्मचर्य्य ब्रत रति मतिधीरा । तुमहिं कि करै मनोभवपीरा ॥
नारद कहेउ सहितअभिमाना । कृपातुम्हारि सकलभगवाना ॥
करुणानिधि मनदीख बिचारी । उर अंकुरेउ गर्व्व तरु भारी ॥

वेगि सो मैं डारिहौं उपारी । प्रण हमार सेवक हितकारी ॥
मुनिकरहित मम कौतुक सोई । अवशि उपाय करब मैं सोई ॥
तब नारद हरि पद शिरनाई । चलेहृदय अहमितिअधिकाई ॥
श्रीपति निज माया तब प्रेरी । सुनहु कठिन करणी तेहिकेरी ॥
दो० विरचेउ मगुमहं नगरतेहि शतयोजन विस्तार ।
श्रीनिवास पुरते अधिक रचना विविध प्रकार ॥
बसहिं नगर सुंदर नरनारी । जनुबहुमनसिजरतितनुधारी ॥
तेहिपुर बसै शीलनिधि राजा । अगणितहयगजसेनसमाजा ॥
शतसुरेशसम विभव विलासा । रूप तेज बल नीतिनिवासा ॥
विश्व मोहनी तासु कुमारी । श्रीविमोह जेहि रूपनिहारी ॥
सोहरि माया सब गुण खानी । शोभातासु कि जाइ बखानी ॥
करै स्वयम्बर सो नृप बाला । आयेतहं अगणित महिपाला ॥
मुनिकौतुकी नगर तेहि गयऊ । पुरबासिन सन बूझत भयऊ ॥
सुनिसब चरितभूप गृह आये । करि पूजा नृप मुनि बैठाये ॥
दो० आनि दिखाई नारदहिं भूपति राजकुमारि ।
कहहु नाथ गुणदोषसब इहिकर हृदयविचारि ॥
देखिरूप मुनि विरति बिसारी । बड़ी बार लगि रहे निहारी ॥
लक्षण तासु बिलोकि भुलाने । हृदय हर्ष नहिं प्रकटबखाने ॥
जो इहि बरै अमर सो होई । समर भूमि तेहिजीत नकोई ॥
सेवहिं सकल चराचर ताही । बरै शीलनिधि कन्या जाही ॥
लक्षण सब विचारि उरराखे । कछुक बनाइ भूपसन भाखे ॥
सुतासुलक्षिण कहि नृप पाहीं । नारद चले शोच मनमाहीं ॥
करौं जाइ सोइ यतन विचारी । जेहि प्रकारमोहिंबरैकुमारी ॥
जपतपकछु न होय यहिकाला । हेविधिमिलैकवनिविधिबाला ॥
दो० इहिअवसर चाहिय परम शोभा रूप विशाल ।
जो बिलोकि रीझै कुवंरि तव मेलै जयमाल ॥
हरिसन मांगौं सुंदरताई । होइहि जात गहरुअतिभाई ॥

मोरेहित हरि सम नहिं कोऊ । इहि अवसर सहाय सोहोऊ ॥
बहुबिधिबिनयकीन्हतेहिकाला । प्रकटेउप्रभु कौतुकीकृपाला ॥
प्रभुबिलोकि मुनि नयनजुड़ाने । होइहि काज हिये हरषाने ॥
अति आरत कहिकथा सुनाई । करहु कृपा प्रभु होहु सहाई ॥
आपन रूप देहु प्रभु मोहीं । आनभांति नहिंपावहुंओही ॥
जेहिबिधि नाथ होइ हितमोरा । करौसोवेगि दास मैं तोरा ॥
निजमाया बल देखि बिशाला । हिय हंसिबोले दीनदयाला ॥

दो० जेहिबिधिहोइहि परमहित नारदसुनहु तुम्हार ।
सोइ हमकरब न आन कछु बचन न मृषाहमार ॥

कुपथ मांगुरुज ब्याकुल रोगी । बैद्य न देइ सुनहुमुनियोगी ॥
यहिबिधि हित तुम्हार मैं ठयऊ । कहिअसअंतरहितप्रभुभयऊ॥
माया बिवश भये मुनि मूढ़ा । समुझिनहींहरिगिरानिगूढ़ा ॥
गमने तुरत तहां ऋषिराई । जहां स्वयम्बर भूमि बनाई ॥
निज निज आसन बैठे राजा । बहुबनावकरिसहितसमाजा ॥
मुनि मन हर्ष रूप अतिमोरे । मोहिंतजिआनबरिहिनहिंभोरे ॥
मुनिहित कारण कृपा निधाना । दीन्हकुरूप न जाइ बखाना ॥
सोचरित्र लखि काहु न पावा । नारदजानि सबन्हिशिरनावा॥

दो० रहे तहां दुइ रुद्रगण जे जानहिं सब भेउ ।
बिप्र वेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ ॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई । हृदयरूप अहमिति अधिकाई॥
तहं बैठे महेश गण दोऊ । बिप्रवेष गति लखै न कोऊ ॥
करहिं कूट नारदहिं सुनाई । नीक दीन्ह हरि सुंदरताई ॥
रीझिहि राजकुवंरि छबि देखी । इनहिंबरिहिहरिजानिविशेषी॥
मुनिहि मोह मन हाथ पराये । हंसहिं शंभुगणअतिसचुपाये॥
यदपिसुनहिंमुनि अटपट बानी । समुझिन परैबुद्धि भ्रमसानी
काहु न लखासोचरितविशेषी । सो स्वरूप नृपकन्या देखी
मर्कट बदन भयंकर देही । देखत हृदय क्रोध भा तेही

दो० सखी संगलै कुवँरि तब चलि जनु राज मराल ।
देखत फिरै महीप सब कर सरोज जयमाल ॥
जेहि दिशि बैठे नारद फूली । सोदिशिसोन बिलोकेउभूली ॥
पुनिपुनिमुनिउकसहिंअकुलाहीं । देखिदशा हरगण मुसुकाहीं ॥
धरिनृपतन तहं गयउ कृपाला । कुवँरि हरषि मेलीजयमाला ॥
दुलहिनिलैगये लक्ष्मिनिवासा । नृपसमाज सबभयउनिराशा॥
मुनि अतिबिकलमोहमतिनाठी । मणिगिरिगई छूटिजनुगांठी ॥
तब हरगण बोले मुसुकाई । निजमुख मुकुरविलोकहु जाई॥
असकहि दोउ भागे भय भारी । बदन दीख मुनि बारिनिहारी॥
बेष बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा । तिनहिं शापदीन्हाअतिगाढ़ा ॥
दो० होहु निशाचर जाय तुम कपटी पापी दोउ ।
हंसेहु हमहिं सो लेहुफल बहुरिहंसेहुमुनिकोउ ॥
पुनि जल दीख रूप निजपावा । तदपि हृदय संतोष न आवा ॥
फरकत अधर कोप मन माहीं । सपदिचले कमलापति पाहीं ॥
देहौं शाप कि मरिहौं जाई । जगत मोर उपहास कराई ॥
बीचहि पन्थ मिले दनुजारी । संग रमा सोइ राजकुमारी ॥
बोले मधुर बचन सुरसाईं । मुनिकहंचले बिकलकीनाईं ॥
सुनत बचन उपजा अतिक्रोधा । मायावश न रहा मनबोधा ॥
पर सम्पदा सकहु नहिं देखी । तुम्हरे ईर्षा कपट विशेषी ॥
मथत सिंधु रुद्रहि बौरायहु । सुरन प्रेरि विष पानकरायहु ॥
दो० असुर सुरा विषशंकरहिं आपुरमा मणि चारु ।
स्वारथसाधक कुटिलतुम सदाकपटव्यवहारु ॥
परम स्वतंत्र न शिरपर कोई । भावै मनहिं करहु तुम सोई ॥
भलेहि मन्द मन्दहि भलकरहू । विस्मय हर्ष न हियकछुधरहू॥
डहकि डहकि परके सब काहू । अति अशंक मनसदाउछाहू ॥
कर्म्मशुभा शुभ तुमहिंन बाधा । अबलगि तुमहिंनकाहूसाधा ॥
भले भवन अब बायन दीन्हा । पावहुगेफल आपन कीन्हा ॥

वंचयहु मोहिं जवन धरि देहा । सोइतन धरहु शापममयेहा ॥
कपिआकृति तुम कीन्हहमारी । करिहहिंकीश सहायतुम्हारी॥
मम अपकार कीन्ह तुम भारी । नारि विरह तुम होहुदुखारी ॥
दो० शाप शीशधरि हरषिहिय प्रभुसुरकारजकीन्ह ।
निजमायाकी प्रबलता हरषिकृपानिधिलीन्ह ॥
जब हरि माया दूरि निवारी । नहिंतहं रमा न राजकुमारी ॥
तबमुनि अतिसभीतहरिचरणा । गहेपाहि प्रणतारति हरणा ॥
मृषा होहु मम शाप कृपाला । मम इच्छाकह दीन दयाला ॥
मैं दुर्बचन कहेउं बहुतेरे । कहमुनिपापमिटहिंकिमिमेरे ॥
जपहु जाइ शंकर शतनामा । होइहि हृदय तुरत विश्रामा ॥
कोउनहिंशिवसमान प्रियमोरे । असप्रतीति त्यागेहुजनिभोरे ॥
जेहिपर कृपा न करहिं पुरारी । सो न पावमुनिभक्ति हमारी ॥
असउरधरि महि विचरहुजाई । अब न तुमहिंमाया नियराई ॥
दो० बहुविधि मुनिहि प्रबोधिप्रभु तबभये अंतर्द्धान ।
सत्य लोक नारद चले करत रामगुण गान ॥
हरगण मुनिहि जात पथ देखी । विगत मोह मन हर्ष विशेषी ॥
अति सभीत नारद पहं आये । गहि पद आरत वचनसुनाये ॥
हरगण हम न विप्र मुनिराया । बड़अपराध कीन्हफलपाया ॥
शाप अनुग्रह करहु कृपाला । बोले नारद दीनदयाला ॥
निशिचर जाइ होहु तुम दोऊ । वैभव विपुल तेज बल होऊ ॥
भुजबलविश्वजितबतुमजहिया । धरिहैंविष्णुमनुजतनुतहिया ॥
समर मरण हरि हाथ तुम्हारा । होइहहुमुक्त न पुनि संसारा ॥
चले युगल मुनि पद शिरनाई । भये निशाचर कालहि पाई ॥
दो० एक कल्प इहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ।
सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुभार ॥
इहि विधि जन्म कर्म हरि केरे । सुंदर सुखद विचित्र घनेरे ॥
कल्प कल्पप्रति प्रभुअवतरहीं । चारुचरित नानाविधिकरहीं ॥

तब तब कथा मुनीशन गाई । परम विचित्र प्रबन्ध बनाई ॥
विविधप्रसंग अनूप बखाने । करहिंनसुनिआश्चर्य्यसयाने॥
हरि अनंतहरिकथाअनन्ता । कहहिंसुनहिंबहुबिधिश्रुतिसन्ता ॥
रामचंद्र के चरित सुहाये । कल्प कोटिलगि जाहिंनगाये॥
यह प्रसंग मैं कहा भवानी । हरिमाया मोहहिं मुनिज्ञानी ॥
प्रभुकौतुकी प्रणत हितकारी । सेवत सुलभ सकल दुखहारी ॥
सो० सुरनर मुनिकोउ नाहिं जेहि न मोहमायाप्रबल ।
अस विचारिमनमाहिं भजियमहामायापतिहि ॥
अपर हेतु सुनु शैल कुमारी । कहौं विचित्रकथा विस्तारी ॥
जेहिकारण अजअगुण अनूपा । ब्रह्म भये कोशल पुर भूपा ॥
जोप्रभुबिपिन फिरतइम देखा । बन्धु समेत किये मुनि वेषा ॥
जासुचरित अवलोकि भवानी । सती शरीर रहिउ बौरानी ॥
अजहुंन छायामिटत तुम्हारी । तासुचरित सुनु भ्रमरजुहारी॥
लीलाकीन्ह जो तेहिअवतारा । सोसबकहिहौं मतिअनुसारा ॥
भरद्वाज सुनि शंकर बानी । सकुचि सप्रेम उमाहरषानी ॥
लगे बहुरि बरणै वृषकेतू । सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥
दो० सो मैं तुमसन कहौं सब सुनुमुनीश मनलाय ।
रामकथाकलिमलहरणि मङ्गलकरणि सहाय ॥
स्वायम्भू मनु अरु सतरूपा । जिनते भै नर सृष्टि अनूपा ॥
दम्पति धर्म आचरण नीका । अजहुंगावश्रुतिजिनकीलीका ॥
नृप उत्तानपाद सुत तासू । ध्रुव हरिभक्त भये सुत जासू ॥
लघुसुत नाम प्रियव्रत ताही । वेद पुराण प्रशंसत जाही ॥
देवहुती पुनितासु कुमारी । जोमुनि कर्दमकी प्रिय नारी ॥
आदि देवप्रभु दीन दयाला । जठरधरेउजेहिकपिलकृपाला ॥
सांख्यशास्त्रजिन प्रकटबखाना । तत्त्व विचार निपुणभगवाना ॥
तेहिमनुराज कीन्हबहु काला । प्रभुआयसुबहुबिधिप्रतिपाला ॥
सो० होइ न विषय विराग भवनबसत भा चौथपन ।

हृदयबहुतदुखलाग जन्म गयउ हरिभक्ति बिन ।
बरवशराज्यसुतहितब दीन्हा । नारि समेत गमनबन कीन्हा॥
तीरथ वर नैमिष विख्याता । अतिपुनीत साधकसिधिदाता ॥
बसहिंतहांमुनिसिद्ध समाजा । तहं हिय हर्षि चले मनुराजा ॥
पन्थजात सोहहिं मतिधीरा । ज्ञान भक्ति जनु धरे शरीरा ॥
पहुंचे जाइ धेनु मति तीरा । हरषि नहाने निर्म्मल नीरा ॥
आये मिलन सिद्ध मुनिज्ञानी । धर्म्म धुरंधर ऋषिमुनिजानी॥
जहं तहं तीरथ रहे सुहाये । मुनिन सकलसादरकरवाये ॥
कृश शरीर मुनिपटपरिधाना । संत सभानित सुनहिं पुराना ॥
दो० द्वादश अक्षर मंत्र बर जपहिं सहित अनुराग ।
वासुदेव पद पंक रुह दम्पति मन अति लाग ॥
करहिं अहार शाकफल कंदा । सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानन्दा ॥
पुनि हरिहेतु करन तपलागे । बारि अहार मूल फलत्यागे ॥
उर अभिलाष निरंतर होई । देखिय नयन परम प्रियसोई॥
अगुण अखण्ड अनन्तअनादी । जेहि चिंतहि परमारथबादी ॥
नेति नेति जेहि वेद निरूपा । चिदानन्द निरुपाधि अनूपा ॥
शम्भु विरंचि विष्णुभगवाना । उपजहिं जासु अंश तेनाना ॥
ऐसे प्रभु सेवक बश अहहीं । भक्तहेतु लीला तनु गहहीं ॥
जो यह बचन सत्यश्रुतिभाषा । तौ हमार पूजहिं अभिलाषा ॥
दो० इहि विधि बीते वर्ष षट सहस बारि अहार ।
संबत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ॥
बर्ष सहस्रदश त्यागेउसोऊ । ठाढ़े रहे एक पद दोऊ ॥
विधिहरिहर तपदेखिअपारा । मनु समीप आये इक बारा ॥
मांगहु बर बहु भांति लुभाये । परम धीर नहिं चलहिंचलाये॥
अस्थि मात्र ह्वै रहे शरीरा । तदपिमनागपि नहिंमनपीरा ॥
प्रभुसर्वज्ञ दास निज जानो । गति अनन्य तापस नृप रानी ॥
मांगु मांगुवर भै नभ बानी । परम गंभीर कृपा मृत सानी ॥

मृतक जिआवनि गिरा सुहाई । श्रवण रन्ध्र होइउर जबआई ॥
रिष्ट पुष्ट तन भयउ सुहाये । मानहुं अबहिं भवन ते आये ॥
दो० श्रवण सुधासम वचनसुनि पुलक प्रफुल्लितगात ।
बोले मुनि करि दण्डवत प्रेम न हृदय समात ॥
सुनि सेवक सुर तरु सुर धेनू । विधि हरिहर बन्दित पदरेनू ॥
सेवतसुलभ सकल सुखदायक । प्रणतपाल सचराचर नायक ॥
जो अनाथ हित हम पर नेहू । तौ प्रसन्न है यह बर देहू ॥
जो स्वरूप वश शिबमनमाहीं । जेहिकारण मुनियतनकराहीं ॥
जो भुशुण्डि मन मानस हंसा । सगुणअगुणजेहिनिगमप्रशंसा॥
देखहिं हम सो रूपभरिलोचन । कृपाकरहु प्रणतारति मोचन ॥
दम्पति बचन परमप्रिय लागे । मृदुल विनीत प्रेम रस पागे ॥
भक्त बछ्ल प्रभु कृपानिधाना । विश्व वास प्रकटे भगवाना ॥
दो० नील सरोरुह नील मणि नील नीर घर श्याम ।
लाजहिं तन शोभा निरखि कोटि २ शत काम ॥
शरद मयंक बदन छबि सीवा । चारु कपोल चिबुकदरग्रीवा ॥
अधर अरुण रद सुंदर नासा । विधुकरनिकरबिनिंदकहासा ॥
नव अम्बुज अम्बुक छबिनीकी । चितवनललित भावतीजीकी ॥
भृकुटि मनोजचाप छबि हारी । तिलकललाटपटलद्युतिकारी ॥
कुण्डल मकर मुकुट शिरभ्राजा । कुटिलकेशजनुमधुपसमाजा ॥
उर श्रीबत्स रुचिर वनमाला । पदिकहार भूषणमणिजाला ॥
केहरि कंधर चारु जनेऊ । बाहु विभूषण सुंदर तेऊ ॥
करिकरसरिस शुभगभुजदण्डा । कटिनिखंगकर शरकोदण्डा ॥
दो० तड़ित विनिंदक पीतपट उदर रेख बरतीनि ।
नाभि मनोहर लेतिजनु यमुनभवंरछबिछीनि ॥
पद राजीव बरणि नहिंजाहीं । मुनिमनमधुपबसहिंजिहिमाहीं ॥
बाम भाग शोभित अनुकूला । आदिशक्तिछबिनिधिजगमूला ॥
जासु अंश उपजहिं गुणखानी । अगणित उमा रमा ब्रह्मानी ॥

भृकुटि बिलास जासु जगहोई । राम बाम दिशि सीता सोई ॥
छबि समुद्र हरि रूप बिलोकी । इक टक रहे नयन पट रोकी ॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा । तृप्ति न मानहिं मनुसतरूपा ॥
हर्ष विवश तनु दशा भुलानी । परे दण्ड इव गहि पद पानी ॥
शिर परसे प्रभु निज पदकंजा । तुरत उठाये करुणा पुञ्जा ॥
दो० बोले कृपानिधान पुनि अतिप्रसन्नमोहिंजानि ।
मांगहुवर जोइ भावमन महादानि अनुमानि ॥
सुनि प्रभुवचन जोरियुगपानी । धरि धीरज बोले मृदु बानी ॥
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । अब पूजे सब काम हमारे ॥
एक लालसा बड़ि मन माहीं । सुगमअगमकहिजातसोनाहीं॥
तुमहिं देत अतिसुगमगुसाईं । अगमलागिमोहिंनिजकृपिणाई॥
यथा दरिद्र कल्प तरु पाई । बहु सम्पति मांगत सकुचाई ॥
तासु प्रभाव न जाने सोई । तथा हृदय मम संशय होई ॥
सो तुम जानहु अंतरयामी । पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच बिहाय मांगु नृप मोहीं । मोरे नहिं अदेय कछु तोहीं ॥
दो० दानि शिरोमणि कृपानिधि नाथकहौं सतभाव ।
चाहौं तुमहिं समान सुत प्रभुसन कौन दुराव ॥
देखि प्रीति सुनि वचन अमोले । एवमस्तु करुणानिधि बोले ॥
आप सरिस खोजौं कहं जाई । नृप तव तनय होब मैं आई ॥
सतरूपहिं बिलोकि करजोरे । देवि मांगु वर जो रुचितोरे ॥
जो वरनाथ चतुर नृप मांगा । सोइकृपालमोहिंअतिप्रियलागा॥
प्रभु परंतु सुठि होत ढिठाई । यदपिभक्तिहिततुमहिंसुनाई ॥
तुम ब्रह्मादि जनक जगस्वामी । ब्रह्म सकल उर अंतरयामी ॥
अस समुझत मन संशय होई । कहाजो प्रभुप्रमाणपुनिसोई ॥
जे नर भक्त नाथ तव अहईं । जो सुखपावहिंसोगतिलहईं ॥
दो० सोइसुखसोइगतिसोइभगतिसोइनिजचरणसनेहु ।
सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु मोहि कृपा करिदेहु ॥

सुनि मृदुगूढ़ रुचिर बर रचना । कृपासिन्धु बोले मृदुवचना ॥
जो कछु रुचि तुम्हरेमन माहीं । मैं सोदीन्हसब संशयनाहीं ॥
मातु बिबेक अलौकिक तोरे । कबहुंनमिटिहि अनुग्रहमोरे ॥
बन्दि चरण मनु कहेउ बहोरी । अवर एक विनती प्रभुमोरी ॥
सुत विषयक तव पद रतिहोऊ । मोहिंबरु मूढ़कहैकिन कोऊ ॥
मणिबिनुफणिजिमिजलबिनमीना। ममजीवनतिमितुमहिंअधीना
अस बर मांगि चरणगहि रहेऊ । एवमस्तुकरुणानिधिकहेऊ ॥
अब तुम मम अनुशासन मानी । बसहुजाइसुरपतिरजधानी ॥
सो० तहं करि भोग बिलाश तात गये कछुकाल पुनि ।
होइहहु अवध भुआल तबमैं होब तुम्हार सुत ॥
इच्छा मय नर वेष संवारे । होइहौं प्रकट निकेत तुम्हारे ॥
अंशन सहित देह धरि ताता । करिहौंचरित भक्तसुखदाता ॥
जेहि सुनि सादर नरबड़भागी । भवतरिहहिं ममतामदत्यागी ॥
आदिशक्ति जेहिजग उपजाया । सोउअवतरिहिमोरियहमाया॥
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा । सत्य सत्य प्रण सत्यहमारा ॥
पुनिपुनिअसकहि कृपानिधाना। अन्तर्द्धान भये भगवाना ॥
दम्पति उर धरि भक्ति कृपाला । तेहिआश्रमनिबसेकछुकाला ॥
समयपाय तनु तजि अनयासा । जाइकीन्ह अमरावतिबासा ॥
दो० यह इतिहास पुनीतअति उमहिं कहेउवृषकेतु ।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जन्म करहेतु ॥
सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी । जोगिरजा प्रतिशम्भुबखानी ॥
विश्व विदित इक केकय देशू । सत्यकेतु तहं बसै नरेशू ॥
धर्म्म धुरन्धर नीति निधाना। तेज प्रताप शील बलवाना ॥
तेहि के भये युगल सुत वीरा । सब गुणधाम महारण धीरा ॥
रजधानी जेठे सुत आही । नाम प्रतापभानु अस ताही ॥
अपर सुतहिंअरि मर्द न नामा । भुजबलअतुलअचल संग्रामा॥
भाइहि भाइहि परम सुनीती । सकल दोषछल बर्जितप्रीती ॥

जेठे सुतहि राज्य नृप दीन्हा । हरिहितआपुगवनबनकीन्हा ॥
दो० जब प्रताप रवि भयउ नृप फिरी दोहाई देश ।
प्रजापाल अति वेद विधि कतहुं नहीं अघलेश॥
नृपहित कारक सचिव सुजाना । नाम धर्मरुचि शुक्र समाना ॥
सचिव समान बन्धु बल वीरा । आपु प्रताप पुंज रणधीरा ॥
सेन संग चतुरंग अपारा । अमितसुभटसबसमरजुझारा॥
सेन विलोकि राउ हरषाना । अरु बाजे गहगहे निशाना ॥
विजय हेतु कटकाइ बनाई । जहं तहं पड़ी अनेक लड़ाई ॥
सुदिन साधि नृपचल्यो बजाई । जीते सकल भूप बरिआइ॥
सप्तद्वीप भुज बल बश कीन्हें । लै लै दण्डछांड़ि नृप दीन्हें ॥
सकलअवनिमण्डल तेहिकाला । एक प्रताप भानु महिपाला ॥
दो० स्ववश विश्वकरि बाहुबल निजपुरकीन्ह प्रवेश ।
अर्थ धर्म्म कामादि सुख सेवहिं सबै नरेश ॥
भूप प्रताप भानु बल पाई । कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥
सब दुख बर्ज्जित प्रजासुखारी । धर्म्म शील सुन्दर नर नारी॥
सचिव धर्मरुचि हरिपद प्रीती । नृपहित हेतु सिखावननीती॥
गुरु सुर सन्त पितर महिदेवा । करैं सदा नृप सबकी सेवा ॥
भूप धर्म्म जे वेद बखाने । सकलकरैं सादर सुखमाने ॥
दिनप्रतिदेइविविधिविधिदाना । सुनै शास्त्र बर वेद पुराना ॥
नाना बापी कूप तड़ागा । सुमन बाटिका सुन्दर बागा ॥
विप्र भवन सुर भवन सुहाये । सब तीरथन विचित्र बनाये ॥
दो० जहंलगि कहे पुराण श्रुति एकएक सब याग ।
वार सहस्र सहस्र नृप किये सहित अनुराग ॥
हृदय न कछु फल अनुसंधाना । भूप विवेकी परम सुजाना ॥
करै जो धर्म्म कर्म्म मनबानी । वासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी॥
चढ़ि बरबाजि वार इक राजा । मृगयाकरसबसाजि समाजा॥
विन्ध्याचल गंभीर बन गयऊ मृग पुनीत बहु मारतभयऊ ॥

फिरत बिपिन नृपदीख बराहू । जनुबनदुरे शशिहि ग्रसिराहू ॥
बड़ बिधुनहिंसमात मुखमाहीं । मनहुक्रोधबश उगिलतनाहीं ॥
कोल कराल दशन छबिगाई । तनु बिशाल पीवर अधिकाई ॥
घुरघुरात हय आरव पाये । चकित बिलोकत कान उठाये ॥
दो० नील महीधर शिखरसम देखि बिशाल बराह ।
चपरि चलेउ हयसुठिकु नृप हांकि न होयनिबाह ॥
आवत दीख अधिक रव बाजी । चला बराह मरुत गतिभाजी ॥
तुरतकीन्ह नृप शर सन्धाना । महिमिलिगयउबिलोकतबाना ॥
तकि तकि तीर महीशचलावा । करिछल सुवर शरीर बचावा ॥
प्रकटत दुरत जाइ मृग भागा । रिसबश भूपचलेउ संगलागा ॥
गयउ दूरि बन गहन बराहू । जहांनाहिं गज बाजि निबाहू ॥
अतिअकेल बन बिपुल कलेशू । तदपि न मृगमग तजेनरेशू ॥
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा । भागि पैठु गिर गुहा गंभीरा ॥
अगमदेखि नृप अतिपछिताई । फिरेउ महाबन परेउ भुलाई ॥
दो० खेद खिन्न तिरषित क्षुधित राजा बाजि समेत ।
खोजतब्याकुलसरितसर जल बिनुभयउ अचेत ॥
फिरत बिपिन आश्रम इकदेखा । तहंबस नृपतिकपटमुनिबेषा ॥
जासु देश नृप लीन्ह छुड़ाई । समर सेन तजि गयउ पराई ॥
समय प्रताप भानुकर जानी । आपनअतिअसमयअनुमानी ॥
गयउ न गृह मन बहुतगलानी । मिलानराजहिं नृपअभिमानी ॥
रिसिउरमारिरंक जिमि राजा । बिपिन बसैतापस के साजा ॥
तासु समीप गवन नृपकीन्हा । यहप्रताप रबि तेइतबचीन्हा ॥
राउ तृषित नहिं सोपहिंचा ना । देखिसुबेष महामुनि जाना ॥
उतरि तुरंग ते कीन्ह प्रणामा । परम चतुर नकहेउनिजनामा ॥
दो० भूपतितृषित बिलोकि तेइ सरवर दीन्हदेखाइ ।
मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाइ ॥
गा श्रम सकल सुखीनृपभयऊ । निज आश्रम तापस लैगयऊ ॥

आसन दीन्ह अस्त रविजानी । पुनितापस बोला मृदुबानी ॥
को तुम कस बन फिरहु अकेले । सुंदर युवा जीव पर हेले ॥
चक्रिवर्त्ति के लक्षण तोरे । देखत दया लागि अतिमोरे ॥
नाम प्रताप भानु अवनीशा । तासु सचिवमैं सुनहुमुनीशा ॥
फिरत अहेरहिं परेउंभुलाई । बड़भाग्य देखेउं पद आई ॥
हमकहं दुर्लभदरश तुम्हारा । जानतहैं। कछु भल होनहारा ॥
कहमुनितात भयउ अंधियारा । योजन सत्तर नगर तुम्हारा ॥
दो० निशा घोर गम्भीर बन पंथ न सूझ सुजान ।
बसहु आज असजानितुम जायहु होत बिहान ॥
तुलसी जस भवतव्यता तैसे मिलै सहाइ ।
आपु न आवै ताहि पै कि ताहि तहां लैजाइ ॥
भलेहिनाथ आयसुधरि शीशा । बांधि तुरंग तरु बैठु महीशा ॥
नृप सबभांति प्रशंसेउ ताही । चरण बन्द्य निज भाग्यसराही ॥
पुनिबोलेउ मृदु गिरा सुहाई । जानि पिताप्रभु करौं ढिठाई ॥
मोहिं मुनीश सुत सेवकजानी । नाथ नामनिजकहहु बखानी ॥
तेहिनजानन्नृपनृपहिसोजाना । भूपसुहृद सो कपट सयाना ॥
बैरी पुनि क्षत्री पुनि राजा । छलबल कीन्हचहै निजकाजा ॥
समुझिराजसुखदुखितअराती । अवां अनल इव जरैसुछाती ॥
सरल बचन नृपकेसुनिकाना । बयर संभारि हृदय हरषाना ॥
दो० कपट बोरि बाणी मृदुल बोलेउ युक्तिसमेत ।
नाम हमार भिखारिअब निरधन रहित निकेत ॥
कह नृपजे बिज्ञान निधाना । तुमसारिखे गलित अभिमाना ॥
सदा अपनपौ रहहिं दुराये । सब बिधिकुशल कुवेष बनाये ॥
तेहि ते कहहिं संत श्रुति टेरे । परम अकिंचन प्रिय हरिके ॥
तुमसम अधन भिखारिअगेहा । होत बिरंचि शिवहिं संदेहा ॥
योसि सोसितव चरणनमामी । मोपर कृपा करिय अबस्वामी ॥
सहज प्रीति भूपति की देखी । आप बिषय बिश्वास बिशेखी ॥

सब प्रकार राजहिं अपनाई । बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
सुन सतिभाव कहौं महिपाला । इहां बसत बीते वह काला ॥
॥ दो० अबलगिमोहिंनमिलेउकोउ मैं न जनायउंकाहु ।
लोक मान्यता अनल सम करतप कानन दाहु ॥
॥ सो० तुलसी देख सुवेष भूले मूढ़ न चतुर नर ।
सुन्दर केकी पेख वचनसुधा सम अशन अहि ॥
ताते गुप्त रहौं जग माहीं । हरितजिकिमपिप्रयोजननाहीं ॥
प्रभु जानतसब विनहिं जनाये । कहहुकवनसिधिलोकरिझाये॥
तुमसुचिसुमति परम प्रियमोरे । प्रीति प्रतीति मोहिं परतोरे ॥
अब जो तात दुरावौं तोहीं । दारुण दोष बढ़ै अति मोहीं ॥
जिमिजिमितापसकथै उदासा । तिमितिमिनृपहिंहोइविश्वासा॥
देखा स्ववश कर्म्म वन बानो । तब बोलेउतापस बक ध्यानी ॥
नाम हमार एक तनु भाई । सुनिनृपबोलेउ पद शिरनाई ॥
कहहु नाम कर अर्थ बखानी । मोहिंसेवक अति आपनजानी ॥
दो० आदि सृष्टिउपजीजबै तब उतपति भइमोरि ।
नाम एक तनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि ॥
जनि आश्चर्यकरहु मन माहीं । सुत तपते दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तप बल ते जग सृजै विधाता । तपबल विष्णुभये परित्राता ॥
तपबल शम्भु करहिं संहारा । तपते अगम न कछु संसारा ॥
भयहुनृपहिसुनिअतिअनुरागा । कथा पुरातन कहै सो लागा ॥
कर्म्म धर्म्म इतिहास अनेका । करै निरूपण विरति विवेका ॥
उद्भव पालन प्रलय कहानी । कहेसिअमितआश्चर्यबखानी ॥
सुनि महीश तापसवश भयऊ । आपन नाम कहनतबलयऊ ॥
कह तापस नृप जानौं तोहीं । कीन्हेउ कपटलागुभलमोहीं ॥
सो० सुनुमहीश असनीति जहंतहंनामनकहहिंनृप ।
मोहिंतोहिंपरअतिप्रीति परमचतुरतानिरखितव ॥
नामतुम्हार प्रताप दिनेशा । सत्यकेतु तव पिता नरेशा ॥

गुरुप्रसाद सब जानिय राजा । कहियन आनहिंजानिअकाजा ॥
देखितात तव सहज सुधाई । प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई ॥
उपजिपरी ममता मन मोरे । कहेउं कथा निज बूझे तोरे ॥
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं । मांगु जो भूप भाव मनमाहीं ॥
सुनि सुबचन भूपति हरषाना । गहिपदविनयकीन्हविधिनाना ॥
कृपासिन्धु मुनि दरशन तोरे । चारि पदारथ करतल मोरे ॥
प्रभुहि तथापि प्रसन्न विलोकी । मांगि अगमबरहोउंअशोकी ॥
दो० जरा मरण दुख रहित तन समर न जीतै कोउ ।
एक छत्र रिपु हीन महि राज कल्प शत होउ ॥
कह तापस नृप ऐसेइ होऊ । कारण एक कठिन सुन सोऊ ॥
कालौ तव पद नाइहि शीशा । एक विप्र कुल छांड़ि महीशा ॥
तप बल विप्र सदा बरियारा । तिनके कोपन कोउ रखवारा ॥
जो विप्रन वश करहु नरेशा । तौतव वश विधिविष्णुमहेशा ॥
चलन ब्रह्म कुल से बरिआई । सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई ॥
विप्र शाप बिनुसुनु महिपाला । तोर नाश नहिं कवनिहुंकाला ॥
हरषेउ राउ वचन सुनि तासू । नाथ न होइ मोर अब नासू ॥
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना । मोकहं सर्ब्ब काल कल्याना ॥
दो० एवमस्तु कहि कपट मुनि बोला कुटिल बहोरि ।
मिलब हमार भुवाल जनि कहहु तो मोरि न खोरि ॥
ताते मैं तोहिं बरजौं राजा । कहे कथा तव परम अकाजा ॥
छठे श्रवण यह परत कहानी । नाश तुम्हार सत्य ममबानी ॥
यह प्रकटे अथवा द्विज शापा । नाश तोर सुनु भानु प्रतापा ॥
आन उपाय निधन तव नाहीं । जौहरिहर कोपहिं मनमाहीं ॥
सत्य नाथपद गहि नृप भाषा । द्विजगुरुकोप कहहु को राखा ॥
राखै गुरु जो कोप विधाता । गुरुविरोधनहिंकोउजगत्राता ॥
जौं न चलब हम कहे तुम्हारे । होइ नाश नहिं शोच हमारे ॥
एकहि डर डरपत मन मोरा । प्रभु महिदेवशाप अतिघोरा ॥

दो० होहिं विप्र वश कवनविधिकहहुकृपाकरि सोउ ।
तुम तजि दीनदयाल निज हितू न देखौं कोउ ॥

सुनुनृपविविधयतनजगमाहीं । कष्टसाध्यपुनिहोहिंकिनाहीं ॥
अहै एक अति सुगम उपाई । तहां परन्तु एक कठिनाई ॥
मम आधीन युक्ति नृप सोई । मोरजाब तवनगर न होई ॥
आजु लगे अरु जबते भयऊं । काहू केगृह ग्राम न गयऊं ॥
जो न जाव तव होइ अकाजू । बना आइअसमंजसआजू ॥
सुनि महीप बोलेमृदुबानी । नाथनिगमअसनीतिबखानी ॥
बड़ सनेहलघुनपरकरहीं । गिरिनिजशिरनसदातृणधरहीं ॥
जलधि अगाध मौलि वहफेनू । सन्तत धरणिधरतशिररेनू ॥

दो० अस कहि गहे नरेश पद स्वामी होहु कृपालु ।
मोहिंलागि दुखसहियप्रभु सज्जनदीनदयालु ॥

जानिनृपहिं आपन आधीना । बोला तापसकपट प्रवीना ॥
सत्य कहौं भूपतिसुनुतोहीं । जगमहं नहिं दुर्लभ कछुमोहीं ॥
अवसि काज मैं करिहौं तोरा । मनक्रम बचन भक्त तैं मोरा ॥
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ । फलै तबहिं जबकरिय दुराऊ ॥
जो नरेश मैं करउं रसोई । तुम परसहु मोहिंजाननकोई ॥
अन्न सो जोइ २ भोजनकरई । सोइसोइतवआयसुअनुसरई ॥
पुनि तिनके गृह जेवैं जोई । तव बस होइ भूपसुनुसोई ॥
जाय उपाय रचहु नृपयेहू । संवत भरि संकल्प करेहू ॥

दो० नितनूतन द्विजसहस शत बरेहु सहित परिवार ।
मैंतुम्हरे संकलपलगि दिनहिं करब जेवनार ॥

इहिविधि भूपकष्ट अति थोरे । होइहहिं सकल विप्र बशतोरे ॥
करिहहिं विप्र होम मखसेवा । तेहिप्रसंग सहजहिं बसदेवा ॥
और एकतोहिं कहौं लखाऊ । मैं यहिबेष न आउब काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहित कहं राया । हरि आनब मैं करि निजमाया ॥
तपबल तेहिकरि आपुसमाना । रखिहौं यहां वर्ष परमाना ॥

मैं धरि तासु बेष सुनु राजा । सब बिधितोर सवांरब काजा ॥
गै निशि बहुत शयन अब कीजे । मोहिंतोहिं भूपभेटदिनतीजे ॥
मैं तपबल तोहिं तुरंग समेता । पहुंचै हैं सोवतहिं निकेता ॥
दो० मैं आउब सोइ बेषधरि पहिचानेहु तबमोहिं ॥
जब एकांत बुलाइ सब कथा सुनाउब तोहिं ॥
शयन कीन्ह नृप आयसु मानी । आसन जाइ बैठछल ज्ञानी ॥
श्रमित भूप निद्रा अति आई । सोकिमिसोव शोचअधिकाई ॥
काल केतु निश्चर तहं आवा । जेहिशूकरहोइनृपहिंभुलावा ॥
परम मित्र तापस नृप केरा । जानै सो अति कपट घनेरा ॥
तेहि के शत सुत अरु दशभाई । खल अति अजयदेवदुखदाई ॥
प्रथमहिं भूप समर सब मारे । विप्र सन्त सुर देखि दुखारे ॥
तेहि खल पाछिलबयर संभारा । तापसनृप मिलिमंत्रबिचारा ॥
जेहिरिपुक्षयसोइ रचसि उपाऊ । भावीवश न जान कछुराऊ ॥
दो० रिपुतेजसी अकेल अति लघुकरि गनियन ताहु । ॥
अजहुं देत दुखरबिशशिहिं शिर अवशेषितराहु ॥
तापस नृपनिज सखहिंनिहारी । हरषिमिलेउउठिभयउसुखारी ॥
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई । यातुधान बोला सुख पाई ॥
अब साधेउं रिपुसुनहु नरेशा । जो तुम कीन्हमोर उपदेशा ॥
परि हरिशोचकरहतुमसोई । बिनुऔषधिहिं व्याधिबिधिखोई ॥
कुल समेत रिपु मूलबहाई । चौथे दिवस मिलब मैं आई ॥
तापस नृपहि बहुत परितोखी । चला महा कपटी अतिरोषी ॥
भानु प्रतापहिं बाजि समेता । पहुंचायसि सोवतहि निकेता ॥
नृपहि नारि पहं सयन कराई । हय गृहबांधेसिबाजिहिंजाई ॥
दो० राजा के उपरोहितहिं हरिलै गयो बहोरि ।
लैराखिसि गिरिखोहमहं मायाकरि मतिभोरि ॥
आप बिरचि उपरोहित रूपा । पराजाय तेहिसेज अनूपा ॥
जागेउ नृप अनुभयउ बिहाना । देखिभवन अतिअचरजमाना ॥

मुनि महिमा मनमहं अनुमानी । उठे गवहिंजेहिजान न रानी॥
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही । पुर नर नारिन जानेउकेही ॥
गये याम युग भूपति आवा । घर घर उत्सवबाजुबधावा ॥
उपरोहितहिदीख जबराजा । चकितविलोकिसुमिरिसोइकाजा॥
युग सम नृपहिं गयेदिनतीनी । कपटीमुनिनृपमतिहरिलीनी ॥
समय जानि उपरोहित आवा । नृपहिमतोसबकहिसमुझावा॥

दो० नृपहर्षे पहिचानि गुरु भ्रम वश रहा न चेत ।
बरे तुरत शत सहस बर बिप्र कुटुम्ब समेत ॥

उपरोहित जेवनार बनाई । छरसचारिविधिजसश्रुतिगाई ॥
माया मय तेइ कीन्ह रसोई । ब्यंजन बहुगनि सकै न कोई॥
विविध मृगनकर आमिषरांधा । तेहिमहंविप्र मांसखलसांधा ॥
भोजन कहं सब विप्र बुलाये । पद पखारि सादर बैठाये ॥
परसनलाग जबहिं महिपाला । भइ अकाशवाणीतेहिकाला ॥
विप्रवृन्द उठि उठि गृह जाहू । है बड़िहानि अन्न जनिखाहू ॥
भयउ रसोईं भूसुर मासू । सब द्विज उठे मानिविश्वासू ॥
भूप विकल मतिमोह भुलानी । भावी बश न आव मुखबानी ॥

दो० बोले विप्रसकोप तब नहिं कछु कीन्ह विचार ।
जाइनिशाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार ॥

क्षत्रि बन्धु तैं विप्र बुलाई । घालै लिये सहित समुदाई ॥
ईश्वर राखा धर्म हमारा । जैहसि तैं समेत परिवारा ॥
संवत मध्य नाश तव होऊ । जलदाता न रहहिकुलकोऊ ॥
नृप सुनिशापविकलअतित्रासा । भइबहोरि बरगिराअकाशा ॥
विप्रहु शाप विचारि न दीन्हा । नहिंअपराध भूपकछुकीन्हा ॥
चकित विप्रसबसुनि नभबानी । भूपगये जहं भोजन खानी ॥
तहं न अशननहिंविप्र सुआरा । फिरेउ राउमन शोच अपारा ॥
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई । त्रसित परेउ अवनी अकुलाई॥

दो० भूपति भावी मिटै नहिं यदपि न दूषण तोर ।

किये अन्यथा होइ नहिं विप्र शाप अति घोर ॥
अस कहि सब महिदेवसिधाये। समाचार पुर लोगन पाये ॥
शोचहिं दूषण दैवहिं देहीं। विरचत हंस काककिय जेहीं ॥
उपरोहितहि भवन पहुंचाई। असुरतापसहि खबरिजनाई ॥
तेहि खल जहं तहं पत्र पठाये। सजि सजिसेन भूपसबआये॥
घेरिन्हि नगरनिशान बजाई। विविध भांतिनितहोतिलराई ॥
जूझे सकल सुभट करि करणी। बन्धु समेत परे नृप धरणी ॥
सत्यकेतु कुल कोइ न बांचा। विप्र शापकिमिहोइ असांचा ॥
रिपुहिं जीतिनृप नगर बसाई। निज निज पुरगे जययशपाई ॥
दो० भरद्वाज सुनु जाहि जब होत बिधाता बाम।
धूरि मेरु सम जनकयम ताहिव्यालसमदाम ॥
काल पाइ मुनि सुनुसोइराजा। भयउनिशाचरसहितसमाजा ॥
दश शिर ताहि बीसभुजदण्डा। रावण नाम बीर बरबण्डा ॥
भूप अनुज अरि मर्द्दन नामा। भयउ सोकुम्भकर्णबलधामा ॥
सचिव जो रहा धर्म्मरुचिजासू। भयउ विमात्र बन्धु लघुतासू ॥
नाम विभीषण जेहिजगजाना। विष्णु भक्त विज्ञान निधाना ॥
रहे जे सुत सेवक नृप केरे। भये निशाचर घोर घनेरे ॥
कामरूप खलजिनिस अनेका। कुटिल भयंकरविगत विवेका ॥
कृपा रहित हिंसक सब पापी। वरणि न जाइविश्वपरितापी ॥
दो० उपजे यदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप।
तदपि महीसुर शाप वश भये सकल अघरूप ॥
कीन्ह विविध तप तीनों भाई। परम उग्र सो वरणिन जाई ॥
गयउ निकट तपदेखि विधाता। मांगहु वर प्रसन्न मैं ताता ॥
करि विनती पद गहि दशशीशा। बोलेउवचन सुनहु जगदीशा ॥
हम काहू कर मरहिं न मारे। वानर मनुज जातिदुइ बारे ॥
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा। मैं ब्रह्मामिलि तेहिवरदीन्हा ॥
पुनि प्रभु कुंभकर्ण पहं गयऊ। तेहिबिलोकिमनविसमयभयऊ॥

जो यहखल नितकरब अहारा। होइहि सब उजारि संसारा ॥
शारद प्रेरि तासु मति फेरी। मांगेसि नींद मास षट केरी ॥
दो० गयउ बिभीषण पास तब कहा पुत्र बरमांग ।
तेहिमांगेउ भगवन्तपद कमल अमलअनुराग ॥
तिनहिं देइ बर ब्रह्म सिधाये। हर्षित ते अपने गृह आये ॥
मय तनु जा मन्दोदरि नामा। परम सुन्दरी नारि ललामा ॥
सोइ मयदीन्ह रावणहि आनी। भई सो यातुधान पतिरानी ॥
हर्षित भयउ नारि भलि पाई। पुनिदोउबन्धु बिवाहेसिजाई ॥
गिरित्रिकूट इकसिन्धु मझारी। बिधिनिर्मितदुर्गम अतिभारी ॥
सोइ मय दानव बहुरि संवारा। कनकरचितमणिभवनअपारा॥
भोगवती जस अहिकुलबासा। अमरावति जसशक्र निवासा ॥
तिनते अधिकरम्य अतिबंका। जग बिख्यातनाम तेहिलंका ॥
दो० खाईं सिंधुगंभीर अति चारिउदिशिफिरि आव ।
कनककोटमणिखंचितदृढ़ बरणिनजाइबनाव ॥
हरिप्रेरित तेहि कल्पजोइ यातुधान पतिहोय ।
शूर प्रतापी अतुल बल दल समेत वश सोय ॥
रहे तहां निशिचर भट भारे। ते सब सुरन समर संहारे ॥
अब तहं रहहिं शक्र के प्रेरे। रक्षक कोटि यक्ष पति केरे ॥
दशमुख कतहुं खबरि असि पाई। सेन साजि गढ़ घेरेसिजाई ॥
देखि बिकट भट बड़ि कटकाई। यक्ष जीव लै चले पराई ॥
फिरि सब नगर दशाननदेखा। गयउशोच सुखभयउविशेषा ॥
सुन्दर सहजअगम अनुमानी। कीन्ह तहां रावण रजधानी ॥
जेहि जसयोग बांटिगृहदीन्हे। सुखी सकल रजनीचरकीन्हे ॥
एक बार कुबेर पहं धावा। पुष्पक यान जीति लै आवा ॥
दो० कौतुकही कैलास पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ ।
मनहुं तौलि भटबाहुबल चल अधिकसुखपाइ ॥
सुख सम्पति सुत सेन सहाई। जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई ॥

नित नूतन सब बाढ़त जाई । जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई॥
अतिबल कुम्भकर्णअसभ्राता । जेहिकहंनहिंप्रतिभटजगजाता॥
करि मद पान सोव षटमासा । जागत होइ तिहूं पुरत्रासा ॥
जो दिन प्रति अहारकरुसोई । विश्व वेगि सब चौपट होई ॥
समर धीर नहिं जाइबखाना । तेहिसमअधिकनकोउबलवाना॥
बारिद नाद जेठ सुत तासू । भटमहं प्रथमलीक जगजासू ॥
जेहि न होइ रण सन्मुख कोई । सुरपुर नितहिं परावनहोई ॥
दो० कुमुखअकम्पन कुलिशरद धूम्रकेतु अतिकाय ।
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय ॥
कामरूप जानहिं सब माया । सपनेहुं जिनके धर्म न दाया ॥
दशमुख बैठि सभा इक बारा । देखि अमितआपन परिवारा ॥
सुत समूह जन परिजन नाती । गनै को पारनिशाचर जाती ॥
सैनविलोकिसहज अभिमानी । बोला वचन क्रोध मदसानी ॥
सुनहु सकल रजनीचर यूथा । हमरे बैरी बिबुध बरूथा ॥
तेहिसन्मुख नहिंकरहिंलड़ाई । देखि सकल रिपु जाहिंपराई ॥
तिनकर मरण एकबिधि होई । कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई ॥
द्विजभोजन मख होमसराधा । सबकर जाइ करहु तुमबाधा ॥
दो० क्षुधाक्षीणबलहीनसुर सहजहिंमिलिहहिंआइ ।
तब मारिहौं कि छांड़िहौं भलीभांति अपनाइ ॥
मेघनाद कहं पुनि हंकरावा । दीन्ह सीख बर बैर बढ़ावा ॥
जेसुर समर धीर बलवाना । जिनके लरिबेको अभिमाना ॥
तिनहिंजीतिरणआनिसिबांधी । उठिसुतपितुअनुशासनसाधी ॥
इहिबिधि सबहीं आज्ञादीन्हा । आपुन चलेउ गदाकरलीन्हा ॥
चलत दशानन डोलत अवनी । गर्जत गर्भ श्रवत सुररवनी ॥
रावण आवत सुनेउ सकोहा । देवन तकेउ मेरु गिरि खोहा ॥
दिगपालन के लोक सिधाये । सूने सकल दशानन पाये ॥
पुनिपुनि सिंहनाद करिभारी । देइ देवतन गारि प्रचारी ॥

रण मद मत्त फिरै जग धावा । प्रतिभट खोजतकतहुं न पावा ॥

क्षेपक ॥

नारद मिले कहेसि मुसकाई । देव कहां मुनि देहु देखाई ॥
सुनत अनख नारदहि न भावा । श्वेतद्वीप तेहि तुरत पठावा ॥
सागर उतरि पार सो गयऊ । नारि बृन्द तहं देखत भयऊ ॥
तिन्हसनकहा पतिनपहं जाहू । कहेउ कि आव निशाचरनाहू ॥
तब मैं तिनहिं जीति संग्रामा । लै जैहौं तुमकहं निज धामा ॥
सुनत बचन इक जरठरिसानी । धाइ चरणगहिगगन उड़ानी ॥
गई दूरि धरि २ झकझोरा । डारेसि सिंधुमध्य अतिजोरा ॥

दो० गयेउ पताल अचेतह्वै मरै न बिप्र प्रसाद ।
सावधान उठिचलेउ पुनि हिये न हर्ष बिषाद ॥

जीतेसि नाग नगर सबझारी । गयो बहुरि बलिलोक सुरारी ॥
बामन रावण आवत जाना । किये देव ऋषिसन अपमाना ॥
खेलत रहे नगर शिशु नाना । निजबलतिनहिंदीनभगवाना ॥
धाइ धरा तिन पुर लै आये । नगर नारि नर देखन धाये ॥
बीस बाहु दशकन्धर भाई । बिधि यहगढ़नि कहांकी आई ॥
राखिनिबांधि खिझावहिंभारी । नाम न कहै सहै बरु मारी ॥
बामन दीख बहुत सकुचाना । तब छुड़ाय दिय कृपानिधाना ॥
चला तुरंत निशाचर नाहा । लाज शंक कछु नहिंमनमाहा ॥

दो० अति निर्लज्ज दयारहित हिंसापर अतिप्रीति ।
राम बिमुख दशकन्ध शठ तापर चाहतजीति ॥
भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम ।
मणिहु कांच होइ जाइ तब लहै न कौड़ीदाम ॥

जहं कहुं फिरत देव द्विज पावै । दण्डलेइ बहु त्रास दिखावै ॥
इहि आचरण फिरहि दिनराती । महामलिनमनखलउतपाती ॥
बहुरि तुरत पम्पापुर आवा । बालिनामकपिपतिजिहिठावा ॥
अवलोकिसि इकसरवर शोभा । जिहिमनमहामुनिनकरलोभा ॥

तहां कपीश करै निज ध्याना । दशकन्धरहि देखि मुसुकाना ॥
तब रावण बोला करि क्रोधा । बकध्यानी कपिशठबिनबोधा ॥
नाम तोर सुनि आयउं धाई । दे कपि युद्ध छांड़ि कदराई ॥
दो० मोहिंजीते बिनु समरसुनु बृथाध्यान तवकीश ।
कटकटाइ कह रजनिचर रदन तीन सै बीस ॥
बालि कहा हठिकरिय न रारी । दशकन्धर घरजाहु बिचारी ॥
बल तुम्हार ऐसोइ है भाई । अजय चारिदिशि मैंसुनिपाई ॥
इहिबिधिबालिबहुतसमुझावा । कवनिहुंभांतिबोधनहिं आवा ॥
तब सकोपउठिझपटिकपीशा । दृढ़गहि कांख चापिदशशीशा ॥
बालिहिबिसरिगई सुधितासू । इहि बिधिबिगतभये षटमासू ॥
एक दिवस रविअंजलिसाजा । कांखते निसरिदशानन भाजा ॥
निलज अशंक आव पुनितहंवां ।करभुजकेलिसहसभुजजहंवां ॥
दो० क्षोभेउजल भुज बीस बल बूड़नलगी समाज ।
सहसबाहुअतिक्रोधमन मोहिंसमआनकोआज ॥
जाइ दीख तहं रावण ठाढ़ा । जासुबिपुल भुजबलजलबाढ़ा ॥
माया प्रबल महा बलभारी । लंकेश्वर कहं धरिसि प्रचारी ॥
निरखितियनआचरजबिशाला । बांधिराखिकछुदिन हयशाला ॥
लज्जित दुष्ट मष्ट करि रहई । रिस उरमारिकष्ट बहुसहई ॥
सकल आइ देखहिं नरनारी । मारहिं लात हंसैं दै गारी ॥
नाम न कहै रहै सकुचाना । बहुबिधि पूछै नृपति सुजाना ॥
नृत्यकरैं रम्भादिक नारी । दशहुं माथ दश दीपक बारी ॥
मुनि पुलस्त्य तबजाइछुड़ावा । पुनिनलशापआयतिहिं पावा ॥
दो० मारग जात दीख अति अनुपम सुंदरि नारि ।
चन्दन पुष्प पत्रकर पूजन चलि त्रिपुरारि ॥
देखि उर्वशी मन सकुचानी । तब रावण बोला मृदुबानी ॥
को तुम नारि गमनकहं कीन्हा । लज्जावश तिहिउतरनदीन्हा ॥
मन मद मत्त बिचारनकरेऊ । धनपति पुत्र बधूकर धरेऊ ॥

चीन्हि ताहि पुनि शंका आई । घाटि कर्म्म कीन्ही पछिताई ॥
मन पछिताय शोच उर भयऊ । लंकेश्वर लंका कहं गयऊ ॥
बिकल उर्वशी अलकहिं आई । नल कूबर सन बात जनाई ॥
दीन्ह शाप तिन क्रोध अपारा । रावण वंश होहु क्षयकारा ॥
चली शाप लंका कहं आई । दशकन्धर बैठा जिहिं ठाई ॥
आगे आइ ठाढ़ि भइ शापा । निरखिदशाननअतिभयकांपा ॥
दो॰ शापहि अंगीकार करि मनमहं कीन्ह विचार ।
दण्ड ऋषिन्ह से लीन्हनहिं रोषेउलंकभुवार ॥
दूत चारिपठयेऋषिआश्रम । निरखिबिसरिगेमुनिअधिआतम॥
तिनसन तब पूछहिंमुनिहाला । कहहु कुशल लंकेश भुवाला ॥
कुशल तासु यह सुनहु मुनीशा । कर तुम सनचाहतदशशीशा ॥
सुनि सो वचन महा भय पाई । करहिंविचारबिरतिबिसराई ॥
जेहि दरबार नीति नहिं भाई । खलमण्डली जुरी तहं आई ॥
कछु बिन दियेनहीं गतिआछी । घट भरिरुधिर दियेतनपाछी ॥
दूतन सौंपि कहा मुनि ज्ञानी । भूपहिं कहेउ जाय यहबानी ॥
दो॰ घट उघरतक्षयहोइहहु सहित सकलपरिवार ।
दूत तुरत घट ले गये लंकापति दरबार ॥
रावण घट लखिपरम हुलासा । तब दूतनमुनिवचनप्रकाशा ॥
सुनि मुनि शापउपज उर दाहू । बोला घट ले उत्तर जाहू ॥
यत्न समेत धरणि धरि एहू । जानि न पाव बात यह केहू ॥
लै घट जनक नगर ते गये । गाड़त क्षेत्र मध्य तहंभये ॥
जनक यज्ञ रचना तहं ठयऊ । चामीकर हल करषत भयऊ ॥
प्रकट अवनि ते ऋषयकुमारी । कन्या कहि लीन्ही उरधारी ॥
नाम जानकी परम पुनीता । नारद आइ कहापुनि सीता ॥
कहि सुकथा ऋषिराउसिधाये । बहुरि दूत लंका पुर आये ॥
चारि ठांव हारा लंकेशा । देवन को बहु देत कलेशा ॥
इति ॥

रवि शशिपवन बरुण धनुधारी। अग्निकालयमसबअधिकारी ॥
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा। हठि सबहीके पंथहि लागा ॥
ब्रह्म सृष्टि जहं लगि तनु धारी। दश मुख बशवर्त्ती नरनारी ॥
आयसुकरहिं सकल भय भीता। नवहिंआइ नितचरणबिनीता ॥

दो० भुजबल विश्ववश्य करि राखेसिकोउन स्वतंत्र।
मण्डलीक महि रावण राज करै निजमंत्र ॥
देव यक्ष गन्धर्व नर किन्नर नाग कुमारि।
जीतिबरीं निजबाहु बल बहुसुन्दरिबर नारि ॥

इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ। सो सबजनु पहिले करिरहेऊ ॥
प्रथमहिंजिनकहं आयसुदीन्हा। तिनकहंचरितसुनहुजोकीन्हा ॥
देखत भीमरूप सब पापी। निशिचरनिकर देवपरितापी ॥
करहिं उपद्रव असुर निकाया। नानारूप धरहिं करि माया ॥
जेहि विधि होइ धर्म्मनिर्मूला। सो सब करहिं बेद प्रतिकूला ॥
जेहि जेहि देश धेनुद्विजपावहिं। नगर ग्रामपुरआगिलगावहिं ॥
शुभ आचरण कतहुं नहिंहोई। वेदबिप्र गुरु मान न कोई ॥
नहिं हरि भक्ति यज्ञजपदाना। सपनेहु सुनिय न वेदपुराना ॥

छं० जपयोगविरागातपमखभागाश्रवणसुनैदशशीशा।
आपुन उठि धावै रहै नपावै करिसबघालैखीशा ॥
असभ्रष्टअचारा भासंसारा धर्मसुनियनहिंकाना।
तेहिबहुबिधित्रासैदेशनिकासै जो कहवेदपुराना ॥

सो० बरणि न जाय अनीति घोरनिशाचर जोकरहिं।
हिंसापर अति प्रीति तिनके पापहिं कवनमिति ॥

बाढ़े बहुखल चोर जुवारी। जे लम्पट परधन पर नारी ॥
मानहिं मात पिता नहिंदेवा। साधुनसों करवावहिं सेवा ॥
जिनके यह आचरण भवानी। ते जानहु निशिचर समप्रानी ॥
अतशय देखि धर्मकी हानी। परम सभीत धरा अकुलानी ॥
गिरि सर सिंधुभार नहिंमोही। जसमोहिं गरुअ एकपरद्रोही ॥

सकल धर्म्म देखहिं बिपरीता । कहि न सकै रावणभयभीता ॥
धेनु रूप धरि हृदय विचारी । गई तहां जहंसुर मुनिझारी ॥
निज सन्ताप सुनायसि रोई । काहू ते कछु काज न होई ॥

छं० सुरमुनि गन्धर्वा मिलिकरसर्वा गे बिरंचि के लोका ।
संग गोतनुधारीभूमिविचारी परमविकलभयशोका ॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मेरोकछु न बसाई ।
जाकरि तैं दासी सोअविनाशी हमरो तोरसहाई ॥

सो० धरणिधरहु मनधीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरि ।
जानत जनकी पीर प्रभु भंजहिं दारुण विपति ॥

बैठे सुर सब करहिं बिचारा । कहं पाइय प्रभुकरियपुकारा ॥
पुर बैकुंठ जान कह कोई । कोइकहपयनिधिमहंबससोई ॥
जाके हृदय भक्त जस प्रीती । प्रभु तेहि प्रकट सदायहरीती ॥
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊं । अवसरपाय वचनइककहेऊं ॥
हरि व्यापक सर्वत्र समाना । प्रेम ते प्रकट होहिं मैं जाना ॥
देशकालदिशिविदिशिहुमाहीं । कहहु सोकहां जहां प्रभुनाहीं ॥
अगजगमयसब रहितबिरागी । पवनतेप्रकटहोहिंजिमिआगी ॥
मोर वचन सबके मन माना । साधु साधु करि ब्रह्मबखाना ॥

दो० सुनिबिरंचि मन हर्षतन पुलक नयन बहनीर ।
अस्तुति करतस जोरिकर सावधान मतिधीर ॥

छं० जयजयसुरनायकजनसुखदायक प्रणतपालभगवन्ता ।
गो द्विज हितकारी जयअसुरारी सिंधुसुता प्रियकन्ता ॥
पालन सुरधरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई ॥
जयजय अविनाशी सबघटवासी व्यापक परमानन्दा ।
अविगत गोतीता चरित पुनीता मायारहितमुकुंदा ॥
जेहिलागिविरागी अतिअनुरागी विगतमोहमुनिवृन्दा ।
निशिवासरध्यावहिंहरिगुणगावहिंजयतिसच्चिदानन्दा ॥

जेहिसृष्टिउपाई त्रिविधिबनाई संग सहाय न दूजा ।
सोकरहुअघारी चिन्तहमारी जानिय भक्ति न पूजा ॥
जोभवभयभंजन जनमनरंजन गंजनविपति बरूथा ।
मनबचक्रमबानीछांड़िसयानी शरणसकल सुरयूथा ॥
शारदश्रुतिशेषा ऋषयअशेषा जाकहं कोउनजाना ।
जेहि दीनपियारे वेदपुकारे द्रवो सो श्रीभगवाना ॥
भवबारिधिमन्दरसबविधिसुन्दरगुणमन्दिरसुखपुंजा ।
मुनिसिद्धसकलसुरपरमभयातुर नमतनाथपदकंजा ॥

दो० जानिसभय सुरभूमि मुनि बचनसमेत सनेह ।
गगनगिरा गम्भीरभइ हरणि शोक सन्देह ॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा । तुमहिंलागिधरिहौंनरभेशा ॥
अंशनि सहित मनुज अवतारा । लैहौं दिनकरवंश उदारा ॥
कश्यप अदिति महातप कीन्हा । तिनकहं मैं पूरब वर दीन्हा ॥
ते दशरथ कौशल्या रूपा । कोशल पुरी प्रकटनरभूपा ॥
तिनके गृह अवतरिहौं जाई । रघुकुलतिलकसोचारिउभाई ॥
नारद बचन सत्य सब करिहौं । परम शक्तिसमेतअवतरिहौं ॥
हरिहौं सकल भूमि गरुआई । निर्भय होहु देव समुदाई ॥
गगन ब्रह्म बाणी सुनिकाना । तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना ॥
तब ब्रह्मा धरणिहि समुझावा । अभय भई भरोसजियआवा ॥

दो० निजलोकहि विरंचिगे देवन्ह इहै सिखाय ।
वानर तनुधरि धरणिमहं हरिपद सेवहुजाय ॥

गये देव सब निज निज धामा । भूमि सहित पाये विश्रामा ॥
जो कछु आयसु ब्रह्मै दीन्हा । हर्षे देव बिलम्ब न कीन्हा ॥
वनचर देह धरी क्षिति माहीं । अतुलितबल प्रतापतिनपाहीं ॥
गिरि तरुनख आयुधसबबीरा । हरिमारग चितवहिं रणधीरा ॥
गिरि कानन जहंतहंभरि पूरी । रहनिजनिजअनीक रचिरूरी ॥
यहसब रुचिर चरित मैं भाषा । अबसोसुनहु जोबीचहिराखा ॥

अवधपुरी रघुकुल मणिराऊ । वेद विदिततेहि दशरथनाऊ ॥
धर्म धुरंधर गुण निधि ज्ञानी । हृदय भक्ति मति सारंगपानी ॥
दो० कौशल्यादि नारि प्रिय सब आचरण पुनीत ।
पति अनुकूल सुप्रेम दृढ़ हरिपद कमलबिनीत ॥
एक बार भूपति मन माहीं । भै गलानि मोरे सुत नाहीं ॥
गुरु गृहगये तुरत महिपाला । चरणलागिकरिविनयविशाला ॥
निजदुखसुखनृपगुरुहिसुनायो । कहिवशिष्ठबहुविधिसमुझायो ॥
धरहु धीर होइ हैं सुत चारी । त्रिभुवनविदित भक्तभयहारी ॥
शृंगी ऋषिहिं वशिष्ठ बुलावा । पुत्र लागि शुभ यज्ञकरावा ॥
भक्तिसहितमुनि आहुति दीन्हे । प्रकटेअगिनि चारुकरलीन्हे ॥
जो वशिष्ठ कछु हृदय विचारा । सकलकाजभा सिद्धतुम्हारा ॥
यह हवि बांटि देहु नृप जाई । यथा योगि जेहि भागबनाई ॥
दो० तब अदृश्य पावकभये सकलसभहि समुझाय ।
परमानन्द मगन नृप हर्ष न हृदय समाय ॥
तबहिं राउ प्रिय नारिबुलाईं । कौशल्यादि तहां चलि आईं ॥
अर्द्ध भाग कौशल्यहिं दीन्हा । उभय भाग आधे करकीन्हा ॥
कैकेयी कहं नृप लै दयऊ । रहेउसोउभयभागपुनिभयऊ ॥
कौशल्या केकयी हाथ धरि । दीन्हसुमित्रहिमनप्रसन्नकरि ॥
इहिविधि गर्भसहित सबनारी । भयउ हृदय हर्षितसुखभारी ॥
जा दिनते हरि गर्भहि आये । सकललोक सुखसंपतिछाये ॥
मन्दिर महंसब राजहिं रानी । शोभा शील तेज की खानी ॥
सुखयुतकछुककालचलिगयऊ । जेहिप्रभुप्रकटसोअवसरभयऊ ॥
दो० योग लग्न ग्रह बार तिथि सकल भये अनुकूल ।
चर अरुअचर हर्ष युत राम जन्म सुख मूल ॥
नवमी तिथि मधुमास पुनीता । शुक्लपक्ष अभिजित हरिप्रीता ॥
मध्य दिवसअतिशीत न घामा । पावनकाल लोक विश्रामा ॥
शीतल मन्द सुरभि बहवाऊ । हर्षितसुर सन्तन मन चाऊ ॥

बनकुसुमितगिरिगणमणियारा। अवहिंसकलसरितामृतधारा ॥
सो अवसर विरंचि जब जाना। चलेसकलसुरसाजिविमाना ॥
गगन विमल संकुल सुर यूथा। गावहिं गुण गन्धर्व वरूथा ॥
वर्षहिं सुमन सुअंजलि साजी। गहगह गगन दुन्दुभीबाजी ॥
अस्तुति करहिंनागमुनिदेवा। बहविधिलावहिंनिजनिजसेवा ॥

दो० सुरसमूह बिनती करी पहुंचेनिज निज धाम ।
जगनिवास प्रभुपरकटे अखिललोक विश्राम ॥

छं० भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनि मनहारी अद्भुतरूप निहारी ॥
लोचनअभिरामा तनुघनश्यामा निजआयुध भुजचारी ।
भूषण वनमाला नयन विशाला शोभासिंधु खरारी ॥
कहदुहुंकरजोरी अस्तुतितोरी केहिविधि करौं अनन्ता ।
माया गुण ज्ञाना तीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणासुखसागरसबगुणआगर जेहिगावहिंश्रुतिसंता ।
सो मर्माहितलागी जनअनुरागी प्रकटभये श्रीकंता ॥
ब्रह्माण्डनिकाया निर्मितमाया रोमरोमप्रति वेदकहैं ।
ममउरसोबासी यहउपहासीसुनत धीरमति थिरनरहै ॥
उपजाजवज्ञानाप्रभुमुसकानाचरितवहुतविधिकीन्हचहै।
कहि कथासुनाई मातुबुझाई जेहिप्रकार सुतप्रेम लहै ॥
माता पुनि बोली सोमतिडोली तजहुतात यह रूपा ।
कीजै शिशुलीला अतिप्रियशीला यहसुखपरमअनूपा ॥
सुनिबचन सुजाना रोदनठाना होयबालक सुरभूपा ।
यहचरितजे गावहिं हरिपदपावहिं तेनपरहिं भवकूपा ॥

दो० बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुण गोपार ॥

सुनिशिशु रुदनपरमप्रियवानी। सम्भ्रम चलि आईं सबरानी ॥
हर्षित जहं तहं धाईं दासी। आनंदमगन सकल पुरबासी ॥

दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना । मानहुं ब्रह्मानन्द समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक शरीरा । चाहत उठन करत मतिधीरा ॥
जाकर नाम सुनत शुभ होई । मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानन्द पूरि मन राजा । कहा बुलाइ बजावहु बाजा ॥
गुरु वशिष्ठ कहं गयउ हंकारा । आये द्विजन सहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखि न जाई । रूपराशिगुण कहिन सिराई ॥

दो० तब नांदीमुख श्राद्धकरि जातकर्म्मसब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मणि नृप विप्रनकहं दीन्ह ॥

ध्वज पताक तोरण पुर छावा । कहिनजायजेहिभांतिबनावा ॥
सुमन वृष्टि आकाश ते होई । ब्रह्मानन्द मगन सब कोई ॥
वृन्द वृन्द सब चलीं लुगाईं । सहशृङ्गार किये उठि धाईं ॥
कनककलश मंगल भरिथारा । गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥
करि आरती निछावरि करहीं । बारबार शिशु चरणनधरहीं ॥
मागध सूत बन्दि गुण गायक । पावन गुणगावहिं रघुनायक ॥
सर्वस दान दीन्ह सब काहू । जेहि पावा राखा नहिं ताहू ॥
मृगमद चन्दन कुंकुम सींचा । मचीसकल वीथिनबिचकीचा ॥

दो० गृहगृह बाज बजाव शुभ प्रकटभये सुखकन्द ।
हर्षवन्त सब जहं तहं नगर नारि नर वृन्द ॥

कैकय सुता सुमित्रा दोऊ । सुंदर सुत जन्मत भइं सोऊ ॥
बहसुखसम्पति समय समाजा । कहिनसकैं शारद अहिराजा ॥
अवधपुरी सोहै इहि भांती । प्रभुहि मिलन आईजनुराती ॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी । तदपि बनी सन्ध्याअनुमानी ॥
अगर धूप जनु बहु अधियारी । उड़ै अबीर मनहु अरुणारी ॥
मन्दिर मणिसमूह जनु तारा । नृपगृहकलश सो इन्दु उदारा ॥
भवन वेदध्वनि अतिमृदुबानी । जनुखगसुखरसमयसुखसानी ॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना । एक मास तेहिजात न जाना ॥

दो० मासदिवस का दिवस भा मरम न जानै कोइ ।

रथसमेत रबि थाकेऊ निशा कवनविधि होइ ॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना । दिनमणि चलेकरतगुणगाना ॥
देखि महोत्सव सुरमुनिनागा । चले भवन वर्णत निजभागा ॥
औरौ एक कहौं निज चोरी । सुनुगिरिजाअतिदृढ़मतितोरी ॥
काकभुसुण्डि संग हम दोऊ । मनुजरूप जानै नहिं कोऊ ॥
परमानन्द प्रेम सुख फूले । बीथिन फिरहिंमगनमनभूले ॥
यह सब चरित जान पै सोई । कृपा राम की जापर होई ॥
तेहिअवसरजोजेहिविधिआवा । दीन्ह भूप जो जेहि मनभावा ॥
गजरथ तुरग हेम गो हीरा । दीन्हे नृप नाना विधि चीरा ॥

दो० मन सन्तोष सबन के जहं तहं देहिं अशीश ।
सकल तनय चिरजीवहु तुलसि दासकेईश ॥

कछुक दिवस बीते यहि भांती । जातनजानहिं दिनअरु राती ॥
नामकरण कर अवसर जानी । भूप बोलि पठवे मुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा भूपति अस भाषा । धरिय नामजोमुनिगुनिराखा ॥
इनके नाम अनेक अनूपा । मैंनृपकहव स्वमितअनुरूपा ॥
जो आनन्दसिन्धु सुखरासी । सीकर तें त्रैलोक्य सुपासी ॥
सो सुखधाम राम असनामा । अखिललोक दायकबिश्रामा ॥
विश्व भरण पोषण करुजोई । ताकर नाम भरत अस होई ॥
जाकेसुमिरण ते रिपु नाशा । नाम शत्रुहन बेद प्रकाशा ॥

दो० लक्ष्मण धाम रामप्रिय सकल जगत आधार ।
गुरुवशिष्ठ तेहि रखेऊ लक्ष्मण नाम उदार ॥

धरेनाम गुरुहृदय बिचारी । बेद तत्त्व नृप तव सुत चरी ॥
मुनिजन धन सर्वस शिवप्राना । बालकेलि रसतेहिसुखमाना ॥
बारेहिते निजहित पति जानी । लक्ष्मण रामचरणरतिमानी ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई । प्रभु सेवक जस प्रीति बढ़ाई ॥
श्यामगौर सुन्दर दोऊ जोरी । निरखहिं छबिजननीतृणतोरी ॥
चारिउ शील रूप गुण धामा । तदपिअधिकसुखसागर रामा ॥

हृदय अनुग्रह इन्दु प्रकाशा । सूचत किरण मनोहर हासा ॥
कबहुं उछंग कबहुंवर पालन । मातुदुलारहिंकहिप्रियलालन॥
दो० व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुण विगत बिनोद ।
सो अज प्रेम भक्तिवश कौशल्या की गोद ॥
काम कोटि छबिश्याम शरीरा । नील कंज वारिद गम्भीरा ॥
अरुण चरण पंकज नख जोती । कमल दलन बैठे जनुमोती ॥
रेख कुलिश ध्वज अंकुश सो है । नूपुरध्वनिसुनिमुनिमनमोहै ॥
कटिकिंकिणी उदर त्रय रेखा । नाभिगंभीर जानि जेहिदेखा ॥
भुज विशाल भूषण युत भूरी । हियहरिनखशोभा अतिरूरी ॥
उर मणिहार पदिक की शोभा । बिप्रचरण देखत मनलोभा ॥
कम्बु कंठ अति चिबुक सुहाई । आनन अमितमदन छबिछाई ॥
दुइ दुइ दशन अधर अरुणारे । नासा तिलक को बरणै पारे ॥
सुन्दर श्रवण सुचारु कपोला । अतिप्रियमधुर सुतोतरिबोला ॥
नीलकमलदोउ नयनविशाला । बिकटभृकुटिलटकनबरभाला ॥
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे । बहु प्रकार रचिमातु संवारे ॥
पीत झिंगुलिया तन पहिराये । जानु पाणिबिचरतमहिभाये ॥
रूपसकहिंनहिंकहि श्रुतिशेषा । सो जाने सपनेहुं जिन्हदेखा ॥
दो० सुख संदोह मोहपर ज्ञान गिरा गोतीत ।
दम्पति परमप्रेम वश करिशिशुचरितपुनीता ॥
इहिविधिरामजगत पितुमाता । कोशलपुर वासिन सुखदाता ॥
जिन रघुनाथ चरणरतिमानी । तिनकीयहगति प्रकटभवानी ॥
रघुपति विमुख यतनकरकोरी । कवन सकै भव बंधनछोरी ॥
जीव चराचर वश कै राखै । सो माया प्रभुसो भय भाषै ॥
भृकुटि विलास नचावै ताही । असप्रभुछांड़िभजियकहुकाही ॥
मन क्रम वचन छांड़ि चतुराई । भजतहिं कृपा करैं रघुराई ॥
इहिविधिशिशुविनोदप्रभुकीन्हा।सकलनगरबासिन्हसुखदीन्हा॥
लै उछंग कबहूं हलरावैं । कबहुं पालने घालि झुलावैं ॥

दो० प्रेम मगन कौशल्या निशिदिनजात न जान।
सुत सनेह बश माता बालचरित कर गान ॥
एक बार जननी अन्हवाये। करि शृंगार पलना पौढ़ाये ॥
निज कुल इष्टदेव भगवाना। पूजा हेतु कीन्ह पकवाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा। आपु गई जहं पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहंवां चलि आई। भोजन करत दीख रघुराई ॥
गइ जननी शिशुपहं भयभीता। देखा बाल तहां पुनि सूता ॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदय कम्प मन धीर न होई ॥
इहां उहां दुइ बालक देखा। मतिभ्रमभोरि किआनबिशेषा ॥
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभुहंसिदीन मधुरमुसुकानी ॥
दो० दिखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखण्ड।
रोम रोम प्रति राजहिं कोटि कोटि ब्रह्मण्ड ॥
अगणितरविशशिशिवचतुरानन। बहुगिरिसरितसिंधुमहिकानन
काल कर्म गुण दोष स्वभाऊ। सोदेखा जो सुना न काऊ ॥
देखी माया सबबिधि गाढ़ी। अतिसभीत जोरे कर ठाढ़ी ॥
देखा जीव नचावै जाही। देखी भक्ति जो छोरै ताही ॥
तनपुलकितमुखवचन न आवा। नयनमूंदि चरणन शिरनावा ॥
बिस्मयवंत देखि महतारी। भये बहुरि शिशु रूपखरारी॥
अस्तुति करि नजाय भयमाना। जगतपिता मैं सुतकरि जाना ॥
हरिजननिहि बहुबिधिसमुझाई। यहजनिकतहुंकहसिसुनुमाई ॥
दो० बार बार कौशल्या बिनय करै कर जोरि।
अब जनि कबहूं व्यापै प्रभु मोहिं मायातोरि ॥
बालचरित हरिबहुबिधिकीन्हा। अतिअनन्ददासनकहंदीन्हा ॥
कछुक काल बीते सब भाई। बड़ भये परिजन सुखदाई ॥
चूड़ा करण कीन्ह गुरु आई। बिप्रन पुनिदक्षिणाबहु पाई ॥
परम मनोहर चरितअपारा। करतफिरतचारिउ सुकुमारा ॥
मन क्रम बचन अगोचरजोई। दशरथअजिर बिचरप्रभुसोई ॥

भोजन करत बुलावत राजा । नहिंआवहिंतजिबालसमाजा॥
कौशल्या जब बोलन जाई । ठुमकिठुमकि प्रभुचलहिंपराई॥
निगम नेति शिवअन्त न पावा । ताहिधरै जननी हठिधावा ॥
धूसर धूर भरे तनु आये । भूपति बिहँसि गोद बैठाये ॥
दो० भोजन करत चपल चित इतउतअवसर पाइ ।
भाजि चले किलकातमुखदधिओदनलपटाइ ॥
बाल चरित अति सरल सुहाये । शारद शेष शम्भुश्रुति गाये ॥
जिनकर मन इनसननहिं राता । ते जग वंचितकियेविधाता ॥
भये कुमार जबहिं सब भ्राता । दीन्ह जनेऊ गुरु पितुमाता ॥
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई । अल्प काल विद्यासब पाई ॥
जाकी सहज श्वास श्रुतिचारी । सोहरि पढ़ यहकौतुकभारी ॥
विद्या विनय निपुण गुणशीला । खेलहिंखेलसकलनृपलीला ॥
करतलबाण धनुष अति सोहा । देखत रूप चराचर मोहा ॥
निज बीथिन बिहरहिं सब भाई । थकित होहिं सबलोग लुगाई ॥
दो० कौशल पुर बासी नर नारि वृन्द अरु बाल ।
प्राणहुं प्रियते लागहीं सब कहँ राम कृपाल ॥
बन्धु सखा सब लेहिं बुलाई । बनमृगया नित खेलहिं जाई ॥
पावन मृग मारहिं जिय जानी । दिनप्रतिनृपहिंदेखावहिं आनी॥
जो मृग राम बाण के मारे । ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥
अनुज सखासँग भोजन करहीं । मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं ॥
जेहिविधि सुखी होहिं पुरलोगा । करहिं कृपानिधिसोइसंयोगा ॥
वेद पुराण सुनहिं मन लाई । आपुकहहिं अनुजहिसमुझाई ॥
प्रातकाल उठिकै रघुनाथा । मातु पिता गुरु नावहिंमाथा ॥
आयसु मांगि करहिं पुरकाजा । देखि चरित हर्षहिं मनराजा ॥
दो० व्यापक अकलअनीहअज निर्गुणनाम न रूप ।
भक्त हेतु नानाविधिहि करत चरित्र अनूप ॥
यह सब चरित कहा मैं गाई । आगिल कथा सुनहु मनलाई ॥

बिश्वामित्र महा मुनि ज्ञानी । बसहिंबिपिनशुभआश्रमजानी॥
तहँ जप यज्ञ योग मुनि करहीं । अति मारीच सुबाहुहिडरहीं ॥
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं । करहिं उपद्रव मुनि दुखपावहिं॥
गाधितनय मन चिंता ब्यापी । हरिबिनमरहिं ननिशिचरपापी॥
तब मुनिवर मनकीन्ह बिचारा । प्रभु अव तरेउ हरणमहिभारा ॥
इहिमिसु देखौं प्रभुपद जाई । करि बिनती आनौं दोउभाई ॥
ज्ञानबिराग सकलगुण अयना । सो प्रभु मैं देखबभरिनयना ॥

दो० बहुबिधि करत मनोरथ जात न लागीबार ।
करि मज्जन सरयू जल गये भूप दरबार ॥

मुनि आगमन सुना जब राजा । मिलन गयउलैबिप्र समाजा ॥
करिदण्डवत मुनिहिं सनमानी । निज आसन बैठारे आनी ॥
चरण पखारि कीन्ह अति पूजा । मोसम धन्य आननहिं दूजा ॥
बिविध भांति भोजन करवावा । मुनिवर हृदय हर्ष अतिछावा ॥
पुनि चरणन मेलेसुत चारी । रामदेखि मुनिबिरति बिसारी ॥
भये मगन देखत मुख शोभा । जनु चकोर पूरण शशिलोभा ॥
तब मन हर्ष बचन कह राऊ । मुनिअसकृपाकीन्ह नहिंकाऊ॥
केहि कारण आगमन तुम्हारा । कहहु सो करतनलाउबबारा ॥
असुर समूह सतावहिं मोहीं । मैं याचन आयउँ नृप तोहीं ॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा । निशिचर बधमैं होब सनाथा ॥

दो० देहु भूप मन हर्षित तजहु मोह अज्ञान ।
धर्म्म सुयश नृप तुमकहँ इन कहँ अतिकल्यान ॥

सुनि राजा अति अप्रियबानी । हृदयकम्पमुखद्युति कुँभिलानी॥
चौथे पन पायउँ सुत चारी । बिप्रबचन नहिंकहे ढबिचारी ॥
मांगहु भूमि धेनु धन कोषा । सर्बस देउँ आज सहरोषा ॥
देह प्राणते प्रिय कछु नाहीं । सोउमुनिदेउँनिमिषइकमाहीं ॥
सबसुतप्रियमोहिं प्राणकिनाईं । रामदेत नहिं बनै गोसाईं ॥
कहँनिशिचरअतिघोर कठोरा । कहँ सुंदरसुत परम किशोरा ॥

सुनि नृप गिरा प्रेमरससानी । हृदय हर्षमाना मुनि ज्ञानी ॥
तब वशिष्ठ बहुविधि समुझावा । नृप संदेह नाश कहँ पावा ॥
अति आदरदोउ तनय बुलाये । हृदय लाइबहुभांतिसिखाये ॥
मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ । तुममुनिपिताआननहिंकोऊ ॥

दो० सौंपे भूपति ऋषिहि सुत बहुबिधि देइ अशीश ।
जननी भवन गये प्रभु चले नाइ पद शीश ॥

सो० पुरुषसिंह दोउ बीर हर्षि चले मुनि भय हरण ।
कृपासिंधुमतिधीर अखिल बिश्व कारण करण ॥

अरुण नयन बरबाहु बिशाला । नीलजलजतनश्यामतमाला ॥
कटिपटपीत कसे बरभाथा । रुचिरचाप शायक दुहुंहाथा ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई । बिश्वामित्र महानिधि पाई ॥
प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना । मोहिंहितपितातजेभगवाना ॥
चले जात मुनि दीन्ह दिखाई । सुनि ताड़का क्रोधकरिधाई ॥
एकहि बाण प्राण हरिलीन्हा । दीन जानितेहिनिजपददीन्हा ॥
तबऋखिनिजनाथहिंजियचीन्हा । बिद्यानिधिकहंबिद्यादीन्हा ॥
ताते लागि न क्षुधापि घासा । अतुलितबलतनतेजप्रकाशा ॥

दो० आयुध सकल समर्पिकै प्रभुनिजआश्रम आनि ।
कन्द मूल फल भोजन दिये भक्त हित जानि ॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई । निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई ॥
होम करण लागे मुनिझारी । आपु रहे मखकीरखवारी ॥
सुनि मारीच निशाचर कोही । लै सहाय आवामुनि द्रोही ॥
बिनु फरबाण रामतेहि मारा । शत योजन गा सागर पारा ॥
पावक शर सुबाहु पुनि मारा । अनुजनिशाचरकटक संहारा ॥
मारि असुर द्विज निर्भयकारी । अस्तुतिकरहिं देवमुनिझारी ॥
तहँपुनि कछुकदिवस रघुराया । रहे कीन बिप्रन पर दाया ॥
भक्ति हेतु बहु कथा पुराना । कहैं बिप्रयद्यपि प्रभु जाना ॥
तबमुनि. सादर कथा बुझाई । चरित एक देखिय प्रभुजाई ॥

धनुष यज्ञ सुनि रघुकुलनाथा । हर्षिचले मुनिवर के साथा ॥
आश्रम एक दीख मगमाहीं । खग मृग जीवजन्तुतहंनाहीं ॥
पूंछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी । सकल कथाऋषिकहीविशेषी ॥
दो० गौतम नारी शापवश उपल देह धरि धीर ।
चरण कमल रज चाहती कृपा करहुरघुवीर ॥
छं० परसतपदपावनशोकनशावन प्रकटभईतपपुंजमही ।
देखतरघुनायकजनसुखदायक सन्मुखहोइकरजोरिरही ॥
अतिप्रेमअधीरापुलकशरीरामुखनहिंआवैवचनकही ।
अतिशयबड़भागीचरणनलागीयुगलनयनजलधारबही ॥
धीरजमनकीन्हाप्रभुकहंचीन्हारघुपतिकृपाभक्तिपाई ।
अतिनिर्मलबाणीअस्तुतिठानीज्ञानगम्यजयरघुराई ॥
मैंनारिअपावनिप्रभुजगपावनरावणरिपुजनसुखदाई ।
प्रभुराजिवलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिशरणहिंआई ॥
मुनिशापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंमाना ।
देखेउँभरिलोचनहरिभवमोचनयहैलाभशंकरजाना ॥
विनतीप्रभुमोरी मैं मतिभोरी नाथनवर मांगौंआना ।
पदकमलपरागारसअनुरागाममनमधुपकरैपाना ॥
जेहिपदसुरसरितापरमपुनीताप्रकटभई शिवशीशधरी ।
सोइपदपंकजजेहिपूजतअजममशिरधरेउकृपालुहरी ॥
इहिभांतिसिधारीगौतमनारी बारबारहरिचरणपरी ।
जोअति मनभावासोवरपावागइपतिलोकअनंदभरी ॥
दो० असप्रभु दीनबंधुहरि कारण रहित कृपाल ।
तुलसिदास शठताहि भज छांड़िकपटजंजाल ॥
चले राम लक्ष्मण मुनिसंगा । गये जहां जग पावनि गंगा ॥
अनुजसहितप्रभुकीन्ह प्रणामा । बहुप्रकार सुख पायउ रामा ॥
क्षेपक ॥
पुनि सुरसरि उतपति रघुराई । कौशिक सन पूंछा शिरनाई ॥

कहमुनिप्रभु तबकुल इकराजा । नामसगर तिहुंलोक विराजा ॥
तेहिके युग भामिनि सुकुमारी । प्रथम केशिनी सुमतिपियारी ॥
सब प्रकार सम्पति सुर आजा । सुतविहीनमन विस्मयराजा ॥
एकसमय भामिनि दोउसाथा । गये बन तनय हेतु रघुनाथा ॥
सघन सफलतरु सुन्दर नाना । तहँ भृगुमुनि तपतेज निधाना ॥

दो० सहित नारि नृप मुदितमन रहे बर्ष शत एक ।
कीन्हे तपबलदेखि भृगु अस्तुतिकीन्ह अनेक ॥

कहिनिजदुखप्रणामनृपकीन्हा । दै अशोश तब मुनिवरदीन्हा ॥
नृपरानी सन मुनि अस भाषा । लेहुस्ववर जोजेहि अभिलाषा ॥
सुनि मुनिवचन शीशतिननावा । देहु नाथ जो अति मन भावा ॥
एकहि कह्यो एक सुत होना । दूसरिसाठिसहसगुण लोना ॥
हरषित भयो सुभग वर पाई । पाणिजोरि चरणन शिरनाई ॥
सहितभामिनी अवधहि आये । हर्षसहित कछु दिवस गँवाये ॥
जानिसुघरि सुंदरि सुखदाई । नामकेशि असमंजस जाई ॥
सुमति प्रसव एक तुंबरि सोई । भये सुत प्रकट कहेमुनि जोई ॥
निरखे सुत हरषित सब होई । मंगलचार किये सब कोई ॥
हर्ष सहित दिये दान नरेशू । पूजि बिप्र गुरु गौरि गणेशू ॥
घृत घट सुन्दर विविध मँगाये । तै सब सुत नृपतिन महं नाये ॥

दो० यहि विधि भयउ सकल सुत पूजे सबमनकाम ।
जाइ दिवशनिशि हरषवश सुनहुरामघनश्याम ॥

पुरजन सब घर घरनि नरेशू । अति आनंदतन मिटा अंदेशू ॥
बालकेलि कर भये कुमारा । लीला करैं अगम संसारा ॥
होइं सो काज सकल मन चीते । यहिसुखबसतबहुतदिन बीते ॥
सरयू नदी अवध जो अहई । विमलसलिल उत्तर तटबहई ॥
प्रजा लोकके बालक नाना । नितउठि तहां करैं अस्नाना ॥
अस मंजस तहँ तरणी आनी । तिनहिंचढ़ाइ बोरिनिजपानी ॥
भये प्रजा सब परम दुखारी । बालकवधसुनि सुनहुखरारी ॥

सकल गये जहँ बैठ नृपाला। बोले बचन नाइ पद भाला॥
तुम नृप चहहु प्रजाप्रतिपाला। सुततुम्हार भासबकर काला॥
तजब देश सब सुनहुं नरेशू। बिना तजे नहिं मिटै कलेशू॥
दो० तवसुत कीन्हे पाप बहु मारे बालक वृन्द।
तुम कहं प्राणसमानयहसकलप्रजनकहं मन्द॥
प्रजागिरा सुनि धीरज दीन्हा। सुतहि देशते बाहर कीन्हा॥
तासुतनयजग विदित प्रभाऊ। गुणनिधि अंशुमान तेहि नाऊ॥
बसत हृदय नृपके सो कैसे। मुनि मनमीन सलिल रहजैसे॥
गये प्रजा सब निजनिज धामा भयेविलोकि मनगुणविश्रामा॥
बहुरि नृपतिमन कीन्ह विचारा। आइ भयो पन चौथ हमारा॥
हित मंत्री गुरु सुतहु बोलाये। हिमगिरिविन्ध्य मध्यतबआये॥
रुचिर वेदिका एक बनाई। देखत बनइ बरणिनहिं जाई॥
मख अरम्भ छांड़े तब तुरगा। बेगवन्त जिमि देखिय उरगा॥
दो० सुरपति सुन भयदारुणहिं मनमहंकरि अनुमान।
आन तुरग तब लीन्हेउ मर्म्म न काहू जान॥
राखेहु आनि कपिलमुनि पाहीं। कोउन जानकाहुहि गमनाहीं॥
जुगवत रहे जे सुभट सयाने। ले तुरंग रहे किनहु न जाने॥
तिन सब आय कही नृप पाहीं। महाराज हम कहत डराहीं॥
लीन्ह तुरग कोइ जान न कोई। कहा करिय जो आयसु होई॥
सुनत वचन नृप विस्मय पाये। सकल सुतन कहंतुरतबुलाये॥
जाहु तुरग तुम हेरहु जाई। सकल चले चरणन शिरनाई॥
सुरपति सम देखिय सब बीरा। सकल धनुर्द्धर अति रणधीरा॥
तिनहिं चलत धरणी अकुलाई। बलि पशु जीव भये सब आई॥
सुमन बाटिका उपबन बागा। सरित कूप बापिका तड़ागा॥
नगर गांव मुनीश थल नाना। गिरि कन्दर कानन अस्थाना॥
दो० इहि विधिखोजेहु तुरग तिनआयेभूपति पाहिं।
चरणन माथहिनाइ कहि खोज अश्वकी नाहिं॥

खोदहुमहि सुत करहि पठाये । चले सकल पूरबदिशि आये ॥
तिनकेकरजिमिकुलिशसमाना । योजनभरि खोदहिं बलवाना ॥
देखि अतुल बल देव डराने । नरवाहन विरंचि सनमाने ॥
शोधत महि पताल सब आये । दिग्गज देखि एक शिरनाये ॥
तिन पूंछा सब कथा सुनाये । बहुरिसकलदक्षिणदिशिआये॥
इहिविधि पुनि दूसरगजदेखा । अतिउतंगगजविमलविशेषा ॥
ताहू बहु प्रणाम तिन कीन्हे । चले सुनतपश्चिमचितदीन्हे ॥
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्ही । पुनिउत्तरदिशिशोधहिलीन्ही ॥
दिग्गज श्वेत निरखि सुखपाये ।सकलकपिलमुनिपहंपुनिआये॥
खोजत मही पारनहिं पावा । शोभाचहुंदिशिजलधिसोहावा॥

दो० देखिनि आइ तुरंग तब बांधा मुनिवर पास ।
बोले वचन सकोपकरि भा यह सबकर नाश ॥

खोदा महि हम चारिउ कोधा । रे रे दुष्ट बहुत तोहि शोधा ॥
कोउ कह चोर दीख बहु होई । यहि समछलो औरनहिं कोई ॥
पर धन लै पताल पुनि आयो । तस्कर मुनिवर वेष बनायो ॥
कोउ कहै यह मुनिवर नाहीं । समुझि देखि लक्षणमनमाहीं ॥
कोउकह बकतपकीन्ह अपारा । अहो दुष्ट लैतुरंग हमारा ॥
सुनतवचन मुनिचितवा जबहीं । भये भस्मसब क्षणमें तबहीं ॥
उमाबचनजेहि समुझिनबोला । सुधाहोइ विषतिक्तम ओला ॥
पावकजानिधरहिंकर प्रानी । जरहिकाहिनहिं अतिअभिमानी ॥
जानि गरल जे संग्रह करहीं । सुनहु राम ते काहे न मरहीं ॥
क्रोध करै बिन किये विचारा । भये सकल तेहिते जरिछारा ॥
इहां नृपति अँशुमान बुलाये । नहिं आये सबतिनहिं पठाये ॥

दो० दीन्हा नृपति अशीषतब अतिहितबारहिंबार ।
वेगि फिरहु लै तुरँग सुत मेरे प्राण अधार ॥

चले नाइ पद शीश कुमारा । बिष्णुभक्तहितकुल उजियारा ॥
जहँ तहँ देखि मुनिनके धामा । पूंछिखबरिकरि दण्डप्रणामा ॥

पन्नग अहि सन पाइ अशीशा। चहुंदिग्गज कहंनायउ शीशा॥
यहिविधिशोधतमगमहं जाता। मिले गरुड़ सुमनीकरभ्राता॥
चरण परत तब आशिष दयऊ। जरेसकलजेहिविधिसोकह्यऊ॥
सुनतहि वचन शोचभयोभारी। लिये खगेश दिखाय लवारी॥
अंशुमान तहँ मज्जन कीन्हा। क्रमश्सबहिजलांजलिदीन्हा॥
बहुरि गरुड़ बोले सुनुभ्राता। मैंतोहिं कहौंकरियइकबाता॥
स० करु सुत सोइ उपाय गंगा आवहिंअवनिमहं।
दर्शनते अघजाय मज्जन कीन्हे परम सुख॥
षष्टि सहस्र तरिहैं येही विधि। गंगा पाय परम पावन निधि॥
सुनि अस वचन हृदय मनभाये। सहित गरुड़मुनिवरपहंआये॥
तबखगेश मुनि चरणननायउ। पूरब कथा सकल मुनिगायउ॥
आयसु देइ तुरग मुनि दीन्हा। हर्षिहृदय निज अश्वहिचीन्हा॥
नगर समीप गरुड़ पहुंचाई। गये भवन निज तब रघुराई॥
इहां तुरग लै नृप शिर नाई। षष्टि सहस मुनिकथा सुनाई॥
विस्मय हर्ष विवश नृप भयऊ। कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ॥
बहुविधिनृपतिराजपुनिकीन्हा। प्रजालोगकहँ अति सुखदीन्हा॥
दो० अंशुमानहित राजदै निजमन हरिपद लाग।
गयउसगर तपकाजबन हृदय अधिक अनुराग॥
तासुत नाम दिलीप नृप भयऊ बनतपहेतु उतर दिशि गयऊ॥
वहां अगमतप कीन्ह नृपाला। भये कालवश गये कछुकाला॥
कहहु कवन दिलीप प्रभुताई। सेवैं सकल नृपति जेहि भाई॥
जुगवतजेहिनितसुरपतिरहहींमहिमातासुकविकेहिविधिकहहीं॥
भागीरथ अस सुत भयो जासू। पितुसम प्रीति अधिक उरतासू॥
तिनहिं बोलि नृपदीन्हेउ राजू। आप चले उठि तपके काजू॥
मनमहँ करत पंथ अनुमाना। सुरसरि आव तजउं नतुप्राना॥
निजमन तनु दीन्हेउनिमिदेऊ। फिरनिज नगरक नामनलेऊ॥
सो० यहविधिकरतविचारनृप कीन्हे तपप्रबलतब।

बीतेकछु एक काल देह तजी कोउ प्रकटनहिं ॥

जेहि सुरसरिलगितजितनभूपा । सोतजि मूढ़पियहिं जलकूपा ॥
इहां भगीरथ अस मन भयऊ । पितुनआवबहुदिनचलिगयऊ ॥
काकुत्स्थनाम तनय यक रहेऊ । दीन्हा राजनीति बहु कहेऊ ॥
कहि तब पूर्ब कथा सुत पाहीं । दीन्ह अशीष चले नर नाहीं ॥
निकसत नगर शकुनभल पाये । अतिहिनिर्बिड़वनजहंनृपआये ॥
देखि भगीरथ बन सुख पावा । सुरसरिहिततपकहंमनलावा ॥
एक चरण दोउ भुजा उठाये । रबिसन्मुख चितवहिंमनलाये ॥
बर्ष सहस बीते यहि भांती । जात न जाने दिन अरु राती ॥
देखि उग्र तप अज चलिआये । बोलेबचन नृपहिं मन भाये ॥
चहहि नृपति जो ले बरदाना । बोले नृपकरि अजहिंप्रणामा ॥
जो मांगौं सो जानत अहहू । सो मनमांगन प्रभुकिमिकहहू ॥

दो० तदपि कहौं प्रभुदेहुवर सब संतन कहंबृद्धि ।
दूसरि मांगहुं जोरि कर गंगा आवहिं सिद्धि ॥

एवमस्तुकहि पुनि बिधि भवही । सुरसरि देहं राखिको सकही ॥
छूटिजाहिं पुनि तुरत रसातल । फिरहिंनन्पतिबहुरिसुनुभूतल ॥
तेहिते कहौं एक तोहिं पाहीं । अति दयाल शंकर मनमाहीं ॥
सोइशंकर रखि देवसरि आजू । उनहिंजपे तब होइहै काजू ॥
असकहि बिधि अंतर हितभये । बहुरि भगीरथ शिव पहं गये ॥
बिबुध बर्ष अंगुष्ठ अधारा । बार बार शिव नाम उचारा ॥
शिव दयालु प्रकटे तब आई । हाथ जोरि नृप बिनयसुनाई ॥
मैं राखब सुरसरि कहं ईशा । बहुरि रमापति ध्यानकरीशा ॥

दो० वहांदेवसरि शिव वचन सुनि मनकीन्ह बिचार ।
जाउं रसातल शिव सहित जात न लावौं बार ॥

अंतरयामी शिवहि उपाई । निजशिरजटासोअगमबनाई ॥
इहां भगीरथ अस्तुति कीन्ही । सुनिमृदुगिराछांड़िबिधिदीन्ही ॥
छूटे शोर भयउ जग भारी । चकित देव अहि दिग्गजचारी ॥

सुरसरि पुनि हर जटा समानी। बर्ष एकतहं रही भवानी ॥
कौतुक देखि सकल सुर हरषे। कहिजयजयतिसुमन बहुबरषे॥
बहुरि भगीरथ सुमिरण कीन्हा। डारि जटा शिव बुंदकदीन्हा॥
तेहिते भईं तीनि पुनि धारा। एक गई नभ एक पतारा ॥
गइनभसोइकिभईअघनाशिनि। देवन धरा नाम मंदाकिनि ॥

दो० दूसरिगई पतालमें नाम प्रभावतिहरण दुख ।
तीसरि भइ गंगासोई सबसंतनको करनसुख ॥
जल प्रवाह निरखत नृपतिउरअतिभयोअनन्द ॥
जैसेउमड़त सिंधु तब पूर्णकला लखि चंद ॥

आयभगीरथ पुनि शिर नाये। बोली सुरसरि बचन सुहाये ॥
बेगवन्त नृप रथ लै आनू। तुरत तुरगशुभगतिजिमिभानू ॥
तेहि रथ चढ़िनृपचलुममआगे। चलिहौं मैं तव पाछे लागे॥
सुनिनृपदिव्य तुरग रथआना। चले हृदयसुमिरत भगवाना ॥
चली अग्रकरि नृपहि सुरसरी। देवन मुदित सुमन झरिकरी॥
चलत तेज कछु बरणि न जाई। टूटहिं गिरि तरु शैल सुहाई ॥
करैं कुलाहल बिधि बहु भांती। कमठनक्रझषब्यालसोमाती॥
मज्जन करहिं देव तहं आई। सुनिगति सिद्ध रहे सब छाई॥

सो० तर्पणकर मनलाय हर्ष हृदय नहिं जातकहि ।
दर्शन से अघजाय तैं सकल मुनि जन कहैं ॥
मज्जनकर हरषाय सुरअजादि सनकादि ऋषि।
पान करत अघजाय असमन सब कोऊ कहैं ॥

करैंजो मज्जन जप मनलाई। तिनकी महिमा कहिनसिराई ॥
रथ पर जात सोह नृपकैसे। तेज वंत रबि देखिय जैसे ॥
लांघत शैल सुहावन देशा। पाछे सुरसरि आगे नरेशा ॥
हरद्वार समीप जब आये। तीर्थ देखि सुरसरिमन लाये ॥
तीर्थ निरखिमनभयोसुखभारी। आदि प्रयाग पहुंचिअघहारी ॥
वहं मज्जन कीन्हे अब जाई। बहुरि देवसरि काशी आई ॥

सो शिवपुरी सहज सुखदाई । बरणि न जाइ मनोहर ताई ॥
अबसे तीर्थ विविध विधिजानी । गईतहां किमिकहैं। बखानी ॥
मग लोगन कहंकरत सनाथा । जाइचलीइहिविधिरघुनाथा ॥
दो० मिलीजाइ पुनिउदधिमहंउदधिहृदयसुखमान ।
लगे कहन भागीरथहि तुमसम धन्य न आन ॥
कीन्हों अस जो करहि न कोई । तप महिमाबलकसनहिंहोई ॥
सगर सु तनय तरे ततकाला । हर्षवन्त तब भयो नृपाला ॥
अबलौं रहे। है कुलमहिंकोऊ । तिनके संग तरे अब सोऊ ॥
तुम समाननृपअवर न भयऊ । जगविख्यात अचलयशलयऊ॥
सकल सुरन्ह तहंसंग विधाता । नृपसन आयकही सबबाता ॥
धन्य भगीरथ जग यश लयऊ। तुमसमाननृपअवर न भयऊ ॥
आपनि सत्य प्रतिज्ञा कियऊ। सम्मत वेद जनन सुखदयऊ ॥
गंगा सागर सब कोउ कहही । अघ उलूक देखत रबिडरही ॥
भागीरथी नाम अरु कहही । सुनिसुरसिद्धनागयशलहही ॥
असविधिकहिनिजलोकहिआये । जहां भगीरथ अतिसुखपाये ॥
छं० पायोअमितसुखबहुरिपूजासुरसरिहिमनलाइ कै ।
तब दीन्हआशिष मुदितगंगानृपभवनसुखपाइकै ॥
इहिभांति सुनिगंगाकथातबरामरुचिचरणननये ।
कहदासतुलसीरामलषणहिंमहामुनिआशिषदये ॥
दो० कौशिक आशिषअमियसम पायहर्ष रघुराज ।
प्रभुसंशय सब इमिगईलवानिरखिजिमिबाज ॥
आशिष सुधा समान सुनि हरषे श्रीरघुनाथ ।
प्रभु सुखपाइकहेउपुनि वेगिचलियमुनिनाथ ॥
राम नाम ते संशय जाई। देह धरे कर यह फल भाई ॥
इति ॥
गाधिसुवन सब कथा सुनाई । जेहिप्रकारसुरसरिमहिआई ॥
तब प्रभु ऋषिन समेत अन्हाये । विविध दानमहिदेवनपाये ॥

हर्षि चले मुनि वृन्द सहाया । वेगि विदेह नगर नियराया ॥
पुर रम्यता राम जब देखी । हर्षे अनुज समेत विशेषी ॥
वापी कूप सरित सर नाना । सलिलसुधासममणिसोपाना ।
गुंजत मंजु मत्त रस भृङ्गा । कूजत कलबहुवरण विहंगा ॥
बरण बरण बिकसे जलजाता । त्रिविध समीरसदासुखदाता ॥
दो० सुमन वाटिका बागवन विपुलविहंग निवास ।
फूलत फलतसुपल्लवित सोहत पुर चहुं पास ॥
बनै न बरणत नगर निकाई । जहां जाइ मन तहां लुभाई ॥
चारु बजार बिचित्रअंटारी । मणिमयविधिजनुस्वकरसवांरी ॥
धनिकबणिक वरधनदसमाना । बैठेसकल बस्तु लै नाना ॥
चौहट सुन्दर गली सुहाई । सन्तत रहहिं सुगन्ध सिंचाई ॥
मंगल मय मन्दिर सब केरे । चित्रित जनु रतिनाथचितेरे ॥
पुरनरनारि सुभग शुचिसंता । धर्म्म शील ज्ञानी गुण वंता ॥
अति अनूपजहंजनक निवासू । विथकहिंविविधविलोकिविलासू॥
होत चकित चित कोट विलोकी । सकल भुवनशोभाजनुरोकी॥
दो० धवलधाममणिपुरट पट सुघटित नानाभांति ।
सियनिवाससुन्दरसदनशोभाकिमिकहिजाति ॥
सुभग द्वारसब कुलिश कपाटा । भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनी विशाल बाजिगज शाला । हयगजरथसंकुल सबकाला ॥
शूर सचिव सेनप बहुतेरे । नृपगृह सरिस सदनसबकेरे ॥
पुर बाहिर सर सरित समीपा । उतरे जहं तहं विपुलमहीपा ॥
देखि अनूप एक अंबराई । सबसुपास सब भांतिसुहाई ॥
कौशिक कहेउ मोर मन माना । इहां रहिय रघुबीर सुजाना ॥
भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता । उतरे तहं मुनि वृन्दसमेता ॥
विश्वामित्र महामुनि आये । समाचार मिथिलापति पाये ॥
दो० संगसचिव शुचिभूरिभट भूसुर बर गुरुज्ञाति ।
चलेमिलनमुनिनायकहि मुदितराउइहिभांति ॥

कीन्ह प्रणाम धरणिधरिमाथा । दीन्हअशीषमुदितमुनिनाथा ॥
बिप्र वृन्द सब सादर बन्दे । जानि भाग्य बड़राउअनन्दे ॥
कुशलप्रश्न कहि बारहिं बारा । विश्वामित्र नृपहि बैठारा ॥
तेहि अवसर आये दोउ भाई । गये रहे देखन फुलवाई ॥
श्याम गौर मृदु बयसकिशोरा । लोचनसुखद बिश्वचितचोरा ॥
उठे सकल जब रघुपति आये । बिश्वामित्र निकट बैठाये ॥
भये सबसुखी देखि दोउ भ्राता । बारिविलोचनपुलकितगाता ॥
मूरति मधुर मनोहर देखी । भयउ विदेह विदेह विशेषी ॥

दो० प्रेम मगनमन जानिनृप करिबिबेकधरिधीर ।
बोलेउ मुनिपद नाइशिर गदगद गिरागंभीर ॥

कहहु नाथसुन्दरदोउबालक ।मुनिकुलतिलककिनृपकुलपालक॥
ब्रह्म जोनिगमनेति कहिगावा । उभयवेषधरि सो इकआवा ॥
सहज विराग रूप मन मोरा । थकित होतजिमि चंदचकोरा ॥
ताते प्रभु पूछौं सतिभाऊ । कहहुनाथ जनिकरहु दुराऊ ॥
इनहिंविलोकितअतिअनुरागा । बरबशब्रह्मसुखहि मनलागा ॥
कहमुनिबिहंसिकहेहुनृपनीका । बचनतुम्हार न होइअलीका ॥
ये प्रिय सबहिजहांलगि प्राणी । मनमुसकाहिं रामसुनिवाणी ॥
रघुकुल मणि दशरथ के जाये । ममहित लागिनरेश पठाये ॥

दो० रामलषण दोउ बन्धु वर रूप शील बलधाम ।
मखराखेउसब साखिजग जीतिअसुर संग्राम ॥

मुनि तव चरण देखि कहराऊ । कहिनसकौंनिजपुण्यप्रभाऊ॥
सुंदर श्याम गौर दोउ भ्राता । आनंदहू के आनंद दाता ॥
इनकी प्रीति परस्पर पावनि । कहिनजायमनभावसुहावनि॥
सुनहुनाथ कह मुदित विदेहू । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥
पुनिपुनि प्रभुहिचितव नरनाहू । पुलकगात उरअधिकउछाहू ॥
मुनिहिं प्रशंसि नाइ पदशीशा॥ चलेलिवाय नगर अवनीशा ॥
सुन्दर सदन सुखद सबकाला । तहां बासलै दीन्ह भुआला ॥

करि पूजा सब विधि सेवकाई । गयउराउ गृह बिदाकराई ॥

दो० ऋषयसंग रघुवंश मणि करि भोजन विश्राम ।
बैठे प्रभुभ्राता सहित दिवस रहा भरियाम ॥

लषण हृदय लालसा बिशेषी । जाय जनक पुर आइय देखी ॥
प्रभुभयबहुरिमुनिहिंसकुचाहीं । प्रकटनकहहिंमनहिंमुसकाहीं ॥
राम अनुज मनकी गतिजानी । भक्त बछलताहिय हुलसानी ॥
परम विनीत सकुचि मुसुकाई । बोले गुरु अनुशासन पाई ॥
नाथ लषण पुर देखन चहहीं । प्रभु सकोचडर प्रकटनकहहीं ॥
जो राउर अनुशासन पाऊं । नगर दिखाय तुरत लै आऊं ॥
सुनि मुनीशकह वचन सप्रीती । कस न राम राखहु तुमनीती ॥
धर्म्म सेतु पालक तुम ताता । प्रेम विवश सेवक सुखदाता ॥

दो० जाइ देखि आवहुनगर सुखनिधान दोउभाइ ।
करहु सफल सबके नयन सुंदरबदनदिखाइ ॥

मुनिपद कमलबन्दिदोउभ्राता । चले लोक लोचन सुखदाता ॥
बालक वृन्द देखि अति शोभा । लगे संग लोचन मनलोभा ॥
पीत बसन परिकर कटिभाथा । चारु चाप शर सोहत हाथा ॥
तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी । श्यामल गौर मनोहर जोरी ॥
केहरि कन्धर वाहु विशाला । उरअतिरुचिरनागमणिमाला ॥
सुभग श्रवण सरसीरुहलोचन। बदन मयंक तापत्रय मोचन ॥
कानन कनक फूल छबि देही । चितवत चितयचोरजनुलेही ॥
चितवनिचारु भृकुटि वर बांकी । तिलकरेख शोभा जनुचाकी ॥

दो० रुचिर चौतनी सुभग शिर मेचक कुंचित केश ।
नखशिख सुन्दर बन्धुदोउ शोभासकलसुदेश ॥

देखन नगर भूप सुत आये । समाचार पुर बासिन पाये ॥
धाये धाम काम सब त्यागे । मनहुंरंक निधि लूटन लागे ॥
निरखि सहज सुन्दरदोउभाई । होहिं सुखी लोचन फलपाई ॥
युवती भवन झरोखनिलागी । निरखहिं रामरूप अनुरागी ॥

कहहिं परस्पर वचन सप्रीती । सखिइनकोटिकामछबिजीती ॥
सुरनर असुर नाग मुनिमाहीं । शोभा अस कहुंसुनियतनाहीं ॥
विष्णु चारिभुजविधिमुखचारी । विकट वेष मुख पंच पुरारी ॥
अपर देव असको जग आही । इहिविधिछबि पटतरियेजाही ॥
दो० वयकिशोर सुखमा सदन श्यामगौरसुखधाम ।
अंग अंग पर वारिये कोटि कोटि शत काम ॥
कहहु सखी असको तनु धारी । जो न मोह यहरूप निहारी ॥
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी । जो मैंसुना सो सुनहुसयानी ॥
येदोउ नृप दशरथ के ढोटा । बाल मरालनके कल जोटा ॥
मुनि कौशिक मखके रखवारे । जिनरणअजय निशाचरमारे ॥
श्याम गात कलकंज विलोचन । जो मारीच सुभुजमदमोचन ॥
कौशल्या सुत सो सुख खानी । नाम राम धनुशायक पानी ॥
गौर किशोर वेष बर काछे । कर शर चाप राम के पाछे ॥
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता । सुनुसखि तासु सुमित्रामाता ॥
दो० विप्र काजकरि बन्धुदोउ मगमुनि बधूउधारि ।
आये देखन चापमख सुनि हरषीं सब नारि ॥
देखि रामछबि कोउ इक कहई । योग्य जानकी यहबर अहई ॥
जो सखि इनहिं देखि नरनाहू । प्रणपरिहरिहठिकरहिबिवाहू ॥
कोउकह इन भूपति पहिंचाने । मुनि समेत सादर सनमाने ॥
सखि परन्तु प्रण राउ न तजई । विधिवशहठिअविवेकहितजई ॥
कोउ कह जो भलअहैविधाता । सबकहंसुनियउचितफलदाता ॥
तौ जानकिहि मिलिहिबरएहू । नाहिंन आली यह सन्देहू ॥
जो विधिवश अस बनै संयोगू । तौ कृतकृत्य होहिं सब लोगू ॥
सखि हमरे अति आरतिताते । कबहुंक ये आवहिं यहि नाते ॥
दो० नाहिंत हककहं सुनहु सखि इन्हकरदर्शनदूरि ।
यह संघट तब होइ जब पुण्य पुराकृत भूरि ॥
बोली अपर कहेउ सखि नीका । यहबिवाह अतिहितसबहीका ॥

कोउ कह शंकर चाप कठोरा। ये श्यामल मृदुगातकिशोरा ॥
अब असमंजस अहै सयानी। यह सुनि अपरकहैंमृदुबानी ॥
सखिइनकहंकोउकोउअसकहहीं। बड़प्रभावदेखत लघुअहहीं ॥
परसि जासु पद पंकज धूरी। तरी अहल्या कृत अघ भूरी ॥
सोकि रहैं बिनु शिवधनु तोरे। यह प्रतीत परिहरिय नभोरे ॥
जेहि विरंचि रचिसीयसवांरी। तेइश्यामल बररचेउविचारी ॥
तासु वचन सुनि सब हरषानी। ऐसेइ होउ कहहिं मृदुबानी ॥

दो० हियहरषहिंवरषहिंसुमन सुमुखिसुलोचनिवृन्द।
जाहिं जहां जहं बन्धुदोउ तहं तहं परमानन्द ॥

पुर पूरब दिशि गे दोउ भाई। जहां धनुष मख भूमि बनाई ॥
अति विस्तार चारु गच ढारी। विमलवेदिका रुचिर सवांरी ॥
चहुं दिशि कंचन मंचविशाला। रचे जहां बैठहिं महिपाला ॥
तेहि पाछे समीप चहुं पासा। अपर मंच मण्डली बिलासा ॥
कछुक ऊंच सब भांति सुहाई। बैठहिं नगर लोग सब आई ॥
तिनके निकट बिशाल सुहाये। धवल धाम बहु बरणबनाये ॥
जहं बैठो देखहिं पुर नारी। यथायोग्य निजकुलअनुहारी ॥
पुरबालक कहिकहिमृदुबचना। सादरप्रभुहिं देखावहिंरचना ॥

दो० सबशिशु मिसु इहिप्रेमबश परसिमनोहरगात।
तनपुलकहिं अति हर्षहिय देखिदेखि दोउभ्रात ॥

शिशु सब राम प्रेम वश जाने। प्रीति समेत निकेत बखाने ॥
निज निजरुचिसबलेहिंबुलाई। सहितसनेह जाहिं दोउभाई ॥
राम देखावहिं अनुजहिं रचना। कहिमृदु मधुरमनोहरवचना ॥
लवनिशेष महं भुवन निकाया। रचै जासु अनुशासन माया ॥
भक्त हेतु सोइ दीन दयाला। चितवतचकितधनुषमखशाला ॥
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं। जानि बिलंब त्रास मनमाहीं ॥
जासु त्रास डर कहं डर होई। भजन प्रभाव देखावत सोई ॥
कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई। कियेबिदा बालक बरिआई ॥

दो० सभयसप्रेमबिनीतअति सकुचसहितदोउभाइ।
गुरु पदपंकज नाइ शिर बैठे आयसु पाइ॥
निशिप्रवेश मुनिआयसुदीन्हा। सबही संध्याबन्दन कीन्हा॥
कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिरजनी युगयामसिरानी॥
मुनिवर शयनकीन्ह तबजाई। लगे चरण चापन दोउभाई॥
जिनके चरण सरोरुह लागी। करतबिविध जपयोगबिरागी॥
ते दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुरुपद कमल पलोटत प्रीते॥
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा। रघुबरजाइ शयन तब कीन्हा॥
चापत चरण लषणउर लाये। सभय सप्रेम परम सुखपाये॥
पुनि पुनि प्रभुकहसोवहु ताता। पौढ़े धरि उरपद जलजाता॥
दो० उठेलषणनिशिविगतसुनि अरुणशिखाधुनिकान।
गुरुते पहिले जगतपति जागे राम सुजान॥
सकल शौच करि जाय नहाये। नित्यनिबाहिगुरुहिं शिरनाये॥
समय जानि गुरु आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई॥
भूप बाग बर देखेउ जाई। जहं बसन्त ऋतुरहै लुभाई॥
लागे बिटप मनोहर नाना। बरणबरण वरबेलि बिताना॥
नव पल्लव फल सुमन सुहाये। निजसम्पतिसुरतरुहिलजाये॥
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजतबिहंग नचतकलमोरा॥
मध्य बाग सर सोह सुहावा। मणि सोपानबिचित्र बनावा॥
बिमलसलिलसरसिजबहुरंगा। जलखग कूजत गुंजत भृङ्गा॥
दो० बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु हर्षे बन्धु समेत।
परम रम्य आराम यह जो रामहिं सुख देत॥
चहुंदिशि चितै पूछि मालीगन। लगे लेन दलफूल मुदितमन॥
तेहिअवसर सीता तहं आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई॥
संग सखी सब सुभग सयानी। गावहिं गीत मनोहर बानी॥
सरसमीप गिरिजा गृह सोहा। बरणि नजाय देखिमनमोहा॥
मज्जन करि सर सखी समेता। गई मुदितमन गौरि निकेता॥

पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा । निजअनुरूप सुभगबर मांगा ॥
एक सखी सिय संग बिहाई । गई रही देखन फुलवाई ॥
तेइ दोउ बन्धु बिलोकेउ जाई । प्रेम बिबस सीतापहं आई ॥

दो० तासु दशा देखी सखिनपुलक गात जलनैन ।
कहु कारण निजहर्षकर पूछहिं सब मृदु बैन ॥

देखन बाग कुंवर दोउ आये । बय किशोरसबभांति सुहाये ॥
श्यामगौर किमि कहैं बखानी । गिराअनयननयन बिनुबानी ॥
सुनि हरषीं सब सखीसयानी ।सियहिय अतिउतकण्ठाजानी ॥
एक कहहिं नृपसुतते आली । सुने जे मुनिसंगआये काली ॥
जिन निज रूप मोहनी डारी । कीन्हे स्ववश नगरनरनारी ॥
बरणत छबि जहंतहं सबलोगू । अवशि देखिये देखन योगू ॥
तासुबचन अति सियहिसुहाने । दरशलागि लोचन अकुलाने ॥
चलीअग्रकरि प्रियसखि सोई । प्रीति पुरातन लखै न कोई ॥

दो० सुमिर सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत ।
चकितबिलोकतिसकलदिशिजनुशिशुमृगीसभीत ॥

कंकणकिंकिणि नूपुरधुनिसुनि । कहतलषणसनरामहृदयगुनि ॥
मानहुं मदन दुन्दुभी दीन्ही । मनसाबिश्वबिजय कहंकीन्ही ॥
असकहिफिरिचितयेतेहिओरा । सियमुखशशिभयेनयनचकोरा ॥
भये बिलोचन चारु अचंचल । मनहुंसकुचिनिमितजेउदृगंचल ॥
देखि सीय शोभा सुखपावा । हृदय सराहतबचन न आवा ॥
जनु बिरंचि सबनिजनिपुणाई । बिरचि बिश्वकहं प्रकटदिखाई ॥
सुन्दरता कहं सुंदर करई । छबिगृह दीपशिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कबि रहे जुठारी ।केहि पटतरिय बिदेह कुमारी ॥

दो० सियशोभाहिय बरणिप्रभु आपनिदशाबिचारि ।
बोले शुचिमन अनुजसनबचन समय अनुहारि ॥

तात जनक तनया यह सोई । धनुषयज्ञ जेहि कारण होई ॥
पूजन गौरि सखी लै आई । करतिप्रकाश फिरत फुलवाई ॥

जासु बिलोकि अलौकिक शोभा । सहज पुनीत मोर मनक्षोभा ॥
सो सब कारण जान बिधाता । फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता ॥
रघुबंशिन कर सहज सुभाऊ । मन कुपंथ पग धरै न काऊ ॥
मोहिं अतिशय प्रतीति जियकेरी । जेहि सपनेहु परनारिन हेरी ॥
जिनके लहहिं न रिपुरणपीठी । नहिं लावहिं परतियमनडीठी ॥
मंगलु लहहिं न जिनके नाहीं । ते नर बर थोरे जगमाहीं ॥
दो० करतबतकही अनुजसन मनसियरूप लुभान ।
मुखसरोज मकरन्द छबिकरत मधुप इवपान ॥
चितवत चकित चहूं दिशि सीता । कहंगयेनृपकिशोरमनचीता ॥
जहं बिलोकि मृगशावकनयनी । जनु तहंबरषकमलसितश्रेनी ॥
लता ओट तब सखिन लखाये । श्यामलगौर किशोर सुहाये ॥
देखि रूप लोचन ललचाने । हर्षे जनु निजनिधिपहिचाने ॥
थके नयन रघुपति छबिदेखी । पलकनहूं परिहरी निमेखी ॥
अधिक सनेह देह भइ भोरी । शरदशशिहिजनुचितवचकोरी ॥
लोचन मगु रामहिं उरआनी । दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥
जबसियसखिनप्रेमबश जानी । कहिनसकहिंकछुमनसकुचानी ॥
दो० लताभवनते प्रकटभे तेहि अवसर दोउ भाइ ।
निकसेजनुयुगबिमलबिधुजलदपटलबिलगाइ ॥
शोभा सींव सुभग दोउ बीरा । नील पीत जलजात शरीरा ॥
काक पक्ष शिर सोहत नीके । गुच्छा बिचबिचकुसुमकलीके ॥
भाल तिलक श्रमबिन्दुसुहाये । श्रवणसुभग भूषण छबिछाये ॥
बिकट भृकुटि कच घूंघर वारे । नव सरोज लोचन रत नारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला । हास बिलासलेत जनुमोला ॥
मुखछबिकहिनजाहिमोहिंपाहीं । जो बिलोकिबहुकामलजाहीं ॥
उर मणिमाल कम्बुकल ग्रींवा । कामकलभकर भुजबलसींवा ॥
सुमन समेत बामकर दोना । सांवरकुंवर सखी सुठिलोना ॥
दो० केहरि करिपटपीत धरि सुखमा शील निधान ।

देखि भानुकुलभूषणहिं बिसरा सखिनअपान ॥
धरि धीरज इक सखी सयानी । सीतासन बोली गहिपानी ॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू । भूपकिशोर देखि किन लेहू ॥
सकुचि सीय तब नयन उघारे । सन्मुख दोउ रघुबंश निहारे ॥
नख शिखदेखि रामकीशोभा । सुमिरिपिताप्रणमनअतिक्षोभा ॥
परवश सखिन लखी जबसीता । भईगहरु सबकहहिं सभीता ॥
पुनिआउब इहिबिरियां काली । असकहिमनबिहंसीइकआली ॥
गूढ़ गिरासुनि सिय सकुचानी । भयउबिलम्ब मातुभयमानी ॥
धरि बड़ धीर राम उर आनी । फिरआपनप्रण पितुबशजानी ॥
दो० देखन मिसुमृग बिहंगतरु फिरैं बहोरिबहोरि ।
निरखिनिरखिरघुबीरछबि बाढ़ी प्रीतिनथोरि ॥
जानिकठिन शिवचापबिसूरति । चलीराखि उरश्यामलमूरति ॥
प्रभुजब जात जानकी जानी । सुख सनेह शोभा गुणखानी ॥
परम प्रेममय मृदुमसि कीन्ही । चारुचित्रभीतर लिखिदीन्ही ॥
गई भवानी भवन बहोरी । बन्दि चरण बोलीकरजोरी ॥
जयजयजय गिरिराजकिशोरी । जयमहेश मुखचंद्र चकोरी ॥
जयगजबदन षड़ानन माता । जगतजननि दामिनिद्युतिगाता ॥
नहिंतव आदिमध्यअवसाना । अमित प्रभाव वेदनहिं जाना ॥
भवभौविभवपराभवकारिणि । विश्वविमोहनिस्ववशबिहारिणि ॥
दो० पति देवता सुतीय महं मातुप्रथम तवरेख ।
महिमाअमित न कहिसकहिंसहसशारदाशेष ॥
सेवत तोहिं सुलभफलचारी । बरदायनि त्रिपुरारि पियारी ॥
देवि पूजिपद कमलतुम्हारे । सुरनरमुनि सबहोहिं सुखारे ॥
मोरमनोरथ जानहु नीके । बसहु सदा उर पुर सबहीके ॥
कीन्ह्योउ प्रकट न कारणतेही । असकहि चरणगहे बैदेही ॥
विनयप्रेम वशभई भवानी । खसीमाल मूरतिमुसु कानी ॥
सादर सियप्रसाद उरधरेऊ । बोली गौरि हर्षहिय भरेऊ ॥

सुनु सिय सत्य अशीश हमारी । पूजहिं मन कामना तुम्हारी ॥
नारद वचन सदा शुचि सांचा । सोवरमिलहि जाहिमनरांचा ॥
छं० मनजाहि राचो मिलहि सोवर सहज सुन्दर सांवरो ॥
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
इहिभांतिगौरिअशीशसुनिसियसहितयिह हर्षित अली ॥
तुलसी भवानिहिपूजिपुनिपुनि मुदितमन मंदिर चली ॥
सो० जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्ष न जायकहि ॥
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥
हृदय सराहत सीय लुनाई । गुरु समीप गवने दोउ भाई ॥
राम कहा सब कौशिक पाहीं । सरलसुभाव छुवाछल नाहीं ॥
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्हीं । पुनिअशीशदोउभाइनदीन्हीं ॥
सुफल मनोरथ होइ तुम्हारे । रामलषण सुनिभये सुखारे ॥
करि भोजन मुनिवर विज्ञानी । लगे कहनकछुकथा पुरानी ॥
विगतदिवस मुनि आयसु पाई । सन्ध्या करणचले दोउ भाई ॥
प्राचीदिशि शशि उगेउसुहावा । सियमुखसरिसदेखिसुखपावा ॥
बहुरि विचार कीन्ह मनमाहीं । सीयबदन समहिमकरनाहीं ॥
दो० जन्मसिन्धु पुनिबंधुविष दिनमलीन सकलंक ।
सिय मुख समता पावकिमि चन्द्र बापुरोरंक ॥
घटै बढ़ै बिरहिनि दुखदाई । ग्रसै राहु निज संधिहि पाई ॥
कोक शोक प्रद पंकज द्रोही । अवगुण बहुत चन्द्रमा तोही ॥
बैदेही मुख पटतर दीन्हें । होइदोष बड़ अनुचित कीन्हें ॥
सियमुखछबिविधुव्याजबखानी । गुरुपहंचले निशाबढ़िजानी ॥
करि मुनिचरणसरोज प्रणामा । आयसु पाइ कीन्ह विश्रामा ॥
विगत निशा रघुनायक जागे । बंधु बिलोकि कहनअसलागे ॥
उगेउ अरुण अवलोकहु ताता । पंकजकोक लोक सुख दाता ॥
बोले लषण जोरि युग पाणी । प्रभु प्रभाव सूचक मृदुबाणी ॥
दो० अरुणोदय सकुचे कुमुद उडुगणज्योति मलीन ।

 तास तुम्हार आगमन सुनि भयेनृपति बलहीन ॥
नृप सवनखत करहिंउजियारी । टारि न सकहिंचापतमभारी ॥
कमल कोक मधुकर खलनाना । हरषे सकल निशाअवसाना ॥
ऐसहि प्रभुसब भक्त तुम्हारे । होइहहिं टूटे धनुष सुखारे ॥
उदय भानुबिनु श्रमतम नाशा । दुरे नखत जग तेज प्रकाशा ॥
रविनिज उदयव्याज रघुराया । प्रभुप्रतापसब नृपनदिखाया ॥
तव भुजबल महिमा उदघाटी । प्रकटी धनुविघटन परिपाटी ॥
बंधु वचन सुनि प्रभु मुसकाने । होइशुचिसहजपुनीतनहाने ॥
नित्यक्रियाकरि गुरु पहं आये । चरणसरोज सुभग शिरनाये ॥
सतानंद तब जनक बुलाये । कौशिक मुनिपहं तुरत पठाये ॥
जनक बिनय तिनआय सुनाई । हर्षे बोलि लिये दोउ भाई ॥

दो० सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुरु पहं जाइ ।
चलहुतातमुनिकहेउ तब पठवा जनक बुलाइ ॥

सीय स्वयंवर देखिय जाई । ईश काहि धौं देहिं बड़ाई ॥
लषण कहा यश भाजन सोई । नाथ कृपा तव जापर होई ॥
हरषे सुनि सब मुनिवर बानी । दीन्ह अशीशसबहिसुखमानी ॥
पुनि मुनि वृन्द समेतकृपाला । देखन चले धनुष मखशाला ॥
रंग भूमि आये दोउ भाई । अससुधिसब पुरवासिन पाई ॥
चले सकल गृह काज बिसारी । बालक युवा जरठ नर नारी ॥
देखी जनक भीर भइ भारी । शुचि सेवक सबलिये हंकारी ॥
तुरत सकल लोगन पहं जाहू । आसन उचितदेहु सब काहू ॥

दो० कहि मृदु बचन विनीत तिन बैठारे नर नारि ।
उत्तम मध्यम नीचलघु निजनिज थल अनुहारि ॥

राजकुंवर तेहि अवसर आये । मनहुं मनोहरता छवि छाये ॥
गुण सागर नागर वर वीरा । सुन्दर श्यामल गौर शरीरा ॥
राज समाज बिराजत रूरे । उडुगणमहं जनुयुगविधुपूरे ॥
जिनके रही भावना जैसी । प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ॥

देखहिं भूप महा रण धीरा । मनहुं बीर रस धरे शरीरा ॥
डरे कुटिलन्नृप प्रभुहि निहारी । मनहुं भयानक मूरति भारी ॥
रहे असुर छल जोन्नृप बेषा । तिन प्रभुप्रकटकालसमदेखा ॥
पुरवासिन देखे दोउ भाई । नर भूषण लोचनसुखदाई ॥
दो० नारिबिलोकहिंहर्षहिय निजनिजरुचिअनुरूप ।
जनु सोहत शृङ्गार धरि मूरति परम अनूप ॥
बिदुषण प्रभु बिराट मयदीशा । बहुमुखकरिबहुलोचन शीशा ॥
जनक जाति अवलोकहिं कैसे । सजनसगे प्रिय लागहिंजैसे ॥
सहित बिदेहबिलोकहिं रानी । शिशुसमप्रीतिनजायबखानी ॥
योगिन परम तत्त्व मयभासा । संतशुद्ध मन सहज प्रकाशा ॥
हरि भक्तन देखे दोउ भ्राता । इष्ट देवइव सब सुख दाता ॥
रामहिं चितव भावजेहिसीया । सो सनेह सुखनहिंकथनीया ॥
उरअनुभवतिनकहिसककोऊ । कवन प्रकारकहै कबिकोऊ ॥
यहि बिधिरहा जाहि जसभाऊ । तेइ तस देखेउ कोशलराऊ ॥
दो० राजत राज समाज महं कोशल राजकिशोर ॥
सुंदर श्यामल गौरतन बिश्व बिलोचन चोर ॥
सहज मनोहर मूरति दोऊ । कोटिकाम उपमा लघु सोऊ ॥
शरद चंद निन्दक मुख नीके । नीरज नयन भावते जीके ॥
चितवनिचारु मार मदहरणी । भावतहृदय जाइनहिं बरणी ॥
कलकपोल श्रुति कुंडल लोला । चिबुकअधरसुंदर मृदुबोला ॥
कुमुद बंधुकर निंदक हासा । भृकुटीबिकट मनोहर नासा ॥
भालबिशालतिलकझलकाहीं। कचबिलोकिअलिअवलिलजाहीं ॥
पीत चौतनी शिरन सुहाई । कुसुम कली बिच बीच बनाई ॥
रेखा रुचिर कम्बु कल ग्रीवा । जनु त्रिभुवन सुखमाकी सींव ॥
दो० कुंजर मणि कंठा कलितउर तुलसीकीमाल ।
बृषभ कंधकेहरि ठवनिबलनिधि बाहुबिशाल ॥
कटि तूणीर पीत पट बांधे । कर शर धनुष बाम कर कांधे ॥

पीत यज्ञ उपवीत सुहाई । नखशिख मंजु महा छबि छाई ॥
देखि लोग सब भये सुखारे । इकटक लोचन टरहिं नटारे ॥
हरषे जनक देखि दोउ भाई । मुनि पद कमल गहे तबजाई ॥
करि बिनतीनिज कथासुनाई । रंग अवनि सबमुनिहि देखाई ॥
जहं जहं जाहिं कुंवरबर दोऊ । तहं तहं चकित चितवसबकोऊ॥
निज निज रुचिरामहिंसबदेखा । कोउन जान कछुमर्मबिशेखा ॥
भलि रचनानृपसन मुनिकहेऊ । राजा मुदितपरमसुखलहेऊ ॥

दो० सब मंचनते मंच इक सुंदर विशद बिशाल ।
मुनि समेत दोउ बंधु तहं बैठारे महिपाल ॥

प्रभुहि देखि सबनृप हियहारे । जनु राकेश उदय भये तारे ॥
असप्रतीति तिनके मन माहीं । राम चाप तोरब शक नहीं ॥
बिनु भंजेहुभवधनुष बिशाला । मेलहिं सीय राम उर माला ॥
अस बिचारि गवनहुघरभाई । जयप्रताप बल तेज गंवाई ॥
बिहंसे अपर भूप सुनि बानी । जे अबिबेक अंध अभिमानी ॥
तोरेउ धनुष ब्याह अवगाहा । बिनतोरे को कुंवरि बिवाहा ॥
एक बार कालहु किनहोई । सिधहितसमरजितबहम सोई ॥
यह सुनि अपर भूपमुसकाने । धर्म शील हरिभक्त सयाने ॥

सो० सीय बिवाहब राम गर्बदूरिकरि नृपनकर ।
जीतकोसक संग्राम दशरथकेरण बांकुरे ॥

वृथा मरहु जनि गालबजाई । मनमोदक नहिं भूखबुताई ॥
सिखहमार सुनु परमपुनीता । जगदम्बा जानहुजिय सीता ॥
जगत पितारघुपतिहि निहारी । भरि लोचन छबिलेहुनिहारी ॥
सुंदर सुखद सकलगुण राशी । ये दोउबंधु शभु उर बासी ॥
सुधा समुद्र समीप बिहाई । मृग जलनिरखिमरहुकतधाई ॥
करहु जाय जाकहं जोभावा । हमतो आज जन्म फलपावा ॥
असकहि भलेभूप अनुरागे । रूप अनूप बिलोकन लागे ॥
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना । बरषहिंसुमनकरहिं कलगाना॥

दो० जानि सुअवसर सीयतब पठवा जनक बोलाय ।
चतुरसखी सुंदरि सकल सादर चलीं लिवाय ॥

सिय शोभानहिं जायबखानी । जगदम्बिका रूपगुणखानी ॥
उपमा सकल मोहिं लघुलागी । प्राकृतनारि अंग अनुरागी ॥
सीय बरणि तेहि उपमा देई । को कबि कहै अयश कोलेई ॥
जो पट तरिय तीय सम सीया । जगअसयुवतिकहांकमनीया ॥
गिरा मुखर तन अर्द्ध भवानी । रतिअतिदुखितअतनुपतिजानी॥
विष वारुणी बन्धु प्रिय जेही । कहिय रमासम किमि बैदेही ॥
जो छबि सुधा पयोनिधि होई । परम रूप मय कच्छपसोई ॥
शोभा रजु मन्दर शृङ्गारू । मथै पाणि पंकज निज मारू ॥

दो० यहिविधि उपजै लक्षि जब सुंदरता सुखमूल ।
तदपि सकोच समेत कविकहहिं सीयसम तूल ॥

चली संगलै सखी सयानी । गावत गीत मनोहर बानी ॥
सोह नवल तनु सुंदरिसारी । जगतजननिअतुलितछबिभारी ॥
भूषण सकल सुदेश सुहाये । अंग अंग रचि सखिन बनाये ॥
रंगभूमि जबसिय पगु धारी । देखि रूप मोहे नर नारी ॥
हर्षि सुरन दुन्दुभी बजाई । बर्षि प्रसून अप्सरा गाई ॥
पाणि सरोज सोह जयमाला । औचक चितैसकल महिपाला ॥
सीय चकितचित रामहिंचाहा । भये मोहवश सब नर नाहा ॥
मुनि समीप बैठे दोउ भाई । लगे ललकि लोचननिधिपाई ॥

दो० गुरु जनलाजसमाजबड़ि देखिसीय सकुचानि ।
लगीबिलोकन सखिन तन रघुवीरहि उरआनि ॥

राम रूप अरु सिय छबि देखी । नर नारिन परिहरेउनिमेखी ॥
शोचहिंसकल कहत सकुचाहीं । विधिसनविनयकरहिंमनमाहीं॥
हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई । मति हमारि असदेहु सुहाई ॥
बिनबिचारि प्रणतजिनरनाहू । सीय रामकर करै बिवाहू ॥
जग भलकहहि भाव सबकाहू । हठ कीन्हे उर अन्तहु दाहू ॥

यह लालसा मगन सब लोगू । बर सांवरो जानकी योगू ॥
तब बंदीजन जनक बुलाये । बिरदावली कहत चलिआये ॥
कह नृप जायकहहु प्रणमोरा । चले भाट हिय हर्षन थोरा ॥

दो० बोले बन्दी बचन बर सुनहु सकल महिपाल ।
प्रण बिदेह कर कहहिंहमभुजाउठाय बिशाल ॥

नृप भुजबल बिधु शिवधनुराहू । गरुअ कठोरबिदित सबकाहू ॥
रावण बाण महा भट भारे । देखि शरासन गवहिंसिधारे ॥
सोइ पुरारि को दण्ड कठोरा । राज समाज आजुजोइतोरा ॥
त्रिभुवन जय समेत बैदेही । बिनहि बिचार बरै हठितेही ॥
सुनि प्रण सकलभूपअभिलाषे । भटमानी अतिशय मनमाषे ॥
परि कर बांधि उठे अकुलाई । चले इष्ट देवन शिर नाई ॥
तमकिताकितकिंशिवधनुधरहीं । उठै न कोटि भांति बलकरहीं ॥
जिनके कछु बिचार मनमाहीं । चाप समीप महीपन जाहीं ॥

दो० तमकिधरहिंधनुमूढ़नृप उठइ नचलहिं लजाइ ।
मनहुं पायभट बाहुबलअधिक अधिकगरुआइ ॥

भूप सहस दश एकहि बारा । लगे उठावन टरहि नटारा ॥
डिगै न शम्भु शरासन कैसे । कामी बचन सतीमन जैसे ॥
सब नृप भये योग उपहासी । जैसे बिनु बिराग सन्यासी ॥
कीरति बिजय बीरता भारी । चले चापकर सर्वस हारी ॥
श्रीहत भये हारि हियराजा । बैठे निज निज जाय समाजा ॥
नृपन बिलोकिजनकअकुलाने । बोले बचन रोख जनुसाने ॥
द्वीप द्वीप के भूपति नाना । आये सुनि हम जो प्रणठाना ॥
देव दनुज धरि मनुजशरीरा । बिपुल बीर आये रण धीरा ॥

दो० कुंवरि मनोहरि बिजयबड़िकीरतिअति कमनीय ।
पावन हार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय ॥

कहहु काहि यहलाभ न भावा । काहु नशंकर चाप चढ़ावा ॥
रहा चढ़ाउब तोरब भाई । तिल भरिभूमिनसकेउछुड़ाई ॥

अब जनि कोउ माखै भटमानी। वीर विहीन मही मैं जानी ॥
तजहु आशनिज निज गृहजाहू। लिखा न विधिवैदेहिबिवाहू ॥
सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊं। कुंवरि कुंवारि रहै का करऊं ॥
जो जनतेउं बिनुभट महिभाई। तौ प्रणकरि करतेउं न हंसाई ॥
जनक बचन सुनिसब नरनारी। देखि जानकी भये दुखारी ॥
सुनतहि लषणकुटिल भइभौंहैं। रद पटफरकत नयनरिसौंहैं ॥

दो० कहिन सकत रघुवीर डर लगे बचनजनु बाण।
नाइ रामपद कमल शिर बोले गिरा प्रमाण ॥

रघुवंशिन महं जहं कोउ होई। तेहिसमाज अस कहै नकोई ॥
कही जनक जसअनुचितबानी। बिद्यमानरघुकुल मणिजानी ॥
सुनहु भानु कुल पंकज भानू। कहौं सुभाव न कछुअभिमानू ॥
जो राउर अनुशासन पाऊं। कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊं ॥
काचे घट जिमि डारौं फोरी। सकौं मेरु मूलक इव तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना। का बापुरे पिनाक पुराना ॥
नाथ जानि अस आयसु होऊ। कौतुककरौं बिलोकिय सोऊ ॥
कमल नाल इमि चाप चढ़ावौं। शत योजन प्रमाण लै धावौं ॥

दो० तोरौं छत्रक दण्ड जिमितव प्रताप बलनाथ।
जौ न करौं प्रभुपदशपथ पुनि न धरौं धनुहाथ ॥

लषण सकोप बचन जब बोले। डगमगानि महिदिग्गजडोले ॥
सकल लोक सब भूप डराने। सिय हियहर्ष जनक सकुचाने ॥
गुरु रघुपतिसब मुनिमनमाहीं। मुदितभये पुनिपुनिपुलकाहीं ॥
सैनहिं रघुपति लषण निवारे। प्रेम समेत निकटबैठारे ॥
विश्वामित्र समय शुभजानी। बोले अति सनेह मृदुबानी ॥
उठहु राम भंजहु भवचापू। मेटहु तात जनक परितापू ॥
सुनिगुरुबचन चरणशिरनावा। हर्षबिपाद न कछु उर आवा ॥
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये। ठवनि युवा मृगराज लजाये ॥

दो० उदित उदय गिरि मंचपर रघुबर बाल पतंग।

विकसे सन्त सरोज सब हर्षे लोचन भृङ्ग ॥
नृपन केरिआशा निशि नाशी । वचननखत अवलीन प्रकाशी ॥
मानि महीप कुमुद सकुचाने । कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भये बिशोक कोक मुनि देवा । बरषहिं सुमन जनावहिंसेवा ॥
गुरु पद बन्दि सहित अनुरागा । राममुनिन सनआयसु मांगा ॥
सहजहि चलेसकलजगस्वामी । मत्त मंजु कुंजर बर गामी ॥
चलत राम सबपुर नर नारी । पुलक पूरि तनभये सुखारी ॥
बन्दि पितर सुर सुकृत संभारे । जो कछुपुण्य प्रभाव हमारे ॥
तौ शिवधनुष मृणाल कि नाईं । तोरहिं राम गणेश गुसाईं ॥
दो० रामहि प्रेम समेत लखि सखिन समीप बुलाइ ।
सीता मातु सनेह बश बचन कहै बिलखाइ ॥
सखिसब कौतुक देखन हारे । जोउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहइ नृपपाहीं । येबालक असहठभलनाहीं ॥
रावण बाण छुआ नहिं चापा । हारे सकल भूपकरि दापा ॥
सोधनु राज कुंवर कर देहीं । बाल मराल कि मन्दर लेहीं ॥
भूप सयानप सकल सिरानी । सखिबिधिगतिकछुजायनजानी ॥
बोलीं चतुर सखी मृदु बानी । तेजवन्तलघु गनिय नरानी ॥
कहंकुंभज कहं सिन्धु अपारा । शोषेउ सुयश सकल संसारा ॥
रबिमंडल देखत लघु लागा । उदय तासु त्रिभुवनतमभागा ॥
दो० मंत्र परम लघुजासु बश बिधि हरि हर सुरसर्ब ।
महा मत्त गजराज कहं बशकर अंकुश खर्ब्ब ॥
काम कुसुम धनु शायकलीन्हे । सकल भुवन अपनेवशकीन्हे ॥
देवि तजिय संशयअस जानी । भंजब धनुष राम सुनुरानी ॥
सखीबचन सुनि भइपरतीती । मिटा विषाद बढ़ीअतिप्रीती ॥
तब रामहिं बिलोकि वैदेहीं । सभयहृदय बिनवतिजेहितेहीं ॥
मनही मन मनाय अकुलानी । होहु प्रसन्न महेश भवानी ॥
करहु सुफलआपनि सेवकाई । हरि हित हरहु चापगरुआई ॥

गणनायक बर दायक देवा । आजु लगे कीन्ही तव सेवा ॥
बार बार बिनती सुनि मोरी । करहु चाप गरुता अति थोरी ॥

दो० देखि देखि रघुबीरतन सुरमनाव धरिधीर ।
भरे बिलोचन प्रेमजल पुलकावली शरीर ॥

नीके निरखि नयनभरि शोभा । पितुप्रणसुमिरिबहुरिमनक्षोभा ॥
अहह तात दारुणहठ ठानी । समुझतनहिं कछुलाभनहानी ॥
सचिव सभयसिखदेइ न कोई । बुध समाजबड़ अनुचित होई ॥
कहंधनु कुलिशहुचाहिकठोरा । कहंश्यामल मृदुगातकिशोरा ॥
विधिकेहिभांतिधरौं उर धीरा । सिरससुमनकिमिबेधिहिहीरा ॥
सकल सभाकी गतिभइ भोरी । अब मोहिंशम्भुचापगतितोरी ॥
निज जड़ता लोगनपर डारी । होहुहरुअ रघुपतिहि निहारी ॥
अति परताप सीय मनमाहीं । लवनिमेषयुगसमचलि जाहीं ॥

दो० प्रभुहिचितैपुनिचितैमहि राजतलोचन लोल ।
खेलतमनसिज मीनयुग जनुबिधुमण्डलडोल ॥

गिरा अलिनि मुखपंकजरोकी । प्रकटन लाजनिशाअवलोकी ॥
लोचन जलरहु लोचन कोना । जैसे परम कृपणकर सोना ॥
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी । धरिधीरजप्रतीति उर आनी ॥
तन मन बचन मोरमन सांचा । रघुपति पदसरोज मन रांचा ॥
तौ भगवान सकल उर बासी । करिहहिंमुहिंरघुपतिकीदासी ॥
जेहिके जेहि पर सत्य सनेहू । सोतेहिमिलत न कछु संदेहू ॥
प्रभु तन चितै प्रेमप्रण ठाना । कृपानिधान रामसब जाना ॥
सियहिबिलोकितकेउ धनुकैसे । चितवगरुड़लघु ब्यालहिजैसे ॥

दो० लषणलखेउ रघुबंशमणि ताकेउ हरकोदण्ड ।
पुलकिगातबोले वचन चरण चापि ब्रह्मण्ड ॥

दिश कुंजरहुकमठअहि कोला । धरह धरणिधरिधीरन डोला ॥
राम चहहिं शंकर धनु तोरा । होहुसजग सुनिआयसुमोरा ॥
चाप समीप राम जब आये । नरनारिन सुर सुकृत मनाये ॥

सबकर संशय अरु अज्ञानू । मन्द महीपन कर अभिमानू ॥
भृगुपति केरि गर्व्व गरुआई । सुर मुनिवरन केरि कदराई ॥
सियकरशोच जनक परितापा । रानिनकर दारुण दुख दापा ॥
शम्भु चाप बड़ बोहित पाई । चढ़े जाइ सब संग बनाई ॥
राम बाहुबल सिन्धु अपारा । चहत पारनहिंकोउ कनहारा ॥
दो० राम बिलोके लोग सब चित्र लिखेसे देखि ।
चितई सीय कृपायतन जानो विकलबिशेखि ॥
देखी विपुल विकल वैदेही । निमिष विहात कल्पसमतेही ॥
तृषितबारि बिनुजोतन त्यागा । मुये करै का सुधा तड़ागा ॥
का वर्षा जब कृषी सुखाने । समयचूक पुनिका पछिताने ॥
अस जियजानिजानकी देखी । प्रभुपुलके लखिप्रीतिविशेखी ॥
गुरुहिंप्रणाममनहिंमन कीन्हा । अतिलाघवउठाइ धनुलीन्हा ॥
दमकेउदामिनिजिमिघनलयऊ । पुनिधनुनभ मंडलसमभयऊ ॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े । काहु न लखा देखसब ठाढ़े ॥
तेहिक्षण मध्य राम धनु तोरा । भरेउभुवन धुनिघोरकठोरा ॥
छं० भरि भुवन घोर कठोर रवरबि बाजितजि मारगचले ॥
चिक्करहिं दिग्गज डोलमहि अहिकोल कूरमकलमले ॥
सुर असुर मुनिकरकानदीन्हेसकल विकलविचारहीं ॥
कोदण्ड भंजेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ॥
सो० शंकर चाप जहाज सागर रघुवर बाहुबल ।
बूड़े सकल समाज चढ़ेजेप्रथमहिं मोहवश ॥
प्रभु दोउ खंड चाप महि डारे । देखिलोग सबभये सुखारे ॥
कौशिक रूप पयोनिधि पावन । प्रेमबारि अवगाह सुहावन ॥
राम रूप राकेश निहारी । बढ़ीबीचि पुलकावलिभारी ॥
बाजे नभ गहगहे निशाना । देवबधू नाचहिं करि गाना ॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा । प्रभुहिंप्रशंसहिं देहिंअशीशा ॥
बरषहिं सुमन रंगबहु माला । गावहिंकिन्नरगीत रसाला ॥

रही भुवन भरि जय जय बानी । धनुषभंग धुनिजात न जानी ॥
मुदित कहहिं जहंतहं नरनारी । भंजेउ राम शम्भुधनु भारी ॥

दो० बन्दी मागध सूतगण बिरद बदहिं मति धीर ।
करहिंनिछावरलोगसब हयगजधनमणिचीर ॥

झांझ मृदङ्ग शंख सहनाई । भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई ॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये । जहं तहं युवतिनमंगलगाये ॥
सखिन सहितहर्षित अतिरानी । सूखत धान परा जनु पानी ॥
जनक लहेउ सुख शोच बिहाई । पैरत थकेउ थाहजनु पाई ॥
श्रीहत भये भूप धनु टूटे । जैसे दिवस दीप छवि छूटे ॥
सियहियसुखवरणियकेहिभांती । जनु चातकपायेजल स्वाती ॥
रामहिं लषण विलोकत कैसे । शशिहिचकोरकिशोरकजैसे ॥
सतानन्द तब आयसु दीन्हा । सीता गवन रामपहंकीन्हा ॥

दो० संग सखी सुन्दरि चतुरि गावहिं मंगल चार ।
गवनी बाल मराल गति सुखमाअंग अपार ॥

सखिन मध्यसिय सोहत कैसी । छबिगणमध्यमहाछबिजैसी ॥
कर सरोज जयमाल सुहाई । विश्व विजय शोभाजशुछाई ॥
तन सकोच मन परम उछाहू । गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू ॥
जाइ समीप राम छबि देखी । रहिजनुकुंवरि चित्रअवरेखी ॥
चतुर सखी लखि कहा बुझाई । पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
सुनत युगुलकर माल उठाई । प्रेम विवश पहिराइन जाई ॥
सोहत जनु युगजलजसनाला । शशिहिसभीतदेत जयमाला ॥
गावहिं छबि अवलोकिसहेली । सिय जयमाल रामउर मेली ॥

सो० रघुवर उर जयमाल देखिदेव वरषहिं सुमन ।
सकुचेसकलभुआलजनुविलोकिरविकुमुदगण ॥

पुरु अरु व्योम बाजने बाजे । खलभयेमलिनसाधुसबगाजे ॥
सुर किन्नर नरनाग मुनीशा । जयजयसबकहिदेहिंअशीशा ॥
नाचहिं गावहिं विबुध वधूटी । बार बार कुसुमावलि छूटी ॥

जहं तहं विप्र वेद धुनि करहीं । बन्दी बिरदावलि उच्चरहीं ॥
महि पाताल नाकयश व्यापा । राम बरी सिय भंजेउ चापा ॥
करहिं आरती पुरनर नारी । देहिंनिछावरि वृत्ति बिसारी ॥
सोहत सीय रामकी जोरी । छबि शृङ्गार मनहुंइक ठोरी ॥
सखी कहहिंप्रभुपद गहु सीता । करतिनचरणपरसअतिभीता ॥
दो० गौतमतियगति सुरतिकरि नहिंपरसतिपदपानि ।
मनबिहंसे रघुबंशमणि प्रीति अलौकिक जानि ॥
तब सिय देखि भूप अभिलाषे । कूर कुपूत मूढ़ मन माषे ॥
इठिउठि पहिरिसनाह अभागे । जहं तहं गाल बजावनलागे ॥
लेहु छुड़ाइ सीय कहं कोऊ । धरि बांधहु नृपबालक दोऊ ॥
तोरे धनुष काज नहिं सरई । जीवत हमहिं कुंवरिको बरई ॥
जो विदेह कछु करै सहाई । जीतहुसमर सहितदोउभाई ॥
साधु भूप बोले सुनि बानी । राजसमाजहि लाजलजानी ॥
बल प्रताप बीरता बड़ाई । नाक पिनाकहिसंग सिधाई ॥
सोइ सूरता कि अबकहुंपाई । असबुधितौ विधिमुहमसिलाई ॥
दो० देखहु रामहिंनयन भरि तजि ईर्षा मद मोहु ।
लषणरोषपावकप्रबल जानिशलभ जनिहोहु ॥
वैनतेय बलि जिमि चह कागू । जिमिशशचहहिनागअरिभागू ॥
जिमिचहकुशलअकारणकोही । सुखसम्पदाचहहि शिवद्रोही ॥
लोभी लोलुप कीरति चहई । अकलंकता कि कामी लहई ॥
हरिपद विमुखपरमगतिचाहा । तस तुम्हारलालच नरनाहा ॥
कोलाहल सुनि सीय सकानी । सखी लिवाइ गईं जहं रानी ॥
राम सुभाय चले गुरु पाहीं । सिय सनेह बरणत मनमाहीं ॥
रानिन सहित शोचवश सीया । अबधौंविधिहिकहा करनीया ॥
भूप बचनसुनि इतउत तकहीं । लषणरामडर बोलिन सकहीं ॥
दो० अरुणनयनभृकुटीकुटिल चितवतनृपनसकोप ।
मनहुंमत्तगजगणनिरखि सिंहकिशोरहि चोप ॥

खर भर देखि विकल नरनारी । सब मिलिदेहिं महीपनगारी ॥
तेहिअवसरसुनि शिवधनुभंगा । आये भृगुकुल कमल पतंगा ॥
देखि महीप सकल सकुचाने । बाज झपट जनु लवा लुकाने ॥
गौर शरीर भूति भलि भ्राजा । भालबिशाल त्रिपुण्डबिराजा ॥
शीशजटा शशिबदन सुहावा । रिसवशकछुकअरुणहोइआवा॥
भृकुटी कुटिल नयनरिसराते । सहजहिंचितवतमनहुंरिसाते ॥
वृषभ कन्धउर बाहु बिशाला । चारु जनेउ माल मृगछाला ॥
कटि मुनि बसन तूण दुइबांधे । धनु शर कर कुठारकलकांधे ॥

दो० सन्त वेष करणीकठिन बरणि न जाइस्वरूप ।
धरि मुनि तनु जनु बीररस आयेजहं सब भूप ॥

देखत भृगुपति वेष कराला । उठे सकल भयविकलभुवाला ॥
पितुसमेतकहिकहि निजनामा । लगे करन सब दण्डप्रणामा ॥
जेहिसुभायचितवहिंहितजानी । सो जानै जनु आयुखुटानी ॥
जनक बहोरि आय शिरनावा । सीय बुलाय प्रणाम करावा ॥
आशिष दीन्ह सखी हरषानी । निज समाज लै गईं सयानी ॥
बिश्वामित्र मिले पुनि आई । पद सरोज मेले दोउ भाई ॥
राम लषण दशरथ के ढोटा । दीन्ह अशीषजानि भलजोटा ॥
रामहिं चितयरहे थकिलोचन । रूप अपार मार मद मोचन ॥

दो० बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु कहाअतिभीर ।
पूछत जान अज्ञान जिमि ब्यापेउ कोप शरीर ॥

समाचार कहि जनक सुनाये । जेहि कारण महीप सबआये ॥
सुनत बचन फिरिअनत निहारे । देखे चाप खण्ड महि डारे ॥
अति रिस बोले बचन कठोरा । कहुजड़ जनकधनुषकेहिंतोरा ॥
बेगि देखाउ मूढ़ नत आजू । उलटौंमहि जहंलगितवराजू ॥
अति डर उतर देत नृप नाहीं । कुटिल भूप हरषे मन माहीं ॥
सुर मुनि नाग नगर नरनारी । शोचहिं सकलत्रास उरभारी ॥
मन पछताति सीय महतारी । बिधिसवांरि सबबातबिगारी ॥

भृगुपतिकरस्वभावसुनिसीता । अर्द्ध निमेष कल्प समबीता ॥

दो० सभय विलोके लोग सब जानि जानकी भीर ।
हृदय न हर्ष विषाद कछु बोले श्री रघुबीर ॥

नाथ शम्भु धनु भंजन हारा । होइहिकोउयकदासतुम्हारा ॥
आयसुकहा कहिय किनमोही । सुनि रिसायबोले मुनिकोही ॥
सेवक सो जो करै सेवकाई । अरिकरणीकरि करियलराई ॥
सुनहु राम जेइं शिव धनुतोरा । सहसबाहु सम सो रिपुमोरा ॥
सो विलगाइ विहाइ समाजा । नतु मारे जैहैं सब राजा ॥
सुनिमुनि बचनलषणमुसकाने । बोले परशुधरहि अपमाने ॥
बहु धनुहीं तोरेउं लरिकाईं । कबहुंनअसरिस कीन्हगोसाईं ॥
इहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनिरिसायकह भृगुकुलकेतू ॥

दो० रेनृप बालक कालवश बोलत तोहिं न संभार ।
धनुहींसम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार ॥

लषण कहा हंसिहमरे जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
का क्षितिलाभ जीर्ण धनुतोरे । देखा राम नये के भोरे ॥
छुवत टूट रघुपतिहि न दोषू । मुनि बिनुकाज करियकतरोषू ॥
बोले चितय परशु की ओरा । रेशठ सुनेसि प्रभाव न मोरा ॥
बालकबोलिवधौं नहिं तोहीं । केवल मुनिजड़जानेसि मोहीं ॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही । विश्वविदितक्षत्रिय कुलद्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनुकीन्हे । बिपुल बार महि देवन दीन्हे ॥
सहसबाहु भुज छेदन हारा । परशु बिलोकु महीप कुमारा ॥

दो० मातु पितहिजनि शोच बश करसि महीप किशोर ।
गर्भन के अर्भक दलन परशु मोर अति घोर ॥

बिहंसि लषण बोले मृदुबानी । अहो मुनीश महा भट मानी ॥
पुनिपुनि मोहिं देखाव कुठारा । चहत उड़ावन फूंकि पहारा ॥
इहां कुम्हड़ बतियाकोउ नाहीं । जो तर्जनि देखत मरिजाहीं ॥
देखि कुठार शरासन बाना । मैंकछुकहासहित अभिमाना ॥

भृगुकुल समुझि जनेउबिलोकी । जोकछुकहहु सहौं रिसरोंकी ॥
सुर महिसुर हरिजन अरुगाई । हमरे कुल इनपर न शुराई ॥
बधे पाप अपकीरति हारे । मारतहूं पा परिय तुम्हारे ॥
कोटि कुलिशसमबचनतुम्हारा । बृथा धरहु धनुबाण कुठारा ॥
दो० जो बिलोकिअनुचित कहेउं सुनहु महामुनिधीर ।
सुनि सरोषभृगुबंश मणि बोले गिरा गंभीर ॥
कौशिक सुनहुमंदयह बालक ।कुटिलकालबशनिजकुलघालक॥
भानुबंश राकेश कलंकू । निपट निरंकुश अबुध अशंकू॥
कालकवर होइहि क्षणमाहीं । कहौं पुकारि खोरि मोहिंनाहीं ॥
तुम हटकहु जोचहहु उबारा। कहि प्रताप बलरोख हमारा ॥
लषणकहेउमुनिसुयशतुम्हारा। तुमहिं अछत कोबरणैपारा ॥
अपने मुख तुमआपनिकरणी । बार अनेक भांतिबहु बरणी ॥
नहिं संतोष तो पुनिकछुकहहू। जनिरिसरोंकि दुसहदुखसहहू ॥
बीर बृत्ति तुमधीर अक्षोभा । गारी देत न पावहु शोभा ॥
दो० शूरसमर करणी करहिं कहि नजनावहिं आपु ।
बिद्यमान रणपाय रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥
तुमतौ कालहांकि जनु लावा । बारबार मोहिं लागि बुलावा ॥
सुनत लषण के बचन कठोरा । परशु सुधारिधरेउ करिघोरा ॥
अब जनि देहु दोषमोहिंलोगू । कटु बादी बालक बध योगू ॥
बाल बिलोकि बहुत मैंबांचा । अब यह मरनहार भा सांचा ॥
कौशिक कहा क्षमिय अपराधू । बालदोष गुण गणहिं नसाधू ॥
कर कुठार मैं अकरुण कोही । आगे अपराधी गुरु द्रोही ॥
उतर देत छांड़ों बिनु मारे । केवल कौशिक शील तुम्हारे ॥
नतु यहि काटि कुठार कठोरे । गुरुहिं उऋण होतेउं श्रमथोरे ॥
दो० गाधि सुवनकह हृदय हंसि मुनिहिं हरिअरेसूझ ।
अजगव खंडेउ ऊखजिमि अजहूं नबूझ अबूझ ॥
कहेउ लषणमुनि शीलतुम्हारा । कोनहिं जान बिदितसंसारा ॥

मातहिं पितहिं उऋण भयनीके । गुरु ऋणरहा शोच बड़जीके ॥
सोजनु हमरे माथे काढ़ा । दिनचलिगयेउब्याजबहुबाढ़ा॥
अब आनिय ब्यवहरियाबोली । तुरत देव मैं थैली खोली ॥
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा । हाहा कहि सबलोग पुकारा ॥
भृगुवर परशु देखावहु मोही । विप्र बिचारि बचौं नृप द्रोही ॥
मिले न कबहुं सुभट रणगाढ़े । द्विज देवता घरहि के बाढ़े ॥
अनुचित कहिसबलोगपुकारे । रघुपतिसैनहि लषण निवारे ॥

दो० लषण उतरआहुतिसरिस भृगुवरकोप कृशानु ।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु ॥

नाथ करहु बालक परछोहू । शुद्ध दूध मुख करिय नकोहू ॥
जोपै प्रभु प्रभाव कछु जाना । तौकि बराबर करत अयाना ॥
जो लरिकाकछुअनुचितकरहीं । गुरु पितु मातुमोदमन भरहीं ॥
करिय कृपा शिशु सेवकजानी । तुमसम शीलधीर मुनि ज्ञानी ॥
राम बचन सुनिकछुक जुड़ाने । कहिकछुलषण बहुरिमुसकाने ॥
हंसतदेखिनखशिखरिसब्यापी । राम तोर भ्राता बड़ पापी ॥
गौर शरीर श्याम मन माहीं । काल कूट मुख पय मुखनाहीं ॥
सहज टेढ़अनुहरे न तोहीं । नीच मीच समलखै नमोहीं ॥

दो० लषण कहेउ हंसिसुनहुमुनि क्रोध पापकर मूल ।
जेहिबशजनअनुचितकरहिं चरहिंविश्वप्रतिकूल ॥

मैंतुम्हार अनुचर मुनि राया । परि हरि कोपकरियअबदाया ॥
टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने । बैठिय होइहिं पांय पिराने ॥
जो अति प्रिय तौ करियउपाई । जोरियकोउ बड़ गुणी बुलाई ॥
बोलत लषणहिं जनक डेराहीं । मष्ट करहु अनुचित भलनाहीं ॥
थर थर कांपहिं पुर नर नारी । छोट कुमार खोट अति भारी ॥
भृगुपतिसुनि सुनिनिर्भयबानी । रिस तनुजरै होय बल हानी ॥
बोले रामहिं देइ निहोरा । बचौं बिचारि बंधु लघुतोरा ॥
मन मलीन तनु सुन्दर कैसे । विष रस भरा कनक घटजैसे ॥

दो० सुनि लक्ष्मण बिहंसे बहुरि नयन तरेरे राम ।
गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि बाणी बाम ॥
अति बिनीतमृदु शीतल बाणी । बोले राम जोरि युगपाणी ॥
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना । बालकबचनकरियनहिंकाना॥
बररे बालक एक स्वभाऊ । इनहिंन सन्तविदूषहिंकाऊ ॥
तिन नाहीं कछु काज बिगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोप वध बन्धु गुसाईं । मोपर करिय दास कीनाईं ॥
कहियबेगिजेहिबिधि रिसजाई । मुनिनायकसोइकरियउपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे । अजहुं बन्धुतव चितवअनैसे ॥
इहिके कण्ठ कुठार न दीन्हा । तौमैं कहा कोपकरिकीन्हा ॥
दो० गर्भश्रवहिं अवनिप रमणिसुनि कुठारगति घोर ।
परशु अछत देखौं जियत बैरी भूप किशोर ॥
बहै न हाथ दहै रिस छाती । भा कुठार कुंठित नृप घाती ॥
भयउबाम बिधि फिरेउस्वभाऊ । मोरे हृदय कृपा कस काऊ ॥
आजु दैव दुख दुसह सहावा । सुनिसौमित्रबिहंसिशिरनावा ॥
बाउ कृपा मूरति अनुकूला । बोलत बचन झरत जनुफूला ॥
जौपै कृपा जरै मुनि गाता । क्रोध भये तनु राखु बिधाता ॥
देखु जनक हठि बालक एहू । कीन्ह चहत जड़ यमपुरगेहू ॥
बेगि करहु किन आंखिनओटा । देखत छोट खोट नृप ढोटा ॥
बिहंसे लषण कहा मुनि पाहीं । मूंदियआंखिकतहुंकोउ नाहीं ॥
दो० परशुराम तब राम प्रति बोले बचन सक्रोध ।
शम्भुशरासन तोरिशठ करसि हमारप्रबोध ॥
बन्धु कहै कटु सम्मत तोरे । तूछल बिनय करसिकरजोरे ॥
करु परितोष मोर संग्रामा । नाहित छांडु कहाउब रामा ॥
छलतजि करहुसमरशिवद्रोही । बन्धु सहित नतु मारौं तोही ॥
भृगुपतितर्मकि कुठार उठाये । मनमुसकाहिं राम शिरनाये ॥
गुणहु लषण कर हम पररोषू । कतहुं सुधाइहु ते बड़ दोषू ॥

टेढ़ जानि शंका सब काहू । बक्र चन्द्रमहि ग्रसै न राहू ॥
रामकहेउ रिसतजियमुनीशा । कर कुठार आगे यह शीशा ॥
जेहिरिसजाइकरियसोइस्वामी । मोहिंजानि आपन अनुगामी ॥
दो० प्रभुहि सेवकहिं समरकस तजहुविप्र बररोष ।
वेष बिलोकि कहेसि कछुबालकहूंनहिंदोष ॥
देखि कुठार बाण धनु धारी । भैलरिकहि रिस बीर बिचारी ॥
नाम जान पैतुमहिं न चीन्हा । बंशस्वभाव उतर तेहिदीन्हा ॥
जो तुम अवतेउ मुनिकी नाईं । पदरजशिरशिशुधरतगोसाईं ॥
क्षमहु चूक अनजानत केरी । चहिय बिप्र उर कृपा घनेरी ॥
हमहिंतुमहिंसरिबरिकसनाथा । कहहुतोकहां चरणकहंमाथा ॥
राम मात्र लघु नाम हमारा । परशुसहित बड़नामतुम्हारा ॥
देव एक गुण धनुष हमारे । नव गुण परम पुनीततुम्हारे ॥
सब प्रकार हम तुम सन हारे । क्षमहु बिप्र अपराध हमारे ॥
दो० बार बार मुनि बिप्र बर कहा राम सन राम ।
बोले भृगुपति सरुष होइ तुहूं बन्धु सम बाम ॥
निपटहिद्विजकरि जानेहुमोहीं । मैं जस बिप्र सुनाऊं तोहीं ॥
चापश्रुवा शर आहुति जानू । कोप मोर अति घोरकृशानू ॥
समिध सेन चतुरंग सुहाईं । महा महीप भये पशु आईं ॥
मैंइहि परशुकाटि बलि दीन्हा । समरयज्ञजग कोटिन कीन्हा ॥
मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे । बोलसि निदरि बिप्रके भोरे ॥
भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा । अहमितिमनहुं जीतिजगठाढ़ा ॥
राम कहा मुनि कहहु बिचारी । रिसअतिबड़ लघुचूकहमारी ॥
छुवतहि टूट पिनाक पुराना । मैं केहिहेतु करौं अभिमाना ॥
दो० जोहमनिदरहिबिप्र वदि सत्यसुनहुभृगुनाथ ।
तौअसको जगसुभटजेहि भयबशनावहिंमाथ ॥
देव दनुज भूपति भट नाना । समबल अधिकहोउबलवाना ॥
जोरण हमहिं प्रचारय कोऊ । लरहिं सुखेन कालकिनहोऊ ॥

क्षत्रिय तनुधरि समर सकाना । कुलकलंक तेहि पांवर जाना ॥
कहौंस्वभाव नकुलहि प्रशंशी । कालहु डरहिं न रण रघुबंशी ॥
बिप्र बंशकी अस प्रभुताई । अभय होइ जो तुमहिं डराई ॥
सुनि मृदुगूढ़ बचनरघुपतिके । उघरे पटल परशु धर मतिके ॥
राम रमापति कर धनु लेहू । खेंचहु चाप मिटै संदेहू ॥
देतचाप आपुहि चढ़िगयऊ । परशुराममन बिस्मय भयऊ ॥

दो० जाना राम प्रभावतब पुलक प्रफुल्लित गात ।
जोरि पाणि बोले बचन प्रेम न हृदय समात ॥

जय रघुबंश बनज बन भानू । गहन दनुज कुलदहनकृशानू ॥
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी । जय मदमोह कोह भ्रमहारी ॥
बिनय शीलकरुणागुणसागर । जयतिबचन रचनाअतिनागर ॥
सेवक सुखद शुभग सबअंगा । जय शरीर छबिकोटिअनंगा ॥
करौं कहा मुख एक प्रशंसा । जय महेश मनमानस हंसा ॥
अनुचित बहुत कहेउं अज्ञाता । क्षमहु क्षमामन्दिर दोउभ्राता ॥
कहि जयजय जयरघुकुलकेतू । भृगुपति गये बनहिं तप हेतू ॥
अप भयकुटिल महीपडराने । उठि उठि कायरगवहिं पराने ॥

दो० देवन दीन्ही दुन्दुभी प्रभुपर बरषहिं फूल ।
हरषे पुर नर नारि सब मिटा मोह भयशूल ॥

अति गह गहे बाजने बाजे । सबहिं मनोहर मंगल साजे ॥
यूथ यूथमिलिसुमुखसुनयनी । करहिंगान कलकोकिलबयनी ॥
सुख बिदेह कर बरणिनजाई । जन्म दरिद्र मनहुं निधि पाई ॥
बिगतत्रास भइ सीयसुखारी । जनुबिधु उदय चकोर कुमारी ॥
जनककीन्हकौशिकहिप्रणामा । प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा ॥
मोहिं कृतकृत्य कीन्ह दुहुंभाई । अबजोउचित साकहियगुसांई ॥
कह मुनि सुनुनर नाहप्रबीना । रहा बिवाह चाप आधीना ॥
टूटतही धनु भयउ बिवाहू । सुर नरनाग बिदित सब काहू ॥

दो० तदपि जाय तुम करहु अब यथा बंशब्योहार ।

बूझि बिप्र कुलबृद्धगुरु वेद विदित आचार ॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई। आनै नृप दशरथहिं बुलाई ॥
मुदितराउकहिभलेहिकृपाला। पठये दूत अवध तेहि काला ॥
बहुरि महाजनसकलबुलाये । आइ सबनि सादर शिर नाये ॥
हाट बाट मन्दिर पुर बासा । नगर संवारहु चारिहु पासा ॥
हरषिचले निजनिजगृह आये । पुनि परिचारक बोलि पठाये ॥
रचहु बिचित्र बितान बनाई । शिर धरि वचनचले सचुपाई ॥
पठये बोलिगुणीतिन्ह नाना । जो बितानबिधिकुशलसुजाना ॥
बिधिहिबन्दितिन्हकीन्हअरंभा। बिरचे कनक कदली थंभा ॥

दो० हरित मणिन के पत्र फल पद्म रागके फूल ।
रचना देखि बिचित्रअति मनबिरंचिके भूल ॥

बेणु हरित मणिमयसबकीन्हे । सरससवर्ण परहिनहिंचीन्हे ॥
कनक कलित अहिबेलिबनाई । लखिनहिंपरे सुवर्ण सुहाई ॥
तेहिके रचिपचि बंध बनाये । बिच बिच मुकता दामसुहाये ॥
माणिकमरकतकुलिशपिरोजा । चीरकोर पचि रचे सरोजा ॥
किये भृंग बहुरंग बिरंगा । गुंजहिं कुंजहिं पवन प्रसंगा ॥
सुरप्रतिमा खम्भनगढ़िकाढ़े । मंगल द्रव्य लिये सब ठाढ़े ॥
चौकैं भांति अनेक पुराये । सिन्दुरमणिमयसहज सुहाये ॥

दो० सौरभ पल्लवसुभगसुठि कियेनीलमणि कोर ।
हेम मौर मरकत घवरि लसत पाटमयडोर ॥

रचे रुचिर बर बन्दन वारे । मनहुं मनोभव फंद संवारे ॥
मंगल कलश अनेक बनाये । ध्वज पताकपट चमर सुहाये ॥
दीप मनोहर मणिमयनाना । जाइ न वरणि बिचित्रबिताना ॥
जेहि मंडप दुलहिनिवैदेही । सो बरणै अस मति कबिकेही ॥
दूलह राम रूपगुणसागर । सोवितान तिहुंलोक उजागर ॥
जनक भवन कीशोभा जैसी। गृह गृह प्रतिपुरदेखिय तैसी ॥
जेहि तिरहुतितेहिसमयनिहारी। तेहि लघुलगेभुवनदशचारी ॥

जो सम्पदा नीच गृह सोहा । सोबिलोकि सुरनायक मोहा ॥
दो० बसै नगर जेहि लक्षिकरि कपटनारि बरबेष ।
तेहि पुरकी शोभा कहत सकुचे शारद शेष ॥
पहुंचे दूत राम पुर पावन । हरषे नगरबिलोकि सुहावन ॥
भूप द्वार तिन खबरि जनाई । दशरथनृप सुनिलिये बुलाई ॥
करि प्रणाम तिन्ह पातीदीन्ही । मुदितमहीप आपउठिलीन्ही ॥
बारि बिलोचन बांचत पाती । पुलकिगात आई भरि छाती ॥
राम लषण उर करवर चीठी । रहिगये कहत नखाटो मीठो ॥
पुनि धरि धीर पत्रिका बांची । हरषी सभा बात सुनि सांची ॥
खेलत रहेतहां सुधि पाई । आये भरत सहित दोउ भाई ॥
पूंछत अति सनेह सकुचाई । तात कहांते पाती आई ॥
दो० कुशलप्राणप्रियबन्धुदोउ अहहिंकहहु केहिदेश ।
सुनि सनेह साने बचन बांची बहुरि नरेश ॥
सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता । अधिक सनेह समातनगाता ॥
प्रीति पुनीत भरतकी देखी । सकलसभा सुखलहेउविशेषी ॥
तब नृप दूत निकट बैठारे । मधुर मनोहर वचन उचारे ॥
भैया कुशल कहहु दोउ बारे । तुमनीके निज नयन निहारे ॥
श्यामल गौर धरे धनु भाथा । बयकिशोरकौशिक मुनि सांथा ॥
पहिचानेउ तो कहहु सुभाऊ । प्रेम बिवशपुनि पुनि कहराऊ ॥
जादिनते मुनि गये लिवाई । तबते आजुसांचि सुधि पाई ॥
कहहु विदेह कवनबिधि जाने । सुनि प्रिय बचन दूतमुसुकाने ॥
दो० सुनहुमहीपति मुकुटमणि तुमसमधन्य नकोउ ।
राम लषण जिनके तनय बिश्वविभूषण दोउ ॥
पूंछन जोगन तनय तुम्हारे । पुरुष सिंह तिहुंपुर उजियारे ॥
जिनके यश प्रतापके आगे । शशिमलीन रविशीतल लागे ॥
तिनकहंकहियनाथकिमिचीन्हे । देखियरविहि किदीपकलीन्हे ॥
सीय स्वयम्बर भूप अनेका । सिमिटे सुभट एक ते एका ॥

शम्भु शरासन काहुन टारा । हारे सकल भूप वरिआरा ॥
तीन लोकमहं जे भट मानो । सबकी शक्ति शम्भु धनुभानी ॥
सकै उठाय सुरासुर मेरू । सोहिय हारिगयउ करफेरू ॥
जेहि कौतुक शिव शैल उठावा । सोउ तेहि सभापराभवपावा ॥
दो० तहां राम रघुबंशमणि सुनिय महामहिपाल ।
भंजेउ चाप प्रयासबिनु जिमिगज पंकजनाल ॥
सुनि सरोष भृगु नायकआये । बहुत भांतितिनआंखिदिखाये ॥
देखि राम बलनिजधनु दीन्हा । करिबहुबिनयगवनबनकीन्हा ॥
राजत राम अतुल बल जैसे । तेज निधान लषण पुनितैसे ॥
कम्पहिं भूप बिलोकत जाके । जिमि गजहरि किशोरकेताके ॥
देव देखि तव बालक दोऊ । अवनि आंखतरआव न कोऊ ॥
दूत बचन रचना प्रिय लागी । प्रेम प्रताप वीर रस पागी ॥
सभा समेत राउ अनु रागे । दूतहिं देन निछाबरि लागे ॥
कहि अनीतितेहि मूंदेउ काना । धर्म बिचारि सबहिंसुखमाना ॥
दो० तब उठि भूप बशिष्ठकहं दीन पत्रिका जाइ ।
कथा सुनाई गुरुहिं सब सादर दूत बुलाइ ॥
सुनि बोले मुनि अति सुखपाई । पुण्य पुरुषकहं महिसुखछाई ॥
जिमि सरिता सागर महं जाहीं । यद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमिसुखसंपति बिनहिंबुलाये । धर्म्मशील पहं जाहिंसुभाये ॥
तुम गुरु बिप्र धेनु सुर सेवी । तस पुनीत कौशिल्या देवी ॥
सुकृती तुम समान जगमाहीं । भयउ नहै कोउहोनेउ नाहीं ॥
तुमते अधिक पुण्यबड़ काके । राजन राम सरिस सुतजाके ॥
बीर बिनीत धर्म व्रत धारी । गुण सागर बालकबरचारी ॥
तुम कहं सर्ब काल कल्याना । सजहूबरात वजाय निशाना ॥
दो० चलेउ बेगिसुनिगुरुबचनभलेहिनाथ शिरनाइ ।
भूपति गवने भवन तब दूतहिं बास दिवाइ ॥
राजा सब रनिवास बुलाई । जनक पत्रिका बांचि सुनाई ॥

सुनि सन्देश सकल हरषानी। अपर काज सब भूप बखानी॥
प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी। मनहुं शिखिनसुनिबारिदबानी॥
मुदित अशीष देहिं गुरु नारी। बारहिं बार मगन महतारी॥
लेहि परस्पर अति प्रियपाती। हृदय लगाय जुड़ावहिं छाती॥
राम लषण की कीरति करणी। बारहिं बार भूप वर बरणी॥
मुनि प्रसाद कहि द्वारसिधाये। रानिन्ह तब महिदेव बुलाये॥
दिये दान आनन्द समेता। चले बिप्रबर आशिष देता॥

सो० याचकलियेहंकारि दीन्हीनिछावरिकोटिविधि।
चिरजीवहु सुत चारि चक्रवर्ति दशरत्थके॥

कहत चले पहिरे पट नाना। हरषि हने गहगहे निशाना॥
समाचार सब लोगन पाये। लागे घर घर होन बधाये॥
भुवन चारि दश भरेउ उछाहू। जनक सुता रघुबीर बिवाहू॥
सुनि शुभ कथा लोग अनुरागे। मगगृह गली संवारनलागे॥
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि। रामपुरी मंगल मय पावनि॥
तदपि प्रीति की रीति सुहाई। मंगल रचना रची बनाई॥
ध्वज पताक पट चामर चारू। छावा परम विचित्र बजारू॥
कनककलशतोरण मणिजाला। हरद दूब दधि अक्षत माला॥

दो० मंगल मय निजनिज भवन लोगन रचेबनाइ।
वीथी सींची चतुर सब चौकें चारु पुराइ॥

जहंतहंयूथयूथमिलिभामिनि। सजिनवसप्तसकलद्युतिदामिनि॥
बिधुबदनी मृगशावक लोचनि। निजस्वरूपरतिमानबिमोचनि॥
गावहिं मंगल मंजुल बानी। सुनि कलरव कलकंठलजानी॥
भूप भवन किमि जाइबखाना। विश्वविमोहन रचेउ बिताना॥
मंगल द्रब्य मनोहर नाना। गाजत बाजतबिपुल निशाना॥
कतहुं विरद बन्दी उच्चरहीं। कतहुं वेदध्वनि भूसुर करहीं॥
गावहिं सुन्दरि मंगल गीता। लै लै नाम राम अरु सीता॥
बहुत उछाह भवन अति थोरा। मानहुं उमगि चला चहुंओरा॥

दो० शोभा दशरथ भवन की को कबि बरणै पार ।
जहां सकलसुर शीशमणि रामलीन्हअवतार ॥

भूप भरत पुनि लिये बुलाई । हयगज स्यन्दन साजहुजाई ॥
चलहु बेगि रघुबीर बराता । सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता ॥
भरत सकल साहनी बुलाये । आयसुदीन्ह मुदित उठिधाये ॥
रचि रुचि तुरंगसाज तिनसाजे । वर्ण वर्ण वर बाजि बिराजे ॥
सुभग सकल सुठिचंचल करणी । अयजिमिजरतधरतपगुधरणी ॥
नाना भांति न जाहिं बखाने । निदरिपवनजनु चहतउड़ाने ॥
तिन पर छयल भये असवारा । भरतसरिस सबराजकुमारा ॥
सब सुन्दर सब भूषण धारी । कर शर चाप तूण कटिभारी ॥

दो० छरे छबीले छयल सब शूर सुजान नबीन ।
युगपदचर असवारप्रति जे असिकला प्रवीन ॥

बांधे बिरद बीर रण गाढ़े । निकसि भये पुर बाहिर ठाढ़े ॥
फेरहिं चतुर तुरंगनि नाना । हरषहिंध्वनिसुनिपणवनिशाना ॥
रथ सारथिन विचित्र बनाये । ध्वज पताक मणिभूषणछाये ॥
चमरुचारु किंकिणिध्वनिकरहीं । भानु यानशोभा अप हरहीं ॥
श्याम कर्ण अगणित हय होते । ते तिन्हरथन सारथिनजोते ॥
सुन्दर सकल अलंकृत सोहैं ।जिनहिंबिलोकतमुनिमनमोहैं ॥
जे जल चलहिं थलहिंकी नाई । टाप न बूड़त बेग अधिकाई ॥
अस्त्र शस्त्र सब साज सजाई । रथी सारथिन लिये बुलाई ॥

दो० चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर लागी जुरन बरात ।
होत सगुण सुन्दरसुखद जो जेहिकारजजात ॥

सुन्दर हस्तिन सोह अंबारी । कहिन जाइजेहिभांतिसंवारी ॥
चले मत्त गज घण्ट बिराजे । मनहुं सुभगसावन घन गाजे ॥
वाहन अपर अनेक बिधाना । शिविकासुभगसुखासनयाना ॥
तिन्ह चढ़ि चलेबिप्र वरवृन्दा । जनुतनुधरे सकलश्रुति छन्दा ॥
मागध सूत बन्दि गुण गायक । चलेयानचढ़ि जो जेहिलायक ॥

बेसर ऊंट बृषभ बहु जाती । चले बस्तुभरि अगणित भांती ॥
कोटिन कांवरि चलेकहारा । बिबिध बस्तुको बरणै पारा ॥
चले सकल सेवक समुदाई । निज निजसाजसमाज बनाई ॥

दो० सबके उर निर्भर हरष पूरित पुलक शरीर ।
कबहिं देखिहैं नयन भरि रामलषणदोउवीर ॥

गरजहिं गजघण्टा ध्वनि घोरा । रथ रव बाजहींस चहुंओरा ॥
निदरिघनहि घुमराहिंनिशाना । निजपरावककुछुनियनकाना ॥
महाभीर भूपति के द्वारे । रज होइ जाइं पषाण पंवारे ॥
चढ़ी अटारिन देखहिं नारी । लिये आरती मंगल थारी ॥
गावहिं गीत मनोहर नाना । अति अनन्द नहिंजायबखाना ॥
तब सुमन्त दुइस्यन्दन साजी । जोतेहय रवि निन्दक बाजी ॥
दोउ रथ रुचिर भूप पहंआने । नहिं शारद प्रतिजाहिंबखाने ॥
राम समाज एक रथ भ्राजा । दूसर तेज पुंज अति राजा ॥

दो० तेहि रथ रुचिर बशिष्ठकहं हरषि चढ़ाइ नरेश ।
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हरगुरु गौरिगणेश ॥

सहित बशिष्ठ सोह नृपकैसे । सुरगुरु संग पुरंदर जैसे ॥
करि कुलरीति वेद बिधिराऊ । देखि सबहि सब भांतिबनाऊ ॥
सुमिरि राम गुरु आयसुपाई । चले महीपति शंख बजाई ॥
हरषे बिबुध बिलोकि बराता । बरषहिं सुमन सुमंगल दाता ॥
भयउ कोलाहल हय गजगाजे । व्योम बरात बाजने बाजे ॥
सुर नर नारि सुमंगल गाई । सरसराग बाजहिं सहनाई ॥
घण्ट घंटि ध्वनिबरणि न जाई । सरैं करैं पावक फहराई ॥
करहिं बिदूषक कौतुक नाना । हास कुशलकल गानसुजाना ॥

दो० तुरंग नचावहिं कुंवर बर अकनि मृदंगनिशान ।
नागर नटचितवहिं चकितडिगहिनतालबिधान ॥

बनै न बरणत बनी बराता । होइं सगुण सुन्दर शुभदाता ॥
चारा चाख बाम दिशि लेई । मनहुं सकल मंगल कहिदेई ॥

दाहिन काग सुखेत सुहावा । नकुल दरश सबकाहुनपावा ॥
सानुकूल बह त्रिविध बयारी । सघट सबाल आव बरनारी ॥
लोवा फिरिफिरि दरशदिखावा । सुरभीसन्मुखशिशुहिपिआवा ॥
मृगमाला दाहिन दिशि आई । मंगल गण जनुदीन दिखाई ॥
क्षेमकरी कह क्षेम विशेषी । श्यामावाम सुतरु पर देखी ॥
सम्मुख आयउ दधि अरुमीना । कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना ॥

दो० मंगल मय कल्याण मय अभिमत फलदातार ।
जनु सब सांचे होन हित भये सगुण यकबार ॥

मंगल शकुन सुगम सब ताके । सगुण ब्रह्म सुन्दर सुतजाके ॥
रामसरिसबर दुलहिनि सीता । समधीदशरथ जनक पुनीता ॥
सुनिअसब्याह सगुणसबनाचे । अब कीन्हे विरंचि हम साचे ॥
इहिविधिकीन्ह बरात पयाना । हयगजगाजहिंहनहिंनिशाना ॥
आवत जानि भानुकुल केतू । सरितन जनक बंधाये सेतू ॥
बीच बीच बर बास बनाये । सुरपुर सरिस सम्पदा छाये ॥
अशन शयन बर बसन सुहाये । पावहिंसबनिजनिज मनभाये ॥
नितनूतन लखिसुख अनुकूला । सकल बरातिन मन्दिर भूला ॥

दो० आवत जानि बरात बर सुनि गह गहे निशान ।
सजि गजरथ पदचर तुरंग लेन चले अगवान ॥

कनक कलश कलकोंपर थारा । भोजन ललित अनेकप्रकारा ॥
भरे सुधा सम सब पकवाना । भांतिभांतिनहिंजाहिंबखाना ॥
फल अनेक बर वस्तु सुहाई । हरषि भेंट हित भूप पठाई ॥
भूषण बसन महामणि नाना । खगमृगहयगजबहुविधियाना ॥
मंगल सगुण सुगन्ध सुहाये । बहुतभांति महिपाल पठाये ॥
दधि चिउवा उपहार अपारा । भरिभरि कांवरि चलेकहारा ॥
अगवानन जब दीख बराता । उर आनन्द पुलक भरगाता ॥
देखि बनाव सहित अगवाना । मुदित बरातिन हने निशाना ॥

दो० हरषि परस्पर मिलन हित कछुक चले बगमेल ।

जनु आनन्द समुद्र दुइ मिलत विहाय सुबेल ॥
बरषिसुमन सुरसुंदरि गावहिं । मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं ॥
बस्तु सकल राखी नृप आगे । बिनयकीन्हतिन्हअतिअनुरागे॥
प्रेम समेत राउ सब लीन्हा । भै बकशीश याचकन दीन्हा ॥
करि पूजा मान्यता बड़ाई । जनवासे कहं चले लिवाई ॥
बसन बिचित्र पांवड़े परहीं । नृप दशरथ तापर पगधरहीं ॥
देखि धनद धन मद परिहरहीं । बरषिसुमनसुरजयजयकरहीं ॥
अति सुन्दर दीन्हेउ जनवासा । जहंसबकहंसबभांति सुपासा ॥
जानी सिय बरात पुर आई । कछुनिजमहिमा प्रकटजनाई ॥
हृदय सुमिरि सबसिद्धि बुलाई । भूप पहुनई करन पठाई ॥
दो० सिय आयसु शिरसिद्धिधरि गईं जहां जनवास ।
लिये सम्पदा सकल सुख सुर पुर भोगबिलास ॥
निज निजबासबिलोकि बराती । सुरसुखसकलसुलभसबभांती॥
बिभव भेद कछु काहुन जाना ।सकलजनककरकरहिबखाना ॥
सिय महिमा रघुनायक जानी । हरषे हृदय हेतु पहिचानी ॥
पितु आगमन सुनत दोउ भाई । हृदय न अतिआनन्द समाई ॥
सकुचतकहि न सकत गुरुपाहीं । पितु दर्शन लालच मनमाहीं ॥
विश्वामित्र विनय बड़ि देखी । उपजा उर संतोष विशेषी ॥
हरषि बन्धु दोउ हृदय लगाये । पुलकिअंग लोचनजलछाये ॥
चले जहां दशरथ जनवासे । मनहुं सरोवर तकेउ पियासे ॥
दो० भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन समेत ।
उठे हरषि सुख सिन्धु महं चले थाहसी लेत ॥
मुनिहिं दण्डवत कीन्ह महीशा । बार बार पदरजधरि शीशा ॥
कौशिक राउ लिये उर लाई । कहि अशीश पूछी कुशलाई ॥
पुनि दण्डवत करत दोउ भाई । देखिनृपतिउर सुखनसमाई ॥
सुत हियलाइ दुसह दुख मेटे । मृतक शरीर प्राणजनु भेंटे ॥
पुनि वशिष्ठ पदशिर तिन नाये । प्रेममुदितमुनिवर उरलाये ॥

विप्र वृन्द बंदे दुहु भाई । मनभावति अशीश तिनपाई ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा । लिये उठाइ लाइउर रामा ॥
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता । मिले प्रेम परिपूरण गाता ॥

दो० पुरजन परिजन जातिजन याचक मंत्री मीत ।
मिलेयथाविधिसबहिंप्रभु परमकृपालुविनीत ॥

रामहिं देखि बरात जुड़ानी । प्रीतिकिरीतिनजाइ बखानी ॥
नृप समीप सोहहिं सुतचारी । जनुधन धर्मादिकतनु धारी ॥
सुतन सहित दशरथ कहंदेखो । मुदित नगर नरनारिविशेषी ॥
सुमनबरषि सुरहनहिं निशाना । नाकनटी नाचहिं करिगाना ॥
सतानन्द अरु विप्र सचिवगन । मागध सूत विदुष बन्दीजन ॥
सहित बरात राउ सनमाना । आयसुमांगि चले अगवाना ॥
प्रथम बरात लगनते आई । तातें उर प्रमोद अधिकाई ॥
ब्रह्मानन्द लोग सबलहहीं । वढ़उदिवसनिशिविधिसनकहहीं ॥

दो० रामसीय शोभाअवधि सुकृतअवधि दोउराज ।
जहंतहंपुरजनकहहिंअस मिलिनरनारिसमाज ॥

जनक सुकृत मूरति वैदेही । दशरथ सुकृतराम धरिदेही ॥
इनसम काहु न शिव आराधे । काहु न इनसमानफलसाधे ॥
इनसमकोउन भयउ जगमाहीं । हैनहिं कतहूं होनेउ नाहीं ॥
हमसब सकल सुकृतकी राशी । भयेजगजन्मिजनकपुरवासी ॥
जिन जानकी राम छवि देखी । कोसुकृती हमसरिस विशेषी ॥
पुनि देखब रघुवीर बिवाहू । लेब भलीबिधि लोचन लाहू ॥
कहहिंपरस्पर कोकिल वयनी । यहिबिवाहबड़लाभ सुनयनी ॥
बड़भाग विधि बात बनाई । नयनअतिथिहोइहैंदोउ भाई ॥

दो० बारहिंबार सनेह वश जनक बोलाउब सीय ।
लेन आइहैं बन्धु दोउ कोटिकाम कमनीय ॥

विविध भांति होइहि पहुनाई । प्रियनकाहिअस सासुरमाई ॥
तबतब राम लषणहिं निहारी । होइहहिं सबपुरलोक सुखारी ॥

सखिजस रामलषणकर जोटा । तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा ॥
श्याम गौर सब अंग सुहाये । ते सब कहहिं देखि जे आये ॥
कहा एक मैं आजु निहारे । जनु बिरंचि निजहाथ संवारे ॥
भरत राम एकहि अनुहारी । सहसालखिनसकहिंनरनारी ॥
लषण शत्रुसूदन इक रूपा । नखशिख ते सब अंगअनूपा ॥
मनभावहिंमुखवरणि न जाहीं । उपमाकहंत्रिभुवन कोउनाहीं ॥

छं० उपमानकोउकहदासतुलसी कतहुंकविकोविदकहैं ।
बलविनयबिद्याशीलशोभा सिन्धु इनसमयेलहैं ॥
पुरनारिसकलपसारिअंचलविधिहिबचनसुनावहीं ।
ब्याहियसोचारिउभाइइहिपुर हमसुमंगलगावहीं ॥

सो० कहहिं परस्परनारि बारिविलोचनपुलकतन ।
सखिसबकरबपुरारि पुण्य पयोनिधिभूपदोउ ॥

इहिविधिसकल मनोरथकरहीं । आनंदउमंगिउमंगिउरभरहीं ॥
जे नृप सीय स्वयम्बर आये । देखि बन्धुसब तिनसुखपाये ॥
कहत रामयश विशद विशाला । निजनिजभवनगयेमहिपाला ॥
गये बीति कछुदिन यहिभांती । प्रमुदितपुरजन सकलबराती ॥
मंगल मूल लगन दिनआवा । हिमऋतु अगहनमाससुहावा ॥
ग्रह तिथि नखत योग बर बारू । लगनशोधिविधिकीन्हविचारू ॥
पठैदीन नारद सन सोई । गुणी जनकके गणकन जोई ॥
सुनी सकल लोगन यह बाता । कहहिंज्योतिषीअहहिंबिधाता ॥

दो० धेनु धूलि बेला विमल सकल सुमंगल मूल ।
विप्रन कहेहु विदेहसन जानिसमय अनुकूल ॥

उपरोहितहिं कहेउ नरनाहा । अब बिलम्ब के कारणकाहा ॥
शतानन्द तब सचिव बुलाये । मंगल कलश साजिसबलाये ॥
शंख निशान पणव बहु बाजे । मंगल कलश सगुणसबसाजे ॥
सुभगसुआसिनि गावहिंगीता । करहिं वेदधुनि विप्र पुनीता ॥
लेन चले सादर इहि भांती । गये जहां जनवास बराती ॥

कोशलपति करदेख समाजू । अतिलघु लगेतिनहिं सुरराजू ॥
भयउ समय अब धारियपाऊ । यह सुनि परा निशाननघाऊ ॥
गुरुहिंपूंछिकरिकुल बिधिराजा । चले संग मुनिसाज समाजा ॥
दो० भाग्य बिभव अवधेश कर देखि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहनसहसमुख जानि जन्मनिज बादि ॥
सुरन सुमंगल अवसर जाना । बरषहिं सुमन बजाइनिशाना ॥
शिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा । चढ़े विमानन नाना यूथा ॥
प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू । चले बिलोकन राम बिवाहू ॥
देखि जनक पुर सुर अनुरागे । निजनिजलोकसबहिंलघुलागे ॥
चितवहिंचकितविलोकिबिताना । रचनासकलअलौकिकनाना ॥
नगर नारि नर रूप निधाना । सुघर सुधर्म सुशील सुजाना ॥
तिनहिं देखि सबसुरनरनारी । भयेनखत जनु विधुउजियारी ॥
बिधिहिभयउ आश्चर्य बिशेषी । निज करणीकछुकतहुं न देखी ॥
दो० शिव समुझाये देव सब जनि आश्चर्य भुलाहु ।
हृदय विचारहु धीरधरि सिय रघुबीर बिवाहु ॥
जिनकर नाम लेत जगमाहीं । सकल अमंगल मूलनशाहीं ॥
करतल होहिं पदारथ चारी । ते सिय राम कहेउ कामारी ॥
इहिविधि शंभु सुरन समुझावा । पुनि आगे बर बसह चलावा ॥
देवन देखे दशरथ जाता । महामोदमन पुलकित गाता ॥
साधु समाज संग महिदेवा । जनुतनु धरेकरहिं सुखसेवा ॥
सोहत साथ सुभग सुत चारी । जनु अपबर्गसकल तनुधारी ॥
मरकत कनक बरण बर जोरी । देखि सुरन भइ प्रीतिनथोरी ॥
पुनि रामहिंबिलोकि हियहरषे । नृपहिसराहिसुमनतिन्हबरषे ॥
दो० रामरूप नख शिख सुभग बारहिंबार निहारि ।
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥
केकि कण्ठद्युतिश्यामल अंगा । तड़ितविनिन्दक बसनसुरंगा ॥
ब्याह बिभूषण बिबिध बनाये । मंगलमय सब भांति सुहाये ॥

शरद बिमलबिधु बदनसुहावन । नयननवलराजीव लजावन ॥
सकल अलौकिक सुंदरताई । कहि न जायमनहींमनभाई ॥
बन्धु मनोहर सोहहिं संगा । जात नचावत चपल तुरंगा ॥
राज कुंवर बर बाजि नचावहिं । बंश प्रशंसकबिरद सुनावहिं ॥
जेहि तुरंगपर राम बिराजे । गतिबिलोकिखगनायकलाजे ॥
कहिन जाय सबभांति सुहावा । बाजि वेष जनु काम बनावा ॥

छं० जनुबाजि वेष बनाइमनसिज रामहित अतिसोहही ।
अपनबय बलरूपगुण गति सकलभुवन बिमोहही ॥
जगमगतिजीनजड़ावज्योतिसुमोतिमाणिकतेहिलगे ।
किंकिणिललामलगामललितबिलोकिसुरनरमुनिठगे ॥

दो० प्रभुमनसहिंलयलीनमन चलतबाजिछबिपाव ।
भूषण उडुगण तड़ितघन जनुबरबरहिनचाव ॥

जेहिबर बाजि राम असवारा । तेहि शारदहु न बरणै पारा ॥
शंकर राम रूप अनुरागे । नयनपंचदश अतिप्रियलागे ॥
हरिहित सहित राम जबजोहे । रमा समेत रमापति मोहे ॥
निरखि रामछबि बिधिहरषाने । आठहिनयनजानि पछिताने ॥
सुर सेनप उर बहुत उछाहू । बिधिते डेवढ़े लोचन लाहू ॥
रामहि चितव सुरेश सुजाना । गौतम शापपरमहित माना ॥
देव सकल सुरपतिहिसिहाहीं । आजु पुरन्दर सम कोउनाहीं ॥
मुदित देवगण रामहिं देखी । नृप समाजदुहुं हरष विशेषी ॥

छं० अतिहर्ष राज समाज दुहुंदिशि दुन्दुभी बाजहिंघनी ।
बरषहिंसुमनसुरहरषिकहिजयजयति जयरघुकुलमनी ॥
यहि भांतिजानि बरात आवत बाजनेबहुबाजहीं ।
रानीसुआसिनिबोलिपरिछन हेतु मंगलसाजहीं ॥

दो० सजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल संवारि ।
चलींमुदित परिछनकरन गजगामिनि बरनारि ॥

बिधुबदनी मृगशावकलोचनि ।सबनिजतनुछबिरतिमदमोचनि॥

पहिरे बरण बरण बर चीरा । सकल बिभूषण सजे शरीरा ॥
सकल सुमंगल अंग बनाये । करहिंगान कलकंठ लजाये ॥
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं । चालिबिलोकिकामगजलाजहिं ॥
बाजहिं बाजन बिबिधप्रकारा । नभअरु नगर सुमंगलचारा ॥
शची शारदा रमा भवानी । जेसुरतिय शुचि सहजसयानी ॥
कपट नारि बरवेष बनाई । मिलीं सकल रनिवासहिंआई ॥
करहिं गान कल मंगलबानी । हरषबिवश बशकाहु नजानी ॥
छं० कोजानकेहिआनन्दबश सबब्रह्मबरपरिछनचली ।
कलगानमधुरनिशान बरषहिंसुमनसुरशोभाभली ॥
आनन्दकन्दबिलोकिदूलह सकलहियहर्षितभई ।
अम्भोजअम्बकअम्बुउमंगि सुअंगपुलकावलिछई ॥
दो० जोसुखभा सियमातु मन देखि राम बरवेष ।
सो न सकहिं कहिकल्पशत सहसशारदाशेष ॥
नयननीर हठि मंगल जानी । परिछन करहिं मुदितमनरानी ॥
वेद बिहित अरुकुलव्यवहारू । कीन्हभलीबिधिसबपरिचारू ॥
पंच शब्दधुनि मंगल गाना । पट पांवड़े परहिं बिधिनाना ॥
करि आरती अर्घ्य तिनदीन्हा । राम गमन मंडप तबकीन्हा ॥
दशरथ सहित समाज बिराजे । बिभव बिलोकिलोकपतिलाजे ॥
समय समय सुर बरषहिंफूला । शांतिपढ़हिं महिसुरअनुकूला ॥
नभ अरु नगर कोलाहलहोई । आप न परकछु सुनै न कोई ॥
इहिबिधि राम मंडपहि आये । अर्घ्य देइ आसन बैठाये ॥
छं० बैठारि आसन आरतीकरि निरखिवरसुखपावहीं ।
मणि बसन भूषण भूरि वारहिं नारिमंगलगावहीं ॥
ब्रह्मादि सुर बर बिप्र वेष बनाइ कौतुक देखहीं ।
अवलोकिरबिकुलकमलरबिछबिसुफलजीवनलेखहीं ॥
दो० नाऊ बारी भाट नट रामनिछावरि पाइ ।
मुदित अशीशहिं नाइशिर हर्ष न हृदयसमाइ ॥

मिले जनक दशरथअति प्रीती । करि वैदिकलौकिकसबरीती ॥
मिलत यथादोउ राज बिराजे । उपमाखोजिखोजिकविलाजे ॥
लही न कतहुं हारि हिय मानी । इन सम ये उपमाउरआनी ॥
समधी देखि देव अनुरागे । सुमन बरषि यशगावनलागे ॥
जग बिरंचि उपजावा जबते । देखे सुने ब्याह बहु तबते ॥
सकल भांति सम साजसमाजू । सम समधी देखे हम आजू ॥
देव गिरा सुनि सुंदर सांची । प्रीतिअलौकिकदुहुंदिशिमांची ॥
देत पांवड़े अर्घ्य सुहाये । सादर जनक मण्डपहिंल्याये ॥

छं० मण्डपबिलोकि बिचित्ररचना रुचिरतामुनिमनहरे ।
निजपाणिजनकसुजानसबकहं आनिसिंहासनधरे ॥
कुल इष्टसरिस बशिष्ठ पूजे बिनयकरिआशिषलही ।
कौशिकहि पूजत परमप्रीति किरीति तौनपरैकही ॥

दो० बामदेव आदिक ऋषय पूजेमुदित महीश ।
दियेदिब्य आसन सबहिंसबसनलहीअशीश ॥

बहुरिकीन्ह कोशल पति पूजा । जानि ईशसमभाव न दूजा ॥
कीन्ह जोरि कर बिनय बड़ाई । कहिनिजभाग्यबिभवबहुताई ॥
पूजे भूपति सकल बराती । सम समधी सादर सबभांती ॥
आसन उचित दिये सबकाहू । कहौं कहा मुख एकु उछाहू ॥
सकल बरात जनक सनमानी । दान मान बिनती बरबानी ॥
बिधिहरिहरदिशिपतिदिनराऊ । जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ ॥
कपट बिप्र वरबेष बनाये । कौतुक देखहिं अतिसचुपाये ॥
पूजे जनक देव सम जाने । दिये सु आसनबिनपहिंचाने ॥

छं० पहिंचानको केहिजानसबहि अपान सुधिभोरीभई ।
आनन्दकन्दबिलोकिदूलह उभयदिशिआनंद मई ॥
सुरलखे राम सुजानपूजे मानसिक आसन दिये ।
अवलोकिसरलसुभावप्रभुकोबिबुधमनप्रमुदितभये ॥

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्रछबि लोचन चारु चकोर ।

करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर ॥

समय बिलोकि बशिष्ठ बुलाये । सादर शतानन्द मुनि आये ॥
वेगि कुंवरि अब आनहु जाई । चले मुदितमनआयसु पाई ॥
रानी सुनि उपरोहित बानी । प्रमुदितसखिनसमेतसयानी ॥
विप्रबधू कुल वृद्ध बुलाई । करि कुलरीति सुमंगल गाई ॥
नारि बेष जे सुर बर बामा । सकल सुभाय सुंदरी श्यामा ॥
तिनहिंदेखि सुखपावहिं नारी । बिनुपहिंचान प्राणते प्यारी ॥
बार बार सनमानहिं रानी । उमा रमा शारद समजानी ॥
सीय संवारि समाज बनाई । मुदित मंडपहिं चलीं लिवाई ॥

छं० चलिल्याइ सीतहिंसखीसादर सजिसुमंगलभामिनी ।
नव सप्त साजे सुंदरी सब मत्त कुंजर गामिनी ॥
कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिं कामकोकिललाजहीं ।
मंजीर नूपुर कलित कंकण तालगति बर बाजहीं ॥

दो० सोहत वनिता वृन्द महं सहजसुहावनसीय ।
छबिललनागणमध्यजनु सुखमातियकमनीय ॥

सिय सुन्दरता वरणि न जाई । लघुमति बहुत मनोहरताई ॥
आवति जानि बरातिन सीता । रूप राशि सब भांतिपुनीता ॥
सबहिंमनहिंमनकीन्हप्रणामा । देखि राम भये पूरण कामा ॥
हरषे दशरथ सुतन समेता । कहि न जाइ उर आनंदजेता ॥
सुर प्रणाम करि वर्षहिं फूला । मुनि अशीशधुनि मंगलमूला ॥
गान निशान कुलाहल भारी । प्रेम प्रमोद नगर नर नारी ॥
इहिविधिसीय मण्डपहिं आई । प्रमुदितशांति पढ़हिंमुनिराई ॥
तेहिअवसरकरिविधिव्यवहारू । दुहुंकुलगुरुसबकीन्हअचारू ॥

छं० आचारकरिगुरुगौरि गणपति मुदित विप्रपुजावहीं ।
सुर प्रकटपुजा लेहिं देहिंअशीश अतिसुखपावहीं ॥
मधुपर्क मंगल द्रव्य जोजेहिसमय मुनि मनमेंचहैं ।
भरेकनककोपर कलशसबकर लियेपरिचारकरहैं ॥

कुलरीति प्रीतिसमेतरबिकहि देतसब सादरकिये ।
इहिभांति देवपुजाइ सीतहि सुभग सिंहासनदिये ॥
सियराम अवलोकनपरस्पर प्रेमकाहु न लखिपरै ।
मनबुद्धिबर बाणी अगोचर प्रकटकवि कैसेकरै ॥

दो० होमसमयतनुधरिअनल अतिहित आहुतिलीन्ह ।
विप्र वेषधरि वेदसब कहि बिवाह विधि दीन्ह ॥

सीय मातु किमि जाइ बखानी । जनकपाट महिषीजगजानी ॥
सुयश सुकृत सुख सुन्दरताई । सब समेटि विधि रचीबनाई ॥
समय जानि मुनिवरन बुलाई । सुमनसुआसिनिसादरल्याई ॥
जनक बामदिशि सोहसुनयना । हिमगिरिसंगबनी जनुमयना ॥
कनक कलश मणि कोपररूरे । शुचि सुगन्ध मंगल जलपूरे ॥
निजकर मुदित राउ अरुरानी । धरे राम के आगे आनी ॥
पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी । गगनसुमनझरिअवसरजानी ॥
बर बिलोकि दम्पति अनुरागे । पांय पुनीत पखारन लागे ॥

छं० लागे पखारन पांय पंकज प्रेम तनु पुलकावली ।
नभनगरगाननिशानजयधुनिउमंगिजनुचहुंदिशिचली ॥
जे पदसरोज मनोज अरि उर सरसदैव विराजहीं ।
जेसुकृतमूरतिविमलतामनसकलंकलिमलभाजहीं ॥
जे परसि मुनिवनितालही गतिरहीजोपातक मई ।
मकरन्दजिनकोशम्भुशिरशुचिता अवधिसुरबरनई ॥
करिमधुपमनमुनियोगिजनजेसेइअभिमतगतिलहैं ।
तेपदपखारतभाग्यभाजन जनकजयजय सबकहैं ॥
बरकुंवरकरतलजोरिशाखोच्चार दोउकुल गुरुकरैं ।
भयोपाणिग्रहणबिलोकिविधिसुरमनुजमुनिआनंदभरैं ॥
सुखमूल दूलहदेखि दम्पति पुलक तनहूलसैंहिये ।
करि लोक वेद बिधान कन्यादान नृपभूषणदिये ॥
हिमवन्तजिमिगिरिजा महेशहिहरिहिश्रीसागरदई ।

तिमिजनक रामहिं सियसमर्पीविश्वकलकीरतिनई ॥
किमिकरौं विनय बिदेह कीन्ह विदेहमूरतिसांवरी ।
करिहोम विधिवत गांठि जोरी होनलागीं भांवरी ॥

दो० जयधुनि बन्दी वेदधुनि मंगल गान निशान ।
सुनिहरषहिंबरषहिं बिबुधसुरतरुसुमनसुजान ॥

कुंवरि कुंवर कल भांवरि देहीं । नयन लाभ सबसादर लेहीं ॥
जाइ न वरणि मनोहर जोरी । जोउपमाकछुकहियसो थोरी ॥
राम सीय सुन्दर परिछाहीं । जगमगाहिंमणि खंभनमाहीं ॥
मनहुं मदनरति धरि बहु रूपा । देखहिं राम बिवाह अनूपा ॥
दरश लालसा सकुच न थोरी । प्रकटत दुरत बहोरि बहोरी ॥
भये मगन सब देखन हारे । जनकसमान अपान बिसारे ॥
प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी । नेग सहित सबरीति निबेरी ॥
राम सीय शिर सिन्दुर देहीं । शोभाकहि न जातविधिकेहीं ॥
अरुण पराग जलजभरि नीके । शशिहिभुखअहिलोभअमीके ॥
बहुरि वशिष्ठ दीन्ह अनुशासन । बरदुलहिनि बैठे इकआसन ॥

छं० बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये ।
तनपुलकि पुनिपुनिदेखि अपने सुकृत सुरतरुफलनये ॥
भरि भुवनरहा उछाह राम बिवाहभा सबही कहा ।
केहि भांति बरणि सिरात रसना एक मुखमंगलमहा ॥
तब जनकपाइ वशिष्ठ आयसु व्याह साज संवारिकै ।
माराडवी श्रुतिकीर्ति उर्म्मिला कुंवरिलई हंकारिकै ॥
कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुणशील सुखशोभा मई ।
सबरीतिप्रीति समेतकरि सोव्याहि नृप भरतहि दई ॥
जानकी लघु भगिनि जो सुन्दरि शिरोमणि जानिकै ।
सोजनकदीन्हीव्याहिलषणहिं सकलविधिसनमानिकै ॥
जेहिनामश्रुतिकीरतिसुलोचनि सुमुखिसबगुणआगरी ।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूप शील उजागरी ॥

अनुरूपबरदुलहिनिपरस्पर लखिसकुचिहियहर्षहीं।
सब मुदित सुन्दरतासराहहिं सुमनसुरगणबर्षहीं॥
सुन्दरी सुन्दर बरन सह सब एक मण्डप राजहीं।
जनुजीव अरुचारिउ अवस्था बिभुनसहितबिराजहीं॥

दो० मुदित अवधपति सकल सुत बधुन समेत निहारि।
जनु पाये महिपाल मणि क्रियन सहित फलचारि॥

जस रघुबीर ब्याह बिधिबरणी। सकलकुंवरब्याहे तेहिकरणी॥
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी। रहा कनक मणि मण्डप पूरी॥
कम्बल बसन बिचित्र पटोरे। भांतिभांतिबहु मोल न थोरे॥
गज रथ तुरंग दास अरु दासी। धेनु अलंकृत काम दुहासी॥
बस्तु अनेक करिय किमिलेखा। कहिनजाइजानहिं जिनदेखा॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने। लीन्हअवधपतिसबसुखमाने॥
दीन्ह याचकन जो जेहि भावा। उबरा सो जनवासहिं आवा॥
तब कर जोरि जनक मृदुबानी। बोले सब बरात सनमानी॥

छं० सनमानि सकलबरात सादर दान विनय बड़ायकै।
प्रमुदित महामुनि वृन्द बन्दे पूजि प्रेम लड़ायकै॥
शिर नाइ देव मनाइ सबसन कहतकर संपुटकिये।
सुरसाधु चाहतभाव सिन्धु कितोषजलअंजलिदिये॥
करजोरि जनकबहोरि बन्धु समेत कोशलरायसों।
बोले मनोहर वचन सानि सनेह शील सुभायसों॥
सम्बन्ध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधिभये।
यहराज साजसमेत सेवक जानबी बिनु गत लये॥
ये दारिका परिचारिका करि पालबी करुणामयी।
अपराधक्षमिबो बोलि पठये बहुत हैं। ढीठी दयी॥
पुनिभानुकुलभूषणसकल सनमानबिधिसमधीकिये।
कहिजात नहिं बिनतीपरस्पर प्रेम परिपूरण हिये॥
वृन्दारका गण सुमन बरषहिं राउजनवासहिंचले।

दुन्दुभी ध्वनि वेदध्वनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
तब सखिन मंगलगान करत मुनीशआयसु पाइकै ।
दुलह दुलहिनिसहितसुन्दरि चलींकुहबरल्याइकै ॥

दो० पुनिपुनि रामहिं चितवसिय सकुचतिमन सकुचैन ।
हरति मनोहर मीन छबि प्रेम पियासे नैन ॥

श्याम शरीर सुभाय सुहावन । शोभा कोटि मनोज लजावन ॥
जावक युत पद कमल सुहाये । मुनिमनमधुपरहत जहँछाये ॥
पीत पुनीत मनोहर धोती । हरतबाल रवि दामिनज्योती ॥
कलकिंकिणि कटिसूत्रमनोहर । बाहु विशाल विभूषणसोहर ॥
पीत जनेउ महा छवि देई । कर मुद्रिका चोर चित लेई ॥
सोहत व्याह साज सब साजे । उर आयत सब भूषण राजे ॥
पीत उपरना कांखा सोती । दुहुंआँचरन्ह लगे मणिमोती ॥
नयन कमल कलकुंडल काना । बदन सकल सौंदर्य्य निधाना ॥
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । भालतिलकशुचि रुचिरनिवासी ॥
सोहत मौर मनोहर माथे । मंगल मय मुकता मणि गाथे ॥

छं० गाथे महा मणि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ॥
पुर नारि सुंदर बर बिलोकहिं निरखि छवि तृणतोरहीं ॥
मणि बसन भूषण वारि आरति करहि मंगल गावहीं ॥
सुर सुमन बरषहिं सूत मागध बंदिसुयश सुनावहीं ॥
कुहबरहिं आनेकुवरकुंवरि सुआसिनिन्ह सुखपाइकै ॥
अति प्रीति लौकिक रीति लागी करन मंगल गाइकै ॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सनशादर कहैं ॥
रनिवास हास बिलास रसबस जनमको फल सब लहैं ॥
निजपाणि मणिमहँ देखि प्रति मूरति सरूपनिधानकी ॥
चालतिनभुजबल्ली बिलोकनि बिरह बश भइ जानकी ॥
कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली ॥
बरकुवरिसुंदरि सकलसखिन लिवाइ जनवासहिंचली ॥

तेहिसमयसुनियअशीशजहँतहँनगरनभआनँदमहा।
चिरजियहु जोरीचारुचारिउ मुदितमनसबहींकहा॥
योगीन्द्रसिद्धमुनीशदेव बिलोकिप्रभुदुन्दुभि हनी ।
चलेहरषिबरषिप्रसूननिजनिजलोकजयजयजयभनी॥
दो० सहित बधूटिन कुंवरसब तब आये पितु पास ।
शोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास ॥
पुनि जेवनार भयउ बहु भांती । पठये जनक बुलाइ बराती ॥
परत पांवड़े बसन अनूपा । सुतन समेतगवन कियभूपा ॥
सादर सब के पाँव पखारे । यथा योग्य पीढ़न बैठारे ॥
धोये जनक अवधपति चरणा । शीलसनेह जाइनहिं बरणा ॥
बहुरि राम पद पंकज धोये । जे हर हृदयकमल महँ गोये ॥
तीनों भाइ राम सम जानी । धोयेचरण जनक निजपानी ॥
आसन उचित सबहिं नृपदीन्हे । बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥
सादर लगे परन पनवारे । कनककीलमणिपरण सँवारे ॥
दो० सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत ।
क्षणमहँ सबके परसिगेचतुरसुआर बिनीत ॥
पंच कौर करि जेवन लागे । गारिगान सुनि अति अनुरागे ॥
भांति अनेक परे पकवाना । सुधासरिसनहिंजाहिंबखाना ॥
परुसन लगे सुआर सुजाना । ब्यंजन बिबिध नामकोजाना ॥
चारि भांति भोजन विधिगाई । एक एक विधि बरणि न जाई ॥
छरस रुचिरब्यंजन बहु जाती । एकएक रस अगणित भांती ॥
जेंवत देहिं मधुर ध्वनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥
समय सुहावन गारि बिराजा । हँसतराउसुनिसहित समाजा ॥
इहिबिधिसबही भोजनकीन्हा । आदर सहित आचमनलीन्हा ॥
दो० देइ पान पूजे जनक दशरथ सहित समाज ।
जनवासे गवने मुदित सकल भूप शिरताज ॥
नित नूतन मंगल पुरमाहीं । निमिषसरिसदिनयामिनिजाहीं ॥

बड़े भोर भूपति मणि जागे । याचक गुण गण गावनलागे ॥
देखि कुंवर बर बधुन समेता । किमि कहिजात मोद मन जेता ॥
प्रातक्रिया करिगे गुरु पाहीं । महा प्रमोद प्रेम मन माहीं ॥
करि प्रणाम पूजा कर जोरी । बोले गिरा अमिय जनुबोरी ॥
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनि राजा । भयउ आजु मम पूरणकाजा ॥
अब सब विप्र बुलाइ गुसांई । देहु धेनु सब भांति बनाई ॥
सुनिगुरु करिमहिपाल बड़ाई । पुनि पठये मुनि वृन्दबुलाई ॥

दो० बामदेव अरु देवऋषि बालमीकि जाबालि ।
आयेमुनिवर निकरतब कौशिकादितप शालि ॥

दण्डप्रणाम सबहिंनृप कीन्हा । पूजि सप्रेम वरासन दीन्हा ॥
चारि लक्ष वर धेनु मँगाई । कामसुरभि सम शीलसुहाई ॥
सबविधि सकल अलंकृतकीन्ही । मुदितमहीपऋषिनकहँदीन्ही ॥
करतबिनय बहुविधि नरनाहू । लहेउआजुजग जीवनलाहू ॥
पाइ अशीश महीश अनन्दा । लियेबोलिपुनि याचक वृन्दा ॥
कनकवसनमणिहयगजस्यंदन । दियेबूझि रुचिरबिकुलनंदन ॥
चले पढ़त गावत गुण गाथा । जयजयजयदिनकरकुलनाथा ॥
इहिविधि रामबिवाह उछाहू । सकैन वरणि सहसमुखजाहू ॥

दो० बार बार कौशिक चरण शीश नाइकहराउ ।
यहसबसुख मुनिराजतव कृपाकटाक्षप्रभाउ ॥

जनक सनेह शील करतूती । नृप सबभांति सराह बिभूती ॥
दिनउठि विदाअवध पतिमांगा । राखहिंसहितजनकअनुरागा ॥
नित नूतन आदर अधिकाई । दिनप्रतिसहसभांति पहुनाई ॥
नित नव नगर अनन्द उछाहू । दशरथ गवन सुहाइ न काहू ॥
बहुत दिवस बीते इहि भांती । जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥
कौशिक शतानन्द तब जाई । कहौ विदेह नृपहि समुझाई ॥
अब दशरथ कहँ आयसु देहू । यद्यपि छांड़ि न सकहु सनेहू ॥
भलेहि नाथकहिसचिवबुलाये। कहि जयजीव शीशतिननाये ॥

दो० अवध नाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाव ।
भयेप्रेम बश सचिवसुनि विप्र सभासद राव ॥
पुरवासी सुनि चली बराता । पूंछत विकलपरस्पर बाता ॥
सत्य गवन सुनि सबबिलखाने। मनहुंसांझसरसिजसकुचाने ॥
जहँ जहँ आवत बसे वराती । तहं तहंसीध चला बहुभांती ॥
विविध भांति मेवा पकवाना । भोजनसाज न जाइ बखाना ॥
भरि भरि बसह अपार कहारा । पठये जनक अनेक सुआरा ॥
तुरंग लाख रथ सहसपचीसा । सकल संवारे नख अरु शीशा ॥
मत्त सहस दश सिंधुर साजे । जिनहिंदेखिदिशिकुंजरलाजे ॥
कनकवसनमणिभरिभरियाना । महिषीधेनु वस्तु विधिनाना ॥
दो० दायज अमित न सकिय कहि दीन्ह विदेहबहोरि ।
जो अवलोकत लोकपति लोक सम्पदा थोरि ॥
सब समाज यहि भांति बनाई । जनक अवधपुर दीन्हपठाई ॥
चलिहि बरात सुनत सबरानी । विकलमीनगण जनु लघुपानी ॥
पुनि पुनि सीय गोद करलेहीं । देइँ अशीश सिखावन देहीं ॥
होइहहु संतति पियहि पियारी । चिरअहिबातअशीश हमारी ॥
सासु ससुर गुरु सेवा करहू । पतिरुखलखिआयसुअनुसरहू॥
अति सनेह वश सखी सयानी । नारिधर्म सिखवहिंमृदुबानी ॥
सादर सकल कुंवरि समुझाईं । रानिन बार बार उर लाईं ॥
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी । कहहिं बिरंचि रचीकतनारी ॥
दो० तेहि अवसर भाइन सहित राम भानुकुल केतु ।
चले जनक मन्दिर मुदित बिदा करावन हेतु ॥
चारिउ भाइ सुभाय सुहाये । नगर नारिनर देखन धाये ॥
कोउ कह चलन चहतहैं आजू । कीन्ह विदेह विदाकर साजू ॥
लेउ नयन भरि रूप निहारी । प्रिय पाहुने भूप सुत चारी ॥
को जाने केहि सुकृत सयानी । नयनअतिथिकीन्हेंविधिआनी॥
मरणशील जिमि पाव पियूष । सुरतरु लहै जन्मकर भूषा ॥

पाव नारकी हरि पद जैसे । इन कर दर्शन हमकहं तैसे ॥
निरखि राम शोभा उरघहू । निजमनफणिमूरतिमणिकरहू ॥
इहिविधिसबहिनयनफल देता । गये कुंवर सब राजनिकेता ॥
दो० रूप सिंधु सबबन्धु लखि हरषि उठींरनिवासु ।
करहिं निछावर आरती महामुदित मनसासु ॥
देखि रामछबि अति अनुरागी । प्रेमविवश पुनिपुनि पदलागी ॥
रही न लाज प्रीति उर छाई । सहजसनेहबरणिकिमिजाई ॥
भाइन सहित उबटि अन्हवाये । छरस अशनअतिहेतुजिंवाये ॥
बोले राम सुअवसर जानी । शील सनेह सकुच मयबानी ॥
राउ अवधपुर चहत सिधाये । विदाहोन हित हमहिं पठाये ॥
मातु मुदित मन आयसु देहू । बालक जानि करबनितनेहू ॥
सुनत वचन बिलखेउरनिवासू । बोलिन सकहिंप्रेमबश सासू ॥
हृदयलगाइ कुंवरिसबलीन्हीं । पतिनसहितबिनतीअतिकीन्हीं ॥
छं० करिबिनय सियरामहिंसमर्पी जोरिकरपुनिपुनिकहै ।
बलिजाउँतातसुजान तुमकहँ विदितगति सबकीअहै ॥
परिवार पुरजन मोहिं राजहिं प्राणप्रियसियजानवी ।
तुलसीसुशील सनेहलखि निजकिंकरी करिमानवी ॥
सो० तुम परिपूरण काम ज्ञान शिरोमणि भाव प्रिय ।
जन गुण गाहक राम दोष दलनकरुणायतन ॥
असकहि रही चरण गहिरानी । प्रेमपंक जनु गिरा समानी ॥
सुनि सनेह सानी वर बानी । बहुविधिराम सासुसनमानी ॥
राम विदा मांगत कर जोरी । कीन्ह प्रणाम बहोरिबहोरी ॥
पाइ अशीश बहुरि शिर नाई । भाइन सहित चले रघुराई ॥
मंजु मधुर मूरति उर आनी । भई सनेह शिथिलसबरानी ॥
पुनि धीरजधरि कुंवरि हंकारी । बार बार भेंटहिं महतारी ॥
पहुंचावहिं फिरिमिलहिंबहोरी । बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी ॥
पुनिपुनिमिलतसखिनबिलगाई । बाल वत्स जनु धेनु लवाई ॥

दो० प्रेमबिबश नर नारि सब सखिन सहित रनिवास ।
मानहुं कीन्ह बिदेहपुर करुणा बिरह निवास ॥

शुक शारिक जानकी जिआये । कनक पींजरन राखिपढ़ाये ॥
ब्याकुल कहहिं कहां बैदेही । सुनि धीरज परिहरै न केही ॥
भये बिकल खग मृग इहिभांती । मनुज दशा कैसे कहि जाती ॥
बन्धु समेत जनक तब आये । प्रेमउमंगि लोचनजलछाये ॥
सीय बिलोकि धीरता भागी । रहे कहावत परम बिरागी ॥
लीन्ह राउ उर लाइ जानकी । मिटी महा मर्य्याद ज्ञानकी ॥
समुझावत सब सचिव सयाने । कीन्हसुभाव न अवसरजाने ॥
बारहिं बार सुता उर लाई । सजि सुन्दरिपालकी मँगाई ॥

दो० प्रेम बिबश परिवार सब जानि सुलगन नरेश ।
कुंवरि चढ़ाई पालकी सुमिरे सिद्ध गणेश ॥

बहु बिधि भूप सुता समुझाई । नारि धर्म कुलरीति सिखाई ॥
दासी दास दिये बहुतेरे । शुचि सेवक जे प्रियसियकेरे ॥
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी । होहिंसगुणशुभ मंगलरासी ॥
भूसुर सचिव समेत समाजा । संग चले पहुंचावन राजा ॥
रथ गज बाजि बरातिन साजे । सुनि गह गहे बाजने बाजे ॥
दशरथ बिप्र बोलि सब लीन्हें । दान मान परिपूरण कीन्हें ॥
चरण सरोज धूरि धरि शीशा । मुदितमहीपतिपाइ अशीशा ॥
सुमिरि गजानन कीन पयाना । मंगल मूल शकुन भे नाना ॥

दो० सुर प्रसून बर्षहिं हरषि करहिं अप्सरा गान ।
चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइनिशान ॥

नृप करि बिनय महाजन फेरे । सादर सकल मांगने टेरे ॥
भूषण बसन बाजि गज दीन्हें । प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हें ॥
बार बार बिरदावलि भाखी । फिरे सकल रामहिंउरराखी ॥
बहुरि बहुरि कोशलपति कहहीं । जनकप्रेमबशफिरा न चहहीं ॥
पुनि कह भूपति बचन सुहाये । फिरिय महीपदूरिबड़िआये ॥

राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े । प्रेम प्रबाह बिलोचन बाढ़े ॥
तब बिदेह बोले करजोरी । बचन सनेह सुधाजनु बोरी ॥
करौं कवन बिधि बिनय सुहाई । महाराज मोहिं दीन्हबड़ाई ॥
दो० कोशलपति समधी सजन सनमाने सबभांति ।
मिलन परस्पर बिनय अति प्रीतिनहृदयसमाति ॥
मुनि मण्डली जनक शिरनावा । आशिरबाद सबहिंसनपावा ॥
सादर पुनि भेंटे जामाता । रूपशीलगुणनिधि सबभ्राता ॥
जोरि पंकरुह पाणि सुहाये । बोले बचन प्रेम जनु छाये ॥
राम करौं केहि भांति प्रशंसा । मुनि महेशमन मानसहंसा ॥
करहिं योग योगी जेहि लागी । कोह मोह ममतामदत्यागी ॥
व्यापक ब्रह्म अलख अविनाशी । चिदानन्द निर्गुणगुणराशी ॥
मन समेत जेहि जान न बानी । तरकिनसकहिंसकलअनुमानी ॥
महिमानिगम नेतिकरिकहहीं । जो तिहुं काल एकरसरहहीं ॥
दो० नयन बिषय मोकहँ भयउ सो समस्त सुख मूल ।
सबहिं लाभ जग जीव कहँ भये ईश अनुकूल ॥
सबहि भांति मोहिं दीन्हबड़ाई । निजजनजानिलीन्ह अपनाई ॥
होहिं सहस दश शारद शेषा । करहिंकल्पकोटिक भरिलेखा ॥
मोर भाग्य राउर गुण गाथा । कहिनसिराहिंसुनिय रघुनाथा ॥
मैं कछु कहौं एक बल मोरे । तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥
बार बार मांगौं कर जोरे । मन परिहरै चरणजनि भोरे ॥
सुनिवर बचन प्रेम जन पोषे । पूरण काम राम परितोषे ॥
करिवर बिनय ससुर सनमाने । पितु कौशिकवशिष्ठ समजाने ॥
बिनती बहुरि भरतसन कीन्हीं । मिलिसुप्रेमपुनिआशिषदीन्हीं ॥
दो० मिले लषण रिपु सूदनहिं दीन्ह अशीश महीश ।
भये परस्पर प्रेम बश फिरि फिरि नावहिं शीश ॥
बार बार करि बिनय बड़ाई । रघुपति चले संग सब भाई ॥
जनक गहे कौशिक पद जाई । चरणरेणु शिर नयनन लाई ॥

सुन मुनीश सब दरशन तोरे । अगमन कछु प्रतीतिमनमोरे ॥
जो सुखसुयशलोकपति चहहीं । करतमनोरथ सकुचतअहहीं ॥
सोसुखसुयशसुलभमोहिंस्वामी । सबविधि तवदर्शन अनुगामी ॥
कीन्ह विनय पुनिपुनि शिरनाई । फिरे महीपति आशिष पाई ॥
चली बरात निशान बजाई । मुदित छोटबड़ सब समुदाई ॥
रामहिं निरखि ग्रामनर नारी । पाइ नयनफल होहिं सुखारी ॥
दो० बीच बीच बर बासकरि मगलोगन सुखदेत ।
अवध समीप पुनीतदिन पहुंची आय जनेत ॥
हने निशान पणव बहु बाजे । भेरि शंखध्वनि हयगयगाजे ॥
झांझ मृदंग डिमिडिमी सुहाई । सरस राग बाजे सहनाई ॥
पुरजन आवत अकनि बराता । मुदितसकलपुलकावलिगाता ॥
निज निज सुन्दर सदन संवारे । हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥
गली सकल अरगजा सिंचाई । जहं तहं चौके चारु पुराई ॥
बना बजार न जात बखाना । तोरण केतु पताक विताना ॥
सुफल पुंगफलकदलि रसाला । रोपे बकुल कदम्ब तमाला ॥
लगे सुभगतरु परसत धरणी । मणिमयआलबालकलकरणी ॥
दो० विविध भांति मंगलसकल गृहगृह रचे संवारि ।
सुरब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि ॥
भूप भवन तेहि अवसर सोहा । रचना देखि मदन मनमोहा ॥
मंगल शकुन मनोहरताई । ऋधिसिधिसुखसंपदासोहाई ॥
जनु उछाह सब सहज सुहाये । तनुधरिधरि दशरथ गृहआये ॥
देखन हेतु राम वैदेही । कहहु लालसा होइ न केही ॥
यूथयूथमिलिचलींसुआसिनि ।निजछबिनिदरहिंमदनबिलासिनि
कलश सुमंगल सखी आरती । गावहिं जनु बहु वेष भारती ॥
भूपति भवन कुलाहल होई । जाइ न बरणिसमयसुखसोई ॥
कौशल्यादि राम महतारी ।प्रेम विवश जनुदशा बिसारी ॥
दो० दियेदान बिप्रन विपुल पूजि गणेश पुरारि ।

प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ॥
प्रेम प्रमोद बिवशसब माता । चलहिंनचरणशिथिलसबगाता॥
राम दरश हित अतिअनुरागीं । परिछनसाजसजनसबलागीं ॥
विविध बिधान बाजने बाजे । मंगल मुदित सुमित्रा साजे ॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला । पान पुंगफल मंगल मूला ॥
अक्षत अंकुर रोचन लाजा । मंजुलमंजरितुलसि बिराजा ॥
छुहे पुरट घट सहज सुहाये । मदन शकुनि जनुनीड़ बनाये ॥
शकुनसुगन्ध न जाहिं बखानी । मंगलसकल सजहिंसबरानी ॥
रची आरती विविध विधाना । मुदितकरहिंकलमंगलगाना ॥
दो० कनकथारभरिमंगलहिं कमलकरनिलियेमात ।
चलींमुदित परिछनकरन पुलक पल्लवितगात ॥
धूप धूम नभ मेचक भयऊ । सावन घन घमंड जनुछयऊ ॥
सुरतरु सुमनमाल सुर बर्षहिं । मनहुंबलाकअवलिमनकर्षहिं ॥
मंजुल मणिमय बन्दनवारा । मनहुं पाक रिपुचाप संवारा ॥
प्रकटहिंदुरहिंअटन्हपरभामिनि। चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि
दुन्दुभिध्वनिघनगरजहिंघोरा । याचक चातक दादुर मोरा ॥
शुचि सुगन्धवहु बरषहिं बारी । सुखोसकलशशिपुरनर नारी ॥
समयजानि गुरु आयसुदीन्हा । पुरप्रवेशरघुकुलमणि कीन्हा ॥
सुमिरि शंभुगिरिजा गणराजा । मुदितमहीपतिसहित समाजा ॥
दो० होहिंशकुन बरषहिंसुमन सुर दुन्दुभी बजाइ ।
विबुधवधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥
मागध सूत बन्दि नट नागर । गावहिंयशतिहुंलोकउजागर ॥
जयध्वनि विमल वेद बरबानी । दशदिशिसुनियसुमंगलसानी ॥
विपुल बाजने बाजन लागे । नभसुर नगर लोग अनुरागे ॥
बने बराती बरणि न जाहीं । महामुदितमनसुख न समाहीं ॥
पुर बासिन तब राउ जुहारे । देखत रामहिं भये सुखारे ॥
करहिंनिछावरिमणिगणचीरा । बारि विलोचन पुलकशरीरा ॥

आरति करहिं मुदित पुर नारी । हरषहिं निरखिकुंवरबरचारी ॥
शिविका सुभग उघारि उघारी । देखिदुलहिनिन्हहोहिंसुखारी॥

दो० यहिबिधि सबहीं देतसुख आये राज दुवार ।
मुदितमातुपरिछनि करहिं बधुनसमेत कुमार ॥

करहिं आरती बारहिं बारा । प्रेम प्रमोद लहै को पारा ॥
भूषण मणि पट नाना जाती । करहिंनिछावरिअगणितभांती॥
बधुन समेत देखि सुत चारी । परमानन्द मगन महतारी ॥
पुनि पुनि सीयराम छवि देखी । मुदितसफलजगजीवनलेखी ॥
सखी सीयमुख पुनिपुनि चाही । गानकरहिंनिजसुकृतसराही ॥
बरषहिं सुमन क्षणहिंक्षणदेवा । नाचहिंगावहिं लावहिं सेवा ॥
देखि मनोहर चारिउ जोरी । शारद उपमा सकल ढंढोरी ॥
देत न बनहिंनिपट लघुलागी । इकटक रही रूप अनुरागी ॥

दो० निगम नीति कुलरीति करि अरघ पांवड़े देत ।
बधुनसहितसुतपरछिसब चलींलिवायनिकेत ॥

चारि सिंहासन सहज सुहाये । जनु मनोज निजहाथ बनाये ॥
तिनपर कुंवरि कुंवर बैठारे । सादर पांय पुनीत पखारे ॥
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि । पूजेबरदुलहिनि मंगलनिधि ॥
बारहिं बार आरती करहीं । व्यजनचारु चामरशिरढरहीं ॥
बस्तु अनेक निछावरि होहीं । भरी प्रमोद मातु सबसोहीं ॥
पावा परमतत्त्व जनु योगी । अमृत लहिजनु सन्ततरोगी ॥
जन्म रंक जनु पारस पावा । अन्धहि लोचनलाभसुहावा ॥
मूक बदन जस शारद छाई । मानहुं समर शूर जय पाई ॥

दो० इहि सुखते शतकोटि गुण पावहिं मातु अनन्द ।
भाइनसहित विवाहिघर आये रघुकुल चन्द ॥
लोकरीतिजननीकरहिं बरदुलहिनिसकुचाहिं ।
मोदबिनोदबिलोकिबड़ राममनहिं मुसुकाहिं ॥

देव पितर पूजे बिधि नीकी । पूजी सकल बासना जीकी ॥

सबहिं बन्दि मांगहिं बरदाना । भाइन सहित राम कल्याना ॥
अन्तरहित सुर आशिष देहीं । मुदितमातु अंचल भरि लेहीं ॥
भूपति बोलि बरातिन्ह लीन्हे । यान बसनमणि भूषण दीन्हे ॥
आयसु पाइ राखिउर रामहिं । मुदितगयेसबनिजनिजधामहिं ॥
पुरनरनारि सकल पहिराये । घरघर बाजहिं अनंद बधाये ॥
याचकजन याचहिं जोइ जोई । प्रमुदित राउ देइं सोइ सोई ॥
सेवक सकल बजनियांनाना । पूरण किये दान सनमाना ॥
दो० देहिं अशीश जुहारिसब गावहिंगुणगण गाथ ।
तब गुरुभूसुर सहितगृह गमनकीन्ह नरनाथ ॥
जो वशिष्ठ अनुशासन दीन्हा । लोक वेदविधि सादर कीन्हा ॥
भूसुर भीर देखि सब रानी । सादर उठीं भाग्यबड़ जानी ॥
पांय पखारि सकल अन्हवाये । पूजि भली विधि भूप जेंवाये ॥
आदर दान प्रेम परितोषे । देत अशीश चले मन तोषे ॥
बहुविधिकीन्ह गाधिसुतपूजा । नाथ मोहिंसम धन्य न दूजा ॥
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी । रानिन्हसहित लीन्ह पगधूरी ॥
भीतर भवन दीन्ह वर वासू । मनजुगवतरह नृप रनिबासू ॥
पूजे गुरुपद कमल बहोरी । कीन्ह विनयमन प्रीतिनथोरी ॥
दो० बधुन समेत कुमारसब रानिन्हसहित महीश ।
पुनिपुनिबन्दत गुरुचरण देतअशीश मुनीश ॥
विनयकीन्ह उरअति अनुरागे । सुत सम्पदा राखिसब आगे ॥
नेग मांगि मुनिनायक लीन्हा । आशिरबाद बहुतविधिदीन्हा ॥
उरधरि रामहिं सीय समेता । हरषि कीन्हगुरुगमननिकेता ॥
विप्र बधू कुल वृद्ध बुलाई । चीर चारु भूषण पहिराई ॥
बहुरिबुलाइसुआसिनिलीन्ही । रुचिबिचारिपहिरावन दीन्ही ॥
नेगी नेग योग सब लेहीं । रुचि अनुरूप भूपमणि देहीं ॥
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भलीभांति सनमाने ॥
देव देखि रघुबीर विवाहू । बरषि प्रसून प्रशंसि उछाहू ॥

दो० चले निशान बजायसुर निज निजपुर सुखपाइ ।
कहत परस्पर रामयश हर्ष न हृदय समाइ ॥
सबबिधिसबहि समदिनरनाहू । रहाहृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहं रनिवास तहां पगुधारे । सहित बधूटिन कुंवर निहारे ॥
लिये गोदकरि मोद समेता । को कहिसकै भयउ सुखजेता ॥
बधू सप्रेम गोद बैठारी । बार बार हियहरषि दुलारी ॥
देखि समाज मुदित रनिवासू । सबके उर आनन्द बिलासू ॥
कह्यो भूपजिमि भयउ विवाहू । सुनिसुनि हर्ष होत सबकाहू ॥
जनक राजगुण शील बड़ाई । प्रीति रीति सम्पदा सुहाई ॥
बहुबिधि भूपभाट जिमिबरणी । रानीसबप्रमुदित सुनिकरणी ॥
दो० सुतन समेत नहाय नृप बोलिलिये गुरुज्ञाति ।
भोजन किये अनेकविधि घरीपांच गइ राति ॥
मंगल गानकरहिं वर भामिनि । भइसुख मूलमनोहरयामिनि ॥
अंचैपान सब काहुन पाये । स्त्रगसुगंध भूषित छबिछाये ॥
रामहिं देखि रजायसु पाई । निजनिजभवनचले शिरनाई ॥
प्रेम प्रमोद बिनोद बड़ाई । समय समाज मनोहरताई ॥
कहि न सकहिंश्रुतिशारद शेशू । वेद विरंचि महेश गणेशू ॥
सोमैंकहौं कवन बिधिबरणी । भूमिनाग शिरधरै कि धरणी ॥
नृप सबभांति सबहिसनमानी । कहि मृदुबचन बुलाई रानी ॥
बधू लरिकिनी पर घर आई । राखेहु नयन पलक कीनाई ॥
दो० लरिका श्रमित उनींदबशशयन करावहु जाइ ।
असकहिगे बिश्राम गृह राम चरणचितलाइ ॥
भूप बचन सुनि सहज सुहाये । जड़ितकनकमणिपलंगडसाये ॥
सुभग सुरभि पयफेनु समाना । कोमल कलित सुपेती नाना ॥
उपबरहन बर बरणि न जाहीं । स्त्रगसुगंधमणि मन्दिरमाहीं ॥
रतन दीप सुठि चारु चंदोवा । कहत न बनैजानजेहि जोवा ॥
सेज रुचिर रचि राम उठाये । प्रेम समेत पलंग पौढ़ाये ॥

आज्ञा पुनि पुनिभाइन दीन्ही । निजनिजसेजशयनतिनकीन्ही ॥
देखि श्याम मृदु मंजुल गाता । कहहिं सप्रेमबचन सबमाता ॥
मारग जात भयावनि भारी । केहिबिधि तात ताड़कामारी ॥

दो० घोर निशाचर बिकटभट समर गनैनहिं काहु ।
मारेसहित सहायकिमि खल मारीच सुबाहु ॥

मुनिप्रसाद बल तात तुम्हारे । ईश अनेक करवरे टारे ॥
मख रखवारी कर दुहुं भाई । गुरु प्रसाद सब बिद्या पाई ॥
मुनि तिय तरी लगतपगधूरी । कीरतिरही भुवन भरि पूरी ॥
कमठ पीठ कवि कूट कठोरा । नृपसमाजमहंशिवधनु तोरा ॥
बिश्व बिजय यश जानकिपाई । आये भवन ब्याहि सब भाई ॥
सकल अमानुष कर्म हमारे । केवल कौशिक कृपा तुम्हारे ॥
आजु सफल जग जन्म हमारे । देखि तात बिधुबदन तुम्हारे ॥
जे दिन गये तुमहिं बिनुदेखे । तेबिरंचि जनि पारहिं लेखे ॥

दो० राम प्रतोषी मातु सब कहि बिनीत बरबयन ।
सुमिरि शम्भु गुरु बिप्रपद कियेनींदबशनयन ॥

नींदहु बदन सोह सुठिलोना । मनहुं सांझ सरसीरुहसोना ॥
घर घर करहिंजागरण नारी । देहिं परस्पर मंगल गारी ॥
पुरी बिराजति राजत रजनी । रानी कहहिंबिलोकहु सजनी ॥
सुंदर बदन सासु लै सोई । फणिपतिजनुशिरमणिउरगोई ॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुण चूड़बर बोलन लागे ॥
बन्दी मागध गुण गणगाये । पुरजन द्वार जुहारन आये ॥
बन्दि बिप्र सुर गुरुपितु माता । पाइ अशीशमुदितसब भ्राता ॥
जननिन्ह सादर बदन निहारे । भूपति संग द्वार पगु धारे ॥

दो० कीन्हशौचसबसहजशुचि सरितपुनीत नहाइ ।
प्रात क्रियाकरि तातपहं आये चारिउ भाइ ॥

भूप बिलोकि लिये उरलाई । बैठे हरषि रजायसु पाई ॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी । लोचनलाभ अवधिअनुमानी ॥

पुनि वशिष्ठमुनि कौशिक आये । सुभग आसनन मुनि बैठाये ॥
सुतन समेत पूजि पद लागे । निरखिरामदोउउर अनुरागे ॥
कहहिं वशिष्ठ धर्म इतिहासा । सुनहिंमहीपसहितरनिवासा ॥
मुनिमन अगमगाधि सुतकरणी । मुदितवशिष्ठबिपुलबिधिवरणी ॥
बोले बामदेव सब सांची । कीरतिकलितलोकतिहुंमाची ॥
सुनि आनन्द भयउ सब काहू । रामलषणउर अधिकउछाहू ॥

दो० मंगलमोद उछाह नित जाहिं दिवस इहिभांति ।
उमंगीअवधअनंदभरि अधिकअधिकअधिकाति ॥

मुदित साधि कर कंकण छोरे । मंगल मोद बिनोद न थोरे ॥
नितनव सुख सुरदेखिसिहाहीं । अवधजन्मयाचहिंविधिपाहीं ॥
बिश्वामित्र चलन नित चहहीं । राम सप्रेम विनयबशरहहीं ॥
दिनदिन सदगुण भूपति भाऊ । देखि सराह महा मुनि राऊ ॥
मांगत बिदा राउ अनुरागे । सुतन समेत ठाढ़ भये आगे ॥
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी । मैं सेवक समेत सुत नारी ॥
करब सदा लरिकन पर छोहू । दरशन देत रहब मुनि मोहू ॥
असकहि राउ सहित सुतरानी । परेउ चरण मुखआवनबानी ॥
दीन्ह अशीश बिप्र बहु भांती । चले न प्रीति रीतिकहिजाती ॥
राम सप्रेम संग सब भाई । आयसु पाइ फिरे पहुंचाई ॥

दो० राम रूप भूपति भगति ब्याह उछाह अनन्द ।
जातसराहतमनहिंमन मुदितगाधि कुलचन्द ॥

बामदेव रघुकुल गुरुज्ञानी । बहुरिगाधि सुतकथा बखानी ॥
सुनिसुनिसुयशमनहिंमनराऊ । बरणत आपन पुण्य प्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ । सुतन समेत नृपतिगृहगयऊ ॥
जहंतहं राम ब्याह यश गावा । सुयश पुनीत लोक तिहुंछावा ॥
आये ब्याहि राम घर जबते । बसे अनन्द अवध सबतबते ॥
प्रभुविवाह यश भयउ उछाहा । सकहिंनबरणिगिराअहिनाहा ॥
कबि कुल जीवन पावन जानी । राम सीय यश मंगल खानी ॥

तेहिते मैं कछु कहा बखानी। करण पुनीत हेतु निजबानी।

छं० निजगिरापावन करणकारण रामयशतुलसीकह्यो ।
रघुबीरचरित अपारबारिधि पारकबि कवनेलह्यो ॥
उपवीत व्याहउछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं ।
बैदेहि राम प्रसादते जन सर्व्वदा सुख पावहीं ॥
सुनिगायकहौं गिरीशकन्या धन्य अधिकारी सही ।
नितप्रीतिअनुपमसुनतहरिगुणभक्तिअनुपमतेलही॥
रघुबीरपद अनुराग जल लोभाग्नि बेगि बुझावई ।
यहजानितुलसीदास मनक्रमवचनहरि गुणगावई ॥

दो० कठिनकालमल ग्रसिततनु साधन कछुक न होइ ।
यह बिचारि बिश्वास करि हरिसुमिरे बुधिसोइ ॥

सो० मन हरि पद अनुराग करहु त्यागि नाना कपट ।
महा मोह निशि जाग सोवत बीते काल बहु ॥
सिय रघुबीर विवाह जे सप्रेम सादर सुनहिं ।
तिन कहं सदा उछाह मंगलायतन राम यश ॥

इतिश्रीरामचरित्रमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल
वैराग्यबिज्ञानसन्तोषसंपादनोनामतुलसीकृतबाल
काण्डप्रथमःसोपानः ॥ १ ॥

इति ॥

———०००———

श्रीगणेशायनमः ॥

अयोध्याकाण्ड ॥



श्लोक ॥

बामाङ्के चविभातिभूधरसुता देवापगामस्तकेभालेबालविधुर्ग
लेचगरलंयस्योरसिव्यालराट ॥ सोयम्भूतिविभूषणःसुरवरःसर्वा
धिपःसर्व्वदाशर्वःसर्वगतःशिवःशशिनिभःश्रीशंकरःपातुमाम् १ ॥
प्रसन्नतांयोनगतोभिषेकतस्तथानमम्लौवनवासदुःखतः ॥ मुखा
म्बुजंश्रीरघुनन्दनस्यमेसदास्तुतन्मंजुलमङ्गलप्रदम् २ नीलाम्बुज
श्यामलकोमलांगंसीतासमारोपितवामभागम् ॥ पाणौमहा
शायकचारुचापंनमामिरामंरघुवंशनाथम् ३ ॥

दो० श्रीगुरुचरण सरोजरज निजमन मुकुर सुधारि ।
बरणौं रघुबर बिमल यश जोदायक फलचारि ॥

जबते राम ब्याहि घर आये । नित नव मंगल मोद बधाये ॥
भुवन चारि दश भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी ॥
ऋधिसिधि सम्पतिनदीसुहाई । उमगि अवधअम्बुधिकहंआई ॥
मणिगण पुरनर नारिसुजाती । शुचि अमोल सुंदर सबभांती ॥
कहिन जाय कछु नगरबिभूती । जनु इतनी बिरंचि कर तूती ॥
सब बिधि सब पुरलोगसुखारी । रामचंद्र मुख चंद्र निहारी ॥
मुदित मातु सबसखी सहेली । फलितबिलोकि मनोरथबेली ॥
राम रूप गुण शील स्वभाऊ । प्रमुदितहोहिं देखिसुनिराऊ ॥

दो० सबके उर अभिलाष असकहहिं मनाय महेश ।
आप अक्षत युवराज पद रामहिं देहिं नरेश ॥
एकसमय सब सहित समाजा । राजसभा रघुराज बिराजा ॥
सकल सुकृति मूरति नरनाहू । रामसुयशसुनि अतिहिउछाहू ॥
नृपसब रहहिं कृपा अभिलाषे । लोकप रहहिंप्रीतिरुख राखे ॥
त्रिभुवन तीनिकाल जगमाहीं । भूरि भाग दशरथ समनाहीं ॥
मंगल मूल राम सुत जासू । जोकछु कहिय थोर सबतासू ॥
राउ स्वभाव मुकुर करलीन्हा । बदनबिलोकिमुकुटसमकीन्हा ॥
श्रवण समीप भये सित केशा । मनहुं चौथपन अस उपदेशा ॥
नृप युवराज राम कहं देहू । जीवन जन्म सुफल करि लेहू ॥
दो० असबिचारि उरआनि नृप सुदिन सुअवसरपाइ ।
तनपुलकित मनमुदित अति गुरुहिंसुनायउ जाइ ॥
कह्योभुवालसुनियमुनिनायक । भयेरामसवबिधि सबलायक ॥
सेवक सचिव सकल पुरबासी । जे हमार अरि मित्र उदासी ॥
सबहिंरामप्रियजेहिबिधिमोहीं । प्रभु अशीशजनु तनुधरिसोहीं ॥
बिप्र सहित परिवार गुसाईं । करहिं छोह सबरौरिहि नाईं ॥
जे गुरु चरणरेणु शिर धरहीं । ते जनुसकल बिभवबशकरहीं ॥
मोहिं समान अरु भयउ नदूजे । सब पायउं प्रभुपद रज पूजे ॥
अब अभिलाख एकमन मोरे । पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
मुनिप्रसन्न लखि सहजसनेहू । कह्यो नरेश रजायसु देहू ॥
दो० राउर राजन नामयश सब अभिमत दातार ।
फलअनुगामीमहिपमणिमन अभिलाषतुम्हार ॥
सबबिधि गुरुप्रसन्नजियजानो । बोल्यो राउबिहंसि मृदुबानी ॥
नाथ राम करिय युव राजू । कहियकृपाकरि करियसमाजू ॥
मोहिं अछत अस होउ उछाहू । लहहिंलोग सब लोचनलाहू ॥
प्रभु प्रसाद शिव सबै निबाहीं । यहै लालसा इक मन माहीं ॥
पनि नशोच तनु रहै कि जाऊ । जेहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥

सुनि मुनि दशरथ बचनसुहाये । मंगल मूल मोद अति पाये ॥
सुनुनृपजासु बिमुख पछिताही । जासुभजनबिनुजरनि नजाही ॥
भये तुम्हार तनय सो स्वामी । राम पुनीत प्रेम अनुगामी ॥
दो० बेगि बिलम्ब न करिय नृप साजिय सबै समाज ।
सुदिन सुमंगल तबहिंजब राम होहिं युव राज ॥
मुदित महीपति मन्दिरआये । सेवक सचिव सुमन्त बुलाये ॥
कहि जय जीवशीश तिन नाये । भूप सुमंगल बचन सुनाये ॥
प्रमुदित मोहिं कह्यो गुरुआजू । रामहिं राज देहु युवराजू ॥
जो पांचहिं मत लागै नीका । करहु हर्षि हिय रामहिंटीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी । अभिमतबिरव परेउजनुपानी ॥
बिनती सचिव करहिं करजोरी । जियहुजगतपति बरषकरोरी ॥
जग मंगल भल काज बिचारा । बेगिहि नाथ नलाइय बारा ॥
नृपहिं मोदसुनिसचिवसुभाषा । बढ़तबिटप जनुलही सुशाषा ॥
द० कहेउ भूप मुनिराजकर जो जो आयसु होइ ।
रामराज्य अभिषेक हित बेगिकरहु सोइ सोइ ॥
हरषि मुनीश कह्यो मृदुबानी । आनहु सकल सुतीरथ पानी ॥
औषध मूल फूल फल नाना । कहे नाम गणि मंगल जाना ॥
चामर चमर बसन बहु भांती । रोम पाट पट अगणितजाती ॥
मणि गण मंगल बस्तुअनेका । जो जग योग भूप अभिषेका ॥
बेद बिहित कहिसकलबिधाना । कह्योरचहुपुरबिबिधिबिताना ॥
पनस रसाल पूङ्ग फल केरा । रोपहु बीथिन पुर चहुं फेरा ॥
रचहु मंजु मणि चौके चारू । कहेउ बनावन बेगि बजारू ॥
पूजहु गणपति गुरु कुल देवा । सब बिधि करहुभूमिसुरसेवा ॥
दो० ध्वज पताक तोरण कलश सजहु तुरंग रथनाग ।
शिरधरिमुनिवरवचनसब निजनिजकाजहिंलाग ॥
जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा । सो जनु काजप्रथमतेंइकीन्हा ॥
बिप्र साधु सुर पूजत राजा । करत राम हित मङ्गल काजा ॥

सुनत राम अभिषेक सुहावा। बाजु गहा गह अवध बधावा ॥
राम सीय तनु शकुन जनाये। फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं। भरत आगमन सूचक अहहीं ॥
भये बहुत दिन अति अवसेरी। सगुण प्रतीति भेंट प्रियकेरी ॥
भरतसारिस प्रिय कोजग माहीं। यहै शकुन फल दूसर नाहीं ॥
रामहिं बन्धु शोच दिन राती। अंडन्ह कमठहृदय जेहिभांती ॥
दो० तेहि अवसर मंगलपरम सुनि हरषेउ रनिवास।
शोभितलखिविधुबढ़तजनुवारिधिवीचिबिलास॥
प्रथम जाइ जेहिवचन सुनावा। भूषण बसन भूरि तिन्हपावा ॥
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं। मंगल साज सजनसबलागीं ॥
चौके चारु सुमित्रा पूरी। मणिमयबिबिधभांतिअतिरूरी॥
आनंद मगन राम महतारी। दिये दान बहु बिप्र हंकारी ॥
पूजेउ ग्राम देव सुर नागा। कहेउ वहोरि देनबलि भागा ॥
जेहिबिधि होइ राम कल्याना। देहुदया करि सो वर दाना ॥
गावहिं मंगल कोकिल बयनी। बिधु बदनी मृगशावकनयनी ॥
दो० रामराज अभिषेक सुनि हिय हरषीं बरनारि।
लगीं सुमंगल सजनसब बिधिअनुकूल बिचारि ॥
तब नरनाह बशिष्ठ बुलाये। राम धाम सिख देन पठाये ॥
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा। द्वार आइ नायउ पद माथा ॥
सादर अर्घ्य देइ घर आने। सोरह भांति पूजि सनमाने ॥
गहेचरण सियसहित वहोरी। बोले राम कमल करजोरी ॥
सेवक सदन स्वामि आगमनू। मंगल मूल अमंगल दमनू ॥
यदपि उचितअसबोलिसप्रीती। पठइय नाथ काज अस नीती ॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्हसनेहू। भयउ पुनीत आजु मम गेहू ॥
आयसु होइ सोकरिय गुसाईं। सेवक लहै स्वामि सेवकाईं ॥
दो० सुनि सनेह सानेबचन मुनि रघुबरहिं प्रशंस।
राम कसन तुम कहहु अस हंस वंश अवतंस ॥

वरणि राम गुण शीलस्वभाऊ । बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥
भूप सजेउ अभिषेक समाजू । चाहत देन तुमहिं युवराजू ॥
राम करहु सब संयम आजू । जोबिधि कुशल निवाहैकाजू ॥
गुरु सिख देइ राउ पहं गयऊ । रामहृदय असविस्मय भयऊ ॥
जनमे एक संग सब भाई । भोजन शयन केलि लरिकाई ॥
कर्णवेध उपवीत बिवाहा । संग संग सब भयउ उछाहा ॥
विमल बंश यह अनुचित एका । अनुज बिहाय बड़े अभिषेका ॥
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । हरेउ भरत मनकी कुटिलाई ॥

दो० तेहि अवसर आये लषण मगन प्रेम आनन्द ।
सनमाने प्रिय बचन कहि रविकुल कैरवचन्द ॥

बाजहिं बाजन विविध विधाना । पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना ॥
भरत आगमन सकल मनावहिं । आवहिंवेगिनयनफलपावहिं ॥
हाट बाट घर गली अथाई । कहहिं परस्पर लोग लुगाई ॥
कालि लगन भल केतिक बारा । पूजिहिंविधिअभिलाषहमारा ॥
कनक सिंहासन सीय समेता । बैठहिं राम होइ चित चेता ॥
सकल कहहिं कबहोइहिकाली । विघ्न मनावहिं देव कुचाली ॥
तिनहिं सुहात न अवधबधावा । चोरहिं चांदनि राति न भावा ॥
शारद बोलि विनय सुर करहीं । बारहिं बार पांय लै परहीं ॥

दो० विपतिहमारिविलोकिबड़ि मातु करियसोइकाज ।
राम जाहिं बन राज तजि होइ सकल सुरकाज ॥

सुनिसुरविनय ठाढ़ि पछिताती । भयउ सरोजविपिनहिमराती ॥
देखिदेव पुनि कहहिं वहोरी । मातु तोहिं नहिंथोरिउखोरी ॥
विस्मय हर्ष रहित रघुराऊ । तुम जानहु रघुबीर स्वभाऊ ॥
जीव कर्म्मवश दुखसुख भागी । जाइय अवध देवहित लागी ॥
बार बार गहि चरण सकोची । चलीबिचारि विबुधमतिपोची ॥
ऊंच निवास नीच करतूती । देखि न सकहिं पराइ विभूती ॥
आगिल काज विचारि बहोरि । करिहैंचाह कुशल कविमोरी ॥

हरषि हृदय दशरथ पुर आई । जनुग्रह दशा दुसह दुखदाई ॥
दो० नाम मन्थरा मन्द मति चेरि कैकयी केरि ।
अयश पिटारी ताहिकरि गई गिरामति फेरि ॥
देखि मन्थरा नगर बनावा । मंगल मंजुल बाजु बधावा ॥
पूंछिसि लोगन्ह काह उछाहू । राम तिलक सुनिभाउरदाहू ॥
करै बिचार कुबुद्धि कुजाती । होइ अकाजकवनविधिराती ॥
देखिलागु मधु कुटिल किराती । जिमि गंवतकैलेउं केहिभांती ॥
भरत मातुपहं गइ बिलखानी । काअनमनिहंसिहंसिकहरानी ॥
उतर न देइ सो लेइ उसांसू । नारिचरित करि ढारति आंसू ॥
हंसि कह रानि गाल बड़तोरे । दीन्हूलषणसिखअसमनमोरे ॥
तबहुं न बोलि चेरिबड़िपापिनि । छांड़ श्वासकारि जनुसांपिनि॥
दो० सभयरानिकह कहसिकिन कुशलराम महिपाल ।
भरत लषण रिपु दमन सुनि भा कुबरी उरशाल ॥
कत सिख देहि हमहिंकोमाई । गालकरब केहिकर बलपाई ॥
रामहिं छांड़ि कुशलकेहि आजू । जाहि नरेश देत युवराजू ॥
भाकौशल्यहिविधि अतिदाहिन । देखत गर्व रहत उर नाहिन ॥
देखहु कस न जाइ सब शोभा । जो अवलोकि मोरमनक्षोभा ॥
पूत विदेश न शोच तुम्हारे । जानतिहौ वश नाह हमारे ॥
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखहु न भूप कपट चतुराई ॥
सुनि प्रियबचनकुटिलमनजानी । झुकी रानि अरहू अरगानी ॥
पुनिअस कबहुं कहसिघरफोरी । तौ धरि जीह कढ़ावौं तोरी ॥
दो० काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।
तियविशेषपुनि चेरिकहि भरतमातुमुसुकानि ॥
प्रिय वादिनसिखदीन्हेउं तोहीं । सपनेहु तापर कोप न मोहीं ॥
सुदिन सुमंगल दायक सोई । तोर कहा फुर जादिन होई ॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । यहदिनकर कुलरीति सदाई ॥
राम तिलक जो सांचेहु काली । मांगु देउं मन भावत आली ॥

कौशल्या सम सब महतारी । रामहिंसहज स्वभावपियारी ॥
मोपर करहिं सनेह विशेषी । मैं करि प्रीति परीक्षा देखी ॥
जो विधि जन्म देइ करि छोहू । होहिं राम सिय पूत पतोहू ॥
प्राणते अधिक राम सियमोरे । तिनके तिलक क्षोभकसतोरे ॥

दो० भरतशपथतोहिं सत्यकहु परिहरि कपटदुराव ।
हर्ष समय विस्मयकरसि कारण मोहिं सुनाव ॥

एकहि बार आश सब पूजी । अब कछुकहब जीहकरिदूजी ॥
फोरे योग कपार अभागा । भलौकहत दुख रौरेहुलागा ॥
कहइ झूठ फुर बात बनाई । सो प्रिय तुमहिं करुइमैंभाई॥
हमहुं कहब अब ठकुर सुहाती । नाहिंतौ मौनरहब दिनराती ॥
करि कुरूप विधिपरबशकीन्हा । बवासोलुनियलहियसोदीन्हा॥
कोउ नृप होउ हमैं का हानी । चेरिछांड़ि अबहोब कि रानी ॥
जारे योग स्वभाव हमारा । अनभलदेखि न जाइतुम्हारा ॥
ताते कछुक बात अनुसारी । क्षमव देवि बड़ चूक हमारी ॥

दो० गूढ़ कपटप्रियवचन सुनि तीयअधर बुधि रानि ।
सुर मायावश वैरिणिहि सुहृद जानि पतिआनि ॥

सादर पुनि पुनि पंछति वोही । शवरी नाद मृगी जनु मोही ॥
तस मति फिरीअहै जस भावी । रहसी चेरि घात भलिफावी ॥
तुम पूंछहु मैं कहत डराऊं । धरेहु मोर घर फोरी नाऊं ॥
सजिप्रतीतिगढ़िबहुविधिछोली । अवध साढ़ साती जनुबोली ॥
प्रिय सियरामकहा तुम रानी । रामहिं तुम प्रियसो फुरबानी ॥
रहे प्रथम अब सो दिन बीते । समयपाइ रिपुहोहिं पिरीते ॥
भानु कमल कुलपोषनि हारा । बिनु जल जारि करैसोछारा ॥
जरितुम्हारि चहसवतिउपारी । रूंधहु करि उपाय बरबारी ॥

दो० तुमहिं न शोच सुहागबल निजबश जानहुराव ।
मनमलीन मुंह मीठ नृप राउर सरलस्वभाव ॥

चतुर गंभीर राम महतारी । बीचपाइ निज काज संवारी ॥

पठये भरत भूप ननिऔरे । राम मातु मत जानब रौरे ॥
सेवहिंसकलसवति मोहिं नीके । गर्वित भरत मातुबल पीके ॥
शाल तुम्हार कौशिलहि माई । चतुर कपट नहिं परतलखाई ॥
राजहिं तुम पर प्रीति विशेषी । सवति स्वभावसकै नहिंदेखी ॥
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई । रामतिलक हित लगनधराई ॥
इहिकुल उचित रामकहंटीका । सबहि सुहाइमोहिंसुठिनीका ॥
आगिल बातसमुझि डर मोहीं । दैव देवफल सो फिरि वोही ॥
दो० रचिपचिकोटिककुटिलपनकीन्हेसिकपटप्रबोध ।
कहेसि कथा सुत सौति कर जाते बढ़ बिरोध ॥
भावी वश प्रतीति उर आई । पूंछिनारि निज शपथ दिवाई ॥
का पूंछहुतुम अजहुं न जाना । हित अनहितनिजपशुपहिचाना ॥
भये पाख दिन सजत समाजू । तुमसुधि पायहु मोसन आजू ॥
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे । सत्य कहे नहिं दोष हमारे ॥
जो असत्य कछु कहव बनाई । तौ विधि देइहि मोहिंसजाई ॥
रामहिंतिलककाल्हिजो भयऊ । तुमकहं बिपतिवीजविधिबयऊ ॥
रेखा खैंचि कहौं बल भाषी । भामिनि भयउ दूधकीमाखी ॥
जो सुत सहित करहुसेवकाई । तो घर रहहु न आनउपाई ॥
दो० कद्रू विनतहि दीन दुख तुमहि कौशला देव ।
भरत बन्दि गृह सेइहैं राम लषण कर नेव ॥
केकय सुता सुनत कटुबानी । कहिनसकैकछुसहमिसुखानी ॥
तन पसेव केदलि जनु कांपी । कुबरी दशन जीहतब चापी ॥
कहिकहि कोटिनकपटकहानी । धीरज धरहुप्रबोधिसि रानी ॥
कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू । जिमिननवैफिरि उकठकुकाठू ॥
फिराकर्म प्रियलागु कुचाली । वकिहि सराहतमनहुं मराली ॥
सुन मंथरा बात फुर तोरी । दहिनआंख नितफरकत मोरी ॥
दिनप्रतिदेखौं राति कुसपना । कहौं न तोहिं मोहवशअपना ॥
काह कहौं सखि सुद्ध सुभाऊ । दहिन वाम नहिंजानौं काऊ ॥

दो० अपने चलत नआजुलगि अनभल काहुक कीन्ह ।
केहि अघ एकहि बारमोहिं दैव दुसह दुःखदीन ॥
नैहर जन्म भरब बरु जाई । जियतन करबसवतिसेवकाई ॥
अरि बश दैव जिआवै जाही । मरणनीकतेहि जियबनचाही ॥
दीन बचन कह बहु बिधि रानी । सुनि कुबरी तियमाया ठानी ॥
अस कस कहहुमानि मनऊना । सुख सुहागतुमकहंदिनदूना ॥
जो राउर अस अनभल ताका । सोपाइहियह फल परिपाका ॥
जबते कुमति सुनी मैंस्वामिनि । भूख न बासरनींद न यामिनि ॥
पूंछा गुणिन्ह रेख तिन खांची । भरत भुवाल होब यहसांची ॥
भामिनि करहु तौ कहौंउपाऊ । हैं तुम्हरे सेवा बश राऊ ॥
दो० परौं कूप तव बचन लगि सकौं पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुखदेखिबड़ कसनकरबहितलागि ॥
कुबरी करी कुबलि कैकेयी । कपट छुरी उर पाहन टेयी ॥
लखै न रानि निकट दुख कैसे । चरैहरिततृण बलिपशु जैसे ॥
सुनत बात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुं मधुमाहुर घोरी ॥
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं । स्वामिनिकहेहुकथामोहिंपाहीं ॥
दुइ बरदान भूप सन थाती । मांगहु आजु जुड़ावहु छाती ॥
सुतहि राज रामहिं बन बासू । देहु लेहु सब सवति हुलासू ॥
भूपति राम शपथ जब करई । तब मांगेहु जेहि बचन नटरई ॥
होइ अकाज आजुनिशि बीते । बचन मोर प्रिय मानहुजीते ॥
दो० बड़ कुघात करि पातकिनिकहेसि कोपगृहजाहु ।
काजसंवारहु सजग सब सहसाजनि पतियाहु ॥
कुबरिहि रानि प्राण समजानी । बार बार बड़ि बुद्धिबखानी ॥
तुहि सम हित न मोर संसारा । बहे जात कर भयसिअधारा ॥
जो बिधि पुरव मनोरथ काली । करौं तोहिं चख पूतरिआली ॥
वहुबिधि चेरिहि आदर देयी । कोप भवन गवनी कैकेयी ॥
बिपति बीज बर्षा ऋतु चेरी । भुइं भइ कुमति कैकयीकेरी ॥

पाइ कपट जल अंकुर जामा। बरदोउदलफलदुखपरिणामा॥
कोप समाज साज सजि सोई। राजकरत तेहिकुमतिबिगोई॥
राउर नगर कोलाहल होई। यह कुचालकछु जाननकोई॥

दो० प्रमुदित पुर नर नारिसब साजिसुमंगल चार।
इक प्रबिशहिं इक निकसहीं भीर भूप दरबार॥

बालसखा सुनि हिय हरषाहीं। मिलिदश पांच रामपहंजाहीं॥
प्रभु आदरहिंप्रेम पहिंचानी। पूंछहिं कुशल क्षेम मृदु बानी॥
फिरहिं भवन प्रभु आयसुपाई। करत परस्पर राम बड़ाई॥
को रघुबीर सरस संसारा। शील सनेह निबाहन हारा॥
जेहिजेहि योनिकर्मबशभ्रमहीं। तहं तहं ईश देहि यह हमहीं॥
सेवक हम स्वामी सिय नाहू। होउ नाथ यह ओर निबाहू॥
अस अभिलाष नगरसबकाहू। कैकय सुता हृदय अतिदाहू॥
को न कुसंगति पाइ नशाई। रहै न नीच मते गरुआई॥

दो० सांझ समय सानन्द नृप गये कैकयी गेह।
गवन निठुरता निपटकियजनु धरिदेह सनेह॥

कोप भवन सुनि सकुचे राऊ। भयवश अगमन परै नपाऊ॥
सुरपति बसै बाहुबल जाके। नरपतिरहहिं सकल रुखताके॥
सो सुनितियरिसगये सुखाई। देखहु काम प्रताप बड़ाई॥
शूल कुलिश असि अंगनिहारे। तेरति नाथ सुमन शर मारे॥
सभय नरेश प्रिया पहं गयऊ। देखि दशादुख दारुण भयऊ॥
भूमि शयन पट मोटपुराना। दिये डारि तन भूषण नाना॥
कुमतिहि कसकुरूपता फावो। अनहित बातशोच जनुभावों॥
जाय निकट नृपकह मृदुबानी। प्राणप्रिया केहिहेतु रिसानी॥

छ० केहिहेतुरानिरिसानिपरसत पाणिपतिहिनिवारई।
मानहुं सरोष भुअंगभामिनि बिषमभांतिनिहारई॥
दुइ बासना रसना दशन बर मर्म ठाहर देखई।
तुलसी नृपति भवतब्यता वश कामकौतुकलेखई॥

सो० बार बार कहराउ सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि ।
कारण मोहिं सुनाउ गजगामिनि निजकोपकर ॥
अनहिततोर प्रियाकेहि कीन्हा । केहिदुइशिरकेहियमचहलीन्हा ॥
कहु केहि रंकहि करौं नरेशू । कहु केहि नृपहि निकारौं देशू ॥
सकौं तोर अरि अमरहु मारी । कहा कीट बपुरे नर नारी ॥
जानसि मोर स्वभाव बरोरू । तवमुख ममदृग चन्द्रचकोरू ॥
प्रिया प्राणसुत सर्बस मोरे । परिजन प्रजा सकलवश तोरे ॥
जो कछुकहौं कपटकरि तोहीं । भामिनि रामशपथ शतमोहीं ॥
बिहंसि मांगु मन भावतिबाता । भूषण साजु मनोहर गाता ॥
घरी कुघरी समुझि जिय देखू । बेगि प्रिया परिहरहु कुबेखू ॥
दो० यहसुनिमनगुणि शपथबड़ि बिहंसिउठोमतिमन्द ।
भूषण सजति बिलोकि मृगमनहुं किरातिनिफन्द ॥
पुनिकह राउ सुहृद जियजानी । प्रेम पुलकि मृदु मंजुलबानी ॥
भामिनि भयउ तोर मनभावा । घरघर नगर अनन्द बधावा ॥
रामहिं देउं कालिह युवराजू । सजहु सुलोचनिमंगलसाजू ॥
दलकि उठी सुनिबचन कठोरा । जनु छुइगयउ पाक बरतोरा ॥
ऐसी पीर बिहंसि उरगोई । चोर नारिजिमि प्रकट नरोई ॥
लखी न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल गुण गुरूपढ़ाई ॥
यद्यपि नीति निपुण नरनाहू । नारिचरितजल निधिअवगाहू ॥
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी । बोली बिहंसि नयनमुखमोरी ॥
दो० मांगु मांगु पै कहहुपिय कबहूं देहु नलेहु ।
देन कहेउ बरदान दुइ तेउ पावत सन्देहु ॥
जानेउ मर्म राउ हंसि कहई । तुमहिं कोहाब परमप्रियअहई ॥
थाती राखि न मांगेउ काऊ । बिसरि गयो ममभोर सुभाऊ ॥
झूठहु दोष हमहिं जनि देहू । दुइके चारि मांगि किनलेहू ॥
रघुकुल रीति सदाचलि आई । प्राणजाइ बरु वचन नजाई ॥
नहिं असत्य सम पातक पुंजा । गिरिसम होहिंकिकोटिकगुंजा ॥

सत्य मूल सब सुकृत सुहाई । वेद पुराण बिदित मुनि गाई ॥
तेहिपर राम शपथ करि आई । सुकृत सनेह अवधि रघुराई ॥
बात दृढ़ाइ कुमति हंसिबोली । कुमतिबिहंग कुलहजनु खोली ॥
दो० भूप मनोरथ सुभगबन सुख सुबिहंग समाज ।
भिल्लिनि जनु छांड़न चहतबचन भयंकरबाज ॥
सुनहु प्राणपति भावति जीका । देहु एक बर भरतहिं टीका ॥
दूसर वरमांगौं कर जोरे । नाथ मनोरथ पुरवहु मोरे ॥
तापस बेष विशेष उदासी । चौदह बर्ष राम बनबासी ॥
सुनि प्रिय बचन भूप उरशोकू । शशिकरछुवतबिकलजिमिकोकू ॥
गयेसहमिकछुकहि नहिंआवा । जनुशचानबन झपटेउ लावा ॥
बिवरणभयउ निपट महिपालू । दामिनि हनेउ मनहुं तरुतालू ॥
माथे हाथ मूंदि दोउ लोचन । तनुधरि शोचलागुजनुशोचन ॥
मोर मनोरथ सुर तरु फूला । फरत करिणिजनुहतेउसमूला ॥
अवध उजारि कीन्ह कैकेयी । दीन्हेसि अचलबिपति कैनेई ॥
दो० कवने अवसर काभयउ गयो नारि बिश्वास ।
योगसिद्धिफलसमयजिमियतिहिअविद्यानाश ॥
यहिबिधि राउ मनहिमनदहई । देखिकुभांति कुमतिअसकहई ॥
भरत कि राउर पूत न होहीं । आनेहु मोलबिसाहि किमोहीं ॥
जो सुनि शरसम लागतुम्हारे । काहे न बोलेहु बचन संभारे ॥
देहु उतर अस कहहु किनाहीं । सत्यसिन्धु तुमरघुकुल माहीं ॥
देन कहेउ बर अबजनि देहू । तजहु सत्यजग अपयश लेहू ॥
सत्य सराहि कहेउ बरदेना । जानेहु लेइहि मांगि चबेना ॥
शिविदधीचिबलिजोकछुभाषा । तनधन तजेउ बचनप्रणराखा ॥
अति कटु बचन कहतिकैकेयी । मानहुं लौन जरे परदेई ॥
दो० धर्म धुरन्धर धीरधरि नयन उघारे राउ ।
शिरधुनिलीन्हउसास अतिमारेसिमोहिंकुठाउ ॥
आगे देखि बरति रिसभारी । मनहुं रोष तर वारि उघारी ॥

मूढ़ कुबुद्धि धार निठुराई । धरि कुवरी जनु सान बनाई ॥
लखेउ महीप कराल कठोरा । सत्य कि जीवन लेइहि मोरा ॥
बोले राउ कठिन करि छाती । बानीविनय न ताहिसोहाती ॥
मोरे भरत राम दोउ आंखी । सत्य कहौं करि शंकरसाखी ॥
प्रिया बचनकसकहसिकुभांती । रीतिप्रतीति प्रीतिकरि घाती ॥
अवसि दूत मैं पठउब प्राता । ऐहैं वेगि सुनत दोउ भ्राता ॥
सुदिन साधि सबसाजि सजाई । देहौं भरतहिं राज बड़ाई ॥
दो० लोभ न रामहिं राजकर बहुतभरतपरप्रीति ।
मैं बड़ छोट बिचारकरि करतरहेउं नृपनीति ॥
राम शपथ शतकहौं स्वभाऊ । राम मातुमोहिंकहा न काऊ ॥
मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूंछे । ताते परेउ मनोरथ छूंछे ॥
रिसपरिहरि अब मंगल साजू । कछु दिनगये भरत युवराजू ॥
एकहि बात मोहिं दुखलागा । बर दूसर असमंजस मांगा ॥
अजहूं हृदय दहत तेहि आंचा । रिसपरिहासकि सांचहुसांचा ॥
कहु तजि रोष राम अपराधू । सबकोउ कहतरामसुठिसाधू ॥
तुहूं सराहसि करसि सनेहू । अबसुनि मोहिं परमसन्देहू ॥
जासु स्वभावअरिहु अनुकूला । सोकिमिकरहिमातुप्रतिकूला ॥
दो० प्रिया हास्यरिस परिहरहु मांगुबिचारि विवेक ।
जेहिदेखौं अब नयनभरि भरतराज अभिषेक ॥
जियै मीन बरु बारि बिहीना । मणिबिनुफणिकजियैदुखदीना ॥
कहौं स्वभाव न छल मनमाहीं । जीवन मोर रामबिनु नाहीं ॥
समुझि देखु तैं प्रिया प्रबीना । जीवन राम दरश आधीना ॥
सुनिमृदुवचनकुमतिअतिजरई । मनहुं अनलआहुति घृतपरई ॥
कहहुकरहु किन कोटिउपाया । इहां न लागिहि राउर माया ॥
देहु कि लेहुअयशकरिनाहीं । मोहिं न बहु परपंच सोहाहीं ॥
राम साधु तुम साधु सुजाना । राममातु तुमभलि पहिचाना ॥
जस कौशला मोर भल ताका । तसफलदेउं उन्हैं करिशाका ॥

दो० होत प्रात मुनि वेषधरि जो न रामबनजाहिं ।
मोरमरण राउरअयश नृपसमुझहु मनमाहिं ॥
असकहि कुटिल भई उठिठाढ़ी । मानहुं रोष तरंगिनि बाढ़ी ॥
पाप पहार प्रकट भइ सोई । भरी क्रोध जलजाइ न जोई ॥
दोउ बर कूल कठिन हठधारा । भवंर कूबरी बचन प्रचारा ॥
ढाहति भूप रूप तरु मूला । चलीविपतिबारिधिअनुकूला ॥
लखी नरेश बात सब सांची । तियमिसुमीच शीशपरनाची ॥
गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी । जनिदिनकरकुलहोसिकुठारी ॥
मांगु माथ अबहीं देउं तोहीं । रामविरह जनिमारसिमोहीं ॥
राखु रामकहं जेहि तेहि भांती । नाहितजरिहिजन्मभरिछाती ॥
दो० देखीव्याधि असाध्य नृपपरेउ धरणि धुनिमाथ ।
कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ ॥
व्याकुलराउ शिथिलसबगाता । करिणिकल्पतरुमनहुंनिपाता ॥
कंठ सूख मुख आव न बानी । जिमिपाठीन दीन बिनुपानी ॥
पुनि कह कटु कठोर कैकेयी । मर्म पाछि जनु माहुर देयी ॥
जो अन्तहु असकर तव रहेऊ । मांगु मांगु केहिके बलकहेऊ ॥
दुइकि होइ यक संग भुवालू । हंसब ठठाइ फुलाउब गालू ॥
दानि कहाउब अरु कृपणाई । चाहिय क्षेम कुशल रौताई ॥
छांड़हु बचन कि धीरज धरहू । जनिअबला इव करुणाकरहू ॥
तनतिय तनय धामधनधरणी । सत्यसिन्धुकहंतृणसम बरणी ॥
दो० मर्म बचन सुनि राउकह कछुक दोष नहिंतोर ।
लागेउ मोहिं पिशाच जनु काल कहावत मोर ॥
चहत न भरत भूप पद भोरे । विधिबश कुमतिबसी उरतोरे ॥
सो सब मोर पाप परिणामू । कछु न बसाइ भयोविधिवामू ॥
सुबसबसिहिपुनि अवधसुहाई । सब गुणधाम राम प्रभुताई ॥
करिहैं भाइ सकल सेवकाई । ह्वैहै तिहुं पुर राम बड़ाई ॥
तोर कलंक मोर पछिताऊ । मुयउनमिटिहिनजाइहि काऊ ॥

अबतोहिं नीक लागु कर सोई । लोचन ओट बैठु मुख गोई ॥
जौलौं जियौं कहौं कर जोरी । तौलौंजनिकछु कहसिबहोरी ॥
फिर पछितैहसि अन्तअभागी । मारसि गाय नाहरू लागी ॥
दो० परेउ राउ कहि कोटि विधि काहे करसिनिदान ।
कपट चतुरनहिं कहतिकछु जागतिमनहुंमसान॥
राम राम रटि बिकल भुआलू । जनु बिनु पंख विहंग बिहालू ॥
हृदय मनाव भोर जनि होई । रामहिं जाइ कहै जनि कोई ॥
उदय करहु जनिरबिकुल पूरा । अवध विलोकिशूल होइऊरा ॥
भूप प्रीति कैकयि निठुराई । उभय अवधिविधिरचीबनाई ॥
बिलपतनृपहि भयउभिनुसारा । वीणा बेणु शंख घुनि द्वारा ॥
पढ़हिं भाटगुण गावहिं गायक । सुनतनृपहिलागतजनुशायक ॥
मंगल कलश सोहाइ न कैसे । सह गामिनी विभूषण जैसे ॥
तेहि निशि नींदपरी नहिंकाहू । राम दरश लालसा उछाहू ॥
दो० द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदय रविदेखि ।
जागे अजहुं न अवध पति कारणकवनविशेषि ॥
पछिले पहर भूप नित जागा । आजुहमहिंबड़ अचरजलागा ॥
जाहु सुमन्त जगावहु जाई । कीजिय काज रजायसु पाई ॥
गे सुमन्त नृप मन्दिर माहीं । देखि भायनक जात डराहीं ॥
धाइ खाइ जनु जात न हेरा । मानहुं विपतिविषाद बसेरा ॥
पूंछत कोउ न उतर कछु देई । गे जेहि भवन भूप कैकेयी ॥
कहि जय जीव बैठि शिरनाई । देखि भूपगति गयउ सुखाई ॥
शोक बिकलविवरणमहिपरेऊ । मानहुं कमल मूल परिहरेऊ॥
सचिव सभीतसकहिं नहिंपूंछी । बोली अशुभभरी शुभ छूंछी ॥
दो० परी न राजहिं नींद निशि मर्म्म जानु जगदीश ।
राम राम रटि भोर किय हेतु न कहेउ महीश ॥
आनहु रामहिं बेगि बुलाई । समाचार तब पूंछहु आई ॥
चलेउ सुमन्त राउ रुख जानी ।लखीकुचाल कीन्ह कछुरानी ॥

शोच विवश महि परै न पाऊ। रामहिंबोलि कहहिंका राऊ॥
डर धरि धीरज गयेउ दुआरे। पूंछहिं सकलदेखि मनमारे॥
समाधान मन कर सबहीका। गये जहां दिनकर कुलटीका॥
राम सुमन्तहि आवत देखा। आदर कीन्ह पितासम लेखा॥
निरखि बदन कहि भूपरजाई। रघुकुल दीपहि चले लिवाई॥
रामकुभांति सचिव संग जाहीं। देखिलोग जहं तहंबिलखाहीं॥
दो० आइ दीख रघुवंश मणि नरपति निपट कुसाज।
सहमिपरेउलखि सिंहनिहिं मनहुंवृद्धगजराज॥
सूखे अधर जरे सब अंगा। मनहुं दीन मणि हीन भुजंगा॥
सरुष समीप देखि कैकेयी। मानहु मृत्यु घरी गनि लेयी॥
करुणामय रघुनाथ सुभाऊ। प्रथम दीखदुखसुना न काऊ॥
तदपिधीर धरिसमय बिचारी। पूंछा मधुर बचन महतारी॥
मोहिं कहुमातुतात दुखकारण। करिययत्नजेहि होइनिवारण॥
सुनहु राम सब कारण एहू। राजहि तुम पर बहुतसनेहू॥
देन कहेउ मोहिं दुइ बरदाना। मांगेउं जो कछुमोहिं सुहाना॥
सो सुनि भयउ भूप उर शोचू। छांड़िनसकहिं तुम्हारसकोचू॥
दो० सुत सनेह इत बचन उत संकट परेउ नरेश।
सकहु तो आयसुशीशधरि मेटहुकठिनकलेश॥
निधरक बैठि कहत कटु बानी। सुनतकठिनताअतिअकुलानी॥
जीभ कमान बचन शर जाना। मनहु भूप मृदुलक्ष्य समाना॥
जनु कठोर पन धरे शरीरा। सीख धनुष विद्या बर बीर॥
सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई। बैठी जनु तनु धरि निठुराई॥
मनमुसकाहिं भानुकुल भानू। राम सहज आनन्द निधानू॥
बोले बचन बिगत सब दूषण। मृदुमंजुल जनुबाग बिभूषण॥
सुनु जननी सोइसुत बड़भागी। जो पितु मातुबचनअनुरागी॥
तनय मातु पितु पोषण हारा। दुर्लभ जननी यह संसारा॥
दो० मुनिगणमिलन बिशेषबनसबहि भांतिभलमोर।

तेहि महं पितु आयसु बहुरि सम्मत जननीतोर ॥

भरत प्राण प्रियपावहिंराजू । बिधिसबविधिमोहिंसन्मुखआजू ॥
जो न जाहूं बन ऐसेहु काजा । प्रथम गणियमोहिंमूढ़समाजा ॥
सेवहिं अरंड कलपतरु त्यागी । परिहरिअमियलेहिंबिषमांगी ॥
तेउ न पाइ अससमयचुकाहीं । देखु बिचारि मातु मनमाहीं ॥
अम्ब एक दुख मोहिं विशेषी । निपटविकल नरनायक देखी ॥
थोरिहिबात पितहिं दुख भारी । होतप्रतीति न मोहिंमहतारी ॥
राउ धीर गुण उदधि अगाधू । भा मोते कछु बहु अपराधू ॥
ताते मोहिं न कहतकछु राऊ । मोरशपथतोहिं कहुसतिभाऊ ॥

दो॰ सहजसरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करिजान ।
चलै जोंक जिमिबक्रगति यद्यपि सलिल समान ॥

रहसी रानि राम रुख पाई । बोली कपट सनेह जनाई ॥
शपथ तुम्हार भरतकै आना । हेतु न दूसर मैं कछु जाना ॥
तुम अपराध योग नहिं ताता । जननी जनक बन्धु सुखदाता ॥
राम सत्य तुमजो कछु कहहू । तुम पितु मातु बचन रतअहहू ॥
पितहिं बुझाय कहौ बलिसोई । चौथे पनअध अयश न होई ॥
तुम समसुवन सुकृत जेहिदीन्हे । उचित न तासुनिरादर कीन्हे ॥
लागहिं कुमुखि वचनशुभकैसे । मगह गयादिक तीरथ जैसे ॥
रामहिं मातु बचन सब भाये । जिमिसुरसरिगतसलिलसुहाये ॥

दो॰ गैमर्छा रामहिं सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह ।
सचिव रामआगमनकहि विनयसमयसमकीन्ह ॥

जब नृप अकनि रामपगु धारे । धरिधीरज तबनयन उघारे ॥
सचिव संभारि राउ बैठारे । चरण परत नृप रामनिहारे ॥
लिये सनेह विकल उर लाई । गैमणिफणिकबहुरिजिमिपाई ॥
रामहिं चितै रहे नरनाहू । चलाविलोचन बारि प्रबाहू ॥
शोक बिकल कछुकहै न पारा । हृदय लगावति बारहिबारा ॥
विधिहि मनाव राउमनमाहीं । जेहि रघुनाथ न काननजाहीं ॥

सुमिरि महेशहि कहहिं निहोरी । बिनती सुनहु सदाशिव मोरी ॥
आशुतोष तुम औढर दानी । आरत हरहु दीनजन जानी ॥
दो० तुम प्रेरक सबके हृदय सो मति रामहिं देहु ।
बचन मोर तजि रहहिं घर परिहरि शीलसनेहु ॥
अयश होहु बरु सुयश नशाऊं । नरक परौं बरु सुरपुर जाऊं ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं । लोचन ओट राम जनि होहीं ॥
अस मन गुनत राउ नहिं बोला । पीपर पात सरस मन डोला ॥
रघुपति पितहिं प्रेम बश जानी । पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी ॥
देश काल अवसर अनुसारी । बोले बचन विनीत बिचारी ॥
तात कहौं कछु करौं ढिठाई । अनुचित क्षमब जानि लरिकाई ॥
अति लघु बात लागि दुख पावा । काहे न मोहिं कहि प्रथम जनावा ॥
देखि गुसाइहिं पूछेउं माता । सुनि प्रसंग भो शीतल गाता ॥
दो० मंगल समय सनेह बश शोच परिहरिय तात ।
आयसु देइय हरषि हिय कहि पुलके प्रभु गात ॥
धन्य जन्म जगतीतल तासू । पितहिं प्रमोद चरित सुन जासू ॥
चारि पदारथ करतल ताके । प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके ॥
आयसु पालि जन्म फल पाई । ऐहौं बेगहि होहु रजाई ॥
बिदा मातु सन आवों मांगी । चलिहौं वनहिं बहुरि पा लागी ॥
अस कहि राम गवन तब कीन्हा । भूप शोक वश उतर न दीन्हा ॥
नगर व्यापि गइ बात सुतीछी । छुवत चढ़ी जनु सब तन बीछी ॥
सुनि भये बिकल सकल नर नारी । बेलि बिटप जनु लागु दवारी ॥
जो जहं सुनै धुनै शिर सोई । बड़ विषाद नहिं धीरज होई ॥
दो० मुख सूखहिं लोचन श्रवहिं शोक न हृदय समाय ।
मानहुं करुणा रस कटक उतरा अवध बजाय ॥
भलि बनाइ बिधि बात बिगारी । जहं तहं देहिं केकयिहि गारी ॥
इहि पापिनिहिं बूझि का परेऊ । छाय भवन पर पावक धरेऊ ॥
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि सुधा विष चाहत चीखा ॥

कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुवंश बेणु बन आगी ॥
पल्लव बैठि पेड़ इन काटा । सुखमहं शोक ठाट इनठाटा ॥
सदारामइहि प्राण समाना । कारण कवनकुटिलपन ठाना ॥
सत्यकहहिं कबिनारि सुभाऊ । सबबिधिअगम अगाधदुराऊ ॥
निजप्रतिबिम्बमुकुरगहिजाई । जानि न जाइ नारिगतिभाई ॥

दो० का नहिं पावकजरिसकै का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबला प्रबल केहिजग काल न खाइ ॥

का सुनाइ विधिकाह सुनावा । का दिखाइ चह काह दिखावा ॥
एक कहैं भल भूप न कीन्हा । वरबिचारिनहिंकुमतिहिदीन्हा ॥
जोहठिभयउसकलदुखभाजन । अबलाविवशज्ञानगुणगाजन ॥
एक धर्म परमिति पहिंचाने । नृपहिं दोष नहिं देहिंसयाने ॥
शिव दधीचि हरिचन्दकहानी । एक एकसन कहहिं बखानी ॥
एक भरत कर सम्मत कहहीं । एक उदास भाव सुनिरहहीं ॥
कान मूंद कर रद कर जेहा । एक कहहिं यह बातअलीहा ॥
सुकृत जाइ अस कहततुम्हारे । भरत राम कहं प्राण पियारे ॥

दो० चन्द श्रवै बरु अनलकण सुधाहोइ विष तूल ।
सपनेहुंकबहुं न करहिंकछु भरतरामप्रतिकूल ॥

एक विधातहि दूषण देहीं । सुधा दिखाइ दीन्ह विष जेहीं ॥
खर भर नगर शोच सबकाहू । दुसह दाह उर मिटा उछाहू ॥
विप्र बधू कुल मान जिठेरी । जे प्रिय परम केकयी केरी ॥
लगीं देन सिख शील सराही । बचन बाणसम लागहिं ताही ॥
भरत नप्रियमोहिंरामसमाना । सदाकहहु यह सबजगजाना ॥
करहु राम पर सहज सनेहू । केहि अपराध आजु बन देहू ॥
कबहुं न कीन्ह सवति अवरेशू । प्रीति प्रतीति जान सब देशू ॥
कौशल्या अब कहा बिगारा । तुम जेहिलागि बज्रपुरपारा ॥

दो० सीयकिपियसंग परिहरहि लषणकिरहिहहिंधाम ।
भरतकि भूजब राजपुर नृपकि जियहिं बिनुराम ॥

सुमिरिमहेशहि कहहिंनिहोरी । बिनती सुनहु सदाशिवमोरी ॥
आशुतोष तुम औढर दानी । आरत हरहु दीनजन जानी ॥
दो० तुम प्रेरक सबके हृदय सो मति रामहिं देहु ।
बचनमोर तजि रहहिंघर परिहरि शीलसनेहु ॥
अयश होहु बरु सुयश नशाऊं । नरक परौं बरु सुरपुरजाऊं ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं । लोचन ओट रामजनि होहीं ॥
अस मन गुनत राउनहिंबोला । पीपर पात सरस मन डोला ॥
रघुपति पितहिं प्रेम बशजानी । पुनिकछुकहेउ मातुअनुमानी ॥
देश काल अवसर अनुसारी । बोले बचन विनीत बिचारी ॥
तात कहौं कछु करौं ढिठाई । अनुचितक्षमबजानिलरिकाई ॥
अतिलघुबात लागि दुखपावा । काहेनमोहिंकहिप्रथमजनावा ॥
देखि गुसाइहिं पूछेउं माता । सुनि प्रसंगभो शीतल गाता ॥
दो० मंगल समय सनेह बश शोच परिहरिय तात ।
अ [illegible] त ॥
धन्य ज [illegible] सुनजासू ॥
चारि प [illegible] समजाऊ ॥
आयसु पा [illegible] हु रजाई ॥
बिदा मातु [illegible] पालागी ॥
अस कहि [illegible] न दीन्हा ॥
नगर ब्या [illegible] न बीछी ॥
सुनिभयेबि [illegible] ुदवारी ॥
जो जहं सु [illegible] रिजहोई ॥
दो० मुर [illegible] य ।
मान [illegible] ॥
भलि बनाइ [illegible] हिगारी ॥
इहि पापिनिहिं बूझिका परेऊ । छाय भवन परपावकधरेऊ ॥
निजकर नयन काढ़ि चहदीखा । डारिसुधा विषचाहत चीखा ॥

कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी । भइ रघुबंश बेणु बन आगी ॥
पल्लव बैठि पेड़ इन काटा । सुखमहं शोक ठाट इनठाटा ॥
सदारामइहि प्राण समाना । कारण कवनकुटिलपन ठाना ॥
सत्यकहहिं कबिनारि सुभाऊ । सबबिधिअगम अगाधदुराऊ ॥
निजप्रतिबिम्बमुकुरगहिजाई । जानि न जाइ नारिगतिभाई ॥
दो० का नहिं पावकजरिसकै का न ...

का सुन ... बावा ॥
एक कहैं ... दीन्ह॥
जोहठि ... जन ॥
एक ध ... याने ॥
शिव द ... वानी ॥
एक भर ... रहहीं ॥
कान मूंद ... ीहा ॥
सुकृत ज ... यारे ॥
दो० ...
स ...
एक विध ... ीहीं ॥
खर भर ... हू ॥
विप्र बधू ... री ॥
लगीं देन ... शील सराही । बचन बाणसमलागहिं ताही ॥
भरत नप्रियमोहिंरामसमाना । सदाकहहु यह सबजगजाना ॥
करहु राम पर सहज सनेहू । केहि अपराध आजु बन देहू ॥
कबहुं न कीन्ह सवति अवरेशू । प्रीति प्रतीति जान सब देशू ॥
कौशल्या अब कहा बिगारा । तुम जेहिलागि बजपुरपारा ॥
दो० सीयकिपियसंग परिहरहि लषणकिरहिहहिंधाम ।
भरतकि भूजब राजपुर नृपकि जियहिं बिनुराम ॥

ओं विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमासोत्तमे
चैत्र मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदायाम्
गुरुवासरे वाशिष्ठ गोत्रः गोपालशर्मा
ऽहं मम ज्येष्ठ पुत्रस्य सम्पूर्णकालस्य
श्रीपरमेश्वर सीतारामचन्द्रस्य प्रीति
द्वारा सर्वोपद्रव शान्ति पूर्वक ~~[illegible]~~ संब-
धितराजगुरु बाराणां मोहनाथे श्रीतुल-
सीकृत रामायणस्य नवाह्न विधिना
नवदिवसपर्यन्तं यथोक्त करेरा
पाठं करिष्ये । तान्नि विघ्नतासिद्ध्ये
गणपति पूजनं च करिष्ये ।

अस विचारि जियकाढ़हु कोहू । शोक कलंक कोटि जनिहोहू ॥
भरतहि अवशिदेहु युवराजू । कानन कौन राम कर काजू ॥
नाहिन राम राज कर भूखे । धर्म्म धुरीण विषय रसरूखे ॥
गुरु गृह बसहिंरामतजि गेहू । नृपसन असवर दूसर लेहू ॥
राम सरिस सुत कानन योगू । कहाकहहिंसुनि तुमकहंलोगू ॥
जो न मानिहौ कहे हमारे । नहिंलागिहि कछुहाथतुम्हारे ॥
जो परिहास कीन कछु होई । तौ कहि प्रकट जनावहुसोई ॥
उठहु वेगि सोइ करहु उपाई । जेहिविधि शोक कलंकनशाई ॥

छं० जेहि भांतिशोककलंकजाइ उपाइकरि कुलपालहू ।
हठि फेरु रामहिंजात बनजनि बातदूसरिचालहू ॥
जिमिभानुबिनुदिनप्राणबिनु तनचंद बिनुजिमियामिनी ।
तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनु समुझिधौं मनभामिनी ॥

सो० सखिन सिखावन दीन्ह सुनतमधुरपरिणामहित ।
तेइ कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥

उतर न देइदुसह रिस रूखी । मृगिहिचितवजनुबाघिनिभूखी ॥
व्याधिअसाधिजानितिनत्यागी । चलीं कहतिमतिमंदअभागी ॥
राज करत इहि दैव बिगोई । कीन्हेसि असजसकरैनकोई ॥
इहिविधिबिलपहिंपुर नरनारी । देहिं कुचालिहिकोटिकगारी ॥
जरहिंविषमज्वर लेहिंउसासा । कवन रामबिनु जीवनआशा ॥
बिकलबियोग प्रजाअकुलानी । जिमिजलचर गणसूखतपानी ॥
अति विषादवश लोग लुगाई । गये मातु पहं राम गुसांई ॥
मुख प्रसन्न चित चौगुणचाऊ । यहै शोच जनि राखहिं राऊ ॥

दो० नव गयंद रघुबंशमणि राज अलान समान ।
छूटिजानवनगवनसुनि उरआनंदअधिकान ॥

रघकुलतिलकजोरिदोउहाथा । मुदित मातुपद नायउ माथा ॥
दीन्ह अशीशलाइ उरलीन्हे । भूषण बसन निछावरि कीन्हे ॥
बार बार मुख चूंबति माता । नयन नेहजलपुलकित गाता ॥

गोद राखि पुनि हृदय लगाये । श्रवत प्रेमरसपयद सुहाये ॥
प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई । रंक धनद पदवी जनु पाई ॥
सादर सुन्दर बदन निहारी । बोली मधुर वचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी । कबहिंलगन मुदमंगलकारी ॥
सुकृत शील सुखसींव सुहाई । जन्म लाभलहिअवध अघाई ॥
दो० जेहि चाहत नरनारिसब अतिआरत इहिभांति ।
जिमिचातकि चातकतृषितवृष्टिशरदऋतुस्वाति ॥
तात जाउंबलि वेगि अन्हाहू । जो मनभाव मधुरकछु खाहू ॥
पितु समीप तब जायहु भैया । प्रेम बिबशसादर कहिमैया ॥
मातु वचनसुनिअति अनुकूला । जनु सनेह सुरतरु के फूला ॥
सुख मकरन्द भरे श्रीमूला । निरखि राममन भंवरनभूला ॥
धर्म्म धुरीण धर्म्मगति जानी । कहेउमातुसनअतिमृदु बानी ॥
पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू । जहं सब भांति मोरबड़ काजू ॥
आयसु देहु मुदितमन माता । जेहि मुदमंगल कानन जाता ॥
जनिसनेह बश डरपसि भोरे । आनंद मातु अनुग्रह तोरे ॥
दो० वर्षचारिदशबिपिनबसि करिपितु वचनप्रमान ।
आयपांय पुनिदेखिहौं मनजनिकरसिमलान ॥
वचन विनीत मधुर रघुवरके । शरसम लाग मातु उरकरके ॥
सहमिसूखि सुनि शीतलबानी । जिमि जवासपर पावसपानी ॥
कहिन जाइ कछु हृदयविषादू । जनुसहमे करि केहरि नादू ॥
नयन सलिलतन थरहरकांपी । मांजा मनहुं मीनकहंब्यापी ॥
धरि धीरजसुत वदन निहारी । गद्गदवचनकहति महतारी ॥
तात पितहि तुमप्राण पियारे । देखिमुदितनितचरित तुम्हारे ॥
राजदेनकहं शुभदिन साधा । कहेउजानबनकेहि अपराधा ॥
तात सुनावहु मोहिं निदानू । कोदिनकर कुल भयउकृशानू ॥
दो० निरखिरामरुखसचिवसुत कारणकहेउबुझाइ ।
सुनिप्रसंगरहिमूकगति दशाबरणिनहिंजाइ ॥

राखिनसकहिं न कहिसकजाहू । दुहूंभांति उर दारुण दाहू ॥
लिखत सुधाकर लिखिगा राहू । बिधिगतिबामसदासबकाहू ॥
धर्म्म सनेह उभय मति घेरी । भइगति सांप छछूंदरि केरी ॥
राखौं सुतहि होइ अनरोधू । धर्म्म जाइ अरु बन्धुबिरोधू ॥
कहौं जानवन तौ बड़ि हानी । संकट शोचबिकलभइ रानी ॥
बहुरिसमुझि तियधर्म्म सयानी । रामभरत दोउसुतसमजानी ॥
सरल स्वभाव राम महतारी । बोली वचन धीर धरिभारी ॥
तात जाउंबलि कीन्हेउ नीका । पितुआयसुसबधर्म्मकटीका ॥

दो० राज देनकहं दीन्हवन मोहिंनशोच लवलेश ।
तुमबिनभरतहिभूपतिहि प्रजहिप्रचण्डकलेश ॥

जो केवल पितु आयसु ताता । तौ जनिजाहु जाइबलिमाता ॥
जो पितुमातु कहैं बन जाना । तौ काननशतअवध समाना ॥
पितु बन देव मातु बन देवी । खगमृग चरण सरोरुहसेवी ॥
अन्तहु उचित नृपहि बनबासू । वय बिलोकिहियहोतहिरासू ॥
बड़ भागी बन अवध अभागी । जो रघुवंशतिलक तुमत्यागी ॥
जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू । तुम्हरे हृदय होहि सन्देहू ॥
पुत्र परमप्रिय तुम सबहीके । प्राण प्राणके जीवन जीके ॥
ते तुम कहहु मातु बन जाऊं । मैं सुनि वचन बैठिपछिताऊं ॥

दो० यहबिचारि नहिं करउं हठ झूठ सनेह बढ़ाइ ।
मानिमातुकेनातबलि सुरतिबिसरिनहिंजाइ ॥

देव पितर सब तुमहिं गोसाईं । राखहु पलक नयनकी नाईं ॥
अवधिअम्बु प्रियपरिजन मीना । तुम करुणाकर धर्म्मधुरीना ॥
अस बिचारि सोइ करहुउपाई । सबहिंजियत जेहिभेंटहुआई ॥
जाउ सुखेन बनहिं बलिजाऊं । करिअनाथ जनपरिजनगाऊं ॥
सबकर आजुसुकृत फल बीता । भये करालकाल बिपरीता ॥
बहुबिधिबिलाप चरणलपटानी । परमअभागिनिआपुहिजानी ॥
दारुण दुसह दाह उर ब्यापा । बरणिनजाइबिलापकलापा ॥

राम उठाय मातु उर लावा । कहि मृदु वचन बहुत समुझावा ॥

दो० समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।
जाइ सासु पग कमलयुग बन्दि बैठि शिरनाइ ॥

दीन्ह अशीश सासु मृदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलानी ॥
बैठि नमितमुख शोचति सीता । रूप राशि पतिप्रेम पुनीता ॥
चलन चहत बन जीवननाथा । कवन सुकृत सनहोइहि साथा ॥
की तनु प्राण कि केवल प्राना । विधिकरतब कछु जातनजाना ॥
चारु चरण नखलेखति धरणी । नूपुर मुखर मधुर कवि बरणी ॥
मनहुं प्रेमबश बिनती करहीं । हमहिं सीयपद जनि परिहरहीं ॥
मंजु बिलोचन मोचति बारी । बोली देखि राम महतारी ॥
तातसुनहु सिय अति सुकुमारी । सासु ससुर परिजनहिं पियारी ॥

दो० पिता जनक भूपालमणि ससुर भानुकुल भान ।
पतिरबिकुलकैरवविपिनविधु गुणरूपनिधान ॥

मैं पुनि पुत्र वधू प्रिय पाई । रूप राशि गुणशील सुहाई ॥
नयन पुतरि इव प्रीति बढ़ाई । राखहुं प्राण जानकिहि लाई ॥
कल्पबेलिजिमि बहुविधि लाली । सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
फूलत फलत भये विधि बामा । जानि न जाइ काह परिणामा ॥
पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा । सिय न दीन पग अवनि कठोरा ॥
जिवनमूरि जिमि जुगवति रहेऊं । दीप बाति नहिं टारन कहेऊं ॥
सो सिय चहति चलन बन साथा । आयसु कह होइ रघुनाथा ॥
चन्द्र किरण रस रसिक चकोरी । रविरुख नयन सकै किमि जोरी ॥

दो० करि केहरि निशिचर चरहिं दुष्ट जन्तु बन भूरि ।
विषबाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवनि मूरि ॥

वनहित कोल किरात किशोरी । रची बिरंचि विषय रस भोरी ॥
पाहन कृमि जिमि कठिन स्वभाऊ । तिनहिं कलेश न कानन काऊ ॥
कै तापस तिय कानन योगू । जिन तपहेतु तजा सब भोगू ॥
सियबन बसिहि तात केहिभांती । चित्रलिखित कपि देखि डराती ॥

सुरसरि सुभगबनज बनचारी । डाबरयोग कि हंस कुमारी ॥
अस बिचारि जसआयसु होई । मैं सिख देउं जानकिहिसोई ॥
जोसिय भवन रहै कह अम्बा । मोकहं होइ प्राण अवलम्बा ॥
सुनि रघुवीर मातुप्रिय बानी । शीलसनेह सुधाजनु सानी ॥
दो० कहिप्रियवचन बिवेकमय कीन्हमातु परितोष ।
लगेप्रबोधनजानकिहि प्रकटबिपिनगुणदोष ॥
मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समय समुझिमन माहीं ॥
राज कुमारि सिखावन सुनहू । आनभांतिजियजनिकछुगुनहू ॥
आपन मोर नीक जो चहहू । वचन हमार मानिघररहहू ॥
आयसु मोर सासु सेवकाई । सबबिधिभामिनिभवनभलाई ॥
इहितेअधिक धर्म्म नहिंदूजा । सादर सासुससुर पद पूजा ॥
जबजब मातु करिहिसुधिमोरी । होइहि प्रेमबिकलमति भोरी ॥
तबतब तुमकहि कथा पुरानी । सुन्दरिसमुझायहु मृदुबानी ॥
कहौं स्वभाव सतशत मोहीं । सुमुखिमातुहित राखौं तोहीं ॥
दो० गुरुश्रुतिसम्मतधर्म्मफल पाइयबिनहिंकलेश ।
हठबश सब संकट सहे गालव नहुष नरेश ॥
मैं पुनिकरि प्रमाणपितु बानी । वेगिफिरबसुनु सुमुखिसयानी ॥
दिवसजातनहिं लागिहिबारा । सुन्दरिसिखवन सुनहु हमारा ॥
जोहठ करहु प्रेम बश बामा । तौ तुम दुख पाउबपरिणामा ॥
कानन कठिन भयंकर भारी । घोर घाम हिमबारि बयारी ॥
कुश कंटक मग कंकर नाना । चलब पयादेहि बिनुपदत्राना ॥
चरण कमल मृदुमंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कन्दर खोह नदी नदनारे । अगम अगाधन जाहिंनिहारे ॥
भालुबाघ वृक केहरि नागा । करहिंनाद सुनि धीरजभागा ॥
दो० भूमिशयनबलकलवसन अशन कन्दफल मूल ।
तेकिसदासबदिनमिलहिं समयसमयअनुकूल ॥
नर अहार रजनीचर करहीं । कपट वेष बनकोटिन करहीं ॥

लागै अति पहार कै पानी। बिपिनबिपतिनहिंजातबखानी ॥
ब्याल कराल बिहँग बनघोरा। निशिचरनिकरनारिनरचोरा॥
डरपहिं धीर गहनसुधि आये। मृगलोचनि तुमभीरु सुभाये॥
हंस गमनि तुम नहिं बनयोगू। सुनिअपयशदेहहिंमोहिंलोगू॥
मानससलिलसुधाप्रतिपाली। जियइकिलवनपयोधिमराली॥
नवरसाल बन बिहरण शीला। सोहकिकोकिलबिपिनकरीला॥
रहहु भवन अस हृदय बिचारी। चन्द्रबदनि दुखकाननभारी॥
दो० सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख जो न करैहितमानि।
सो पछिताय अघाय उर अवशि होइ हित हानि॥
सुनिमृदु बचन मनोहर पियके। लोचननलिनभरेजलसियके॥
शीतल सिख दाहक भइ कैसे। चकइहि शरदचांदनी जैसे॥
उतर न आव बिकल बैदेही। तजन चहतमोहिंपरमसनेही॥
बरबशरोंकि बिलोचन बारी। धरिधीरज उरअवनिकुमारी॥
लागि सासु पद कह करजोरी। क्षमब मातुबड़अबिनय मोरी॥
दीन प्राणपतिमोहिं सिखसोई। जेहिबिधिमोर परमहितहोई॥
मैं पुनि समुझि दीख मनमाहीं। पियबियोगसमदुखजगनाहीं॥
यहिबिधिसियसासुहिसमुझाई। कहतिपतिहिबरबिनयसुनाई॥
दो० प्राण नाथ करुणायतन सुन्दर सुखद सुजान।
तुम बिनुरघुकुलकुमुदबिधु सुरपुर नरकसमान॥
मातु पिताभगिनी प्रिय भाई। प्रियपरिवार सुहृद समुदाई॥
सासु ससुर गुरु सुजन सुहाई। सुठि सुन्दर सुशील सुखदाई॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते। पियबिनुतियहितरणितेताते॥
तन धन धाम धरणि पुरराजू। पति बिहीनसब शोकसमाजू॥
भोग रोग सम भूषण भारू। यम यातना सरस संसारू॥
प्राण नाथ तुम बिनु जगमाहीं। मोकहँसुखदकतहुंकोउनाहीं॥
जिय बिनु देह नदी बिनुबारी। तैसहि नाथ पुरुष बिनुनारी॥
नाथ सकल सुखसाथ तुम्हारे। शरदबिमल बिधुबदननिहारे॥

दो० खग मृग परिजन नगरबन बलकल बसन दुकूल ।
नाथ साथ सुर सदन सम पर्ण शाल सुख मूल ॥
बन देवी बन देव उदारा । करिहैं सासु ससुर समसारा ॥
कुश किशलय साथरी सुहाई । प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥
कन्दमूल फल अमिय अहारू । अवधसहससुख सरिसपहारू ॥
क्षणक्षणप्रभुपदकमलबिलोकी। रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी ॥
बन दुख नाथ कहेउ बहुतेरे । भय विषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभु वियोग लवलेश समाना । सबमिलिहोहिंनकृपानिधाना ॥
असजियजानिसुजानशिरोमनि । लेइय संगमोहिंछांड़ियजनि ॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी । करुणामय उर अन्तरयामी ॥
दो० राखिय अवधजो अवधिलगि रहत जानियेप्रान ।
दीनबन्धु सुन्दर सुखद शील सनेह निधान ॥
मोहिंमग चलतन होइहिहारी । क्षणक्षणचरणसरोजनिहारी ॥
सबहिभांतिपियसेवाकरिहौं । मारगजनितसकलश्रमहरिहौं ॥
पांव पखारि बैठि तरु छाहीं । करिहौं बायुमुदितमनमाहीं ॥
श्रम कण सहित श्यामतनुदेखे । कहदुखसमयप्राणपतिपेखे ॥
सम महि तृणतरुपल्लव डासी । पांयपलोटिहिसबनिशिदासी ॥
बार बार मृदु मूरति जोही । लागिहि तापबयारि न मोही ॥
को प्रभुसँगमोहिंचितवनहारा । सिंहबधुहुजिमिशशकसियारा ॥
मैं सुकुमारि नाथ बन योगू । तुमहिं उचित तपमोकहँभोगू ॥
दो० ऐसहु वचन कठोरसुनि जो न हृदय बिलगान ।
तौ प्रभु बिषम बियोगदुख सहिहैं पामरप्रान ॥
असकहि सीय बिकलभइभारी । बचनबियोगन सकीसँभारी ॥
देखिदशा रघुपति जिय जाना । हठिराखेराखिहिनहिंप्राना ॥
कहेउकृपालु भानुकुल नाथा । परिहरिशोचचलहुवनसाथा ॥
नहिं बिषादकर अवसरआजू । वेगि करहु बनगमनसमाजू ॥
कहिप्रियबचनप्रियहिसमुझाई । लगे मातुपदआशिष पाई ॥

बेगि प्रजा दुख मेटब आई । जननीनिठुरबिसरिजनिजाई ॥
फिरिहिदशाविधिबहुरिकिमोरी । देखिहौं नयन मनोहरजोरी ॥
सुदिन सुघरी तात कबहोई । जननी जियत बदन बिधुजोई ॥
दो० बहुरि बच्छकहिलालकहि रघुपति रघुबरतात ।
कबहुंबुलाइ लगाइउर हरषि निरखिहौंगात ॥
लखि सनेह कातरि महतारी । बचननआव बिकल भइभारी ॥
राम प्रबोध कीन्ह बिधिनाना । समयसनेह न जाइ बखाना ॥
तब जानकी सासु पग लागी । सुनिय मातु मैं परम अभागी ॥
सेवा समय दैव वन दीन्हा । मोर मनोरथ सफल नकीन्हा ॥
तजब क्षोभ जनि छांड़ब छोहू । कर्म्मकठिनकछुदोष न मोहू ॥
सुनिसियबचनसासुअकुलानी । दशा कवनविधिकहौंबखानी ॥
बारहिंबार लाइ उर लीन्ही । धरिधीरजसिखआशिषदीन्ही ॥
अचल होउ अहिवात तुम्हारा । जबलगिगंगयमुनजलधारा ॥
दो० सीतहि सासु अशीष सिख दीन्ह अनेक प्रकार ।
चली नाइपद पद्मशिर अति हित बारहिं बार ॥
समाचार जब लक्ष्मणपाये । व्याकुलबिलखिबदन उठिधाये ॥
कम्प पुलकतनुनयनसनीरा । गहे चरण अति प्रेम अधीरा ॥
कहिनसकतकछु चितवतठाढ़े । मीनदीन जनु जलते काढ़े ॥
शोचहृदय बिधिकाहोनहारा । सबसुखसुकृत सिरानहमारा ॥
मो कहं कहा कहब रघुनाथा । रखिहैं भवन कि लेहैं साथा ॥
राम बिलोकि बन्धुकर जोरे । देह गेह सब सन तृण तोरे ॥
बोले बचन राम नव नागर । शीलसनेह सरलसुख सागर ॥
तात प्रेम बश जनि कदराहू । समुझिहृदय परिणामउछाहू ॥
दो० मातुपितागुरुस्वामिसिखशिरधरिकरहिसुभाय ।
लहेउलाभ तिनजन्मके नतरु जन्म जगजाय ॥
अस जियजानिसुनहुसिखभाई । करौ मातुपितु पद सेवकाई ॥
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं । राउ वृद्ध ममदुख मनमाहीं ॥

मैं बनजाउं तुमहिं लै साथा । होइहि सबविधिअवधअनाथा ॥
गुरुपितु मातु प्रजा परिवारा । सब कहंपरै दुसहदुख भारा ॥
रहहु करहु सब कर परितोषू । नतरु तात होइहि बड़दोषू ॥
जासु राज्यप्रिय प्रजा दुखारी । सोनृप अवशिनरकअधिकारी ॥
रहहुतात अस नीति बिचारी । सुनतलषणभयेव्याकुलभारी ॥
सियरे बदन सूखि गये कैसे । परसत तुहिन तामरस जैसे ॥
दो० उतर न आवत प्रेमवश गहे चरण अकुलाइ ।
नाथ दासमैं स्वामितुम तजहु तौ कहावसाइ ॥
दीन्ह मोहिं सिख नीक गुसांई । लागत अगम अपनि कदराई ॥
नर वर धीर धर्म्म धुर धारी । निगम नीति केते अधिकारी ॥
मैं शिशुप्रभु सनेह प्रतिपाला । मन्दर मेरु कि लेइ मराला ॥
गुरु पितु मातु न जानों काहू । कहौं स्वभाव नाथ पतिआहू ॥
जहँलगि जगत सनेह सगाई । प्रीतिप्रतीतिनिगम निजगाई ॥
मोरे सबै एक तुम स्वामी । दीनबन्धु उर अन्तरयामी ॥
धर्म्म नीति उपदेशिय ताही । कीरतिभूतिसुगतिप्रियजाही ॥
मन क्रम बचन चरण रतहोई । कृपासिन्धुपरिहरिय किसोई ॥
दो० करुणासिन्धु सुबन्धुके सुनि मृदुबचन बिनीत ।
समुझाये उर लायप्रभु जानि सनेह सभीत ॥
मांगहु बिदा मातु सन जाई । आवहु बेगि चलहु बनभाई ॥
मुदित भये सुनि रघुवर बानी । भयउलाभ बड़ मिटीगलानी ॥
हर्षित हृदय मातु पहँ आये । मनहुं अन्धफिरि लोचन पाये ॥
जाइ जननिपद नायउ माथा । मनरघुनन्दन जानकि साथा ॥
पूंछेउ मातु मलिन मन देखी । लषण कहेउ सबकथा बिशेषी ॥
गई सहमि सुनि बचनकठोरा । मृगी देखि जनुदवचहुं ओरा ॥
लषण लखेउ भा अनरथआजू । यह सनेह बश करब अकाजू ॥
मांगत बिदा समय सकुचाहीं । जानसंग बिधिकहहिं किनाहीं ॥
दो० समुझि सुमित्रा रामसिय रूपसुशील स्वभाव ।

नृपसनेहलखिधुनेउशिर पापिनिकीन्हकुदाव ॥

धीरज धरेउ कुअवसर जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी ॥
तात तुम्हार मातु बैदेही। पिता राम सब भांति सनेही ॥
अवध तहां जहँ रामनिवासू। तहां दिवसजहं भानु प्रकाशू ॥
जो पै राम सीय बन जाहीं। अवध तुम्हार काज कछुनाहीं ॥
गुरु पितु मातु बन्धु सुरसाईं। सेइय सकल प्राणकी नाईं ॥
राम प्राण प्रिय जीवन जीके। स्वारथ रहितसखासबहीके ॥
पूजनीय प्रिय परम जहांते। मानहिं सकउ राम के नाते ॥
अस जियजानि संग बन जाहू। लेहु तात जगजीवन लाहू ॥

दो० भूरिभागभाजनभयउ मोहिं समेत बलिजाउँ।
जो तुम्हरेमन छांड़िछल कीन्ह राम पद ठाउँ ॥

पुत्रवती युवती जग सोई। रघुबर भक्त जासु सुत होई ॥
नतरु बांझभलिबादि बियानी। रामविमुखसुततेहिहितहानी ॥
तुम्हरेहि भाग राम बनजाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकल सुकृत कर फलसुतयेहू। रामसीय पद सहज सनेहू ॥
राग रोष ईर्षा मद मोहू। जनि सपनेहु इनके बशहोहू ॥
सकल प्रकार बिकार बिहाई। मन क्रमवचन करहुसेवकाई ॥
तुमकहं बन सब भांति सुपासू। संगपितुमातु रामसियजासू ॥
जेहिन न रामबन लहहिं कलेशू। सुतसोइकरेउ मोर उपदेशू ॥

छं० उपदेश यहि जेहि तात तुमते रामसियसुखपावहीं।
पितु मातुप्रियपरिवार पुरसुख सुरतिवनबिसरावहीं ॥
तुलसीसुतहिसिखदेइ आयसुदेइपुनिआशिषदई।
रतिहोउ अविरलअमलसिय रघुबीर पद नितनितनई ॥

सो० मातु चरण शिरनाइ चले तुरत शंकितहिये।
बागुरु विषमतुराइ मनहुं भागमृगभागवश ॥

गये लषणजहं जानकि नाथा। भे मनमुदित पाइपियसाथा ॥
बन्दिराम सिय चरण सुहाये। चलेसंग नृप मन्दिर आये ॥

कहहिं परस्पर पुर नर नारी । भलिबनाइ विधि बातबिगारी ॥
तनु कृश मनदुख बदनमलीना । विकल मनहुं माखीमधुछीना ॥
करमींजहिं शिरधुनिपछिताहीं । जनुबिनुपंखविहँग अकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा । बरणिनजाइ विषाद अपारा ॥
सचिव उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रियवचन रामपगुधारे ॥
सिय समेत दोउ तनयनिहारी । ब्याकुल भये भूमिपति भारी ॥
दो० सीयसहित सुत सुभगदोउ देखिदेखि अकुलाइ ।
बारहिं बार सनेह वश राउ लिये उर लाइ ॥
सकै न बोलि विकल नर नाहू । शोकविकल उर दारुणदाहू ॥
नाइ शीशपद अति अनुरागा । उठि रघुनाथ बिदातबमांगा ॥
पितु अशीष आयसु मोहिं दीजै । हर्ष समय विस्मय कतकीजै ॥
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू । यश जग जाइ होइ अपबादू ॥
सुनि सनेह वश उठि नरनाहू । बैठारे रघुपति गहि बाहू ॥
सुनहु तात तुमकहँ मुनिकहहीं । राम चराचर नायक अहहीं ॥
शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी । ईश देइ फल हृदय विचारी ॥
करै जो कर्म्म पाव फल सोई । निगमनीति असकहसबकोई ॥
दो० और करै अपराध कोइ और पाव फल भोग ।
अति विचित्र भगवन्तगति को जगजानेयोग ॥
राउर राम लषण हित लागी । बहुतउपायकीन्ह छलत्यागी ॥
लखे राम रुख रहत न जाने । धर्म्म धुरन्धर धीर सयाने ॥
तव नृपसीय लाइउरलीन्ही । अतिहितबहुतभांतिसिखदीन्ही ॥
कहि वनके दुख दुसह सुनाये । सासुश्वशुरपितुसुखसमुझाये ॥
सियमन राम चरण अनुरागा । घरनसुगमवन अगमनलागा ॥
औरोसबहि सीय समुझाई । कहिकहिविपिनविपतिअधिकाई ॥
सचिव नारि गुरु नारि सयानी । सहितसनेह कहहिं मृदुबानी ॥
तुम कहँ तौ न दीन्ह बनवासू । करहुजो कहहिंश्वशुरगुरुसासू ॥
दो० सिखशीतलहितमधुरमृदु सुनिसीतहिनसुहानि ।

शरदचन्द्र चांदनि लगत जनुचकई अकुलानि ॥
सीय सकुच बश उतर न देई। सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥
मुनि पट भूषण भाजन आनी। आगे धरि बोली मृदु बानी ॥
नृपहि प्राणप्रिय तुम रघुबीरा। शील सनेह न छांड़हिं भीरा ॥
सुकृत सुयश परलोक नशाऊ। तुमहिं जानवन कहहिंनराऊ ॥
असबिचारिसोइकरौजोभावा। रामजननिसिखसुनिसुखपावा ॥
भूपहि बचन बाणसम लागे। करहिं न प्राण पयानअभागे ॥
शोक बिकल मुर्छित नर नाहू। कहा करिय कछु सूझनकाहू ॥
राम तुरत मुनिबेष बनाई। चले जनक जननी शिरनाई ॥
दो० सजिवनसाज समाजप्रभु बनिता बन्धु समेत।
बन्दिबिप्रगुरुचरण प्रभु चले करिसबहिंअचेत ॥
निकसि वशिष्ठ द्वार भे ठाढ़े। देखे लोग बिरह दव डाढ़े ॥
कहिप्रियबचनसबहिसमुझाये। बिप्र बृन्द रघुबीर बुलाये ॥
गुरु सन कहि बरशासन दीन्हे। आदरदान बिनय बहुकीन्हे ॥
याचक दान मान सन्तोषे। नीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
दासी दास बुलाइ बहोरी। गुरुहि सौंपि बोले करजोरी ॥
सबकर सार सँभाल गुसाईं। करब जनक जननी की नाईं ॥
बारहिं बार जोरि युग पानी। कहत राम सबसन मृदुबानी ॥
सोइ सब भांति मोरहितकारी। जेहिते रहैं भुवाल सुखारी ॥
दो० मातु सकल मोरे बिरह जेहिन होहिंदुखदीन।
सोउपाय तुमकरब सब पुरजन परम प्रबीन ॥
इहिबिधिरामसबहिसमुझावा। गुरुपदपद्म हरषि शिरनावा ॥
गणपति गौरि गिरीश मनाई। चले अशीश पाइ रघुराई ॥
राम चलत अति भयो बिषादू। सुनिन जाइ पुर आरतनादू ॥
कुशकुन लंक अवध अति शोकू। हर्षबिषाद बिबस सुरलोकू ॥
गै मुर्छा तब भूपति जागे। बोलिसुमन्त्रकहन असलागे ॥
राम चले वन प्राण न जाहीं। केहिसुखलागि रहेतनुमाहीं ॥

इहि ते कवन व्यथा बलवाना । जोदुख पाइतजहिं तनुप्राना ॥
पुनिधरि धीर कहहिंनरनाहू । लै रथ संग सखा तुम जाहू ॥
दो० सुठि सुकुमारकुमारदोउ जनकसुतासुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ दिखराइवन फिरहु गयेदिन चारि ॥
जोनहिं फिरहिं धीरदोउ भाई । सत्य सिन्धु दृढ़ ब्रतरघुराई ॥
तौतुम बिनय करहु करजोरी । फेरियप्रभुमिथिलेश किशोरी ॥
जब सिय कानन देखिडराई । कहेउमोर सिख अवसर पाई ॥
सासु ससुर असकहेउ सँदेशू । पुत्रिफिरियबन बहुत कलेशू ॥
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी । रहेउ जहांरुचिहोइ तुम्हारी ॥
इहि बिधि करेउ उपायकदंबा । फिरइतौहोइ प्राण अवलंबा ॥
नाहिं तौ मोर मरण परिणामा । कछुन बसाइभयोबिधिबामा ॥
असकहि मुर्छिपरेउ महिराऊ । रामलषणसियआनिदिखाऊ ॥
दो० पाय रजायसुनाइ शिर रथ अति बेगिबनाइ ।
गये जहां बाहर नगर सीय सहितदोउभाइ ॥
तब सुमन्त्र नृप बचन सुनाये । करिबिनती रथ रामचढ़ाये ॥
चढ़िरथ सीय सहित दोउभाई । चले हर्षि अवधहिशिरनाई ॥
चलत रामलखिअवध अनाथा । बिकल लोगलागे सबसाथा ॥
कृपासिंधुबहुबिधिसमुझावहिं । फिरहिंप्रेमबशपुनिफिरिआवहिं ॥
लागत अवध भयानक भारी । मानहुं कालरातिअँधियारी ॥
घोर जंतु सब पुर नर नारी । डरपहिं एकहि एक निहारी ॥
घर मशान परिजन जनु भूता । सुत हितमीत मनहुंयमदूता ॥
बागन बिटपबेलि कुम्हिलाहीं । सरितसरोवर देखि न जाहीं ॥
दो० हयगय कोटिक केलिमृग पुरपशु चातकमोर ।
पिक रथांग शुक शारिका सारस हंस चकोर ॥
राम बियोग बिकल सब ठाढ़े । जहँतहँ मनहुंचित्रलिखिकाढ़े ॥
नगर सकल बनगहवरभारो । खगमृगबिकलसकलनरनारी ॥
बिधि केकइ किरातिनी कीनी । जेहिदवदुसह दशहुदिशिदीनी ॥

सहि न सके रघुबर बिरहागी। चलेलोग सब व्याकुलभागी॥
सबहि बिचारकीन्हमन माहीं। रामलषणसियबिनुसुखनाहीं॥
जहां राम तहं सकल समाजू। बिनुरघुबीर अवधकेहि काजू॥
चले साथ अस मंत्र दृढ़ाई। सुरदुर्लभ सुख सदनबिहाई॥
राम चरण पंकजप्रिय जिनहीं। विषय भोगबशकरैकितिनहीं॥
दो० बालक वृद्ध बिहाइ गृह लगे लोगसबसाथ।
तमसातीर निवासकिय प्रथम दिवसरघुनाथ॥
रघुपति प्रजा प्रेम वश देखी। सदय हृदय दुखभयउविशेषी॥
करुणामय रघुनाथ गुसांई। वेगि पाइ यह पीर पराई॥
कहि सप्रेम मृदुबचन सुहाये। बहुबिधि राम लोग समुझाये॥
किये धर्म उपदेश घनेरे। लोग प्रेमवश फिरहिं न फेरे॥
शील सनेह छांड़िनहिं जाई। असमंजस वश भे रघुराई॥
लोग शोक श्रमबश गयेसोई। कछुक देव माया मति मोई॥
जबहि याम युग यामिनिबीती। रामसचिव सनकहेउसप्रीती॥
खोज मारि रथ हांकहु ताता। आन उपायबनहि नहिंबाता॥
दो० राम लषण सिय यानचढ़ि शंभुचरण शिरनाइ।
सचिव चलायउ तुरतरथ इतउत खोजदुराइ॥
जागे सकल लोग भये भोरू। गये रघुबीर भयोअति शोरू॥
रथ कर खोजकतहुंनहिंपावहिं। रामरामकहि चहुंदिशिधावहिं॥
मनहुं बारिनिधि बूड़ जहाजू। भयउबिकलजनुवणिकसमाजू॥
एकहि एक देहिं उपदेशू। तजेउ राम हम जानिकलेशू॥
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना। धृग जीवन रघुबीर बिहीना॥
जोपैप्रिय बियोगबिधि कीन्हा। तौकस मरण न मांगेदीन्हा॥
इहि बिधिकरतप्रलापकलापा। आये अवध भरे परितापा॥
विषम बियोग न जाइबखाना। अवधिआशराखहिंसबप्राना॥
दो० राम दरश हित नेमब्रत लगे करन नरनारि।
मनहुं कोक कोकी कमल दीनबिहीन तमारि॥

सीता सचिव सहित दोउभाई । शृङ्गवेर पुर पहुंचे जाई ॥
उतरे राम देवसरि देखी । कीन्ह दण्डवत हर्ष बिशेषी ॥
लषणसचिवसियकीन्हप्रणामा । सबहिसहितसुखपायउरामा ॥
गंग सकल मुद मंगल मूला । सबसुखकरनिहरणिसबशूला ॥
कहिकहि कोटिक कथाप्रसंगा । राम बिलोकत गंग तरंगा ॥
सचिवहिअनुजहिप्रियहिसुनाई । बिबुध नदीमहिमा अधिकाई ॥
मज्जनकीन्ह पन्थ श्रमगयऊ ।शुचिजलपियतमुदितमनभयऊ ॥
सुमिरतजाहिमिटहिंभवभारू । तेहिश्रमयहलौकिकव्यवहारू ॥
दो० शुद्ध सच्चिदानन्द मय राम भानुकुल केतु ।
चरित करत नर अनुहरत संसृत सागरसेतु ॥
यह सुधि गुह निषादजबपाई । मुदित लियेप्रिय बंधु बुलाई ॥
लै फल मूल भेंट भरि भारा । मिलन चल्योहिय हर्षअपारा ॥
करि दण्डवत भेंट धरि आगे । प्रभुहिबिलोकतअतिअनुरागे ॥
सहज सनेह बिवस रघुराई । पूंछेउ कुशल निकट बैठाई ॥
नाथ कुशल पद पंकज देखे । भयउंभाग्य भाजनजन लेखे ॥
देव धरणि धन धाम तुम्हारा । मैं जन नीच सहितपरिवारा ॥
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ । थापियजनसबलोग सिहाऊ ॥
कहेउ सत्य सब सखा सुजाना । मोहिंदीन्हपितुआयसुआना ॥
दो० बर्षचारि दश बासबन मुनि ब्रत वेष अहार ।
ग्रामबासनहिंउचित सुनिगुहहिभयोदुखभार ॥
राम लषण सियरूप निहारी । कहहिं सप्रेम नगर नरनारी ॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन पठये बन बालक ऐसे ॥
एक कहहिं भूपतिभल कीन्हा । लोचनलाहुहमहिंजिनदीन्हा ॥
तबनिषाद पति उर अनुमाना । तरु शिंशपा मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहिं ठौर बतावा । कहेउ राम सबभांतिसुहावा ॥
पुरजनकरि जुहार गृह आये । रघुबर सन्ध्या करन सिधाये ॥
गुह सवांरि साथरी बनाई । कुशकिशलयमृदु परमसुहाई ॥

शुचिफल मूल मृदुल मधुजानी । दोना भरिभरिराखेसि आनी ॥

दो० सियसुमन्त्र भ्रातासहित कंद मूलफल खाइ ॥
शयन कीन्ह रघुबंशमणि पांयपलोटत भाइ ॥

उठे लषण प्रभु सोवत जानी । कहिसचिवहिंसोवतमृदुबानी ॥
कछुक दूरिसजि बाणशरासन । जागन लगे बैठि बीरासन ॥
गुह बुलाइ पाहरू प्रतीती । ठांव ठांव राखे अति प्रीती ॥
आप लषण पहं बैठेउ जाई । कटिभाथा शर चाप चढ़ाई ॥
सोवत प्रभुहिनिहारि निषादा । भयउ प्रेम बश हृदयबिषादा ॥
तन पुलकितलोचन जलबहई । बचन सप्रेम लषणसनकहई ॥
भूपति भवन सुसहज सुहावा । सुरपति सदन नपटतर आवा ॥
मणिमय रचित चारुचौबारे । जनु रति पतिनिजहाथसवांरे ॥

दो० शुचि सुबिचित्रसुभोगमय सुमन सुगंध सुवास ।
पलंग मंजुमणि दोप जहंसबबिधिसकुलसुपास ॥

बिबिध बसन उपधान तुराई । क्षीर फेनु मृदु बिशद सुहाई ॥
तहं सियरामशयननिशिकरहीं । निजछबिरतिमनोजमदहरहीं ॥
ते सिय राम साथरी सोये । श्रमितबसनबिनुजाहिंनजोये ॥
मातु पिता परिजन पुर बासी । सखा सुशील दासअरुदासी ॥
जुगवहिं जिनहिं प्राणकी नाईं । महि सोवत सो रामगुसाईं ॥
पिताजनक जग बिदितप्रभाऊ । ससुर सुरेश सखा रघुराऊ ॥
रामचन्द्र पति सो बैदेही । महि सोवतबिधिवामनकेही ॥
सिय रघुबीर कि कानन योगू । कर्म प्रधान सत्य कहलोगू ॥

दो० केकयनन्दिनिमन्दमति कठिनकुटिल प्रणकीन्ह ।
जो रघुनन्दन जानकिहि सुखअवसरदुखदीन्ह ॥

भइदिनकर कुलबिटप कुठारी । कुमतिकीन्हअबबिश्वदुखारी ॥
राम सोय महिशयन निहारी । भयउ बिषाद निषादहिभारी ॥
बोले लषण मधुर मृदु बानी । ज्ञान बिराग भक्ति रससानी ॥
कोउन काहु दुखसुखकरदाता । निज कृतकर्मभोगसबभ्राता ॥

योग बियोग भोगभल मन्दा । हितअनहितमध्यमभ्रम फंदा ॥
जन्म मरण जहंलगि जगजालू । सम्पतिबिपतिकर्म अरुकालू ॥
धरणि धाम धनपुर परिवारू । स्वर्गनरकजहंलगिब्योहारू ॥
देखिय सुनिय गुनिय मनमाहीं । मोह मूल परमारथ नाहीं ॥
दो० सपने होहिं भिखारि नृप रंकनाकपतिहोइ ।
जागेलाभ न हानि कछु तिमिप्रपंचजियजोइ ॥
अस बिचारि नहिं कीजियरोषू । बादि काहुनहिं दीजिय दोषू ॥
मोह निशासब सोवनि हारा । देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा ॥
यहि जगयामिनिजागहिंयोगी । परमारथ परपंच बियोगी ॥
जानिय तबहिं जीव जगजागा । जबसबबिषयबिलासबिरागा ॥
होइ बिबेक मोह भ्रम भागा । तब रघुबीर चरण अनुरागा ॥
सखा परम परमारथ एहू । मन क्रम बचन राम पदनेहू ॥
राम ब्रह्म परमारथ रूपा । अबिगतअलखअनादिअनूपा ॥
दो० भक्तिभूमि भूसुर सुरभि सुरहितलागि कृपाल ।
करत चरित धरिमनुजतनुसुनतमिटैंजगजाल ।
सखा समुझिअसपरिहरिमोहू । सिय रघुबीरचरण रतहोहू ॥
कहत राम गुण भाभिनसारा । जागे जग मंगल दातारा ॥
सकल शौचकरि रामअन्हाये । शुचिसुजान बटक्षीर मंगाये ॥
अनुज सहित शिर जटाबनाये । देखि सुमन्त्र नयनजलछाये ॥
हृदय दाह अति बदनमलीना । कह करजोरिबचनअतिदीना ॥
नाथ कहेउ अस कोशलनाथा । लै रथ जाहु राम के साथा ॥
बन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई । आनेहु बेगि फेरि दोउ भाई ॥
लषण रामसिय आनेउ फेरी । संशय सकल सकोचनिबेरी ॥
दो० नृपअस कहेउ गुसाइं जसकहिय करौं वलिसोइ ।
करि बिनती पांयन परेउ दीन बाल जिमि रोइ ॥
तात कृपा करि कीजिय सोई । जाते अवध अनाथ न होई ॥
मंत्रिहि राम उठाय प्रबोधा । तातधर्म्म मगतुम सबशोधा ॥

शिव दधीच हरिचंद नरेशा । सहे धर्म्म हित कोटिकलेशा ॥
रन्ति देव बलि भूप सुजाना । धर्म्म धरेउ सहिसंकट नाना ॥
धर्म्म न दूसर सत्य समाना । आगम निगमपुराणबखाना ॥
मैंसोइ धर्म्मसुलभ करिपावा । तजे सोतिहुंपुर अपयशछावा ॥
सम्भावित कहं अपयश लाहू । मरण कोटि समदारुणदाहू ॥
तुमसन तात बहुत काकहऊं । दिये उतरफिरिपातकलहऊं ॥

दो० पितुपदगहिकहिकोटिबिधि बिनयकरबकरजोरि ।
चिन्ता कवनिहुं बातकी तातकरियजनिमोरि ॥

तुम पुनि पितु समान हितमोरे । बिनती करौं तात करजोरे ॥
सब बिधि सोइकरतव्यतुम्हारे । दुख न पाव नृपशोचहमारे ॥
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू । भयउसपरिजनबिकलनिषादू ॥
पुनि कछुलषणकहेउ कटुबानी । प्रभुबरजेउबड़अनुचितजानी ॥
सकुचि राम निजशपथदिवाई । लषण संदेश कहब जनिजाई ॥
कह सुमन्त्र पुनि भूप संदेशू । सहिनसकहिंसियबिपिनकलेशू ॥
जेहिबिधिअवधआवफिरिसीया। सोइरघुनाथ तुमहिंकरणीया ॥
न तरु निपट अवलंब बिहीना । मैंनजियबजिमिजलबिनुमीना॥

दो० मैके ससुरे सकल सुख जबहिं जहांमनमान ।
तबतहंरहबसुखेनसिय जबलगिबिपतिबिहान ॥

बिनती कीन्ह भूप जेहिभांती । आरति प्रीतिनसो कहिजाती ॥
पितु संदेशसुनि कृपानिधाना । सियहिदीन्हसिखकोटिबिधाना ॥
सासु ससुरगुरुप्रियपरिवारू ।फिरहुतो सबकरमिटै खंभारू ॥
सुनि पति वचन कहतिबैदेही । सुनहुप्राणपति परमसनेही ॥
प्रभु करुणामय परम बिबेकी ।तनुतजिछाहंरहतिकिमिछेकी ॥
प्रभाजाइ कहं भानु बिहाई । कहं चंद्रिका चंद्र तजि जाई ॥
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई । कहतसचिवसन गिरासुहाई ॥
तुमपितु ससुरसरिसहितकारी । उतरु देउंफिरिअनुचितभारी ॥

दो० आरतवश सन्मुखभइ उंबिलग न मानबतात ।

आरज सुत पदकमलबिनु बादि जहांलगनात ॥
पितुहि बिभव बिलास में दीठा । नृपमणिमुकुटमिलतपदपीठा॥
सुख निधानअसपितु गृह मोरे । पति बिहीन मनभावनभोरे ॥
ससुर चक्रवै कोशल राऊ । भुवन चारिदश प्रकटप्रभाऊ ॥
आगे होइ जेहि सुरपति लेई । अर्द्ध सिंहासन आसनदेई ॥
ससुर एताद्दश अवधनिवासू । प्रिय परिवार मातु समसासू ॥
बिनु रघुपति पद पद्मपरागा ।मोहिंकोउसपनेहुसुखदनलागा॥
अगम पन्थ बन भूमि पहारा । करि केहरिसरसरित अपारा ॥
कोल किरात कुरंग बिहंगा । मोहिंसबसुखदप्राणपतिसंगा॥
दो० सासुससुरसन मोरिहुति बिनयकरबपरिपांय ।
मोर शोचजनिकरिय कछु मैं बनसुखीसुभाय ॥
प्राणनाथ प्रियदेवर साथा । बीर धुरीण धरेधनु भाथा ॥
नहिंमगश्रमभ्रम दुखमनमोरे । मोहिंलगिशोचकरियजनिभोरे ॥
सुनिसुमन्त्रसिय शीतलबानी । भयेबिकलजनुफणिमणिहानी ॥
नयननि सूझ सुनै नहिं काना । कहिनसकैकछुअतिअकुलाना ॥
राम प्रबोध कीन्ह बहुभांती । तदपिहोइनहिं शीतल छाती ॥
यतन अनेक साथ हितकीन्हा । उचितउतर रघुनन्दन दीन्हा ॥
मेटिजायनहिं राम रजाई । कठिन कर्म्मगतिकछुनबसाई ॥
राम लषण सियपद शिरनाई । फिरेउबणिकजिमि मूरगवांई ॥
दो० रथ हांके हयरामतन हेरि हेरि हिहनाहिं ।
देखिनिषादबिषादबशशिरधुनिधुनिपछिताहिं ॥
जासु बियोग बिकल पशुऐसे । प्रजामातु पितु जीवहिं कैसे ॥
बरबश राम सुमन्त्र पठाये । सुरसरि तीर आपु चलिआये ॥
मांगीनाव न केवट आना । कहै तुम्हार मरम मैं जाना ॥
चरण कमलरजकहं सबकहई । मानुषकरणि मूरिकछु अहई ॥
छुवत शिलाभइ नारि सुहाई । पाहन ते न काठ कठिनाई ॥
तरणिउ मुनि घरनीहोइजाई । बाट परै मोरिनाव उड़ाई ॥

यह प्रतिपालै सब परिवारू । नहिंजानैं कछु और कवारू ॥
जो प्रभु अवशि पारगा चहहू । तौपद पद्मुम पखारन कहहू ॥
छं० पद पद्मधोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहिंरामराउरि आनिदशरथशपथसबसांचीकहौं ॥
बरुतीरमारहिं लषणपै जबलगिन पांवपखारिहौं ।
तबलगिन तुलसीदासनाथ कृपालुपार उतारिहौं ॥
सो० सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे ।
बिहंसे करुणा ऐन चितै जानकी लषणतन ॥
कृपासिन्धु बोले मुसकाई । सोइकरहु जेहिनाव न जाई ॥
वेगि आनि जल पांव पखारू । होत बिलम्ब उतारहु पारू ॥
जासुनाम सुमिरत यक बारा । उतरहिंनर भवसिन्धुअपारा ॥
सो कृपालु केवटहि निहोरा । जे कियजग तिहुंपगते थोरा ॥
पदनख निरखि देवसरि हरषी । सुनिप्रभुबचनमोहमतिकरषी ॥
केवट राम रजायसु पावा । पानि कठौता भरिले आवा ॥
अति आनंद उमंगि अनुरागा । चरण सरोज पखारन लागा ॥
बर्षि सुमनसुर सकलसिहाहीं । इहिसम पुण्यपुंजकोउ नाहीं ॥
दो० पदपखारि जलपानकरि आपुसहित परिवार ।
पितर पारकरि प्रभुहिपुनि मुदितगयोलैपार ॥
उतरि ठाढ़भये सुरसरि रेता । सीय रामगुहलषण समेता ॥
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा । प्रभुसकुचेकछुयहिनहिंदीन्हा ॥
पियहियकीसिय जाननहारी । मणिमुंदरीमनमुदित उतारी ॥
कहेउ कृपालु लेहु उतराई । केवट चरण गहेउ अकुलाई ॥
नाथ आजु हम काहन पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
अमित काल मैं कीन्ह मजूरी । आजुदीन्हविधि सबभरिपूरी ॥
अब कछुनाथ न चाहिय मोरे । दीन दयालु अनुग्रह तोरे ॥
फिरतिबार जो कछुमोहिंदेवा । सो प्रसादमैं शिरधरि लेवा ॥
दो० बहुत कीन्ह हठ लषणप्रभु नहिंकछुकेवट लेइ ।

त्रिदार्कीन्ह करुणायतन भक्तिबिमल बरदेइ ॥

तब मज्जनकरि रघुकुल नाथा । पूजि पारथी नायउ माथा ॥
सिय सुरसरिहि कहा करजोरी । मातु मनोरथ पुरवहुमोरी ॥
पति देवरसंग कुशल बहोरी । आइ करौं जेहि पूजा तोरी ॥
सुनि सिय विनयप्रेमरससानी । भइ तवबिमल बारिबरबानी ॥
सुनु रघुवीर प्रिया बैदेही । तव प्रभाव जगविदितनकेही ॥
लोकप होहिं बिलोकत तोरे । तोहिंसेवहिंसबसिधिकरजोरे ॥
तुमजोहमहिंबड़िविनय सुनाई । कृपाकीन्ह मोहिं दीन बड़ाई ॥
तदपि देवि मैं देवं अशीशा । सफलहोनहितनिज बागीशा ॥

दो० प्राणनाथ देवर सहित कुशल कोशला आय ।
पूरिहि सबमनकामना सुयश रहहिजगछाय ॥

गंग वचन सुनि मंगल मूला । मुदितसीयसुरसरि अनुकूला ॥
तब प्रभु गुहहिंकहा घर जाहू । सुनत सूख मुखभा उर दाहू ॥
दीन वचन गुहकह कर जोरी । बिनयसुनियरघुकुलमणिमोरी ॥
नाथ साथ रहि पंथ दिखाई । करिदिनचारिचरण सेवकाई ॥
जेहि बन जाइ रहब रघुराई । पर्णकुटी मैं करब सोहाई ॥
तब मोकहं जस देव रजाई । सो करिहौं रघुवीर दुहाई ॥
सहज सनेह राम लखि तासू । संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
पुनिगुहज्ञाति बोलिसब लीन्हें । करि परितोष बिदासबकीन्हे ॥

दो० तब गणपतिशिवसुमिरिप्रभु नाइसुरसरिहिमाथ ।
सखा अनुजसियसहितबन गमनकीन्ह रघुनाथ ॥

तेहिदिनभयउ बिटपतर बासू । लषणसखा सबकीन्ह सुपासू ॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराज दीखप्रभु जाई ॥
सचिव सत्यश्रद्धा प्रिय नारी । माधव सरिसमीत हितकारी ॥
चारि पदारथ भरा भंडारू । पुण्य प्रदेश देश अति चारू ॥
क्षेत्रअगम गढ़ गाढ़ सुहावा । सपनेहु जिन्हप्रतिपक्षनपावा ॥
सेन सकल तीरथ वर बीरा । कलुष अनीकदलन रणधीरा ॥

संगम सिंहासन सुठि सोहा । छत्र अक्षयबट मुनिमनमोहा ॥
चमर यमुन जल गंग तरंगा । देखि होहिं दुखदारिद भंगा ॥
दो० सेवहिं सुकृती साधुशुचि पावहिंसबमनकाम ।
बन्दीवेद पुराणगण कहहिं बिमल गुणग्राम ॥
को कहिसकै प्रयाग प्रभाऊ । कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा । सुखसागर रघुबरसुखपावा ॥
कहिसियअनुजहिसखहिसुनाई । श्री मुख तीरथराज बड़ाई ॥
करि प्रणाम देखत अनुरागा । कहतमहातमअतिअनुरागा ॥
इहिविधि आइ बिलोकेउ वेनी । सुमिरतसकल सुमंगलदेनी ॥
मुदित अन्हाइ कीन्हशिवसेवा । पूजि यथाविधि तीरथदेवा ॥
तब प्रभु भरद्वाज पहं आये । करत दण्डवतमुनि उरलाये ॥
मुनि मनमोह न कछुकहिजाई । ब्रह्मानन्द राशि जनु पाई ॥
दो० दीन्हअशीशमुनीशउर अतिआनंद असजानि ।
लोचनगोचरसुकृतफल मनहुंकियेविधिआनि ॥
कुशलप्रश्नकरि आसन दीन्हा । पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हा ॥
कन्द मूल फल अंकुर नीके । दिये आनिमुनिमनहुंअमीके ॥
सीय लषणजन सहित सुहाये । अतिरुचिराममूलफलखाये ॥
भये बिगतश्रम राम सुखारे । भरद्वाज मृदु वचन उचारे ॥
आजु सुफल तप तीरथ योगू । आजु सुफल जपयोगबिरागू ॥
सुफलसकल शुभसाधनसाजू । रामतुमहिं अवलोकत आजू ॥
लाभअवधिसुखअवधिन दूजी । तुम्हरे दरश आशसब पूजी ॥
अब करि कृपा देहु बरयेहू । निजपद सरसिजसहजसनेहू ॥
दो० कर्म्मवचनमनछांड़िछल जबलगिजननतुम्हार ।
तबलगिसुख सपनेहुनहीं कियेकोटि उपचार ॥
सुनि मुनिवचन राम सकुचाने । भावभक्ति आनन्द अघाने ॥
तब रघुबर मुनि सुयशसुहावा । कोटिभांतिकहिसबहिसुनावा ॥
सोवड़ सो सब गुण गण गेहू । जेहि मुनीश तुम आदर देहू ॥

मुनि रघुवीर परस्पर नवहीं । बचन अगोचरसुख अनुभवहीं ॥
यह सुधिपाइ प्रयागनिवासी । बटुतापस मुनिसिद्ध उदासी ॥
भरद्वाज आश्रम सब आये । देखन दशरथ सुवन सुहाये ॥
राम प्रणाम कीन्ह सबकाहू । मुदित भयेलहिलोचन लाहू ॥
देहिं अशीश परम सुख पाई । फिरे सराहत सुन्दरताई ॥
दो० रामकीन्ह बिश्राम निशि प्रात प्रयागअन्हाइ ।
चलेसहितसियलषणजनमुदितमुनिहिंशिरनाइ ॥
राम सप्रेम कह्यो मुनि पाहीं । नाथकहहु हम किहिमगुजाहीं ॥
सुनिमुनिबिहँसिरामसनकहहीं। सुगमसकलमगुतुमकहँअहहीं ॥
साथलागि मुनिशिष्य बुलाये । सुनिमनमुदित पचासकआये ॥
सबहि राम पद प्रेम अपारा । सबहिकहहिं मगुदीखहमारा ॥
मुनिबटु चारि संग तबदीन्हे । जिन्हबहुजन्मसुकृतबड़कीन्हे ॥
करि प्रणाम मुनि आयसुपाई । प्रमुदित हृदय चले रघुराई ॥
ग्राम निकट जब निसरहिंजाई । देखहिं दरश नारि नर धाई ॥
होहिं सनाथ जन्म फल पाई । फिरहिंदुखित मन संगपठाई ॥
दो० बिदाकीन्हबहुबिनयकरि फिरे पाइ मनकाम ।
उतरि नहायेयमुनजल जोशरीर समश्याम ॥
सुनत तीर बासी नर नारी । धाये निजनिज काजबिसारी ॥
लषण राम सिय सुन्दरताई । देखिकरहिं निजभाग्य बड़ाई ॥
अति लालसासबहिंमनमाहीं । नाम ग्राम पूंछत सकुचाहीं ॥
जे तिन्ह महं बयवृद्ध सयाने । तिन्हकरि युक्ति रामपहिंचाने ॥
सकलकथाकहितिनहिं सुनाई । बनहिं चले पितु आयसुपाई ॥
सुनिसविषादसकलपछिताहीं । रानी राय कीन्ह भल नाहीं ॥
राम लषण सियरूप निहारी । शोच सनेह बिकल नरनारी ॥
तेपितु मातु कहौ सखि कैसे । जिन पठये बन बालक ऐसे ॥
दो० तबरघुबीर अनेक बिधि सखहि सिखावन दीन्ह ।
रामरजायसु शीशधरि गवनभवन तिन्हकीन्ह ॥

पुनिसियराम लषण करजोरी । यमुनहिं कीन्ह प्रणामबहोरी ॥
गवने सीय सहित दोउ भाई । रवितनया कर करत बड़ाई ॥
पथिक अनेकमिलहिं मगुजाता । कहहिंसप्रेमदेखिदोउभ्राता ॥
राम लषण सब अंग तुम्हारे । देखि शोच हिय होत हमारे ॥
मारग चलहु पयादेहि पांये । ज्योतिष झूंठ हमारेहि भाये ॥
अगम पन्थ गिरि काननभारी । तेहिमहं साथनारि सुकुमारी ॥
करिकेहरि बन जाहिं न जोई । हमसंगचलहिंजोआयसुहोई ॥
जाब जहां लगि तहं पहुंचाई । फिरब बहोरितुमहिं शिरनाई ॥
दो० इहिबिधि बूझहिं प्रेमबश पुलकगात जलनैन ।
कृपासिंधुफेरहिं तिनहिं करि बिनती मृदुबैन ॥
जे पुर ग्राम बसहिं मगु माहीं । तिनहिंनागसुरनगरसिहाहीं ॥
केहि सुकृती केहि घरीबसाये । धन्य पुण्यमय परम सुहाये ॥
जहं जहं रामचरण चलिजाहीं । तेहि समान अमरावतिनाहीं॥
पुण्य पुंजमगु निकट निवासी । तिनहिं सराहहिंसुरपुरबासी ॥
जोभरिनयनविलोकहिंरामहिं । सीतालषणसहितघनश्यामहिं॥
जेहिसरसरितराम अवगाहहिं । तिनहिंदेवसरसरितसराहहिं॥
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिंजाई । करहिं कल्पतरु तासुबड़ाई ॥
परसि राम पद पद्म परागा । मानति भूरिभूमि निजभागा ॥
दो० छांहकरहिंबनबिबुधगण वरषहिंसुमनसिहाहिं ।
देखत गिरिबन विहंगमृग रामचले मगुजाहिं ॥
सीता लषण सहित रघुराई । गांवनिकट जबनिसरहिंजाई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी । चलहिंतुरत गृहकाजबिसारी ॥
रामलषण सिय रूप निहारी । पाइनयन फल होहिं सुखारी ॥
सजलनयन अतिपुलकशरीरा । सबभयेमगन देखिदोउबीरा ॥
वरणि न जाय दशातिन्हकेरी । लही रंक जनु सुरमणि ढेरी ॥
एकहिं एक बोलि सिख देहीं । लोचन लाहु लेहु क्षणयेहीं ॥
रामहिं देखि एक अनुरागे । चितवत चले जात संगलागे ॥

एक नयन मगछवि उरआनी। होहिंशिथिलतन मानसबानी ॥
दो० एकदेखि बटछांह भलि डासि मृदुलतृणपात ।
कहहिंगवांइयक्षणकश्रमगवनबअबहिंकिप्रात ॥
एक कलशभरि आनहिं पानी। अंचइयनाथ कहहिं मृदुबानी ॥
सुनिप्रियबचनप्रीतिअतिदेखी। रामकृपालु सुशील बिशेषी ॥
जानी सीय श्रमित मन माहीं। घरिकबिलम्ब कीन्हबटछाहीं ॥
मुदित नारिनर देखहिं शोभा। रूप अनूप देखि मनलोभा ॥
इकटक सब सोहहिं चहुंओरा। रामचन्द्र मुख चन्द्र चकोरा ॥
तरुण तमाल बरण तनसोहा। देखत काम कोटि मन मोहा ॥
दामिनिवरण लषण सुठिनीके। नखशिख सुभग भावते जीके ॥
मुनि पट कटिन कसे तूणीरा। सोहत कर कमलन धनुतीरा ॥
दो० जटा मुकुटशोशनसुभग उर भुजनयनविशाल ।
शरदपर्ब विधुबदनबर लसत स्वेदकण जाल ॥
बरणि न जाइ मनोहर जोरी। शोभाअमित मोरिमतिथोरी ॥
राम लषण सिय सुंदरताई। सबचितवहिंमनबुधिचितलाई ॥
थके नारि नर प्रेम पियासे। मनहुं मृगीमृग देखि दिवासे ॥
सीय समीप ग्राम तिय जाहीं। पूंछत अति सनेह सकुचाहीं ॥
बार बार सब लागहिं पांये। कहहिं बचन मृदुसरलसुहाये ॥
राजकुमारि विनय हमकरहीं। तियसुभाव कछु पूंछत डरहीं ॥
स्वामिनिअबिनय क्षमबहमारी। बिलगनमानब जानि गवांरी ॥
राजकुंवर दोउ सहज सलोने। इनते लहिद्युति मरकतसोने ॥
दो० श्यामल गौर किशोरबर सुन्दर सुखमाऐन ।
शरद शर्वरी नाथ मुख शरद सरोरुह नैन ॥
कोटि मनोज लजावन हारे। सुमुखिकहहुकोअहहिंतुम्हारे ॥
सुनि सनेह मय मंजुल बानी। सकुचि सीयमनमहं मुसुकानी ॥
तिनहिंबिलोकिबिलोकेउधरणी। दुहुंसकोचसकुचतिबरबरणी ॥
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी। बोलीमधुरबचन पिकबयनी ॥

सहज सुभाव सुभग तन गोरे । नाम लषण लघु देवरमोरे ॥
श्याम वरण बिशाल भुजनयना । अतिसुंदर बोलनिमृदुबयना ॥
बहुरि बदन विधु अंचल ढांकी । पियतन चितैदृष्टिकरि बांकी ॥
खंजनमंजुतिरीक्षण नयनी । निजपतिकह्योतिनहिंपियसयनी ॥
भई मुदित सब ग्राम बधूटी । रंकन रतन राशि जनु लूटी ॥
दो० अतिसप्रेम सिय पांयपरि बहुविधि देहिं अशीश ।
सदासुहागिनि रहहुतुम जबलगि महिअहिशीश ॥
पारबती सम पति प्रिय होहू । देवि न हम पर छांड़ब छोहू ॥
पुनिपुनिबिनयकरहिं करजोरी । जो यहिमारगफिरिय बहोरी ॥
दरशन देब जानि निजदासी । लखी सीय सबप्रेमपियासी ॥
मधुरबचन कहिकहि परितोषी । जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी ॥
तबहिं लषण रघुबर रुखजानी । पूंछेउ मगु लोगन मृदुबानी ॥
सुनत नारि नर भये दुखारी । पुलकित अंगबिलोचन वारी ॥
मिटा मोद मन भये मलीने । बिधिनिधिदीन्हलीन्हजनुछीने ॥
समुझिकर्म्मगतिधीरजकीन्हा । शोधिसुगममगुतिन्हकहिदीन्हा ॥
दो० लषण जानकी सहितबन गमन कीन्हरघुनाथ ।
फेरेसब प्रिय बचन कहि लिये लाइ मन साथ ॥
फिरत नारिनर अतिपछिताहीं । दैवहि दोष देहिं मनमाहीं ॥
सहित विषाद परस्पर कहहीं । विधिकरतब सबउलटेअहहीं ॥
निपट निरंकुश निठुर निशंकू । जेहिंशशिकीन्हसरुजसकलंकू ॥
रूख कल्पतरु सागर खारा । तेहिं पठये बन राजकुमारा ॥
जोपै इनहिं दीन्ह बनबासू । कीन्हबादि विधिभोगबिलासू ॥
ये बिचरहिं मगुबिनुपद त्राना । रचे बादि बिधि बाहन नाना ॥
येमहि परहिं डासि कुशपाता । सुभगसेज कत कीन्हबिधाता ॥
तरुतर बासइनहिंबिधिदीन्हा । धवलधाम रचिकतश्रमकीन्हा ॥
दो० जो ये मुनि पटधर जटिल सुन्दर सुठिसुकुमार ॥
बिबिध भांति भूषण बसन बादि किये करतार ॥

जो ये कन्द मूल फल खाहीं । बादि सुधादि अशनजगमाहीं ॥
एक कहहिं यह सहज सुहाये । आपु प्रकटभे विधिनबनाये ॥
जहंलगि वेदकहेउविधिकरणी । श्रवण नयन मनगोचरबरणी ॥
देखहु खोजि भुवन दशचारी । कहं असपुरुषकहांअसिनारी ॥
इनहिं देखि विधिमनअनुरागा । पटुतरयोग बनावन लागा ॥
कीन्ह बहुत श्रमएक न आये । तेहि इरषा बन आनिदुराये ॥
एककहहिं हमबहुतन जानहिं । आपुहिपरमधन्यकरिमानहिं ॥
ते पुनि पुण्यपुंज हम लेखे । जेदेखहिं देखिहिं जिन्ह देखे ॥
दो० इहिविधिकहिकहि बचनप्रिय लेहिंनयनभरिनीर ।
किमिचलिहैं मारगअगम सुठि सुकुमार शरीर ॥
नारि सनेहविकल सब होहीं । चकईसांझ समयजिमिसोहीं ॥
मृदुपदकमल कठिनकरिजानी । गहवरिहृदयकहहिंमृदुबानी ॥
परसत मृदुल चरण अरुणारे ।सकुचतिमहिजिमिहृदयहमारे ॥
जोजगदीश इनहिं बन दीन्हा । कसनसुमनमय मारगकीन्हा ॥
जो मांगे पाइय विधि पाहीं । राखियसखिइन आंखिनमाहीं ॥
जे नर नारि न अवसर आये । ते सिय राम न देख न पाये ॥
सुनि स्वरूप पूछहिं अकुलाई । अबलगि गये कहां लगिभाई ॥
समरथधाइ बिलोकहिं जाई । प्रमुदितफिरहिंनयनफलपाई ॥
दो० अबला बालक वृद्धजन करमींजहिं पछिताहिं ।
होहिं प्रेमवश लोग इमि रामजहांजहं जाहिं ॥
गांव गांव अस होहि अनन्दा । देखि भानुकुल कैरव चन्दा ॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं । तेनृप रानिहि दोषलगावहिं ॥
कहहिं एक अतिभल नरनाहू । दीन्हहमहिंजिन्हलोचनलाहू ॥
कहहिं परस्पर लोग लुगाई । बातैं सरल सनेह सुहाई ॥
ते पितु मातु धन्य जे जाये । धन्य सो नगर जहांते आये ॥
धन्य सो शैल देश बन गाऊं । जहंजहं जाहिं धन्य सोठाऊं ॥
सुख पायो बिरंचि रचितेही । ये जिन्हके सबभांति सनेही ॥

राम लषण सिय कथा सुहाई । रही सकल मगकानन छाई ॥

दो० इहिबिधि रघुकुल कमलरबि मगलोगनसुखदेत ।
जाहिंचले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत ॥

आगे राम लषण पुनि पाछे । तापस वेष बिराजत काछे ॥
उभयमध्य सिय शोभित कैसी । ब्रह्म जीव बिच माया जैसी ॥
बहुरिकहौं छबि जसमनबसई । जनु मधुमदनमध्य रतिलसई ॥
उपमा बहुरिकहौं जिय जोही । जनुबुधबिधुबिचरोहिणिसोही ॥
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता । धरहिंचरणमगचलहिंसभीता ॥
सीय राम पद अंक बराये । लषणचलहिं मगदाहिनबांये ॥
राम लषण सिय प्रीतिसुहाई । बचनअगोचर किमिकहिजाई ॥
खगमृगमगन देखिछबिहोही । लिये चोर चित राम बटोही ॥

दो० जिन्हजिन्ह देखेपथिकप्रिय सीयसहित दोउभाइ ।
भव मग अगम अनन्दते बिनु श्रम रहे सिराइ ॥

अजहुं जासुउर सपनेहुं काऊ । बसहिं रामसिय लषणबटाऊ ॥
राम धाम पथ जाइहि सोई । जो पथ पाव कबहु मुनिकोई ॥
तबरघुबीर श्रमित सियजानी । देखिनिकट बट शीतल पानी ॥
तहं बसि कन्दमूल फलखाई । प्रात अन्हाय चले रघुराई ॥
देखत बन सर शैल सुहाये । वाल्मीकि आश्रम प्रभुआये ॥
राम देखि मुनि वास सुहावन । सुन्दरगिरिकानन जलपावन ॥
सरन सरोज बिटप बन फूले । गुंजत मंजु मधुप सर भूले ॥
खग मृगविपुलकुलाहलकरहीं । रहित बैर प्रमुदित मनचरहीं ॥

दो० शुचि सुंदर आश्रमनिरखि हरषे राजिवनैन ।
सुनिरघुबर आगमन मुनि आगे आये लैन ॥

मुनि कहं रामदण्डवत कीन्हा । आशिरबाद विप्रवर दीन्हा ॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । करि सनमानआश्रमहिंआने ॥
तब मुनि आसन दिये सुहाये । मुनिवरअतिथिप्राणप्रियपाये ॥
कंद मूल फल मधुर मंगाये । सियसौमित्रि राम फलखाये ॥

बालमीकि मन आनंद भारी । मंगल मूरति नयन निहारी ॥
तब कर कमल जोरि रघुराई । बोले बचन श्रवण सुखदाई ॥
तुम त्रिकालदरशी मुनि नाथा । बिश्ववदर जिमि तुम्हरेहाथा ॥
असकहिसब प्रभु कथावखानी । जेहिजेहिभांति दीन्हबनरानी ॥
दो० तात बचन पुनि मातुमत भाइ भरत अस राउ ।
मोकहं दरश तुम्हारप्रभु सबमम पुण्यप्रभाउ ॥
देखि पांय मुनिराय तुम्हारे । भयेसुकृत सब सुफल हमारे ॥
अब जहं राउर आयसु होई । मुनि उद्वेग न पावहिं कोई ॥
मुनि तापस जिनतेदुखलहहीं । ते नरेश बिनु पावक दहहीं ॥
मंगल मूल बिप्र परितोषू । दहै कोटि कुल भूसुर रोषू ॥
असजियजानिकहिय सोठाऊं । सिय सौमित्रिसहिततहंजाऊं ॥
तहंरचि रुचिर पर्णतृणशाला । बासकरौं कछुकाल कृपाला ॥
सहज सरलसुनि रघुवरबानी । साधु साधु बोले मुनिज्ञानी ॥
कसन कहहु अस रघुकुलकेतू । तुमपालक सन्तत श्रुति सेतू ॥
छं० श्रुतिसेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी ।
जोसृजतिजगपालतिहरति रुखपाइकृपानिधानकी ॥
जोसहसशीशअहीश महि धरु लषणसचराचरधनी ।
सुरकाजधरिनरराजतनचलेदलनखलनिशिचरअनी ॥
सो० राम स्वरूप तुम्हार वचन अगोचर बुद्धिबर ।
अविगतिअकथअपार नेतिनेतिनितनिगमकह ॥
जग पेखन तुम देखन हारे । बिधिहरिशम्भु नचावनहारे ॥
तेउ न जानहिं मर्म्म तुम्हारा । और तुमहिं को जाननहारा ॥
सो जानै जेहि देहु जनाई । जानत तुमहिंतुमहिं ह्वैजाई ॥
तुम्हरी कृपातुमहिं रघुनन्दन । जानत भक्तभक्त उर चन्दन ॥
चिदानन्दमय देह तुम्हारी । बिगत बिकारजान अधिकारी ॥
नरतन धरेहु सन्त सुरकाजा । कहहु करहुजस प्राकृतराजा ॥
राम देखिसुनि चरित तुम्हारे । जड़ मोहहिंबुध होहिंसुखारे ॥

तुम जो कहहु करहु सबसांचा । जसकाछिय तसचाहियनाचा॥
दो० पूछेउ मोहिं कि रहौं कहं मैंकहतउ सकुचाउं ।
जहं न होहु तहंदेहु कहि तुमहिंदिखावौं ठाउं ॥
सुनि मुनि बचन प्रेम रससाने । सकुचि राममनमहं मुसकाने॥
वाल्मीकि हंसि कहहिं बहोरी । बाणी मधुर अमिय रसबोरी ॥
सुनहु राम अब कहौं निकेता । बसहु जहांसियलषणसमेता ॥
जिनके श्रवण समुद्र समाना । कथातुम्हारिसुभगसरिनाना ॥
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे । तिनके हिये सदन तव रूरे ॥
लोचन चातक जिन करि राखे । रहहिं दरशजलधरअभिलाषे ॥
निदरहिं सिंधु सरित सरबारी । रूपबिन्दुलहि होहिंसुखारी ॥
तिनके हृदयसदनसुखदायक । बसहुलषणसियसहरघुनायक ॥
दो० यश तुम्हार मानस विमल हंसिनि जीहा जासु ।
मुक्ताहल गुणगण चुगहिं बसहु रामहिय तासु ॥
प्रभुप्रसादशुचिसुभग प्रकाशा । सादर जासु लहैनित नाशा ॥
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं । प्रभुप्रसाद पटभूषण धरहीं ॥
शीशनवहिं सुरगुरु द्विज देखी । प्रीतिसहितकरिबिनयविशेषी ॥
कर नित करहिं रामपद पूजा । राम भरोस हृदय नहिंदूजा ॥
चरण राम तीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिनके मन माहीं ॥
मंत्र राज नित जपहिं तुम्हारा । पूजहिं तुमहिंसहित परिवारा ॥
तर्प्पण होम करहिं बिधिनाना । विप्रजिवांइ देहिं बहु दाना ॥
तुमते अधिक गुरुहिंजियजानी । सकलभाव सेवहिं सनमानी ॥
दो० सबकर मांगहिं एक फल रामचरण रत होउ ।
तिनके मन मन्दिर बसहु सिय रघुनन्दन दोउ ॥
काम क्रोध मद मानन मोहा । लोभ न क्षोभ न रागन द्रोहा ॥
जिनके कपट दम्भ नहिं माया । तिनके हृदय बसहु रघुराया ॥
सबके प्रिय सबके हितकारी । दुखसुख सरिस प्रशंसागारी ॥
कहहिंसत्य प्रियबचनविचारी । जागत सोवत शरण तुम्हारी ॥

तुमहिं छांड़ि गतिदूसरिनाहीं । राम बसहु तिनके उर माहीं ॥
जननी सम जानहिं पर नारी । धन पराय विषते विष भारी ॥
जे हरषहिं पर सम्पति देखी । दुखित होहिंपरविपतिबिशेषी ॥
जिनहिं राम तुम प्राणपियारे । तिनके उर शुभ सदन तुम्हारे ॥
दो० स्वामिसखा पितुमातुगुरु जिनके सबतुमतात ।
तिनके मन मन्दिरबसहु सीयसहित दोउभ्रात ॥
अवगुण तजि सबकेगुणगहहीं । विप्रधेनु हित संकट सहहीं ॥
नीति निपुण जिनकीजगलीका । घर तुम्हार तिनके मननीका ॥
गुणतुम्हारसमुझहिं निज दोसू । जेहि सबभांति तुम्हारभरोसू ॥
राम भक्त प्रिय लागहिं जेही । तेहिउर बसहु सहित वैदेही ॥
जाति पांति धन धर्म्म बड़ाई । प्रिय परिवार सदन समुदाई ॥
सब तजि तुमहिं रहै लवलाई । ताके हृदय बसहु रघुराई ॥
स्वर्ग्ग नरक अपवर्ग्गसमाना । जहं तहं दीख धरे धनुबाना ॥
मन क्रम वचन जोराउरचेरा । राम करहु ताके उर डेरा ॥
दो० जाहि न चाहिय कबहुंकछु तुमसन सहजसनेह ।
बसहु निरन्तर तासु उर सो राउर निज गेह ॥
इहिबिधिमुनिवरठाम दिखाये । बचन सप्रेम राम मन भाये ॥
कहमुनिसुनहुभानुकुलनायक । आश्रम कहौं समयसुखदायक ॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू । तहं तुम्हार सब भांति सुपासू ॥
शैल सुहावन कानन चारू । करि केहरि मृगबिहग विहारू ॥
नदी पुनीत पुराण बखानी । अत्रितीय निज तपबल आनी ॥
सुरसरिधार नाम मन्दाकिनि । जोसब पातक पोतक डाकिनि ॥
अत्रि आदि मुनिवरतहंबसहीं । करहिं योग जप तपतनुकसहीं ॥
चलहुसुफलश्रम सबकरकरहू । राम देहु गौरव गिरिवरहू ॥
दो० चित्रकूट महिमा अमित कही महा मुनि गाय ।
आइ अन्हाये सरितवर सीय सहित दोउभाय ॥
रघुवर कहेउ लषणभल घाटू । करहु कतहुं अब ठाहर ठाटू ॥

लषण दीखतब उतरकरारा । चहुंदिशिफिर्योधनुषजिमिनारा ॥
नदी पनच शर शमदम नाना । सकलकलुषकलिसाउजजाना॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चूक न घात मारु मुठ भेरी ॥
असकहिलषणठाउंदिखरावा । थलबिलोकिरघुपतिसुखपावा ॥
रमेउ राम मन देवन जाना । चले सहितसुरपतिपरधाना ॥
कोल्ह किरात वेष धरि आये । रच्यो पर्णतृण सदन सुहाये ॥
बरणि न जायं मंजु दुइशाला । एकललित लघुएकविशाला ॥

दो० लषणजानकी सहितप्रभु राजत पर्ण निकेत ।
सोहमदन मुनिवेषजनु रति ऋतुराज समेत ॥

अमर नाग किन्नर दिगपाला । चित्रकूट आये तेहि काला ॥
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू । मुदित देवलहि लोचनलाहू ॥
बर्षि सुमन कह देव समाजू । नाथ सनाथ भये हम आजू ॥
करिविनती दुखदुसह सुनाये । हरषित निजनिजगेहसिधाये ॥
चित्रकूट रघुनन्दन छाये । समाचार सुनिसुनि मुनिआये॥
आवत देखि मुदित मुनिवृन्दा । कीन्ह दण्डवत रघुकुलचन्दा ॥
मुनि रघुवरहि लाइ उर लेहीं । सुफल होनहित आशिषदेहीं ॥
सियसौमित्र रामछबिदेखहिं । साधनसकलसुफलकरिलेखहिं॥

दो० यथायोग सनमानि प्रभु बिदाकिये मुनिवृन्द ।
करहिंयोग जपयज्ञतप निजआश्रमनस्वछन्द ॥

यहसुधि कोल्ह किरातन पाई । हरषे जनु नवनिधि घरआई ॥
कन्दमूल फल भरिभरि दोना । चले रंक जनु लूटन सोना ॥
तिन महं जिनदेखे दोउ भ्राता । औरतिनहिं पूछहिंमगुजाता ॥
कहत सुनत रघुबीर निकाई । आय सबन देखे रघुराई ॥
करहिं जोहार भेंट धरि आगे । प्रभुहिविलोकतअतिअनुरागे॥
चित्रलिखे जनु जहं तहं ठाढ़े । पुलक शरीर नयन जलबाढ़े ॥
राम सनेह मगन सब जाने । कहिप्रियवचनसकलसनमाने ॥
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी । बचन विनीतकहहिं करजोरी ॥

दो० अबहम नाथ सनाथ सब भये देखिप्रभुपाय ।
भाग्य हमारे आगमन राउर कोशल राय ॥

धन्य भूमि बन पन्थ पहारा । जहं जहं नाथ पांव तुम धारा ॥
धन्य बिहग मृग काननचारी । सुफलजन्मभयेतुमहिंनिहारी ॥
हम सब धन्य सहितपरिवारा । देखितयन भरिदरशतुम्हारा ॥
कीन्ह बास भल ठांव बिचारी । इहां सकलऋतुरहब सुखारी ॥
हम सब भांति करब सेवकाई । करि केहरिअहि बाघ बराई ॥
बन बेहड़ गिरि कन्दर खोहा । सब हमार प्रभुपगपगजोहा ॥
तहं तहं तुमहिं अहेरखेलाउब । सर निर्झरसब ठांवदिखाउब ॥
हम सेवक परिवार समेता । नाथ न सकुचब आयसु देता ॥

दो० वेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभुकरुणा ऐन ।
बचन किरातनकेसुनत जिमि पितु बालकबैन ॥

रामहिं केवल प्रेम पियारा । जानि लेहु जो जाननिहारा ॥
राम सकल बनचर परितोषे । कहिमृदु बचन प्रेम परिपोषे ॥
बिदा किये शिर नाय सिधाये । प्रभुगुणकहतसुनत घरआये ॥
इहिविधिसीय सहित दोउभाई । बसहिंविपिनसुरमुनिसुखदाई ॥
जबते आइ रहे रघुनायक । तबते भो बन मंगल दायक ॥
फूलहिंफलहिं बिटपबिधिनाना । मंजुललित बरबेलि बिताना ॥
सुर तरु सरिस स्वभावसुहाये । मनहुं बिबुधवनपरिहरिआये ॥
गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी । त्रिविध बयारि बहै सुखदेनी ॥

दो० नीलकण्ठ कलकंठशुक चातक चक्र चकोर ।
भांतिभांतिबोलहिंविहंग श्रवणसुखदचितचोर ॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा । बिगत बैर विहरहिं यकसंगा ॥
फिरत अहेर राम छवि देखी । होहिं मुदित मृगवृन्दबिशेषी ॥
बिबुधबिपिनजहंलगजगमाहीं । देखिराम बनसकल सिहाहीं ॥
सुरसरिसरस्वतिदिनकरकन्या । मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥
सब सरि सिन्धुनदीनद नाना । मन्दाकिनि करकरहिं बखाना ॥

उदय अस्त गिरि अरु कैलासू । मन्दर मेरु सकल सुर बासू ॥
शैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूट यश गावहिं तेते ॥
विन्ध्यमुदितमनसुख न समाई । बिनु श्रम बिपुल बड़ाई पाई ॥
दो० चित्रकूटके विहंगमृग बेलि विटप तृणजाति ।
पुण्यपुंज सब धन्य अस कहहिंदेव दिनराति ॥
नयनवन्त रघुपतिहिं विलोकी । पाइ जन्मफल होहिंबिशोकी॥
परसि चरणरज अचर सुखारी । भये परम पदके अधिकारी ॥
सो वन शैल सुभाय सुहावन । मंगलमय अतिपावन पावन॥
महिमा कहौं कवनविधितासू । सुखसागर जहंकीन्हनिवासू॥
पय पयोधि तजिअवधबिहाई । जहं सिय रामलषणरहे आई॥
कहिनसकहिंसुखभाजसकानन । जोशतसहसहोहिं सहसानन॥
सोमैं वरणि कहौं विधि केहीं । डावर कमठ कि मन्दरलेहीं ॥
सेवहिं लषण कर्म मन बानी । जाइ न शील सनेह बखानी ॥
दो० क्षणक्षण सिय लखिरामपद जानि आपुपरनेह ।
करत लषण सपने न चित बन्धु मातु पितु गेह ॥
राम संग सिय रहहिं सुखारी । पुरपरिजनगृहसुरति बिसारी ॥
क्षणक्षणपियविधुबदननिहारी । प्रमुदित मनहुं चकोर कुमारी ॥
नाह नेह नित बढ़त बिलोकी । हर्षितरहतिदिबसजिमिकोकी॥
सिय मन रामचरणअनुरागा । अवधसहससमवनप्रियलागा॥
पर्णकुटी प्रिय प्रीतम संगा । प्रिय परिवार कुरंग विहंगा ॥
सासुससुरसममुनितियमुनिवर । अशनअमियसमकन्दमूलफर॥
नाथ साथ साथरो सुहाई । मयनशयन शतसमसुखदाई ॥
लोकप होहिं बिलोकत जासू । तेहिकिमिमोहै विषयबिलासू॥
दो० सुमिरतरामहिंतजहिंजनतृणसमविषयबिलासु ।
रामप्रियाजगजननिसिय कछु न आचरज तासु ॥
सीयलषणजेहिविधिसुखलहहीं । सोइ रघुनाथकरैंजोइकहहीं ॥
कहहिं पुरातन कथाकहानी । सुनहिंलषणसियअतिसुखमानी॥

जबजब रामअवध सुधिकरहीं। तबतबबारि विलोचन भरहीं॥
सुमिरि मातुपितु परिजन भाई। भरत सनेह शील सेवकाई॥
कृपासिन्धुप्रभु होहिं दुखारी। धीरज धरहिं कुसमयविचारी॥
लखिसियलषणविकलह्वैजाहीं। जिमिपुरुषहिअनुसरपरिछाहीं॥
प्रियाबन्धुगतिलखिरघुनन्दन। धीर कृपालु भक्तउर चन्दन॥
लगेकहन कछुकथा पुनीता। सुनिसुखलहहिंलषणअरुसीता॥

दो० राम लषण सीता सहित सोहत पर्ण निकेत।
जिमि बासव बस अमरपुर शची जयन्तसमेत॥

जुगवहिंप्रभुसियअनुजहिकैसे। पलक विलोचन गोलकजैसे॥
सेवहिं लषण सीय रघुबीरहि। जिमिअविवेकी पुरुषशरीरहि॥
इहिविधिप्रभुबनबसहिं सुखारी। खगमृगसुरतापसहितकारी॥
कहेउं राम बन गवन सुहावा। सुनहुसुमन्त्रअवधजिमिआवा॥
फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुंचाई। सचिव सहित रथदेखेउ आई॥
मंत्री विकलविलोकि निषादू। कहिनसकहिंजसभयउविषादू॥
रामराम सिय लषण पुकारी। परेउधरणितल ब्याकुलभारी॥
देखिदक्षिणदिशिहयहिहिनाहीं। जिमिबिनुपखबिहगअकुलाहीं॥

दो० नहितृणचरहिं नपियहिंजल मोचतलोचनबारि।
ब्याकुलभयउनिषादगण रघुवरबाजि निहारि॥

धरि धीरज तब कहहिं निषादू। अब सुमन्त परिहरहु विषादू॥
तुम पंडित परमारथ ज्ञाता। धरहु धीर लखि वामविधाता॥
विविधकथा कहिकहिमृदुबानी। रथ बैठारेउ बरबस आनी॥
शोकशिथिल रथसकहिनहांकी। रघुबर विरह पीर उरबांकी॥
तरफराहिं मगु चलहिं न घोरे। बनमृग मनहुं आनिरथजोरे॥
अटकिपरहिंफिरिचितवहिंपीछे। रामवियोग विकल दुखतीछे॥
जो कह राम लषण वैदेही। हिकरिहिकरि हयहेरहिं तेही॥
बाजिविरहगतिकिमिकहिजाती। बिनुमणिफणिविकलजेहिभांती॥

दो० भये निषाद विषाद वश देखत सचिव तुरंग।

बोलि सुसेवक चारि तब दिये सारथीसंग ॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुंचाई । विरहविषाद बरणिनहिंजाई ॥
चले अवधलै रथहि निषादा । होतक्षणहिं क्षणमगनबिषादा ॥
शोच सुमंत बिकल दुखदोना । धिक जीवन रघुबीर बिहीना ॥
रहहि न अन्तहु अधमशरीरू । यश न लह्यो बिछुरतरघुवीरू ॥
भये अयश अघभाजन प्राना । कौन हेतु नहिं करत पयाना ॥
अहह मन्दमति अवसर चूका । अजहुं न हृदयहोत दुइटूका ॥
मींजिहाथ शिर धुनि पछिताई । मनहुं कृपण धनराशि गवांई ॥
बिरद बांधि बर बीर कहाई । चले समर जनु सुभट पराई ॥

दो० बिप्र बिवेकी बेदबिद सम्मत साधु सुजाति ।
जिमिधोखे मदपानकर सचिवशोचतेहिभांति ॥

जिमि कुलीनतियसाधुसयानी । पति देवता कर्म्म मनवानी ॥
रहै कर्म्म बश परिहरि नाहू । सचिवहृदय तिमिदारुणदाहू ॥
लोचन सजल दृष्टि भइ थोरी । सुनैनश्रवण बिकलमतिभोरी ॥
सूखहिं अधर लागि मुहलाटी । जिय न जाइउरअवधकपाटी ॥
बिवरण भयउ न जाइ निहारी । मारेसि मनहुं पितामहतारी ॥
हानिगलानिबिपुलमनब्यापी । यमपुर पन्थशोच जिमिपापी ॥
वचन न आव हृदय पछिताई । अवध काह मैं देखब जाई ॥
रामरहित रथ देखिहि जोई । सकुचिहिमोहिं बिलोकतसोई ॥

दो० धाइपूछिहहिंमोहिंजब बिकल नगरनर नारि ।
उतर देब मैं सबहि तब हृदय वज्र बैठारि ॥

पुंछिहहिं दीन दुखितसबमाता । कहबकाहमैं तिनहिंबिधाता ॥
पुछिहहिंजबहिं लषणमहतारी । कहिहैं। कौन संदेश सुखारी ॥
राम जननि जब आइहि धाई । सुमिरिबच्छजिमिधेनुलवाई ॥
पूंछत उतर देब मैं तेही । गे बन राम लषण बदेही ॥
जेइ पूंछिहि तेहि उत्तर देबा । जाइ अवधअबयहसुख लेबा ॥
पूंछहिं जबहिं राउ दुख दीना । जीवन जासु राम आधीना ॥

देहौं उतर कवन मुहलाई । आयउं कुशलकुवंर पहुंचाई ॥
सुनत लषणसिय राम संदेशू । तृण इव तन परिहरब नरेशू ॥
दो० हृदय न बिदरत पङ्कजिमि बिछुरत प्रीतमनीर ।
जानतहौं मोहिं दीन्हविधि यह यातनाशरीर ॥
इहिविधि करत पन्थपछितावा । तमसा तीर तुरत रथआवा ॥
बिदाकिये करि विनय निषादू । फिरे पांयपरि विकलबिषादू ॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसिगुरुब्राह्मण गाई ॥
बैठि बिटप तर दिवस गवांवा । सांझ समय तेइअवसरआवा ॥
अवध प्रवेश कीन्ह अंधियारे । पैठ भवन रथ राखि दुआरे ॥
जिन्हजिन्हसमाचारसुनिपाये । भूप द्वार रथ देखन आये ॥
रथपहिचानि बिकललखिघोरे । गरहिं गातजिमि आतपवोरे ॥
नगर नारि नर व्याकुल कैसे । निघटत नीर मीनगण जैसे ॥
दो० सचिव आगमनसुनत सब विकलभईं रनिवास ।
भवन भयंकर लाग तेहि मानहुं प्रेत निवास ॥
अति आरत सब पूंछहिं रानी । उतरनआव विकलभइवानी ॥
सुनै न श्रवण नयन नहिं सूझा । कहहुकहांनृपजेहितेहिबूझा ॥
दासिन्हदीख सचिव बिकलाई । कौशल्या गृह गईं लिवाई ॥
जाइ सुमन्त दीख कस राजा । अमियरहितजनुचन्द्रबिराजा ॥
अशन न शयन विभूषण हीना । परेउ भूमितल निपटमलीना ॥
लेइ उसास शोच इहि भांती । सुरपुरते जनु खस्योययाती ॥
लेत शोच भरि क्षण क्षण छाती । जनुजरिपंख परेउसम्पाती ॥
राम राम कह राम सनेही । पुनिकह राम लषण बैदेही ॥
दो० देखिसचिव जयजीवकहि कीन्हेसि दण्डप्रणाम ।
सुनतउठे व्याकुल नृपति कहु सुमंत कहं राम ॥
भूप सुमन्त लीन्ह उर लाई । बूड़त कछुअधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी । पूछत राउनयन भरि बारी ॥
रामकुशल कह सखा सनेही । कहं रघुनाथ लषण वैदेही ॥

आनेहु फेरि किवनहि सिधाये । सुनतसचिवलोचनजलछाये ॥
शोक विकल पुनि पूंछ नरेशू । कहु सिय राम लषण संदेशू ॥
राम रूप गुण शील स्वभाऊ । सुमिरिसुमिरि उरशोचतराऊ ॥
राज्य सुनाइ दीन बन बासू । सुनिमनभयउ न हरषहरासू ॥
सो सुत बिछुरत गये न प्राना । को पापी जग मोहिं समाना ॥
दो० सखा राम सिय लषण जहं तहांमोहिं पहुंचाउ ।
नांहिंत चाहत चलन अब प्राणकहौं सतभाउ ॥
पुनि पुनि पूंछत मंत्रिहि राऊ । प्रीतम सुवन संदेश सुनाऊ ॥
सुनहु सखा सोइ करियउपाऊ । रामलषणसिय वेगिदिखाऊ ॥
सचिव धीरधरि कहिमृदुबानी । महाराज तुम पण्डित ज्ञानी ॥
बीर सुधीर धुरन्धर देवा । साधु समाज सदा तुम सेवा ॥
जन्ममरण सब दुखसुखभोगा । हानिलाभप्रियमिलनबियोगा ॥
का[illegible] वश होहिं गुसाईं । बरवश राति दिवसकी नाईं ॥
सुखहर्षहिं जड़दुख बिलखाहीं । दोउसमधीर धरहिंमनमाहीं ॥
[illegible] कारी ॥
[illegible] वाई ॥
[illegible] नावा ॥
[illegible] ुराई ॥
[illegible] पाई ॥
[illegible] धोरा ॥
[illegible] हेऊ ॥
[illegible] ामोरी ॥
[illegible] तुम्हारे ॥
[illegible] हैं ।
[illegible] हैं ॥

श्री
श्री
1 सिद्ध श्री प० पू० दादाजी गोपालजी को
इच्छाप्रसाद चिम्मनलाल की राम राम बंचना
हम यहां पर राजी खुसी है आपका
राजी खुसी श्री भगवान से मनाते
चाहते है हाल यह है कि [illegible]
[illegible]
है सो यह बात है कि वो तो [illegible]
करता है मैं २-२ दिन में भेज दूंगा
[illegible] कर पाऊंगा [illegible]
मा से कह देवे कि [illegible] फिकर
न करे

देहौं उतर कवन मुहलाई । आयउं कुशलकुवंर पहुंचाई ॥
सुनत लषणसिय राम संदेशू । तृण इव तन परिहरव नरेशू ॥
दो० हृदय न बिदरत पङ्कजिमि बिछुरत प्रीतमनीर ।
जानतहौं मोहिं दीन्हबिधि यह यातनाशरीर ॥
इहिविधि करत पन्थपछितावा । तमसा तीर तुरत रथआवा ॥
विदाकिये करि विनय निषादू । फिरे पांयपरि विकलबिषादू ॥
पैठत [illegible] ॥
बैठि [illegible] ॥
अवध [illegible] ॥
जिन्ह [illegible] ॥
रथप [illegible] ॥
नगर [illegible] ॥
दो [illegible]

अति [illegible] ॥
सुने [illegible] ॥
दासि [illegible] ॥
जाइ [illegible] ॥
अशन [illegible] ॥
लेइ [illegible] ॥
लेत [illegible] ॥
राम [illegible] ॥
दो० [illegible]

पंडित नत्थीलाल व गोपाल सिंह
मिस्टर रामरतन मोहल्ला गोपाल [illegible] मोहल्ला
[illegible]

सुनतउठे व्याकुल नृपति कहु सुमंत कहं राम ॥
भूप सुमन्त लीन्ह उर लाई । बूड़त कछुअधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी । पूछत राउनयन भरि बारी ॥
रामकुशल कह सखा सनेही । कहं रघुनाथ लषण वैदेही ॥

आनेहु फेरि किवनहि सिधाये । सुनतसचिवलोचनजलछाये ॥
शोक विकल पुनि पूंछ नरेशू । कहु सिय राम लषण संदेशू ॥
राम रूप गुण शील स्वभाऊ । सुमिरिसुमिरि उरशोचतराऊ ॥
राज्य सुनाइ दीन बन बासू । सुनिमनभयउ न हरषहरासू ॥
सो सुत बिछुरत गये न प्राना । को पापी जग मोहिं समाना ॥

दो० सखा राम सिय लषण जहं तहांमोहिं पहुंचाउ ।
नांहित चाहत चलन अब प्राणकहैं। सतभाउ ॥

पुनि पुनि पूंछत मंत्रिहि राऊ । प्रीतम सुवन संदेश सुनाऊ ॥
सुनहु सखा सोइ करियउपाऊ । रामलषणसिय वेगिदिखाऊ ॥
सचिव धीरधरि कहिमृदुबानी । महाराज तुम पण्डित ज्ञानी ॥
बीर सुधीर धुरन्धर देवा । साधु समाज सदा तुम सेवा ॥
जन्ममरण सब दुखसुखभोगा । हानिलाभप्रियमिलनवियोगा ॥
काल कर्म्म वश होहिं गुसाईं । बरवश राति दिवसकी नाईं ॥
सुखहर्षहिं जड़दुख विलखाहीं । दोउसमधीर धरहिंमनमाहीं ॥
धीरज धरहु विवेक बिचारी । छांड़ियशोच सकलहितकारी ॥

दो० प्रथम बास तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर ।
न्हाय रहेजल पानकरि सिय समेत दोउबीर ॥

केवट कीन्ह वहुत सेवकाई । सो यामिनि शृङ्गवेर गंवाईं ॥
होत प्रात वट क्षीर मंगावा । जटामुकुट निज शीश बनावा ॥
राम सखा तब नाव मंगाई । प्रिया चढ़ाइ चले रघुराई ॥
लषण धरे धनु बाण बनाई । आपु चढे प्रभु आयसु पाई ॥
विकलविलोकि मोहिं रघुबीरा । बोले मधुर बचन धरिधीरा ॥
तात प्रणाम तात सन कहेऊ । बार बार पद पंकज गहेऊ ॥
करब पांय परि विनय बहोरी । तात करिय जनि चिंतामोरी ॥
वन मग मंगल कुशल हमारे । कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे ॥

छं० तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहैं ।
प्रतिपालिआयसु कुशलदेखनपायपुनिफिरिआइहैं ॥

जननीसकलपरितोषकरिपरिपांयकरिविनतीघनी ।
तुलसीकरेहुसोइयत्नजेहिविधिकुशलरहकोशलधनी ॥
सो० गुरुसन कहब संदेश बार बार पद पद्म गहि ।
करब सोईउपदेश जेहि न शोचमोहिंअवधपति ॥
पुरजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनायहु विनती मोरी ॥
सोइ सबभांति मोर हितकारी । जाते रह नरनाह सुखारी ॥
कहब संदेश भरत के आये । नीति न तजब राजपदपाये ॥
पालहु प्रजहि कर्म मन बानी । सेयहु मातु सकलसमजानी ॥
और निबाहब भायप भाई । करिपितुमातु सुजनसेवकाई ॥
तात भांति तेहि राखब राऊ । शोचमोर जेहि करहिंनकाऊ ॥
लषणकहेउ कछुवचन कठोरा । बरजिरामपुनि मोहिंनिहोरा ॥
बार बार निज शपथ दिवाई । कहब न तातलषणलरिकाई ॥
दो० कहिप्रणाम कछुकहनलिय सियभइशिथिलसनेह ।
थकित वचन लोचन सजल पुलकपल्लवित देह ॥
तेहि अवसर रघुवर रुखपाई । केवट पारहि नाव चलाई ॥
रघुकुल तिलक चले इहि भांती । देखेउं ठाढ़कुलिशधरिछाती ॥
मैं आपन किमि कहब कलेशू । जियत फिरेउं लैराम संदेशू ॥
असकहिसचिववचनरहिगयऊ । हानि गलानिशोचबशभयऊ ॥
सुनत सुमंत्र वचन नर नाहू । परेउ धरणिउरदारुणदाहू ॥
तलफत बिषम मोहमनमापा । मांजा मनहुं मीनकहंब्यापा ॥
करि बिलाप सब रोवहिं रानी ।महाबिपतिकिमिजाइबखानी ॥
सुनि विलाप दुखहू दुखलागा । धीरज हू कर धीरज भागा ॥
दो० भयउ कोलाहल अवध अति सुनि नृपराउर शोर ।
विपुल विहंगवन परेउनिशि मानहुंकुलिश कठोर ॥
प्राण कंठगत भयउभुआलू । मणिविहीनजिमिब्याकुलब्यालू ॥
इंद्रिय सकल विकलभइ भारी । जनु सरसरसिजबनबिनुबारी ॥
कौशल्यानृप दीख मलीना । रविकुल रविअथयै जनुदी

उर धरि धीर राम महतारी । बोली बचनसमय अनुहारी ॥
नाथसमुझि मनकरिय विचारू । राम बियोग पयोधिअपारू ॥
कर्ण धार तुम अवधि जहाजू । चढ़ेउसकलपियबनिकसमाजू ॥
धीरज धरिय तो पाइय पारू । नाहिंत बूड़हि सबपरिवारू ॥
जोजिय धरियबिनय पियमोरी । रामलषणसियमिलबबहोरी ॥

दो० प्रिया वचनमृदुसुनतनृप चितयउआंखिउघारि ।
तलफत मीन मलीन जनु सींचत शीतल वारि ॥

धरि धीरज उठि बैठु भुआलू । कहु सुमन्त्रकहंराम कृपालू ॥
कहां लषण कहं राम सनेही । कहं प्रिय पुत्र बधू बैदेही ॥
बिलपत राउ बिकल बहुभांती । भइयुगसरिससिरातिनराती ॥
तापस अन्ध शाप सुधि आई । कौशल्यहि सबकथा सुनाई ॥
भयउ बिकलबरणत इतिहासा । रामरहितधिकजीवनश्वासा ॥
सो तनु राखि करब मैं काहा । जेइनप्रेम प्रण मोर निबाहा ॥
हा रघुनन्दन प्राण पिरीते । तुमबिनजियतबहुतदिनबीते ॥
हा जानकी लषण हा रघुबर । हापितुहितचितचातकजलधर ॥

दो० राम राम कहि राम कहि राम राम कहिराम ।
तनुपरि हरि रघुबरबिरह राउ गये सुरधाम ॥

जियनमरण फलदशरथ पावा । अण्डअनेक अमल यशछावा ॥
जियत राम बिधुबदन निहारी । रामबिरहमरि मरणसवांरी ॥
शोक बिकल सब रोवहिं रानी । रूपशील बल तेज बखानी ॥
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमितल बारहिंबारा ॥
बिलपहिंबिकल दासअरुदासी । घरघररुदन करहिं पुरबासी ॥
अथयउ आजु भानुकुल भानू । धर्म्म अवधि गुणरूपनिधानू ॥
गारी सकल केकइहि देहीं । नयनबिहीन कीन्ह जगजेहीं ॥
इहिविधि बिलपत रैनिबितानी । आये सकल महामुनिज्ञानी ॥

दो० तब वशिष्ठ मुनिसमय सम कहिअनेकइतिहास ।
शोक निवारेउसकलकर निज बिज्ञान प्रकाश ॥

तेल नाव भरि नृप तनु राखा । दूत बुलाइ बहुरि अस भाषा ॥
धावहु वेगि भरत पहं जाहू । नृपसुधि कतहुं कहहु जनि काहू ॥
इतनै कहेउ भरत सन जाई । गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई ॥
सुनि मुनि आयसु धावन धाये । चले वेगि वर बाजि लजाये ॥
अनरथ अवध अरंभेउ जबते । कुशकुन होहिं भरत कहं तबते ॥
देखहिं रात भयानक सपना । जागि करहिं बहु कोटि कलपना ॥
बिप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना । शिव अभिषेक करहिं बिधि नाना ॥
मांगहिं हृदय महेश मनाई । कुशल मातु पितु परिजन भाई ॥

दो० इहि विधि शोचत भरत मन धावन पहुंचे जाइ ।
गुरु अनुशासन श्रवण सुनि चले गणेश मनाइ ॥

चले समीर वेग हय हांके लांघत सरित शैल बन बांके ॥
हृदय शोच बड़ कछु न सोहाई । अस जानहिं जिय जाउं उड़ाई ॥
एक निमेष बरष सम जाई । इहि बिधि भरत नगर नियराई ॥
अशकुन होहिं नगर पैठारा । रटहिं कुभांति कुखेत करारा ॥
खर शृगाल बोलहिं प्रतिकूला । सुनि सुनि होहिं भरत उर शूला ॥
श्रीहत सर सरिता बन बागा । नगर विशेष भयावन लागा ॥
खग मृग हय गय जाहिं न जोये । राम बियोग कुयोग बिगोये ॥
नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुं सबनि सब सम्पति हारी ॥

दो० पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गंवहिं जोहारहिं जाहिं ।
भरत कुशल पूंछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं ॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी । जनु पुर दश दिशि लागि दवारी ॥
आवत सुत सुनि कैकयनन्दनि । हरषी रबिकुल जलरुह चंदनि ॥
सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारहि भेंटि भवन लै आई ॥
भरत दुखित परिवार निहारी । मानहुं तुहिन बनज बन मारी ॥
कैकेयी हर्षित इहि भांती । मनहुं मुदित दव लाइ किराती ॥
सुतहि सशोच देखि मन मारे । पूंछति नैहर कुशल हमारे ॥
सकल कुशल कह भरत सुनाई । पूंछी निज कुल कुशल भलाई ॥

कहु कहं तात कहां सबमाता । कहं सियरामलषणप्रियभ्राता ॥

दो० सुनि सुतबचन सनेहमय कपट नीर भरिनैन ।
भरत श्रवणमन शूलसम पापिनि बोली बैन ॥

तात बात मैं सकल सवांरी । भइ मंथरा सहाय बिचारी ॥
कछुककाजविधिबीचबिगारेउ । भूपति सुरपति पुर पगुधारेउ ॥
सुनतभरतभये विवशबिषादा । जनुसहमेउ करि केहरिनादा ॥
तात तात हा तात पुकारी । परेउ भूमितल व्याकुल भारी ॥
चलत न देखन पायउं तोहीं । तात न रामहिं सौंपेउ मोहीं ॥
बहुरि धीर धरि उठे संभारी । कहु पितु मरण हेतु महतारी ॥
सुनि सुतबचन कहति कैकेई । मर्म्म पाछि जनु माहुर देई ॥
आदिहिते सबआपनि करणी । कुटिलकठोरमुदितमनबरणी ॥

दो० भरतहिबिसरेउ पितुमरण सुनतराम बनगौन ।
हेतुअपन पुनि जानजिय थकितरहेधरिमौन ॥

विकलविलोकिसुतहिसमुझावति । मनहुंजरेपरलोनलगावति ॥
तात राउ नहिं शोचन योगू । बड़ेइ सुकृत यशकीन्हेउ भोगू ॥
जीवत सकल जन्मफल पाये । अन्त अमरपतिसदनसिधाये ॥
अस अनुमानि शोच परिहरहू । सहित समाज राज्यपुरकरहू ॥
सुनिसुठिसहमेउ राजकुमारा । पाकेक्षत जनु लाग अंगारा ॥
धीरजधरि भरि लेहिंउसासा । पापिनिसबहिभांतिकुलनाशा ॥
जोपै कुरुचि रही असि तोहीं । जनमत काहेन मारेसि मोहीं ॥
पेड़ काटि तैं पल्लव सींचा । मीनजियनहित बारिउलीचा ॥

दो० हंस बंश दशरथ जनक राम लषणसे भाइ ।
जननी तू जननीभई विधिसे कहा बसाइ ॥

जबते कुमति कुमतमन ठयऊ । खंड खंड होइ हृदय न गयऊ ॥
बर मांगत मनभइ नहिं पीरा । जरिन जीह मुंहपरेउ न कीरा ॥
भूपप्रतीति तोरिकिमिकीन्हीं । मरणकालबिधिमतिहरिलीन्हीं ॥
विधिहुननारि हृदयगतिजानी । सकलकपटअघअवगुणखानी ॥

सरल सुशील धर्म्मरत राऊ । सो किमिजानहिं तीयस्वभाऊ ॥
असको जीवजन्तु जग माहीं । जेहि रघुनाथ प्राणप्रियनाहीं ॥
भे अति अहित रामतेउतोहीं । को तू अहसि सत्यकहु मोहीं ॥
जोहसिसोहसिमुंहमसिलाई । आंखि ओट उठि बैठहु जाई ॥
दो० रामबिरोधी हृदयते प्रकट कीन्ह विधि मोहिं ।
मोसमान को पातकी बादिकहौं कछु तोहिं ॥
सुनि शत्रुघ्न मातु कुटिलाई । जरहिं गातरिस कछु न बसाई ॥
तेहि अवसर कुबरी तहं आई । बसनविभूषण विविध बनाई ॥
लखिरिसभरेउलषणलघुभाई । बरत अनलघृत आहुति पाई ॥
हुमुकि लात तकिकूबर मारा । परिमुंहभरिमहि करतपुकारा ॥
कूबर टूटेउ फूट कपारू । दलितदशन मुखरुधिर प्रचारू ॥
आहि दइय मैं काह नशावा । करतनीक फल अनइस पावा ॥
पुनिरिपुहनलखिनखशिखखोटी । लगे घसीटन धरिधरिझोंटी ॥
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई । कौशल्या पहं गे दोउ भाई ॥
दो० मलिनवसनविवरणविकल कृशशरीरदुखभार ।
कनक कमल वरबेलिबन मानहुंहनी तुषार ॥
भरतहिं देखि मातुउठि धाई । मुर्छित अवनि परी झंवआई ॥
देखत भरत बिकलभये भारी । परे चरण तनदशा बिसारी ॥
मातु तात कहं देहि दिखाई । कहं सियरामलषण दोउभाई ॥
केकयिकतजनमी जग मांझा । जो जनमी तौ भइकिन बांझा ॥
कुलकलंकजेहिजनमेउ मोही । अपयश भाजनप्रियजन द्रोही ॥
कोत्रिभुवनमोहिंसरिसअभागी । गतिअसितोरिमातुजेहिलागी ॥
पितु सुरपुर बन रघुकुल केतू । मैं केवल सब अनरथ हेतू ॥
धिकमोहिंभयउबेणुबन आगी । दुसहदाह दुख दूषण भागी ॥
दो० मातुभरतके बचनमृदु सुनि पुनिउठी संभारि ।
लिये उठाय लगायउर लोचन मोचति बारि ॥
सरल सुभाव माय उर लाये । अतिहितमनहुंरामफिरिआये ॥

सरल सुभाव

भेंटेउ बहुरि लषण लघु भाई । शोक सनेह न हृदयसमाई ॥
देखि स्वभाव कहत सबकोई । राममातु अस काहे न होई ॥
माता भरत गोद बैठारे । आंसु पोंछि मृदु बचनउचारे ॥
अजहुं बच्छबलि धीरज धरहू । कुसमयसमुझि शोकपरिहरहू ॥
जनि मानहुंजियहानि गलानी । कालकर्म्मगतिअघटितजानी ॥
काहुहि दोष देहु जनि ताता । भामोहिंसबबिधिबामबिधाता ॥
जो एसेहुबिधि मोहिं जियावा । अजहुं कोजानै कातेहिभावा ॥

दो० पितु आयसु भूषण बसन तात तजेरघुवीर ।
बिस्मय हर्ष न हृदय कछु पहिरे बल्कल चीर ॥

मुख प्रसन्न मन राग न रोषू । सबकरसबविधिकरिपरितोषू ॥
चलेबिपिनसुनिसियसंगलागी । रही न राम चरण अनुरागी ॥
सुनतहि लषणचले लगिसाथा । रहेन यतन किये रघुनाथा ॥
तब रघुपति सबही शिरनाई । चलेसंग सिय अरु लघुभाई ॥
रामलषणसिय बनहिं सिधाये । गई न संग न प्राण पठाये ॥
यह सब भा इन आंखिन आगे । तऊ न तजातनुजीव अभागे ॥
मोहिं न लाज निजनेहनिहारी । रामसरिस सुत मैं महतारी ॥
जिये मरे भल भूपति जाना । मोरहृदय शतकुलिशसमाना ॥

दो० कौशल्याके वचन सुनि भरतसहित रनिवास ।
व्याकुलबिलपतराजगृह मानहुं शोकनिवास ॥

बिलपहिं विकलभरतदोउभाई । कौशल्यालिय हृदय लगाई ॥
भांति अनेक भरत समुझाये । कहिविवेक वरवचन सुनाये ॥
भरतहु मातु सकल समुझाई । कहिपुराण श्रुति कथासुहाई ॥
छलविहीनशुचि सरलसुबानी । बोले भरत जोरि युगपानी ॥
जे अघ मातु पिता गुरु मारे । गाइ गोठ महि सुर पुर जारे ॥
जे अघ तियबालक बधकीन्हे । मीत महीपति माहुर दीन्हे ॥
जे पातक उतपातक अहहीं । कर्मवचन मनभव कविकहहीं ॥
तेपातक मोहिं होउ विधाता । जो यह होइ मोरमत माता ॥

दो० जे परिहरिहरि हर चरण भजहिंभूतगणघोर ।
तिन्हकी गतिमोहिंदेउविधिजोजननी मतमोर ॥

बेचहिं वेद धर्म्म दुहि लेहीं । पिशुनपराव पाप कहिदेहीं ॥
कपटीकुटिल कलह प्रियक्रोधी । वेद विदूषक विश्व विरोधी ॥
लोभी लम्पट लोल लवारा । जे ताकहिं पर धन परदारा ॥
पावौं मैं तिनकर गति घोरा । जो जननी यह सम्मतमोरा ॥
जे नहिं साधु संग अनुरागे । पर मारथ पथ बिमुखअभागे॥
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई । जिनहिनहरिहरसुयशसुहाई ॥
तजि श्रुति पन्थ बामपथचलहीं । वंचक बिरचि वेपजगछलहीं ॥
तिन्हकी गति शंकर मोहिंदेऊ । जननी जो यह जानैं भेऊ ॥

छं० मन वचन कर्म्म कृपायतन कर दास मैं सुनु मातुरी ।
उर बसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी ॥
असकहतलोचन बहतजलतन पुलक नखलेखतमही ।
हियलायलिये बहोरि जननी जानि प्रभुपद रतसही ॥

दो० मातु भरतके वचन सुनि सांचे सरल सुभाय ।
कहत रामप्रिय ताततुम सदा वचन मनकाय ॥

राम प्राण ते प्राण तुम्हारे । तुम रघुपतिहि प्राणते प्यारे ॥
विधुविष चुवै श्रवै हिम आगी । होइ बारिचर बारि बिरागी ॥
भये ज्ञान बरु मिटै न मोहू । तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू ॥
मततुम्हार अस जो जगकहहीं । सोसपनेहुं सुखसुगतिनलहहीं॥
असकहि मातु भरत हियलाये । थनपयश्रवहिं नयनजलछाये ॥
करतविलाप विपुल इहिभांती । बैठे बीति गई सब राती ॥
बामदेव वशिष्ठ मुनि आये । सचिवमहाजन सकलबुलाये ॥
सुनि बहुभांति भरत उपदेशे । कहि परमारथ वचन सुदेशे ॥

दो० तातहृदय धीरजधरहु करहु जो अवसर आजु ।
उठे भरत गुरुवचनसुनि करनकहेउ सबकाजु ॥

नृप तन वेद विहित अन्हवावा । परमविचित्र विमान बनावा ॥

गहिपद भरत मातु सब राखी। रहीं राम दरशन अभिलाषी॥
चन्दन अगर भार बहु आये। अमित अनेक सुगंध सुहाये॥
सरयू तीर रचि चिता बनाई। जनु सुरपुर सोपान सुहाई॥
या बिधि दाहक्रिया सबकीन्ही।बिधिवतन्हायतिलांजलिदीन्ही॥
शोधि सुस्मृति सब वेद पुराना। कीन्हभरत दशगात्र बिधाना॥
जहं जसमुनिवर आयसुदीन्ही। तहंतससहसभांतिसबकीन्ही॥
भये बिशुद्ध दिये सब दाना। धेनु बाजि गज वाहन नाना॥
दो० सिंहासन भूषण वसन अन्न धरणिधन धाम।
दिये भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरण काम॥
पितुहित भरतकीन्ह जसकरणी। सो मुखलाखजाइनहिंवरणी॥
सुदिन शोधि मुनिवर तहंआये। सकलमहाजन सचिवबुलाये॥
बैठे राज सभा सब जाई। पठये बोलि भरत दोउभाई॥
भरत बशिष्ठ निकट बैठारे। नीति धर्म मय वचन उचारे॥
प्रथमकथा सब मुनिवर बरणी। केकयिकठिनकीन्हजसकरणी॥
भूप धर्म व्रत सत्य सराहा। जेहितनु परिहरिप्रेमनिबाहा॥
कहत राम गुण शील सुभाऊ। सजल नयन पुलके मुनिराऊ॥
वहुरिलषण सियप्रीतिबखानी। शोकसनेह मगन मुनि ज्ञानी॥
दो० सुनहु भरत भावीप्रबल बिलखिकहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरण यशअपयश बिधिहाथ॥
अस विचारि केहि दीजियदोषू। व्यर्थ काहिपर कीजियरोषू॥
तात बिचार करहु मन माहीं। शोच योग दशरथ नृप नाहीं॥
शोचिय बिप्र जो बेद बिहीना। तजिनिजधर्मबिषयलवलीना॥
शोचिय नृपति जुनीति नजाना। जेहिनप्रजाप्रियप्राणसमाना॥
शोचियबैश्य कृपण धनवानू। जो न अतिथि शिवभक्तसुजानू॥
शोचिय शूद्र बिप्र अपमानी। मुखरमानप्रिय ज्ञान गुमानी॥
शोचिय पुनि पति बंचक नारी। कुटिलकलहप्रिय इच्छाचारी॥
शोचिय बटु निज व्रतपरिहरई। जोनहिं गुरुआयसु अनुसरई॥

दो० शोचिय गृहीजो मोहबश करैधर्म पथत्याग ।
शोचिय यती प्रपंच रत बिगत बिवेक बिराग ॥
बैषानस सोइ शोचन योगू । तप बिहाय जेहि भावै भोगू ॥
शोचिय पिशुन अकारणकोधी । जननिजनकगुरुबंधुबिरोधी ॥
सबबिधि शोचिय पर अपकारी । निज तन पोषकनिर्दयभारी ॥
शोचनीय सबही बिधि सोई । जोनछांड़ि छल हरिजनहोई ॥
शोचनीय नहिं कोशल राऊ । भुवनचारिदशप्रकटप्रभाऊ ॥
भयउ न अहै न होनेउ हारा । भूपभरत जसपितातुम्हारा ॥
बिधिहरिहर सुरपति दिशिनाथा । बरणहिंसबदशरथगुणगाथा ॥
तीनिकाल त्रिभुवन जगमाहीं । भूरिभाग दशरथ समनाहीं ॥
दो० कहहु तात केहि भांतिकोउ करहि बड़ाईतासु ।
रामलषण तुम शत्रुहन सरिस सुवन सुत जासु ॥
सब प्रकार भूपति बड़ भागी । बादिबिषादकरियतेहिलागी ॥
यह सुनिसमुझि शोचपरिहरहू । शिरधरि राय रजायसुकरहू ॥
राव राज पद तुमकहं दीन्हा । पिताबचनफुरचाहियकीन्हा ॥
तजेहु राम जेहि बचनहिंलागी । तन परिहरेउ रामबिरहागी ॥
नृपहिबचनप्रियनहिंप्रियप्राणा । करहुतात पितुवचनप्रमाणा ॥
करहु शीश धरि भूप रजाई । है तुमकहं सब भांतिभलाई ॥
परशुराम पितु आज्ञा राखी । मारी मातुलोक सबसाखी ॥
तनय ययातिहि यौवन दयऊ । पितुआज्ञाअघअयशनभयऊ ॥
दो० अनुचित उचित बिचारतजि जेपालहिं पितुबैन ।
तेभाजन सुख सुयशके । बसहिं अमर पति ऐन ॥
अवशि नरेश बचन फुर करहू । पालहु प्रजा शोक परिहरहू ॥
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू । तुमकहंसुकृत सुयशनहिंदोषू ॥
वेद बिहित सम्मत सबहीका । जेहि पितु देइ सो पावैटीका ॥
करहु राज परिहरहु गलानी । मानहु मोर वचन हितजानी ॥
सुनि सुख लहब राम बैदेही । अनुचितकहब न पंडित तेही ॥

कौशल्यादि सकल महतारी । तेउ प्रजा सुखहोहिं सुखारी ॥
मरमतुम्हार रामसब जानहिं । सोसबबिधितुमसनभलमानहिं॥
सौंपेहु राज राम के आये । सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥
दो० कीजिय गुरु आयसु अवशि कहहिंसचिव करजोरि ।
रघुपति आये उचित जस तब तस करब बहोरि ॥
कौशल्या धरि धीरज कहई । पूत पिता गुरु आयसु अहई ॥
सो आदरिय करिय हितमानी । तजियविषादकालगतिजानी ॥
बन रघुपति सुरपुर नर नाहू । तुमइहि भांति तातकदराहू ॥
परिजन प्रजा सचिवकहं अंबा । तुमहीं सुत सबकर अवलंबा ॥
लखिविधि बामकाल कठिनाई । धीरज धरहु मातुबलिजाई ॥
शिर धरि गुरुआयसुअनुसरहू । प्रजापालि पुरजन दुखहरहू ॥
गुरुके बचन सचिव अभिनंदन । सुनतभरतहियजलरुहचंदन ॥
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी । शीलसनेह सरल रससानी ॥
छं० सानी सरलरस मातुबानी सुनि भरत व्याकुल भये ।
लोचन सरोरुह श्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये ॥
सो दशा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधिदेहकी ।
तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेह की ॥
सो० भरत कमल कर जोरि धर्म्म धुरन्धर धीरधरि ।
वचन अमिय जनु बोरि देत उचित उत्तरसबहि ॥
मोहिं उपदेश दीन्ह गुरुनीका । प्रजासचिवसम्मतसबहीका ॥
मातुउचितपुनि आयसु दीन्हा । अवशिशीशधरिचाहियकीन्हा॥
गुरुपितुमातुस्वामिहितबानी । सुनिसुनिमुदितकरियभलजानी ॥
उचितकिअनुचितकियेबिचारू । धर्म्म जाइ शिर पातकभारू ॥
तुम तौ देहु सरल सिख सोई । जो आचरत मोर हित होई ॥
यद्यपि यह समुझत हौं नीके । तदपि होतपरितोष न जीके ॥
अब तुम बिनय मोरि सुनिलेहू । मोहिं अनुहरतसिखावनदेहू ॥
उत्तर देउं क्षमब अपराधू । दुखितदोषगुणगनहिंनसाधू ॥

दो० पितुसुरपुर सिय रामबन करन करहु मोहिं राज ।
इहिते जानहु मोर हित कै आपन बड़ काज ॥

हित हमार सियपति सेवकाई । सो हरि लीन्हमातुकुटिलाई ॥
मैं अनुमानि दीख मन माहीं । आन उपाय मोर हितनाहीं ॥
शोक समाज राजकेहि लेखे । लषणरामसिय पदबिनुदेखे ॥
बादि बसन बिनु भूषण भारू । बादिबिरतिबिनु ब्रह्मबिचारू ॥
सरुज शरीर बादि सब भोगा । बिनु हरिभक्तिबादि जपयोगा ॥
जाइ देह बिनु जीव सुखाई । बादिमोर सब बिनु रघुराई ॥
जाउं राम पहं आयसु देहू । एकहि आंक मोर हित येहू ॥
मोहिं नृपकरिआपनभलचहहू । सो सनेह जड़ता बश कहहू ॥

दो० कैकेयी सुत कुटिल मति राम बिमुख गतलाज ।
तुम चाहत सुख मोहबश मोहिंसे अधमके राज ॥

कहौं सांच सब सुनिपतियाहू । चाहिय धर्म्मशील नरनाहू ॥
मोहिं राज हठि देहहु जबहीं । रसा रसातल जाइहि तबहीं ॥
मोहिं समानको पाप निवासी । जेहि लगिसीयराम बनबासी ॥
राव राम कहं कानन दीन्हा । बिछुरतगमनअमरपुरकीन्हा ॥
मैं शठ सब अनरथ कर हेतू । बैठि बात सब सुनउं सचेतू ॥
बिनु रघुबीर बिलोकिय बासू । रहे प्राण सहि जग उपहासू ॥
राम पुनीत विषय रस रूखे । लोलुप भूप भोग के भूखे ॥
कहं लगिकहउंहृदयकठिनाई । निदरिकुलिशजेहिलहीबड़ाई ॥

दो० कारण ते कारज कठिन होय दोष नहिं मोर ।
कुलिश अस्थिते उपलते लोह कराल कठोर ॥

कैकेयी भव तन अनुरागे । पामर प्राण अघाइ अभागे ॥
जो प्रियविरह प्राणप्रिय लागे । देखब सुनबबहुत अब आगे ॥
लषण रामसियकहं बनदीन्हा । पठइअमरपुरपतिहितकीन्हा ॥
लीन्ह बिधवपन अपयश आपू । दीन्हेउप्रजहिं शोक सन्तापू ॥
मोहिंदीन्ह सुख सुयशसुराजू । कीन्ह केकयी सब कर काजू ॥

इहिते मोर कहा अब नीका । तेहिपर देन कहहु तुमटीका ॥
केकयि जठर जन्मि जगमाहीं । यह मोकहं कछुअनुचितनाहीं॥
मोरिबात सब विधिहि बनाई । प्रजा पांच कतकरहु सहाई ॥
दो० ग्रहग्रहीत पुनि बातबश तेहि पुनि बीछीमार ।
ताहि पियाइय बारुणी कहहु कवन उपचार ॥
केकयि सुवन योग जग जोई । चतुर बिरंचि रचामोहिंसोई ॥
दशरथ तनय राम लघु भाई । दीन्ह मोहिं विधिबादिबड़ाई॥
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका । राय राज सबही कहं नीका ॥
उतरदेउं केहि विधि केहि केही । कहहु सुखेन यथारुचिजेही ॥
मोहिं कुमातु समेत विहाई । कहहु कहिहिकोकीन्हभलाई॥
मोहिं बिनु को सचराचर माहीं । जेहिसियरामप्राणप्रियनाहीं॥
परम हानि सब कहं बड़ लाहू । अदिन मोर नहिंदूषणकाहू ॥
संशय शील प्रेम बश अहहू । सबैउचित सबजोकछुकहहू ॥
दो० राम मातु सुठि सरल चितमोपर प्रेमविशेषि ।
कहहिं सुभाव सनेह बश मोरि दीनतादेखि ॥
गुरु विवेक सागर जग जाना । जिनहिं विश्वकरवदरसमाना॥
मोकहंतिलक साजिसजिसोऊ ।भाविधिबिमुखबिमुखसबकोऊ॥
परिहरि राम सीय जग माहीं । कोउ न कहिहिमोरमतनाहीं ॥
सोमैं सुनब सहब सुख मानी । अन्तहु कीच तहां जहं पानी॥
डर न मोहिंजगकहिहिकिपोचू । परलोकहु कर नाहिंन शोचू ॥
एकै बड़ उर दुसह दवारी । मोहिंलागिभेसियरामदुखारी॥
जीवन लाहु लषण भल पावा । सबतजि रामचरणमनलावा ॥
मोर जन्म रघुबर बन लागी । झूठ काह पछिताउं अभागी ॥
दो० आपनि दारुण दीनता सबहिंकह्यों समुझाय ।
देखे बिनु रघुवीर पद जियकी जरनि न जाय ॥
आन उपाय मोहिं नहिं सूझा । को जियकी रघुबर बिनुबूझा॥
एकहि आंक इहै मन माहीं । प्रातकाल चलिहौंप्रभुपाहीं॥

यद्यपि मैं अनभल अपराधी । भइ मोहिं कारण सकल उपाधी ॥
तदपि शरण सन्मुख मोहिं देखी । क्षमि सब करिहहिं कृपा विशेषी ॥
शील सकुचि सुठि सरल सुभाऊ । कृपा सनेह सदन रघुराऊ ॥
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा । मैं शिशु सेवक यद्यपि बामा ॥
तुम पै पांच मोर भल मानी । आयसु आशिष देहु सुबानी ॥
जेहि सुनि बिनय मोहिं जन जानी । आवहिं बहुरि रामरजधानी ॥

दो० यद्यपि जन्म कुमातु ते मैं शठ सदा सदोष ।
आपन जानि न त्यागिहैं मोहिं रघुबीर भरोस ॥

भरत वचन सबकहं प्रियलागे । राम सनेह सुधा सम पागे ॥
लोग वियोग विषम दुखदागे । मंत्र सबीज सुनत जनु जागे ॥
मातु सचिव गुरु पुर नर नारी । सकल सनेह विकल भइं भारी ॥
भरतहि कहहिं सराहि सराही । राम प्रेम मूरति तनु आही ॥
तात भरत अस काहे न कहहू । प्राण समान रामप्रिय अहहू ॥
जो पामर आपनि जड़ताई । तुमहिं सुगाइ मातु कुटिलाई ॥
सो शठ कोटिक पुरुष समेता । बसहि कल्पशत नरक निकेता ॥
अहि अघ अवगुण मणि नहिं गहई । हरै गरल दुख दारिद दहई ॥

दो० अवशि चलिय बन रामपहं भरत मंत्र भल कीन्ह ।
शोकसिंधु बूड़त सबहिं तुम अवलम्बन दीन्ह ॥

भा सबके मन मोद न थोरा । जनु घनधुनि सुनि चातक मोरा ॥
चलत प्रात लगि निर्णय नीके । भरत प्राणप्रिय भे सबही के ॥
मुनिहिं बन्दि भरतहिं शिर नाई । चले सकल घर बिदा कराई ॥
धन्य भरत जीवन जग माहीं । शील सनेह सराहत जाहीं ॥
कहहिं परस्पर भा बड़ काजू । सकल चलैं कर साजहिं साजू ॥
जेहि राखहिं घर रहु रखवारी । सो जानै जनु गरदन मारी ॥
कोउ कह रहन कहिय नहिं काहू । को न चहै जग जीवन लाहू ॥

दो० जरै सुसम्पति सदन सुख सुहृद मातु पितु भाइ ।
सन्मुख होत जो रामपद करै न सहज सहाइ ॥

घरघर बाहन साजहिं नाना । हर्षहिं हृदय प्रभात पयाना ॥
भरत जाइघर कीन्ह बिचारू । नगरबाजिगजभवन भंडारू ॥
सम्पति सब रघुपति कै आही । जोबिनुयतन चलौंतजिताही ॥
तौ परिणाम न मोरि भलाई । पापि शिरोमणि साइंदुहाई ॥
करहि स्वामिहित सेवक सोई । दूषण कोटि देइ किन कोई ॥
असबिचारि शुचि सेवक बोले । जे सपनेहुंनिज धर्म न डोले ॥
कहि सब मर्म धर्म सब भाषा । जोजेहिलायक सोतहं राखा ॥
करि सब यतन राखि रखवारे । राम मातु पहं भरत सिधारे ॥
दो० आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान ।
कहेउ सजावन पालकी सुखदसुखासन यान ॥
चक चकई इव पुर नर नारी । चलब प्रात उर आनंदभारी ॥
जागतसबनिशिभयउ बिहाना । भरत बुलाये सचिवसुजाना ॥
कहेउ लेहु सब तिलकसमाजू । बनहिं देब मुनि रामहिं राजू ॥
बेगि चलहु सुनि सचिवजुहारे । तुरत तुरग रथ नाग संवारे ॥
अरुन्धती अरु अग्नि समाजू । रथचढ़ि चले प्रथममुनि राजू ॥
बिप्रवृन्द चढ़ि बाहन नाना । चले सकल तप तेजनिधाना ॥
नगरलोग सबसजिसजियाना । चित्रकूट कहं कीन्ह पयाना ॥
शिबिका सुभग न जाइंबखानी । चढ़िचढ़ि चलतभईं सबरानी ॥
दो० सौंपिनगर शुचिसेवकन्ह सादर सबहि चलाइ ।
सुमिरिरामसिय चरणतब चलेभरत दोउभाइ ॥
राम दरश हित सब नर नारी । जनुकरिकरिणिचलेतकिबारी ॥
बनसिय राम समुझिमनमाहीं । सानुज भरत पयादेहि जाहीं ॥
देखि सनेह लोग अनुरागे । उतरि चले हयगज रथत्यागे ॥
जाइसमीप राखि निज डोली । राम मातु मृदु बाणी बोली ॥
तात चढ़हु रथ बलि महतारी । होइहि प्रिय परिवारदुखारी ॥
तुम्हरेचलत चलिहि सबलोगू । सकलशोक कृशनहिंमगयोगू ॥
शिरधरि बचनचरण शिरनाई । रथ चढ़ि चलतभयेदोउभाई ॥

तमसा प्रथम दिवस करिवासू। दूसर गोमति तीर निवासू॥
दो० पयअहारफलअशनइक निशिभोजनसबलोग।
करत रामहित नेमब्रत परिहरि भूषण भोग॥
सई तीर बसि चले बिहाने। शृङ्गबेर पुर सब नियराने॥
समाचार सब सुने निषादा। हृदय बिचार करै सबिषादा॥
कारण कवन भरत बन जाहीं। है कछु कपटभाव मनमाहीं॥
जौं पै जिय न होत कुटिलाई। तौ कस लीन्ह संग कटकाई॥
जानहिं सानुज रामहिं मारी। करौं अकंटक राज सुखारी॥
भरत न राजनीति उर आनी। तब कलंक अब जीवन हानी॥
सकलसुरासुर जुरहिं जुझारा। रामहिं समर न जीतनहारा॥
का आश्चर्य भरतअसकरहीं। नहिंविषबेलिअमियफलफरहीं॥
दो० असविचारिगुह ज्ञातिसन कहेउ सजगसबहोहु।
हथबासहु बोरहु तरणि कीजिय घाटा रोहु॥
होइ सजग सब रोंकहु घाटा। ठाटहु सकल मरण के ठाटा॥
सन्मुख लोह भरत सन लेहू। जियतनसुरसरि उतरनदेहू॥
समरमरण पुनि सुरसरि तीरा। राम काज क्षणभंगु शरीरा॥
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू। बड़े भाग अस पाइय मीचू॥
स्वामिकाज करिहौं रण रारी। लेइहौं सुयशभुवनदशचारी॥
तजहुं प्राण रघुनाथ निहोरे। दुहूं हाथ मुद मोदक मोरे॥
साधु समाज न जाकर लेखा। राम भक्त महं जासु न रेखा॥
जाय जियत जगसो महिभारू। जननी यौवन बिटप कुठारू॥
दो० बिगत बिषाद निषादपति सबहिबढ़ाय उछाह।
सुमिरि राम मांगेउ तुरत तरकस धनुष सनाह॥
बेगिहि भाइ सजहु संजोऊ। सुनि रजाय कदराय नकोऊ॥
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा। एकहि एक बढ़ावहिं कर्षा॥
चले निषाद जुहारि जुहारी। शूर सकल रण रुचै न रारी॥
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं। भाथा बांधि चढ़ावहिंधनुहीं॥

अंगुरी पहिरि कूंड़ि शिर धरहीं । फरसा बांस शेल समकरहीं ॥
एक कुशल अति ओड़न खांड़े । कूदहिं गगनमनहुं क्षितिछांड़े ॥
निज निज साज समाज बनाई । गुहरावतहिं जुहारहिं जाई ॥
देखि सुभट सब लायक जाने । लै लै नाम सकल सनमाने ॥
दो० भाइहु लावहु धोखजनि आजु काज बड़ मोहु ।
सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहु ॥
राम प्रताप नाथ बल तोरे । करहिं कटकबिनुभटबिनुघोरे ॥
जियत पावंनहिं पीछे धरहीं । रुंड मुंड मय मेदिनि करहीं ॥
दीख निषाद नाथ भल टोलू । कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥
इतना कहत छींक भय बांये । कहेउ शकुनियन्ह खेतसुहाये ॥
बूढ़ एक कह शकुन विचारी । भरतहि मिलियन होइहिरारी ॥
रामहिं भरत मनावन जाहीं । शकुनकहै अस विग्रह नाहीं ॥
सुनि गुहकहै नीककह बूढ़ा । सहसाकरि पछिताहिं विमूढ़ा॥
भरत स्वभावशील बिनु बूझे । बड़िहित हानिजानि बिनुबूझे ॥
दो० गहहुघाटभटसिमिटिसब लेउमर्म्म मिलिजाय ।
बूझिमित्र अरि मध्य गति तब तसकरबउपाय ॥
लखब सनेह स्वभाव सुहाये । बैर प्रीति नहिं दुरत दुराये ॥
अस कहि भेंट सजोवन लागे । कन्दमूल फल खगमृगमांगे ॥
मीन पीन पाठीन पुराने । भरि भरिभार कहारन आने ॥
सकलसाजसजिमिलनसिधाये । मंगल मूल शकुन शुभपाये ॥
देखि दूरिते कहि निज नामू । कीन्ह मुनीशहि दंड प्रणामू ॥
जानि रामप्रिय दीन्ह अशीशा। भरतहि कहेउबुझाइमुनीशा ॥
राम सखा सुनिस्यन्दनत्यागा । चले उतरि उमंगतअनुरागा॥
गांव जाति गुह नांव सुनाई । कीन्ह जुहारि माथमहिलाई ॥
दो० करत दंडवत देखितेहि भरतलीन्ह उरलाइ ।
मनहुं लषण सन भेंट भइ प्रेम न हृदयसमाइ ॥
भेंटे भरत ताहि अति प्रीती । लोग सिहाहिं प्रेमकै रीती ॥

धन्य धन्य ध्वनि मंगल मूला । सुर सराहि तेहिबरषहिंफूला ॥
लोक वेद सब भांतिहि नीचा । जासु छांह छुइ लेइय सींचा ॥
तेहि भरि अंकराम लघुभ्राता । मिलत पुलकपरिपूरितगाता ॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिनहिं न पापपुंज समुहाहीं ॥
इहि तौ राम लाय उर लीन्हा । कुल समेत जगपावन कीन्हा ॥
करमनाश जल सुरसरि परई । तेहिको कहहु शीशनहिंधरई ॥
उलटा नाम जपत जग जाना । बालमीकि भे ब्रह्म समाना ॥
दो० श्वपच शबरखलयवनजड़ पांवरकोल्हकिरात ।
राम कहत पावन परम होत भुवनविख्यात ॥
नहिं अचरजयुगयुगचलिआई । केहि न दीन्ह रघुबीरबड़ाई ॥
राम नाम महिमा सुर कहहीं । सुनिसुनिअवधलोगसुखलहहीं ॥
राम सखहिमिलिभरतसप्रेमा । पूंछहिं कुशल सुमंगल क्षेमा ॥
देखि भरत कर शील सनेहू । भानिषाद तेहि समयबिदेहू ॥
सकुच सनेह मोद मन बाढ़ा । भरतहिचितवत इकटकठाढ़ा ॥
धरिधीरज पद बन्दि बहोरी । विनय सप्रेम करत करजोरी ॥
कुशल मूल पद पंकज पेखी । मैं तिहुंकाल कुशल निजदेखी ॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे । सहित कोटि कुलमंगलमोरे ॥
दो० समुझिमोरिकरतूति कुल प्रभुमहिमाजियजो ।
जो न भजै रघुवीर पद जगविधिबंचक सोइ ॥
कपटी कायर कुमति कुजाती । लोक वेद बाहिर सब भांती ॥
राम कीन्ह आपन जबहींते । भयउं भुवन भूषण तबहींते ॥
देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई । मिले बहोरिलषण लघुभाई ॥
कहि निषाद निजनाम सुबानी । सादर सकल जुहारीरानी ॥
जानि लषण समदेहिं अशीशा । जियहु सुखीसौलाखबरीशा ॥
निरखि निषाद नगर नर नारी । भयेसुखी जनुलषणनिहारी ॥
कहहिं लहेउ यह जीवनलाहू । भेंटेउ राम भाइ भरिबाहू ॥
सुनि निषाद निजभाग बड़ाई । प्रमुदित मनलैचलेउलिवाई ॥

॥ दो० सनकारि सेवक सकल चलेस्वामि रुखपाइ ।
॥ घर तरु तर सर बागबन बास बनायउ जाइ ॥
शृङ्गबेर पुर भरत दीख जब । भे सनेहबश अंगशिथिल तब ॥
सोहत दिये निषादहि लागू । जनु तनु धरे बिनय अनुरागू ॥
यहिविधि भरतसेन सबसंगा । दीख जाइ जग पावनि गंगा ॥
रामघाट कहं कीन्ह प्रणामा । भा मनगमन मिलेजनुरामा ॥
करहिं प्रणाम नगरनर नारी । मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी ॥
करि मज्जन मांगहिं करजोरी । रामचन्द्र पद प्रीति नथोरी ॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू । सकल सुखद सेवक सुरधेनू ॥
जोरि पाणि बर मांगों एहू । सीय राम पद सहज सनेहू ॥
॥ दो० यहिबिधि मज्जनभरतकरि गुरु अनुशासनपाइ ।
॥ मातु नहानी जानि सब डेरा चले लिवाय ॥
जहं तहं लोगन्ह डेरा कीन्हा । भरतशोधसबही कर लीन्हा ॥
गुरु सेवाकरि आयसु पाई । राम मातु पहं गे दोउ भाई ॥
चरण चापिकहिकहिमृदुबानी । जननी सकलभरत सनमानी ॥
भाइहिं सौंपि मातु सेवकाई । आप निषादहि लीन्ह बुलाई ॥
चले सखा करसों कर जोरे । शिथिल शरीर सनेह नथोरे ॥
पूंछत सखहिसो ठांउ देखाऊ । नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ॥
जहंसियराम लषणनिशिसोये । कहत भरे जल लोचन कोये ॥
भरतबचन सुनि भयउ बिषादू । तुरत तहां लैगयउ निषादू ॥
दो० जहं शिंशिपा पुनीत तरु रघुवर किय बिश्राम ।
अति सनेह सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रणाम ॥
कुश साथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिण लाई ॥
चरण रेख रज आंखिन लाई । बनै न कहत प्रीति अधिकाई ॥
कनक बिंदु दुइ चारिक देखे । राखे शीश सीय सम लेखे ॥
सजल बिलोचन हृदय गलानी । कहतसखासन वचनसुबानी ॥
श्रीहत सीय बिरह द्युति हीना । यथा अवध नरनारि मलीना ॥

पिता जनक देउं पटुतर केही। करतल भोगयोग जगजेही॥
श्वशुर भानुकुल भानु भुआलू। जेहि सिहात अमरावतिपालू॥
प्राणनाथ रघुनाथ गुसांई। जोबड़होत सो राम बड़ाई॥
दो० पति देवता सुतीय मणि सीय साथरी देखि।
बिहरतहृदयनहहरिमम पवितें कठिन बिशेषि॥
लालन योग लषण लघु लोने। भेनभाइ अस अहहिं न होने॥
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे। सिय रघुबीरहिंप्राणपियारे॥
मृदु मूरति सुकुमार स्वभाऊ। ताति बायु तनु लागिनकाऊ॥
ते बन बसहिंबिपति सबभांती। निदरे कोटि कुलिशयहछाती॥
राम जननि जगकीन्हउजागर। रूपशील सुखसब गुणसागर॥
पुरजनपरिजन गुरुपितु माता। रामस्वभाव सबहिसुखदाता॥
बैरिउ राम बड़ाई करहीं। बोलनिमिलनिबिनयमनहरहीं॥
शारद कोटि कोटि शत शेशा। करिनसकहिंप्रभुगुणलवलेशा॥
दो० सुखस्वरूप रघुवंशमणि मंगल मोद निधान।
तेसोवतकुशडासिमहि विधिगतिअतिबलवान॥
रामसुना दुख कानन काऊ। जीवनतरुजिमि जुगवतराऊ॥
पलकनयनफणिमणिजेहिभांती। जुगवहिंजननिसकलदिनराती॥
ते अबफिरत बिपिन पदचारी। कन्द मूल फल फूल अहारी॥
धिक कैकेयि अमंगल मूला। भइसिप्राणप्रीतम प्रतिकूला॥
मैंधिक धिकअघउदधिअभागी। सबउतपात भयउजेहिलागी॥
कुलकलंककरि सृजेउ बिधाता। साइद्रोह मोहिंकीन्हकुमाता॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू। नाथकरिय कत बादि बिषादू॥
रामतुमहिंप्रियतुमप्रियरामहिं। यहनिरदोष दोष विधिबामहिं॥
छं० बिधिबामकीकरणीकठिनजेहिमातुकीन्हीबावरी।
तेहिरातिपुनिपुनिकरहिंप्रभुसादरसराहनरावरी॥
तुलसीनतुमसों राम प्रीतमकहतहौं सौंहैं किये।
परिणाममंगल जानिअपने आनियें धीरजहिये॥

सो० अन्तरयामी राम सकुच सप्रेम कृपायतन ।
चलिय करिय बिश्राम यहबिचारि दृढ़आनिमन ॥
सखा बचनसुनि उर धरिधीरा । बास चले सुमिरत रघुबीरा ॥
यह सुधि पाइ नगर नर नारी । चले बिलोकन आरतभारी ॥
पर दक्षिणा करि करहिं प्रणामा । देहिं कैकयिहिखोरि निकामा ॥
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं । बाम बिधातहि दूषण देहीं ॥
एक सराहहिं भरत सनेहू । कोउकह नृपतिनिबाहेउनेहू ॥
निन्दहिं आपु सराहिनिषादहि । कोकहिसकैबिमोह बिषादहि ॥
इहि बिधि रातिलोगसबजागा । भा भिनसार उतारा लागा ॥
गुरुहि सुनाव चढ़ाव सुहाई । नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
दण्ड चारि महं भा सब पारा । उतरिभरत तबसबहिं संभारा ॥
दो० प्रातक्रियाकरिमातुपद बन्दि गुरुहिं शिरनाइ ।
आगे किये निषादगण दीन्हेउ कटक चलाइ ॥
किये निषाद नाथ अगुआई । मातु पालकी सकल चलाई ॥
साथ बुलाय भाइ लघु दीन्हा । बिप्रनसहितगवनगुरुकीन्हा ॥
आइ सुरसरिहि कीन्ह प्रणामू । सुमिरे लषण सहितसियरामू ॥
गवने भरत पयादेहि पाये । कोतल संग जाहिंडारिआये ॥
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा । होइय नाथ अश्व असवारा ॥
राम पयादेहि पांव सिधाये । हमकहं रथगजबाजि बनाये ॥
शिर भरिजाउं उचितअसमोरा । सबते सेवक धर्म कठोरा ॥
देखि भरतगतिसुनिमृदुबानी । सब सेवकगण करहिंगलानी ॥
दो० भरत तीसरे पहर कहं कीन्ह प्रबेश प्रयाग ।
कहतरामसियरामसिय उमंगिउमंगिअनुराग ॥
झलका झलकत पांयन कैसे । पंकज कोश ओस कण जैसे ॥
भरत पयादेहि आये आजू । देखि दुखितसुनिसकलसमाजू ॥
खबरिलीन्हसबलोगअन्हाये । कीन्ह प्रणाम त्रिबेणी आये ॥
सबिधिसितासितनीरअन्हाने । दिये दानमहिसुर सनमाने ॥

देखत श्यामल धवल हिलोरे । पुलक शरीर भरत करजोरे ॥
सकल कामप्रद तीरथ राऊ । बेदविदित जगप्रकट प्रभाऊ ॥
मांगौं भीख त्यागि निजधरमू । आरत काहन करहिं कुकरमू ॥
असजियजानिसुजानि सुदानी । सफलकरो जगयाचक वानी ॥
॥ दो० अर्थ न धर्म नकामरुचि गतिनचहौं निर्बान ।
जन्म जन्म रतिरामपद यह बरदान न आन ॥
जानहिं राम कुटिलकरि मोही । लोग कहैं गुरुसाहब द्रोही ॥
सीताराम चरण रति मोरे । अनुदिन बढ़ौ अनुग्रह तोरे ॥
जलदजन्मभरि सुरति निसारे । याचत जलपवि पाहनडारे ॥
चातक रटनि घटे घटि जाई । बढ़े प्रेम सब भांति भलाई ॥
कनकहि बान चढ़े जिमि दाहे । तिमि प्रीतमपद नेम निबाहे ॥
भरत बचन सुनि मांझ त्रिबेनी । भे मृदु बाणि सुमंगलदेनी ॥
तात भरत तुमसबबिधि साधू । रामचरण अनुराग अगाधू ॥
बादि गलानि करहु मन माहीं । तुमसमरामहिंप्रियकोउनाहीं ॥
॥ दो० तन पुलके हिय हरषिसुनि बेणिबचन अनुकूल ।
भरत धन्यकहि धन्यकहि नभसुर बरषहिं फूल ॥
प्रमुदित तीरथ राज निवासी । बैषानस बटुगृही निवासी ॥
कहहिंपरस्पर मिलिदशपांचा । भरत सनेहशील शुचिसांचा ॥
सुनत राम गुण गान सुहाये । भरद्वाज मुनिवर पहं आये ॥
दण्ड प्रणाम करत मुनि देखे । मूरतिवन्त भाग निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे दीन्ह अशीश कृतारथ कीन्हे ॥
आसन दीन नाइ शिर बैठे । चहत सकुचिगृह जनुभजिपैठे ॥
मुनि पूछब कछु यह बड़शोचू । बोले ऋषिलषि शील सकोचू ॥
सुनहुभरत हम सबसुधि पाई । विधिकर तबपर कछु नबसाई ॥
॥ दो० तुम गलानि जिय जनिकरहु समुझिमातुकरतूति ।
तात केकयिहि दोषनहिं गई गिरामति धूति ॥
यहउ कहत भल कहहिनकोऊ । लोक वेदबुध सम्मत दोऊ ॥

तात तुम्हार बिमल यश गाई । पाइहि लोकहु वेद बड़ाई ॥
लोक वेद सम्मतबिधि कहई । जेहिपितु राज्यदेइ सोलहई ॥
राउ सत्य ब्रत तुमहिं बुलाई । देत राज्यसुख धर्म्म बड़ाई ॥
राम गमन वन अनरथ मूला । जो सुनिसकलबिश्वभइशूला ॥
सो भावीवश रानि अयानी । करिकुचालिअन्तहु पछितानी ॥
तहहुं तुम्हार अल्प अपराधू । कहै सो अधम अयानअसाधू ॥
करतेहु राज्य तुमहिं नहिंदोषू । रामहिं होत सुनतसन्तोषू ॥
दो० अबअतिकीन्हेउभरतभलु तुमहिं उचित मतएहु ।
सकल सुमंगल मूलजग रघुवर चरणसनेहु ।
सो तुम्हार धन जीवन प्राना । भूरिभाग को तुमहिंसमाना ॥
सो तुम्हार आचरज न ताता । दशरथ सुवन रामलघुभ्राता ॥
सुनहु भरत रघुपति मनमाहीं । प्रेमपात्र तुमसम कोउ नाहीं ॥
लषणराम सीतहि अति प्रीती । निशिसबतुमहिंसराहतबीती ॥
जाना मर्म्म अन्हात प्रयागा । मगनहोहिं तुम्हरे अनुरागा ॥
तुम पर अस सनेह रघुबर के । सुखजीवनजग जसजड़नरके ॥
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई । प्रणत कुटुम्ब पाल रघुराई ॥
तुमतौ भरत मोर मत एहू । धरे देह जनु राम सनेहू ॥
दो० तुमकहं भरत कलंक यहहमसबकहं उपदेश ।
रामभक्ति रससिद्धिहित भा यहि समयगणेश ।
नवबिधु बिमलतात यशतोरा । रघुवर किंकर कुमुद चकोरा ॥
उदय सदा अथइय कबहूंना । घटिहिनजगनभदिनदिनदूना ॥
कोक त्रिलोकप्रीतिअतिकरहीं । प्रभुप्रतापरबिछबिहिनहरहीं ॥
निशिदिन सुखदसदासबकाहू । ग्रसिहि न कैकयि करतबराहू ॥
पूरण राम सुप्रेम पियूषा । गुरु अपमान दोष नहिं दूषा ॥
राम भक्ति अबअमिय अघाहू । कीन्हेउ सुलभसुधाबसुधाहू ॥
भूप भगीरथ सुरसरि आनी । सुमिरत सकलसुमंगलखानी ॥
दशरथ गुणगणवरणिनजाहीं । अधिककहाजेहिसमजगनाहीं ॥

दो० जासु सनेह सकोच वश राम प्रकट भे आय ।
जे हरहियनयनन्ह कबहुं निरखेनाहिंअघाय ॥
कीरति बिधु तुम कीन्हअनूपा। जहं बस राम प्रेम मृगरूपा ॥
तात गलानि करहु जियजाये। डरहु दरिद्रहिं पारस पाये ॥
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं। उदासीन तापस वन रहहीं ॥
सबसाधनकर सुफलसुहावा। लषण रामसिय दरशनपावा ॥
तेहिफलकरफलदरशतुम्हारा। सहितप्रयाग सुभाग हमारा ॥
भरत धन्यतुम जगयशलयऊ। कहिअसप्रेममगनमुनिभयऊ ॥
सुनिमुनिबचन सभासदहरषे। साधु सराहिं सुमन सुरबरषे ॥
धन्यधन्य ध्वनि गगनप्रयागा। सुनिसुनिभरतमगनअनुरागा ॥
दो० पुलकगात हियराम सिय सजल सरोरुह नैन ।
करि प्रणाम मुनि मंडलिहि बोले गदगद बैन ॥
मुनि समाज अरु तीरथ राजू। सांचेहु शपथ अघाइअकाजू ॥
इहिथल जो कछुकहिय बनाई। इहिसमनहिंकछु अघ अधमाई ॥
तुम सरबज्ञ कहौं सति भाऊ। उर अन्तरयामी रघुराऊ ॥
मोहिं न मातु करतब करशोचू। नहिंदुखजियजगजानहिंपोचू ॥
नाहिंन डर बिगरहि परलोकू। पितहु मरेकर नाहिंन शोकू ॥
सुकृत सुयश भरि भुवनसुहाये। लक्ष्मण रामसरिस सुतपाये ॥
राम विरहतजि तनु क्षणभंगू। भूप शोचकर कवन प्रसंगू ॥
रामलषण सियबिनुपगपनहीं। करिमुनिबेषफिरहिंबनबनहीं ॥
दो० अजिनवसनफल अशनमहिशयनडासि कुशपात ।
बसि तरु तर नितसहत दुख हिम तपबरषाबात ॥
यह दुख दाह दहै नितछाती। भूख न बासर नींद न राती ॥
यह कुरोगकर औषधि नाहीं। शोधेउं सकलबिश्व मनमाहीं ॥
मातु कुमति बढ़ई अघ मूला। तेहिहमार हितकीन्ह बसूला ॥
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुयंत्रू। गाड़िअवधि पढ़िकठिनकुमंत्रू ॥
मोहिंलगियह कुठाटजेहिठाटा। घालिसिसबजग बारहबाटा ॥

मिटै कुयोग राम फिरि आये । बसहि अवध नहिंआनउपाये॥
भरत वचन सुनिसुनिसुखपाई । सबहिं कीन्ह बहुभांतिबड़ाई ॥
तात करहु जनि शोच विशेषी । सबदुख मिटहिरामपद देखी ॥
॥दो० करिप्रबोध मुनिवर कहेउ अतिथि प्राणप्रियहोहु ।
कन्दमूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥
सुनिमुनि वचनभरत हियशोचू । भयउकुअवसरकठिनसकोचू ॥
जानि गरुअ गुरु गिरा बहोरी । चरण बन्दि बोले कर जोरी ॥
शिरधरि आयसुकरियतुम्हारा । परम धर्म्म यह नाथहमारा ॥
भरत वचन मुनिवर मन भाये । शुचिसेवकशिषनिकटबुलाये ॥
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई । कन्द मूल फल आनहु जाई ॥
भले नाथ कहितिन्हशिरनाये । प्रमुदितनिजनिजकाजसिधाये॥
मुनिहिं शोच पाहुनबड़नेवता । तस पूजा चाहिय जसदेवता ॥
सुनिऋधिसिधिअणिमादिकआई । आयसुहोइ सोकरैं गोसाईं ॥
दो० राम विरह व्याकुल भरत सानुजसकल समाज।
पहुनाई करि हरहु श्रम कहेउ मुदित मुनिराज ॥
ऋधिसिधिशिरधरिमुनिवरबानी।बड़भागिनिआपुहिअनुमानी ॥
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई । अतुलितअतिथिरामलघुभाई ॥
मुनिपद बन्दि करियसोइआजू । होइ सुखी सबराजसमाजू ॥
असकहि रुचिररचे गृहनाना । जेविलोकिबिलखाहिंबिमाना॥
भोग विभूति भूरि भरि राखे । देखतजिनहिंअमरअभिलाषे ॥
दासी दास साज सब लीन्हे । जुगवतरहहिंमनहिंमनदीन्हे॥
सबसमाजसजिसिधिपलमाहीं । जेसुख सपनेहु सुरपुर नाहीं ॥
प्रथमहिं बास दिये सब केही । सुंदर सुखद यथारुचिजेही ॥
दो० बहुरिसपरिजन भरतकहं ऋषि आयसुअसदीन्ह ।
बिधिबिस्मयदायक विभव मुनिवर तपबलकीन्ह ॥
मुनि प्रभाव जवभरतविलोका । सबलघुलगेलोकपतिलोका ॥
सुख समाज नहिं जाइ बखानी । देखत विरतबिसरहिंज्ञानी ॥

आसन शयन सुबसन बिताना । वनबाटिका विहगमृगनाना ॥
सुरभिफूलफलअमियसमाना । विमलजलाशयविविधविधाना॥
अशनपान शुचि अमितअमीसे । देख लोक सकुचात जमीसे ॥
सुर सुरभी सुरतरु सबहीके । लखि अभिलाषसुरेशशचीके ॥
ऋतुबसन्तबह त्रिविध बयारी । सबकहं सुलभ पदारथचारी ॥
स्त्रकचन्दन बनितादिक भोगा । देखि हर्ष विस्मय सबलोगा ॥
दो० सम्पति चकई भरत चक मुनिआयसुखेलवार ।
तेहि निशि आश्रम पींजरा राखे भा भिनुसार ॥
कीन्ह निमज्जन तीरथ राजा । नाइमुनिहिशिरसहितसमाजा ॥
ऋषि आयसु अशीषशिरराखी । करिदंडवतविनय बहुभाषी ॥
पथ गत कुशल साथसबलीन्हे । चले चित्रकूटहि चितदीन्हे ॥
राम सखा कर दीन्हे लागू । चलत देहधरि जनुअनुरागू ॥
नहिं पद त्राण शीश नहिंछाया । प्रेम नेम ब्रत धर्म्म अमाया ॥
लषण राम सिय पंथ कहानी । पूंछतसखहि कहतमृदुबानी ॥
रामबास थल विटप बिलोके । उर अनुराग रहत नहिंरोके ॥
देखि दशा सुर वर्षहिं फूला । भइमृदुमहिमगुमंगल मूल ॥
दो० किये जाहिं छाया जलद सुखद बहत वर बात ।
तसमगु भयउ न रामकहं जसभा भरतहिजात ॥
जड़ चेतन जग जीव घनेरे । जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभुहेरे॥
ते सब भये परम पद योगू । भरत दरश भेषज भव रोगू ॥
यह बड़िबात भरत की नाहीं । सुमिरतजिनहिं रामसनमाहीं ॥
बारेक राम कहत जग जेऊ । होत तरण तारण नर तेऊ ॥
भरत रामप्रिय पुनि लघुभ्राता । कस नहोइ मगुमंगलदाता ॥
सिद्धिसाधुमुनिवरअसकहहीं । भरतहिनिरखिहर्षहियलहहीं ॥
देखि प्रभाव सुरेशहि शोचू । जग भलभलहिपोचकहपोचू ॥
गुरुसन कहेउ करउ प्रभुसोई । रामहि भरतहिभेंट न होई ॥
दो० राम सकोची प्रेमवश भरत सप्रेमपयोधि ।

॥ बनीबातबिगरन चहत करिययतनछलशोधि ॥

वचन सुनत सुर गुरु मुसकाने । सहसनयनबिनुलोचनजाने ॥
कह गुरु बादि क्षोभ छलछांडू । इहांकपट करिहोइय भांडू ॥
माया पति सेवक सन माया ।करियत उलटि परे सुरराया॥
तब कछु कीन्ह राम रुखजानी । अब कुचालकरि होइहिहानी॥
सुनु सुरेश रघुनाथ सुभाऊ । निज अपराधरिसाहिंनकाऊ॥
जो अपराध भक्त कर करई । राम रोष पावक सो जरई ॥
लोकहु वेद विदित इतिहासा । यहमहिमा जानहिं दुर्वासा ॥
भरत सरिस को राम सनेही । जग जपु राम राम जपुजेही ॥

दो० मनहुंनआनिय अमरपति रघुपति भक्त अकाज ।
अयशलोकपरलोकदुख दिन दिन शोकसमाज ॥

सुनु सुरेश उपदेश हमारा । रामहिं सेवक परम पियारा ॥
मानत सुख सेवक सेवकाई । सेवक बैर बैर अधिकाई ॥
यद्यपि समनहिं राग न रोषू । गहहिनपाप पुण्य गुणदोषू ॥
कर्म्म प्रधान विश्वकरि राखा । जोजसकरैसो तसफल चाखा॥
तदपिकरहिं समबिषम बिहारा । भक्त अभक्त हृदय अनुसारा ॥
अगुण अलेख अमान एक रस । रामसगुण भयेभक्त प्रेमवश ॥
राम सदा सेवक रुचि राखी । वेद पुराण साधु सुर साखी॥
असजियजानि तजहुकुटिलाई । करहु भरत पदप्रीति सुहाई ॥

दो० राम भक्त पर हित निरत परदुख दुखीदयाल ।
भक्त शिरोमणिभरत तेजनि डरपहु सुरपाल ॥

सत्यसिन्धु प्रभु सुर हितकारी । भरत रामआयसु अनुसारी ॥
स्वारथ विवश विकलतुमहोहू । भरत दोष नहिं राउर मोहू ॥
सुनि सुर वर सुर गुरुबरवानी । भा प्रवोध मन मिटीगलानी॥
बरषि प्रसून हर्षि सुर राऊ । लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥
इहिविधि भरत चले मगुजाहीं । दशादेखिमुनिसिद्धिसिहाहीं ॥
जबहिं रामकहि लेहिं उसासा । उमंगत प्रेममनहुंचहंपासा ॥

द्रवहिंवचनसुनिकुलिशपषाना । पुरजन प्रेम न जाइबखाना ॥
बीचबास करि यमुनहिं आये । निरखि नीरलोचन जलछाये ॥
दो० रघुबर वर्ण बिलोकि वर बारि समेत समाज ।
होत विरह बारिधि चढ़े मगन विवेक जहाज ॥
यमुन तीर तेहि दिन कर बासू । भयेउसमयसमसबहिसुपासू ॥
रातिहि घाट घाट की तरणी । आईं अगणित जाइंनबरणी ।
प्रात पार भे एकहि खेवा । तोषे राम सखा करि सेवा ॥
चले अन्हाइ नदिहि शिरनाई । साथ निषाद नाथ लघु भाई ॥
आगे मुनिवर बाहन आछे । राज समाज जाय सब पाछे ॥
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे । भूषण बसन वेष सुठिसादे ॥
सेवक सुहृद सचिव सुत साथा । सुमिरतलषणसीयरघुनाथा ॥
जहं जहं राम बास विश्रामा । तहंतहंकरहिंसप्रेमप्रणामा ॥
दो० मगुबासीनरनारि सुनि धामकाम तजि धाइ ।
देखि स्वरूप सनेहवश मुदित जन्म फल पाइ ॥
कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं । रामलषणसखिहोहिंकिनाहीं ॥
बय बपु बसनरूप सोइआली । शीलसनेह सरिस समचाली ॥
वेष न सो सखि सीय न संगा । आगे अनी चली चतुरंगा ॥
नहिं प्रसन्नमुख मानस खेदा । सखि सन्देह होत इहिभेदा ॥
तासु तर्कतियगणमनमानी । कहहिंसकलतोहिंसमनसयानी ॥
तेहि सराहि बाणी फुर पूजी । बोली मधुर बचन तियदूजी ॥
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू । जेहि विधिराम राजरसभंगू ॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी । शील सनेह सुभाव सुभागी ॥
दो० चलत पयादे खात फल पितादीन्ह तजिराज ।
जातमनावन रघुबरहि भरत सरिसको आज ॥
भायप भक्ति भरत आचरणू । कहतसुनत दुख दूषणहरणू ॥
जो कछु कहिय थोरसखिसोई । रामबन्धु अस काहे न होई ॥
हम सब सानुज भरतहि देखे । भयेधन्य युवती जन लेखे ॥

सुनि गुण देखि दशा पछिताहीं । केकयि जननि योगसुतनाहीं ॥
कोउकह दूषण रानिहुनाहिंन । बिधिसबभांतिहमहिंजोदाहिन॥
कहं हमलोग वेदबिधि हीना । लघुकुलकरतिय करतूतिमलीना ॥
बसहिं कुदेश कुगांव कुठामा । कहंयह दरशपुण्य परिणामा ॥
असअनन्दअचरज प्रति ग्रामा । जनु मरुभूमि कल्पतरु जामा॥
दो० भरत दरश देखत खुलेहु मगु लोगन्हकर भाग ।
जनुसिंहलबासिन्हभयउ बिधिबश सुलभप्रयाग ॥
निजगुणसहित रामगुणगाथा । सुनतजाहिंसुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथमुनिआश्रम सुरधामा । निरखिनिमज्जहिंकरहिंप्रणामा ॥
मनहीं मन मांगहिं बर येहू । सीय राम पद पद्म सनेहू ॥
मिलहिंकिरातकोलह बनबासी । वैषानस बटु यती उदासी ॥
करि प्रणाम पूछहिं जहितेही । केहि बन लषण राम बैदेही ॥
ते प्रभु समाचार सब कहहीं । भरतहिदेखिजन्मफललहहीं ॥
जेजन कहहिं कुशल हम देखे । ते प्रिय राम लषण समपेखे ॥
इहिबिधि बूझतसबहिं सुबानी । सुनत राम बनबास कहानी ॥
दो० तेहि बासर बस प्रातही चलेसुमिरि रघुनाथ ।
राम दरशकी लालसा भरत सरिस सबसाथ ॥
मंगल शकुन होहिं सब काहू । फरकहिं सुखद बिलोचनबाहू ॥
भरतहिं सहित समाज उछाहू । मिलिहहिंराममिटहिंदुखदाहू ॥
करतमनोरथ जस जिय जाके । जाहिं सनेह सुरा सब छाके ॥
शिथिलअंगमगुपगडगडोलहिं । बिह्वलबचन प्रेमबशबोलहिं ॥
रामसखा तेहिसमय देखावा । शैलशिरोमणि सहजसुहावा ॥
जासु समीप सरिस पयतीरा । सीय समेत बसहिं दोउबीरा ॥
देखिकरहिं सबदण्ड प्रणामा । कहि जयजानकि जीवनरामा ॥
प्रेम मगन अस राज समाजू । जनुफिरि अवधचलेरघुराजू ॥
दो० भरत प्रेम तेहिसमय जस तस कहिसकै न शेषु ।
कविहिअगम जिमिब्रह्मसुख अहममलिन जनेषु ॥

सकल सनेह शिथिलरघुबरके । गये कोस दुइ दिनकर ढरके ॥
जलथल देखिचले निशिबीते । कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीते ॥
उमा राम रजनी अवशेषा । जागे सीय सपन अस देखा ॥
सहित समाज भरत जनु आये । नाथ वियोग ताप तन ताये ॥
सकल मलिन मनदीनदुखारी । देखी सासु आन अनुहारी ॥
सुनिसियसपनभरेजललोचन । भये शोचबश शोकबिमोचन ॥
लषणसपन यह नीक न होई । कठिन कुचाह सुनाइहिकोई ॥
असकहि बन्धु समेत अन्हाने । पूजि पुरारि साधु सनमाने ॥

छं० सनमानिसुरमुनिबन्दिबैठे उतरदिशिदेखतभये ।
नभधूरिखगमृगभूरिभागेबिकलप्रभुआश्रमगये ॥
तुलसीउठेअवलोकिकारण काहचितचकितरहे ।
सबसमाचारकिरातकोलहनआइतेहिअवसरकहे॥

सो० सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलकभर ।
शरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥

बहुरि शोच बशभे सिय रमनू । कारणकवन भरत आगमनू ॥
एक आइ अस कहा बहोरी । सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहिंभा अतिशोचू । इतपितु बच उत बन्धुसंकोच ॥
भरत सुभाव समुझिमनमाहीं । प्रभुचितहित थितिपावतनाहीं॥
समाधान तब भा यह जाने । भरत कहे महं साधु सयाने ॥
लषणलखेउप्रभुहृदय खंभारू । कहतसमय समनीतिबिचारू ॥
बिनु पूछे कछु कहउं गुसांई । सेवक समय न ढीठ ढिठाई ॥
तुम सर्वज्ञ शिरोमणि स्वामी । आपुनिसमुझिकहौंअनुगामी ॥

दो० नाथ सुहृदसुठि सरल चितशील सनेह निधान ।
सबपर प्रीति प्रतीतिजिय जानिय आपुसमान ॥

विषयी जीव पाइ प्रभुताई । मूढ़ मोह बश होहिं जनाई ॥
भरत नीतिरत साधु सुजाना । प्रभुपदप्रेम सकलजगजाना ॥
तेऊ आज राज पद पाई । चले धर्म्म मर्याद मिटाई ॥

कुटिल कुबन्धु कुअवसर ताकी । जानि राम बनबास एकाकी ॥
करिकुमंत्र मन साजि समाजू । आये करन अकंटक राजू ॥
कोटिप्रकार कलपि कुटिलाई । आये दल बटोरि दोउभाई ॥
जोजिय होति नकपट कुचाली । केहिसोहातरथबाजिगजाली ॥
भरतहि दोष देइ को जाये । जग बौराइ राज पद पाये ॥

दो० शशि गुरु तिय गामी नहुष चढ़े भूमिसुर यान ।
लोक वेदते बिमुख भा अधम को बेनु समान ॥

सहस बाहु सुर नाथ त्रिशंकू । केहिन राज मद दीन्हकलंकू ॥
भरत कीन्ह यह उचितउपाऊ । रिपु रण रंच न राखबकाऊ ॥
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई । निदरे राम जानि असहाई ॥
समुझिपरिहि सो आजविशेषी । समर सरोष राम रुख देखी ॥
इतना कहत नीति रस भूला । रणरसबिटपपुलकजिमिफूला ॥
प्रभु पद बन्दि शीशरजराखी । बोले सत्य सहज बलभाषी ॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा । भरत हमहिं उपचारनथोरा ॥
कहंलगिसहिय रहिय मनमारे । नाथ साथ धनुहाथ हमारे ॥

दो० क्षत्रिजात रघुकुल जनम रामअनुज जगजान ।
लातहु मारे चढ़त शिर नीचको धूरि समान ॥

उठि करजोरि रजायसु मांगा । मनहुं बीर रस सोवत जागा ॥
बांधिजटाशिरकसिकटि भाथा । साजि शरासन शायकहाथा ॥
आजु राम सेवक यश लेऊं । भरतहि समर सिखावनदेऊं ॥
राम निरादर कर फल पाई । सोवहु समर सेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकल समाजू । प्रकटकरौंरिस पाछिलआजू ॥
जिमिकरिनिकर दलैमृगराजू । लेइ लपेटि लवा जिमिबाजू ॥
तैसहि भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातौंखेता ॥
जो सहाय कर शंकर आई । तदपि हतौं रण राम दुहाई ॥

दो० अति सरोष भाषे लषण लखि सुनि शपथप्रमान ।
समय बिलोकत लोकपति चाहत भभरि भगान ॥

जग भा मगन गगन भैं बानी । लषणबाहुबल बिपुलबखानी॥
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा । कोकहिसक कोजाननि हारा ॥
अनुचित उचित काजकछुहोई । समुझिकरियभलकहसबकोई ॥
सहसा करि पाछे पछिताहीं । कहहिं वेद बुधते बुधनाहीं ॥
सुनि सुर बचन लषणसकुचाने । राम सीय सादर सनमाने ॥
कही तात तुम नीति सुहाई । सबते कठिन राज मदभाई ॥
जो अंचवत मातहिं नृप तेई । नाहिंन साधुसभा जिन्हसेई ॥
सुनहु लषणभल भरतसरीखा । बिधिप्रपंचमहं सुना न दीखा॥
दो० भरतहि होइ न राजमद बिधिहरि हर पदपाइ ।
कबहुंकि कांजी सीकरन्हि क्षीरसिंधु बिनशाइ ॥
तिमिरतरुणतरणिहिसकगिलई । गगनमगनमगुमेघहिमिलई ॥
गोपद जल बूड़हिं घट योनी । सहज क्षमाबड़ छांड़हिंक्षोनी॥
मशक फूंक बरु मेरु उड़ाई । होइ न नृपमद भरतहिभाई ॥
लषण तुम्हारशपथ पितुआना । शुचि सुबंधुनहिभरतसयाना ॥
सगुण क्षीरअवगुण जलताता । मिले रचे परपंच बिधाता॥
भरत हंस रबि बंश तड़ागा । जनमि कीन्हगुणद षविभागा ॥
गहिगुणपयतजिअवगुणबारी । निजयशजगतकीन्हउजियारी ॥
कहतभरत गुणशील सुभाऊ । प्रेमपयोधि मगन रघुराऊ ॥
दो० सुनिरघुबर वाणी बिबुध देखि भरत परहेतु ।
लगे सराहन सहस मुख प्रभुको कृपानिकेतु ॥
जो न होत जग जन्म भरतको । सकलधरमधुरधरणिधरतको॥
कबिकुलअगम भरतगुणगाथा । को जाने तुम बिन रघुनाथा॥
लषणराम सियसुनि सुरबानी । अतिसुखलहेउनजाइबखानी ॥
इहांभरत सब सहित सुहाये । मंदाकिनी पुनीत अन्हाये ॥
सरित समीप राखिसब लोगा । मांगिमातुगुरुसचिबनियोगा ॥
चले भरत जहं सिय रघुराई । साथ निषाद नाथ लघुभाई ॥
समुझि मातु करतब सकुचाहीं । करत कुतर्क कोटि मनमाहीं॥

राम लषणसियसुनि ममनाऊं । उठिजनअनतजाहिंतजिठाऊं ॥
दो० मातुमतेमहंजानिमोहिं जोकछुकरहिं सोथोर ।
अघअवगुणतजिआदरहिं समुझिआपनीओर ॥
जो परिहरहिंमलिनमन जानी । जो सनमानहिं सेवकमानी ॥
मोरे शरण रामकी पनहीं । रामसु स्वामिदोषसबजनहीं ॥
जग यशभाजन चातक मीना । नेम प्रेमिनिजनिपुणनबीना ॥
असमन गुणत चलेमग जाता । सकुचसनेहशिथिलसबगाता ॥
फेरति मनहुं मातुकृत खोरी । चलत भक्ति बलधीरज धोरी ॥
जबसमुझहिं रघुनाथ सुभाऊ । तब पथ परत उतावलपाऊ ॥
भरत दशा तेहि अवसर कैसी । जलप्रबाहजलअलिगतिजैसी॥
देखि भरत कर शोच सनेहू । भा निषादतेहि समयबिदेहू ॥
दो० लगेहोन मंगलशकुन सुनि गुणि कहत निषाद ।
मिटिहि शोचहोइहि हरष पुनिपरिणामविषाद ॥
सेवक बचन सत्य सब जाने । आश्रमनिकट जाय नियराने ॥
भरत दीख बन शैल समाजू । मुदित क्षुधितजनुपाइ सुराजू ॥
ईति भीति जनु प्रजादुखारी । त्रिविधिताप पीड़ितग्रहभारी ॥
जाइ सुराजसुदेश सुखारी । भईभरतगति तेहि अनुहारी ॥
रामबास बन सम्पति भ्राजा । सुखीप्रजा जनुपाइ सुराजा ॥
सचिव बिराग बिबेक नरेशू । बिपिन सुहावन पावन देशू ॥
भट कमनीय शैल रज धानी । शांतिसुमतिशुचिसुंदर रानी ॥
सकल अंग सम्पन्न सुराऊ । राम चरणआश्रित चितचाऊ॥
दो० जीतिमोह महिपाल पद सहित बिबेक भुआल ।
करत अकंटकराजपुर सुख सम्पदा सुकाल ॥
बन प्रदेश मुनि बास घनेरे । जनुपुर नगर गांव गण खेरे ॥
बिपुलबिचित्र बिहगमृगनाना । प्रजा समाज न जाइबखाना ॥
खरहाकरि हरि बाघ बराहा । वृषभमहिषवृकसाब सराहा ॥
बैर बिहाय चरहिं एक संगा । जहं तहं मनहुंसेन चतुरंगा ॥

झरना झरहिंमत्तगजगाजहिं। मनहुंनिशानबिबिधिबिधिबाजहिं
चकचकोरचातक शुकपिकगन । कूजत मंजुमरालमुदितमन ॥
अलिगण गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगलचहुं ओरा ॥
बेलि बिटप तृण सफलसफूला । सब समाज मुद मंगल मूला॥
दो० राम शैल शोभा निरखि भरत हृदयअति प्रेम ।
तापस तप फल पाइजिमि सुखी सिराने नेम ॥
तब केवट ऊंचे चढ़ि जाई । कहा भरत सन भुजा उठाई ॥
नाथ देख यह बिटप बिशाला। पाकर जम्बु रसाल तमाला ॥
तिन तरुवरन्ह मध्य बटसोहा । मंजु बिशाल देखि मनमोहा ॥
नील सघन पल्लव फललाला । अबिचलछांहसुखदसबकाला॥
मानहु तिमिर अरुणमयराशी । बिरचीबिधिसकेलिसुखमासी॥
तेहि तरु सरित समीपगोसांई । रघुबर पर्णकुटी जहं छाई ॥
तुलसी तरुवर बिबिधिसुहाये । कहुंसियपियकहुंलषणलगाये॥
बट छाया बेदिका बनाई । सियनिजपाणि सरोजसुहाई ॥
दो० जहं बैठे मुनिगणसहित नितसिय रामसुजान ।
सुनहिं कथा इतिहास सब आगमनिगमपुराण ॥
सखा बचनसुनि बिटप निहारी । उमंगे भरत बिलोचन बारी॥
करत प्रणाम चले दोउ भाई । कहत प्रीति शारदसकुचाई ॥
हर्षहिं निरखि रामपद अंका । मानहुं पारस पायहुरंका ॥
रजशिरधरिहियनयनलगावहिं।रघुबरमिलनसरिससुखपावहिं॥
देखि भरतगति अकथ अतीवा । प्रेम मगनमृगखगजड़जीवा ॥
सखहि सनेह बिवशमगभूला । कहि सुपंथसुरबर्षहिं फूला ॥
निरखिसिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेह सराहन लागे ॥
होतन भूतल भाव भरतको। अचरसचरचरअचरकरतको ॥
दो० प्रेमअमियमंदिर बिरह भरत पयोधि गंभीर ।
मथि प्रकटे सुर साधु हित कृपा सिंधु रघुबीर ॥
सखा समेत मनोहर जोटा ।.। लखेउनलषणसघनबनओटा॥

भरत दीख प्रभु आश्रम पावन । सकलसुमंगलसदनसुहावन॥
करत प्रवेश मिटा दुख दावा । जनु योगी परमारथ पावा ॥
देखे लषण भरत प्रभु आगे । पूछत बचन कहत अनुरागे॥
शीश जटा कटि मुनि पट बांधे । तूण कसे कर शर धनुकांधे ॥
वेदी पर मुनि साधु समाजू । सोय सहित राजत रघुराजू ॥
बलकलबसन जटिलतनुश्यामा । जनुमुनिवेष कीन्हरतिकामा॥
कर कमलन धनुशायक फेरत । जीकीजरनि हरत हंसिहेरत॥

दो० लसत मंजु मुनि मण्डली मध्य सोय रघुनंद ।
ज्ञान सभा जनु तनु धरे भक्ति सच्चिदानंद ॥

सानुज सखा समेत मगन मन । विसरेहर्षशोकसुख दुखगन॥
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाईं । भूतल परे लकुटकी नाईं॥
बचन सप्रेम लषण पहिचाने । करतप्रणाम भरतजियजाने ॥
बंधु सनेह सरस यहि ओरा । उत साहब सेवा बरजोरा ॥
मिलनजाइ नहिं गुदरत बनई । सुकबिलषणमनकीगतिभनई॥
रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चंग जनु खैंच खिलारू॥
कहत सप्रेम नाइ महि माथा । भरत प्रणाम करतरघुनाथा ॥
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा । कहुंपट कहुं निषंग धनुतीरा ॥

दो० बरबस लिये उठाय उर लाये कृपा निधान ।
भरतरामकी मिलनलखि बिसरेसबहिअपान ॥

मिलनप्रीतिकिमिजाहिबखानी । कविकुल अगमकर्ममनबानी ॥
परम प्रेम पूरण दोउ भाई । मनबुधिचितअहमितबिसराई॥
कहहु सुप्रेम प्रकट को करई । केहिछायाकबिमतिअनुसरई ॥
कबिहि अर्थ आखर बल सांचा । अनुहरतालगतिहि नटनाचा॥
अगम सनेह भरत रघुबर को । जहंनजाइमनविधिहरिहरको॥
सो मैं बरणि कहौं केहि भांती । बाजु सुरागकि गाड़र तांती ॥
मिलनिबिलोकिभरतरघुबरकी । सुरगणसमयधुकधुकीधरकी ॥
समुझाये सुरगुरु गण जागे । बरषि प्रसून प्रशंसन लागे ॥

दो० मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं केवट भेंटे राम ।
भूरिभाइ भेंटे भरत लक्ष्मण करत प्रणाम ॥
भेंटेउ लषण ललकि लघुभाई । बहुरि निषादलीन्ह उरलाई ॥
पुनि मुनिगण दोउभाइन बन्दे । अभिमतआशिषपाइ अनन्दे ॥
सानुज भरत उमंगि अनुरागा । धरिशिरसियपद पद्मपरागा ॥
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये । सिय करकमल परसिबैठाये ॥
सीय अशीश दीन्ह मन माहीं । मगन सनेह देहसुधिनाहीं ॥
सबविधि सानुकूल लखिसीता । भे अशोच उर अपडर बीता ॥
कोउ कछुकहैन कोउ कछु पूछा । प्रेमभरा मननिजगति छूछा ॥
तेहि अवसर केवट धीरज धरि । जोरिपाणिबिनवतप्रणामकरि ॥
दो० नाथ साथ मुनिनाथके मातु सकल पुरलोग ।
सेवकसेनप सचिवसब आये बिकल वियोग ॥
शीलसिन्धु सुनि गुरु आगमनू । सीय समीपराखि रिपुदमनू ॥
चले सवेग राम तेहिकाला । धीर धर्म्मधुर दीनदयाला ॥
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे । दण्ड प्रणाम करन प्रभुलागे ॥
मुनिवर धाइ लिये उरलाई । प्रेम उमंगि भेंटे दोउ भाई ॥
प्रेम पुलकि केवट कहिनामू । कीन्ह दूरिते दण्ड प्रणामू ॥
राम सखा ऋषि बरबस भेंटे । जनुमहि लुटत सनेह समेटे ॥
रघुपति भक्ति सुमंगल मूला । नभ सराहिं सुर बर्षहिंफूला ॥
इहिसम निपट नीचकोउ नाहीं । बड़वशिष्ठ समको जगमाहीं ॥
दो० जेहिलखिलषणहुतेअधिकमिलेमुदितमुनिराउ ।
सो सीतापति भजनको प्रकट प्रताप प्रभाउ ॥
आरत लोग राम सब जाना । करुणाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहिभांति रहा अभिलाषी । तेहितेहिकी तैसीरुचिराखी ॥
सानुज मिलिपलमहं सबकाहू । कीन्ह दूरिदुख दारुणदाहू ॥
यह बड़ि बात राम कै नाहीं । जिमि घटकोटि एकरबिछाहीं ॥
मिलि केवटहिउमंगि अनुरागा । परजनसकल सराहहिंभागा ॥

देखी राम दुखित महतारी । जनु सुबेलि अवलीहिममारी ॥
प्रथम राम भेंटे कैकेयी । सरल स्वभाव भक्तिमति भेई ॥
पगपरि कीन्ह प्रबोध बहोरी । कालकर्म्मबिधिशिरधरिखोरी ॥
दो० भेंटे रघुबर मातुसब करि प्रबोध परितोष ।
अम्ब ईश आधीन जग काहु न देइयदोष ॥
गुरुतिय पद बन्दे दोउ भाई । सहित बिप्रतियजे संगआई ॥
गंग गौरिसम सब सनमानी । देहिं अशीश मुदितमृदुबानी ॥
गहिपद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटी सम्पति अतिरंका ॥
पुनि जननी चरणन दोउभ्राता । परे प्रेम व्याकुलसब गाता ॥
अति अनुराग अम्ब उर लाये । नयननसनेहसलिलअनहवाये ॥
तेहि अवसर कर हर्ष बिषादू । किमिकबिकहैमूकजिमिस्वादू ॥
मिलिजननिहिंसानुज रघुराऊ । गुरुसनकहेउकिधारियपाऊ ॥
पुरजन पाइ मुनीश नियोगू । जलथल तकितकिउतरेलोगू ॥
दो० महिसुर मंत्री मातुगुरु गने लोग लियेसाथ ।
पावनआश्रमगमनकियभरतलषणरघुनाथ ॥
सीय आइ मुनिवर पगलागी । उचित अशीषलही मनमांगी ॥
गुरुपत्निहि मुनितियन समेता । मिलि सप्रेमकहिजाइनजेता ॥
बन्दि बन्दि पद सियसबहीके । आशिष बचनलहे प्रियजीके ॥
सासु सकल जब सीयनिहारी । मूंदेउ नयनसहमिसुकुमारी ॥
परी बधिक बश मनहुं मराली । काहकीन्ह करतार कुचाली ॥
तिन्हसियनिरखिनिपटदुखपावा । सोसबसहियजोदैवसहावा ॥
जनक सुता तब उरधरि धीरा । नील नलिनलोचनभरिनीरा ॥
मिली सकलसासुन्ह शिरनाई । तेहिअवसर करुणामहिछाई ॥
दो० लागिलागिपग सबनिसिय भेंटतिअतिअनुराग ।
हृदय अशीशहिं प्रेमवश रहिहौ भरी सुहाग ॥
बिकल सनेह सीय सब रानी । बैठनसबहिकहेउ गुरुज्ञानी ॥
प्रथम कहीजग गतिमुनिनाथा । कहे कछुक परमारथ गाथा ॥

नृपकर सुरपुर गमन सुनावा । सुनि रघुनाथदुसहदुखपावा ॥
मरण हेतु निज नेह बिचारी । भे अति बिकलधीरधुरधारी ॥
कुलिश कठोर सुनत कटुबानी । बिलपतलषणसीयसब रानी ॥
शोकबिकल अतिसकलसमाजू । मानहुं राज अकाजेउ आजू ॥
मुनिवर बहुरि राम समुझाये । सहितसमाजसुसरितअन्हाये ॥
व्रतनिरम्बुतेहिदिन प्रभुकीन्हा । मुनिहुंकहेजलकाहुन लीन्हा ॥
दो० भोरभये रघुनन्दनहिं जो मुनि आयसुदीन्ह ।
श्रद्धा भक्ति समेत प्रभु सो सबसादर कीन्ह ॥
करिपितुक्रिया वेद जसबरणी । भे पुनीत पातक तम तरणी ॥
जासु नाम पातक अघ तूला । सुमिरत सकल अमंगलमूला ॥
शुद्ध सोभयेसाधु सम्मत अस । तीरथ आवाहन सुरसरिजस ॥
शुद्ध भये दुइ बासर बीते । बोले गुरु सन राम पिरीते ॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी । कन्दमूल फल अम्बु अहारी ॥
सानुजभरत सचिव सब माता । देखिमोहिंपलजिमियुगजाता ॥
सब समेत पुर धारिय पाऊ । आपु इहां अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेउं सब कियउंढिठाई । उचित होइ तसकरियगुसाई ॥
दो० धर्महेतु करुणायतन कसन कहहु अस राम ।
लोकदुखित दिनदुइदरशदेखिलहहिंबिश्राम ॥
राम बचन सुनिसमय समाजू । जनुजलनिधिमहंबिकलजहाजू ॥
सुनि मुनि गिरा सुमंगलमूला । भयउ मनहुं मारुत अनुकूला ॥
पावनपय तिहुंकाल अन्हाहीं । जेहिबिलोकि अघओघनशाहीं ॥
मंगलमूरति लोचन भरिभरि । निरखहिंहर्षिदण्डवतकरिकरि ॥
राम शैल बन देखन जाहीं । जहंसुखसकलसकलदुखनाहीं ॥
झरना झरहिं सुधासम बारी । त्रिविधितापहरत्रिविधिबयारी ॥
बिटपबेलितृण अगणित जाती । फल प्रसून पल्लव बहु भांती ॥
सुन्दर शिला सुखद तरुछाहीं । जाइबरणि छविबन केहिपाहीं ॥
दो० सरित सरोरुह जल विहग कूजत गुंजतभृङ्ग ।

बैर बिगत बिहरत बिपिन मृगबिहंग बहुरंग ॥
कोल्ह किरात भिल्ल बनबासी । मधु शुचिसुंदरस्वादुसुधासी ॥
भरि भरि पर्णकुटी रचि रूरी । कन्द मूल फल अंकुर जूरी ॥
सबहिंदेहिं करिबिनयप्रणामा । कहिकहिस्वादुभेदगुणनामा ॥
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं । फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेह मगनमृदुबानी । मानत साधु प्रेम पहिंचानी ॥
तुम सुकृती हम नीचनिषादा । पावा दरशन राम प्रसादा ॥
हमहिंअगमअतिदरशतुम्हारा । जसमरुधरणि देवसरिधारा ॥
राम कृपालु निषाद नेवाजा । परिजनप्रजाचलियजसराजा ॥
दो० यह जियजानि सकोचतजि करियक्षोह लखिनेहु ।
हमहिं कृतारथ करनलगि फल तृण अंकुर लेहु ॥
तुम प्रिय पाहुन बन पगुधारे । सेवा योगन भाग हमारे ॥
देव कहा हम तुमहिं गुसांई । ईंधन पात किरात मिताई ॥
यह हमार अति बड़ सेवकाई । लेहि न बासन बसन चुराई ॥
हम जड़जीव जीव गण घाती । कुटिल कुचालीकुमतिकुजाती ॥
पापकरत निशि बासर जाहीं । नहिंकटिपटनहिं पेटअघाहीं ॥
सपनेहुं धर्म्म बुद्धिकस काऊ । यहरघुनन्दन दरश प्रभाऊ ॥
जब ते प्रभु पद पद्म निहारे । मिटे दुसह दुखदोष हमारे ॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे । तिन्हके भागसराहन लागे ॥
छं० लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं ।
बोलनि मिलनिसियरामचरणसनेह लखिसुखपावहीं ॥
नरनारिनिदरहिं नेहनिजसुनिकोल्ह भिल्लनकी गिरा ।
तुलसी कृपा रघुबंशमणि की लोह लै नौका तरा ॥
सो० बिहरहिंबनचहुंओरप्रतिदिन प्रमुदित लोगसब ।
जलजिमि दादुरमोर भयेपीन पावस प्रथम ॥
पुरजन नारिमगन अतिप्रीती । बासरजाहिं पलकसम बीती ॥
सीय सासुप्रति बेष बनाई । सादर करहिंसरिस सेवकाई ॥

लखा न मर्मराम बिनु काहू । माया सब सिय माया नाहू ॥
सीयसासुसेवासबकीन्हीं । तिन्हलहिसुखशिष आशिषदीन्हीं ॥
लखिसियसहितसरलदोउभाई । कुटिलरानि पछिताइअघाई ॥
अब जियमहिं याचति कैकेयी । मोहिं नबीचबिधिमीचुनदेई ॥
लोकहु वेदविदित कवि कहहीं । रामबिमुखखलनरकनलहहीं ॥
यह संशय सब के मनमाहीं । रामगवनबिधिअवधकिनाहीं ॥
दो० निशिननींद नहिंभूखदिन भरतबिकल सुठिशोच ।
नीचकीच बिचमगन जस मीनहिं सलिलसकोच ॥
कीन्हमातु मिसुकाल कुचाली । ईतिभीति जसपातक शाली ॥
केहि बिधिहोइ राम अभिषेकू । मोहिं अब करतउपाय नएकू ॥
अवशि फिरहिं गुरुआयसुमानी । पुनिपुनिकहबरामरुचिजानी ॥
मातु कहें बहुरहिं रघुराऊ । रामजननिहठकरबकिकाऊ ॥
मोहिं अनुचर करकेतिकबाता । तेहिमहंकुसमयबामबिधाता ॥
जोहठकरौं तौ निपट कुकरमू । हरगिरिते गुरु सेवक धरमू ॥
एकौ युक्ति न मन ठहरानी । शोचतभरतहिंरैनि सिरानी ॥
प्रात अन्हाइ प्रभुहि शिरनाई । बैठत पठये ऋषय बुलाई ॥
दो० गुरु पद कमल प्रणामकरि बैठे आयसु पाइ ।
बिप्र महाजन सचिव सब जुरेसभासद आइ ॥
बोले मुनिवर समय समाना । सुनहुसभासद भरतसुजाना ॥
धर्म्म धुरीन भानुकुल भानू । राजाराम स्ववश भगवानू ॥
सत्यसिंधु पालक श्रुति सेतू । रामजन्म जग मंगल हेतू ॥
गुरुपितुमातु बचन अनुसारी । खलदलदलनदेवहितकारी ॥
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ । कोउन रामसमजानयथारथ ॥
बिधिहरिहरशशिरबिदिशिपाला । मायाजीवकरमकलिकाला ॥
अहिप महिप जहंलगिप्रभुताई । योगसिद्ध निगमागम गाई ॥
करि बिचार जिय देखहुनीके । रामरजाय शीश सबहीके ॥
दो० राखे राम रजाय रुख हम सबकर हित होइ ।

समुझि सयानेकरहु अब सबमिलिसम्मतसोइ ॥
सब कहं सुखद राम अभिषेकू । मंगलु मूल मोद मगु एकू ॥
केहिबिधिअवध चलहिंरघुराई । कहहुसमुझिसोइकरैं उपाई ॥
सब सादर मुनिवर सुनिबानी । नयपरमारथ स्वारथ सानी ॥
उतर न आव लोग भे भोरे । तबशिरनाय भरत करजोरे ॥
भानुबंश भे भूप घनेरे । अधिक एकते एक बड़ेरे ॥
जन्म हेतु सबकहं पितु माता । करम शुभा शुभदेइविधाता ॥
दलि दुख तजै सकलकल्याना । अस अशीष राउरजगजाना ॥
सो गोसाइं बिधिगति जेइंछेकी । सकै को टारि टेक जो टेकी ॥
दो० बूझिय मोहिं उपायअब सो सबमोर अभाग ।
सुनि सनेह मयबचनगुरु उरउपजा अनुराग ॥
तात बात फुर राम कृपाहीं । रामबिमुखसुखसपनेहु नाहीं ॥
सकुचौं तात कहत इकबाता । अरधतजहिंबुधसर्बस जाता ॥
तुम कानन गवनहुंदोउ भाई । फिरिहहिंलषण सीयरघुराई ॥
सुनि शुभबचन हर्ष दोउ भ्राता । भे प्रमोद परिपूरण गाता ॥
मन प्रसन्न तन तेज बिराजा । जनु जिय राउ रामभे राजा ॥
बहुत लाभ लोगन्ह लघुहानी । समदुखसुख सबरोवहिंरानी ॥
कहहिं भरत मुनिकहासोकीन्हे । फलजगजीवनअभिमतदीन्हे ॥
कानन करउं जन्मभरि बासू । इहिते अधिक न मोर सुपासू ॥
दो० अन्तरयामी रामसिय तुमसर्वज्ञ सुजान ।
जोफुरकहहुंतोनाथनिजकीजियबचनप्रमान ॥
भरत बचनसुनि देखिसनेहू । सभासहितमुनि भयउबिदेहू ॥
भरत महामहिमा जल रासी । मुनिमतिठाढ़ितीरअबलासी ॥
भा चह पार यतन बहु हेरा । पावति नाव न बोहित बेरा ॥
और करहिं को भरत बड़ाई । सरिस सीपरी सिन्धु समाई ॥
भरत मुनिहिं मन भीतर पाये । सहित समाज रामपहं आये ॥
प्रभु प्रणामकरिदीन्हसुआसन । बैठेसबमुनि सुनिअनुशासन ॥

बोले मुनिबर बचन बिचारी । देशकाल अवसर अनुहारी ॥
सुनहु राम सर्बज्ञ सुजाना । धर्मनीति गुणज्ञाननिधाना ॥
दो० सबके उर अंतर बसहु जानहु भाव कुभाय ।
पुरजन जननी भरतहितहोइसो करियउपाय ॥
आरत कहहिंबिचार न काऊ । सूझ जुंवारिहि आपन दाऊ ॥
सुनि मुनिवचन कहतरघुराऊ । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
सबकर हित रुख राउर राखे । आयसुदिये मुदित फुर भाषे ॥
प्रथम जो आयसु मोकहं होई । माथे मानिकरौं सिख सोई ॥
पुनि जेहिकहं जसहोब रजाई । सो सब भांतिकरिहिसेवकाई ॥
कह मुनि राम सत्य तुमभाखा । भरत सनेह बिचार न राखा ॥
तेहिते कहौं बहोरि बहोरी । भरत भक्ति भइममसतिभोरी ॥
मोरे जान भरत रुचि राखी । जो कीजियसोशुभशिवसाखी ॥
दो० भरत बिनय सादरसुनिय करियबिचार बहोरि ।
करब साधुमत लोकमत नृपनयनिगमनिचोरि ॥
गुरु अनुराग भरत पर देखी । राम हृदय आनन्द बिशेखी ॥
भरतहि धर्म धुरंधर जानी । निज सेवकतन मानसबानी ॥
बोले गुरु आयसु अनुकूला । बचन मंजु मृदु मंगल मूला ॥
नाथ शपथ पितु चरण दोहाई । भयउ न भुवनभरतसमभाई ॥
जे गुरु पद अंबुज अनुरागी । ते लोकहु वेदहु बड़ भागी ॥
राउर जापर अस अनुरागू । को कहिसकै भरतसमभागू ॥
लखि लघुबंधु बुद्धि सकुचाई । करत बदन पर भरतबड़ाई ॥
भरत कहहिं सो किये भलाई । असकहि राम रहेअरगाई ॥
दो० तब मुनि बोले भरतसन सबसकोच तजितात ।
कृपासिंधु प्रिय बन्धुसन कहहु हृदयकी बात ॥
सुनि मुनि बचन राम रुखपाई । गुरु साहब अनुकूल अघाई ॥
लखि अपने शिर सबछरभारू । कहिनसकैंकछु करैंबिचारू ॥
पुलक शरीर सभा भे ठाढ़े । नीरज नयन नेह जल बाढ़े ॥

कहब मोर मुनिनाथ निबाहा । यहिते अधिक कहौंमैंकाहा ॥
मैं जानौं निज नाथ सुभाऊ । अपराधिहु परकोहन काऊ ॥
मोपर कृपा सनेह बिशेखी । खेलत खुनसकबहुंनहिंदेखी ॥
शिशुपन ते परिहरेउ न संगू । कबहुंन कीन्हमोर मनभंगू ॥
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोही । हारेहुखेलि जितावहिं मोही ॥
दो० महूं सनेह सकोचबश सनमुख कहेउं न बैन ।
दरशन तृप्ति न आजुलगि प्रेमपियासे नैन ॥
बिधिनसकेउसहिमोर दुलारा । नीच बीच जननी मिसुपारा ॥
इहौ कहत मोहिं आजुनशोभा । आपुनसमुझिसाधुशुचिकोभा ॥
मातु मन्द मैं साधु सुचाली । उरअस आनत कोटि कुचाली ॥
फरै कि कोदव बालि सुशाली । मुकता श्रवै कि शंबुकताली ॥
सपनेहु दोष कलेश न काहू । मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥
बिनु समुझे निजअघ परिपाकू । जानेउ जाइ जननिकह काकू ॥
हृदय हेरि हारेउं सब ओरा । एकहिभांति भलिहभलमोरा ॥
गुरु गुसाइं साहिब सिय रामू । लागत मोहिं नीक परिणामू ॥
दो० साधु सभा प्रभु गुरु निकटकहौंसुथलसतिभाउ ।
प्रेम प्रपंच कि झूठफुर जानहिं मुनि रघुराउ ॥
भूपति मरण प्रेम प्रण राखी । जननीकुमतिजगतसबसाखी ॥
देखिन जाहिं बिकल महतारी । जरहि दुसहज्वरपुरनरनारी ॥
महीं सकल अनरथ कर मूला । सोसुनिसमुझिसहौंसबशूला ॥
सुनिबन गमनकीन्ह रघुनाथा । करिमुनिबेषलषणसियसाथा ॥
बिनु पनहीं अरु प्यादेहि पाये । शंकर साखि रह्योंइहि धाये ॥
बहुरि निहारि निषाद सनेहू । कुलिशकठिनउर भयउनबेहू ॥
अब सब आंखिन देखेउं आई । जियत जीव जड़ सबैसहाई ॥
जिनहिंनिरखिमगु सांपिनबीछी । तजहिंबिषमबिषतापशुतीछी ॥
दो० तेइ रघुनन्दन लषणसिय अनहित लागेजाहि ।
तासु तनयतजि दुसह दुख दैव सहावै काहि ॥

सुनि अतिबिकलभरतबरबानी । आरतिप्रीति बिनयनयसानी ॥
शोक मगन सब सभाखंभारू । मनहुंसकलबनपर्यो तुषारू ॥
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी । भरत प्रबोध कीन्हमुनिज्ञानी ॥
बोले उचित बचन रघुनन्दू । दिनकर कुल कैरव बनचन्दू ॥
तात जीय जनि करहुगलानी । ईश अधीन जीव गतिजानी ॥
तीनकाल त्रिभुवन मत मोरे । पुण्यश्लोक तात करतोरे ॥
उरआनत तुमपर कुटिलाई । जाइलोक परलोक नशाई ॥
दोषदेहिं जननिहिं जड़तेई । जिन्हगुरु साधुसभानहिंसेई ॥

दो० मिटहिं पाप परिपंच सब अखिल अमंगल भार ।
लोक सुयश परलोकसुख सुमिरत नामतुम्हार ॥

कहौं सुभाव सत्य शिवसाखी । भरत भूमि रह राउर राखी ॥
तात कुतर्क करहु जिय जाये । बैर प्रेम नहिं दुरै दुराये ॥
मुनिगणनिकटबिहंगमृगजाहीं । बाधक बधिकबिलोकिपराहीं ॥
हितअनहित पशुपक्षिउ जाना । मानुष तनगुणज्ञान निधाना ॥
तात तुमहिं मैं जानौं नीके । करौंकहा असमंजस जीके ॥
राखेउ राउ सत्यमोहिं त्यागी । तनपरिहरेउ प्रेम प्रणलागी ॥
तासु बचन मेटत मन शोचू । तेहितेअधिक तुम्हारसंकोचू ॥
तापर गुरुमोहिं आयसुदीन्हा । अवशिजोकहहुचहौंसोकीन्हा ॥

दो० मन प्रसन्नकरि सकुचतजि कहहु करौं सोआज ।
सत्य सिंधु रघुबर बचन सुनिभा सुखी समाज ॥

सुरगण सहित सभय सुरराजू । शोचहिं चाहत होनअकाजू ॥
करत बिचार बनतकछु नाहीं । राम शरण सबके मनमाहीं ॥
बहुरि बिचार परस्पर कहहीं । रघुबरभक्त भक्ति बशअहहीं ॥
सुधिकरि अम्बरीष दुर्बासा । भेसुरसुरपतिनिपटनिरासा ॥
सहे सुरन्ह बहुकाल बिषादा । नरहरि कियेप्रकटप्रहलादा ॥
लगिलगिकानकहहिंधुनिमाथा । अब सुरकाज भरतके हाथा ॥
आन उपाय न देखिय देवा । मानत राम सुसेवक सेवा ॥

हियसप्रेम सेवहिंसब भरतहिं । निजगुणशीलरामबशकरतहिं ॥

दो० सुनिसुरमतसुरगुरुकहेउ भल तुम्हारबड़ भाग।
सकल सुमंगलमूलजग भरत चरण अनुराग ॥

सीता पति सेवक सेवकाई । कामधेनु शत सरित सुहाई ॥
भरत भक्ति तुम्हरे मन आई । तजहुशोच बिधि बात बनाई ॥
देखि देवपति भरत प्रभाऊ । सहज सुभाव विवशरघुराऊ ॥
मन थिर करहु देव डर नाहीं । भरतहिजानि राम परिछाहीं ॥
सुनि सुरगुरु सुर सम्मतशोचू । अन्तर्यामी प्रभुहि सकोचू ॥
निजशिरभार भरतजियजानी । करतकोटिबिधि उरअनुमानी ॥
करि बिचार मनदीन्ह्योटीका । राम रजायसु आपनि नीका ॥
निज प्रणतजिराखेउप्रणमोरा । छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा ॥

दो० कीन्ह अनुग्रह अमितअतिसबबिधिसीतानाथ ।
करिप्रणाम बोले भरत जोरि जलजयुगहाथ ॥

कहउं कहावउं का अबस्वामी । कृपा अम्बुनिधि अन्तर्यामी ॥
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला । मिटीमलिनमनकलपितशूला ॥
अपडर डरउं न शोच समूले । रबिहि न दोष देवदिशिभूले ॥
मोर अभाग मातु कुटिलाई । बिधिगतिविषमकालकठिनाई ॥
पांवरोपिसबमिलिमोहिं घाला । प्रणतपालप्रण आपन पाला ॥
यह नइरीति न राउरि होई । लोकहु वेद विदित नहिंगोई ॥
जग अनभल भलएक गुसाईं । कहिय होइभलकासु भलाई ॥
देव देव तरु सरिस सुभाऊ । सनमुख बिमुखनकाहुहिकाऊ ॥

दो० जाइ निकट पहिंचानितरु छांहशमन सबशोच ।
मांगत अभिमतपाव फल राउ रंकभल पोच ॥

लखिसबबिधिगुरुस्वामिसनेहू । मिटेउ क्षोभ नहिंमन संदेहू ॥
अब करुणाकर कीजिय सोई । जनहितप्रभुचितक्षोभन होई ॥
जो सेवक साहिब संकोची । निजहितचहै तासुमति पोची ॥
सेवक हित साहिब सेवकाई । करै सकलसुख लोभबिहाई ॥

स्वारथ नाथ फिरे सबहीका । किये रजाइ कोटिबिधिनीका ॥
यह स्वारथ परमारथ सारू । सकलसुकृतफलसुगतिसिंगारू॥
देव एक बिनती सुनि मोरी । उचित होइ तसकरब बहोरी ॥
तिलकसमाजसाजिसबआना । करिय सुफल प्रभुजोमनमाना ॥
दो० सानुज पठइय मोहिंबन कीजियसबहिसनाथ ।
नातरु फेरिय बन्धुदोउ नाथ चलौं मैं साथ ॥
नतरु जाहिं बन तीनिउ भाई । बहुरिय सीय सहित रघुराई ॥
जेहि बिधिप्रभु प्रसन्नमनहोई । करुणासागर कीजिय सोई ॥
देव दीन्ह सब मोपर भारू । मोरे नीति न धर्म्म बिचारू ॥
कहौं बचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत के चित चेतू ॥
उतर देइ बिनु स्वामि रजाई । सो सेवक लखिलाज लजाई ॥
असमैं अवगुण उदधि अगाधू । स्वामि सनेह सराहत साधू ॥
अब कृपाल मोहिं सोमतभावा । सकुचस्वामि मनजाइनपावा ॥
प्रभुपद शपथकहौं सतिभाऊ । जग मंगल हित एक उपाऊ ॥
दो० प्रभु प्रसन्न मन सकुचतजि जोजेहि आयसुदेव ।
सो शिरधरिधरिकरहिंसब मिटिहि अनटअवरेव ॥
भरत बचनशुचिसुनिसुर हरषे । साधु सराहि सुमन सुरबरषे ॥
असमंजस बश अवध निवासी । प्रमुदितमनतापस बनबासी ॥
चुप रहिगे रघुनाथ सकोची । प्रभुगतिदेखि सभासबशोची ॥
जनक दूत तेहि अवसरआवा । मुनिबशिष्ठसुनि बेगिबुलावा ॥
करि प्रणाम तिन्ह रामनिहारे । वेष देखि भे निपट दुखारे ॥
दूतहिं मुनिबर पूंछी बाता । कहहु बिदेह भूपकुशलाता ॥
सुनि सकुचाइ नाइ महिमाथा । बोले चरबर जोरे हाथा ॥
बूझत राउर सादर साईं । कुशल हेतु सो भयउ गुसाईं ॥
दो० नाहिंत कोशल नाथके साथकुशल गइ नाथ ।
मिथिला अवध बिशेषते जगसब भयउअनाथ ॥
कोशलपतिगति सुनिजनकौरा । भे सब लोग शोचबश बौरा ॥

जेहिदेखातेहि समय विदेहू । नाम सत्य असलाग न केहू ॥
नारि कुचालिसुनतमहिपाले । सूझनकछुजसमणिबिनुब्याले ॥
भरत राज रघुबर बन बासू । भा मिथिलेशहि हृदय हरासू ॥
नृप बूझे बुध सचिव समाजू । कहहुबिचारि उचितका आजू ॥
समुझिअवध असमंजसदोऊ । चलियकिरहियनकहकछुकोऊ॥
नृपति धीरधरिहृदय बिचारी । पठये अवध चतुर चर चारी ॥
बूझि भरतगति भाउ कुभाऊ । आयहु बेगि न होइ लखाऊ ॥

दो० गये अवधचर भरत गति बूझिदेखि करतूति ।
चले चित्रकूटहि भरत चार चले तिरहूति ॥

बूतन आइ भरत की करणी । जनक समाजयथामतिबरणी ॥
सुनिगुरुपुरजनसचिवमहीपति । भेसबशोच सनेहबिकलमति ॥
धरि धीरज करि भरत बड़ाई । लिये सुभट साहनी बुलाई ॥
घर पुर देश राखि रखवारे । हय गय रथ बहुयान संवारे ॥
दुघड़ी साधि चले ततकाला । कियविश्रामनमगमहिपाला ॥
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा । चले यमुन उतरनसब लागा ॥
खबरि लेन हम पठये नाथा । तिन्हकहिअसमहिनायउमाथा॥
साथकिरात छसातक दीन्हे । मुनिवर तुरत बिदाचर कीन्हे ॥

दो० सुनत जनक आगमन सबहर्षेउअवध समाज ।
रघुनन्दनहिं सकोचबड़ शोच बिवशरघुराज ॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेयी । काहि कहै केहि दूषण देई ॥
अस मनआनिमुदित नरनारी । भयउ बहोरि रहब दिनचारी ॥
इहि प्रकार गत बासर सोऊ । प्रात अन्हान लगे सबकोऊ ॥
करि मज्जन पूजहिं नरनारी । गणपति गौरि पुरारि तमारी ॥
रमा रमण पद बन्दि बहोरी । बिनवहिं अंचल अंजुलिजोरी ॥
राजा राम जानकी रानी । आनंद अवधि अवधरजधानी ॥
सुबशबसैंफिरिसहितसमाजा । भरतहि राम करैं युवराजा ॥
इहि सुखसुधा सींचिसबकाहू । देव देहु जग जीवन लाहू ॥

दो० गुरु समाज भाइन सहित राम राज पुर होउ ।
अछत राम राजाअवध मरिय मांगुसबकोउ ॥

सुनि सनेहमय पुरजन बानी । निन्दहिंयोगविरतिमुनिज्ञानी ॥
इहिबिधिनित्यकर्मकरि पुरजन । रामहिंकरहिंप्रणामपुलकितन ॥
ऊंच नीच मध्यम नरनारी । लहैंदरशनिजनिज अनुहारी ॥
सावधान सबही सनमानहिं । सकलसराहतकृपानिधानहिं ॥
लरिकाईं ते रघुबर बानी । पालत प्रीति रीति पहिंचानी ॥
शील सकोच सिंधु रघुराऊ । सुमुखसुलोचन सरलसुभाऊ ॥
कहत राम गुणगण अनुरागे । सब निजभाग सराहन लागे ॥
हम सब पुण्यपुंज जग थोरे । जिनहिं राम जानतकरिमोरे ॥

दो० प्रेममगनतेहिसमयसब सुनिआवतमिथिलेश ।
सहित सभा संभ्रम उठे रविकुलकमलदिनेश ॥

आगे गमन कीन्ह रघुनाथा । भाइ सचिवगुरु पुरजनसाथा ॥
गिरिवरदीख जनक नृप जबहीं । करि प्रणाम त्यागारथतबहीं ॥
राम दरश लालसा उछाहू । पथ श्रमलेश कलेश न काहू ॥
मन तहं जहं रघुवर बैदेही । बिनुमनतनदुखसुखसुधिकेही ॥
आवत जनक चले इहि भांती । सहित सनेह प्रेममदमाती ॥
आये निकट देखि अनुरागे । सादर मिलन परस्पर लागे ॥
लगे जनक मुनिगणपदवन्दन । ऋषिनप्रणामकीन्हरघुनन्दन ॥
भाइन सहितराममिलिराजहिं । चले लेवाइ समेत समाजहिं ॥

दो० आश्रम सागर शांतरस पूरण पावन पाथ ।
सैन मनहुं करुणासरित लियेजात रघुनाथ ॥

बोरति ज्ञान बिराग करारे । बचनसशोक मिलतनदनारे ॥
शोच उसास समीर तरंगा । धीरज तट तरुवरकर भंगा ॥
विषम बिषाद तुरावति धारा । भयभ्रम भंवरावर्त अपारा ॥
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा । सकहि न खेइ एकनहिंआवा ॥
बनचर कोल किरात बिचारे । थकेविलोकि पथिकहियहारे ॥

आश्रम उदधि मिली जब जाई । मनहुं उठेउअंबुधिअकुलाई ॥
शोकविकल दोउ राज समाजा । रहा न ज्ञानन धीरज लाजा ॥
भूप रूप गुणशील सराही । शोचहिं शोकसिंधु अवगाही॥
छ० अवगाहिशोकसमुद्रशोचहिंनारिनरव्याकुलमहा ।
दैदोषसकलसरोषबोलहिं बामबिधिकीन्हीकहा ॥
सुरसिद्धतापसयोगिजन मुनिदशादेखि विदेहकी ।
तुलसी नसमरथकोउजोतरिसकैसरितसनेहकी ॥
सो० किये अमितउपदेश जहंतहं लोगन मुनिबरन ।
धीरज धरिय नरेश कहेउ बशिष्ठ बिदेह सन ॥
जासुज्ञानरवि भवनिशिनाशा ।बचनकिरणमुनिकमलबिकाशा॥
तेहिकि मोह महिमा नियराई । यहसिय राम सनेह बड़ाई ॥
विषयी साधक सिद्ध सयाने । त्रिविधजीव जग वेदबखाने ॥
राम सनेह सरस मन जासू । साधु सभा बड़आदर तासू ॥
सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञाना । कर्णधार बिनुजिमिजलयाना ॥
मुनि बहुबिधिबिदेह समुझाये । राम घाट सब लोगअन्हाये ॥
सकल शोक संकुल नरनारी । सो बासर बीतेउ बिनु बारी ॥
पशुखगमृगन्हनकीन्ह अहारा ।प्रियपरिजनकरकवनबिचारा ॥
दो० दोउ समाज निमि राजरघु राजनहा ने प्रात ॥
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृशगात ॥
जे महिसुर दशरथ पुर बासी । जेमिथिलापतिनगर निवासी ॥
हंस बंश गुरु जनक पुरोधा । जिन्हजगमगपरमारथशोधा ॥
लगे कहन उपदेश अनेका । सहित धर्मनयविरतिविवेका॥
कौशिक लहि कहिकथापुरानी । समझाई सब सभा सु बानी ॥
तब रघुनाथ कौशिकहि कहेऊ । नाथकालिबिनु जलसबरहेऊ ॥
मुनिकह उचित कहत रघुराई । गयउ बीति दिनपहरअढ़ाई ॥
ऋषिरुखलखिकहत्रिरहुतिराजू । इहां उचितनहिंअशनअनाजू॥
कहा भूप भल सबहि सोहाना । पाइ रजायसु चले नहाना ॥

दो० तेहि अवसर फलफूलदल मूल अनेक प्रकार।
लैआये बनचर बिपुल भरि भरि कांवरि भार ॥
कामद भे गिरि राम प्रसादा। अवलोकतअपहरत बिषादा ॥
सर सरितावन भूमि बिभागा। जनु उमंगत आनंदअनुरागा ॥
बेलि बिटप सब सफलसफूला। बोलतखगमृग अतिअनुकूला॥
तेहि अवसर बनअधिक उछाहू। त्रिबिधसमीरसुखदसबकाहू॥
जाइ न बरणि मनोहर ताई। जनुमहिकरतजनकपहुनाई ॥
तब सब लोग नहाइ नहाई। राम जनक मुनिआयसुपाई ॥
देखि देखि तरुवर अनुरागे। जहं तहंपुरजन उतरनलागे ॥
दल फल फूलकन्दबिधि नाना। पावन सुंदर सुधा समाना ॥
दो० सादर सबकहं रामगुरुपठये भरि भरि भार।
पूजिपितर सुर अतिथि गुरुलगेकरनफल हार ॥
इहिबिधि बासर बीते चारी। रामनिरखि नरनारिसुखारी ॥
दुहु समाज अस रुचिमनमाहीं। बिनुसियरामफिरबभलनाहीं॥
सीता राम संग बन बासू। कोटिअमरपुर सरिस सुपासू॥
परि हरि लषण राम बैदेही। जेहिघर भावबामबिधि तेही ॥
दाहिनदैव होइ जब सबहीं। राम समीप बसिय बनतबहीं॥
मन्दाकिनि मज्जन तिहुंकाला। राम दरशमुदमंगल माला ॥
अटनरामगिरि बन तापसथल।अशनअमियसमकन्दमूलफल॥
सुख समेत संबत दुइ साता। पलसमहोहिंनजानिय जाता॥
दो० इहिसुखयोगनलोगसब कहहिंकहांअसभाग।
सहज सुभावसमाजदुहुं रामचरण अनुराग ॥
इहि बिधिसकल मनोरथकरहीं। बचन सप्रेम सुनतमनहरहीं॥
सीय मातु तेहि समय पठाई। दासी देखि सुअवसर आई ॥
सावकाश सुनि सब सियसासू। आई जनक राज रनिवासू ॥
कौशल्या सादर सनमानी। आसनदीन्हसमयसमआनी॥
शील सनेह सरस दुहंओरा। द्रवहिंदेखिसुनिकुलिशकठोरा॥

पुलकशिथिलतनुवारिबिलोचन।महिनखलिखनलगींसबशोचन॥
सब सियराम प्रेम की मूरति । जनु करुणा बहुवेष बिसूरति ॥
सीय मातुकह बिधिबुधिबांकी । जिमि पयफेनुफारिपबिटांकी ॥
दो० सुनियसुधा देखियगरल सबकरतूति कराल ।
जहं तहं काक उलूकबक मानससकृतमराल ॥
सुनिसशोचकह देवि सुमित्रा । बिधिगतिअतिबिपरीतबिचित्रा ॥
जो सृजि पालै हरै बहोरी । बाल केलिसमबिधिमति भोरी ॥
कौशल्या कह दोष न काहू । कर्मबिबश दुखसुख क्षतिलाहू ॥
कठिनकर्मगतिजान बिधाता । सो शुभ अशुभकर्मफल दाता ॥
ईश रजाइ शीश सबहीके । उतपतिथिति लयबिषयअमीके ॥
देवि मोहवश शोचियबादी । बिधिप्रपंच असअचल अनादी ॥
भूपतिजियबमरबउर आनी । शोचियसखिलखिनिजहितजानी॥
सीयमातु कह सत्य सुबानी । सुकृतीअवधिअवधपतिरानी ॥
दो० लपणरामसिय जाहिंबन भलपरिणामनपोच ।
गहबरिहियकह कौशला मोहिं भरतकरशोच ॥
ईश प्रसाद अशीष तुम्हारी । सुत सुतबधू देवसरि बारी ॥
राम शपथ मैं कीन्ह न काऊ । सोकरि सखी कहौंसतिभाऊ ॥
भरतशीलगुण बिनय बड़ाई । भायप भक्ति भरोस भलाई ॥
कहत शारदहु कै मति हीचे । सागर सीपकि जाहिंउलीचे ॥
जानौं सदा भरत कुल दीपा । बार बार मोहिंकहेउमहीपा ॥
कसे कनकमणि पारिख पाये । पुरुष परखियेसमय सुभाये ॥
अनुचित आजु कहबअसमोरा । शोक सनेह सयानप थोरा ॥
सुनि सुरसरिसमपावनिबानी । भईं सनेह बिकलसब रानी ॥
दो० कौशल्या कह धीरधरि सुनहु देवि मिथिलेशि ।
को बिवेकनिधि बल्लभहितुमहिंसकैउपदेशि ॥
रानि रायसन अवसर पाई । आपनिभांतिकहब समुझाई ॥
राखियलषणभरत गवनहिंबन । जो यह मत मानै महीपमन ॥

तौ भलयतन करब सुविचारी । मोरे शोच भरतकर भारी ॥
गूढ़ सनेह भरत मनमाहीं । रहे नीकमोहिं लागतनाहीं ॥
लखिस्वभावसुनिसरलसुबानी । सबभईमगनकरुणारससानी ॥
नभ प्रसूनझरि धन्य धन्यधुनि । शिथिलसनेहसिद्धयोगीमुनि ॥
सबरनिवास थकितलखिरहेऊ । तब धरिधीर सुमित्राकहेऊ ॥
देवि दण्ड युग यामिनि बीती । राममातु सुनि उठी सप्रीती ॥

दो० बेगिपाय धारिय थलहि कह सनेहसतिभाय ।
हमरे तौ अब ईशगति कै मिथिलेश सहाय ॥

लखिसनेह सुनिवचन विनीता । जनकप्रियागहि पांवपुनीता ॥
देवि उचित असबिनयतुम्हारी । दशरथ घरनिराम महतारी ॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । अग्निधूमगिरिशिरतृणधरहीं ॥
सेवक राउ कर्म मन बानी । सदा सहाय महेश भवानी ॥
रौरे अंग योग जग कोहै । दीपसहायकि दिनकरसोहै ॥
राम जायबन करि सुरकाजू । अचलअवधपुरकरिहहिंराजू ॥
अमर नागनर राम बाहु बल । सुखबसिहहिंअपनेअपनेथल ॥
यहसब याज्ञवल्क्य कहिराखा । देवि न होइमुधा मुनिभाषा ॥

दो० असकहिपगुपरि प्रेमअति तियहितविनयसुनाइ ।
सिय समेत सिय मातु तब चली सुआयसु पाइ ॥

प्रिय परिजनहिं मिली बैदेही । जो जेहियोग भांतितस तेही ॥
तापस वेष जानकिहि देखी । भे सबबिकल विषादविशेषी ॥
जनक राम गुरु आयसु पाई । चले थलहिसिय देखी आई ॥
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी । पाहुनिपावनि प्रेमप्राणकी ॥
उर उमगेउ अम्बुधि अनुरागू । भयउ भूपमन मनहुंप्रयागू ॥
सिय सनेह वहु बाढ़त जोहा । तापस रामप्रेमशिशु सोहा ॥
चिरंजीविमुनि ज्ञानविकल जनु । बूड़त लहेउबालअवलम्बनु ॥
मोहमगनमति नहिं विदेहकी । महिमासियरघुबरसनेहकी ॥

दो० सियपितुमातु सनेहबश बिकलनसकीसंभारि ।

धरणि सुताधीरज धरेउसमय सुधर्मबिचारि ।

तापस वेष जनक सिय देखी । भयउ प्रेम परितोष विशेषी ॥
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ । सुयशधवलजगकहसबकोऊ ॥
जिमिसुरसरि कीरति सरितोरी । गवनकीन्हविधिअण्डकरोरी ॥
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे । इहिकिय साधु समाजघनेरे ॥
पितु कह सत्य सनेह सुबानी । सीयसकुचिग्रहमनहुंसमानी ॥
पुनि पितु मातु लीन्ह उरलाई । सिखआशिषहितदीन्हसुहाई ॥
कहति न सीयसकुचमन माहीं । इहां बसब रजनीभलनाहीं ॥
लखि रुखरानि जनायउ राऊ । हृदय सराहत शील सुभाऊ ॥

दो० बार बार मिलिभेंटिसियबिदा कीन्हसनमानि ।
कही समयशिर भरतगतिरानिसुबानिसयानि ॥

सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू । सोन सुगन्ध सुधाशशिभारू ॥
मूंदे सजल नयन पुलके तन । सुयशसराहनलगे मुदितमन ॥
सावधानसुनुसुमुखि सुलोचनि । भरतकथाभवबन्धबिमोचनि ॥
धर्मराज नय ब्रह्म बिचारू । यहां यथामति मोर प्रचारू ॥
सोमतिमोरि भरत महिमाहीं । कहै काहछलिछुअतिनछाहीं ॥
विधिगणपतिअहिपतिशिवशारद।कबिकोबिदबुधबुद्धिविशारद॥
भरत चरित कीरति करतूती । धर्म्मशील गुणबिमल बिभूती ॥
समुझतसुनत सुखद सबकाहू । लोक लाज परलोक निबाहू ॥

दो० निरबधिगुणनिरुपम पुरुष भरतभरतसमजानि ।
कहीसुमेरु कि सेरसम कबिकुलमति सकुचानि ॥

अगम सबहिबरणत बरबरणी । जिमिजलहीन मीनगणधरणी ॥
भरत अमित महिमा सुनुरानी । जानहिंराम न सकहिंबखानी ॥
बरणि सप्रेम भरत सतभाऊ । तियजियकीरुचिलखिकहराऊ ॥
बहुरहिं लषण भरतबन जाहीं । सबकर भल सबके मनमाहीं ॥
देवि परन्तु भरत रघुबरकी । प्रीति प्रतीति जाइनहिंतरकी ॥
भरत सनेह अवधि ममताके । यद्यपि राम सींव समताके ॥

पर मारथ स्वारथ सुखसारे। भरत न सपनेहु मनहुं निहारे॥
साधन सिद्धि राम पद नेहू। मोहिं लखिपरतभरतमतयेहू॥
दो० भोरेहु भरत न पेलिहहिं मन महं रामरजाइ।
करियन शोच सनेहवश कहेउभूप बिलखाइ॥
राम भरतगुणकहतसप्रीती। निशिदम्पतिहि पलकसमबीती॥
राज समाज प्रात युग जागे। न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे॥
गे नहाइ गुरुपहं रघुराई। बन्दि चरण बोले रुख पाई॥
नाथ भरत पुरजन महतारी। शोच बिकल बनबासदुखारी॥
सहितसमाज राउ मिथिलेशू। बहुत दिवस भे सहत कलेशू॥
उचितहोय सो कीजिय नाथा। हित सबही कर रौरे हाथा॥
अस कहि अतिसकुचे रघुराऊ। मुनिपुलकेलखिशीलसुभाऊ॥
तुम बिनुरामसकल सुखसाजा। नरक सरिसदुहुंराजसमाजा॥
दो० प्राण प्राणके जीवके जिय सुख के सुख राम।
तुमतजितातसोहातगृहजिनहिंतिनहिबिधिबाम॥
सोसुखकरम धरम जरिजाऊ। तहं न राम पद पंकज भाऊ॥
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू। जहां न राम प्रेम परधानू॥
तुमबिन दुखी सुखी तुमतेही। तुमजानहु जिय जोजेहिकेही॥
राउर आयसु शिर सबहीके। बिदितकृपालहिंगतिसबनीके॥
आपु आश्रमहि धारिय पाऊ। भये सनेह शिथिल मुनिराऊ॥
करि प्रणाम तब राम सिधाये। ऋषिधरिधीर जनकपहं आये॥
राम बचन गुरु नृपहि सुनाये। शील सनेह सुभाव सुहाये॥
महाराज अब कीजिय सोई। सबकर धर्म्म सहितहितहोई॥
दो० ज्ञान निधान सुजान शुचि धर्म्म धीर नरपाल।
तुम बिनु असमंजसशमन को समर्थ इहिकाल॥
सुनिमुनिवचन जनक अनुरागे। लखिगति ज्ञानविरागबिरागे।
शिथिलसनेह गुणत मनमाहीं। आये इहां कीन्ह भल नाहीं॥
रामहिं राय कहेउ बनजाना। कीन्ह आपु प्रियप्रेमसमाना॥

हम अब बनते बनहिं पठाई । प्रमुदित फिरब बिवेक बड़ाई ॥
तापसमुनि महिसुरगति देखी । भये प्रेमवश बिकलविशेषी ॥
समय समुझि धरिधीरज राजा । चलेभरतपहं सहितसमाजा ॥
भरत आय आगे ह्वै लीन्हा । अवसरसरिससुआसनदीन्हा ॥
तात भरत कह तिरहुति राऊ । तुमहिंबिदितरघुवीर सुभाऊ ॥

दो० राम सत्य ब्रत धर्म्मरत सब कर शील सनेहु ।
संकटसहत सकोचवश कहिय जो आयसु देहु ॥

सुनितनुपुलकि नयन भरिबारी । बोले भरत धीर धरि भारी ॥
प्रभु प्रिय पूज्यपिता सम आपू । कुलगुरु समहित मायनबापू ॥
कौशिकादि मुनिसहित समाजू । ज्ञान अम्बुनिधिआपुनआजू ॥
शिशु सेवक आयसु अनुगामी । जानिमोहिसिखदेइयस्वामी ॥
इहि समाज थल बूझब राउर । मन मलीन मैं बोलब बाउर ॥
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता । क्षमबतात लखिबामबिधाता ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधर्म कठिन जग जाना ॥
स्वामि धर्म स्वारथहि बिरोधू । बैर अन्ध प्रेमहि नप्रबोधू ॥

दो० राखिराम रुखधर्म ब्रतपराधीन मोहिं जान ।
सबके सम्मत सर्बहित करियप्रेम पहिंचान ॥

भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ । सहितसमाज सराहतराऊ ॥
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरा । अर्थअमितअतिआखरथोरा ॥
जो मुख मुकुर मुकुर निजपाणी । गहिनजायअसअद्भुतबाणी ॥
भूप भरत मुनि साधु समाजू । गे जहंबिबुधकुमुद द्विजराजू ॥
सुनिसुधिशोचबिकलसबलोगा । मनहुं मीनगणनवजलयोगा ॥
देव प्रथम कुलगुरु गति देखी । निरखि बिदेह सनेहविशेखी ॥
रामभक्ति मय भरत निहारे । सुर स्वारथीहरषि हियहारे ॥
सबकहं राम प्रेममय पेखा । भये अलेख शोच बश लेखा ॥

दो० राम सनेह सकोचवश कह सशोचसुर राज ।
रचहुप्रपंचहि पंचमिलि नाहित भयउअकाज ॥

सुरनसुमिरि शारदा सराही। देविदेहु शरणागत पाही ॥
फेरिभरत मतिकरिनिज माया। पालविबुधकुलकरिछलछाया॥
बिबुध बिनय सुनिदेविसयानी। बोली सुर स्वारथिजड़ जानी ॥
मोसन कहहु भरत मति फेरू। लोचन सहस न सूझसुमेरू ॥
बिधिहरिहर माया बड़ि भारी। सो न भरत मतिसकैनिहारी ॥
सोमति मोहिं कहतकरु भोरी। चन्दिनिकरें कि चन्दकचोरी ॥
भरत हृदय सियराम निवासू। तहंकितिमिरजहंतरणिप्रकासू॥
असकहिशारदगइ बिधिलोका।बिबुधबिकलनिशिमानहुंकोका ॥

दो० सुर स्वारथीमलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाट ।
रचि प्रपंच मायाप्रबल भयभ्रम अरतउचाट ॥

करि कुचाल शोचत सुरराजू। भरतहाथसब काज अकाजू ॥
गये जनक रघुनाथ समीपा सनमाने सब रघुकुलदीपा ॥
समय समाज धर्म अविरोधा। बोले तब रघुबंश पुरोधा ॥
जनक भरत सम्बाद सुनाई। भरत कहावति कही सुहाई ॥
तात राम जस आयसु देहू। सो सबकरैं मोर मत येहू ॥
सुनि रघुनाथ जोरि युग पाणी। बोले सत्य सरलमृदु बाणी ॥
विद्यमान आपुन मिथिलेशू। मोर कहा सब भांति भदेशू ॥
राउर राय रजायसु होई। राउरि शपथ सहीशिर सोई ॥

दो० रामशपथ सुनिसुनिजनक सकुचे सभा समेत ।
सकलविलोकहिं भरत मुख बनै न उत्तर देत ॥

सभा सकुचवशभरत निहारी। रामबन्धु धरि धीरज भारी ॥
कुसमय देखि सनेह संभारा। बढ़तबिन्ध्यजिमिघटजनिवारा॥
शोक कनक लोचनमति क्षोनी। हरी बिमलगुणगणजगयोनी ॥
भरत बिवेक बराह बिशाला। अनायास उघरे तेहिकाला ॥
करि प्रणाम सबकहं करजोरी। राम राउ गुरु साधु निहोरी ॥
क्षमब आजु अतिअनुचितमोरा। कहउंबदन मृदुवचनकठोरा ॥
हिये सुमिरि शारदा सुहाई। मानस ते मुख पंकज आई ॥

बिमल बिवेक धर्मनय शाली । भरत भारती मंजु मराली ॥
दो० निरखिबिवेकबिलोचनहिंशिथिलसनेह समाज ।
करिप्रणाम बोलेभरत सुमिरि सीय रघुराज ॥
प्रभु पितुमातुसुहृद गुरु स्वामी । पूज्यपरम हित अंतरयामी ॥
सरल सुसाहिब शील निधानू । प्रणत पाल सर्वज्ञ सुजानू ॥
समरथ शरणागत हितकारी । गुण ग्राहकअवगुणअघहारी ॥
स्वामि गुसाइंहिं सदृश गुसांई । मोहिंसमानमैं स्वामिदोहाई ॥
प्रभु पितु बचन मोह बशपेली । आइउं इहांसमाज सकेली ॥
जग भल पोच ऊंच अरु नीचू । असी अमरपद माहुर मीचू ॥
राम रजाइ मेटि मन माहीं । देखा सुना कतहुंकोउ नाहीं ॥
सो मैं सब बिधि कीन्ह ढिठाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥
दो० कृपा भलाई आपनी नाथकीन्ह भल मोर ।
दूषण भे भूषण सरिस सुयश चारु चहुं ओर ॥
राउर रीति सुबानि बड़ाई । जगतबिदित निगमागम गाई ॥
कूरकुटिल खलकुमति कलंकी । नीचनि शील निरीश निशंकी ॥
तेउ सुनि शरण सामुहे आये । सकृत प्रणाम किये अपनाये ॥
देखि दोष कबहुंन उर आने । सुनि गुणसाधु समाज बखाने ॥
को साहब सेवकहि निवाजी । आप समान साज सब साजी ॥
निजकरतूति न समुझिय सपने । सेवक सकुच शोच उर अपने ॥
सो गुसाइं नहिं दूसर कोपी । भुजा उठाय कहौं प्रण रोपी ॥
पशु नाचत शुक पाठ प्रबीना । गुणगति नट पाठक आधीना ॥
दो० सो सुधारि सनमानिजन किये साधु शिर मोर ।
को कृपालु बिनु पालिहै बिरदावलि बरजोर ॥
शोक सनेह कि बाल सुभाये । आयसु लाइ रजायसु पाये ॥
तबहुं कृपाल हेरि निज ओरा । सबहिंभांति भलमानेहु मोरा ॥
देखेउं पाइ सुमंगल मूला । जानेउंस्वामि सहज अनुकूला ॥
बड़े समाज बिलोकेउं भागू । बड़ी चूक साहिब अनुरागू ॥

कृपा अनुग्रह अंग अघाई । कीन्हकृपानिधिसबअधिकाई ॥
राखा मोर दुलार गुसांई । अपने शील सुभाव भलाई ॥
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई । स्वामिसमाज सकोचबिहाई ॥
अविनयबिनययथा रुचि बानी । क्षमियदेवअति आरतिजानी ॥

दो० सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुतकहब बड़िखोरि ।
आयसु देइय देव अब समय सुधारिय मोरि ॥

प्रभुपद पद्म पराग दोहाई । सत्य सुकृतसुख सींव सुहाई ॥
सो करि कहौं हिये अपनेकी । रुचि जागत सोवत सपनेकी ॥
सहज सनेह स्वामि सेवकाई । स्वारथ छल फलचारि बिहाई ॥
आज्ञा समन सु साहिब सेवा । सो प्रसाद जन पावै देवा ॥
असकहि प्रेम बिबश भे भारी । पुलक शरीर बिलोचन बारी ॥
प्रभु पद कमल गहे अकुलाई । समय सनेह न सोकहि जाई ॥
कृपासिन्धु सनमानि सुवाणी । बैठाये समीप गहि पाणी ॥
भरत बिनय सुनि देखि सुभाऊ । शिथिल सनेह सभारघुराऊ ॥

छं० रघुराउशिथिलसनेहसाधुसमाजमुनिमिथिलाधनी ।
मनमहं सराहत भरतभायप भक्तिकी महिमा घनी ॥
भरतहिं प्रशंसतबिबुधबरषतसुमनमानसमलिनसे ।
तुलसीबिकलसबलोगसुनिसकुचनिशागमनलिनसे ॥

सो० देखि दुखारी दीन दुहुंसमाज नर नारि सब ।
मघवा महामलीन मुये मारि मंगल चहत ॥

कपट कुचालि सींव सुर राजू । प्रियअकाजप्रियआपनकाजू ॥
काक समान पाक रिपु रीती । छलीमलीन न कतहुं प्रतीती ॥
प्रथम कुमति करि कपट सकेला । सो उचाट सबके शिर मेला ॥
सुरमाया सब लोग बिमोहे । राम प्रेम अतिशय न बिछोहे ॥
भय उचाट सब मनथिर नाहीं । क्षणबनरुचिक्षणसदनसुहाहीं ॥
दुविधि मनोगति प्रजा दुखारी । सरितसिंधुसंगमजिमिबारी ॥
दुचितकतहु परितोष नलहहीं । एक एक सन मर्म न कहहीं ॥

लखिहियहंसिकहकृपानिधानू । सरिस श्वानमघवा निजबानू ॥
दो० भरतजनकमुनि गणसचिव साधुसचेत बिहाइ ।
लगी देव माया सबहिं यथा योग जन पाइ ॥
कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निजसनेह सुरपति छलभारे ॥
सभा राउ गुरु महि सुरमंत्री । भरत भक्ति सबकी मतियंत्री ॥
रामहिं चितवत चित्र लिखेसे । सकुचत बोलत बचनसिखेसे ॥
भरतप्रीति नित बिनय बड़ाई । सुनत सुखद बरणत कठिनाई॥
जासु बिलोकि भक्ति लवलेशू । प्रेममगन मुनिगणमिथिलेशू॥
महिमा तासु कहै किमि तुलसी ।भक्तिप्रभावसुमतिहियहुलसी॥
आपु छोट महिमा बड़िजानी । कविकुलकानिमानिसकुचानी॥
कहिनसकतगुणरुचिअधिकाई । मतिगति बाल वचनकीनाई ॥
दो० भरतविमलयशविमलविधुसुमतिचकोरकुमारि ।
उदितविमलजनहृदयनभ इकटकरहीनिहारि ॥
भरतसुभाव न सुगम निगमहू । लघुमति चापलताकविक्षमहू॥
कहतसुनत सतिभाव भरतको । सीयराम पद होइ न रतको ॥
सुनतहिभरतहिं प्रेमरामको । ज्यहिनसुगमत्यहिसरिसबामको ॥
देखि दयालु दशा सबहीको । रामसुजान जानि जनजीको ॥
धर्म धुरीण धीर नय नागर । सत्य सनेह शील सुखसागर ॥
देशकाल लखि समय समाजू । नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥
बोले वचन बाणि सरबससे । हितपरिणामसुनतशशिरससे ॥
तात भरत तुम धर्म धुरीणा । लोक वेद विधि परम प्रवीणा ॥
दो० कर्म्म वचन मानस बिमल तुमसमान तुमतात ।
गुरुसमाजलघुबन्धुगुणकुसमयकिमिकहिजात ॥
जानहु तात तरणि कुल रीती । सत्य सिन्धुपितुकीरतिप्रीती ॥
समयसमाज लाज गुरुजनकी । उदासीनहित अनहित मनकी॥
तुमहिं बिदित सबहीकर मरमू । आपन मोर परमहित धरमू॥
मोहिं सबभांतिभरोस तुम्हारा । तदपिकहौं अवसर अनुसारा ॥

तात तात बिनु बात हमारी । केवल कुलगुरु कृपा सम्हारी ॥
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू । हमहिंसहित सबहोतदुखारू ॥
जो बिनु अवसर अथव दिनेशू । जग केहिकहौं न होइ कलेशू ॥
तसउत्पात तात विधि कीन्हा । मुनिमिथिलेशराखिसबलीन्हा ॥
दो० राजकाज सबलाजपति धर्म्मधरणि धनधाम ॥
गुरुप्रभावपालिहिसबहि भलहोइहिपरिणाम ॥
सहित समाज तुम्हार हमारा । घर बनगुरु प्रसाद रखवारा ॥
मातु पिता गुरु स्वामि निदेशू । सकल धर्म धरणीधर शेशू ॥
सो तुम करहु करावहु मोहू । तात तरणि कुलपालक होहू ॥
साधक एक सकल सिधि देनी । कीरति सुगति भूतिमयबेनी ॥
सो विचारि सहि संकट भारी । करहु प्रजा परिवार दुखारी ॥
बांटि बिपतिसबही मिलिभाई । तुमहिंअवधिभरिअतिकठिनाई ॥
जानि तुमहिं मृदु कहौं कठोरा । कुसमयतात न अनुचितमोरा ॥
होहिं कुठांव कुबन्धु सुहाये । ओड़िय हाथ असिनि के घाये ॥
दो० सेवक करपद नयन से मुख सो साहिब होइ ।
तुलसीप्रीतिकिरीतिसुनि सुकविसराहहिंसोइ ॥
सभा सकल सुनि रघुबरबानी । प्रेमपयोधि अमिय जनुसानी ॥
शिथिल समाज सनेहसमाधी । देखि दशा चुप शारद साधी ॥
भरतहि भयउ परम संतोषू । सनमुखस्वामिविमुखदुखदोषू ॥
मुख प्रसन्न मन मिटा विषादू । भा जनु गूंगहिं गिरा प्रसादू ॥
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी । बोले पाणि पंकरुह जोरी ॥
नाथ भयो सुख साथ गयेको । लहेउ लाभ जगजन्मभयेको ॥
अब कृपाल जस आयसु होई । करौं शीश धरि सादर सोई ॥
सो अवलंब देव मोहिं देई । अवधि पार पावउं जेहि सेई ॥
दो० देव देव अभिषेकहित गुरु अनुशासन पाइ ।
आनेउं सबतीरथसलिल तेहिकहं काह रजाइ ॥
एक मनोरथ बड़ मन माहीं । सभय सकोच जात कहिनाहीं ॥

कहहु तात प्रभु आयसु पाई । बोले बाणि सनेह सुहाई ॥
चित्रकूटमुनिथलतीरथ बन । खगमृगसरसरिनिर्झरगिरिगन ॥
प्रभुपद अंकित अवनि बिशेखी । आयसु होयतो आवौं देखी ॥
अवशि अत्रि आयसुशिरधरहू । तातविगत भय काननचरहू ॥
मुनिप्रसाद बन मंगल ताता । पावन परमसोहावन भ्राता ॥
ऋषिनायक जहं आयसु देहीं । राखेहु तीरथ जल थलतेहीं ॥
सुनिप्रभुबचनभरत सुखपावा । मुनिपदकमलमुदितशिरनावा ॥

दो० भरतराम सम्बादसुनि सकल सुमंगल मूल ।
सुर स्वारथी सराहिंकुल हर्षित बर्षहिं फूल ॥

धन्य भरत जय राम गुसाईं । कहत देव हरषत बरिआईं ॥
मुनिमिथिलेश सभा सब काहू । भरतबचनसुनि भयउउछाहू ॥
भरत राम गुण ग्राम सनेहू । पुलकि प्रशंसत राउ विदेहू ॥
सेवक स्वामि सुभाव सुभावन । नेम प्रेम अति पावन पावन ॥
मति अनुसार सराहन लागे । सचिवसभासदसबअनुरागे ॥
सुनि सुनि रामभरत सम्बादू । दुहु समाजहिय हर्ष बिषादू ॥
राम मातु दुखसुख समजानी । कहि गुण दोष प्रबोधीरानी ॥
एक करहिं रघुबीर बड़ाई । एक सराहत भरत भलाई ॥

दो० अत्रि कहेउ तब भरत सन शैल समीप सुकूप ।
राखिय तीरथ तोय तहं पावन अमल अनूप ॥

भरत अत्रि अनुशासन पाई । जलभाजन सबदिये चलाई ॥
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू । सहित गये जहं कूप अगाधू ॥
पावन पाथ पुण्य थलराखा । प्रमुदितप्रेम अत्रि असभाखा ॥
तात अनादि सिद्धि थल येहू । लोपेउ काल बिदितनहिंकेहू ॥
तब सेवकन्ह सरस थलदेखा । कीन्हसुजलहितकूपबिशेखा ॥
विधिवश भयउविश्वउपकारू । सुगमअगमअतिधर्मबिचारू ॥
भरत कूप अबकहिहहिंलोगा । अतिपावन तीरथ जलयोगा ॥
प्रेम समेत निमज्जहिं प्राणी । होइहि बिमलकर्म मनवाणी ॥

दो० कहत कूप महिमा सकल गये जहांरघुराउ ।
अत्रि सुनायहु रघुबरहिं तीरथ पुण्य प्रभाउ ॥

कहत धर्म इतिहास सप्रीती । भयउभोरनिशिसो सुखबीती ॥
नित्य निबाहि भरत दोउभाई । राम अत्रि गुरु आयसु पाई ॥
सहित समाज साज सबसादे । चलेराम बन अटन पयादे ॥
कोमलचरण चलत बिनुपनहीं । भै मृदुभूमिसकुचिमनमनहीं ॥
कुश कंटक कांकरी कुराई । कटुक कठोर कुबस्तु दुराई ॥
महिमंजुल मृदु मारग कीन्हे । बहतसमीरत्रिविधिसुखलीन्हे ॥
सुमन बरषिसुर घनकरिछाहीं । बिटप फूलिफलदलमृदुताहीं ॥
मृगबिलोकिखगबोलिसुबानी । सेवहिंसकल रामप्रियजानी ॥

दो० सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहुरामकहत जमुहात ।
राम प्राणप्रिय भरत कहं यहनहोइ बड़िबात ॥

इहिबिधिभरत फिरतबनमाहीं । नेमप्रेमलखि मुनिसकुचाहीं ॥
पुण्य जलाशय भूमि बिभागा । खगमृगतरुतृणगिरिबनबागा ॥
चारु बिचित्र पवित्र विशेखी । बूझत भरत दिव्यसब देखी ॥
सुनिमनमुदितकहतऋषिराऊ । हेतु नाम गुण पुण्य प्रभाऊ ॥
कतहुंनिमज्जन कतहु प्रणामा । कतहुंविलोकतमनअभिरामा ॥
कतहुं बैठिमुनि आयसु पाई । सुमिरतसीय सहितदोउ भाई ॥
देखि सुभाव सनेह सुसेवा । देहिं अशीश मुदित मनदेवा ॥
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई । प्रभुपदकमलविलोकहिंआई ॥

दो० देखे थल तीरथ सकल भरत पांचदिन मांझ ।
कहतसुनतहरिहरसुयश गयउदिवसभइसांझ ॥

भोर न्हाइ सब जुरा समाजू । भरतभूमिसुर तिरहुति राजू ॥
भलदिन आजु जानिमनमाहीं । राम कृपालकहत सकुचाहीं ॥
गुरुनृपभरतसभाअवलोकी । सकुचिरामफिरिअवनिबिलोकी ॥
शील सराहि सभासबशोची । कहुंनरामसमस्वामि सकोची ॥
भरत सुजानराम रुख देखी । उठि सप्रेम धरिधीर बिशेखी ॥

करि दण्डवत कहत करजोरी । राखी नाथ सकल रुचिमोरी ॥
मोहिंलगि सबहिं सहेउसंताप । बहुत भांति दुखपावा आपू ॥
अब गुसाइं मोहिं देहु रजाई । सेवौंअवध अवधिलगि जाई ॥

दो० जेहि उपाय पुनि पायजन देखै दीन दयाल ।
सोशिषदेइय अवधिलगि कोशलपालकृपाल ॥

पुरजन परिजन प्रजा गुसाईं । सबशुचिसरस सनेह सगाई ॥
राउर बदि भल भव दुख दाहू । प्रभुबिनु बादिपरमपद लाहू ॥
स्वामिसुजान जानि सबहीकी । रुचिलालसारहनजन जीकी ॥
प्रणतपाल पालहिं सब काहू । देव दुहूं दिशि ओर निबाहू ॥
असमोहिं सबविधिभूरिभरोसो । कियेविचार न शोच खरोसो ॥
आरति मोरि नाथकर छोहू । दुहुंमिलिकीन्हढीठहठिमोहू ॥
यह बड़दोष दूरि करि स्वामी । तजिसकोचसिखइयअनुगामी ॥
भरतविनयसुनि सबहिंप्रशंसा । क्षीरनीर विवरण गति हंसा ॥

दो० दीन बन्धु सुनि बन्धुके वचन दीन छलहीन ।
देशकाल अवसर सरिस बोले राम प्रवीन ॥

तात तुम्हारि मोरि परिजनकी । चिन्तागुरुहिंनृपहिंघरबनकी ॥
माथेपर गुरु मुनि मिथिलेशू । हमहिंतुमहिंसपनेहु नकलेशू ॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ । स्वारथसुयश धर्म परमारथ ॥
पितु आयसु पालिय दुइ भाई । लोक वेद भल भूप भलाई ॥
गुरुपितुमातु स्वामिसिखपालें । चलतसुमगुपगपरतन खालें ॥
अस विचार सब शोच बिहाई । पालहुअवधअवधिभरि जाई ॥
देश कोश पुरजन परिवारू । गुरुपदरजहि लागथरभारू ॥
तुमसुनिमातु सचिवसिखमानी । पालहुपुहुमि प्रजा रजधानी ॥

दो० मुखिया मुखसो चाहिये खान पानको एक ।
पालै पोषै सकल अंग तुलसी सहितबिवेक ॥

राज धर्म सरबस इतनोई । जिमिमनमाहिं मनोरथगोई ॥
बन्धु प्रबोध कीन्ह बहुभांती । बिनु अधारमनतोष न शांती ॥

भरत शील गुरुसचिव समाजू । सकुच सनेह बिबश रघुराजू ॥
प्रभु करि कृपा पावरी दीन्ही । सादर भरत शीशधरिलीन्ही ॥
चरण प्रीठि करुणा निधानके । जनुयुगयामिनिप्रजाप्राणके ॥
सम्पुट भरत सनेह रतनके । आखरयुगजनु जीव यतनके ॥
कुलकपाटकर कुशल करमके । विमल नयन सेवा सुधरमके ॥
भरत मुदित अवलम्ब लहेते । अस सुखजस सियरामरहेते ॥
दो० मांगेउबिदा प्रणामकरि राम लिये उरलाय ।
लोगउचाटे अमरपति कुटिल कुअवसर पाय ॥
सोकुचालि सबकहं भइ नीकी । अवधि आशसबजीवनजीकी ॥
नतरु लषण सियराम बियोगा । हहरिमरत सबलोगकुरोगा ॥
राम कृपा अवरेब सुधारी । विबुधधारभइगुणदगोहारी ॥
भेंटत भुजभरि भाइ भरतसो । रामप्रेमरसकहि न परतसो ॥
तनमन वचन उमगि अनुरागा । धीर धुरंधर धीरज त्यागा ॥
बारिज लोचन मोचत बारी । देखि दशा सुर सभादुखारी ॥
मुनिगण गुरुजनु धीर जनकसे । ज्ञानअनलमनकसे कनकसे ॥
जे बिरंचि निर्लेप उपाये । पद्मपत्र जिमिजगजल जाये ॥
दो० तेउ बिलोकि रघुवर भरत प्रीति अनूप अपार ।
भयेमगनतनमनवचन सहितविरागबिचार ॥
जहां जनक गुरुगतिमति भोरी । प्राकृति प्रीतिकहत बड़खोरी ॥
बरणत रघुबर भरत वियोगू । सुनिकठोरकवि जानियलोगू ॥
सो सकोचवश अकथ सुबानी । समयसनेहसुमिरिसकुचानी ॥
भेंटि भरत रघुबर समुझाये । पुनिरिपुदमनहर्षि हियलाये ॥
सेवक सचिव भरत रुख पाई । निजनिजकाजलगे सबजाई ॥
सुनि दारुणदुख दुहूं समाजा । लगेचलन के साजन साजा ॥
प्रभु पद पद्म बन्दि दोउ भाई । चले शीश धरि राम रजाई ॥
मुनि तापस बनदेव निहोरी । सब सनमान बहोरि बहोरी ॥
दो० लषणहिंभेंटिप्रणामकरि शिरधरिसियपदधूरि ।

चले सप्रेम अशीष सुनि सकल सुमंगल मूरि ॥
सानुज राम नृपहिं शिरनाई । कीन्ही बहुबिधि विनय बड़ाई ॥
देव दया वश बड़ दुख पायहु । सहितसमाज काननहिंआयहु ॥
पुर पगु धारिय देइ अशीशा । कीन्ह धीरधरि गमन महीशा ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदाकिये हरि हर सम जाने ॥
सासु समीपगये दोउ भाई । फिरे बन्दि पद आशिष पाई ॥
कौशिक बामदेव जा बाली । परिजन पुरजनसचिवसुचाली ॥
यथायोग करि बिनयप्रणामा । बिदाकिये सब सानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥
दो० भरतमातुपदबन्दिदोउ शुचि सनेह मिलिभेंट ।
बिदाकीन्हसजिपालकी शकुचिशोच सबमेट ॥
परिजनमातुपितहिमिलिसीता । फिरीप्राण प्रियप्रेम पुनीता ॥
करि प्रणाम भेंटी सब सासू । प्रीतिकहत कबिहियनहुलासू ॥
सुनिसिखअभिमतआशिषपाई । रही सीय दुहु प्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकी मंगाई । करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई ॥
बारबार हिलिमिलि दोउभाई । सम सनेह जननी पहुंचाई ॥
साजि बाजि गज बाहननाना । भूप भरत दल कीन्हपयाना ॥
हृदय राम सिय लषण समेता । चले जाहिं सबलोग अचेता ॥
बसह बाजि गजपशु हियहारे । चले जाहिं परबश मनमारे ॥
दो० गुरु गुरुतियपद बन्दिप्रभु सीतालषण समेत ।
फिरे हर्ष बिस्मय सहित आये पर्ण निकेत ॥
बिदा कीन्ह सनमानि निषादू । चलेउ हृदयबड़ बिरहबिषादू ॥
कोल्ह किरात भिल्ल बनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥
प्रभुसिय लषणबैठि बटछांहीं । प्रियपरिजन बियोगबिलगाहीं ॥
भरत सनेह सुभाव सु बानी । प्रियाअनुजसन कहत बखानी ॥
प्रीति प्रतीति वचनमनकरणी । श्रीमुख राम प्रेम बश बरणी ॥
तेहि अवसर खगमृगजलमीना । चित्रकूट चर अचर मलीना ॥

बिबुध बिलोकिदशा रघुबरकी । बरषिसुमनकहिगतिघरघरकी ॥
प्रभु प्रणामकरि दीन्ह भरोसो । चले मुदितमन डरन खरोसो ॥
दो० सानुज सीय समेत प्रभु राजत पर्ण कुटीर ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य जनु सोहत धरे शरीर ॥
मुनि महिसुरगुरुभरतभुआलू । रामबिरह सबसाज बिहालू ॥
प्रभु गुणग्राम गुणत मनमाहीं । सब चुपचाप चलेमगु जाहीं ॥
यमुना उतरि पार सब भयऊ । सो बासर बिनुभोजन गयऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर बासू । रामसखा सबकीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमती नहाये । चौथे दिवस अवधपुर आये ॥
जनक रहे पुर बासर चारी । राज काज सब साज संभारी ॥
सौंपिसचिव गुरुभरतहि राजू । तिरहुतचले साजि सब साजू ॥
नगर नारिनर गुरुसिखमानी । बसे सुखेन राम रजधानी ॥
दो० रामदरश हित लोगसब करतनेम उपबास ।
तजितजिभूषणभोगसुखजियतअवधकीआश॥
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । निजनिजकाजपाइसिखसोधे ॥
पुनिसिखदीन्ह बोलिलघुभाई । सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रणामबर बिनयनिहोरे॥
ऊंच नीच कारज भल पोचू । आयसु देवन करब सकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये । समाधान करि सुवश बसाये ॥
सानुज गे गुरु गेह बहोरी । करि दण्डवत कहतकरजोरी ॥
आयसु होइ तो रहौं सनेमा । बोले मुनितबपुलकि सप्रेमा॥
समुझब कहब करब तुम सोई । धर्म सार जग होइहि जोई ॥
दो० मुनिसिखपाइअशीषबड़िगणकबोलिदिनसाधि ।
सिंहासन प्रभु पादुका बैठारी निरुपाधि ॥
राम मातु गुरु पद शिरनाई । प्रभु पद पीठि रजायसु पाई ॥
नंदि ग्राम करि पर्ण कुटीरा । कीन्हनिवास धर्म्म धुरधीरा ॥
जटाजूट शिर मुनि पट धारी । महिखनि कुश साथरीसंवारी ॥

अशन वसन आसनव्रतनेमा । करतकठिन ऋषिधर्म्मसप्रेमा ॥
भूषण वसन भोग सुख भूरी । मन तन बचनतजे तृण तूरी ॥
अवधराज सुरराज सिहाहीं । दशरथधनलखि धनदलजाहीं ॥
तेहिपुरबसतभरत विनुरागा । चंचरीक जिमि चम्पक बागा ॥
रमा विलास राम अनुरागी । तजतभवन जिमिनर बड़भागी ॥

दो० राम प्रेम भाजन भरत बड़ी न यह करतूति ।
चातकहंस सराहियत टेक विवेक विभूति ॥

देह दिनहिं दिन दूबरि होई । घटनतेज बलमुख छबिसोई ॥
नित नव राम प्रेम प्रण पीना । बढ़त धर्म्मदल मलनमलीना ॥
जिमिजलनिघटतशरदप्रकाशे । बिलसत बेत सुबनजबिकासे ॥
शम दम संयम नेम उपासा । नखतभरतहियबिमलअकाशा ॥
ध्रुवविश्वास अवधिराकासी । स्वामिसुरतिसुरबीथिविकासी ॥
राम प्रेम बिधुअचलअदोषा । सहितसमाज सोहनित चोखा ॥
भरत रहनि समुझनिकरतूती । भक्तिविरतिगुणविमलबिभूती ॥
बरणतसकलसुकबिसकुचाहीं । शेष गणेश गिरागम नाहीं ॥

दो० नित पूजत प्रभु पावरी प्रीति न हृदय समाति ।
मांगि मांगि आयसु करति राजकाज बहुभांति ॥

पुलक गात हियसियरघुबीरू । जीह नाम जपु लोचननीरू ॥
लषण रामसिय कानन बसहीं । भरतभवनबसितपतनुकसहीं ॥
दुहुंदिशिसमुझिकहतसबलोगू । सबबिधिभरत सराहनयोगू ॥
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं । देखिदशा मुनिराजलजाहीं ॥
परम पुनीत भरत आचरणू । मधुर मंजु मृदु मंगलकरणू ॥
हरणकठिन कलिकलुष कलेशू । महामोह निशिदलनदिनेशू ॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू । शमन सकलसन्तापसमाजू ॥
जन रंजन भंजन भव भारू । राम सनेह सुधाकरसारू ॥

छं० सियराम प्रेम पियूष पूरण होतजन्मन भरत को ।
मुनिमनअगमयमनियमशमदमविषमव्रतआचरतको ॥

दुखदाह दारिद दम्भदूषण सुयशमिस अपहरतको ।
कलिकालतुलसीसे शठहि हठिरामसन्मुखकरतको ॥

सो० भरत चरित करि नेम तुलसी जे सादर सुनहिं ।
सीय राम पदप्रेम अवशि होइ भव रसबिरति ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञान
वैराग्यसम्पादनोनामतुलसीकृतअयोध्याकांड
द्वितीयःसोपानःशुभम् ॥



श्रीगणेशायनमः ॥

आरण्यकाण्ड ॥

—*—

श्लोक ॥

मूलन्धर्मतरोर्विवेकजलधौपूर्णेन्दुमानन्ददं वैराग्याम्बुजभा
स्करंस्वघहरंध्वान्तापहंतापहम्॥ मोहाम्भोधरपुंजपाटनविधौखे
शंभवंशंकरम् बन्देब्रह्मकुलंकलंकशमनंश्रीरामभूपप्रियम् ॥ १ ॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुम्पीताम्बरंसुन्दरं पाणौवाणशरास
नंकटिलसत्तूणीरभारंवरम् ॥ राजीवायतलोचनंधृतजटाजूटेनसं
शोभितम् सीतालक्ष्मणसंयुतंपथिगतंरामाभिरामंभजे ॥ २ ॥

सो॰ उमा राम गुण गूढ़ पण्डित मुनि पावहिं बिरति।
पावहिं मोह बिमूढ़ जेहरि बिमुख न धर्म रति ॥

पूरण भरत प्रीति मैं गाई। मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
अब प्रभुचरितसुनौ अतिपावन। करतजोबनसुरनरमुनिभावन॥
एक बार चुनि कुसुम सुहाये। निजकर भूषण राम बनाये ॥
सीतहिंपहिराये प्रभु सादर। बैठे फटिक शिला परमादर ॥
सुरपति सुत धरिबायस वेषा। शठ चाहत रघुपति बलदेखा ॥
जिमि पिपीलिका सागरथाहा। महा मन्द मति पावनचाहा ॥
सीता चरण चोंच हति भागा। मूढ़ मन्द मति कारणकागा ॥
चला रुधिर रघुनायकजाना। सींकधनुष शायक सन्धाना ॥

दो॰ अतिकृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह।
तासन आइ कीन्ह छल मूरख अवगुण गेह ॥

बिनऽपराध प्रभु हतैं न काहू । अवसर परे ग्रसै शशि राहू ॥
जबप्रभु लीन्हधनुष सिकबाना । क्रोधजानिभा अनलसमाना ॥
प्रेरित अस्त्र ब्रह्म शर धावा । चलाभाजिबायस भयपावा ॥
धरि निजरूप गयउ पितुपाहीं । रामबिमुख राखा तिननाहीं ॥
भा निराश उपजी हियत्रासा । यथा चक्रभय ऋषि दुर्बासा ॥
ब्रह्म धाम शिव पुर सबलोका । फिराभ्रमितब्याकुलभयशोका ॥
काहू बैठन कहा न ओही । राखि को सकै रामकरद्रोही ॥
मातु मृत्यु पितु शमन समाना । सुधाहोइ बिष सुनु हरियाना ॥
मित्रकरै शत रिपुकै करणी । ताकहं बिबुध नदी बैतरणी ॥
सब जग ताहि अनलते ताता । जोरघुबीर बिमुखसुनुभ्राता ॥
दो० जिमिजिमि भाजत शक्रसुत ब्याकुलअतिदुखदीन ।
तिमि तिमि धावत रामशर पाछे परम प्रवीन ॥
बचहिं उरग बरु ग्रसै खगेशा । रघुपतिशर छुटिबचनअंदेशा ॥
नारद देखा बिकल जयन्ता । लागिदयाकोमल चित सन्ता ॥
दूरिहि ते कहि प्रभु प्रभुताई । भजे जात बहुबिधि समुझाई ॥
पठवा तुरत राम पहं ताही । कहसिपुकारिप्रणतहितपाही ॥
आतुर सभय गहेसि पद जाई । त्राहि त्राहि दयाल रघुराई ॥
अतुलितबल अतुलितप्रभुताई । मैं मति मन्द जानि नहिं पाई ॥
निजकृतकर्म जनितफलपायउं । अबप्रभुपाहिशरणतकिआयउं ॥
सुनि कृपालअति आरतबानी । एक नयन करि तजा भवानी ॥
सो० कीन्ह मोह बश द्रोह यद्यपि तेहिकरबध उचित ।
प्रभु छांड़ेउ करि छोह को कृपालु रघुबीर सम ॥
रघुपति चित्र कूट बसि नाना । चरितकरत अतिसुधासमाना ॥
बहुरि राम असमन अनुमाना । होइहिभीरसबहिं मोहिंजाना ॥
सकल मुनिन्ह सनबिदाकराई । सीता सहितचले दोउ भाई ॥
अत्री के आश्रम प्रभु गयऊ । सुनत महा मुनिहर्षितभयऊ ॥
पुलकित गात अत्रि उठिधाये । देखिराम आतुर चलि आये ॥

करत दण्डवत मुनि उरलाये । प्रेमबारि दोउजन अन्हवाये ॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाने । सादर निज आश्रमतबआने ॥
करि पूजा कहि वचन सुनाये । दिये मूलफल प्रभु मनभाये ॥

सो० प्रभु आसनआसीन भरिलोचन शोभानिरखि ।
मुनिवरपरमप्रवीन जोरिपाणिअस्तुति करत ॥

छं० नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ॥
भजामि ते पदाम्बुजं । अकामिनां स्वधामदं ॥
निकाम श्याम सुन्दरं । भवाम्बु नाथ मन्दरं ॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥
प्रलम्ब बाहु विक्रमं । प्रभो प्रमेय बैभवं ॥
निषंग चाप शायकं । धरे त्रिलोक नायकं ॥
दिनेश बंश मण्डनं । महेश चाप खण्डनं ॥
मुनीन्द्र सन्त रंजनं । सुरारि वृन्द भंजनं ॥
मनोज बैर वन्दितं । अजादि देव सेवितं ॥
विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दुःख तापहं ॥
नमामि इन्दिरापतिं । सुखाकरं सतां गतिं ॥
भजे सशक्ति सानुजं । शची पति प्रियानुजं ॥
त्वदंघ्रि मूल जे नरा । भजन्ति हीनमत्सरा ॥
पतन्ति नो भवार्णवे । वितर्क बीचि संकुले ॥
विविक्त बासनाःसदा । भजन्ति मुक्तिदं मुदा ॥
निरस्य इन्द्रियादिकं । प्रयान्तिते गतिंस्वकं ॥
त्वमेक मद्भुतं प्रभुं । निरीह मीश्वरं विभुं ॥
जगद्गुरुंच शाश्वतं । तुरीय मेव केवलं ॥
भजामि भाव बल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥
स्वभक्त कल्प पादपं । समस्त सेव्य मन्वहं ॥
अनूप रूप भूपतिं । नतोह मुर्विजा पतिं ॥
प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहिमे ॥

पठन्ति जे स्तवं मिदं । नरादरेण ते पदं ।
व्रजन्ति नात्रसंशयम् । त्वदीय भक्ति संयुतं ॥
दो० विनतीकरि मुनिनाइशिर कहकरजोरिबहोरि ।
चरणसरोरुह नाथजनि कबहुं तजै मतिमोरि ॥
जन्म जन्म तवपद सुखकन्दा । बढ़ौ प्रेमचकोरजिमि चन्दा ॥
देखि राम मुनि विनय प्रणामा । विविधभांति पायउंविश्रामा ॥
अनुसूया के पद गहि सीता । मिलीबहोरि सुशीलविनीता ॥
जो सिय सकललोकसुखदाता । अखिललोकब्रह्माण्डकिमाता॥
ते पाई सिय मुनिवर भामिनि । सुखीभईकुमुदिनिज्योंयामिनि॥
ऋषिपतनीमन सुखअधिकाई । आशिष देइ निकट बैठाई ॥
दिव्य वसन भूषण पहिराये । जेनित नूतन अमल सुहाये ॥
जाहि निरखि दुख दूरिपराहीं । गरुड़जानिजिमिपन्नगजाहीं॥
दो० ऐसे वसन विचित्रशुठि दिये सीयकहं आनि ।
सनमानीप्रियवचनकहि प्रीति नजाइबखानि ॥
कहऋषि बधू सरल मृदुबानी । नारिधर्म कछु व्याज बखानी ॥
मात पिता भ्राता हितकारी । मितसुखप्रद सुनुराजकुमारी ॥
अमित दान भर्त्ता बैदेही । अधम सो नारिजोसेवनतेही ॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आपदकाल परखियहिचारी ॥
वृद्ध रोगबश जड़ धन हीना । अन्ध बधिर क्रोधी अतिदीना ॥
ऐसेहु पतिकर किये अपमाना । नारिपाव यमपुर दुख नाना ॥
एकै धर्म्म एक व्रत नेमा । काय वचनमन पतिपदप्रेमा ॥
जगपतिव्रताचारिबिधिअहहीं । वेद पुराणसन्त अस कहहीं ॥
दो० उत्तम मध्यम नीचलघु सकलकहौं समुझाय ।
आगे सुनहिंते भवतरहिं सुनहुसीयचितलाय ॥
उत्तम के अस बस मनमाहीं । सपनेहु आनपुरुष जगनाहीं ॥
मध्यम परपति देखहिं कैसे । भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म बिचारि समुझि कुलरहहीं । सोनिकृष्टतियश्रुतिअसकहहीं॥

बनु अवसर भय ते रह जोई । जानेहु अधमनारिजग सोई ॥
पतिबंचक पर पति रति करई । रौरव नरक कल्पशत परई ॥
क्षण सुख लागिजन्म शतकोटी । दुखनसमझतेहिसमकोखोटी॥
बिनुश्रम नारि परमगति लहई । पतिब्रत धर्मछांड़िछलगहई ॥
पति प्रतिकूलजनमि जहं जाई । विधवा होइ पाइ तरुणाई ॥

सो० सहज अपावनिनारि पतिसेवतशुभगतिलहहिं ।
यशगावत श्रुतिचारि अजहूंतुलसीहरिहिप्रिय ॥
सुनुसीता तव नाम सुमिरिनारिपतिब्रतकरहिं ।
तोहिं प्राण प्रियराम कहेउं कथा संसारहित ॥

सुनि जानकी परमसुख पावा । सादर तासु चरणशिर नावा ॥
तबमुनिसन कह कृपानिधाना । आयसु होइजाउं बन आना ॥
सन्तत मोपर कृपा करेहू । सेवक जानि तजेहु जनिनेहू ॥
धर्म्म धुरन्धर प्रभु की बानी । सुनि सप्रेम बोले मुनिज्ञानी ॥
जासुकृपा अजशिव सनकादी । चहत सकल परमारथ बादी ॥
ते तुम राम अकाम पियारे । दीनबन्धु मृदु बचन उचारे ॥
अब जानी मैं श्री चतुराई । भजिय तुमहिं सब देवबिहाई ॥
जेहिसमान अतिशय नहिंकोई । ताकर शीलकसन अस होई ॥
केहिबिधिकहौं जाहुअबस्वामी । कहहु नाथ तुम अन्तरयामी ॥
असकहिप्रभु बिलोकि मुनिधीरा । लोचनजलबह पुलकशरीरा ॥

छं० तन पुलकनिर्भरप्रेमपूरण नयनमुखपंकजदिये ।
मनज्ञानगुणगोतीत प्रभुमैंदीखजपतपकाकिये ॥
जप योग धर्म समूह तेनरभक्तिअनुपमपावई ।
रघुबीरचरितपुनीतनिशिदिनदासतुलसीगावई॥

दो० मुनिहुं किअस्तुतिकीन्हप्रभुदीन्हसुभगवरदान ।
सुमन वृष्टि नभ संकुल जयजय कृपा निधान ॥

मुनिपद कमलनाइ करिशीशा । चले बनहिं सुरनर मुनिईशा ॥
आगे राम अनुज पुनि पाछे । मुनि वर बेष बने अति आछे ॥

सरिता बनगिरि अवघट घाटा । पतिपहिंचानिदेहिं बरबाटा ॥
जहं जहं जाहिं देव रघुराया । करहिं मेघनभ तहंतहंछाया ॥
आश्रम बिपुल दीख बनमाहीं । देव सदनतेहिपटुतर नाहीं ॥
बहु तड़ाग सुन्दर अमराई । भांतिभांतिसबमुनिन लगाई ॥
दिव्यबिटप बनचहुंदिशि सोहैं । देखत सकलसुरन मन मोहैं ॥
तेहिदिनतहंप्रभुकीन्हनिवासा॥सकलमुनिन्हमिलिकीन्हसुपासा॥
दो० निजनिज आश्रमवेदिका तेहिपर तुलसि बिराज ।
अनुज जानकी सहित तहं राजत मे रघुराज ॥
आन सु आश्रम मुदितमन पूजि पहुनई कीन्ह ।
कन्दमूलफल अमिय समआनि रामकहंदीन्ह ॥
अनुज सीय सहभोजनकीन्हा । जोजिमिभावसुभगबरदीन्हा॥
होत प्रभातमुनिन्ह शिरनावा । आशिर्बाद सबहि सनपावा ॥
सुमिरि उमा सुर सिद्ध गणेशा । पुनिप्रभुचले सुनहुबिहगेशा ॥
बन अनेक सुन्दर गिरिनाना । लांघत चले जाहिं भगवाना ॥
मिला असुर बिराधमगुजाता । गरजत घोर कठोर रिसाता ॥
रूप भयंकर मानहुं काला । वेगवन्त धायउजिमिब्याला ॥
गगन देवमुनि किन्नर नाना । तेहिक्षणहृदयहारि भयमाना ॥
तुरतहि सो सीतहिं लै गयऊ । रामहृदयकछु बिस्मयभयऊ ॥
समुझा हृदय केकयी करणी । कहाअनुजसनबहुबिधिबरणी॥
बहुरि लषणरघुबरहि प्रबोधा । पांच बाण छांड़े करिक्रोधा ॥
छं० भयेक्रोधलषणसंधानिधनुशरमारितेहिब्याकुलकिये ।
पुनिउठि निशाचर राखिसीतहिंशूललै धावतभये ॥
जनुकालदण्ड करालधावा बिकलसब खगमृगभये ।
धनुतानिश्रीरघुबंशमणि पुनिकाटितेहिरजसमकिये ॥
दो० बहुरि एकशर मारेउ परा धरणि धुनि माथ ।
उठा प्रबल पुनि गर्जेउ चला जहां रघुनाथ ॥
ऐसे कहत निशाचर धावा । अबनहिंबचहु तुमहिं मैं खावा ॥

तासु तेज शत मरुत समाना । टूटहिंतरु बहु उड़हिं पषाना ॥
जीव जन्तु जहं लगि रहे जेते । व्याकुल भाजि चले सबतेते ॥
आवप्रबलयहिविधि जनुभूधर । होइहिकाहकहहिंव्याकुलसुर॥
उरग समान जोरि शर साता । आवतही रघुवीर निपाता ॥
तुरतहिं रुचिर रूप तेहि पावा । देखि दुखीनिजधाम पठावा ॥
तासु अस्थिगाड़ेउ प्रभुधरणी । देवमुदितमनलखिप्रभुकरणी ॥
सीता धाइ चरण लपटानी । अनुजसहिततबचले भवानी ॥
उहां शक्र जहं मुनि शरभंगा । आये सकल देव निज संगा ॥
गये कहन प्रभुदेव सिखावन । दिशिबलभेदबसत जहंरावन ॥

दो० सुरपति संशय तम सम रघुपति तेज दिनेश ।
रावण जीतन निशिसम बीते छुटहिं कलेश ॥

सुनासीर प्रभु तिहिक्षण देखा । तेज निधान शुभ्रअति वेषा ॥
तुरग बारिबल मरुत समाना । रथरबिसमनहिंजायबखाना ॥
क्षिति न परत अन्तरहितरहई । श्वेत छत्र चामर शिर ढरई ॥
अनुजहिप्रियहिकहा समुझाई । सुरपति महिमागुण प्रभुताई ॥
जिहि कारण बासव तहंआये । सोकछुवचन कहननहिंपाये ॥
बीचहि सुनि आइब प्रभुकेरा । कहि सारथी तुरतरथ फेरा ॥
दूरिहिते कहि प्रभुहि प्रणामा । हरषि सुरेश गयो निजधामा ॥
प्रभु आये जहं मुनि शरभंगा । सुन्दर अनुज जानकी संगा ॥

दो० देखि राम मुख पंकज मुनिवर लोचन भृङ्ग ।
सादर पान करतअति धन्य धन्य शरभंग ॥

कह मुनिसुनु रघुवीर कृपाला । शंकर मानस राज मराला ॥
जात रहेउं विरंचिके धामा । सुनेउं श्रवण बनआवतरामा ॥
चितवत पंथ रहेउं दिन राती । अब प्रभु देखि जुड़ानीछाती ॥
नाथ सकल साधन मैं हीना । कीन्ही कृपा जानिजनदीना ॥
सो कछु देव न मोर निहोरा । निजप्रणराखेउ जनमन चोरा ॥
तब लगि रहहु दीनहितलागी । जबलगिमिलौंतुम्हैंतनत्यागी ॥

योग यज्ञ जप तपव्रत कीन्हा । प्रभुकहं देइ भक्तिवरलीन्हा ॥
इहिविधिसररचिमुनिशरभंगा । बैठे हृदय छांड़ि सब संगा ॥
दो० सीताअनुजसमेत प्रभु नीलजलद तनश्याम ।
मममहिय बसहु निरन्तर सगुण रूप श्रीराम ॥
असकहि योग अग्नि तनजारा । राम कृपा बैकुण्ठ सिधारा ॥
ताते मुनि हरि लीन न भयऊ । प्रथमहिं भेदभक्ति वरलयऊ ॥
ऋषिनिकायमुनिवरगति देखी । सुखी भयेनिज हृदय विशेषी ॥
अस्तुतिकरहिंसकलमुनिवृन्दा । जयतिप्रणतहित करुणाकंदा ॥
पुनि रघुनाथ चले बन आगे । मुनिवरवृन्दपुलकिसंगलागे ॥
अस्थि समूह देखि रघुराया । पूंछामुनिन्हलागिअतिदाया ॥
जानतहहु का पूंछहु स्वामी । समदर्शी उर अन्तरयामी ॥
निशिचरनिकरसकलमुनिखाये । सुनि रघुनाथनयनजलछाये ॥
दो० निशिचरहीन करौंमहि भुज उठायप्रणकीन्ह ।
सकलमुनिन्हके आश्रमन्हजाइजाइसुखदीन्ह ॥
मुनि अगस्त्यकर शिष्यसुजाना । नाम सुतीक्षणरत भगवाना ॥
मन क्रम वचन रामपद सेवक । सपनेहुं आन भरोसनदेवक ॥
प्रभुआगमन श्रवणसुनिपावा । करत मनोरथ आतुर धावा ॥
हे विधि दीनबन्धु रघुराया । मोसे शठपर करिहहिं दाया ॥
सहित अनुज मोहिंरामगुसाईं । मिलिहहिंनिजसेवककीनाईं ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं । भक्ति नविरतिज्ञानमनमाहीं ॥
नहिं सतसंग योग जप यागा । नहिंदृढ़चरणकमलअनुरागा ॥
एक बानि करुणा निधानकी । सोप्रियजाकेगति न आनकी ॥
छं० सोउप्रियअतिपातकी जिन्हकबहुंप्रभु सुमिरणकर्यो ॥
तेआजुमैं निज नयन देखौं परि पुलकित हियभर्यो ॥
जे पदसरोज अनेकमुनि करि ध्यान कबहुं न आवहीं ॥
ते राम श्रीरघुवंश मणि प्रभु प्रेम ते सुख पावहीं ॥
दो० पन्नगारि सुनुप्रेमसम भजन न दूसर आन ।

यह बिचारि पुनि पुनि मुनी करतरामगुण गान ।
होइहहिंसफलआजुममलोचन । देखिबदन पंकजभव मोचन ॥
निर्भर प्रेम मगन मुनिज्ञानी । कहि न जाइ सो दशाभवानी ॥
दिशिअरुबिदिशिपंथनहिंसूझा । कोमैं कहां चलों नहिं बूझा ॥
कबहुंक फिर पाछे पुनि जाई । कबहुंक नृत्यकरै गुणगाई ॥
अबिरल प्रेमभक्ति मुनि पाई । प्रभु देखहिं तरुओट लुकाई ॥
अतिशय प्रीति देखि रघुबीरा । प्रकटे हृदय हरण भव भीरा ॥
मुनिमगु मांझअचलहोइ वैसा । पुलक शरीर पनसफल जैसा ॥
तब रघुनाथ निकट चलिआये । देखिदशा निज जन मनभाये ॥

सो० राम सुसहज सुभाव सेवक सुख दारिद दमन ।
मुनिसनकहप्रभु आवउठउठद्विज ममप्राणसम ॥

मुनिहिं राम बहु भांतिजगावा । जागनध्यान जनितसुखपावा ॥
भूप रूप तव राम दुरावा । हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा ॥
मुनि अकुलाय उठा तब कैसे । बिकलहीनफणिमणिबिनुजैसे ॥
आगे देखि राम तन श्यामा । सीता अनुज सहितसुख धामा ॥
परेउ लकुटइवचरणन लागी । प्रेममगन मुनिवर बड़ भागी ॥
भुज बिशाल गहिलियेउठाई । प्रेम प्रीति राखेउ उर लाई ॥
मुनिहिंमिलतअससोहकृपाला । कनकतरुहि जनु भेंटतमाला ॥
राम बदन बिलोकि मुनिठाढ़ा । मानहुंचित्रमांझ लिखिकाढ़ा ॥

दो० तबमुनि हृदयधीर धरि गहि पद बारहिंबार ।
निजआश्रम प्रभुआनिकरि पूजा बिबिधप्रकार ॥

कहमुनि प्रभुसुनु बिनतीमोरी । अस्तुतिकरौं कवन बिधितोरी ॥
महिमाअमित मोरि मतिथोरी । रबि सन्मुख खद्योत अजोरी ॥
श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधनमुनि चीरं ॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरंतर श्री रघुबीरं ॥
मोह बिपिन घनदहनकृशानू । सन्त सरोरुह कानन भानू ॥
निशिचरकरिवरूथमृग राजं । त्रातु सदानो भव खग बाजं ॥

अरुण नयन राजीव सुवेशं । सीता नयन चकोर निशेशं ॥
हर हृद मानस राज मरालं । नौमि राम उर बाहु बिशालं ॥
संशय सर्प ग्रसन उर गादं । शमन सकल संताप बिषादं ॥
भय भंजन रंजन सुर यूथं । त्रातु सदानो कृपा बरूथं ॥
निर्गुण सगुण बिषम समरूपं । ज्ञानगिरा गोतीत अनूपं ॥
अमल अखिल अनवद्यमपारं । नौमि राम भंजन महि भारं ॥
भक्त कल्प पादप आरामं । तर्जन क्रोध लोभ मद कामं ॥
अति नागर भव सागरसेतुं । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुं ॥
अतुलित भुजप्रताप बलधामं । कलिमलबिपुल विभंजननामं ॥
धर्म्म बर्म्म नर्म्मद गुणग्रामं । संतत संतनोतु मम कामं ॥
यदपिविरजव्यापकअबिनाशी । सबके हृदय निरन्तर बासी ॥
तदपि अनुजसियसहितखरारी । बसहुमनसिमम काननचारी ॥
जे जानहिं ते जानहु स्वामी । सगुण अगुणउर अन्तरयामी ॥
जो कोशलपति राजिव नयना । करौ सो रामहृदयमम अयना ॥
सो० मायाबश जिमिजीव रहहिं सदा संतत मगन ।
तिमिलागहुमोहिंपीव करुणाकर सुन्दरसुखद ॥
अस अभिमान जायजियभोरे । मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥
रामभक्ति तजि चह कल्याना । सोनरअधम शृगाल समाना ॥
सुनि मुनि बचन राममनभाये । बहुरिहर्षि मुनिवर उरलाये ॥
परम प्रसन्न जानि मुनिमोहीं । जो बर मांगु देउं मैं तोहीं ॥
मुनिकह मैंबर कबहुंन यांचा । समुझि न परै झूठका सांचा ॥
तुमहिं नीक लागै रघुराई । सो मोहिं देहु दाससुख दाई ॥
अबिरलभक्तिबिरति बिज्ञाना । होहुसकलगुण ज्ञाननिधाना ॥
प्रभुजो दीन्ह सो वर मैं पावा । अब सो देहु मोहिंजो भावा ॥
दो० अनुज जानकी सहित प्रभु चापबाण धरि राम ।
ममहिय गगन इन्दुइव बसहु सदा निष्काम ॥
एवमस्तु कहि रमा निवासा । हर्षिचलेकुम्भज ऋषि पासा ॥

मुनिप्रणाम करि युग करजोरी । सुनहु नाथ कछु विनती मोरी ॥
बहुत दिवस गुरु दर्शन पाये । भये मोहिं यहिआश्रमआये ॥
अब प्रभु संग जाउं गुरु पाहीं । तुम कहं नाथ निहोरा नाहीं ॥
चले जात मग तव पद कंजा । देखिहौं जो विराध मदगंजा ॥
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई । लिये संग विहंसे दोउ भाई ॥
पन्थ कहत निज भक्ति अनूपा । मुनि आश्रम पहुंचे सुरभूपा ॥
आश्रम देखि महा शुचि सुंदर । सरित सरोवर कानन भूधर ॥
जलचर थलचर जीव जहीते । बैर न करहिं प्रीति सबहीते ॥

दो० तरुबहुविधिविहंगमृग बोलत विबिध प्रकार ।
बसहिंसिद्धमुनितपकरहिं महिमागुणआगार ॥

तुरत सुतीक्षण गुरुपहं गयऊ । करिदण्डवत कहतअसभयऊ ॥
नाथ कोशलाधीश कुमारा । आये मिलन जगत आधारा ॥
राम अनुज समेत वैदेही । निशिदिनदेव जपतहहुजेही ॥
सुनत अगस्त्य तुरत उठिधाये । हरिविलोकिलोचनजलछाये ॥
मुनि पद कमल परे दोउ भाई । ऋषिअतिप्रीतिलियेउरलाई ॥
सादर कुशल पूछि मुनिज्ञानी । आसन पर बैठारे आनी ॥
पुनिकरि बहुप्रकार प्रभु पूजा । मोहिंसम भागवन्तनहिंदूजा ॥
जहंलगिरहे अपर मुनिवृन्दा । हर्षेसब बिलोकि सुखकन्दा ॥

दो० मुनि समूह महं बैठ प्रभु सन्मुख सबकी ओर ।
शरद इन्दु जन चितवत मानहुं निकर चकोर ॥

पाइसुथल जल हर्षित मीना । पारसपाइ सुखी जिमिदीना ॥
प्रभुहिंनिरखिसुखभाइहिभांती । चातकजिमि पाईजलस्वाती ॥
तब रघुवीर कहा मुनि पाहीं । तुमसन प्रभुदुराव कछुनाहीं ॥
तुमजानहु जेहिकारण आयेउं । ताते तात न कहिसमुझायउं ॥
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही । जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही ॥
द्विज द्रोही न बचहिं मुनिराई । जिमिपंकजवन हिमऋतुपाई ॥
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभुबानी । पूछहु नाथ मोहिं का जानी ॥

तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी। जानौंमहिमाकछुक तुम्हारी ॥

सो० भृकुटी निरखत नाथ रहत सदापद कमलतर।
जिन डारे निजहाथ विविधविधाता सिद्धहर ॥

अति कराल सबपर जगजाना। औरौ कहौंसुनिय भगवाना ॥
ऊमरि तरु विशाल तव माया। फलब्रह्मांड अनेक निकाया ॥
जीव चराचर जन्तु समाना। भीतरबसहिं नजानहिंआना ॥
ते फलभक्षक कठिन कराला। तवभय डरत सदा सोकाला ॥
ते तुम सकल लोकपति साईं। पूंछेहु मोहिं मनुजकी नाईं ॥
यह वर मांगौं कृपा निकेता। बसहु हृदयसियअनुजसमेता ॥
अविरलभक्ति विरत सतसंगा। चरण सरोरुह प्रीतिअभंगा ॥
यद्यपि ब्रह्म अखण्ड अनन्ता। अनुभवगम्यभजहिंजेहिसंता ॥
अस तव रूप बखानौं जानौं। फिरिफिरिसगुणब्रह्मरतिमानौं॥

दो० जेहि जीवहुपर तव कृपा संतत रहत हुलास।
तिनकी महिमा को कहै जे अनन्य प्रियदास ॥

सन्तत दासन्ह देहु बड़ाई। ताते मोहिं पूंछेहु रघुराई ॥
है प्रभु परम मनोहर ठाऊं। पावन पंचबटी तेहि नाऊं ॥
गोदावरी नदी तहं बहई। चारिहु युग प्रसिद्ध सोअहई ॥
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू। उग्र शाप मुनिवरकर हरहू ॥
वास करहु तहं रघुकुल राया। कीजैसकल मुनिन्हपरदाया ॥
चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहिं पंचबटी नियराई ॥
दिव्य लताद्रुम प्रभु मनभाये। निरखिराम ते भयउ सुहाये ॥
लषणरामसिय चरण निहारी। कानन अघगाभा सुखकारी ॥

दो० गृध्रराज सों भेंट भइ बहु विधि प्रीति दृढ़ाय।
गोदावरी समीप प्रभु रहे पर्ण गृह छाय।

जबते राम कीन्ह तहं बासा। सुखी भये मुनि बीते त्रासा ॥
गिरि बन नदीताल छबिछाये। दिनदिनप्रतिअतिहोतसुहाये ॥
खगमृग वृन्द अनन्दित रहहीं। मधुपमधुरगुंजतछबिलहहीं ॥

सोबनबरणिनसक अहिराजा । जहांप्रकट रघुबीर बिराजा ॥
एक बार प्रभु सुख आसीना । लक्ष्मणबचन कहेछल हीना ॥
सुर नर मुनि सचराचरसाईं । मैं पूंछौं निज प्राणकि नाईं ॥
मोहिं समुझाइकहौ सोइदेवा । सबतजि करौं चरण रजसेवा ॥
कहहु ज्ञान बिराग अरुमाया । कहहुसोभक्तिकरहु जेहिदाया ॥
दो० ईश्वरजीवहि भेद प्रभु सकलकहहु समुझाइ ।
जाते होइ चरण रत शोक मोह भ्रम जाइ ॥
थोरेमहं सब कहौं बुझाई । सुनहु तात मतिमनचितलाई ॥
मैं अरु मोर तोर ते माया । जेहि वशकीन्हे जीवनिकाया ॥
गो गोचर जहंलगि मनजाई । सो सब माया जानेहु भाई ॥
तेहिकर भेद सुनहु तुम सोऊ । बिद्या अपर अबिद्या दोऊ ॥
एकदुष्ट अतिशय दुख रूपा । जा बश जीव परा भव कूपा ॥
एक रचै जग गुण बशजाके । प्रभु प्रेरितनहिंनिजबल ताके ॥
ज्ञान मान जहं एकौ नाहीं । देखत ब्रह्म रूप सब माहीं ॥
कहिय तात सो परमबिरागी । तृणसमसिद्धितीनिगुणत्यागी ॥
दो० मायाईश न आपुकहं जानि कहै सो जीव ।
बन्ध मोक्ष प्रदसर्ब पर माया प्रेरक सीव ॥
धर्म्मते बिरति योग ते ज्ञाना । ज्ञान मोक्ष प्रद बेद बखाना ॥
जाते बेगि द्रवौं मैं भाई । सोमम भक्ति भक्त सुखदाई ॥
सो स्वतंत्र अवलंब न आना । जेहि आधीन ज्ञान बिज्ञाना ॥
भक्ति तात अनुपम सुखमूला । मिलहि जो संतहोयंअनुकूला ॥
भक्ति के साधन कहौंबखानी । सुगमपन्थमोहिं पावहिंप्रानी ॥
प्रथमहिंबिप्रचरण अतिप्रीती । निजनिजधर्म्मनिरतश्रुतिनीती ॥
इहिकरफलमन बिषयबिरागा । तबमम चरणउपजु अनुरागा ॥
श्रवणादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं । ममलीला रतिअति मनमाहीं ॥
सन्त चरण पंकज अतिप्रेमा । मन क्रमबचनभजन दृढ़नेमा ॥
गुरु पितु मातु बन्धुपति देवा । सब मोहिंकहं जानै दृढ़ सेवा ॥

मम गुणगावत पुलक शरीरा । गद्गद गिरा नयन बह नीरा ॥
काम आदि मद दंभ न जाके । तात निरन्तर बश मैं ताके ॥
दो० बचन कर्म्ममन मोरिगति भजन करैं निष्काम ।
तिनके हृदय कमल महं करौं सदा बिश्राम ॥
भक्तियोगसुनिअतिसुखपावा । लक्ष्मणप्रभुचरणन्हशिरनावा ॥
नाथ सुने गत मम संदेहा । भयउ ज्ञानउपजेउ नव नेहा ॥
अनुजबचनसुनिप्रभु मनभाये । हर्षि राम निजहृदय लगाये ॥
इहिबिधिगये कछुकदिनबीती । कहत बिराग ज्ञान गुणनीती ॥
शूर्पणखा रावणकी बहिनी । दुष्ट हृदयदारुणजिमिअहिनी ॥
पंचबटी सो गय यक बारा । देखिबिकलभइ युगुलकुमारा ॥
भ्राता पिता पुत्र उर गारी । पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
होइबिकलसकमननहिंरोकी ।जिमिरबिमणिद्रवरबिहिबिलोकी॥
दो० अधमनिशाचरि कुटिलअति चलीकरनउपहास ।
सुनु खगेश भावी प्रबल भा चह निशिचर नास ॥
रुचिर रूपधरि प्रभु पहंआई । बोली बचन मधुर मुसुकाई ॥
तुम समपुरुष न मोसमनारी । यहरं योग बिधिरचा बिचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष जगनाहीं । देखेउं खोजि लोकतिहुं माहीं ॥
ताते अब लगि रही कुमारी । मन माना कछुतुमहिं निहारी ॥
सीतहिं चितइ कही प्रभुबाता । अहै कुमार मोर लघु भ्राता ॥
गइ लक्ष्मण रिपु भगनीजानी । प्रभु बिलोकि बोले मृदुबानी ॥
सुंदरि सुनु मैं उनकर दासा । पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समरथ कोशल पुरराजा । जो कछुकरहिंउन्हैं सबछाजा ॥
दो० केहरिसम नहिंकरिवर लवा कि बाज समान ।
प्रभु सेवक इमि जानहु मानहु बचन प्रमान ॥
सेवक सुख चह मानभिखारी । व्यसनीधन सुभक्तिव्यभिचारी ॥
लोभी यश चह चार गुमानी । नभदुहि दूध चहत कोउप्रानी ॥
पुनि फिर रामनिकट सोआई । प्रभु लक्ष्मणपहं बहुरि पठाई ॥

लक्ष्मण कहा तोहिं सो बरई। जो तृण तोरि लाजपरिहरई॥
तब खिसिआनि राम पहं गई। रूप भयंकर प्रकटत भई॥
बिथुरे केश रदन विकराला। भृकुटीकुटिलकरालगिगाला॥
सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुजसन सैन बुझाई॥
अनुज राम मनकी गति जानी। उठे रिसाइ सोसुनहु भवानी॥
दो० लक्ष्मणअतिलाघवतिहि नाककानबिनुकीन्ह।
तार्केकर रावण कहं मनहुं चुनौती दीन्ह॥
नाक कान बिनु भइ बिकरारा। जनु श्रव शैल गेरुकै धारा॥
खरदूषण पहं गइ बिलखाता। धृकधृकतव पौरुषबलभ्राता॥
तेइ पूछा सब कहेसि बुझाई। यातुधान सुनि सैन बुलाई॥
चौदह सहस सुभटसंग लीन्हे। जिन्हसपनेहुरणपीठनदीन्हे॥
धाये निशिचर निकर बरूथा। जनु सपक्षकज्जलगिरियूथा॥
नाना बाहन नाना कारा। नाना आयुध घोर अपारा॥
श्याम घटा देखत नभ केरी। तहं बासव धनु मनहुं उयेरी॥
शूर्पणखहि आगे करि लीन्ही। अशुभरूप श्रुति नासाहीनी॥
दो० निजनिजबलसबमिलिकहहिं एकहिंएकसुनाइ।
बाजन बाज जुझाऊ हर्ष न हृदय समाइ॥
असकुन अमित होहिंभयकारी। गनहिंनमृत्युबिबशभयझारी॥
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं। देखि कटक भट अतिहरषाहीं॥
कोउकह जियत धरहुदोउभाई। धरि मारहु तिय लेहुछुड़ाई॥
कोउकह सुनौ सत्य हमकहहीं। काननफिरहिंबीरकोउअहहीं॥
एकै कहा मष्ट ह्वै रहहू। खरके आगे अस जनिकहहू॥
यहिविधिकहत बचनरणधीरा। आये सकल जहां रघुबीरा॥
धूरि पूरि नभ मण्डल रहेऊ। रामबोलाइअनुज सनकहेऊ॥
लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर। आवानिशिचर कटकभयंकर॥
रहेउ सजग सुनि प्रभु कैबाणी। चलेसहितसिय शरधनुपाणी॥
देखि राम रिपुदल चलिआवा। बिहंसिकठिनकोदण्ड चढ़ावा॥

छं० को दंड कठिन चढ़ाइ प्रभुशिरजटा बांधत सोह ज्यों ।
मरकतशयलपर लसतदामिनि कोटिसजगभुजंगज्यों ॥
कटिकसिनिषंगबिशालभुजगहि चापबिशिष सुधारिकै ।
चितवत मनहुं मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारिकै ॥
सो० आय गये बगमेल धरहु धरहु धाये सुभट ।
यथा बिलोकि अकेल बाल रबिहिघेरत दनुज ॥
घेरि रहे निशिचर समुदाई । दंडक खग मृग चले पराई ॥
प्रभुबिलोकिशरसकहिंनडारी । थकित भये रजनीचर झारी ॥
सचिव बोलि बोले खर दूषण । यहकोउ नृपबालक नरभूषण ॥
सुर नर नाग असुर मुनि जेते । देखे सुने हते हम केते ॥
हम भरि जन्म सुनहुसबभाई । देखी नहिं असि सुंदर ताई ॥
यद्यपि भगिनी कीन्हकुरूपा । बध लायक नहिं पुरुषअनूपा ॥
देहु तुरत निज नारि दुराई । जीवत भवन जाहु दोउ भाई ॥
मोर कहा तुमताहि सुनावहु । तासु बचनसुनि आतुर आवहु ॥
दो० भये काल बश मूढ़ सब जानहिं नहिं रघुबीर ।
मसक फूंकिकिमिमेरु उड़सुनहु गरुड़मतिधीर ॥
दूतन कहा राम सन जाई । सुनत राम बोले मुसुकाई ॥
आजु भयो बड़ भाग हमारा । तुम्हरे प्रभु असकीन्हबिचारा ॥
हम क्षत्री मृगया बन करहीं । तुमसेखल मृगखोजत फिरहीं ॥
रिपु बलवंत देखिनहिंडरहीं । एक बार कालहु सन लरहीं ॥
यद्यपिमनुजदनुजकुलघालक । मुनिपालकखल शालकबालक ॥
जौंन होइबल घर फिरिजाहू । समर बिमुख मैं हतौं न काहू ॥
रण चढ़िकरिय कपटचतुराई । रिपुपर कृपा परम कदराई ॥
दूतन जाइ तुरत सबकहेऊ । सुनि खरदूषण उर अतिदहेऊ ॥
छं० उरदहेउकहेउकिधरहुधावहु बिकटभटरजनीचरा ॥
शरचाप तोमरशक्तिशूल कृपाणिपरिघ परशूधरा ।
प्रभुकीन्ह धनुपटंकोर प्रथम कठोर घोर भयोमहा ॥

भयेबधिरव्याकुलयातुधाननज्ञानतेहिअवसररहा ॥

दो० सावधान होइ धाये जानि सबलआराति ।
लागे बरषण राम पर अस्त्र शस्त्र बहु भांति ॥
तिनके आयुध तृण सम करि काटे रघुबीर ।
तानिशरासन श्रवणलगि पुनि छांड़े निजतीर ॥

छं० तब चले बाण कराल । हुंकरत जनुबहु ब्याल ॥
कोपेउसमरश्रीराम । चलेबिशिषनिशितनिकाम ॥
अवलोकि खर तरतीर । मुरिचले निशिचरबीर ॥
एकएक कहं न संभार । करतातमातु पुकार ॥
कोउकहै खरकहकीन्ह । जो युद्ध इनसनलीन्ह ॥
ये बाण अतिहिकराल । ग्रसे आइमानहु काल ॥
भये क्रुद्ध तीनों भाइ । जो भागि रणते जाइ ॥
तेहिवधबहमनिजपानि।फिरेमरणमनमहंठानि ॥

दो० उमाएक निजप्रभुहिबश पुनि इनके बड़भाग ॥
तरण चहहिं प्रभुशरलगे बिना योगजपयाग ॥

छं० आयुध अनेक प्रकार । सन्मुखते करहिंप्रहार ॥
रिपु परम कोपे जानि । प्रभुधनुषशर संधानि ॥
छांड़े बिपुल नाराच । लगेकटनबिकटपिशाच॥
उरशीशकर भुजचरन । जहंतहंलगे महिपरन ॥
चिक्करत लागत बान । धरपरत कुधर समान ॥
भटकटत तन शतखंड । पुनिउठत करिपाखंड ॥
नभ उड़त बहुभुजमुंड । बिनुमौलिधावतरुण्ड ॥
खगकंककाकशृगाल । कटकटहिंकठिनकराल ॥

छं० कटकटहिंजम्बुकभूतप्रेत पिशाचखप्परसाजहीं ॥
बैताल बीर कपालतालबजाइयोगिनिनाचहीं ॥
रघुबीरबाणप्रचण्डखण्डहिंभटनकेउरभुजशिर॥
जहंतहंपरहिंउठिलरहिंधरुधरुकरहिंसकलभयंकर॥

अंत्रावली गहि उड़हिं गृद्ध पिशाच करगहि धावहीं ।
संग्राम पुर बासी मनहुं बहुबाल गुडी उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट घुर्मित परे ।
अवलोकिनिजदलबिकलभटत्रिशिरादिखरदूषणफिरे॥
शर शक्ति तोमर परशु शूल कृपाण एकहि बारहीं ।
करिकोप श्रीरघुबीरपर अगणित निशाचर डारहीं ॥
प्रभुनिमिषमहं रिपुशरनिवारि प्रचारि डारे शायका ॥
दशदशबिशिष उरमांझमारे सकलनिशिचरनायका ॥
महिपरतउठिभट भिरतपुनिपुनि करतमायाअतिघनी ।
सुरडरत चौदहसहसनिशिचर एकश्रीरघुकुलमनी ॥
सुरमुनिसभयप्रभुदेखि मायानाथ अतिकौतुककरयो ।
देखत पररूपर राम करिसंग्राम रिपुदल लरिमर्यो ॥

दो० राम राम करितन तजहिं पावहिं पद निर्बान ।
करिउपाय रिपु मारेव क्षण महं कृपा निधान ॥
हर्षित वर्षहिं सुमन सुर बाजहिं गगन निशान ।
अस्तुति करिकरिसबचले शोभितबिविधविमान ॥

जब रघुनाथ समर रिपुजीते । सुर नर मुनि सबके दुखबीते ॥
तबलक्ष्मण सीतहि लै आये । प्रभु पद परत हर्षि उरलाये ॥
सीता निरखि श्याममृदुगाता । परम प्रेम लोचन न अघाता ॥
पंचबटी बसि श्री रघुनायक । करतचरितसुरमुनिसुखदायक ॥
धुआं देखि खर दूषण केरा । शूर्पणखा तब रावण प्रेरा ॥
बोली बचन क्रोध करि भारी । देश कोश की सुरति बिसारी ॥
करसि पान सोवसिदिनराती । सुधिन तोहिंशिरपर आराती ॥
राजनीतिबिनु धन बिनुधर्मा । हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा ॥
बिद्या बिनु बिवेक उपजाये । श्रम फल पढ़े किये अरुपाये ॥
संगते यती कुमंत्र ते राजा । मनते ज्ञान ज्ञान ते लाजा ॥
प्रीतिप्रणय बिनु मदते गुनी । नाशहिं बेगिनीति असमुनी ॥

सो० रिपु रुज पावक पाप प्रभुइन्हगणिय न छोटकरि ।
असकहि विविध बिलाप करिलागी रोदनकरन ॥
दो० सभा मांझ व्याकुल परी बहुप्रकार कहिरोइ ।
तोहि जियत दशकन्धर मोरि कि असगतिहोइ ॥
सुनत सभा सद उठ अकुलाई । समुझाई गहि बांह बिठाई ॥
कहलंकेश कहसि निज बाता । केइ तव नासा कान निपाता ॥
अवध नृपति दशरथ के जाये । पुरुष सिंह बनखेलन आये ॥
समुझि परीमोहिं उनकीकरणी । रहितनिशाचर करिहैंधरणी ॥
जिनकरभुजबलपाइ दशानन । अभयभयेमुनिबिचरहिंकानन ॥
देखत बालक काल समाना । परम धीर धन्वी गुण नाना ॥
अतुलित बल प्रतापदोउभ्राता । खलबधरत सुरमुनिसुखदाता ॥
शोभा धाम राम अस नामा । तिनके संगइकनारिललामा ॥
सो० अतिसुकुमारिपियारि पटतर योगनआहिकोउ ।
मैं मनदीख बिचारि जहंरहतेहि सम आननहिं ॥
रूपराशि विधि नारि संवारी । रतिशत कोटि तासुबलिहारी ॥
अजहुं जाय देखव तुमजबहीं । होइहौ बिकल तासु बशतबहीं ॥
जीवन मुक्ति लोक बश ताके । दश मुख सुनु सुंदरि असजाके ॥
तासु अनुज काटीश्रुति नासा । सुनितवभगिनी करिपरिहासा ॥
बिनऽपराध असहाल हमारी । अपराधी किमिबचहिं सुरारी ॥
खरदूषण सुनिलाग गुहारा । क्षणमहं सकल कटकउनमारा ॥
खरदूषण त्रिशिराकर घाता । सुनि दशशीश जरा सब गाता ॥
भयो शोचबश नहिं बिश्रामा । बीतहिंपल मानहुं शत यामा ॥
दो० शूर्पणखहिं समुझाइकरि बलबोलेसिबहु भांति ।
भवन गयो अति शोचबश नींद परी नहिं राति ॥
सुर नर असुर नाग जगमाहीं । मोरे अनुचर सम कोउ नाहीं ॥
खरदूषण मोसम बलवंता । तिन्हैं को मारै बिनु भगवंता ॥
सुर रंजन जन भंमहि भारा । जो जगदीश लीन्ह अवतारा ॥

तो मैं जाइ बैर हठ करिहौं । प्रभुशरतें भव सागर तरिहौं ॥
होइ भजन नहिं तामस देहा । मन क्रम बचन मंत्रदृढ़ एहा ॥
जो नर रूप भूप सुत कोऊ । हरिहौं नारि जीति रण दोऊ ॥
चला अकेल यान चढ़ि ताहां । बस मारीच सिंधु तट जाहां ॥
रथ अनूप जोरे खर चारी । बेगवंत इमि जिमि उर गारी ॥
छं० उरगारिसमअतिबेगबरणत जायनहिं उपमा कही ।
शिरछत्रशोभितश्यामघनजन चमरश्वेत बिराजही ॥
इहिभांति नांघत सरित शैल अनेक बापी सोहहीं ।
बनबाग उपबनबाटिकाशुचिनगरमुनिमनमोहहीं ॥
दो० बहु तड़ाग शुचि बिहंग मृगबोलतबिबिध प्रकार ।
इहि बिधि आयउ सिंधु तट शतयोजन बिस्तार ॥
सुंदरजीवबिबिध बिधि जाती । करहिं कुलाहलदिनअरुराती ॥
कूदहिं ते गरजहिं घन नाई । महा बली बलबरणिन जाई ॥
कनक बाल सुंदर सुख दाई । बैठहिं सकल जंतु तहं आई ॥
तिहिंपर दिव्यलता तरुलागे । जिहिदेखत मुनिमनअनुरागे ॥
गुहाबिबिधबिधि रहहिंबनाई । बरणत शारद मन सकुचाई ॥
चाहिय जहां ऋषिनकरबासा । तहां निशाचरकरहिं निवासा ॥
दशमुख देखसकल सकुचाने । जे जड़ जीव सजीव पराने ॥
इहां राम जसि युक्ति बनाई । सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥
दो० लक्ष्मण गये बनहिं जब लेन मूल फलकन्द ।
जनकसुता सन बोले बिहंसि कृपा सुखकन्द ॥
सुनहूप्रियाब्रतरुचिरसुशीला । मैं कछुकरब ललितनरलीला ॥
तुम पावकमहं करहुनिवासा । जौलगि करौं निशाचर नासा ॥
जबहिं रामसब कहेउबखानी । प्रभुपदधरिहियअनलसमानी ॥
निजप्रतिबिम्बराखितहंसीता । तैसेइ शील स्वरूप बिनीता ॥
लक्ष्मणहू यह मर्म न जाना । जो कछुचरित रच्योभगवाना ॥
दशमुख गयउ तहां मारीचा । नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ॥

नवनि नीचकी अति दुखदाई । जिमि अंकुश धनु उरग बिलाई ॥
भयदायक खलकी प्रिय बानी । जिमि अकाशके कुसुम भवानी ॥
दो० करि पूजा मारीच तब सादर पूंछी बात ।
कवन हेतु मन व्यग्र अति एकसर आयउ तात ॥
दशमुख सकल कथा तेहि आगे । कही सहित अभिमान अभागे ॥
होहु कपट मृग तुम छलकारी । जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी ॥
तेइ पुनि कहा सुनहु दशशीशा । ते नर रूप चराचर ईशा ॥
तासों तात बैर नहिं कीजै । मारे मरिय जियाये जीजै ॥
मुनि मख राखन गयउ कुमारा । बिनु फर शर रघुपति मोहिं मारा ॥
शतयोजन आयउं क्षण माहीं । तिन्ह सन बैर किये भल नाहीं ॥
भइ मति कीट भृङ्ग की नाई । जहं तहं मैं देखौं दोउ भाई ॥
जो नर तात तदपि अति शूरा । तिनहिं बिरोध न पाइहि पूरा ॥
दो० जेइ ताड़का सुबाहु अति खण्डेउ हरको दण्ड ।
खरदूषण त्रिशिरा वधेउ मनुज कि अस बलबण्ड ॥
रा अस नाम सुनत दशकन्धर । रहत प्राण नहिं मम उर अन्तर ॥
जाहु भवन कुल कुशल विचारी । सुनतहि शठ दीन्हेसि बहु गारी ॥
गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा । कहु जग मोहिं समान को योधा ॥
तब मारीच हृदय अनुमाना । नवहिं विरोधे नहिं कल्याना ॥
शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी । वैद्य बन्दि कवि मानस गुनी ॥
उभय भांति देखा निज मरणा । तब ताकेसि रघुनायक शरणा ॥
उतर देत मोहिं बधिहि अभागी । कस न मरौं रघुपति शर लागी ॥
अस जिय जानि दशानन संगा । चला राम पद प्रेम अभंगा ॥
मन अति हर्ष जनाव न तेही । आजु देखिहौं परम सनेही ॥
छं० निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहौं ।
श्रीसहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मन लाइहौं ॥
निर्वाणदायक क्रोध जाकर भक्त ऐसेहि वश करी ।
निज पाणि शर संधानि सो मोहिं बधहिं सुखसागर हरी ॥

दो० मम पाछे धर धावत धरे शरासन बान ।
फिरिफिरिप्रभुहिंबिलोकिहैंधन्यनमोसमआन॥
सीता लषण सहित रघुराई । जेहिवनवसहिंमुनिनसुखदाई॥
तेहि वन निकट दशानन गयऊ । तबमारीच कपट मृग भयऊ॥
अति विचित्र कछु बरणि न जाई । कनकदेह मणि रचित बनाई॥
सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग अंग सु मनोहर बेषा॥
सुनहु देव रघुवीर कृपाला । इहिमृगकरअतिसुंदर छाला॥
सत्य सिन्धु प्रभु बधकर एही । आनहु चर्म कहति बैदेही॥
तब रघुपति जाना सब कारण । उठे हर्षि सुरकाज संवारण॥
मृगविलोकि कटि परिकरबांधा । करत लचाप रुचिरशरसांधा॥
प्रभु लक्ष्मणहि कहा समुझाई । फिरतविपिननिशिचरबहुभाई॥
सीता केरि करेहु रखवारी । बुधिविवेकबलसमय विचारी॥
दो० अस कहि चले तहां प्रभु जहां कपट मृगनीच ।
देव हर्ष विस्मय विवश चातक बर्षा बीच॥
प्रभुहिविलोकिचला मृगभाजी । धायो राम शरासन साजी॥
निगम नेति शिवध्यान न पावा । माया मृग पाछे सो धावा॥
कबहुं निकट पुनि दूरि पराई । कबहुंक प्रकटै कबहुं छपाई॥
प्रकटत दुरत करत छल भूरी । इहि विधि प्रभुहि गयो लै दूरी॥
तब तकि राम कठिन शर मारा । धरणिपरयोकरिघोरचिकारा॥
लक्ष्मण कर प्रथमहिं लै नामा । पाछे सुमिरेसि मन महं रामा॥
प्राण तजत प्रकटेसि निज देही । सुमिरेसि राम सहित वैदेही॥
अन्तर प्रेम तासु पहिंचाना । मुनि दुर्लभ गति दीन्ह सुजाना॥
दो० विपुल सुमन सुरबर्षहिं गावहिं प्रभु गुण गाथ ।
निज पद दीन्हे असुर कहं दीनबंधु रघुनाथ॥
खल बधि तुरत फिरे रघुवीरा । सोह चाप कर कटि तूणीरा॥
आरत गिरा सुनी जब सीता । कहंलक्ष्मणसनपरम सभीता॥
जाहु वेगि संकट तव भ्राता । लक्ष्मणविहंसिकहासुनुमाता॥

भृकुटि विलास सृष्टि लय होई । सपनेहुं संकट परै कि सोई ॥
सौंपि गये मोहिं रघुपति थाती । जो तजि जाउं तोष नहिं छाती ॥
यह जियजानि सुनहुममाता । पूंछब कहब कवनि मैं बाता ॥
मर्म बचन सीता जब बोली । हरिप्रेरित लक्ष्मण मतिडोली ॥
चहुं दिशि रेखा खींच अहीशा । बार बार नाये पद शीशा ॥
बन दिशि देव सौंपि सब काहू । चले जहां रावण शशि राहू ॥
चितवहिंलषणसियहिफिरिकैसे । तजत बच्छ निजमातहि जैसे ॥

दो० एक डरत डर रामके दूजे सीय अकेलि ।
लषण तेज तन हत भये जिमि डाढ़ी दव बेलि ॥

शून्य भवन दशकंधर देखा । आवा निकट यती के वेषा ॥
जाके डर सुर असुर डेराहीं । निशि न नींद दिनअन्ननखाहीं ॥
सो दशशीश श्वान की नाई । इत उत चितै चला भंड़िहाई ॥
जिमि कुपन्थ पग देत खगेशा । रह न तेज बल बुधि लवलेशा ॥
करि अनेक विधि छल चतुराई । मांगेउ भीख दशानन जाई ॥
अतिथिजानि सिय कंदमूलफल । देन लगीतेइ कीन्ह बहुरिछल ॥
कह दशमुख सुन सुंदरि बानी । बांधी भीख न लेउं सयानी ॥
बिधि गति बाम काल कठिनाई । रेख लांघि सिय बाहर आई ॥

दो० विश्वभरनिअघदलदलनि करनिसकलसुरकाज ।
जाना नहिं दशशीश तेहि मूढ़ कपट के साज ॥

नाना विधि कहि कथा सुहाई । राजनीति भय प्रीति देखाई ॥
कह सीता सुनु यती गोसाईं । बोलेसि वचन दुष्ट की नाईं ॥
तब रावण निज रूप दिखावा । भइ सभीत जब नाम सुनावा ॥
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा । आवत प्रभु रे खल रहु ठाढ़ा ॥
जिमिहरिबधुहि क्षुद्रशशचाहा । भयेसिकालवशनिशिचरनाहा ॥
बायस करचह खगपति समता । सिन्धुसमानहोइकिमिसरिता ॥
खरकि होइ सुर धेनु समाना । जाहुभवन निज सुन अज्ञाना ॥
सुनत वचन दशशीश लजाना । मनमहं चरणबन्दि सुखमाना ॥

दो० क्रोधवंत तब रावण लीन्हेसि रथ बैठाय ।
चलेउ गगन पथ आतुर भयबश हांकि नजाय ॥
हा जगदीश देव रघुराया । केहि अपराध बिसारेहु दाया ॥
आरत हरण शरण सुखदायक । हा रघुकुलसरोज दिननायक ॥
हा लक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा । सो फल पायउं कीन्हेउं रोषा ॥
कैकेयी मन जो कछु रहेऊ । सोबिधिआजु मोहिंदुखदयऊ ॥
पंचबटी के खग मृग जाती । दुखी भये बनचर बहु भांती ॥
विविध बिलाप करति बैदेही । भूरि कृपा प्रभु पूरि सनेही ॥
बिपति मोरि को प्रभुहि सुनावा । पुरोडास चह रासभ खावा ॥
सीताकर बिलाप सुनि भारी । भये चराचर जीव दुखारी ॥
दो० बहुबिधि करत बिलाप नभ लियेजातदशशीश ।
डरत न खल बरपाइ भल जो दीन्होंअज ईश ॥
गृध्रराज सुनि आरत बानी । रघुकुलतिलकनारिपहिंचानी ॥
अधम निशाचर लीन्हे जाई । जिमिमलेच्छवशकपिलागाई ॥
अहह प्रथम बल मम तनु नाहीं । तदपि जाइ देखों बल ताहीं ॥
सीता पुत्रि करसि जनि त्रासा । करिहौं यातुधान कर नाशा ॥
धावा क्रोधवन्त खग कैसे । छूटै पबि पर्वत पहं जैसे ॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होहीं । निर्भयचलेसिनजानेसिमोहीं ॥
आवत देखि कृतांत समाना । फिरदशकंध करत अनुमाना ॥
की मैनाकी कि खगपति होई । ममबलजानिसहितपतिसोई ॥
जाना जरठ जटायू येहा । मम कर तीरथ छांड़हि देहा ॥
दो० ममभुज बल नहिं जानत आवत तपिन्ह सहाइ ।
समर चढ़ै तौइहि हतौं जियत न निज थल जाइ ॥
सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा । कह सुनु रावण मोर सिखावा ॥
तजि जानकी कुशल गृहजाहू । नाहित सत्य सुनहु बहुबाहू ॥
राम रोष पावक अति घोरा । होइहिसकलशलभकुलतोरा ॥
उतर न देत दशानन योधा । तबहिं गृध्र धावा करिक्रोधा ॥

धरिकच बिरथकीन्हमहिगिरा। सीतहिं राखि गृध पुनि फिरा ॥
दशमुख उठि कृतशर संधाना। गृध्र आइ काटेउ धनु बाना ॥
चोंचन्ह मारि बिदारेसि देही। दंड एक भइ मुर्च्छा तेही ॥
दो॰ जेइ रावण निज वश किये मुनि गण सिद्ध सुरेश।
तेइ रावण सन समर अति धीर बीर गृध्रेश ॥
स्वस्त भये सोपुनि उठि धावा। मारे गृध्र न सन्मुख आवा ॥
कीन्हेसि बहु जब युद्ध खगेशा। थकितभयो तबजरठ गिधेशा ॥
तबसक्रोधनिशिचरखिसियाना। काढ़ेसि परमकराल कृपाना ॥
काटेसि पंख परा खग धरणी। सुमिरि रामकी अद्भुत करणी ॥
मनमहं गृध्र परम सुखमाना। राम काज मम लाग्यो प्राना ॥
सीतहि यान चढ़ाय बहोरी। चला उताइल त्रास न थोरी ॥
करति बिलाप जात नभसीता। व्याधविवश जनु मृगी सभीता ॥
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी। कहि हरिनाम दीन्ह पट डारी ॥
इहिबिधि सीतहि सोलैगयऊ। बन अशोकमहं राखत भयऊ ॥
दो॰ हारि परा खल बहुत बिधि भय अरु प्रीति दिखाइ।
तब अशोक पादप तरे राखेसि यतन कराइ ॥
उहां बिधाता मन अनुमाना। सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना ॥
तात जनकतनया पहं जाहू। सुधिनपावजिहिंनिशिचरनाहू ॥
असकहिबिधिसुन्दरहबिआनो। सौंपि बहुरि बोले मृदु बानी ॥
इह भक्षण कृतसुधा न प्यासा। बर्ष सहस दश संशय नाशा ॥
सो प्रसाद लै आयसु पाई। चले हृदय सुमिरत रघुराई ॥
कछु बासव माया निज गोई। रक्षक रहे गये तहं सोई ॥
तदपि डरत सीता पहं आयेउ। करिप्रणामनिजनामसुनायेउ ॥
निश्चय जान सुरेश सुजाना। पिता जनक दशरथसममाना ॥
करि परितोष दूर कर शोका। हव्य खवाय गये निज लोका ॥
दो॰ जेहि बिधिकपट कुरंग संग धाय चले श्रीराम ।
सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरि नाम ॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी। मन बहु चिंता कीन्ह बिशेषी ॥
जनकसुता परिहरेउ अकेली। आयहु तात वचन मम पेली ॥
निशिचरनिकरफिरहिंबनमाहीं। मम मन सीताआश्रम नाहीं ॥
अहह तात भल कीन्हेउ नाहीं। सियविहीन ममजीवन काहीं ॥
इहिते कवनि बिपति बड़िभाई। खोयहु सीय काननहिं आई ॥
गहिपद कमल अनुजकरजोरी। कहेउनाथ कछु मोरिन खोरी ॥
अनुजसमेत गयउ प्रभु तहवां। गोदावरि तट आश्रम जहवां ॥
आश्रम देखि जानकी हीना। भयेबिकल जस प्राकृतदीना ॥
दो० कानन रहेउ तड़ाग इव चक चकई सियराम।
रावण निशि बिछुरन किये दुखबीते चहुंयाम ॥
पर दुख हरणशोक दुख नाहीं। भा विषाद तिनके मन माहीं ॥
हा गुण खानि जानकी सीता। रूप शील ब्रत नेम पुनीता ॥
लक्ष्मण समुझाये बहु भांती। पूंछत चले लता तरु पाती ॥
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम देखी सीता मृग नैनी ॥
खंजन शुक कपोत मृग मीना। मधुप निकरकोकिलाप्रबीना ॥
कुन्द कली दाड़िम दामिनी। कमल शरद शशि हेभामिनी ॥
बरुण पास मनोज धनु हंसा। गजकेहरि नित सुनतप्रशंसा ॥
श्रीफल कमल कदलि हरषाहीं। नेकु न शंक सकुच मन माहीं ॥
सुन जानकी तोहिं बिन आजू। हर्षे सकल पाइ जनु राजू ॥
किमिसहिजातअनखतोहिपाहीं। प्रिया वेग प्रकटत कसनाहीं ॥
इहिबिधिबिलपतखोजतस्वामी। मनो महाविरही अति कामी ॥
दो० फणि मणि हीन दीन जिमि मीन हीनजिमिबारि ॥
तिमि ब्याकुलभये लषणतहं रघुबर दशा निहारि ॥
धरि उरधीर बुझावहिंरामहिं। तजहिंनशोकअधिकसुखधामहिं॥
पूरण काम राम सुख राशी। मनुजचरितकरअजअबिनाशी ॥
सरवर अमित नदी गिरि खोहा। बहुबिधिरामलषण तहंजोहा ॥
शोच हृदय कछु कहि नहिं आवा। टूट धनुष शर आगे पावा ॥

कहुं कहुं शोणित देखिय कैसे । श्रावण जल भाड़ाबर जैसे ॥
कहत राम लक्ष्मणहिं बुझाई । काहू कीन्ह युद्ध इहि ठाईं ॥
आगे परा गृध्रपति देखा । सुमिरत राम चरणकी रेखा ॥
दो० कर सरोज शिर परसेउ कृपासिंधु रघुवीर ।
निरखिराम छविधाम मुख बिगतभईसबपीर ॥
तब कह गृध्र वचन धरि धीरा । सुनहु राम भंजन भवभीरा ॥
नाथ दशानन यह गति कीन्ही । तेहिखलजनकसुताहरिलीन्ही॥
लै दक्षिणदिशि गयउ गोसाईं । बिलपति अतिकुररीकी नाईं ॥
दरश लागि प्रभु राखेउं प्राना । चलनचहतअबकृपानिधाना ॥
राम कहा तनु राखहु ताता । मुखमुसुकाइ कही तेइ बाता ॥
जाकर नाम मरत मुख आवा । अधमौ मुक्तहोइ श्रुतिगावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगे । राखौं देह नाथ केहि लागे ॥
जलभरि नयन कहा रघुराई । तात कर्म निजते गति पाई ॥
परहित बश जिनके मनमाहीं । तिन्हकहंजगदुर्लभकछुनाहीं ॥
तनतजि तात जाहु मम धामा । देउं कहा तुम पूरण कामा ॥
दो० सीता हरण तात जनि कहहु पितासन जाइ ।
जोमैं राम तौं कुलसहित कहहि दशाननआइ ॥
गृध्र देह तजि धरि हरि रूपा । भूषण बहु पट पीत अनूपा ॥
श्यामगातबिशाल भुज चारी । अस्तुतिकरत नयनभरिबारी ॥
छं० जयरामरूप अनूप निर्गुणसगुणगुणप्रेरकसही ।
दशशीशबाहु प्रचण्डखण्डन चण्डशर मंडनमही ॥
पाथोद गात सरोजमुख राजीव आयत लोचनं ।
नितनौमिरामकृपालु बाहुविशालभवभयमोचनं ॥
बल मप्र्रेय मनादि मज मव्यक्त मेक मगोचरं ।
गोविन्द गोपर द्वन्दहर बिज्ञान घन धरणीधरं ॥
जे राममंत्र जपंत सन्त अनन्त जनमन रंजनं ।
नितनौमिरामअकामप्रिय कामादिखलदलगंजनं ॥

जेहिश्रुतिनिरंतरब्रह्मव्यापकबिरजअजकहिगावहीं ।
करिज्ञानध्यानविरागयोगअनेकमुनिजेहिध्यावहीं ॥
सो प्रकट करुणाकन्द शोभावृन्द अगजग मोहई ।
ममहृदय पंकजभृंग अंग अनंग बहु छवि सोहई ॥
जोअगमसुगमसुभावनिर्मल असमसमशीतलसदा ।
पश्यन्तियं योगी यतनकरि करतमन गोबशसदा ॥
सोराम रमानिवास संतत दासबश त्रिभुवन धनी ।
मम उरबसहुसोशमन संसृति जासुकीरतिपावनी ॥

दो० अविरलभक्ति मांगि बर गृध्र गयो हरिधाम ।
तेहिंकी क्रिया यथोचित निजकर कीन्हीराम ॥

कोमलचित अति दीन दयाला । कारणबिनुरघुनाथ कृपाला ॥
गृध्र अधम खगआमिष भोगी । गतितेहिदीन्हजोयाचतयोगी॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी । हरितजिहोहिंविषयअनुरागी॥
पुनि सीतहि खोजत दोउभाई । चले विलोकत बन बहुताई ॥
शंकुल लता विटप घन कानन । बहुखगमृग तहंगजपंचानन ॥
आवत पन्थ कवन्ध निपाता । तेइ सबकही शापकी बाता ॥
दुर्वासा मोहिं दीन्हो शापा । प्रभुपद देखि मिटा सोपापा ॥
सुनु गन्धर्व कहौं मैं तोही । मोहिंनसोहाइ ब्रह्मकुलद्रोही ॥

दो० मनक्रम वचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव ।
मोहिं समेत विरंचि शिव बश ताके सब देव ॥

शापत ताड़त परुष कहंता । विप्र पूज्यअसगावहिं संता ॥
पूजिय विप्र शील गुण हीना । नहिंनशूद्र गुणज्ञान प्रबीना ॥
कहि निज धर्मताहि समुझावा । निजपदप्रीति देखिमनभावा ॥
रघुपति चरण कमल शिरनाई । गयउगगन आपनिगतिपाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा । शबरी के आश्रम पगुधारा ॥
शबरी दीख राम गृह आये । मुनिकेवचनसमुझिजियभाये ॥
सरसिज लोचन बाहु विशाला । जटा मुकुटशिर उरबनमाला ॥

श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई । शवरी परी चरण लपटाई ॥
प्रेम मगन मुखबचन न आवा । पुनिपुनिपदसरोज शिरनावा ॥
सादर जल लै चरण पखारे । पुनि सुन्दर आसन बैठारे ॥
दो० कन्दमूलफल सरसअति दिये राम कहं आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खायउ बारहिंबार बखानि ॥
पाणिजोरि आगे भइ ठाढ़ी । प्रभुहिबिलोकिप्रीतिअतिबाढ़ी ॥
केहि बिधि स्तुतिकरौं तुम्हारी । अधम जाति मैं जड़ मतिभारी ॥
अधमतेअधम अधमअतिनारी । तिनमहं मैं अतिमन्द गंवारी ॥
कह रघुपति सुनुभामिनिबाता । मानौं एक भक्ति कर नाता ॥
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई । धन बलपरिजन गुणचतुराई ॥
भक्ति हीन नर सोहै कैसे । बिनु जल बारिद देखियजैसे ॥
नवधा भक्ति कहौं तोहिंपाहीं । सावधान सुनु धरु मनमाहीं ॥
प्रथम भक्ति संतनकर संगा । दूसरि रत मम कथा प्रसंगा ॥
दो० गुरुपद पंकजसेवा तीसरि भक्ति अमान ।
चौथिभक्ति मम गुणगण करै कपट तजिगान ॥
मंत्र जाप मम दृढ़ बिश्वासा । पंचम भजन सो बेद प्रकासा ॥
षटदम शील बिरत बहुकर्म्मा । निरत निरन्तरसज्जन धर्म्मा ॥
सतईं सब मोहिं मय जगदेखै । मोते सन्त अधिक करि लेखै ॥
अठईं यथा लाभ सन्तोषा । सपनेहु नहिं देखै पर दोषा ॥
नवम सरल सबसोंछल हीना । मम भरोस हिय हर्ष नदीना ॥
नव महं एको जिन्ह के होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोअतिशयप्रिय भामिनिमोरे । सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे ॥
योगि वृन्द दुर्लभ गति जोई । तो कहं आजु सुलभभइसोई ॥
मम दर्शन फल परम अनूपा । जीवपावनिजसहज स्वरूपा ॥
दो० सब प्रकार तव भाग बड़ ममचरणन्हअनुराग ।
तव महिमाजेहिउरबसिहितासु परम बड़ भाग ॥
सुनि शुभ बचन हर्ष कहंपाई । पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥

जनक सुताकैसुधिहै भामिनि । जानिहुंतोकहु करबरगामिनि ॥
पम्पा सरहि जाहु रघुराई । मुनिवर बिपुल रहे जहं छाई ॥
ऋषिमतंग महिमा गुण भारी । जीव चराचर रहत सुखारी ॥
बैर न कर काहू सन कोई । जासन बैर प्रीति करु सोई ॥
शिखर सुहावन कानन फूले । खगमृग जीव जंतु अनुकूले ॥
करहु सफल श्रम सबकरजाई । तहां होइ सुग्रीव मिताई ॥
सो सबकहिहि देव रघुबीरा । जानतहू पूछत मति धीरा ॥
बार बार प्रभुपद शिर नाई । प्रेम सहित सबकथा सुनाई ॥
छं० कहिकथासकलबिलोकिहरिमुखहृदयपदपंकजधरे ।
तजियोगपावक देहहरिपदलीनभइ जहंनहिंफिरे ॥
नरबिबिधकर्म अधर्मबहुमतशोक प्रद सबत्यागहू ।
बिश्वासकरि कह दासतुलसी रामपदअनुरागहू ॥
दो० जातिहीन अघजन्ममय मुक्तिकीन्ह असनारि ।
महामन्द मनसुखचहसि ऐसेप्रभुहि बिसारि ॥
चले राम त्यागा बन सोऊ । अतुलित बल नरकेहरि दोऊ ॥
बिरही इव प्रभुकरत बिषादा । कहत कथा अनेक सम्बादा ॥
लक्ष्मण देखहु काननशोभा । देखतकेहिकर मननहिं क्षोभा ॥
नारि सहितसब खगमृगवृंदा । मानहु मोरिकरतहहिं निन्दा ॥
हमहिंदेखि मृगनिकर पराहीं । मृगीकहहिं तुमकहं भयनाहीं ॥
तुम आनन्द करहु मृग जाये । कंचन मृग खोजनये आये ॥
संगलाइ करणी करि लेहीं । मानहु मोहिं सिखावनदेहीं ॥
शास्त्रसुचिन्तितपुनिपुनिदेखिय। भूपसुसेवितबशनहिं लेखिय ॥
राखियनारि यदपि उर माहीं । युवतीशास्त्र नृपति बश नाहीं ॥
देखहु तात बसन्त सुहावा । प्रियाहीन मोहिंभय उपजावा ॥
दो० बिरहबिकलबलहीनमोहिं जानेसिनिपट अकेल ।
सहितबिपिनमधुकरखगन्ह मदनकीन्हबगमेल ॥
देखिगये भ्राता सहित तासु दूत निज बात ।

डेरेदीन्हेउ मनहुं तिन्हकटक हटकि नहिं जात।

बिटप बिशालल्लता अरुझानी। बिबिध बितान दियेजनुतानी॥
कदलिताल बर ध्वजापताका। देखि न मोह धीरमन जाका॥
बिबिध भांति फूले तरु नाना। जनु बानैत बने बहु बाना॥
कहुंकहुं सुंदर बिटप सुहाये। जनुभटबिलगबिलगहोइछाये॥
कूजत पिक मानहुं गजमाते। ढेक महोख ऊंट बेषराते॥
मोर चकोर कीर बर बाजी। पारावत मराल सब ताजी॥
तीतर लावा पदचर यूथा। बरणि नजाइमनोज बरूथा॥
रथगिरि शिलादुन्दुभीझरना। चातक बन्दीगुण गण बरना॥
मधुकर मुखर भेरि सहनाई। त्रिबिधि बयारि बसीठी आई॥
चतुरंगिनी सेन सब लीन्हे। बिचरत सबहिं चुनौती दीन्हे॥
लक्ष्मण देखहु काम अनीका। रहहिं धीर तिन्हके जगलीका॥
यहिके एक परम बल नारी। तेहिते उबर सुभट सोइ भारी॥

दो॰ तात तीनि अतिप्रबलखल कामक्रोध अरुलोभ।
मुनि बिज्ञान धाम मन करहिं निमिषमहं क्षोभ॥
लोभ के इच्छा दम्भ बल कामके केवल नारि।
क्रोध के परुष वचनबल मुनिवर कहहिं बिचारि॥

गुणातीत सचरा चर स्वामी। राम उमा सब अन्तर यामी॥
कामिन के दीनता देखाई। धीरन के मन बिरति दृढ़ाई॥
क्रोध मनोज लोभ मद माया। छूटहिं सकल रामकी दाया॥
सोनर इन्द्रजाल नहिं भूला। जापर होइ सो नटअनुकूला॥
उमा कहौं मैं अनुभव अपना। हरिको भजनसत्यजगसपना॥
पुनिप्रभु गये सरोवर तीरा। पम्पानाम शुभग गम्भीरा॥
सन्त हृदय जस निर्मल बारी। बांधे घाट मनोहर चारी॥
जहं तहंपियहिंबिबिधमृगनीरा। जनु उदार गृह याचकभीरा॥

दो॰ पुरइनि सघन ओटजल बेगिन पाइय मर्म।
माया छन्न न देखिये जैसे निर्गुण ब्रह्म॥

सुखीमीन सब एकरस अति अगाध जल माहिं ।
यथाधर्म शीलान्ह के दिनसुख संयुत जाहिं ॥
विकसे सर सिज नाना रंगा । मधुर सुखद गुंजत बहुभृंगा ॥
बोलत जल कुक्कुट कल हंसा । प्रभु बिलोकिजनुकरतप्रशंसा ॥
चक्र बाक बक खग समुदाई । देखत बनै बरणि नहिं जाई ॥
सुन्दर खग गण गिरा सुहाई । जात पथिक जनु लेत बुलाई ॥
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये । चहुंदिशि कानन बिटपसुहाये ॥
चम्पक बकुल कदम्ब तमाला । पाटल पनस पलाश रसाला ॥
नव पल्लवकुसमित तरुनाना । चंचरीक पटली कर गाना ॥
शीतलमन्द सुगन्ध सुभाऊ । सन्तत वहै मनोहर बाऊ ॥
कुहूकुहू कोकिल ध्वनिकरहीं । सुनि रवसरसध्यानमुनिटरहीं ॥
दो० फूले फले बिटपसब रहे भूमि नियराइ ।
पर उपकारी पुरुष जिमिनवहिं सुसम्पतिपाइ ॥
देखि राम अति रुचिरतलावा । मज्जनकीन्ह परम सुखपावा ॥
देखी सुंदर तरुवर छाया । बैठे अनुज सहित रघुराया ॥
तहं पुनि सकलदेव मुनिआये । अस्तुतिकरिनिजधामसिधाये ॥
वैठे परम प्रसन्न कृपाला । कहत अनुज सनकथारसाला ॥
बिरहवन्त भगवंतहि देखी । नारद मनभा शोच बिशेखी ॥
मोर शाप करि अंगी कारा । सहत राम नाना दुख भारा ॥
ऐसे प्रभुहि बिलोकौं जाई । पुनि नबनिहअसअवसरआई ॥
यह बिचार नारद कर बीना । गये जहां प्रभु सुख आसीना ॥
गावत राम चरित मृदु बानी । प्रेम सहित बहुभांतिबखानी ॥
करत दण्डवत लिये उठाई । राखे बड़ी बार उर लाई ॥
स्वगत पूंछि निकट बैठारे । लक्ष्मण सादरचरण पखारे ॥
दो० नाना विधि बिनतीकरी प्रभु प्रसन्न जियजानि ।
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि ॥
सुनहु उदार परम रघुनायक । सुंदर अगम सुगम बरदायक ॥

देहु एक बर मांगौं स्वामी । यद्यपि जानहु अन्तर यामी ॥
जानहु मुनि तुममोर सुभाऊ । जनसनकबहुं कि करौंदुराऊ ॥
कवनबस्तुअसप्रियमोहिंलागी । जोमुनिबर न सकहु तुममांगी ॥
जन कहं कछु अदेय नहिंमोरे । अस विश्वास तजहुजनिभोरे ॥
तब नारद बोले हरषाई । अस बर मागौं करौं ढिठाई ॥
यद्यपि प्रभुके नाम अनेका । श्रुतिकह अधिक एकते एका ॥
राम सकलनामन्ह ते अधिका । होहुनाथअघखगगणबधिका ॥

दो० राका रजनी भक्ति तव राम नाम सोइ सोम ।
अपरनामउडुगणबिमलबसहुभक्तिउर ब्योम ॥
एवमस्तु मुनिसन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ ।
तब नारद मन हर्षअति प्रभुपदनायउमाथ ॥

अति प्रसन्न रघुनाथहिं जानी । पुनि नारद बोले मृदुबानी ॥
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया । मोहेहुमोहिं सुनहु रघुराया ॥
तब बिवाह चाहौं मैं कीन्हा । प्रभु केहि कारणकरन दीन्हा ॥
सुनु मुनितोहिं कहौंसहरोसा । भजहिंमोहिंतजिसकलभरोसा ॥
करौं सदा तिन्हकी रख वारी । जिमिबालकहिराखमहतारी ॥
गहिशिशुबच्छअनलअहिधाई । तहं राखै जननी अरगाई ॥
प्रौढ़ भये तेहि सुत पर माता । प्रीतिकरैं नहिं पाछिलबाता ॥
मोरे प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी । बालकसुतसमदासअमानी ॥
जिनहिं मोरबलनिजबल ताहीं । दुहुं कहं कामक्रोधरिपुआहीं ॥
यह बिचारिपंडितमोहिं भजहीं । पायहु ज्ञानभक्तिनहिं तजहीं ॥

दो० काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोहकी धारि ।
तिन्ह महं अति दारुण दुख मायारूपीनारि ॥

सुनिमुनिकह पुराणश्रुति संता । मोहबिपिन कहंनारि बसंता ॥
जप तप नेम जलाशय झारी । होइ ग्रीषम शोषै सब नारी ॥
काम क्रोध मद मत्सर भेका । इनहिं हर्ष प्रद बरषा एका ॥
दुर्बासना कुमुद समुदाई । तिन्हकहं शरदसदा सुखदाई ॥

धर्म सकल सरसीरुह वृन्दा । होइहि मतिहिंदेतिदुखमन्दा ॥
पुनि ममता जवास बहुताई । पलुहैनारि शिशिर ऋतुपाई ॥
पाप उलूक निकर सुखकारी । नारिनिबिड़रजनीअंधियारी ॥
बुधिबल शीलसत्यसब मीना । बनशीसमत्रिय कहहिंप्रबीना ॥

दो० अवगुणमूल शूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि ।
ताते कीन्ह निवारण मुनिमैंयह जिय जानि ॥

सुनि रघुपतिके बचन सुहाये । मुनितनपुलकिनयनभरिआये ॥
कहहु कवन प्रभुके अस रीती । सेवकपर ममता अति प्रीती ॥
जेनभजहिंअसप्रभु भ्रमत्यागी । ज्ञानरंक मतिमन्द अभागी ॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद । सुनहु राम विज्ञान बिशारद ॥
सन्तन्ह के लक्षण रघुबीरा । कहहु राम भंजन भवभीरा ॥
सुन मुनि सन्तनके गुणकहऊं । जेहिते मैं उन्ह के बश रहऊं ॥
षट बिकारतजिअनघअकामा । सकलअकिंचनशुचिसुखधामा ॥
अमित बोध परमारथ भोगी । सत्त्वसार कबि कोबिदयोगी ॥
सावधान मद मान बिहीना । धीर भक्त गति परम प्रवीना ॥

दो० गुणागार संसार दुख रहित बिगत सन्देह ।
तजिमम चरण सरोज प्रियतिन्हकहंदेहनगेह ॥

निजगुणसुनतश्रवणसकुचाहीं । परगुण सुनत अधिक हर्षाहीं ॥
सम शीतल नहिंत्यागहिंनीती । सरलसुभाव सबहिसनप्रीती ॥
जप तप व्रत दम संयम नेमा । गुरु गोबिन्द बिप्रपद प्रेमा ॥
श्रद्धा क्षमा मइत्री दाया । मुदितामभपद प्रीतिअमाया ॥
बिरति बिवेक बिनय बिज्ञाना । बोध यथारथ वेद पुराना ॥
दम्भ मानमद करहिं न काऊ । भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ॥
गावहिं सुनहिं सदाममलीला । हेतु रहित परहित रतशीला ॥
सुनुमुनि साधुन्ह के गुणजेते । कहिनसकहिं शारद श्रुतितेते ॥

छं० कहिसकन शारद शेषनारद सुनतपदपंकजगहे ।
असदीनबन्धुकृपालअपनेभक्तगुण निजमुखकहे ॥

शिरनाइ बारहिंबार चरणन्ह ब्रह्मपुर नारदगये ।
ते धन्य तुलसीदास आश विहाइ जे हरि रंगरये ॥

दो० रावणारि यश पावन गावहिं सुनहिं जे लोग ।
राम भक्ति दृढ़ पावहीं बिनु विराग जप योग ॥
दीपशिखा सम युवतिजन मनजनिहोसि पतंग ।
भजहिं राम तजि काममद करहिं सदासतसंग ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने बिमल वैराग्यसंपादनोनामतृतीयःसोपानः

इति

——*——

श्रीगणेशायनमः ॥

किष्किन्धाकाण्ड ॥

---*---

श्लोक ॥

कुन्देदीवरसुन्दरावतिबलौविज्ञान धामावुभौ शौभाढ्योवर धन्विनौश्रुतिनुतौगौबिप्रवृन्दप्रियौ ॥ मायामानुषरूपिणौरघुवरौ सद्धर्मवंतौहितौ सीतान्वेषणतत्परौपथिगतौभक्तिप्रदौतौहिनः १ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवंकलिमलप्रध्वंसनंचाव्ययंश्रीमच्छम्भुमुखेन्दु सुन्दरबरेसंशोभितंसर्वदा ॥ संसारामयभेषजंसुमधुरं श्रीजानकी जीवनं धन्यास्तेकृतिनःपिवन्तिसततं श्रीरामनामामृतम् २ ॥

सो० मुक्तिजन्म महिजानि ज्ञान खानि अघहानिकर ।
जहं बश शंभु भवानि सो काशी सेइय कसन ॥
जरतसकल सुरवृन्द बिषमगरल जेहि पानकिय ।
तेहिन भजसि मतिमन्द कोकृपालशंकर सरिस ॥

आगे चले बहुरि रघुराई । ऋष्य मूक पर्बत नियराई ॥
तहं रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवतदेखि अतुलबलसींवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुषयुगलबल रूपनिधाना ॥
धरि बटु रूप देख तैं जाई । कहेसिमोहिंजियसैन बुझाई ॥
पठवा बालि होइ मन मैला । भागौं तुरत तजौं यह शैला ॥
बिप्ररूप धरि कपि तहंगयऊ । माथनाय पूंछत अस भयऊ ॥
को तुम श्यामल गौर शरीरा । क्षत्री रूप फिरहु बनबीरा ॥

कठिन भूमि कोमल पदगामी । कवन हेतुबनबिचरहु स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुंदर गाता । सहत दुसह बन आतपबाता ॥
कैतुम तीनि देवमहं कोऊ । नर नारायण कै तुम दोऊ ॥

दो० जग कारण तारणभवहिं भंजन धरणी भार ।
कैतुम अखिल भुवनपति लीन्हमनुज अवतार ॥

सुनि बोले रघुबंश कुमारा । बिधिकर लिखाको मेटनहारा ॥
कोशलेश दशरथ के जाये । हम पितुबचन मानिबनआये ॥
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥
यहां हरी निश्चर बैदेही । खोजत बिप्र फिरहिंहम तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निजकथा बुझाई ॥
प्रभुपहिचानि परे गहिचरणा । सोसुखउमाजाहि नहिबरणा ॥
पुलकिततनमुख आवनबचना । देखत रुचिर बेषकी रचना ॥
पुनि धीरजधरिअस्तुतिकीन्हा । हर्षि हृदयनिजनाथहिचीन्हा ॥
मैं अजान होइ पूंछौं साईं । तुम कस पूंछहु नरकी नाईं ॥
तवमायावश फिरौं भुलाना । ताते प्रभु पद नहिंपहिंचाना ॥

दो० एक मन्द मैं मोहबश कीशहृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेहु दीनबन्धु भगवान ॥

यदपि नाथ अवगुण बहुमोरे । सेवक प्रभुहिं परै जनु भोरे ॥
नाथ जीव तव माया मोहू । सो निस्तरै तुम्हारे छोहू ॥
तापर मैं रघुबीर दुहाई । जानौं नहिं कछु भजनउपाई ॥
सेवक सुत पितु मातु भरोसे । रहैं अशोच बनै प्रभु पोसे ॥
असकहि चरण परे अकुलाई । निजतनप्रकट प्रीतिउर छाई ॥
तब रघुपति उठाइ उरलावा । निजलोचनजलसीचिजुड़ावा ॥
सुनुकपिजियजनिमानिसिऊना । तैंमम प्रिय लक्ष्मण ते दूना ॥
सम दरशी मोहिं कहसबकोई । सेवक प्रिय अनन्यगतिसोई ॥

दो० सो अनन्य अस जाहिकै मतिन टरै हनुमन्त ।
मैं सेवक सचरा चर रूप राशि भगवन्त ॥

देखि पवन सुत पतिअनुकूला । हृदय हर्षि बीते सब शूला ॥
नाथ शैल पर कपि पतिरहई । सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
तासन नाथ मइत्री कीजै । दीन जानि तेहिअभय करीजै ॥
सो सीता कर खोज कराइहि । जहंतहं मर्कट कोटि पठाइहि ॥
इहिबिधिसकलकथासमुझाई । लिये दोउ जन पीठि चढ़ाई ॥
जब सुग्रीव राम कहं देखा । अतिशय धन्यजन्म करिलेखा ॥
सादर मिलेउ नाइ पदमाथा । भेंटे अनुज सहित रघुनाथा ॥
कपिके मन बिचार यह नीती । करिहहिंबिधि मोसन येप्रीती ॥

दो० तब हनुमन्त उभय दिशिकहिसब कथा बुझाइ ।
पावक साखी देइकरि जोरी प्रीति दृढ़ाइ ॥

कीन्ह प्रीतिकछु बीच नराखा । लक्ष्मण रामचरित सबभाखा ॥
कह सुग्रीव नयनभरि बारी । मिलिहिनाथमिथिलेशकुमारी ॥
मंत्रिन सहित यहां इक बारा । बैठिरहउं कछु करत बिचारा ॥
गगन पन्थ देखी मैं जाता । परबश परी बहुत बिलखाता ॥
राम राम हा राम पुकारी । ममदिशिदेखि दीनपट डारी ॥
मांगा राम तुरत सो दीन्हा । पटउरलाइ शोचअति कीन्हा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । तजहु शोक मन आनहु धीरा ॥
सबप्रकार करिहौं सेवकाई । जेहिबिधिमिलहिंजानकीमाई ॥

दो० सखाबचन सुनि हरषे रघुपति करुणा सींव ।
कारण कवन बसहु बन मोसन कहु सुग्रीव ॥

नाथ बालि अरु मैं दोउभाई । प्रीति रही कछुबरणि नजाई ॥
मय सुत मायावी तेहि नाऊं । आवा सो प्रभु हमरे गाऊं ॥
अर्द्ध रात्रि पुर द्वार पुकारा । बालिहु रिपु बल सहैनपारा ॥
धावा बालि देखिसोइभागा । मैं पुनिगयउं बन्धु संगलागा ॥
गिरिवरगुहा पैठि सो जाई । बालि मोहिं तबकहा बुझाई ॥
परखेउ मोहिं एक पखवारा । नहिं आवौं तो जानेहु मारा ॥
मास दिवस तहं रहेउंखरारी । निसरो रुधिर धार तहं भारी ॥

तबमैं निजमन कीन्ह बिचारा । जाना असुर बन्धु कहं मारा ॥
बालिहतेसि मोहिंमारिहिआई । शिला द्वार दै चलेउं पराई ॥
मंत्रिन पुर देखा बिनु साईं । दीन्हेउ राज मोहिंबरिआईं ॥
बाली ताहि मारि गृह आवा । देखिमोहिं जिय भेद बढ़ावा ॥
रिपु समानमोहिंमारेसिभारी । हरिलीन्हेसि सर्बसअरुनारी ॥
ताके भय रघुबीर कृपाला । सकलभुवनमैंफिरेउं बिहाला ॥
यहां शाप बश आवतनाहीं । तदपि सभीत रहौं मनमाहीं ॥
सुनि सेवक दुख दीनदयाला । फरकिउठेदोउ भुजाबिशाला ॥
दो० सुनु सुग्रीव मैं मारिहौं बालिहिएकहि बाण ।
ब्रह्म रुद्र शरणागतहु गये न उबरहिं प्राण ॥
जेन मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हैं बिलोकत पातकभारी ॥
निजदुखगिरिसमरजकरजाना । मित्रकेदुख रज मेरु समाना ॥
जिनकेअसमति सहज न आई । ते शठ हठ कत करत मिताई ॥
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा । गुणप्रकटैअवगुणहि दुरावा ॥
देतलेत मन शंक न धरहीं । बलअनुमान सदाहित करहीं ॥
बिपति कालकर शतगुणनेहा । श्रुति कहसत्य मित्रगुणएहा ॥
आगे कह मृदु बचन बनाई । पाछे अनहित मन कुटिलाई ॥
जाकर चितअहिगति समभाई । अस कुमित्र परिहरे भलाई ॥
दो० मित्र मित्रसों प्रीतिकरि हृदय आनमुख आन ।
जाके मन बच प्रेम नहिं दुरेदुराये जान ॥
सेवक शठ नृपकृपिण कुनारी । कपटी मित्र शूल सम चारी ॥
सखा शोच त्यागहु बल मोरे । सबबिधि करब काजमैं तोरे ॥
कह सुग्रीव सुनौ रघुबीरा । बालि महाबल अतिरणधीरा ॥
दुन्दुभि अस्ति तालदिखराये । बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये ॥
देखि अमितबल बाढ़ी प्रीती । बालि बधनकर भइ परतीती ॥
बारहि बार नाइ पद शीशा । प्रभुहि जानिमन हर्षकपीशा ॥
उपजा ज्ञान बचनतब बोला । नाथकृपामन भयउ अडोला ॥

सुख सम्पति परिवार बड़ाई । सबपरि हरिकरिहैं सेवकाई ॥
ये सब राम भक्ति के बाधक । कहहिंसन्त तवपदअवराधक ॥
शत्रु मित्र दुख सुखजगमाहीं । माया कृतपरमारथ नाहीं ॥
बालि परमहित जासुप्रसादा । मिलेहु रामतुम शमनबिषादा ॥
सपने जेहि सन होइ लराई । जागे समुझतमन सकुचाई ॥
अब प्रभु कृपाकरहुइहि भांती । सबतजि भजनकरौंदिनराती ॥
सुनि बिराग संयुत कपिबाणी । बोलेबिहंसि राम धनुपाणी ॥
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई । सखा बचन मम मृषानहोई ॥
नटमरकट इव सबहि नचावत । रामखगेश वेद अस गावत ॥
लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चापशायक गहिहाथा ॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसिजाइ निकटबलपावा ॥
सुनत बालि क्रोधातुर धावा । गहिकरचरणनारिसमुझावा ॥
सुनुपति जिनहिंमिलासुग्रीवा । ते दोउ बन्धु तेज बलसींवा ॥
कोशलेशसुत लक्ष्मण रामा । कालहु जीति सकहिंसंग्रामा ॥
सोइ रघुबीर हृदय महंआनहु । छांड़हु मोह कहा मम मानहु ॥

दो० कहाबालिसुनु भीरु प्रिय समदरशीरघुनाथ ।
जो कदापि मोहिंमारिहैं तौ पुनिहोबसनाथ ॥

अस कहिचला महाअभिमानी । तृण समान सुग्रीवहिंजानी ॥
बालि देखि सुग्रीवहि ठाढ़ा । हृदय क्रोधपुनिबहुबिधिबाढ़ा ॥
भिरेउ युगुल बाली अतितर्जा । मुष्टकमारि महा धुनिगर्जा ॥
जब सुग्रीव बिकलहोइ भागा । मुष्टिप्रहार बज्र सम लागा ॥
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला । बन्धुनहोइ मोर यह काला ॥
एक रूप तुम भ्राता दोऊ । तेहिभ्रमते नहिं मारेउं सोऊ ॥
कर परसा सुग्रीव शरीरा । तनभा कुलिश गईसबपीरा ॥
मेली कण्ठ सुमन की माला । पठवा पुनि बलदेइबिशाला ॥
पुनि नाना बिधि भई लराई । बिटप ओट देखहिं रघुराई ॥
दो० बहु छल बल सुग्रीवकरि हृदय हारिभयमानि ।

मारा बालिहि राम तब हियेमांझ शर तानि ।
परा बिकल महि शरके लागे । पुनिउठि बैठ देखिप्रभुआगे ॥
श्याम गात शिर जटा बनाये । अरुणनयन शरचाप चढ़ाये ॥
पुनिपुनि चितयचरणचितदीन्हे । सुफल जन्ममाना प्रभुचीन्हे ॥
हृदय प्रीति मुख वचन कठोरा । बोला चितय रामकी ओरा ॥
धर्म हेतु अवतरेहु गुसाईं । मारेहु मोहिं व्याधकी नाईं ॥
मैं वैरी सुग्रीव पियारा । कारण कवननाथमोहिंमारा ॥
अनुज बधू भगिनी सुतनारी । सुनशठ ये कन्यासम चारी ॥
इन्हे कुदृष्टि बिलोकै जोई । ताहि बधे कछु पाप न होई ॥
मूढ़ तोहिं अतिशय अभिमाना । नारिसिखावनकरेसिनकाना ॥
ममभुजबलआश्रित तेहि जानी । माराचहसिअधमअभिमानी ॥
दो० सुनहुराम स्वामी सुभग चलन चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूं मैं पातकी अन्तकाल गति तोरि ॥
सुनत राम अति कोमल बाणी । बालिशीश परशानिज पाणी ॥
अचल करौं तन राखहुं प्राना । बालिकहासुनुकृपा निधाना ॥
जन्म जन्म मुनि यतन कराहीं । अन्तराम कहि आवत नाहीं ॥
जासु नाम बल शंकर काशी । देतसबहिसमगतिअबिनाशी ॥
ममलोचन गोचर सोइ आवा । बहुरिकिअसप्रभुबनहिंबनावा ॥
छं० सोनयन गोचर जासुगुण नितनेतिकहि श्रुति गावहीं ।
जिमिपवनमनगोनिरसकरि मुनिध्यानकबहुंक पावहीं ॥
मोहि जानिअतिअभिमानबशप्रभु कहेउराखु शरीरहीं ।
असकवनशठहठ काटि सुरतरु बारि करहिं करीरहीं ॥
अब नाथकरि करुणा बिलोकहु देव यह बर मांगऊं ।
जेहि योनि जन्मौं कर्म वश तहं राम पद अनुरागऊं ॥
यह तनयममसम विनयबल कल्याणपद प्रभुदीजिये ।
गहि बांह सुर नर नाह अंगद दास आपन कीजिये ॥
दो० राम चरण दृढ़प्रीतिकरि बालिकीन्हतनत्याग ।

सुमनमालजिमि कण्ठते गिरत न जानैंनाग ॥

राम बालि निज धाम पठावा । नगरलोगसबव्याकुल धावा ॥
नाना विधि बिलाप कर तारा । छूटे केश न देह संभारा ॥
पुनि पुनि तासु शीश उरधरई । बदन बिलोकि हृदयमहंहतई ॥
मैंपति तुमहिं बहुत समुझावा । कालविवशपियमनहिंनआवा ॥
अंगदकहं कछु कहन न पायहु । बीचहिंसुरपुर प्राणपठायहु ॥
तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ज्ञानहरिलीन्हीमाया ॥
क्षितिजलपावक गगन समीरा । पंचरचित यह अधम शरीरा ॥
प्रकट सोतनु तव आगे सोवा । जीवनित्यतुमकेहिलगिरोवा ॥
उपजाज्ञान चरण तव लागी । लीन्हेसिपरमभक्तिबरमांगी ॥
उमा दारु योषित की नाईं । सबहिं नचावतराम गुसाईं ॥
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा । मृतककर्म विधिवतसबकीन्हा ॥
राम कहा अनुजहि समुझाई । राज देहु सुग्रीवहि जाई ॥
रघुपति चरण नाइकरि माथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

दो० लक्ष्मण तुरत बुलावा पुरजन बिप्र समाज ।
राजदीन्ह सुग्रीव कहं अंगद कहं युवराज ॥

उमा रामसम हित जगमाहीं । सुत पितुमातु बन्धुकोउनाहीं ॥
सुर नरमुनि सबकी यह रीती । स्वारथ लागि करैं सबप्रीती ॥
बालित्रास व्याकुल दिनराती । तन बिवरणचिन्ताजरुछाती ॥
सो सुग्रीव कीन्ह कपि राऊ । अति कोमलरघुवीर सुभाऊ ॥
ऐसे प्रभु कहं जो परिहरहीं । काहेन विपतिजाल नरपरहीं ॥
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बुलाई । बहु प्रकार नृपनीतिसिखाई ॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीशा । पुर न जाउंदशचारि बरीशा ॥
गत ग्रीषम वर्षा ऋतु आई । रहिहौंनिकट शैलपर छाई ॥
अंगद सहित करहु तुम राजू । सन्तत हृदय राखिममकाजू ॥
तब सुग्रीव भवन फिरि आये । राम प्रवर्षण गिरिपर छाये ॥

दो० प्रथमहिं देवन गिरिगुहा राखी रुचिर बनाइ ।

रामकृपानिधिकछुकदिन बासकरहिंगेआइ ॥
सुन्दर बन कुसुमिततरुशोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
कन्द मूलफल अतिहिसुहाये । भये बहुत जबते प्रभु आये ॥
देखि मनोहर शैल अनूपा । रहेतहंअनुज सहित सुरभूपा ॥
मंगल रूप भये बन तबते । कीन्ह निवास रमापतिजबते ॥
मधुकर खगमृगतनधरिदेवा । करहिं सिद्ध मुनि प्रभुकीसेवा ॥
फटिकशिलाअति शुभ्रसुहाई । सुख आसीन तहां दोउ भाई ॥
कहत अनुजसन कथाअनेका । भक्तिबिरतिनृप नीति बिवेका ॥
बर्षा काल मेघ नभ छाये । गरजत लागत परम सुहाये ॥
दो० लक्ष्मण देखहु मोरगण नाचत बारिद पेखि ।
गृही बिरति रत हर्ष युतबिष्णु भक्त कहं देखि ॥
घन घमण्ड नभ गरजतघोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥
दामिनिदमकिरहीघनमाहीं । खलकी प्रीति यथाथिर नाहीं ॥
बरषहिं जलद भूमिनियराये । यथा नवहिं बुध बिद्या पाये ॥
बूंद अघात सहैं गिरि कैसे । खलके बचन सन्त सहैंजैसे ॥
क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई । जस थोरे धन खल बौराई ॥
भूमि परत भा डाबर पानी । जिमि जीवहिंमाया लपटानी ॥
सिमिटिसिमिटिजलभरेतलावा। जिमिसदगुणसज्जनपहंआवा॥
सरिताजलजलनिधिमहंजाई । होइ अचलजिमिजनहरिपाई ॥
दो० हरित भूमि तृण संकुल समुझिपरै नहि पन्थ ।
जिमि पाखण्ड बिवाद ते लुप्त भये सदग्रन्थ
दादुरधुनि चहु ओर सुहाये । बेद पढ़ैं जनु बटु समुदाये ॥
नव पल्लव भे बिटप अनेका ।साधुके मन जस होइ बिवेका ॥
अर्क जवास पात बिनुभयऊ । जिमिसुराज्य खलउद्यमगयऊ ॥
खोजतपन्थ मिलै नहिं धूरी । करै क्रोध जिमि धर्महिंदूरी ॥
शशि सम्पन्न सोहमहिकैसी । उपकारीकी सम्पति जैसी ॥
निशितम घनखद्योतबिराजा । जनु दम्भिन करजुरासमाजा ॥

महावृष्टि चलि फूटिकियारी । जिमिस्वतंत्रहोइबिगरहिंनारी ॥
कृषी निरावहिंचतुरकिशाना । जिमिबुधतजहिं मोहमदमाना ॥
देखियत चक्रबाक खगनाहीं । कलिहिपाइ जिमिधर्मपराहीं ॥
ऊषर बरषै तृण नहिंजामा । सन्तहृदय जस उपजनकामा ॥
बिबिध जन्तुसंकुलमहिभ्राजा । बढ़ै प्रजा जिमि पाइ सुराजा ॥
जहं तहं पथिकरहेथकिनाना । जिमिइन्द्रियगणउपजे ज्ञाना ॥

दो० कबहुं प्रबल चल मारुत जहं तहंमेघबिलाहिं ।
जिमि कपूत कुल ऊपजे सम्पतिधर्म्मनशाहिं ॥
कबहुंदिवसमहंनि बिड़तमक बहुंकप्रकटपतंग ।
उपजै बिनशै ज्ञान जिमि पाइ ससंग कुसंग॥

बरषा बिगत शरदऋतु आई । देखहु लक्ष्मण परम सुहाई ॥
फूले कास सकल महि छाई । जनु बर्षा ऋतु प्रकट बुढ़ाई ॥
उदित अगस्तपन्थजलसोषा । जिमि लोभहि शोषै सन्तोषा ॥
सरिता सरजल निर्मलसोहा । सन्त हृदय जसगत मद मोहा ॥
रसरस शोषसरित सरपानी । ममतात्यागिकरहिजिमिज्ञानी ॥
जानि शरदऋतु खंजन आये । पाइसमय जिमिसुकृतसुहाये ॥
पंकन रेणु सोह अस धरणी । नीतिनिपुण नृपकीजसकरणी ॥
जल संकोचबिकलभयमीना । बिबिधकुटुम्बी जिमिधनहीना ॥
बिनुघननिरमलसोहअकाशा । जिमिहरिजनपरिहरसबआशा ॥
कहुं कहुं वृष्टि शारदी थोरी । कोउएक पावभक्ति जिमिमोरी ॥

दो० चलेहर्षतजि नगरनृप तापसबणिक भिखारि ।
जिमि हरि भक्तिपाइजन तजहि आश्रमीचारि ॥

सुखी मीनजहं नीर अगाधा । जिमि हरिशरणन एकोबाधा ॥
फूले कमल सोह सर कैसे । निर्गुण ब्रह्म सगुण भये जैसे ॥
गुंजत मधुकरनिकर अनूपा । सुंदर खग रव नाना रूपा ॥
चक्रबाक मनदुखनिशि पेखी । जिमि दुर्जन पर सम्पतिदेखी ॥
चातक रटत तृषाअति वोही । जिमि सुख लहैन शंकरद्रोही ॥

शरदातप निशि शशिअपहरई । सन्तदरश जिमिपातक टरई ॥
देखहिं बिधु चकोर समुदाई । चितवहिंहरिजनहरिजिमिपाई ॥
मशक दंश बीते हिम त्रासा । जिमि द्विजद्रोह कियेकुलनाशा ॥
दो० भूमि जीव संकुल रहे गये शरद ऋतु पाइ ।
सतगुरुमिलेतेजाहिंजिमि संशय भ्रमसमुदाइ ॥
वर्षागत निर्मल ऋतु आई । सुधि न तात सीता की पाई ॥
एकबार कैसेउ सुधि पावों । कालहुजीति निमिषमहंल्यावों ॥
कतहुं रहौ जो जीवति होई । तात यतन करि आनौं सोई ॥
सुग्रीवहुं सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोश पुर नारी ॥
जेहि शायक मैं मारा बाली । तेहि शर हतौं मूढ़ कहं काली ॥
जासु कृपा छूटै मद मोहा । ताकहं उमा कि सपनेहु कोहा ॥
जानहिं यहचरित्र मुनि ज्ञानी । जिन रघुबीर चरणरतिमानी ॥
लक्ष्मण क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥
दो० तबअनुजहिसमुझावा रघुपति करुणा सींव ।
भय देखाय लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥
यहां पवन सुत हृदय बिचारा । राम काज सुग्रीव बिसारा ॥
निकट जाइ चरणन शिरनावा । चारिहुबिधितेहिकहिसमुझावा ॥
सुनि सुग्रीव परम भय माना । बिषयमोर हरिलीन्हेउ ज्ञाना ॥
अब मारुत सुत दूत समूहा । पठवहु जहं तहं बानर यूहा ॥
कहहु पक्ष महं आव न जोई । मोरे कर ताकर बध होई ॥
तब हनुमन्त बुलाये दूता । सबकर करि सनमान बहूता ॥
भय अरु प्रीति नीति दिखराई । चलेसकल चरणन शिरनाई ॥
तेहि अवसर लक्ष्मण पुरआये । क्रोधदेखि जहंतहं कपिधाये ॥
दो० धनुषचढ़ाइकहातब जारि करौं पुर क्षार ।
व्याकुलनगरदेखितब आवा बालिकुमार ॥
चरण नाइशिर विनती कीन्ही । लक्ष्मण अभय बांहतेहिदीन्ही ॥
क्रोधवन्तलक्ष्मण सुनि काना । कहकपीशअतिशयअकुलाना ॥

तुम हनुमन्त संग लै तारा । करि विनतीसमुझावकुमारा ॥
तारा सहित जाइ हनुमाना । चरणवन्दिप्रभुसुयशबखाना ॥
करि विनती मंदिर लै आये । चरण पखारि पलंग बैठाये ॥
तब कपीश चरणन शिरनावा । गहिभुज लक्ष्मणकंठलगावा ॥
नाथबिषय सम मदकछुनाहीं । मुनि मनमोह करै क्षणमाहीं ॥
सुनत बिनीत बचन सुखपावा । लक्ष्मणतेहिबहुबिधिसमुझावा ॥
पवन तनय सबकथा सुनाई । जेहि बिधिगये दूत समुदाई ॥

दो० हर्षिचले सुग्रीवतब अंगदादि कपि साथ ।
राम अनुज आगे किये आयेजहं रघुनाथ ॥

नाय चरण शिर कह करजोरी । नाथमोरि कछुनाहिंन खोरी ॥
अतिशय प्रबलदेव तव माया । छूटै तबहिं करहु जब दाया ॥
बिषयविवश सुरनरमुनिस्वामी । मैंपामर पशुकपि अतिकामी ॥
नारि नयनशर जाहि न लागा । महाघोरनिशि सोवत जागा ॥
लोभ पाशजेहि गरन बंधाया । सोनर तुम समान रघुराया ॥
यह गुण साधन ते नहिं होई । तुम्हरीकृपा पाव कोइ कोई ॥
तब रघुपति बोले मुसकाई । तुमप्रियमोहिंभरतजिमिभाई ॥
अबसोइ यतनकरहु मन लाई । जेहि बिधि सीताकीसुधिपाई ॥

दो० इहि बिधि होतबतकही आये बानर यूथ ।
नानाबरण अतुल बल देखियकीश बरूथ ॥

बानर कटक उमामैं देखा । सो मूरख जोकिय चहलेखा ॥
आय राम पद नावहिं माथा । निरखिबदनसबहोहिं सनाथा ॥
अस कपि एक न सेनामाहीं । राम कुशलपूंछी जेहि नाहीं ॥
यहनहिंकछु प्रभुकी अधिकाई । विश्व रूप व्यापक रघुराई ॥
ठाढ़े जहं तहं आयसु पाई । कहि सुग्रीव सबहिं समुझाई ॥
राम काज अरु मोर निहोरा । बानर यूथ जाहु चहुं ओरा ॥
जनक सुताकहं खोजहु जाई । मासदिवस महंआयहु भाई ॥
अवधिमेटि जो बिनु सुधिपाये । अवशिमरिहिसोममकरआये ॥

दो० बचन सुनत सब बानर जहं तहं चलेतुरन्त ।
तब सुग्रीव बुलायेउ अंगदादि हनुमन्त ॥
सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवन्त मति धीर सुजाना ॥
सकलसुभटमिलिदक्षिणजाहू । सीता सुधि पूंछेहु सब काहू ॥
मनबच क्रमसोंयतनबिचारेहु । रामचन्द्र कर काज संवारेहु ॥
भानु पीठ सेइय उर आगी । स्वामीसेइय सब छल त्यागी ॥
तजि माया सेइय परलोका । मिटहिं सकल भवसंभव शोका ॥
देह धरे कर यह फल भाई । भजिय राम सब काम बिहाई ॥
सोइ गुणज्ञ सोई बड़भागी । जो रघुबीर चरण अनुरागी ॥
आयसु मांगिचरण शिरनाई । चले सकल सुमिरत रघुराई ॥
पाछे पवन तनय शिरनावा । जानि काज प्रभुनिकट बुलावा ॥
परसा शीश सरोरुह पानी । कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी ॥
बहु प्रकार सीतहिसमुझायहु । कहि बल बीर बेगि तुम आयहु ॥
हनुमतजन्म सुफलकरिजाना । चलेहृदय धरि कृपा निधाना ॥
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता । राज नीति राखत सुरत्राता ॥
दो० चले सकलबन खोजत सरिता सर गिरि खोह ।
राम काज लवलीन मन बिसरा तनकर छोह ॥
कतहुं होइ निशिचरसन भेटा । प्राण लेहिं इक एक चपेटा ॥
बहु प्रकार गिरिकानन हेरहिं । कोउमुनिमिलैताहि सबघेरहिं ॥
लागि तृषा अतिशय अकुलाने । मिलै नजल घनगहनभुलाने ॥
तब हनुमान कीन्ह अनुमाना । मरणचहतसबबिनुजलपाना ॥
चढ़िगिरिशिखरचहूं दिशिदेखा । भूमि बिवर इककौतुक पेखा ॥
चक्रवाक बक हंस उड़ाहीं । बहुतकखगप्रविशहिंतेहिमाहीं ॥
गिरिते उतरि पवनसुत आवा । सब कहंलैसो बिवरदिखावा ॥
आगे करि हनुमन्तहि लीन्हा । पैठे बिवर बिलम्ब न कीन्हा ॥
दो० दीखजाइ उपवन सुभग सर बिकसे बहुकंज ।
मन्दिर एक रुचिर तहं बैठि नारि तपपुंज ॥

दूरिहि ते तेहि सब शिरनावा । पूंछेसि निज वृत्तांत सुनावा ॥
तब तेइ कहा करहु जलपाना । खाहु सरस सुन्दर फलनाना ॥
मज्जनकीन्ह मधुर फलखाये । तासुनिकटपुनिसबचलिआये ॥
तेहिसब आपनि कथा सुनाई । मैं अब जांव जहां रघुराई ॥
मूंदहु नैन बिवर तजि जाहू । पैहहु सीतहि जनि कदराहू ॥
नयन मूंदि तब देखहिं बीरा । ठाढ़े सकल सिन्धु के तीरा ॥
सो पुनि गई जहां रघुनाथा । जाइ कमल पद नायसिमाथा ॥
नाना भांति बिनय तेइ कीन्ही । अन पावनी भक्तिप्रभु दीन्ही ॥

दो० बदरी बन कहं सोगई प्रभु आज्ञा धरि शीश ।
उरधरि राम चरणयुग जोबन्दित अज ईश ॥

इहां बिचारहिंकपि मन माहीं । बीती अवधि काज कछुनाहीं ॥
सबमिलिकहहिं परस्पर बाता । बिनुसुधिलिये करबकाभ्राता ॥
कह अंगद लोचन भरि बारी । दुहूं प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
इहां न सुधि सीता की पाई । वहां गये मारिहि कपिराई ॥
पिता बधे पर मारत मोही । राखा राम निहोरा वोही ॥
पुनि पुनि अंगद कहसबपाहीं । मरण भयो कछु संशय नाहीं ॥
अंगद वचन कहत कपि बीरा । बोलि न सकहिंनयनबहनीरा ॥
क्षण इक शोक मगन ह्वैगये । पुनिअस वचनकहत सबभये ॥
हम सीता की बिनसुधि लीन्हे । फिरब न सुनुयुवराज प्रवीने ॥
असकहिलवण सिन्धुतटजाई । वैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
जामवन्त अंगद दुख देखी । कही कथा उपदेश बिशेखी ॥
तात रामकहँनरजनि जानहु । निरगुणब्रह्म अजित अजमानहु ॥
हमसब सेवकअति बड़भागी । सन्तत सगुण ब्रह्म अनुरागी ॥

दो० निज इच्छा अवतरेउप्रभु सुरद्विज गो महि लागि ।
सगुण उपासक रहहिंसब मोक्षसकल सुखत्यागि ॥

इहिविधि कहत कथा बहुभांती । गिरि कन्दरा सुना सम्पाती ॥
बाहरहोइ देखे सब कीशा । मोहिं अहार दीन्ह जगदीशा ॥

आजु सबनकहं भक्षण करऊं । दिन बहुते अहारबिनु मरऊं ॥
कबहुंनमिलिभरि उदरअहारा । आजुदीन्हबिधि एकहिबारा ॥
डरपे गृध्र बचन सुनि काना । अबभामरणसत्य हमजाना ॥
कपि सब उठे गृध्र कहं देखी । जामवन्त मन शोच विशेखी ॥
कह बिचारि अंगद मन माहीं । धन्य जटायुसरिसकोउनाहीं ॥
राम काज कारण तनुत्यागी । हरिपुर गयउ परमबड़भागी ॥
जो रघुबीर चरण चित लावै । तिहिसमधन्य न आनकहावै ॥
सुनिखग हर्ष शोक युत बानी । आवानिकट कपिनभयमानी ॥
ताहि देखि सब चले पराई । ठाढ़कीन्हतिन्ह शपथदिवाई ॥
तिन्हैं अभयकरि पूंछेसि जाई । कथासकलतिनताहि सुनाई ॥
सुनिसम्पाति बन्धुकी करणी । रघुपतिमहिमाबहुबिधिबरणी ॥

दो० म्वहिंलैचलहु सिन्धुतट देउंतिलांजलिताहि ।
बचनसहाय करब मैं पैहहु खोजहु जाहि ॥

अनुज क्रिया करि सागरतीरा । कहनिजकथा सुनहुकपिबीरा ॥
हम दोउ बन्धु प्रथम तरुणाई । गगनगये रविनिकट उड़ाई ॥
तेज न सहिसकसो फिरिआवा । मैं अभिमानी रबिनियरावा ॥
जरे पंख रवि तेज अपारा । परेउं भूमिकरि घोरचिकारा ॥
मुनि इक नाम चन्द्रमा ओही । लागी दया देखिकर मोही ॥
बहुप्रकारतिन्ह ज्ञान सिखावा । देहजनित अभिमानछुड़ावा ॥
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिहैं । तासुनारि निशिचरपतिहरिहैं ॥
तासुखोज पठवहिं प्रभु दूता । तिन्हैं मिलेतुम होबपुनीता ॥
जमिहहिंपंख करसिजनि चीता । तिन्हैं देखाइदेब तैं सीता ॥
यहकहिमुनिनिज आश्रमगयऊ । तिहिक्षणहृदयज्ञानकछुभयऊ॥
सदा रामकर सुमिरण करऊं । निशिदिनमगजोवतदिनभरऊं॥
मुनि की गिरा सत्यभइ आजू । सुनिममबचन करहुप्रभुकाजू ॥
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । तहं रहरावणसहज अशंका ॥
तहां अशोक वाटिका अहई । सीय बैठि तहं शोचति रहई ॥

दो० मैं देखौं तुम नाहिंन गृध्रहि दृष्टि अपार ।
बूढ़भयोंनतु करतेउं कछुक सहाय तुम्हार ॥
जो लांघै शत योजन सागर । करैसो रामकाज अतिआगर ॥
जो कोइ करै रामकर काजू । तेहिसमधन्यआन नहिं आजू ॥
मोहिं बिलोकि धरहु मनधीरा । रामकृपा कसभयउ शरीरा ॥
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं । अतिअपार भवसागरतरहीं ॥
तासुदूत तुम तजि कदराई । राम हृदय धरि करहु उपाई ॥
असकहि उमा गृध्र जब गयऊ । सबकेमन अतिविस्मयभयऊ ॥
निजनिज बल सबकाहू भाखा । पार जानकर संशय राखा ॥
जरठभयों अब कह ऋक्षेशा । नहितनुरहा प्रथम बललेशा ॥
जबहिं त्रिविक्रम भये खरारी । तब मैं तरुणरहा बलभारी ॥
दो० बलि बांधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरणि न जाइ ।
उभय घरी महं दीन्ह मैं सात प्रदक्षिण धाइ ॥
अंगद कहा जाउं मैं पारा । जिय संशय कछुफिरतीबारा ॥
जामवंत कह तुम सबलायक । किमिपठवैंसबहीकरनायक ॥
कहा ऋक्षपति सुनु हनुमाना । का चुपसाधि रहा बलवाना ॥
पवनतनय बल पवन समाना । बुध विवेक बिज्ञान निधाना ॥
कौनसो काज कठिनजगमाहीं । जो नहिं तात होइ तुमपाहीं ॥
रामकाज लगि तव अवतारा । सुनिकपि भयउ पर्वताकारा ॥
कनकबरण तन तेज बिराजा । मानहुंअपर गिरिन्ह करराजा ॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा । लीलहिंलांघौंजलनिधिखारा ॥
सहित सहाय रावणहिं मारी । आनौं इहां त्रिकूट उपारी ॥
जामवन्त मैं पूंछौं तोहीं । उचित सिखावन दीजैमोहीं ॥
इतना करहु तात तुम जाई । सीतहि देखि कहौ सुधिआई ॥
तबनिजभुजबल राजिवनयना । कौतुकलागिसंग कपिसयना ॥
छं० कपिसेन संग संहारिनिशिचर रामसीतहिआनिहैं ।
त्रयलोकपावनसुयशसुर मुनि नारदादिबखानिहैं ॥

जोसुनत गावतकहतसमुझत परमपद नरपावहीं ।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दासतुलसी गावहीं ॥
दो० भव भेषज रघुनाथ यश सुनैं जो नर अरुनारि ।
तिनकर सकल मनोरथ सिद्धिकरहिं त्रिपुरारि ॥
सो० नीलोत्पलतन श्याम कामकोटि शोभाअधिक ।
सुनियतासुगुणग्राम जासुनाम अघखगबधिक ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकल कलिकलुषविध्वंसने बिमल
वैराग्य सम्पादनो नाम चतुर्थःसोपानः ॥



दल्ना मीमीसर

श्रीगणेशायनमः ॥

सुन्दर काण्ड ॥

—*—

श्लोक ॥

शान्तंशश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं । ब्रह्माशम्भु फणीन्द्रसेव्यमनिशंवेदान्तवेद्यंविभुम् ॥ रामाख्यंजगदीश्वरंसुर गुरुम्मायामनुष्यंहरिं । वन्देहंकरुणाकरंरघुवरंभूपालचूड़ाम णिम् १ नान्यास्पृहारघुपतेहृदयेस्मदीयेसत्यंवदामिचभवानखि लान्तरात्मा ॥ भक्तिम्प्रयच्छरघुपुंगवनिर्भरांमेकामादिदोषरहितं कुरुमानसंच २ अतुलितबलधामंस्वर्णशैलाभदेहंदनुजवनकृशा नुंज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥ सकलगुणनिधानंवानराणामधीशंरघुप तिवरदूतंवातजातन्नमामि ३ ॥

जामवन्त के बचन सुहाये । सुनि हनुमान हृदयअतिभाये॥
तबलगि मोहिं परेखेहु भाई । सहिदुख कन्द मूलफलखाई ॥
जबलगि आवौं सीतहि देखी । होइ काज मन हर्ष विशेखी ॥
असकहिनाइ सबनिकहं माथा । चलेहर्षि हियधरि रघुनाथा ॥
सिन्धु तीर इक सुंदर भूधर । कौतुक कूदि चढ़े तेहि ऊपर ॥
बार बार रघुबीर संभारी । तरकेउ पवनतनय बलभारी ॥
जेहिगिरि चरणदिये हनुमन्ता । सो चलि गयउ पताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपतिके बाना । ताही भांति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपतिदूत बिचारी । कह मैनाक होहु श्रम हारी ॥
सो० सिन्धु बचन सुनि कान तुरत उठे मैनाक तब ।
कपि कहंकीन्ह प्रणाम बारबार कर जोरिकै ॥

दो० हनूमान तेहिपरसिकरि पुनि तेहि कीन्हप्रणाम ।
राम काज कीन्हे बिना मोहिं कहां बिश्राम ॥
जात पवनसुत देवन देखा । जाना चह बल बुद्धि बिशेखा ॥
सुरसा नाम अहिन की माता । पठयउ आइ कहो तेहि बाता ॥
आज सुरनमोहिं दीन्हअहारा । सुनि हँसिबोला पवनकुमारा ॥
राम काजकरि फिरि मैं आवों । सीताकरसुधि प्रभुहि सुनावों ॥
तब तुव बदन पैठिहैं आई । सत्य कहैं मोहिं जानदेमाई ॥
कवनिहुं यतन देहिनहिंजाना । ग्रससि नमोहिंकहाहनुमाना ॥
योजन भरि तेहि बदन पसारा । कपितनकीन्हदुगुणबिस्तारा ॥
सोरह योजन मुखतेइ ठयऊ । तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ॥
जसजस सुरसा बदन बढ़ावा । तासुदुगुणकपि रूपदिखावा ॥
शतयोजन तेहि आनन कीन्हा । अतिलघुरूपपवनसुतलीन्हा ॥
बदन पैठि पुनि बाहर आवा । मांगी बिदा ताहि शिर नावा ॥
मोहिं सुरन जेहिलागि पठावा । बुधि बल मर्म तोर मैं पावा ॥
दो० राम काज सब करिहहु तुम बल बुद्धि निधान॥
आशिष दै सुरसा चली हर्षि चले हनुमान ॥
निशिचर एक सिंधुमहँ रहई । करि माया नभके खगगहई ॥
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । जलबिलोकितिनकीपरछाहीं॥
गहै छांह सक सो न उड़ाई । इहिबिधिसदागगनचरखाई ॥
सोइ छल हनूमान सन कीन्हा । तासुकपटकपितुरतहिंचीन्हा॥
ताहि मारि मारुत सुत बीरा । बारिधि पारगयउमतिधीरा ॥
तहां जाइ देखो बन शोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाये । खगमृगवृन्द देखिमन भाये ॥
शैल बिशाल देखिइक आगे । तापर कूदि चढ़ेउ भय त्यागे ॥
उमा न कछु कपिकीअधिकाई । प्रभु प्रताप जो कालहिखाई ॥
गिरि पर चढ़ि लंकातेहि देखो । कहिन जाइअतिदुर्गबिशेखो ॥
अतिउतंगजलनिधि चहुं पासा । कनककोटकर परमप्रकासा ॥

छं० कनककोट बिचित्र मणिकृत सुंदराजित अति घना।
चौहट्ट हाट सुघट्ट बीथी चारु पुर बहु बिधि बना॥
गजबाजि खच्चर निकरपदचर रथ बरूथनिकोगनै।
बहुरूपनिशिचरयूथअति बल सेनबरणत नहिंबनै॥
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं॥
नर नाग सुर गन्धर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं।
कहुंमल्लदेह बिशाल शैल समान अतिबल गर्जहीं॥
नानाअखारन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन तर्जहीं।
करिमत्तभटकोटिन्हबिकट तनु नगरचहुंदिशिरक्षहीं॥
कहुं महिष मानुषधेनुखरअजखगनिशाचरभक्षहीं।
इहिलागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहि कही।
रघुबीर शर तीरथ सरित तनु त्यागिगतिपैहैंसही॥
दो० पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार।
अति लघु रूप धरौं निशि नगर करौं पैसार॥
मशक समान रूप कपि धरी। लंकाचले सुमिरि नरहरी॥
नाम लंकिनी एक निशिचरी। सोकह चलेसि मोहिंनिन्दरी॥
जानसि नाहिंमर्म शठ मोरा। मोर अहार जहां लगि चोरा॥
मुष्टिक एक ताहि कपिहनी। रुधिर बमत धरणीठनमनी॥
पुनि सम्भारि उठी सो लंका। जोरि पाणि करबिनयसशंका॥
जब रावणहिं ब्रह्म बर दीन्हा। चलतबिरंचि कहामोहिंचीन्हा॥
बिकल होसिजब कपिकेमारे। तब जानसिनिशिचर संहारे॥
तात मोर अति पुण्य बहूता। देखेउं नयन राम कर दूता॥
दो० तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरी तुलाइक अंग।
तुलै न ताहि सकलमिलि जो सुखलवसतसंग॥
प्रबिशि नगर कीजैसबकाजा। हृदय राखि कोशलपुर राजा॥
गरल सुधा रिपु करै मिताई। गोपद सिंधुअनल शितलाई॥
गरुअ सुमेरु रेणु सम ताही। रामकृपाकरि चितवहिंजाही॥

अति लघुरूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥
मन्दिर मन्दिर प्रतिकरि शोधा। देखे जहँतहँ अगणितयोधा ॥
गयउ दशानन मंदिर माहीं। अतिबिचित्रकहिजातसोनाहीं॥
शयन किये देखा कपितेही। मन्दिर महँ न दीख बैदेही ॥
भवनएक पुनि दीख सुहावा। हरि मन्दिर तहँ भिन्नबनावा ॥
रामनाम अंकित गृह सोहा। बरणि न जाइ देखिमनमोहा ॥

दो० राम नाम अंकित गृह शोभा बरणि न जाय।
नव तुलसीके वृन्दबहु देखि हर्ष कपिराय ॥

लंका निशिचर निकर निवासा। यहां कहां सज्जनकर बासा ॥
मनमहं तर्क करन कपि लागे। ताही समय बिभीषण जागे ॥
राम राम तेहि सुमिरण कीन्हा। हृदयहर्ष कपिसज्जन चीन्हा ॥
इहिसनहठि करिहौं पहिचानी। साधुते होइ न कारज हानी ॥
बिप्र रूप धरि बचन सुनावा। सुनतबिभीषण उठितहँआवा ॥
करि प्रणाम पूंछी कुशलाई। बिप्रकहहु निजकथा बुझाई ॥
की तुम हरि दासन महँ कोई। मोरे हृदय प्रीति अतिहोई ॥
की तुम दीनबन्धु अनुरागी। आयेहु मोहिं करनबड़भागी ॥

दो० तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम।
सुनतयुगलतनपुलकअतिमगनसुमिरिगुणग्राम ॥

सुनहुपवनसुत रहनि हमारी। जिमिदशनन्हमहँजीभबिचारी॥
तातकबहुं मोहिं जानिअनाथा। करिहहिं कृपाभानुकुलनाथा ॥
तामस तन कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मनमाहीं ॥
अब मोहिंभा भरोस हनुमन्ता। बिनुहरिकृपा मिलहिंनहिंसंता॥
जो रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुममोहिं दरशहठिदीन्हा ॥
सुनहु बिभीषण प्रभु की रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचलसबहीबिधिहीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा। तादिनताहि न मिलैअहारा ॥

दो० अस मैं अधम सखा सुनु मोहूं पर रघुबीर ।

कीन्ही कृपा सुमिरि गुण भरे बिलोचन नीर ॥
जानतहूं अस स्वामि बिसारी । फिरते काहिनहोहिं दुखारी ॥
इहिबिधि कहतरामगुणग्रामा । पावनश्रवण सुखद बिश्रामा ॥
पुनि सबकथा बिभीषण कही । जेहिबिधि जनकसुताजहंरही ॥
तब हनुमन्त कहा सुनुभ्राता । देखा चहौं जानकी माता ॥
युक्ति बिभीषण सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदाकराई ॥
धरि सोइरूपगयउ पुनितहंवां । बन अशोक सीता रहजहंवां ॥
देखि मनहिंमन कीन्हप्रणामा । बैठे बिति गई निशि यामा ॥
कृश तन शीशजटा इक बेणी । जपतिहृदयरघुपतिगुणश्रेणी ॥
दो० निज पद नयन दियेमन रामचरण महं लीन ।
परम दुखीभा पवनसुत निरखिजानकी दीन ॥
तरु पल्लव महं रहा लुकाई । करै विचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावण तहं आवा । संगनारि बहु किये बनावा ॥
बहुबिधिखलसीतहिसमुझावा । सामदाम भय भेद दिखावा ॥
कहरावण सुनु सुमुखिसयानी । मन्दोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करौं पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ॥
तृण धरि ओट कहत बैदेही । सुमिरिअवधपतिपरमसनेही ॥
सुन दशमुख खद्योत प्रकाशा । कबहुंकिनलिनीकरहिंप्रकाशा ॥
अस मनसमुझतकहतजानकी । खलसुधिनहिंरघुबीरबाणकी ॥
शठ सूने हरि आनेसि मोहीं । अधमनिलज्ज लाजनहिंतोहीं ॥
दो० आपुहि सुनि खद्योत सम रामहिं भानुसमान ।
परुषवचनसुनि काढ़िअसि बोलाअतिरिसिआन ॥
सीता तैं मम कृत अपमाना । काटौंतवशिर कठिनकृपाना ॥
नाहित सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होतनतुजीवन हानी ॥
श्याम सरोज दाम सम सुन्दर । प्रभुभुजकरिकरसमदशकंधर ॥
सो भुज कंठकि तव असघोरा । सुनशठअसप्रमाण पनमोरा ॥
चन्द्रहास हरु मम परितापा । रघुपति बिरह अनलसंतापा ॥

शीतल निशि तव असिबरधारा। कह सीताहरुमम दुखभारा ॥
सुनत बचन पुनि मारण धावा । मयतनयाकहिं नीतिबुझावा ॥
कहेसि सकल निशिचरीबुलाई । सीतहि त्रास दिखावहु जाई ॥
मास दिवस महं कहा न माना।तौ मैं मारब काढ़ि कृपाना ॥

दो० भवन गयो दश कन्धतब इहांनिशाचरिवृन्द ।
सीतहि त्रास दिखावहीं धरहिं रूप बहु मन्द ॥

त्रिजटा नाम राक्षसी एका । रामचरण रत निपुणबिबेका ॥
सबहिंबुलाइ सुनायसि सपना । सीतहि सेइकरौ हित अपना ॥
सपने बानर लंका जारी । यातु धान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ़ नगन दशशीशा । मुण्डित शिरखंडितभुजबीशा ॥
इहिबिधिसो दक्षिणदिशिजाई । लंका मनहु बिभीषण पाई ॥
नगर फिरी रघुबीर दुहाई । तब प्रभु सीतहिं बोलि पठाई ॥
यह सपना मैं कहौं बिचारी । होइहि सत्य गयेदिन चारी ॥
तासु बचन सुनके सब डरीं । जनक सुताके चरणन परीं ॥

दो० जहं तहं गईं सकल मिलि सीता के मनशोच ।
मास दिवस बीतेमोहिं मारिहि निशिचर पोच ॥

त्रिजटा सन बोली करजोरी । मातु बिपति संगिनितैंमोरी ॥
तजौं देह करु बेगि उपाई । दुसहबिरह अब सहानजाई ॥
आनि काठ रचि चिता बनाई । मातु अनल तुम देहुलगाई ॥
सत्यकरहि ममप्रीति सयानी । सुनि सो श्रवणशूलसमबानी ॥
सुनत बचन पदगहिसमुझावा । प्रभुप्रतापबल सुयशसुनावा ॥
निशिनअनल मिलुराजकुमारी । असकहिसोनिजभवनसिधारी ॥
कह सीता बिधिभा प्रतिकूला । मिलै न पावक मिटै नशूला ॥
देखियत प्रकट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकौ तारा ॥
पावक मय शशि श्रवतनआगी । मानहुं मोहिं जानि हतभागी ॥
सुनहु बिनयममबिट पअशोका । सत्यनाम करुहरु ममशोका ॥
नूतनकिशलय अनल समाना । देहुअगिनिमभकरहुनिदाना ॥

देखि परम विरहा कुल सीता। सोक्षण कपिहि कलपसमबीता॥
दो० कपि करि हृदय बिचार दीन्ह मुद्रिका डारितब।
जनु अशोक अंगार दीन्ह हर्ष उठिकर गहेउ॥
तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अतिसुन्दर॥
चकित चितै मुद्रिक पहिचानी। हर्ष बिषाद हृदय अकुलानी॥
जीतिको सकै अजय रघुराई। माया ते असरची न जाई॥
सीता मन विचार कर नाना। मधुर बचन बोले हनुमाना॥
रामचन्द्र गुण बरणन लागे। सुनतहि सीताकर दुख भागे॥
लागी सुनै श्रवण मन लाई। आदिहिते सब कथा सुनाई॥
श्रवणामृतजिन कथा सुनाई। कहिसो प्रकट होत किनभाई॥
तब हनुमन्त निकटचलिगयऊ। फिरि बैठी मनबिस्मय भयऊ॥
राम दूतमैं मातु जानकी। सत्य शपथ करुणानिधानकी॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्ह रामतुमकहँ सहिदानी॥
नर बानरहि संग कहु कैसे। कही कथा संगति भइजैसे॥
दो० कपिकर बचन सप्रेमसुनि उपजा मन बिश्वास।
जाना मनक्रम बचनयह कृपासिन्धुकर दास॥
हरिजन जानिप्रीति अतिबाढ़ी। सजलनयनपुलकावलिठाढ़ी॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मोकहँ जलयाना॥
अबकहु कुशल जाउं बलिहारी। अनुजसहितसुखभवन खरारी॥
कोमल चित कृपाल रघुराई। कपिकेहि हेतु धरी निठुराई॥
सहज बानिसेवक सुख दायक। कबहुंकमुहिंसुमिरतरघुनायक॥
कबहुं नयन ममशीतल ताता। होइहि निरखिश्याममृदुगाता॥
बचन नआव नयन भरिवारी। अहोनाथमोहिंनिपटबिसारी॥
देखि बिरह ब्याकुलअति सीता। बोलेउकपिमृदु वचबिनीता॥
मातु कुशल प्रभु अनुज समेता। तवदुखदुखीसो कृपानिकेता॥
जननी जनि मानहु मन ऊना। तुमते प्रेम रामकहँ दूना॥
दो० रघुपतिके सन्देशअब सुनु जननी धरिधीर।

असकहि कपि गद्गद भये भरे बिलोचन नीर ॥
राम बियोग कहा सुन सीता । मकोहं सकलभयउबिपरीता ॥
नूतन किशलयमनहुं कृशानू । कालनिशासमनिशिशशिभानू॥
कुबलयबिपिनकुन्त बनसरिसा । बारिद तप्ततेल जनु बरिसा ॥
जेहि तरु रहौं करत सोपीरा । उरगश्वाससमत्रिबिधसमीरा॥
कहते नहिं दुख घटि कछुहोई । काहिकहौं यह जान न कोई ॥
तत्त्व प्रेमकर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एक मनमोरा ॥
सो मन रहत सदा तोहिपाहीं । जानु प्रीतिबश इतने माहीं ॥
प्रभु सन्देश सुनत बैदेही । मगनप्रेमतनु सुधिनहिं तेही ॥
कहि कपि हृदयधीर धरुमाता । सुमिरिराम सेवकसुखदाता ॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई । सुनिममबचनतजहुबिकलाई ॥
दो० निशिचर निकर पतंग सम रघुपति बाणकृशानु ।
जननि हृदय निज धीरधरु जरे निशाचर जानु ॥
जो रघुबीर होत सुधिपाई । करते नहिं बिलम्ब रघुराई ॥
राम बाण रबि उदय जानकी । तम बरूथकहँ यातुधानकी ॥
अबहिं मातु मैं जात लिवाई । प्रभु आयसु नहिं रामदुहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरुधीरा । कपिन्ह सहितऐहैं रघुबीरा ॥
निशिचर मारि तुमहिं लै जैहैं । तिहुंपुर नारदादि यश गैहैं ॥
हैं सुत कपि सब तुम्हैं समाना । यातुधान भट अतिबलवाना ॥
मोरे हृदय परम सन्देहा । सुनिकपि प्रकटकीन्हनिजदेहा॥
कनक भूधराकार शरीरा । समर भयंकर अतिरणधीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयऊ । पुनि लघुरूपपवनसुतलयऊ ॥
दो० सुनुमाता शाखामृगहि नहिं बल बुद्धि बिशाल ।
प्रभु प्रतापते गरुड़ही खाइ परम लघु ब्याल ॥
मन सन्तोष सुनत कपिबानी । तनअति पुलकनयनढरुपानी ॥
भक्ति प्रताप तेज बल सानी । आशिषदीन्हि रामप्रियजानी ॥
अजर अमरगुणनिधिसुतहोहू । करहु सदा रघुनायक छोहू ॥

करहिं कृपाप्रभु असमुनिकाना । निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बारबार नायउ पद शीशा । बोले बचन जोरि कर कीशा ॥
अब कृतकृत्य भयउं मैं माता । आशिषतव अमोघबिख्याता ॥
सुनियमातुमोहिंअतिशयभूखा । लागिदेखि सुन्दर फलरूखा ॥
सुन सुत करैं बिपिन रखवारी । परम सुभट रज नीचरझारी ॥
तिनकर भय मातामोहिंनाहीं । जो तुम सुख मानहुमनमाहीं ॥

दो० देखि बुद्धि बल निपुण कपि कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपति चरण हृदयधरि तात मधुर फलखाहु ॥

चला नाइ शिर पैठेउ बागा । फलखाये तरु तोरन लागा ॥
रहे तहां बहु भट रखवारे । कछु मारे कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपिभारी । तेइ अशोक बाटिका उजारी ॥
खायेसि फल अरु बिटपउपारे । जहंतहं पटकि पटकिभटमारे ॥
सुनि रावण पठये भट नाना । तिनहिं देखिगरजा हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संहारे । गये पुकारत कछु अधमारे ॥
पुनि पठवा तेइ अक्षय कुमारा । चला संगलै सुभट अपारा ॥
आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहिनिपाति महाधुनिगर्जा ॥

दो० कछुमारेसि कछुमर्देसि कछुक मिलायसि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥

सुनि सुतबध लंकेश रिसाना । पठवा मेघनाद बलवाना ॥
मारेसिजनि सुतबांधेसि ताही । देखैं कीश कहां कर आही ॥
चलाइन्द्रजित अतुलित योधा । बन्धुबधनसुनि उपजाक्रोधा ॥
कपिदेखा दारुण भटआवा । कटकटाइ गरजा अरुधावा ॥
अति बिशाल तरुएक उपारा । बिरथ कीन्ह लंकेश कुमारा ॥
रहे महाभट ताके संगा । गहिगहिकपिमर्देसिनिजअंगा ॥
तिन्हैं निपाति ताहिसनबाजा । भिरे युगल मानहुं गजराजा ॥
मुष्टिक मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक क्षण मूर्छा आई ॥
उठि बहोरिकीन्हेसिबहुमाया । जीति न जाइ प्रभंजनजाया ॥

दो० ब्रह्म अस्त्रतेइसाधई कपिमन कीन्ह बिचार ।
जो न ब्रह्मशर मानऊं महिमा मिटै अपार ॥

ब्रह्म बाण ते कपिकहं मारा । परतिहुं बार कटक संहारा ॥
तेइ जाना कपि मूर्छित भयऊ । नागफांस बांधसि लै गयऊ ॥
जासु नाम जपिसुनहुभवानी । भवबंधन काटहिं नर ज्ञानी ॥
तासु दूत बंधन तर आवा । प्रभु कारजलगि आपुबंधावा ॥
कपिबंधनसुनिनिशिचरधाये । कौतुक लागि सभा लै आये ॥
दशमुख सभादीख कपिजाई । कहिनजायकछु अतिप्रभुताई ॥
करजोरे सुर दिशप बिनीता । भृकुटिबिलोकहिसकलसभीता ॥
देखिप्रताप न कपिमनशंका । जिमिअहिगणमहंगरुड़अशंका ॥

दो० कपिहिबिलोकिदशानन बिहंसिकहेसिदुर्बाद ।
सुतबधसुरति कीन्हपुनि उपजा हृदयबिषाद ॥

कह लंकेश कवन तैं कीशा । केहिकेबल घालेसि बनखीशा ॥
कीधौंश्रवण सुनेसिनहिंमोहीं । देखौं अति अशंक शठ तोहीं ॥
मारेसिनिशिचरकेहिअपराधा । कहुशठ तोहिंन प्राणकीबाधा ॥
सुनु रावण ब्रह्मांडनिकाया । पाइजासु बल बिरचितमाया ॥
जाके बल बिरंचि हरि ईशा । पालत हरत सृजत दशशीशा ॥
जा बल शीशधरे सहसानन । अंड कोश समेत गिरि कानन ॥
धरेजो बिबिध देह सुरत्राता । तुमसे शठ न सिखा वन दाता ॥
हरकोदण्ड कठिन जेइभंजा । ताहिं समेत नृपदलमदगंजा ॥
खरदूषण बिराध अरु बाली । बधेसकल अतुलित बलशाली ॥

दो० जाके बल लवलेश ते जितेउ चराचर झारि ।
तासु दूतहौं जाहिकी हरिआनेहु प्रियनारि ॥

जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई ॥
समरबालिसनकरियशपावा । सुनिकपिवचनबिहंसिबहलावा ॥
खायउंफल मोहिंलागीभूखा । कपि स्वभाव ते तोरेउं रूखा ॥
सबके देह परम प्रियस्वामी । मारहिं मोहिं कुमारग गामी ॥

जिन्ह मोहिं मारा ते हिं मैं मारा । तेहि पर बांधेउ तनय तुम्हारा ॥
मोहिं न कछु बांधेकर लाजा । कीन्ह चहौं निज प्रभु कर काजा ॥
बिनती करों जोरिकर रावण । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
देखहु तुम निज हृदय बिचारी । भ्रम तजि भजहु भक्तभयहारी ॥
जाके डर अति काल डराई । जो सुर असुर चराचर खाई ॥
तासों बैर कबहुं नहिं कीजे । मोरे कहे जानकी दीजे ॥

दो० प्रणतपाल रघुबंशमणि करुणा सिन्धु खरारि ।
गये शरण प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥

रामचरण पंकज उर धरहू । लंका अचल राज तुम करहू ॥
ऋषि पुलस्त्य यश बिमल मयंका । तेहि कुल महं जनि होसि कलंका ॥
रामनाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषण भूषित बरनारी ॥
राम बिमुख सम्पति प्रभुताई । गई रही पाई बिनु पाई ॥
सजल मूल जेहि सरिता नाहीं । बरषि गये पुनि तबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दशकण्ठ कहौं प्रण रोपी । राम बिमुख त्राता नहिं कोपी ॥
शंकर सहस बिष्णु अज तोही । सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

दो० मोह मूल बहु शूल प्रद त्यागहु मति अभिमान ।
भजहु राम रघुनायकहि कृपा सिन्धु भगवान ॥

यद्यपि कह कपि अति हित बानी । भक्ति बिबेक धर्म नय सानी ॥
बोला बिहंसि अधम अभिमानी । मिला हमहिं कपि गुरु बड़ ज्ञानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोहीं । लागेसि अधम सिखावन मोहीं ॥
उलटा होइ कहा हनुमाना । मति भ्रम तोरि प्रकट मैं जाना ॥
सुनि कपि बचन बहुत रिसिआना । बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना ॥
सुनत निशाचर मारण धाये । सचिवन्ह सहित बिभीषण आये ॥
नाइ शीश करि बिनय बहूता । नीति बिरोध न मारिय दूता ॥
आन दण्ड कछु करिय गुसांई । सबही कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत बिहंसि बोला दशकंधर । अंग भंग करि पठवहु बन्दर ॥

दो० कपि कर ममता पूंछपर सबहिंकहा समुझाइ ।
तेल बोरि पट बांधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥
पूंछ हीन बन्दर जब जाइहि । तब शठ निजनाथहिलैआइहि ॥
जिन्हकीकीन्हेसिअमितबड़ाई । देखौं धौं तिन्हको प्रभुताई ॥
वचन सुनतकपिमनमुसुकाना । भइ सहाय शारद मैं जाना ॥
यातुधान सुनि रावण वचना । लागे रचन मूढ़ सोइ रचना ॥
रहा न नगर बसन घृततेला । बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपि खेला ॥
कौतुक कहं आये पुरबासी । मारहिं चरण करहिं बहुहांसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी ॥
पावक जरत दीख हनुमंता । भयउ परम लघु रूप तुरंता ॥
निबुकिचढ़ेउपुनिकनकअटारी । भईं सभीत निशाचर नारी ॥
दो० हरि प्रेरित तेहि अवसर बहो पवन उनचाश ।
अट्टहास करि गरजा कपिबढ़ि लाग अकाश ॥
देह विशाल परमहरुआई । मन्दिरते मन्दिर चढ़ि जाई ॥
जरा नगर भे लोग बिहाला । लपट झपट बहुकोट कराला ॥
तात मातु सबकरहिं पुकारा । इहिअवसरको हमहिं उबारा ॥
हमजो कहायहकपि नहिंहोई । बानर रूप धरे सुरकोई ॥
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा । जरै नगर अनाथ कर जैसा ॥
जारानगर निमिष इकमाहीं । एक बिभीषणको गृह नाहीं ॥
जाकर भक्त अनलजेइसिरजा । जरा नसो तेहिकारणगिरिजा ॥
उलटि पलटि लंकाकपिजारी । कूदि परा तब सिंधु मझारी ॥
दो० पूंछ बुझाई खोय श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥
मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा । जैसे रघुनायकमोहिं दीन्हा ॥
चूड़ामणि उतारि तब दीन्हा । हर्ष समेत पवनसुत लीन्हा ॥
कहेहुतात अस मोर प्रणामा । सब प्रकार प्रभु पूरण कामा ॥
दीनदयाल विरद सम्भारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥

तात शक्रसुत कथा सुनायहु । बाणप्रताप प्रभुहिसमुझायहु ॥
मासदिवसमहं नाथ नआवहिं । तौपुनिमोहिंजियतनहिंपावहिं ॥
कहुकपि केहिबिधिराखौंप्राना । तुमहूं तात कहत अब जाना ॥
तुमहिं देखि शीतल भइछाती । पुनिमोकहंसोइदिनसोइराती ॥
दो० जनकसुतहिं समुझाइकरि बहुबिधिधीरज दीन्ह ।
चरण कमल शिरनाइ करि गमनरामपहंकीन्ह ॥
चलत महा धुनि गरजेउ भारी । गर्भ श्रवहिंसुनिनिशिचरनारी ॥
लांघि सिंधु यहिपारहिं आवा । शब्दकिलकिलाकपिनसुनावा ॥
हर्ष सब बिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तनु तेज बिराजा । कीन्हेसि रामचन्द्रकर काजा ॥
मिलेसकल अति भये सुखारी । तलफत मीन पाव जनुबारी ॥
चले हर्षि रघुनायक पासा । पूंछत कहत नवल इतिहासा ॥
तब मधुबन भीतर सब आये । अंगद सहित मधुरफलखाये ॥
रखवार जब बरजन लागे । मुष्टिप्रहार करत सब भागे ॥
दो० जाइ पुकारे सकलते बन उजार युवराज ।
सुनि सुग्रीवहिं हर्षअति करि आये प्रभुकाज ॥
जो न होत सीता सुधि पाई । मधुबन केफल कोसक खाई ॥
इहिबिधि मनबिचार करराजा । आयगये कपिसहितसमाजा ॥
आइसबहिं नावा पद शीशा । मिलेसबन्हिअतिप्रेमकपीशा ॥
पंछेउ कुशल कुशल पद देखी । राम कृपा भा काज बिशेखी ॥
नाथकाज कीन्हेउ हनुमाना । राखेसकल कपिन्हकरप्राना ॥
सुनिसुग्रीव बहुरि उठिमिलेऊ । कपिन्हसहितरघुपतिपैचलेऊ ॥
रामकपिन्हकहं आवत देखा । किये काज उर हर्ष बिशेखा ॥
फटिक शिला बैठे दोउ भाई । परेसकल कपि चरणन जाई ॥
दो० प्रीति सहित भेंटे सकल रघुपति करुणा पुंज ।
पूंछेउ कुशल नाथ अब कुशल देखि पदकंज ॥
जामवन्त कह सुनु रघुराया । जापर नाथ करहु तुम दाया ॥

तोहिसदाशुभ कुशल निरंतर । सुर नरमुनि प्रसन्नतेहिऊपर॥
सो विजयी विनयी गुणसागर । तासुसुयश तिहुंलोकउजागर ॥
प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू । जन्म हमार सुफलभाआजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्हजोकरणी । सो मुख लाखहुजाइनबरणी ॥
पवन तनय के बचन सुहाये । जामवन्त रघुपतिहि सुनाये॥
सुनि कृपालु उठि हृदयलगाये । जानिसुभट रघुपतिमनभाये ॥
कहहुतात केहि भांति जानकी । रहतिकरति रक्षास्वप्राणकी ॥
दो० नामपाहरू दिवसनिशि ध्यानतुम्हार कपाट ।
लोचन निजपद यंत्रिका प्राणजाहिंकेहिबाट ॥
चलती बार कह्यो म्वहिं टेरी । सुरति कराय शक्रसुत केरी ॥
चलत मोहिं चूड़ामणि दीन्ही । रघुपतिहृदयलाइतेहिलीन्ही ॥
नाथयुगुल लोचन भरिबारी । बचनकह्यो कछुजनककुमारी॥
अनुज समेत गहेहु प्रभुचरणा । दीनबन्धु प्रणतारति हरणा ॥
मनक्रम वचन चरण अनुरागी । केहिअपराधनाथम्वहिंत्यागी ॥
अवगुण एक मोर मैं जाना । बिछुरतप्राणन कीन्हपयाना ॥
नाथ सो नयननकर अपराधा । निसरतप्राणकरहिंहठिबाधा ॥
बिरह अनल तन तूलसमीरा । श्वास जरेक्षण माहं शरीरा ॥
नयन श्रवैंजल निज हितलागी । जरै न पाव देह बिरहागी ॥
सीताकी अति विपतिबिशाला । बिना कहे भल दीनदयाला ॥
दो० निमिषनिमिषकरुणायतनजाहिंकल्पशतबीति ।
बेगिचलियप्रभुआनिये भुजबलखलदलजीति ॥
सुनिसीतादुख प्रभुसुखअयना । भरिआये दोउराजिवनयना ॥
बचनकायमन ममगतिजाही । सपन्यहुबिपतिकिचाहियताही ॥
कहहनुमान बिपति प्रभु सोई । जबतवसुमिरणभजन न होई ॥
कितिक बात प्रभु यातुधानकी । रिपुहिजीति आनिये जानकी ॥
सुनुकपितोहि समानउपकारी । नहिंकोउसुरनरमुनितनधारी ॥
प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुखहोइ नसकतमनमोरा ॥

सुनुकपितोहिं उऋण मैंनाहीं । देखेउं करिबिचार मनमाहीं ॥
पुनिपुनिकपिहिचितवसुरत्राता । लोचननीरपुलकिअतिगाता ॥
दो० सुनिप्रभु बचन बिलोकिमुख हृदय हर्ष हनुमंत ।
चरणपरेउ परमाकुल त्राहित्राहि भगवंत ॥
बार बार प्रभु चहत उठावा । प्रेम मगनतेहि उठत न भावा ॥
प्रभु पद पंकज कपिकर शीशा । सुमिरिसो दशामगनगौरीशा ॥
सावधान मन करपुनि शंकर । लागे कहनकथा अति सुंदर ॥
कपिउठाय प्रभु हृदय लगावा । करगहि परमनिकट बैठावा ॥
कहु कपि रावण पालित लंका । केहि बिधिदहेउदुर्गअतिबंका ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोले बचन बिगत अभिमाना ॥
शाखामृग की अति मनुसाई । शाखा ते शाखा पर जाई ॥
लांघिसिंधु हाटक पुर जारा । निशिचरगणबधिबिपिनउजारा॥
सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछुक मोरि प्रभुताई ॥
दो० ताकहंप्रभुकछुअगमनहिं जापर तुम अनुकूल ।
तव प्रताप बड़वानलहिं जारि सकै खल तूल ॥
सुनतबचन प्रभुबहु सुखमाना । मन क्रमबचनदासनिजजाना ॥
मांगु बचन सुत बर अनुकूला । देउंआजु तुमकहं सुख मूला ॥
नाथभक्तितव सबसुखदायिनि । देहु कृपाकरि शिवअनपायनि ॥
सुनि प्रभुपरम सरलकपिबानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमाराम सुभाव जिन्ह जाना । ताहिभजनतजि भावनआना ॥
यह संवाद जासु उर आवा । रघुपति चरणभक्ति तेइ पावा॥
सुनिप्रभु बचन कहैं कपिवृंदा । जयजयजय कृपालसुखकन्दा ॥
तबरघुपतिकपिपतिहि बुलावा । कहाचलै कर करहु बनावा ॥
अब बिलंब केहि कारण कीजै । तुरत कपिनकहं आयसुदीजै ॥
कौतुक देखि सुमन बहु बर्षे । नभते भवन चले सुर हर्षे ॥
दो० कपि पति बेगि बुलायेउ आये यूथप यूथ ।
नाना बरण अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥

प्रभुपद पंकज नावहिं शीशा । गर्जहिं भालु महाबल कीशा ॥
देखी राम सकल कपि सैना । चितव कृपाकरि राजिव नैना ॥
राम कृपाबल पाइ कपिन्दा । भये पक्षयुत मनहुं गिरिन्दा ॥
हर्षि राम तब कीन्ह पयाना । शकुन भये सुन्दर शुभनाना ॥
जासु सकल मंगलमय नीती । तासु पयान शकुन यहनीती ॥
प्रभु पयान जाना बैदेही । फरके बाम अंग शुभ तेही ॥
जो जोशकुन जानकिहि होई । अशकुन भयउ रावणहिं सोई ॥
चला कटक को बरणै पारा । गरजहिं बानर भालु अपारा ॥
नख आयुधगिरि पादप धारी । चले गगनमहं इच्छा चारी ॥
केहरि नादभालु कपिकरहीं । डगमगाहिं गिग्गज चिक्करहीं ॥

छं० चिक्करहिंदिग्गजडोलमहिगिरिलोलसागरखर भरे ।
मनहरष दिनकरसोमसुरमुनि नागकिन्नरदुखटरे ॥
कटकटहिंमरकटबिकटभट बहुकोटिकोटिनधावहीं ।
जयराम प्रबलप्रतापकोशल नाथगुणगणगावही ॥
सकसहिनभार अपारअहिपतिबारबारबिमोहई ।
गहिदशनपुनिपुनि कमठपीठकठोरसोकिमिसोहई ॥
रघुबीररुचिरपयान प्रस्थित जानिपरमसुहावनी ।
जनुकमठखप्परसर्पराजसोलिखतअविचलपावनी ॥

दो० इहिबिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
जहं तहं लागे खानफल भालुबिपुलकपिबीर ॥

उहां निशाचर रहहिंसशंका । जबते जारिगयउ कपिलंका ॥
निजनिजगृहसबकरैंबिचारा । नहिं निशिचर कुलकेर उबारा ॥
जासुदूत बल बरणि न जाई । तेहि आये पुर कवन भलाई ॥
अति सभीतसुनिपुरजनवानी । मन्दोदरी हृदय अकुलानी ॥
रही जोरि कर पतिपद लागी । बोली वचन नीति रस पागी ॥
कन्त कर्ष हरिसन परिहरहू । मोरकहा अतिहित चितधरहू ॥
समुझत जासुदूत की करनी । श्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥

तासुनारिनिजसचिवबोलाई । पाठवहुकन्त जो चहहु भलाई ॥
तवकुलकमलविपिनिदुखदाई । सीता शीत निशासम आई ॥
सुनहु नाथ सीता विनु दीन्हे । हितनतुम्हार शम्भुअजकीन्हे ॥
दो० रामबाण अहिगणसरिस निकरनिशाचरभेक ।
जौलगिग्रसतनतवहिंलगि यतनकरहुतजिटेक ॥
श्रवणसुनत शठताकी बानी । बिहंसाजगत बिदित अभिमानी ॥
सभय सुभावनारि करसांचा । मंगल माह अमंगल रांचा ॥
जो आवे मरकट कटकाई । जियहिंबिचारे निशिचर खाई ॥
कम्पहिं लोकप जाकेत्रासा । तासुनारि भयकरि बड़िहासा ॥
असकहिबिहंसिताहिउरलाई । चलेउ सभा ममता अधिकाई ॥
मन्दोदरी हृदय कर चीता । भयो कन्तपर विधि बिपरीता ॥
बैठेउ सभा खबरिअस पाई । सिन्धुपार सेना सब आई ॥
बूझेसिसचिव उचितमतकहहू । ते सब हंसे मौन करि रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं । नर वानर केहि लेखे माहीं ॥
दो० सचिववैद्य गुरुतीनिजो प्रिय बोलहिंभयआश ।
राज धर्म तन तीनकर होइ बेगही नाश ॥
सोइ रावण कहं बनीसुहाई । अस्तुति करहिं सुनाइसुनाई ॥
अवसर जानिविभीषणआवा । भ्राता चरण शीश तेहि नावा ॥
पुनिशिरनाइबैठिनिजआसन । बोला बचन पाइ अनुशासन ॥
जो कृपालपूंछेहु मोहिंबाता । मति अनुरूप कहव मैं ताता ॥
जो आपन चाहौ कल्याना । सुयशसुमतिशुभगतिसुखनाना ॥
तो परनारि लिलारगोसाईं । तजौ चौथि चंदा की नाईं ॥
चौदह भुवन एकपति होई । भूत द्रोह तिष्ठे नहिं सोई ॥
गुण सागर नागर नर जोऊ । अलपलोभ भलकहै न कोऊ ॥
दो० काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक कर पन्थ ।
सबपरिहरि रघुबीर पद भजहुकहहिंसदग्रंथ ॥
तात राम नहिं नर भूपाला । भुवनेश्वर कालहु के काला ॥

ब्रह्म अनामयअज भगवन्ता । व्यापक अजित अनादि अनंता ॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपा सिन्धु मानुष तनु धारी ॥
जन रंजन भंजन खल ब्राता । वेद धर्म रक्षक सुर त्राता ॥
ताहि बैर तजि नाइय माथा । प्रणतारति भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहं बैदेही । भजहु राम बिनु काम सनेही ॥
शरण गयेप्रभु ताहु न त्यागा । बिश्वद्रोहकृत अघजेहि लागा ॥
जासु नाम त्रयताप नशावन । सोइप्रभुप्रकटसमुझजियरावन ॥

दो० बार बार पद लागौं बिनय करौं दशशीश ।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोशलाधीश ॥
मुनिपुलस्त्यनिजशिष्यसनकहिपठईयहबात ।
तुरत सो मैं तुमसन कही पाय सु अवसरतात ॥

मालवंत अति सचिवसयाना । तासुबचन सुनिअतिसुखमाना ॥
तातअनुजतव नीतिबिभूषण । सोइउरधरहुजोकहतबिभीषण ॥
रिपु उतकर्ष कहत शठ दोऊ । दूरि न करहु इहां ते कोऊ ॥
मालवंत गृह गयउ बहोरी । कहेउ बिभीषण पुनि करजोरी ॥
सुमति कुमति सबकेउर रहई । नाथ पुराण निगम असकहई ॥
जहां सुमति तहं संपतिनाना । जहांकुमति तहं बिपतिनिदाना ॥
तव उर कुमतिबसी बिपरीती । हित अनहित मानत रिपुप्रीती ॥
काल रात्रि निशिचरकुलकेरी । तेहि सीतापर प्रीति घनेरी ॥

दो० तात चरण गहि मांगौं राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहं अति हित होइ तुम्हार ॥

बुध पुराण श्रुति संमतिबानी । कही बिभीषण नीति बखानी ॥
सुनत दशानन उठा रिसाई । खलतोहिंमृत्युनिकटचलिआई ॥
जियसिसदा शठमोरजिआवा । रिपुकर पक्ष सदा तोहिं भावा ॥
कहसिनखलअसकोजगमाहीं । भुजबल जेहि जीते हमनाहीं ॥
ममपुर बसि तपसीसनप्रीती । शठमिलु जाहि ताहिकहनीती ॥
असकहिकीन्हेसिचरणप्रहारा । अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥

उमा संत की यही बड़ाई । मंद करत जो करै भलाई ॥
तुमपितुसरिसभलेमोहिंमारा । राम भजे हित होइ तुम्हारा ॥
सचिवसंग लै नभ पथगयऊ । सबहिं सुनाइ कहतअसभयऊ ॥

दो० रामसत्य संकल्पप्रभु सभा काल वशतोरि ।
मैंरघुनायक शरण अब जाउं देहजनिखोरि ॥

असकहिचलाविभीषणजबहीं । आयु हीनभे निशिचर तबहीं ॥
साधु अवज्ञा तुरत भवानी । करकल्याण अखिलकर हानी ॥
रावण जबहिं बिभीषणत्यागा । भयोविभवबिनुतबहिंअभागा ॥
चलेउ हर्षि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहौं जाइचरण जलजाता । अरुण मृदुल सेवक सुखदाता ॥
जेपद परसि तरी ऋषिनारी । दण्डक कानन पावन कारी ॥
जे पद जनक सुता उरलाये । कपट कुरंग संग धरि धाये ॥
हर उर सर सरोज पदजोई । अहो भाग्य मैं देखब सोई ॥

दो० जिन पांयन कर पादुका भरत रहे मन लाइ ।
तेपद आजु बिलोकिहौं इन नयननअबजाइ ॥

यहिबिधिकरतसप्रेमबिचारा । आयउ सपदि सिन्धु के पारा ॥
कपिन बिभीषण आवतदेखा । जानेउ कोउ रिपु दूत बिशेखा ॥
ताहि राखिकपिपतिपहंआये । समाचार सब जाइ सुनाये ॥
कह सुग्रीव सुनिय रघुराई । आवा मिलन दशानन भाई ॥
कह प्रभुसखा बूझिये काहा । कहा कपीश सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जायनिशाचरमाया । काम रूप केहि कारण आया ॥
भेद हमार लेन शठ आवा । राखियबांधि मोहिं असभावा ॥
सखा नीति तुमनीक बिचारी । मम प्रण शरणागति भयहारी ॥
सुनि प्रभुवचनहर्ष हनुमाना । शरणागत बत्सल भगवाना ॥

दो० शरणागतकहंजेतजहिंनिजअनहितअनुमानि ।
ते नर पामर पापमय तिनहिं बिलोकतहानि ॥

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू । आये शरण तजौं नहिं ताहू ॥

सन्मुखहोइजीव मोहिंजवहीं । जन्म कोटि अघ नाशैंतवहीं ॥
पापवन्तकर सहज सुभाऊ । भजनमोर त्यहि भाव नकाऊ ॥
जो पै दुष्ट हृदय सो होई । मोरे सम्मुख आव कि सोई ॥
निर्मलमनजन सो मोहिंपावा । मोहिं कपट छलछिद्रनभावा ॥
भेद लेन पठवा दशशीशा । तबहुं न कछुभयहानिकपीशा ॥
जगमहं सखा निशाचर जेते । लक्ष्मणहनहिं निमिषमहं तेते ॥
जो सभीत आवा शरणाई । रखिहौं ताहि प्राणकी नाई ॥

दो० उभय भांति लै आवहु हंसि कह कृपानिधान ।
जय कृपालकहि कपिचले अंगदादि हनुमान ॥

सादर तेहि आगे करिबानर । चलेजहां रघुपति करुणा कर ॥
दूरिहिंते देखे दोउ भ्राता । नयनानन्द दान के दाता ॥
बहुरिराम छबिधामबिलोकी । रहासोठाढ़ एक पग रोंकी ॥
भुज प्रलंब कंजारुण लोचन । श्यामलगात प्रणतभयमोचन ॥
सिंह कन्ध आयत उर सोहा । आननअमित मदनछबि मोहा ॥
नयननीरपुलकित अतिगाता । मन धरिधीर कही मृदुबाता ॥
निशिचर वंश जनमसुरत्राता । नाथ दशानन कर मैं भ्राता ॥
सहज पाप प्रियतामस देहा । यथा उलूकहि तम पर नेहा ॥

दो० श्रवण सुयशसुनि आयउं प्रभु भंजनभय भीर ।
त्राहि त्राहि आरत हरण शरण सुखदरघुबीर ॥

असकहि करतदण्डवत देखा । तुरत उठे प्रभु हर्ष विशेखा ॥
दीनबचन सुनिप्रभुमनभावा । भुजविशालगहि हृदयलगावा ॥
अनुजसहितमिलिढिगबैठारी । बोले बचन भक्त हितकारी ॥
कहु लंकेश सहित परिवारा । कुशल कुठाहर वास तुम्हारा ॥
खल मण्डलीवसहु दिनराती । सखा धर्म निबहै केहि भांती ॥
मैं जानी तुम्हारि सबरीती । अतिशय निपुणनभावअनीती ॥
वरु भलबास नरककरताता । दुष्टसंग जनि देहि बिधाता ॥
अब पददेखिकुशल रघुराया । जोतुमकीन्ह जानि जन दाया ॥

दो० तबलगिकुशल न जीवकहं सपनेहु मनविश्राम ।
जबलगिभजन न रामके शोक धामतजिकाम ॥

तबलगिहृदयबसत खलनाना । लोभ मोह मत्सर मदमाना ॥
जबलगिउरन बसतरघुनाथा । धरे चाप शायक कटि भाथा ॥
ममतातिमिरतरुण अंधियारी । रागद्वेष उलूक सुख कारी ॥
तबलगि बसत जीवउरमाहीं । जबलगिप्रभु प्रताप रविनाहीं ॥
अब मैं कुशल मिटे भय भारे । देखि रामपद कमल तुम्हारे ॥
तुम कृपालु जापर अनुकूला । ताहिनव्याप त्रिबिधिभयशूला ॥
मैंनिशिचरअतिअधमसुभाऊ । शुभ आचरण कीन्ह नहिंकाऊ ॥
जो स्वरूपमुनिध्यानन पावा । सोप्रभुहर्षि हृदय मोहिं लावा ॥

दो० अहो भाग्य ममअमितअति रामकृपासुखपुंज ।
देखेउं नयनबिरंचिशिव सेव्य युगल पदकंज ॥

सुनहु सखानिजकहहुंसुभाऊ । जानिभुशुण्डिशम्भु गिरिजाऊ ॥
जो नर होइ चराचर द्रोही । आवै सभय शरण तकि मोही ॥
तजिमदमोह कपटछलनाना । करौं सखातेहि साधु समाना ॥
जननी जनक बन्धु सुतदारा । तनधन भवन सुहृद परिवारा ॥
सबके ममता ताग बटोरी । ममपदमनहिं बांधि बटिडोरी ॥
समदरशी इच्छा कछु नाहीं । हर्ष शोक भयनहिं मनमाहीं ॥
असस ज्जन मम उरबस कैसे । लोभी हृदय बसत धन जैसे ॥
तुम सारिके संत प्रिय मोरे । धरौं देह नहिं आन निहोरे ॥

दो० सगुण उपासक परमहित निरत नीति दृढ़नेम ।
तेनर प्राणसमान मोहिं जिनके द्विजपद प्रेम ॥

सुनु लंकेश सकल गुण तोरे । ताते तुम अतिशय प्रियमोरे ॥
राम बचन सुनि बानर यूथा । सकलकहहिं जय कृपाबरूथा ॥
सुनत बिभीषण प्रभुकरबानी । नहिंअघात श्रवणामृत जानी ॥
पद अम्बुज गहि बारहिंबारा । हृदय समात न प्रेम अपारा ॥
सनहु देव सचराचर स्वामी । प्रणत पाल उर अन्तरयामी ॥

उर कछु प्रथम बासनारहेऊ । प्रभुपद प्रीति सरित सोबहेऊ ॥
अब कृपालनिजभक्तिपावनी । देहु दया करिशंभु भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा । मांगा तुरत सिन्धुकर नीरा ॥
यदपिसखा तोहिं इच्छानाहीं । मम दर्शन अमोघ जग माहीं ॥
असकहिरामतिलककतेहिसारा । सुमन वृष्टिनभ भयउअपारा ॥

दो० रावण क्रोधानल सरिस श्वाससमीर प्रचण्ड ।
जरत बिभीषण राखेउ दीन्हेउं राज अखण्ड ॥
जोसम्पति शिवरावणहिं दीन्हदिये दशमाथ ।
सो संपदाबिभीषणहिंसकुचि दीन्ह रघुनाथ ॥

अस प्रभुछांड़िभजहिंजेआना । तेनर पशु बिनु पूंछ विषाना ॥
निजजनजानि ताहिअपनावा । प्रभुस्वभावकपिकुलमनभावा ॥
पुनि सर्वज्ञ सर्व उर बासी । सर्व रूप सब रहित उदासी ॥
बोले बचननीति प्रति पालक । कारणमनुज दनुजकुलघालक ॥
सुनु कपीश लंकापति बीरा । केहिविधिउतरियजलधिगंभीरा ॥
संकुल उरग मकर झखजाती । अति अगाध दुस्तर सबभांती ॥
कह लंकेश सुनहु रघुनायक । कोटिसिन्धु शोषक तवशायक ॥
यद्यपि तदपिनीति अस गाई । बिनय करिय सागर पहंजाई ॥

दो० प्रभुतुम्हारकुलगुरुजलधिकहिहिउपायबिचारि ।
बिनु प्रयाससागरतरहिं सकल भालुकपिधारि ॥

सखा कह्यो तुम नीक उपाई । करब दैव जो होइ सहाई ॥
मंत्रन यह लक्ष्मण मनभावा । रामबचनसुनिअतिदुखपावा ॥
नाथ दैवकर कवन भरोसा । शोखियसिंधुकरियमनरोसा ॥
कादर मन कर एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत बिहंसि बोले रघुबीरा । ऐसेइ करब धरहु मन धीरा ॥
असकहिप्रभु अनुजहि समुझाई । सिन्धु समीप गये रघुराई ॥
प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभुजाई । बैठे तट पुनि दर्भ डसाई ॥
जबहिं बिभीषण प्रभु पहंआये । पाछे रावण दूत पठाये ॥

दो० सकल चरित उन्ह देखेउ धरेकपट कपिदेह ।
प्रभु गुण हृदय सराहिअतिशरणागत परनेह ॥

प्रकट बखानत राम सुभाऊ । अतिसप्रेमगा बिसरि दुराऊ ॥
रिपुकादूत कपिन्ह जबजाना । ताहिबांधिकपिपतिपहं आना ॥
कह सुग्रीव सुनहु सब वनचर । अंगभंग करिपठवहु निशिचर ॥
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाये । बांधि कटक चहुंपासफिराये ॥
बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारततदपि न त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना । तेहि कोशलाधीश कर आना ॥
सुनिलक्ष्मणतेहि निकटबुलाई । दयालागि हंसिदीन छुड़ाई ॥
रावणकर दीन्हेउं यह पाती । लक्ष्मण वचन बांचुकुलघाती ॥

दो० कहेउ मुखागर मूढ़सन मम सन्देश उदार ।
सीता देहु मिलहु नतो आवा काल तुम्हार ॥

तुरत नाइ लक्ष्मण पद माथा । चलादूत बरणत गुण गाथा ॥
कहत राम यश लंका आवा । रावण चरण शीशतिन्हनावा ॥
बिहंसि दशाननपूंछेसि बाता । कहसिनशुकआपनिकुशलाता ॥
पुनि कहुकुशल बिभीषणकेरी । जासु मृत्यु आई अति नेरी ॥
करत राज लंका शठ त्यागा । होइहि यवकर कीट अभागा ॥
पुनि कहु भालु कीश कटकाई । कठिनकाल प्रेरितचलिआई ॥
तिन्हके जीवन कर रखवारा । भयउमृदुलचितसिंधुबिचारा ॥
कहु तपसिन कर बात बहोरी । जिन्हके हृदय त्रास बड़िमोरी ॥

दो० भईभेंट की फिरि गये श्रवण सुयश सुनि मोर ।
कहसि न रिपुदलतेजबलकसचक्रित चिततोर ॥

नाथ कृपाकरि पूंछेहु जैसे । मानहु बचन क्रोध तजितैसे ॥
मिला जाइ जबअनुज तुम्हारा । जातहिंरामतिलकतेहिसारा ॥
रावण दूत हमहिं सुनि काना । कपिन बांधि दीन्हेदुखनाना ॥
श्रवण नासिका काटन लागे । राम शपथ दीन्ही तबत्यागे ॥
पूंछहु नाथ कीश कटकाई । बदनकोटिशत बरणि न जाई ॥

नाना बरण भालु कपि धारी । बिकटानन बिशालभयकारी ॥
जेइं पुर दहेउ बधेउसुततोरा । सकलकपिन्हमहंतेहिबलथोरा॥
अमितनाम भट कठिन कराला । बिपुलबरणतनतेजबिशाला ॥

दो० द्विबिद मयंद नीलनल अंगदादि बिकटासि ।
दधिमुख केहरिकुमुदगव जामवन्त बलरासि ॥

ये कपि सब सुग्रीव समाना । इन्हसम कोटि गनैकोआना ॥
राम कृपा अतुलित बलतिनहीं । तृणसमानत्रैलोकहिगिनहीं ॥
असमैं श्रवण सुना दशकन्धर । पद्म अठारह यूथप बन्दर ॥
नाथ कटक महं सो कपिनाहीं । जोनतुमहिंजीतहिरणमाहीं ॥
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
शोषहिंसिंधुसरितझपव्याला । फारहिंनखधरि कुधरबिशाला ॥
मर्दि गर्द मिलवहिं दशशीशा । ऐसे वचन कहहिंसब कीशा ॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका । मानहुं ग्रसन चहतअबलंका॥

दो० सहज शूर कपि भालु सब पुनिशिरपर श्रीराम ।
रावण कोटिनकालकहं जीति सकहिं संग्राम ॥

राम तेज बल बुधि बिपुलाई । शेष सहसशत सकहिंनगाई ॥
सकशर एक शोषि शतसागर । तवभ्रातहिं पूछेउ नयनागर ॥
तासु बचन सुनि सागर पाहीं । मांगत पन्थ कृपा मनमाहीं ॥
सुनत बचन बिहंसा दशशीशा । जो अस नतिसहायकृतकीशा ॥
सहज भीरुकरि बचन दृढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाहमैं पाई ॥
सचीव सभीत बिभीषण जाके । बिजयबिभूतिकहांलगिताके ॥
सुनि खलबचन दूतरिस बाढ़ी । समयबिचारि पत्रिका काढ़ी ॥
राम अनुज दीन्ही यह पाती । नाथ बंचाय जुड़ावहु छाती ॥
बिहंसिबामकरलीन्ह्यसिरावन । सचिवबोलिशठलागबंचावन॥

दो० बातनमनहिंरिझावशठजनिघालसि कुलखीस ।
राम बिरोध न उबरिहहु शरण बिष्णुअजईस ॥

होउ मान तजि अनुज इव प्रभु पद पंकजभृंग ।
होहि रामशरअनलखल जनिकुलसहितपतंग ॥

सुनत सभय मनमहं मुसकाई । कहतदशानन सबहिं सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकासा । लघुतापसकर बागबिलासा ॥
कह शुक नाथ सत्य सबबानी । समुझहुछांड़िप्रकृतिअभिमानी॥
सुनहु बचन ममपरिहरि क्रोधा । नाथ रामसन तजहुबिरोधा ॥
अति कोमल रघुवीर सुभाऊ । यद्यपि अखिललोककरराऊ ॥
मिलत कृपा प्रभुतुमपर करिहैं । उर अपराध न एकौधरिहैं ॥
जनक सुता रघुनाथहि दीजै । इतनाकहा मोर प्रभु कीजै ॥
जबतेइं देन कहेउ बैदेही । चरण प्रहार कीन्हशठतेही ॥
चरण नाय शिरचला सो ताहां । कृपासिंधु रघुनायक जाहां ॥
करि प्रणाम निज कथासुनाई । राम कृपा आपनि गतिपाई ॥
ऋषि अगस्त्यकरशाप भवानी । राक्षस भयउ रहा मुनिज्ञानी ॥
बन्दिराम पद बारहिं बारा । पुनिनिजआश्रमकहंपगुधारा ॥

दो० बिनय न मानतजलधि जड़ गयेतीनदिनबीति ।
बोले राम सकोप तब भयबिनु होय न प्रीति ॥

लक्ष्मण बाण शरासन आनू । शोषे बारिध बिशिष कृशानू ॥
शठसनबिनय कुटिलसनप्रीती । सहजकृपणसन सुंदर नीती ॥
ममता रत सन ज्ञान कहानी । अतिलोभीसनबिरतिबखानी ॥
क्रोधिहिसम कामिहिं हरिकथा । ऊपर बीज बये फल यथा ॥
असकहि रघुपति चापचढ़ावा । यह मतलक्ष्मणके मनभावा ॥
सन्धानेउ शर बिशिष कराला । उठी उदधिउर अन्तरज्वाला ॥
मकर उरगझख गणअकुलाने । जरतजन्तुजल निधिजबजाने ॥
कनकथार भरि मणिगणनाना । बिप्ररूप आये तजि माना ॥

दो० काटे पै कदली फरै कोटि यतन करि सींच ।
बिनय न मान खगेशसुन डाटेहिं पै नवनीच ॥

सभय सिन्धु गहि पद प्रभुकेरे । क्षमहुनाथ सब अवगुण मेरे ॥

गगन समीरअनलजलधरणी । इनकी नाथ सहजजड़ करणी ॥
तव प्रेरित माया उपजाये । सृष्टिहेतु सबग्रन्थन गाये ॥
प्रभुआयसु जेहिकहंजसअहही । सो तेहिभांति रहै सुखलहई ॥
प्रभुभलकीन्हमोहिंसिखदीन्हीं । मर्य्यादा सब तुम्हरी कीन्हीं ॥
ढोल गंवार शूद्र पशु नारी । ये सब ताड़न के अधिकारी ॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई । उतरिहि कटक न मोरिबड़ाई ॥
प्रभुआज्ञा अपेल श्रुतिगाई । करहूबेगि जो तुमहिं सोहाई ॥

दो० सुनतबिनीतबचनअति कहकृपालमुसुकाइ ।
जेहिबिधिउतरेकपिकटकताततसोकरहुउपाइ ॥

नाथ नील नल कपिदोउभाई । लरिकाईं ऋषि आशिषपाई ॥
तिनके परस किये गिरिभारे । तरिहहिंजलधिप्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहौं बल अनुमान सहाई ॥
इहिबिधिनाथपयोधिबंधाइय । जिहिअससुयशलोकतिहुंगाइय ॥
इहि शर मम उत्तरतट बासी । हतहु नाथ खलगण अघरासी ॥
सुनि कृपाल सागरमन पीरा । तुरतहिं हरी रामरण धीरा ॥
देखि राम बलअतुलित भारी । हर्षि पयो निधि भयोसुखारी ॥
सकलचरितकहिप्रभुहिसुनावा । चरणबन्दि पाथोधिसिधावा ॥

छं० निजभवनगवनेउसिन्धु श्रीरघुबीरहियमतभायऊ ।
यहचरितकलिमलहरणजसमतिदासतुलसीगायऊ ॥
सुखभवनसंशयदमनशमन बिपादरघुपतिगुणगना ।
तजिआशसकलभरोसगावहिंसुनहिंसज्जनशुचिमना ॥

दो० सकल सुमंगल दायकरघुनायक गुणगान ।
सादरसुनहिंतेतरहिंभव सिंधुबिनाजलयान ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमल
वैराग्यसम्पादनोनाम पंचमःसोपानः ॥

—※—

श्रीगणेशायनमः ॥

लङ्काकाण्ड ॥

—— ❋ ——

श्लोक ॥

शंखेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं । कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियं ॥ काशीशंकलिकल्मषौघशमनंकल्याणकल्पद्रुमं । नौमीड्यं गिरिजापतिंगुणनिधिंश्रीशंकरंकामहं १ योददातिसतांशम्भुःकैवल्यमपिदुर्लभं । खलानांदण्डकृद्योसौशंकरःसंतनोतुमे ॥ २ ॥

दो० लवनिमेष परमाणुयुग वर्ष कल्पशर चण्ड ।
भजसि न मनतेहिरामकहंकालजासु कोदण्ड ॥

सो० सिंधुवचनसुनिरामसचिवबोलिप्रभुअसकहेउ ।
अबबिलम्बकेहिकाम रचहु सेतु उतरै कटक ॥
सुनहु भानुकुलकेतु जाम्बवन्त कर जोरिकह ।
नाथ नाम तवसेतु नरचढ़ि भवसागर तरहिं ॥

यह लघुजलधितरतकतबारा । अससुनि पुनिकहपवनकुमारा ॥
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी । शोषेउ प्रथम पयोनिधि वारी ॥
तव रिपुनारि रुदनजलधारा । भरयो बहोरि भयोतेहि खारा ॥
सुनि असउक्तिपवन सुतकेरी । बिहंसे रघुपति कपि तन हेरी ॥
जाम्बवन्त बोले दोउ भाई । नलनीलहिंसब कथा सुनाई ॥
राम प्रताप सुमिरि उरमाहीं । करहु सेतु प्रयास कछुनाहीं ॥
बोलि लियेकपिनिकरबहोरी । सकल सुनहु बिनती इकमोरी ॥

राम चरण पंकज उरधरहू । कौतुक एक भालु कपिकरहू ॥
धावहु मर्कट विकट बरूथा । आनहु बिटप गिरिन केयूथा ॥
सुनि कपि भालु चलेकरिहूहा । जय रघुबीर प्रताप समूहा ॥

दो० अतिउतंग तरु शैलगण लीलहिं लेहिं उठाइ ।
आनि देहिं नल नीलकहंविरचहिं सेतुबनाइ ॥

शैल विशाल आनिकपि देहीं । कन्दुकइव नल नील सोलेहीं ॥
देखि सेतु अतिसुन्दर रचना । बिहंसि कृपानिधि बोलेबचना ॥
परम रम्य सुंदर यहधरणी । महिमाअमित जाइनहिंबरणी ॥
करिहौं इहां शम्भु थापना । मोरे हृदय परम कल्पना ॥
सुनि कपीश बहुदूत पठाये । मुनिवर निकर बोलि लैआये ॥
लिंग थापिविधिवतकरिपूजा । शिवसमान प्रियमोहिं नदूजा ॥
शिव द्रोही मम दासकहावै । सोनर स्वप्नेहु मोहिं न भावै ॥
शंकर विमुख भक्ति चहमोरी । सो नर मूढ़ मंद मति थोरी ॥

दो० शंकर प्रिय मम द्रोही शिव द्रोहि मम दास ।
तेनर करहिं कल्प भर घोर नरक महं बास ॥

जो रामेश्वर दर्शन करिहैं । सोतनतजि ममधाम सिधरिहैं ॥
जो गंगाजल आनि चढ़ाइहि । सो सयुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
होइअकामजोछलतजिसेइहि । भक्ति मोर तिहि शंकर देइहि ॥
मम कृत सेतु जु दर्शनकरिहैं । सोबिनुश्रम भव सागर तरिहैं ॥
राम बचन सबके मन भाये । मुनिवर निजनिजआश्रमआये ॥
गिरिजारघुपति की यहरीती । सन्तत करहिं प्रणतपरप्रीती ॥
बांधेउ सेतु नील नल नागर । रामकृपायश भयउ उजागर ॥
बूड़हिं आनहिं बोड़हिं जेई । भये प्रबल बोहित सम तेई ॥
महिमायहन जलधिकीबरणी । पाहन गुणन कपिनकीकरणी ॥

दो० श्री रघुबीर प्रताप ते सिन्धु तरे पाषाण ।
ते मतिमंदजो रामतजि भजहिंजायप्रभुआन ॥

बांधि सेतु अति सुदृढ़बनावा । देखि कृपा निधि के मन भावा ॥

चली सेनकछु बरणि न जाई । गरजहिं मरकट भट समुदाई ॥
सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई । चितव कृपाल सिंधु बहुताई ॥
देखनकहं प्रभु करुणाकन्दा । प्रकटभये सब जलचर वृन्दा ॥
नाना मकर नक्रझख ब्याला । शतयोजन तनपरम बिशाला ॥
ऐसे एक तिनहिं धरिखाहीं । एकन के डर एक पराहीं ॥
प्रभुहिबिलोकहिं टरहिंनटारे । मन हर्षित सब भये सुखारे ॥
तिनकी ओट न देखिये बारी । मगन भये हरिरूप निहारी ॥
चलाकटक कछुबरणिन जाई । कोकहिसक कपिदलबिपुलाई ॥
दो॰ सेतुबन्ध भइभीर अति कपि नभपन्थ उड़ाहिं ।
अपरजलचरनिउपरचढ़िबिनुश्रमपारहिंजाहिं ॥
यहकौतुक बिलोकि दोउभाई । बिहंसि चलेकृपाल रघुराई ॥
सेन सहित उतरे रघुबीरा । कहिनजात कछु यूथप भीरा ॥
सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा । सकलकपिनकहंआयसुदीन्हा ॥
खाहुजाइ फलफूल सुहाये । सुनत भालुकपि जहंतहंधाये ॥
सब तरु फले रामहित लागी । ऋतुअनऋतुहिकालगतित्यागी ॥
खाहिंमधुरफलबिटपहिलावहिं । लंका सन्मुखशिखरचलावहिं ॥
जहंकहुं फिरतनिशाचरपावहिं । घेरिसकलमिलिनाचनचावहिं ॥
दशनन काटिनासिका काना । कहि प्रभुसुयश देहिंतबजाना ॥
जिनकर नासा कान निपाता । तेइरावणहिं कही सब बाता ॥
सुनत श्रवण बारिधि बंधाना । दशमुख बोलिउठा अकुलाना ॥
दो॰ बांधेउजलनिधिनीरनिधिजलधि सिंधु बारीश ।
सत्यतोयनिधिपंकनिधि उदधिपयोधि नदीश ॥
ब्याकुलतानिजसमुझिबहोरी ।बिहंसिचलागृहकरिमति भोरी ॥
मन्दोदरी सुना प्रभु आये । कौतुकही पाथोधि बंधाये ॥
करगहिपतिहिभवननिजआनी । बोली परम मनोहर बानी ॥
चरण नाइ शिर अंचल रोपा । सुनहु बचनपिय परिहरिकोपा ॥
नाथ वैर कीजै ताही सों । बुधिबलजीति सकियजाहीसों ॥

तुमहिं रघुपतिहि अंतरकैसा । खलु खद्योत दिवाकर जैसा ॥
अति बल मधुकैटभजिनमारा । महाबीर दिति सुत संहारा ॥
जेहिबलिबांधिसहसभुजमारा । सोइ अवतरेउहरण महिभारा ॥
तासु बिरोध न कीजियेनाथा । कालकर्म गुण जिनके हाथा ॥
दो० रामहिं सौंपहु जानकी नाइ कमल पद माथ।
सुतकहं राज्य देइ बन जाइ भजहु रघुनाथ ।
नाथ दीनदयाल रघुराई । बाघौ सन्मुख गये न खाई॥
चहिय करन सो सबकरिबीते । तुम सुर असुर चराचर जीते ॥
वेदकहहिं अस नीतिदशानन । चौथेपनहिं जाइ नृप कानन ॥
तासु भजन कीजिय तहंभर्ता । जो कर्ता पालक संहरता ॥
सोइ रघुबीर प्रणतअनुरागी । भजहु नाथ ममता मदत्यागी ॥
मुनिवरयतनकरहिंजेहिलागी । भूप राज्यतजि होहिं बिरागी ॥
सोइ कोशलाधीश रघुराया । आये करन तोहिं पर दाया॥
जो पियमानहु मोरसिखावन । होइहि सुयश तिहूं पुरपावन॥
दो० असकहिलोचनबारिभरि गहिपदकम्पितगात ।
नाथ भजहु रघुनाथ पद मम अहिवातनजात ।
तब रावण मय सुता उठाई । कहैलागु खल निज प्रभुताई ॥
सुनु तैं प्रिया मृषाभय माना । जग योधाको मोहिं समाना ॥
बरुण कुबेर पवनयम काला । भुजबलजिते सकलदिगपाला ॥
देव दनुज नर सब वशमोरे । कौन हेतु भय उपजा तोरे ॥
नानाबिधिकहि तेहिसमुझाई । सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥
मन्दोदरी हृदय अस जाना । कालबिवश उपजा अभिमाना ॥
सभा जाइ मत्रिन सों बूझा । करियकवनविधिरिपुसनजूझा ॥
कहहिंसचिवसुनुनिशिचरनाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥
कहहु कवनभयकरियविचारा । नरकपिभालु अहार हमारा ॥
दो० वचन सबनके श्रवणसुनिकहप्रहस्त करजोरि ।
नीतिविरोध नकरियप्रभुमंत्रिनमतिअतिथोरि॥

कहहिंसचिव सबठकुरसुहाती । नाथ न भलहोइहिइहिभांती ॥
बारिधिलांघि एक कपि आवा । तासुचरित मनमहं सबगावा ॥
क्षुधा न रही तुमहिं सबकाहू । जारतनगर न तेहिधरिखाहू ॥
सुनत नीक आगे दुखपावा । सचिवन्हअसमतप्रभुहिसुनावा ॥
जो बारीश बंधायेउ हेला । उतरे कपिदलसहित सुवेला ॥
सो मनु मनुज खाब हम भाई । वचनकहहु सब गालफुलाई ॥
सुनिममबचनतातअतिआदर । निजमनगुणहुमोहिंकहिकादर ॥
प्रियबाणी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसेजग निकाय नर अहहीं ॥
बचन परम हित सुनत कठोरे । कहहिंसुनहिं तेनर प्रभु थोरे ॥
प्रथम बसीठ पठव सुनु नीती । सीतहिदेइ करियपुनि प्रीती ॥
दो० नारि पाइ फिरि जाहिं जो तौन बढ़ाइय रार ।
नाहिं तो सन्मुखसमरमहंनाथकरियहठमार ॥
यहमत जो मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुयशजगतोरा ॥
सुतसन कह दशकंध रिसाई । असमततोहिंशठकौनसिखाई ॥
अबहीं ते उर संशय होई । बेणुवंशसुत भयेसि घमोई ॥
सुनिपितुगिरा परुष अतिघोरा । चलाभवन कहिवचनकठोरा ॥
हित मत तोहिं न लागत कैसे । काल बिवश कहं भेषज जैसे ॥
संध्या समय जानि दशशीसा । भवन चलानिरखतभुजबीसा ॥
लंका शिखर रुचिर आगारा । अतिविचित्रतहंहोयअखारा ॥
बैठ जाइ तेहि मन्दिर रावण । लागे किन्नर गन्धर्व गावन ॥
बाजे ताल पखावज बीणा । नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा ॥
दो० सुनासीर शतसरिस सो सन्तत करे बिलास ।
परमप्रबलरिपुशीश परतदपिनकछुमनत्रास ॥
इहां सुबेल शैल रघुबीरा । उतरे सेनसहित अति भीरा ॥
शैल शृङ्ग इक सुंदर देखी । अतिउतंगसमसुभग बिशेखी ॥
तहं तरु किशलय सुमनसुहाये । लक्ष्मणरचिनिजहाथडसाये ॥
तापर रुचिर मृदुलमृगछाला । तेहिआसन आसीन कृपाला ॥

प्रभु कृतशीश कपीश उछंगा । बामदहिन दिशिचाप निषंगा ॥
दुहुं कर कमल सुधारत बाना । कह लंकेश मंत्र लगि काना ॥
बड़ भागी अंगद हनुमाना । चरणकमलचापतविधिनाना ॥
प्रभु पाछे लक्ष्मणबीरासन । कटि निषंग करबाण शरासन ॥

दो० इहिबिधि करुणाशीलगुण धामराम आसीन ।
धन्यसोनर यहिध्यान रत रहतसदालवलीन ॥
पूरब दिशा विलोकि प्रभु देखा उदित मयंक ।
कह्योसबहिंदेखहुशशिहिमृगपतिसरिसअशंक ॥

पूरब दिशि गिरि गुहानिवासी । परम प्रताप तेज बल रासी ॥
मत्त नाग तम कुम्भ बिदारी । शशि केहरी गगन बनचारी ॥
बिथुरे नभ मुकुताहल तारा । निशि सुन्दरी केर शृंगारा ॥
कहप्रभु शशि महं मेचकताई । कहहु कहा निजनिजमतिभाई ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराया । शशिमहंप्रकट भूमिकी छाया ॥
मारेहु राहु शशिहि कहकोई । उरमहं परी श्यामता सोई ॥
कोउकहजबबिधिरतिमुखकीन्हा। सारभागशशिकरहरिलीन्हा॥
छिद्र सो प्रकट इन्दुउरमाहीं । तेहिमग देखिय नभपरिछाहीं ॥
कह प्रभुगरल बन्धु शशिकेरा । अतिप्रीतम उरदीन्ह बसेरा ॥
विषसंयुत कर निकर पसारी । जारत बिरहवन्त नर नारी ॥

दो० कहमारुतसुत सुनहुप्रभुशशि तुम्हारप्रियदास ।
तव मूरति तेहिउर बसत सोई श्यामता भास ।
पवनतनय के बचन सुनि बिहंसे रामसुजान ॥
दक्षिण दिशाबिलोकि पुनि बोले कृपानिधान ।

देखि बिभीषण दक्षिण आसा । घन घमयडदामिनीबिलासा ॥
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा । होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा ॥
कहत बिभीषण सुनहु कृपाला । होइ नतड़ित नवारिदमाला ॥
लंका शिखर रुचिर आगारा । तहं दशकन्धरकेर अखारा ॥
छत्र मेघ डम्बर शिर धारी । सोजनु जलद घटाअतिकारी ॥

मन्दोदरी श्रवण ताटंका। सोइप्रभुजनु दामिनीदमंका॥
बाजहिंताल मृदंग अनूपा। सोइ रवसरससुनहु सुरभूपा॥
प्रभु मुसुकानदेखि अभिमाना। चाप चढ़ाइ बाण सन्धाना॥

दो० छत्र मुकुट ताटंक सब हते एकही बान।
सबके देखत महि गिरे मर्म न काहू जान॥
यह कौतुक करि रामशर प्रविश्यो आइ निषंग।
रावण सभा सशंक सब देखि महारस भंग॥

कम्पन भूमि न मरुत बिशेखा। अस्त्रशस्त्र कोउ नयन न देखा॥
शोचहिं सबनिजहृदय बिचारी। अशकुनभयउ भयंकर भारी॥
रावण दीख सभा भय पाई। बिहँसि बचन कहयुक्ति बनाई॥
शिरौ गिरे सन्तत शुभ जाही। मुकुट गिरेकसअशकुनताही॥
शयन करहुनिजनिज गृहजाई। गवने भवन सकल शिरनाई॥
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ। जबते श्रवण फूलमहिखसेऊ॥
सजल नयन कहयुगकरजोरी। सुनहुप्राणपति बिनती मोरी॥
राम बिरोध कन्त परिहरऊ। जानिमनुज जनिहठउरधरऊ॥

दो० बिश्व रूप रघुबंशमणि करहु बचन बिश्वास।
लोक कल्पनाबेद कह अंग अंग प्रति जास॥

पद पाताल शीश अजधामा। अपर लोक अंगन्ह बिश्रामा॥
भृकुटि बिलास भयंकर काला। नयनदिवाकर कचघनमाला॥
जासु घाण अश्वनी कुमारा। निशिअरुदिवसनिमेषअपारा॥
श्रवण दिशादश बेद बखानी। मारुतश्वासनिगमनिज बानी॥
अधर लोभ यम दशनकराला। माया हास बाहु दिगपाला॥
आनन अनल अम्बुपतिजीहा। उतपतिपालन प्रलयसमीहा॥
रोमावली अष्ट दश भारा। अस्थि शैल सरितानसजारा॥
उदर उदधि अधगो कुजातना। जगमय प्रभुकी बहुतकल्पना॥

दो० अहंकार शिव बुद्धि अज मन शशिचित्त महान
मनुज बास चर अचर मय रूप राशि भगवान॥

दो० अस विचारि सुनु प्राणपति प्रभु सन बैर बिहाइ ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ ॥
बिहंसा नारि वचन सुनि काना । अहोमोह महिमा बलवाना ॥
नारि स्वभाव सत्य कबि कहईं । अवगुणआठ सदाउरर हईं ॥
साहस अनृत चपलता माया । भयअविवेकअशौच अदाया ॥
रिपुकर रूप सकलतैं गावा । अतिबिशालभयमोहिंसुनावा॥
सो सब प्रिया सहज बशमोरे । समुझिपरा प्रभाव अबतोरे ॥
जानेउं प्रिया तोरि चतुराई । यहमिसिकहेउमोरिप्रभुताई ॥
तव बतकही गूढ़ मृगलोचनि । समुझतसुखदसुनतभयमोचनि॥
मन्दोदरि मन महं यह ठयऊ ।पियहिकालबशमतिभ्रमभयऊ॥
दो० बहुविधिजल्पेसिसकल निशि प्रातभयेदशकन्ध।
सहज अशंक सो लंकपति सभा गयो मद अंध ॥
सो० फूलै फलै न बेत यदपि सुधा बर्षहिं जलद ।
मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं बिरंचिसम॥

क्षेपक

दो० मंत्रिन सहित दशानन चढ़ेव धवरहर जाय ।
सारन कह तब राजसन देखहु कपि समुदाय॥
ये जो सिंहनाद किलकरहीं । सप्ततालु उन्नत संचरहीं ॥
सहसकोटि अतुलितबलवाना । इन्हके संग बानर परिमाना ॥
रण अजीत ये सहज अशंका । नाद सुनै कांपै गढ़ लंका ॥
नभ निरखहु इनके लंगूरे । जनुऋतु पावस युग धनु पूरे ॥
बिसकर्मा के सुत गुणखानी । इन्हपरसेपय शिल उतरानी ॥
बसहिं ताम्रगिरिकन्दर माहीं । गोदावरीबिमल जलपाहीं ॥
अतिबल आगे धावहिं बीरा । इन्हपर कृपाकरहिं रघुबीरा ॥
करहिं यमहु कर संगर ढीला । कज्जलबरणनाम नल नीला॥
दो० पदुमअठारह कपिकटक चलइनकी भुजछाहं ।
निजकर सुरभि सुमन लै रघुपति पूजी बाहं ॥

यहजो आवत अचल समाना। चौदह ताड़ ऊंच परिमाना ॥
बास पुलिन्दा के तट करई। अम्बुदनिकर निरखिकरधरई ॥
रक्तकमल दलसम सब देहा। जनु विकसेउ संध्याकर मेहा ॥
हतै मेदिनी पूंछ भवांई। लंका सौंह चितव जनु खाई ॥
तारा सुवन बालिको जायो। अतिजुझाररघुपतिमनभायो ॥
हृदय गगन इहिके प्रभुभानू। पंचपदुम कपि निकर पयानू ॥
करै बज्र बासव कर भंगा। उदयाचल कहं लेइ उछंगा ॥
परम चतुर सेनप इहि लागी। रघुपति कृपा परम बड़भागी ॥

दो० पाउ धरा धरि चापै पन्नग होइ अकाज।
सेन अग्र सर देखहु यह अंगद युवराज ॥

यह जो श्वेत बरण तन रेखा। मनहुंरजत गिरिशृङ्गविशेखा ॥
दीर्घकेश दारुण भुज दण्डा। चपलचलत बलबुद्धिप्रचण्डा ॥
बास करै जलनिधि के तीरा। पान करै गोमती सुनीरा ॥
नृप सुग्रीव केर अधिकारी। सबल ब्यूह यह रचै सवारी ॥
जनमत चन्द्रहिग्रसन उड़ाना। इहिकर पुरुषारथ जगजाना ॥
निरखि गगनराकाशशिसोहा। शिशुअजानतेहिलगिमनमोहा ॥
धरणीधसकि धरनजब उड़ेऊ। सत्तरि योजनते पुनि फिरेऊ ॥

दो० कोटि पंच शत मर्क्कट रहइं सर्बदा साथ।
काल्हुते रण लरिसकै कुमुदनाम कपि नाथ ॥

येदेखहु जे चहुं दिशि घुमड़े। मनहुं लंक सावन घनउमड़े ॥
आगू पीछू दशदिशि धावहिं। शिलाशृङ्ग तरु तोरतआवहिं ॥
सहसनाग बलसबहिसमाना। सप्तपदुम इनकर परिमाना ॥
काशी पुरी बास इन्ह केरी। समर कतहुं जिनपीठ न फेरी ॥
तीक्ष्ण दन्त नखायुध धारी। द्वन्द्व युद्ध ये जानहिं भारी ॥
धूमकेतु यूथप इन्ह केरा। लंका निकट कीन्ह जेहिडेरा ॥
इहिकर जेठ बन्धु जमवन्ता। तेहिकैबलकर पावको अंता ॥
देव दनुज को जूझै ताही। धरा होइ कर कंबुक जाही ॥

बसै अशंक नर्मदा तीरा । अशनि समान अभेद शरीरा ॥
दो० सचिव सुकंठ राजकर रघुबर कर प्रियदास ।
सो जड़मन्द जो याहिरण चहजीतनकीआस ॥
अत्र देखहु यह यूथ अपारा । पीतबरण होइ गयउपहारा ॥
बाल अरुण मरीचि जसफूटी । निशिचरनिकर तमीचहछूटी ॥
चौबिस अर्बुद इनकर यूहा । सहस बुन्द समकोटि समूहा ॥
शिला शैल जे आगे परहीं । पायन मर्दि गर्द सम करहीं ॥
कंचन गिरि कन्दर के बासी । इनकर यूथ नाथ अबिनासी ॥
अति बलबासवकर हितकारी । सखा सुकंठ केर सुखकारी ॥
पान करै गंगा कर नीरा । पर्वत शृंग समान शरीरा ॥
छिन छिन सिंहनाद जो होई । गर्जत आवत है कपि सोई ॥
दो० यश तिहुंमण्डल गलितगज बलकरनाहिनअंत ।
यह कपि राजा केशरी सुवन जासु हनुमन्त ॥
उत्तर दिशि देखहु रजधानी । जनुदुकालल्लगिशलभउड़ानी ॥
मरकट निकर बिकल बलटूटे । आवत उदधि कूल जनुछूटे ॥
इहि दल यूथ नाथ जो अहई । अति बलवंत राजसंग रहई ॥
कपिके रूप अनल अबिनासी । ए द्वौ पारि पात्र के बासी ॥
अति सुन्दर अरुसमर बिपक्षा । महाबली द्वौ गवय गवक्षा ॥
ये द्वौ गर्जत अति रण धीरा । पीवहिं तुंग भद्र कर नीरा ॥
सत्तरि सहस नागबल जाही । इन महं एक कहौं मैं ताही ॥
अपर बली गंध मादन नामा । रणअजेय पुनिसबगुणधामा ॥
दो० बासव बिबुध बृन्द महं तेजन महं जस भानु ।
पनस नाम यह बानर अति बलनीति निधानु ॥
यह जो कुमुद पत्र सम देहा । जस कैलाश शरद कर मेहा ॥
लोचन मधु पिंगल अतिलोने । काम रूप चितवत चहुंकोने ॥
लंका सौंह लंगूर फिराई । गर्जत प्रलय मेघ की नाईं ॥
सुरपति साथ युद्धकहं गयऊ । तबते काम रूप यह भयऊ ॥

मघवा इहि सन कीन्ह मिताई । करै सदा यह दैव सहाई ॥
सहसकोटि कपि इहिके संगा । राते पीत श्वेत बहु रंगा ॥
बचन मृषा ममप्रभु यह नाहीं । अपरबालि जानहु मनमाहीं ॥
दरदुर शैल सदन इहिकेरा । मनबच कर्म्म रामकर चेरा ॥
दो० गिरिवर लांघत आवत चलत उड़ावत रेणु ।
तरणि तेज इन रूंधेउ तारा तनय सुषेणु ॥
यहकपिलसत मनहुं गिरिगेरू । दिनमुखछबिजसलहतसुमेरू ॥
सोइकपि प्रथमलंक जेहिजारी । प्रभुकेहिलगिआवतइहिबारी ॥
अंजनि गर्भ जन्म जब भयऊ ।क्षुधितजननिसनअरतसठयऊ ॥
तेईकह सुपकअरुण फलखाहू । सुनतचितवइतउत चितचाहू ॥
बालअरुणलखि गगनउड़ाना । असेसितरणि बासवतबजाना ॥
मारेउ वज्र चिबुक भइ टेढ़ी । कोपि पवन समीर सम बेढ़ी ॥
देवबिकलहोइ अस्तुतिकीन्हा । कुलिशहोउतन असवरदीन्हा ॥
बिद्या पढ़त भानुके पाहीं । उलटी गति रबि आगे जाहीं ॥
बारिधि लांघेउ गोपद जैसे । यहि कपीश सन जूझब कैसे ॥
दो० अंबक पीत बालरबि बदन तेज अति राज ।
पवनते बेग अधिकजनु अनल नितंब सुभ्राज ॥
अतसी कुसुम वरण तनुरेखा । पुरुष पुराण धरे नर बेखा ॥
मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुज दण्डा । धनुष बाण असिधरे प्रचण्डा ॥
उर बिशाल अतिउन्नत कंधर । कम्बु कंठ रेखा प्रसन्न बर ॥
मुखछबिकी उपमा कबि जोहै । शशि सरोज समकहै न सोहै ॥
दशन पांतिकी कांति कहै को । ललकतमन पटतरिय लहैको ॥
देखत अधरनकी अरुणाई । बिम्बाफल बन्धूक लजाई ॥
शुकतुण्डहि नासिका लजावै । थकेसुकबि नहिं पटतर आवै ॥
शीश जटाके मुकुट बनाये । भालबिशालतिलकअतिभाये ॥
दक्षिणदिशि लक्ष्मणबलबीरा । रामबाहु सम अति रणधीरा ॥
दो० वाम भाग बिभीषण शिर अभिषेका राज ।

बीज मंत्रसब जानहिं अकसर करहिं सुकाज।
अब देखहु यह सैन सुहाई। भादौं मेघ घटा जनु छाई॥
कन्या एक ब्रह्म उपजाई। नयन भूरि अरु रूप लुनाई॥
बालभाव दिनकर बल दीन्हा। ऋतु जानीबासवरति कीन्हा॥
जातक जमल बीर द्वौ जाये। देव अंश बानर तनु पाये॥
किष्किन्धा पर इनकर थाना। देव सरिस मधुबन उद्याना॥
ऋष्य मूक इनकर बिश्रामा। चातुर्मास बसे जहं रामा॥
बाली ज्येष्ठ राम रण मारा। यहिकहंराजतिलकप्रभुसारा॥
तारा तासु भई पटरानी। जेहिकरसुतअंगदअतिज्ञानी॥
सहस शंकु कर अरबुद एका। अरबुदसहसकिबिन्दुबिबेका॥
सहसबिन्दुगणकनगणिमाना। महापद्म तेहिकर परिमाना॥
ऐसे पद्म अठारह साजा। बिग्रह बढ़ेउ राम के काजा॥
हीरवेष अरु नयन बिशाला। कम्बु कण्ठ मोतिनकीमाला॥

दो० हस्ती साठि सहस्र बल सदा धर्म्मकी सींव।
श्वेत छत्र शिर शोभित यह राजा सुग्रीव॥
इहिबिधि सकलदिखाये सारन कपिदल यूह।
गनै न रावण कालबश अतिशय गर्व्व समूह॥

इति॥

इहां प्रात जागे रघुराई। पूंछा मत सब सचिव बुलाई॥
कहहु वेगि का करिय उपाई। जामवन्त कह पद शिरनाई॥
सुनु सर्व्वज्ञ सकल उर बासी। सर्व्व रूप सब रहित उदासी॥
मंत्रकहहु निजमति अनुसारा। दूत पठाइय बालि कुमारा॥
नीक मंत्र सबके मन माना। अंगद सन कहकृपानिधाना॥
बालितनय बुधिबलगुणधामा। लंका जाहु तात मम कामा॥
बहुत बुझाइ तुमहिं का कहऊं। परम चतुर मैं जानत अहऊं॥
काज हमार तासु हित होई। रिपुसन करेहु बतकही सोई॥
सो० प्रभु आज्ञाधरि शीश चरण बन्दि अंगदकहेउ।

सोइ गुण सागर ईश रामकृपा जापर करहिं ॥
स्वयं सिद्धि सबकाज नाथ मोहिं आदर दयउ ।
असबिचारियुवराज तनपुलकित हर्षितभयउ ॥

बन्दिचरण उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहिंशिरनाई ॥
प्रभु प्रताप उर सहज अशंका । रण बांकुरा बालिसुत बंका ॥
पुर पैठत रावण कर बेटा । खेलत रहा सोहोइगइभेटा ॥
बातहिं बात कर्ष बढ़ि आई । युगुलअतुलबलपुनितरुणाई ॥
तेहि अंगद कहं लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमिभ्रमाई ॥
निशिचर निकरदेखि भटभारी । जहंतहंचलेन सकहिंपुकारी ॥
एक एक सन मर्म न कहहीं । समुझितासुबलचुपहोइरहहीं ॥
भयउ कोलाहल नगर मझारी । आवा कपि लंका जेइं जारी ॥
अबधौं कहा करिहि करतारा । अतिसभीतसबकरहिंबिचारा ॥
बिनुपूंछे मगु देहिं बताई । जेहिबिलोकिसोइजाहिसुखाई ॥

दो० गयो सभा दरबार रिपु सुमिरि रामपद कंज ।
सिंह ठवनि इत उत चितै धीर बीर बलपुंज ॥

तुरत निशाचर एक पठावा । समाचार रावणहिं सुनावा ॥
सुनतबचन बोलेउ दशशीशा । आनहु बोलि कहांकरकीशा ॥
आयसु पाइ दूत बहु धाये । कपिकुंजरहि बोलि लै आये ॥
अंगद दीख दशानन बैसा । सहितप्राणकज्जलगिरिजैसा ॥
भुजाबिटप शिर शृङ्ग समाना । रोमावली लता तरु नाना ॥
मुख नासिका नयन अरुकाना । गिरिकन्दरा खोह अनुमाना ॥
गयउ सभा मन नेकु न मुरा । बालितनय अतिबल बांकुरा ॥
उठी सभा सब कपि कहंदेखी । रावण उर भा क्रोधबिशेखी ॥

दो० यथा मत्त गज यूथ महं पंचानन चलि जाय ।
रामप्रताप संभारि उर बैठ सभहि शिरनाय ॥

कहदशकन्ध कवन तैं बन्दर । मैं रघुबीर दूत दशकन्धर ॥
मम जनकहितोहिं रहीमिताई । तव हितकारण आयउं भाई ॥

उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती । शिव बिरंचि पूजेहुबहुभांती ॥
बर पायउ कीन्हेउ सबकाजा । जीतेहू लोकपाल सुर राजा ॥
नृप अभिमानमोहबश किम्बा । हरि आनेहुसीता जगदम्बा ॥
अब शुभकहा करहु तुम मोरा । सब अपराधक्षमहिंप्रभुतोरा ॥
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी । पुरजनसंगसहित निजनारी ॥
सादर जनकसुता करि आगे । इहिविधिचलहुसकलभयत्यागे ॥
दो० प्रणतपाल रघुवंश मणि त्राहि त्राहि अबमोहिं ।
सुनतहिं आरत बचनप्रभु अभय करहिंगे तोहिं ॥
रे कपि पोच बोलु संभारी । मूढ़न जानसि मोहिं सुरारी ॥
कहुनिज नामजनक करभाई । केहि नाते मानिये मिताई ॥
अंगद नाम बालि कर बेटा । तोसों कबहूं भइ होइ भेटा ॥
अंगद बचन सुनत सकुचाना । रहा बालि बानर मैं जाना ॥
अंगद तुही बालिकर बालक । उपजेउवंशअनलकुलघालक ॥
गर्भ न गयउ वृथा तुम जाये । निजमुख तापस दूत कहाये ॥
अबकहु कुशलबालिकहं अहई । बिहंसिबचनअंगदअसकहई ॥
दिन दश गये बालि पहंजाई । पूंछेहु कुशलसखा उरलाई ॥
राम बिरोध कुशल जस होई । सोसबतुमहिं सुनाइहि सोई ॥
सुन शठ भेद होइ मन ताके । श्रीरघुबीर हृदय नहिं जाके ॥
दो० हमकुलघालक सत्यतुम कुलपालक दशशीश ।
अन्धउ बधिरन कहहिंअस श्रवणनयनतवबीस ॥
शिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई । चाहतजासु चरणसेवकाई ॥
तासुदूत होइ हम कुल बोरा । ऐसीमति उर बिहरु न तोरा ॥
सुनि कठोर बाणी कपि केरी । कहत दशानन नयन तरेरी ॥
खल तववचनकठिनमैं सहऊं । नीतिधर्म सब जानतअहऊं ॥
कह कपि धर्म शीलता तोरी । हमहुं सुनीकृत परतियचोरी ॥
देखेउ नयन दूत रखवारी । बूड़िन मरहु धर्म्मब्रतधारी ॥
नाक कान बिन भगिनिनिहारी । क्षमा कीन्ह तुम धर्म बिचारी ॥

धर्म्म शीलता तव जग जागी । पावा दरश हमहुं बड़ भागी ॥
दो० जनि जल्पसि जड़ जन्तुकपि शठविलोकु ममबाहु ।
लोकपाल बल बिपुल शशि ग्रसनहेतु जिमिराहु ॥
पुनि नभसर ममकर निकर कर कमलनपरबास ।
शोभितभयो मराल इव शम्भु सहित कैलास ॥
तुम्हरे कटक माहिं सुनुअंगद । मोसन भिरहि कौनयोधाबद ॥
तव प्रभुनारि बिरह बल हीना । अनुजतासुदुखदुखितमलीना ॥
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । बन्धु हमार भीरु अतिसोऊ ॥
जामवन्त मंत्री अति बूढ़ा । सो किमि होइ समरआरूढ़ा ॥
शिल्प कर्म जानत नल नीला । हैकपि एक महाबल शीला ॥
आवा प्रथम नगर जेहिजारा । सुनिहंसिबोलेउबालिकुमारा ॥
सत्य बचनकह निशिचर नाहा । सांचहु कीश कीन्ह पुरदाहा ॥
रावण नगर अल्प कपि दहई । कोअस झूठ कहै कोसुनई ॥
जो अतिसुभट सराहेहु रावण । सो सुग्रीव केर लघु धावन ॥
चलैबहुत सो बीर न होई । पठवा खबरि लेन हम सोई ॥
दो० अब जाना पुर दहेउ कपि बिनु प्रभु आयसुपाइ ।
गयउ न फिरनिजनाथपहं तेहि भयरहेउ लुकाइ ॥
सत्यकहसि दशकण्ठ तैं मोहिंन सुनि कछु कोह ।
कोउन हमरे कटक अस तुमसनलरत जो सोह ॥
प्रीति बिरोध समानसन करिय नीति अस आहि ।
जो मृगपति बध मेडुकहि भलोकहै को ताहि ॥
यद्यपि लघुता रामकहं तोहिं बधे बड़ दोष ।
तदपि कठिन दशकण्ठसुन क्षत्रि जाति कर रोष ॥
हंसिबोलेउ दश मौलि तब कपिकर बड़गुण एक ।
जो प्रतिपालै तासु हित करै उपाय अनेक ॥
धन्यकीश जोनिज प्रभु काजा । जहंतहंनाचहिंपरिहरिलाजा ॥
नाचि कूदि करि लोगरिझाई । पतिहितकरतकर्म निपुणाई ॥

अंगद स्वामि भक्त तव जाती । प्रभुगुणकसनकहसिइहिभांती ॥
मैं गुणगाहक परम सुजाना । तवकटुरचन करौंनहिं काना ॥
कहकपि तवगुण गाहक ताई । सत्य पवन सुतमोहिं सुनाई ॥
बन बिध्वंसिसुतबधि पुरजारा । तदपि नतेइंकृतकछुअपकारा ॥
सोइबिचारितव प्रकृत सुहाई । दशदन्धर मैं कीन्ह ढिठाई ॥
देखेउं आइ जोकछुकपि भाषा । तुम्हरे लाज न रोपन माषा ॥

दो० बक्र उक्ति धनु बचन शर हृदयदह्यो रिपुकीश ।
प्रतिउत्तर सनसिन्ह मनों काढ़तभट दशशीश ॥

जो असमतिपितु खायहुकीशा । कहिअसबचनहंसादशशीशा ॥
पितहि खाइ खातेउं अब तोहीं । अबहीं समुझिपरा कछुमोहीं ॥
बालि बिमलयश भाजन जानी । हतौंनतोहिंअधमअभिमानी ॥
कहु रावण रावण जग केते । मैं निज श्रवण सुने सुनुतेते ॥
बलि जीतनएकगयउ पताला । राखा बांधि शिशुनहयशाला ॥
खेलहिं बालक मारहिं जाई । दयालागि बलिदीन्ह छुड़ाई ॥
एक बहोरि सहस भुज देखा । धाइ धरा जनु जन्तु विशेखा ॥
कौतुक लागि भवन लै आवा । सो पुलस्त्यमुनि जाइछुड़ावा ॥

दो० एककहत मोहिंसकुचअति रहा बालिकी कांख ।
तिनमहं रावण कवन तैं सत्यकहहुतजिमाख ॥

सुन शठसोइरावण बलशीला । हरिगिरिजानुजासुभुजलीला ॥
जानु उमा पति जासु सुराई । पूजे जेहि शिर सुमन चढ़ाई ॥
शिरसरोजनिज करन्ह उतारी । पूजे अमित बार त्रिपुरारी ॥
भुजबिक्रम जानहिं दिगपाला । शठ अजहूं जिनके उरशाला ॥
जानहिं दिग्गज उरकठिनाई । जब जबभिरेउं जाइ बरिआई ॥
जिनके दशन कराल न फूटे । उर लागत मूळक इवटूटे ॥
जासु चलतडोलतइमि धरणी । चढ़तमत्तगजजिमिलघुतरणी ॥
सोइरावण जगविदित प्रतापी । सुने न श्रवणअलीक अलापी ॥

दो० तेहिरावणकहंलघुकहसिनरकरकरसिबखान ।

रेकपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ज्ञान ॥
सुनि अंगद सकोप कहबानी । बोल सँभारि अधमअभिमानी ॥
सहसबाहु भुज गहन अपारा । दहनअनलसम जासुकुठारा ॥
जासु परशु सागर खर धारा । बूड़े नृप अगणित बहुबारा ॥
तासुगर्ब जेहि देखत भागा । सो नर किमिदशकंठ अभागा ॥
राम मनुज कसरे शठ बंगा । धन्वी काम नदी पुनि गंगा ॥
पशु सुरधेनु कल्पतरु रूखा । अन्नदान पुनि रस पीयूखा ॥
बैनतेय खग अहि सहसानन । चिन्तामणि की उपलदशानन ॥
सुन मतिमंद लोक बैकुण्ठा । लाभकिरघुपतिभक्तिअकुण्ठा ॥
दो० सेनसहित तव मानमथि बन उजारि पुरजारि ।
कसरे शठहनुमान कपि गयउजो तव सुतमारि ॥
सुन रावण परिहरि चतुराई । भजसि न कृपासिन्धुरघुराई ॥
जो खल भयसिरामकर द्रोही । ब्रह्म रुद्रसक राखि न तोही ॥
मूढ़मृषा जनि मारसि गाला । राम बैर होइहि अस हाला ॥
तव शिर निकर कपिनके आगे । परिहैं धरणि राम शरलागे ॥
ते तव शिर कन्दुक इव नाना । खेलहिं भालु कीश चौगाना ॥
जबहिंसमर कोपहिंरघुनायक । छुटिहहिंअतिकरालबहुशायक ॥
तबकिचलिहिअसगालतुम्हारा । असबिचारिभजु रामउदारा ॥
सुनत वचन रावण पर जरा । बरत अनल महं जनुघृतपरा ॥
दो० कुम्भकर्ण सम बन्धु मम सुतप्रसिद्ध शक्रारि ।
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं जितेउंचराचरझारि ॥
शठ शाखा मृग जोरि सहाई । बांधा सिन्धु इहै प्रभुताई ॥
लांघहिं खग अनेक बारीशा ।शूरन होहिं सुनहु जड़कीशा ॥
मम भुज सागर बलजल पूरा । जहं बूड़े सुर नर बर शूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा । को असबीर जो पावहिपारा ॥
दिगपालन मैं नीर भरावा । भूपसुयशखल मोहिं सुनावा ॥
जो पै समर सुभट तव नाथा । पुनिपुनिकहसिजासुगुणगाथा ॥

तौ बसीठि पठवा केहि काजा । रिपुसनप्रीतिकरतनहिंलाजा ॥
हरि गिरिमथननिरखिममबाहू । पुनिशठकपिनिजस्वामिसराहू॥

दो० शूर कवन रावण सरिस निजकर काटे शीश ।
हुतेउं अनल महं बारबाहु हर्षित साखिगिरीश ॥

जरत बिलोकेउं जबहिं कपाला । बिधिके लिखेअंकनिजभाला ॥
नरके कर आपन बध बांची । हंसेउजानिबिधि गिराअसांची ॥
सो मनसमुझित्रास नहिं मोरे । लिखा बिरंचि जरठमतिभोरे ॥
आन बीर को शठ मम आगे । पुनिपुनिकहसिलाजपरित्यागे॥
कह अंगद सलज्ज जग माहीं । रावण तोहिंसमानकोउनाहीं ॥
लाजवन्त तव सहज सुभाऊ । निजगुणनिजमुखकहहिनकाऊ॥
शिर अरु शैल कथा चितरहो । ताते बार बीस तैं कही ॥
सो भुजबल राखेउ उरघाली । जितेउ नसहसबाहुबलबाली ॥
सुनु मतिमन्द देह अब पूरा । काटे शीश न होइय शूरा ॥
बाजीगरकहं कहियत बीरा । काटै निज करसकल शरीरा ॥

दो० जरहिं पतंग बिमोहवश भारबहहिं खर वृन्द ।
ते नहिं शूर कहावहीं समुझि देखु मति मन्द ॥

अब जनि बतबढ़ाव खलकरही । सुनुममबचन मान परिहरही ॥
दशमुख मैंन बसीठी आयउ । अस बिचारि रघुबीरपठायउ ॥
बार बार इमि कहेउ कृपाला । नहिं गजारियशबधे शृगाला ॥
मनमहं समुझिबचन प्रभुकेरे । सहेउं कठोर बचन शठ तेरे ॥
नाहित करि मुख भंजन तोरा । लै जातेउं सीतहि बरजोरा ॥
जानेउं तव बल अधम सुरारी । सूने हरि आनी पर नारी ॥
तैं निशिचर पति गर्ब बहूता । मैं रघुपति सेवक कर दूता ॥
जो न राम अपमानहिं डरऊं । तव देखत अस कौतुककरऊं ॥

दो० तोहिं पटकि महि सेन हति चौपट करि तवगाउं ।
मन्दोदरी समेत शठ जनक सुतहि लैजाउं ॥

जो अस करउं न तदपि बड़ाई । मुये बधे नहिं कछु मनुसाई ॥

कौलकाम बशकृपण बिमूढ़ा । अति दरिद्र अयशीअति बूढ़ा ॥
सदारोग बश सन्तत क्रोधी । रामबिमुख श्रुति संतबिरोधी ॥
तन पोखक निन्दक अघखानी । अनजीवत सम चौदह प्रानी ॥
अस बिचारिखल बधौं न तोहीं । अबजनिरिसउपजावसिमोहीं ॥
पुनि सकोप कहनिशिचरनाथा । अधर दशन गहिमींजतहाथा ॥
रे कपि पोच मरण अब चहसी । छोटे बदन बात बड़ि कहसी ॥
कटु जल्पसि जड़कपि बलजाके । बुधि बल तेज प्रतापन ताके ॥

दो० अगुण अमान बिचारितेहि दीन्ह पिताबनबास ।
सोदुखअरुयुवतीबिरह पुनिनिशिदिन ममत्रास ॥
जिनके बलको गर्ब तोहिं ऐसे मनुज अनेक ।
खाहिंनिशाचर दिवसनिशिमूढ़समुझ तजिटेक ॥

जबतेहि कीन्ह रामकी निन्दा । क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा ॥
हरि हरनिंदा सुनहिंजे काना । होय पाप गोघात समाना ॥
कट कटाइ कपि कुंजर भारी । दोउभुजदण्डतमकिमहिमारी ॥
डोलत धरणि सभासद खसे । चले भागि भय मारुतग्रसे ॥
गिरत दशानन उठा संभारी । भूतल परेउ मुकुट षटचारी ॥
कछु निजकरलै शिरन संभारे । कछु अंगद प्रभु पास पंवारे ॥
आवत मुकुट देखि कपि भागे । दिनहीं लूक परनबिधि लागे ॥
कै रावण करि कोप चलाये । कुलिशचारि आवत अतिधाये ॥
कह प्रभुहंसिजनि हृदयडराहू । लूक न अशनिकेतु नहिंराहू ॥
ये किरीट दशकन्धर केरे । आवत बालि तनय के प्रेरे ॥

दो० कूदि गहे कर पवन सुत आनि धरे प्रभु पास ।
कौतुक देखहिंभालु कपिदिनकरसरिसप्रकास ॥

उहां कहत दशकन्ध रिसाई । धरि मारहुकपि भागिनजाई ॥
इहिबिधि बेगिसुभटसबधावहु । खाहुभालुकपि जहंतहंपावहु ॥
महि अकीश करिफेरि दुहाई । जियतधरहुतपसी दोउभाई ॥
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा । गालबजावत तोहिं न लाजा ॥

सरुगलकाटिनिलजकुलघाती । बलबिलोकिबिहरतनहिंछाती ॥
रेतिय चोर कुमारग गामी । खलमलराशिमन्दमतिकामी ॥
सन्निपात जल्पसि दुर्बादा । भयसिकालबश शठमनुजादा ॥
याको फल पाहुगे आगे । बानर भालु चपेटन लागे ॥
राम मनुज बोलत अस बानी । गिरहिनतवरसनाअभिमानी ॥
गिरि है रसना संशय नाहीं । शिरन समेत समर महिमाहीं ॥

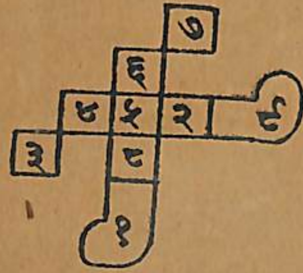
सो० सो नर क्यों दशकन्ध बालि बधेउ जेहि एकशर ।
बीसहु लोचन अन्ध धृक तव जन्म कुजाति जड़ ॥
तव शोणित की प्यास तृषितराम शायक निकर ।
तजेउंतोहिं तेहिआश कटुजल्पसि निशिचरअधम ॥

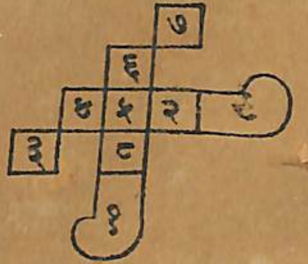
मैं तव दशन तोरिबे लायक । आयसु पैन दीन्ह रघुनायक ॥
असरिसि होत दशौ मुख तोरौं । लंका गहि समुद्र महं बोरौं ॥
गूलर फल समान तव लंका । बसहिंमध्यजनुजन्तुअशंका ॥
मैं बानर फल खात न बारा । आयसुदीन्ह न राम उदारा ॥
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई । मूढ़सिखेसिकहं अधिकझुठाई ॥
बालि कबहुं असगालनमारा । मिलितपसिनतैंभयसिलबारा ॥
सांचेहु मैं लवार भुज बीहा । जोन उपारौं तव दश जीहा ॥
राम प्रतापसुमिरिकपि कोपा । सभामांझ प्रणकरि पदरोपा ॥
जो ममचरणसकहि शठटारी । फिरहिं राम सीतामैं हारी ॥
सुनहु सुभटसबकहदशशीशा । पदगहिधरणि पछारहुकीशा ॥
इन्द्रजीत आदिक बलवाना । हरषि उठे जहं तहं भटनाना ॥
झपटहिं करिबलबिपुल उपाई । पद न टरै बैठहिं शिर नाई ॥
पुनिउठि झपटहिंसुर आराती । टरै न कीशचरण इहिभांती ॥
पुरुष कुयोगी जिमि उर गारी । मोहबिटपनहिंसकहिं उपारी ॥

दो० भूमि न छांड़े कपि चरण देखत रिपुमद भाग ।
कोटिविघ्नंजिमिसन्तकहं तदपिनीतिनहिं त्याग ॥

कपिबलदेखि सकल हियहारे । उठा आप कपि के परचारे ॥

॥ बीसा यंत्र ॥





शेषशायी



गणेशजी



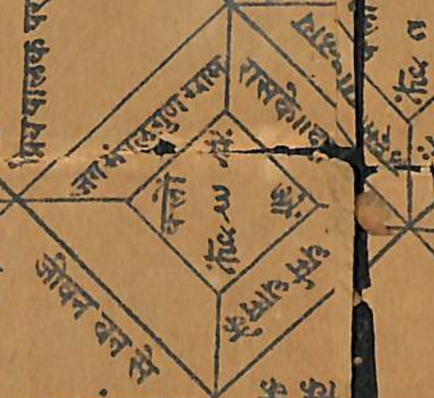
















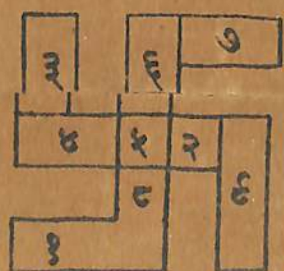
शिव शक्ति



रामपंचायतन











प्रकाशक - श्री गिरजानन्द ब्रह्मचारी - किशोई गंगा किनारा

पोष्ट - पट्टी सादात ज़िला फ़तेहपुर (यू. पी.)

रामनारायण प्रेस मथुरा में बाबू राधारमण भार्गवद्वारा मुद्रित।

गहत चरण कह बालिकुमारा । मम पद गहे न तोर उबारा ॥
गहसि न रामचरणशठजाई । सुनत फिरा मनअतिसकुचाई ॥
भये तेज हत श्री सब गई । मध्यदिवस जिमि शशिसोहई ॥
सिंहासन बैठा शिरनाई । मानहु सम्पतिसकलगंवाई ॥
जगदाधार प्राणपति रामा । तासुबिमुखकिमिलहविश्रामा॥
उमा रामकर भृकुटि बिलासा । होइ बिश्व पुनि पावै नाशा ॥
तृणतेकुलिशकुलिशतृणकरहीं । तासुदूत पदकहुकिमि टरहीं ॥
पुनिकपिकहीनीति बिधिनाना । मानतनाहिंकाल नियराना ॥
रिपुमदमथ प्रभु सुयश सुनाये । असकहिचलेबालिनृपजाये ॥
अबहीं मुखका करौं बड़ाई । हतिहौं तोहिं खेलाइखेलाई ॥
प्रथमहिं तासुतनयकपि मारा । सोसुनि रावण भयोदुखारा ॥
यातुधान अंगद बल देखी । भयव्याकुल अति हृदयबिशेखी ॥
दो० रिपुबल धर्षि हर्षि हिय बालि तनय बल पुंज ।
सजलनयन तन पुलकि मन गहेरामपदकंज ॥
सांझजानिदशकंठ तब भवनगयो बिलखाइ ।
मन्दोदरी अनेकबिधि बहुरि कहा समुझाइ ॥
कन्तसमुझिमनतजहुकुमतिही । सोहनसमर तुमहिंरघुपतिही ॥
राम अनुज धनु रेख खंचाई । सोनहिंलांघेहु अस मनुसाई ॥
पिय तेहिते जीतव संग्रामा । जाके दूतन के अस कामा ॥
कौतुक सिंधु लांघि तव लंका । आयउ कपि केहरी अशंका ॥
रखवारे हति बिपिन उजारा । देखततुमहिंअक्षयजिन्हमारा॥
जारि नगर जेइं कीन्हेसिछारा । कहां रहाबल गर्ब्बतुम्हारा ॥
अबपति मृषा गालजनिमारहु । मोरकहा कछुहृदय बिचारहु ॥
पतिरघुपतिहिमनुजजनिजानहु । अगजगनाथअतुलबलमानहु॥
बाण प्रताप जान मारीचा । तासुकहा नहिं मानेहु नीचा ॥
जनकसभाअगणितमहिपाला । रहेउ तहांतुम गर्ब्ब बिशाला ॥
भंजि धनुष जानकी बिवाही । तब संग्राम जितेहुनहिंताही ॥

सुरपति सुत जाना बल तोरा । राखा जियत आंखिइकफोरा ॥
शूर्पणखाकी गति तुम देखी । तदपिहृदयनहिंलाजबिशेखी ॥
दो० बधि बिराध खर दूषणहि लीला हतेउ कबन्ध ।
बालि एक शर मारेउ तेहि नरकह दशकन्ध ॥
जेहि जल नाथ बंधायो हेला । उतरेउकपिदल सहितसुबेला ॥
कारुणीक दिनकर कुल केतू । दूत पठायउ तव हित हेतू ॥
सभा मांझ जेइं तव बल मथा । करि बरूथ महं मृगपतियथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जाके । रण बांकुरे बीर अति बांके ॥
तेहिकहंपियपुनिपुनिनरकहहू । मृषा मान ममता मद गहहू ॥
अहह कन्त कत राम बिरोधा । काल बिवश मनहोइन बोधा ॥
कालदण्ड गहि काहु न मारा । हरै धर्म्म बल बुद्धि बिचारा ॥
निकट कालजेहि आवत साईं । तेहिभ्रमहोइ तुम्हारिहि नाईं ॥
दो० दुइसुतमारेउ दहेउपुर अजहुं पीय सिय देहु ।
कृपासिंधु रघुबीर भजि नाथ बिमल यश लेहु ॥
नारिबचनसुनिबिशिखसमाना । सभागये उठि होत बिहाना ॥
बैठा जाइ सिंहासन फूली । अति अभिमानत्राससबभूली ॥
उहां राम अंगदहि बुलावा । आइ चरणपंकज शिरनावा ॥
अति आदर समीप बैठारी । बोले बिहंसि कृपाल खरारी ॥
बालितनय अति कौतुक मोहीं । तात सत्य कहु पूछौंहु तोहीं ॥
रावण यातुधान कुल टीका । भुजबलअतुलजासुजगलीका ॥
तासु मुकुट तुम चारि चलाये । कहहुतात कवनी बिधि पाये ॥
कहा बालि सुत सुनहु खरारी । मुकुट न होइं भूप गुणचारी ॥
साम दाम अरु दण्ड बिभेदा । नृप उरबसहिंनाथ कह बेदा ॥
नीति धर्म्म के चरण सुहाये । अस जियजानि नाथपहंआये ॥
दो० धर्म्महीनप्रभुपदबिमुख कालबिवश दशशीश ।
आये गुण तजि रावणहिं सुनहु कोशलाधीश ॥
परम चतुरता श्रवण सुनि बिहंसे राम उदार ।

समाचार तब सबकहे गढ़ के बालि कुमार ॥
रिपुके समाचार जब पाये । रामसचिव तब निकटबुलाये ॥
लंका बंका चारि दुआरा । केहिबिधिलागियकरहु बिचारा॥
तब कपीश ऋक्षेश बिभीषण । सुमिरिहृदयदिनकरकुलभूषण॥
करि बिचार तिन मंत्र दृढ़ावा । चारि अनीकपि कटकबनावा ॥
यथायोग्य सेनापति कीन्हे । यूथपसकलबोलितिन्हलीन्हे ॥
प्रभु प्रताप सबकहि समुझाये । सिंहनादकरि सब कपिधाये ॥
हर्षित राम चरण शिरनावैं । गहिगिरिशिखरभालुकपिधावैं ॥
गर्जहि तर्जहिं भालु कपीशा । जय रघुबीर कोशलाधीशा ॥
जारत परम दुर्ग गढ़ लंका । प्रभु प्रताप कपिचलेअशंका ॥
घटाटोप करि चहुं दिशि घेरी । मुखहिं निशान बजावहिंभेरी॥
दो० जयति राम भ्राता सहित जय कपीश सुग्रीव ।
गर्जे केहरि नादकपि भालु महा बल सीव ॥
लंका भयउ कोलाहल भारी । सुनेउदशाननअतिहिहंकारी ॥
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई । बिहंसि निशाचर सेन बुलाई ॥
आये कीश काल के प्रेरे । क्षुधावन्त रजनीचर मेरे ॥
असकहि अट्टहास शठकीन्हा । गृह बैठेअहार बिधिदीन्हा ॥
सुभटसकल चारिहुदिशि जाहू । धरिधरि भालुकीश सबखाहू ॥
उमा रावणहिंअस अभिमाना । जिमिटिटीनगण सूत उताना ॥
चले निशाचर आयसु मांगी । गहिकर भिंडिपाल बरसांगी ॥
तोमर मुद्गर परिघ प्रचंडा । शूलकृपाण परशुगिरि खंडा ॥
जिमिअरुणोपलनिकर निहारी । धाये खग शठ मांस अहारी ॥
चोंचभंग दुख तिनहिं न सूझा । तिमिधाये मनुजादि अबूझा ॥
दो० नानायुध शर चाप धरि यातुधान बलबीर ।
कोट कंगूरन चढ़िगये कोटि कोटि रणधीर ॥
कोट कंगूरन सोहहिं कैसे । मेरु शृङ्ग पर जनु घन जैसे ॥
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ । सुनि सुनिसुभटन केमनचाऊ॥

बाजहिं भेरि नफीरि अपारा । सुनिकादरउर होहिं दरारा ॥
देखि न जायं कपिन के ठट्टा । अतिबिशाल तनुभालुसुभट्टा ॥
धावहिं गनहिं न औघटघाटा । पर्वत फोरि करहिंगहि बाटा ॥
कटकटाइ कोटिन भट गर्जहिं । दशननओठकाटि अतितर्जहिं ॥
उत रावण इत रामदोहाई । जयति जयति कहिपरीलराई ॥
निशिचरशिखर समूहढहावहिं । कूदिधरहिंकपिफेरिचलावहिं ॥
छं० धरिकुधर खण्डप्रचण्ड मर्कट भालु गढ़पर डारहीं ।
झपटैंचरणगहिपटकिमहिभजिचलतबहुरिप्रचारहीं ॥
अतितरलतरुणप्रतापतर्जहिं तमकिगढ़परचढ़िगये ।
कपिभालुचढ़िमन्दिरन जहंतहं रामयशगावतभये ॥
दो० एक एक गहि रजनिचर पुनि कपि चले पराइ ।
ऊपर आपुन तर असुर गिरहिं धरणिपर आइ ॥
राम प्रताप प्रबल कपि यूथा । मर्दहिं निशिचरनिकरबरूथा ॥
चढ़े दुर्ग पुनि जहं तहं बानर । जय रघुबीर प्रताप दिबाकर ॥
चले तमीचर निकर पराई । प्रबलपवनजिमि घनसमुदाई ॥
हाहाकार भयो पुर भारी । रोवहिं आरत बालक नारी ॥
सब मिलिदेहिं रावणहिं गारी । राज्यकरतजेहिं मृत्युहंकारी ॥
निजदलविचलसुना जबकाना । फिरे सुभट लंकेश रिसाना ॥
जो रण बिमुख फिरा मैं जाना । तेहि मारिहौं कराल कृपाना ॥
सर्व्वस खाइ भोग करि नाना । समरभूमि भा दुर्लभ प्राना ॥
उग्र बचन सुनि सकल डराने । फिरे क्रोधकरि सुभटलजाने ॥
सम्मुख मरण बीर की शोभा । तब तिनतजा प्राणकरलोभा ॥
दो० बहु आयुध धरि सुभटसब भिरहिंप्रचारिप्रचारि ।
कीन्हे व्याकुलभालु कपिपरिघ प्रचण्डनि मारि ॥
भय आतुर कपि भागन लागे । यद्यपि उमा जोति हैं आगे ॥
कोउकह कहं अंगद हनुमन्ता । कहंनलनीलद्विविदवलवन्ता ॥
निज दलविचल सुना हनुमाना । पश्चिमद्वार रहा बलवाना ॥

मेघनाद तहं करै लराई । टूट न द्वार परम कठिनाई ॥
पवनतनय मन भा अतिक्रोधा । गर्जेउ प्रलयकाल समयोधा ॥
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा । गहिगिरि मेघनादपर धावा ॥
भंजेउ रथ सारथी निपाता । तासुहृदय महं मारेउलाता ॥
दूसर सूत विकल तेहि जाना । स्यन्दनघालि तुरतघरआना ॥

दो० अंगद सुनेउ कि पवनसुत गढ़पर गयउअकेल ।
समर बांकुरा बालिसुत तर्किचलेउ करिखेल ॥

युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर । रामप्रताप सुमिरिउरअन्तर ॥
रावण भवन चढ़े दोउ धाई । करहिं कोशलाधीश दुहाई ॥
कलशसहितसबभवनढहावहिं । देखिनिशाचरअतिभयपावहिं ॥
नारिवृन्द कर पीटहिं छाती । अब दोउकपि आये उतपाती ॥
कपिलीलाकरि सबहिंडरावहिं । रामचन्द्रकर सुयश सुनावहिं ॥
पुनि करगहि कंचनके खम्भा । करन लगे उतपात अरम्भा ॥
कूदि परे रिपु कटक मंझारी । लागे मर्दन भुजबल भारी ॥
काहू लात चपेटन केहू । भजेहु न रामहिंसो फललेहू ॥

दो० एक एक सनमर्दि करि तोरि चलावहिं मुंड ।
रावण आगे परहिंते जनु फूटहिं दधिकुंड ॥

महा महा मुखिया जे पावहिं । तेपदगहिप्रभु पासचलावहिं ॥
कहहिं बिभीषण तिनके नामा । देहिंराम ताकहंनिज धामा ॥
खलमनुजाद जो आमिषभोगी । पावहिंगति जो याचतयोगी ॥
उमा राम मृदुचितकरुणाकर । बैरभावमोहिंसुमिरतनिशिचर ॥
देहिं परमगति असजियजानी । कोकृपालु असअहै भवानी ॥
जे असप्रभुनभ जहिंभ्रमत्यागी । तेमतिमन्द सोपरम अभागी ॥
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा । कीन्हदुर्गअस कह अवधेशा ॥
लंका महं कपि सोहहिं कैसे । मथहिं सिन्धु दुइमन्दर जैसे ॥

दो० भुज बल रिपुदलदलिमलेउदेखि दिवसकरअन्त ।
कूदे युगल प्रयास बिनु आये जहं भगवन्त ॥

प्रभुपद कमल शीश तिन नाये । देखिसुभट रघुपतिमनभाये ॥
राम कृपा करि युगल निहारे । भये बिगतश्रम परमसुखारे ॥
गये जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
यातुधान प्रदोष बल पाई । धाये करि दशशीश दुहाई ॥
निशिचर अनी देखि कपिफिरे । कटकटाइ जहं तहं भट भिरे ॥
दोउदल भिरहिं प्रचारिप्रचारी । लरहिंसुभटनहिंमानहिंहारी ॥
बीर तमीचर सब अति कारे । नाना बरण बली मुखभारे ॥
सबलयुगलदलसमअतियोधा । बिबिधप्रकारलरहिंकरिक्रोधा ॥
प्राबिट शरद पयोद घनेरे । लरत मनहु मारुत के प्रेरे ॥
अवनि अकम्पन अरुअतिकाया । बिरचत सेनकरीतिन माया ॥
भयउनिमिषमहं अतिअंधियारा । काहु न सूझे अपन परारा ॥
मारु खाहु सब करहिं पुकारा । वृष्टि होइ रुधिरोपल छारा ॥
दो० देखि निबिड़तमदशहुदिशि कपिदलभयउखभार ।
एकहि एक न देखहीं जहं तहं करहिं पुकार ॥
सकल मर्म्म रघुनायक जाना । लिये बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाये । सुनत कोप कपिकुंजरधाये ॥
पुनि कृपालु हंसिचाप चढ़ावा । पावकशायक सपदिचलावा ॥
भयउ प्रकाश कतहुं तमनाहीं । ज्ञान उदयजिमिसंशयजाहीं ॥
भालु बली मुख पाइ प्रकाशा । धाये कोपि बिगतश्रमत्राशा ॥
हनूमान अंगद रण गाजे । हांक सुनत रजनीचर भाजे ॥
भागतभटपटकहिं गहि धरणी । करहिंभालुकपिअद्भुतकरणी ॥
गहिपद डारहिं सागर माहीं । मकरउरगझखधरिधरिखाहीं ॥
दो० कछु घायल कछु रणपरे कछु गढ़चले पराइ ।
गर्ज्जंउमर्कट भालुभट रिपुदल बलबिचलाइ ॥
निशा जानिकपि चारिउ अनी । आये सब जहं कोशलधनी ॥
राम कृपाकरि चितवा जबहीं । भये बिगत श्रम बानरतबहीं ॥
उहां दशानन सचिव हंकारे । सबसन कहेसि सुभटजेमारे ॥

आधा कटक कपिन्ह संहारा। कहहु वेगिकाकरियबिचारा ॥
मालवन्त इकजरठ निशाचर। रावण मात पिता मंत्रीबर ॥
बोलाबचन नीति अति पावन। तातसुनहु कछुमोरसिखावन ॥
जबते तुम सीता हरिआनी। अशकुनहोहिं न जातबखानी ॥
वेद पुराण जासु यश गावा। तासु बिमुख सुखकाहुनपावा ॥
दो० हिरण्याक्ष भ्राता सहित मधुकैटभ बलवान।
जेइंमारेउ सोइ अवतरेउ कृपासिन्धु भगवान ॥
काल रूप खल बन दहन गुणागार घनबोध।
जेहिसेवहिंशिवकमलभवतिहिसनकौनविरोध ॥
परि हरि बैर देहु बैदेही। भजहु कृपानिधि परमसनेही ॥
ताके बचन बाण सम लागे। करियामुख करिजाहुअभागे ॥
बूढ़भयसि नतु मरतेउं तोहीं। अब जनिबदनदेखावसिमोहीं ॥
तेइ अपनेमन अस अनुमाना। बध्यो चहतयहि कृपानिधाना ॥
सो उठिगयउ कहत दुर्बादा। तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा। करिहौं बहुत कहतहौं थोरा ॥
सुनि सुत बचन भरोसाआवा। प्रीति समेत निकट बैठावा ॥
करत बिचार भयउभिनुसारा। लगेभालु कपि चारिहुद्वारा ॥
कोपिकपिन दुर्गम गढ़घेरा। नगर कोलाहलभयउघनेरा ॥
बिबिधअस्त्र गहिनिशिचरधाये। गढ़ते पर्व्वत शिखर ढहाये ॥
छं० ढाहेमहीधरशिखरकोटिन्ह बिबिध बिधिगोलाचले।
घहरात जिमिपबिपात गर्जत प्रलयके जनुबादले ॥
मर्कटबिकटभटजुटत कटत न लरततन जर्जरभये।
गहिशैलतेगढ़परचलावहिं जहंसोतहंनिशिचरहये ॥
दो० मेघनादसुनि श्रवण अस गढ़ पुनि छेंका आइ।
उतरि दुर्गते बीरबर सनमुख चला बजाइ ॥
कहं कोशला धीश दोउ भ्राता। धन्वीसकललोकबिख्याता ॥
कहं नल नील द्विबिद सुग्रीवा। कहं हनुमत अंगदबलसींवा ॥

कहां बि भीषण भ्राता द्रोही। आजु शठहिं हठिमारउं ओही॥
असकहि कठिन बाण संधाने। अतिशयकोपिश्रवणलगिताने॥
शर समूह सो छांड़न लागा। जनु सपक्ष धावैं बहु नागा॥
जहंतहं परतदेखिअहिबानर। सन्मुखहोइनसकततेहिअवसर॥
भागे भयव्याकुल कपिऋच्छा। बिसरी सबहि युद्धकीइच्छा॥
सो कपिभालु न रणमें देखा। कीन्हेसिजेहिनप्राण अवशेषा॥

दो० मारेसि दश दश बिशिख उर परे भूमि सबबीर।
सिंहनाद करि गर्ज तब मेघ नाद रणधीर॥

देखि पवनसुत कटक बिहाला। क्रोधवन्त धावा जनुकाला॥
महा महीधर तमकि उपारा। अति रिस मेघनाद परडारा॥
आवत देखि गयउ नभ सोई। रथ सारथी तुरग सबखोई॥
बार बार प्रचारि हनुमाना। निकटन आव मरमसोजाना॥
राम समीप गयो घननादा। नाना भांति कहत दुर्बादा॥
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे। कौतुकही प्रभु काटि निवारे॥
देखि प्रभाव मूढ़ खिसियाना। करैलाग माया बिधि नाना॥
जिमि कोउकरै गरुड़सनखेला। डरपावहिंअहिस्वल्पसपेला॥

दो० जासु प्रबल मायाबिबश शिव बिरंचि बड़छोट।
ताहिदेखावै रजनिचर निजमाया मति खोट॥

नभ चढ़िबरषै बिपुल अंगारा। महितै प्रकट होइ जलधारा॥
नाना भांति पिशाच पिशाची। मारु काटुधुनिबोलहिंनाची॥
कीन्हेसि वृष्टिरुधिरकच हाड़ा। बर्षै कबहुं उपल बहु छांड़ा॥
बर्षि धूरि कीन्ह्यसि अंधियारा। सूझ न आपन हाथ पसारा॥
अकुलाने कपि माया देखे। सबकर मरण बनाइहि लेखे॥
कौतुक देखि राम मुसुकाने। भये सभीतसकल कपिजाने॥
एकहि बाण काटिसबमाया। जिमिदिनकरहरतिमिरनिकाया॥
कृपादृष्टिकपि भालु बिलोके। भये प्रबलरण रहहिं न रोके॥

दो० आयसु मांगो राम पहं अंगदादि कपि साथ॥

लक्ष्मणचले सकोप तब बाण शरासन हाथ ।
जलजनयनउरबाहु बिशाला । हिमगिरिबरणकछुकइकलाला॥
उहां दशानन सुभट पठाये । नाना अस्त्र शस्त्र गहि धाये ॥
भूधर बिटपायुध धरि भारी । धाये कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरी सन जोरी । इतउतजय इच्छा नहिंथोरी ॥
मुठिकनलातनदांतनकाटहिं । कपिगिरिशिलामारिपुनिडाटहिं॥
मारु मारु धरु धरु धरु मारू । शीशतोरि गहिभुजाउपारू ॥
अस धुनि पूरि रही नवखण्डा । धावहिं जहंतहंरुण्ड प्रचंडा ॥
देखहिं कौतुक नभ सुर वृन्दा । कबहुंकबिस्मय कबहुं अनंदा ॥

दो० जमेउ गाढ़ भरि भरि रुधिर ऊपरधूरि उड़ाइ ।
जिमि अंगारन राशि पर मृतकछार रहि छाइ ॥

घायल बीर बिराजहिं कैसे । कुसुमित किंशुकके तरु जैसे ॥
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा । भिरहिंपरस्परकरिअतिक्रोधा॥
एकहि एक सकैं नहिंजीती । निशिचर छलबलकरैअनीती ॥
क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता । भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता ॥
नाना बिधि प्रहार करि शेषा । राक्षस भयउ प्राण अवशेषा ॥
रावणसुत निज मन अनुमाना । संकट भये हरिहि ममप्राना ॥
बीर घातिनी छांड़ेसि सांगी । तेजपुंज लक्ष्मण उर लागी ॥
मूर्च्छा भई शक्ति के लागे । तबचलिगयउनिकटभयत्यागे॥

दो० मेघनाद सम कोटि शत योधा रहे उठाय ।
जगदाधार अनन्त सो उठहिंनचलाखिसाय ॥

सुनु गिरिजा क्रोधा नलजासू । जारै भुवन चारि दश आसू ॥
सक संग्राम जीतिको ताही । सेवहिं सुरनर अगजगजाही ॥
यहकौतुक जानहिं जन सोई । जेहिपर कृपा रामकी होई ॥
सन्ध्या भई फिरीं दोउ ऐनी । लगे संभारन निजनिज सैनी ॥
व्यापक ब्रह्मअजितभुवनेश्वर । लक्ष्मणकहं पूछा करुणाकर ॥
तौ लगि लै आये हनुमाना । अनुजदेखिप्रभुअतिदुखमाना ॥

जामवन्त कह वैद्य सुषेना । लंकारह पठइय कोउ लेना ॥
धरि लघु रूप गये हनुमन्ता । आनेउ भवन समेत तुरन्ता ॥
दो० रघुपति चरण सरोजशिर नायउ आइ सुषेन ।
कहानाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन ॥
राम चरण सर सिज उर राखी । चलेउप्रभंजनसुतबलभाखी ॥
उहां दूत इक मरम जनावा । रावण कालनेमि गृह आवा ॥
दशमुख कहा मरम तेइं सुना । पुनिपुनिकालनेमि शिर धुना ॥
देखत तुमहिं नगर जेहिंजारा । तासु पन्थ को रोकनि हारा ॥
भजिरघुपतिहिकरहुहितअपना । तजो नाथअब मृषा कल्पना ॥
नीलकंज तन सुन्दर श्यामा । हृदय राखु लोचनअभिरामा ॥
अहंकार ममता मद त्यागहु । महामोहनिशिसोवत जागहु ॥
काल ब्याल कर भक्षक जोई । सपनेहु समर कि जीतैंकोई ॥
दो० सुनि दश कंध रिसान तब तेइं मनकीन्ह बिचार ।
राम दूतकर मरणभल यहखलनत मोहिं मार ॥
असकहि चला रची मग माया । सर मंदिर बर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा शुभ आश्रम । मुनिहिंबूझिजलपियोजायश्रम ॥
राक्षस कपट भेष तहं सोहा । मायापति दूतहि चहमोहा ॥
तुरत पवन सुत नायउ माथा । लागा कहन रामगुणगाथा ॥
होत महारण रावण रामहिं । जीतहिं राम नसंशययामहिं ॥
इहां भये मैं देखों भाई । ज्ञानदृष्टिबल मोहिंअधिकाई ॥
मांगा जल तेइं दीन्हकमंडल । कपिकहनहिंअघाउंथोरेजल ॥
सरमज्जन करि आतुर आवहु । दीक्षादेउं ज्ञान जेहि पावहु ॥
दो० सर पैठत कपिपद गहेउ मकरीअति अकुलान ।
मकरीसोधरि दिब्यतन चली गगन चढ़ि यान ॥
कपितव दरश भइउं निहपापा । मिटा तात मुनिवरकरशापा ॥
मुनि न होइयह निशिचर घोरा । मानहुसत्य बचन कपिमोरा ॥
असकहि गईअप्सरा जबहीं । निशिचरनिकटगयउकपितबहीं ॥

कहकपि मुनि गुरु दक्षिणालेहू । पाछे हमहिं मंत्र तुम देहू ॥
शिर लंगूर लपेटि पछारा । निजतन प्रकटेसि मरतीबारा ॥
राम राम कहिछांड़ेसि प्राना । सुनि मन हर्षिचले हनुमाना ॥
देखा शैल न औषधि चीन्हा । सहसाकपिउपारिगिरिलीन्हा ॥
गहिगिरिनिशिनभधावतभयऊ । अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥

दो० देखा भरत विशालअति निशिचरमनअनुमानि ।
विनुफरशायक मारेउ चाप श्रवणलगि तानि ॥

परेउ मूर्च्छि महिलागतशायक । सुमिरत रामराम रघुनायक ॥
सुनि प्रियवचन भरतउठिधाये । कपिसमीपअतिआतुर आये ॥
विकल बिलोकि कीशउरलावा । जागतनहिंबहु भांतिजगावा ॥
मुख मलीन मन भयउ दुखारी । कहतबचनभरिलोचन बारी ॥
जेहिविधिरामबिमुखमोहिंकीन्हा ।तेहिंपुनियहदारुणदुखदीन्हा ॥
जो मोरे मन बच अरु काया । प्रीतिरामपद कमलअमाया ॥
तौकपि होउ विगत श्रमशूला । जो मोपर रघुपतिअनुकूला ॥
वचन सुनत उठि बैठ कपीशा । कहिजयजयतिकोशलाधीशा ॥

सो० लीन्ह कपिहि उरलायपुलकगातलोचन सजल ।
प्रीति न हृदयसमाय सुमिरिरामरघुकुलतिलक ॥

तात कुशल कहु सुख निधानकी । सहितअनुजअरुमातुजानकी ॥
कपि सब चरित सक्षेप बखाने ।भये दुखित मन महंपछिताने ॥
अहह दैव मैंकत जग जायों । प्रभुके एकौ काज न आयों ॥
जानि कुअवसर मनधरि धीरा । पुनिकपिसनबोलेउबलबीरा ॥
तात गहरु होइहै तुहिंजाता । काज नशाइहि होतप्रभाता ॥
चढ़ु मम शायक शैल समेता । पठवौंतोहिंजहं कृपानिकेता ॥
सुनिकपि मनउपजा अभिमाना । मोरे भारचलहिकिमिबाना ॥
राम प्रताप बिचारि बहोरी । बन्दिचरणबोलेउ कर जोरी ॥
तव प्रतापउर राखि गोसाईं । जैहौं नाथ बानकी नाईं ॥
हर्षि भरत तब आयसु दीन्हा। पदशिरनायगमनकपिकीन्हा ॥

दो० तवप्रताप उरराखि प्रभु जैहौं नाथ तुरंत।
असकहि आयसु पाय पद बंदिचले हनुमन्त ॥
भरत बाहुबलशीलगुण प्रभुपद प्रीतिअपार।
जातसराहत मनहिंमन पुनिपुनि पवन कुमार ॥

उहां राम लक्ष्मणहिं निहारी। बोलेबचन मनुज अनुहारी॥
अर्द्धरात्रि गइ कपि नहिंआवा। राम उठाइ अनुज उरलावा॥
सकहु नदुखित देखिमोहिकाऊ। बन्धुसदा तव मृदुल सुभाऊ॥
ममहित लागि तजे पितुमाता। सहेउबिपिनहिमआतपबाता॥
सो अनुराग कहां अबभाई। उठहु बिलोकिमोरिबिकलाई॥
जो जनित्यों बन बंधु बिछोहू। पिताबचन नहिं मनतेउंवोहू॥
सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जगबारहिंबारा॥
असबिचारि जिय जागहु ताता। मिलहिनजगतसहोदरभ्राता॥
यथापंख बिनु खगपति दीना। मणिबिनुफणिकरिवरकरहीना॥
असमम जिवन बंधु बिनुतोहीं। जो जड़ दैव जियावै मोहीं॥
जैहौं अवध कवन मुंह लाई। नारिहेतु प्रिय बन्धु गंवाई॥
बरु अपयश सहतेउं जगमाहीं। नारिहानि विशेष क्षतिनाहीं॥
अबअवलोकि शोक यहतोरा। सहै कठोर निठुर उर मोरा॥
निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम प्राणअधारा॥
सौंपेउ मोहिंतुमहिं गहि पानी। सबबिधिसुखदपरमहितजानी॥
उतर ताहि देहौं का जाई। उठिकिनमोहिंसमुझावहुभाई॥
बहुबिधिशोचत शोचबिमोचन। श्रवतसलिलराजिवदललोचन॥
उमा अखण्ड राम रघुराई। नरगत भावकृपाल दिखाई॥

सो० प्रभुबिलापसुनिकानबिकल भयेबानरनिकर।
आइगये हनुमान जिमि करुणामहं बीररस॥

हर्षि राम भेंटे हनुमाना। अतिकृतज्ञ प्रभु परमसुजाना॥
तुरत बैद्य तब कीन उपाई। उठि बठे लक्ष्मण हरषाई॥
हृदय लाय भेंटे प्रभु भ्राता। हर्षे सकल भालु कपिव्राता॥

पुनि कपि बैद्य तहां पहुंचावा । जेहिबिधितबहिंताहिलै आवा ॥
यहवृत्तान्त दशानन सुनेऊ । अतिबिषादपुनिपुनिशिरधुनेऊ ॥
ब्याकुल कुंभकर्ण पहं गयऊ । करिबहु यतनजगावत भयऊ ॥
जागा निशिचर देखिय कैसा । मानहुं काल देह धरि बैसा ॥
कुम्भकर्ण पूंछा सुनु भाई । काहे तव मुख रहा सुखाई ॥
कथा कही सबते अभिमानी । जेहिप्रकार सीताहरि आनी ॥
तात कपिन निशिचर संहारे । महामहा योधा सब मारे ॥
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी । भट अतिकाय अकंपनभारी ॥
अपर महोदर आदिक बीरा । परे समर महंसब रणधीरा ॥

दो० दशकन्धरके बचनसुनि कुम्भकर्ण बिलखान ।
जगदम्बा हरिआनिकै शठ चाहसि कल्यान ॥

भलन कीन्ह तैं निशिचर नाहा । अबमोहिंआनिजगायहुकाहा ॥
अजहुंतात त्यागहु अभिमाना । भजहुराम होइहि कल्याना ॥
हैं दशशीश मनुज रघुनायक । जाके हनूमान से पायक ॥
अहह बन्धुतैं कीन्ह खुटाई । प्रथमहिं मोहिंनजगायहुआई ॥
कीन्हेउ प्रभुबिरोध तेहिदेवक । शिव बिरंचि सुर जाकेसेवक ॥
नारदमुनिमोहिंज्ञानजोकहेऊ । कहतेउं तोहिं समयनहिंरहेऊ ॥
अब भरि अंक भेंटु मोहिंभाई । लोचन सुफलकरौं मैं जाई ॥
श्यामगात सरसीरुह लोचन । देखौंजाय ताप त्रय मोचन ॥

दो० रामरूपगुण सुमिरिमन मगनभयो क्षणएक ।
रावणमांगेउ कोटिघट मद अरु महिष अनेक ॥

महिष खाइकरि मदिरा पाना । गर्जेउ बज्र घात अनुमाना ॥
कुम्भकर्ण दुर्म्मद रण रंगा । चले दुर्ग तजि सेन न संगा ॥
देखि बिभीषण आगे आयउ । पुनिपदगहिनिजनामसुनायउ ॥
अनुजउठायहृदय तेहि लावा । रघुपति भक्त जानिमन भावा ॥
तात लात मोहिं रावण मारा । कहत परम हित मंत्रबिचारा ॥
तेहिगलानि रघुपति पहं आयउं । दीनजानि प्रभुके मनभायउं ॥

सुनसुत भयउ कालबश रावन । सोकिमिमानैं परमसिखावन ॥
धन्य धन्य तैं धन्यबिभीषण । भयउतातनिशिचरकुलभूषण॥
बन्धु बंश तैं कीन्ह उजागर । भजहु राम शोभासुखसागर ॥
दो० मनक्रम बचन कपट तजि भजहु तात रघुबीर ।
जाहुन निजपर सूझमोहिं भयउंकालबश बीर ॥
बन्धुबचनसुनि फिरा बिभीषण । आयउजहं त्रैलोक्य बिभूषण ॥
नाथ भूधराकार शरीरा । कुम्भकर्ण आवत रणधीरा ॥
इतना कपिन सुना जबकाना । किलकिलाइ धाये हनुमाना ॥
लिये उपारि बिटप अरु भूधर । कटकटाइ डारे तेहि ऊपर ॥
कोटिकोटिगिरि शिखरप्रहारा । करहिं भालुकपि एकहिंबारा ॥
गिरै न मुरै टरै नहिं टारे । जिमिगज आक फलनकेमारे ॥
तब मारुत सुत मुष्टिक हनेऊ । परेउ धरणिब्याकुलशिरधुनेऊ॥
पुनिउठितेइ मारेउ हनुमन्ता । घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता ॥
पुनिनलनीलहिंआनिपछारेसि । जहंतहंपटकिपटकिभटमारेसि॥
चली बली मुख सेन पराई । अतिभयत्रसितनकोउसमुहाई ॥
दो० अंगदादि कपि मुर्छित करि समेत सुग्रीव ।
कांखदाबि कपिराजकहं चलाअमित बलसीव ॥
उमाकरत रघुपति नर लीला । खेलगरुड़जिमिअहिगणमीला ॥
भृकुटिभङ्ग जेहि कालहिखाई । ताहि कि ऐसी सोह लराई ॥
जग पावन कीरति बिस्तरहीं । गाइगाइ नरभव निधितरहीं ॥
मूर्च्छा गइ मारुत सुत जागा । सुग्रीवहिं तब खोजन लागा ॥
कपिराजहु कर मूर्च्छा बीती । निबुकिगयउतेहिमृतकप्रतीती॥
काटेसि दशन नासिका काना । गर्जिअकाश चला तेहिजाना ॥
गहेसि चरणधरिधरणिपछारा । अतिलाघवपुनिउठितेहिमारा ॥
पुनिआयउ प्रभुपहं बलवाना । जयतिजयतिजयकृपानिधाना ॥
नाक कान काटे तेहि जानी । फिरा क्रोधकरि मानिगलानी ॥
सहजभीमपुनिबिनु श्रुतिनासा । देखत कपिदल उपजा त्रासा ॥

दो० जय जय जय रघुबंशमणि धाये कपिकरि हूह ।
एकहिबारजो तासु पर डारे गिरितरु जूह ॥
कुम्भकर्ण रण रंग बिरोधा । सन्मुखचलाकाल जनुक्रोधा ॥
कोटिकोटि कपिधरिधरि खाई । जनुटीड़ी गिरि गुहा समाई ॥
कोटिन गहि शरीर महं मर्दा । कोटिन मींजिमिलायसिगर्दा ॥
मुख नासिका श्रवणकीबाटा । निकसिपराहिंभालु कपिठाटा॥
रणमदमत्त निशाचर दर्पा । मानहुं बिश्व ग्रसनकहंअर्पा ॥
सुरेसुभट रण फिरहिं न फेरे । सूझन नयन सुनहिं नहिं टेरे ॥
कुम्भकर्ण कपि फौज बिडारी । सुनिधाये रजनीचर झारी ॥
देखी राम बिकट कटकाई । रिपुअनीक नाना बिधिआई ॥
दो० सुनहुबिभीषणलषणसह सकलसंभारहु सैन ।
मैंदेखौं खल बल दलहिं बोले राजिवनैन ॥
कर शारंग बिशिख कटिभाथा । मृगपतिठवनिचले रघुनाथा ॥
प्रथम कीन्ह प्रभु धनु कोरा । रिपुदलबधिरभये सुनिशोरा ॥
धनु संधानि छांड़ शर लक्षा । काल सर्प्पजनुचले सपक्षा ॥
अतिबल चले निकर नाराचा । लगेकटन भटबिकटपिशाचा ॥
कटहिंचरण शिरउरभुज दण्डा । बहुतक बीर होहिंशत खंडा ॥
घुर्मि घुर्मि घायल भट परहीं । उठहिंसंभारिसुभटफिरिलरहीं ॥
लागतबाणजलधि जिमिगाजैं । बहुतक देखि कठिनशरभाजैं ॥
रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावहिं । धरुधरु मारुमारु गोहरावहिं ॥
दो० क्षणमहं प्रभुके शायकनि काटे बिकट पिशाच ।
पुनि रघुपति के त्रोणमहं प्रबिशे आइ नराच ॥
कुम्भकर्ण मन दीख बिचारी । क्षणमहं हते निशाचरझारी ॥
भयउ क्रोध दारुण बल बीरा । करिमृगनायक नाद गंभीरा ॥
कोपि महीधर लिये उपारी । डारेसि जहं मर्कटभट भारी ॥
आवत देखि शैल प्रभु भारे । शरनकाटि रजसमकरिडारे ॥
पुनिधनुतानि कोपि रघुनायक । छांड़े अतिकराल बहु शायक ॥

तनमहंप्रविशिनिसरिशरजाहीं । जिमिदामिनिघनमाहसमाहीं ॥
शोणित श्रवण सोह तन कारे । जिमिकज्जलगिरिगेरु पनारे ॥
बिकलबिलोकि भालुकपिधाये । बिहंसाजबहिनिकटचलिआये ॥
दो० गर्जत धायउ बेगिअति कोटिकोटि गहि कीश ।
महि पटकै गजराज इवशपथ करै दशशीश ॥
भागे भालु कपिन के यूथा । वृकबिलोकि जिमिमेषबरूथा॥
चले भालुकपि भाजि भवानी । बिकल पुकारत आरतबानी ॥
यहिनिशिचर दुकालसमअहई । कपि कुल देशपरनअबचहई ॥
कृपा बारि धर राम खरारी । पाहि पाहि प्रणतारत हारी ॥
करुणा बचन सुनत भगवाना । चले सुधारि शरासन बाना ॥
राम सेन निज पाछे घाली । चले सकोप महाबल शाली ॥
खैंचि धनुष शत शर संधाने । छूटे तीर शरीर समाने ॥
लागत शर संभारि सो फिरा । कुधर डगमगेउ डोली धरा ॥
लीन्ह एक तेइ शैल उपाटी । रघुकुलतिलकभुजासोइकाटी॥
धावा बाम बाहु गिरिधारी । प्रभु सोभुजा काटि महिडारी ॥
काटे भुज सोहै खल कैसा । पक्ष हीन मन्दर गिरि जैसा ॥
उग्रबिलोकनिप्रभुहि बिलोका । मानहुं ग्रसन चहत त्रैलोका ॥
दो० करि चिकार मुखघोरअति धावाबदन पसार ।
गगन सकल सुरत्रास अति हाहाकार पुकार ॥
सभय देव करुणाकर जाने । श्रवणप्रयन्त शरासन ताने ॥
बिशिखनिकरनिशिचरमुखभरेऊ । तदपिमहाबल भूमिनपरेऊ ॥
शरनि भरामुख सन्मुख धावा । कालत्रोणजनुतनुधरिआवा ॥
तब प्रभु कोपि तीब्रशरलीन्हा । धड़तेभिन्नतासुशिरकीन्हा ॥
सोशिरपरा दशानन आगे । बिकलभयउजिमिफणिमणित्यागे॥
धरणि धसे धरधाव प्रचण्डा । तबप्रभुकाटिकीन्हयुगखण्डा ॥
परे भूमि जिमि नभते भूधर । तरेदाबिकपि भालु निशाचर ॥
तासु तेज प्रभु बदन समाना । सुरमुनिसबहिंअचम्भवमाना ॥

नभ दुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं । जयजयकहि प्रसूनसुरबर्षहिं ॥
करिबिनतीसुरसकल सिधाये । तब तेहिसमय देवऋषिआये ॥
गगनोपरि हरि गुणगण गाये । रुचिर बीररस प्रभुमनभाये ॥
बेग हतहु खल मुनिकहिगये । रामसमर महं शोभितभये ॥

छं० संग्राम भूमि बिराजरघुपति अतुलबलशोभाघनी ।
श्रमबिन्दुमुखराजीवलोचनरुचिरतनशोणितकनी ॥
भुजयुगलफेरतकरशरासनभालुकपिचहुंदिशिबने ।
कहदासतुलसीकहिनसकछबिशेषजेहिआननघने ॥

दो० निशिचर अधममलायतनताहिदीन्हनिजधाम ।
गिरिजा ते नर मन्दमति जे न भजहिं श्रीराम ॥

दिनके अन्त फिरीं दोउ अनी । समर भयो सुभटनसनघनी ॥
रामकृपा बल कपि दल बाढ़ा । जिमितृणपावै लगेअतिडाढ़ा ॥
छीजहिंनिशिचर दिनअरुराती । निजमुखकहेसुकृतजेहिभांती ॥
बहु बिलाप दशकन्धर करई । पुनिपुनि बन्धुशीशउरधुनई ॥
रोवहिं नारि हृदय हति पानी । तासु तेज बल बिपुलबखानी ॥
मेघनाद तेहि अवसर आवा । कहिबहुकथापिताहिसमुझावा ॥
देखहु काल्हि मोरि मनुसाई । अबहिं बहुत का करौं बड़ाई ॥
इष्टदेव सन जो बरपायउं । सोबरतातन तुमहिं सुनायउं ॥
इहि बिधिजल्पत भयोबिहाना । लगे भालुकपिचहुंदिशिनाना ॥
इत कपि भालु कालसमबीरा । उत रजनीचर अतिरणधीरा ॥
लरहिंसुभट निजनिज जयहेतू । बरणि न जाइ समरखगकेतू ॥

दो० मेघनाद माया बिरचि रथचढ़ि गयउ अकाश ।
गर्जेउप्रलय पयोदजिमि भाकपिदलअतित्रास ॥

शक्ति शूल अर परिघ कृपाना । अस्त्र शस्त्र कुलिशायुधनाना ॥
डारे परशु प्रचण्ड पखाना । लागा वृष्टिकरै बहु बाना ॥
रहे दशहु दिशि शायक छाई । मानहुंमघा मेघ झरि लाई ॥
धरुधरुमारु सुनहिं कपिकाना । जो मारे तेहि कोउन जाना ॥

गहिगिरितरु अकाश कपिधावैं । देखहिंतेहिनदुखितफिरिआवैं॥
अवघट घाट बाट गिरि कन्दर । मायाबलकीन्हेसि शरपंजर ॥
मारुतसुत अंगद नल नीला । कीन्हेसिबिकलसकलबलशीला॥
पुनि लक्ष्मण सुग्रीव बिभीषन । शरनमारिकीन्हेसिजर्जरतन॥
पुनि रघुपतिसन जूझन लागा । छांड़तशरहोइ लागहिंनागा॥
ब्याल फांस वश भये खरारी । स्वबशअनन्त एकअबिकारी॥
नट इवचरित करतबिधिनाना । सदा स्वतंत्र राम भगवाना॥
रण शोभाहित आपु बंधावा । देखि दशा देवन भय पावा॥

दो० खगपति जाकरनामजपि नरकाटहिं भवफांस ।
सोप्रभुआवकि बन्धतर ब्यापकविश्वनिवास ॥

चरित राम के सगुण भवानी । तर्कि न जाइंबुद्धिबल बानी॥
अस बिचारि जो परमबिरागी । रामहिंभजहिं तर्कसबत्यागी॥
ब्याकुल कटक कीन्हघननादा । पुनि भा प्रकट कहतदुर्बादा॥
जामवन्त कह खलरहु ठाढ़ा । सुनिकै ताहि क्रोध अतिबाढ़ा॥
बूढ़ जानि शठ छांड़ेउ तोहीं । लागेसिअधम प्रचारन मोहीं॥
असकहि ताहि त्रिशूल चलावा । जामवन्त सोकर गहि धावा॥
मारेउ मेघनाद की छाती । परा धरणि घुर्मित सुरघाती॥
पुनिरिसाइ गहिचरण फिरावा । महिपछारिनिजबलहिदेखावा॥
बर प्रसाद सो मरहि न मारा । तब पदगहि लंकापर डारा॥
इहां देवऋषि गरुड़ पठाये । रामसमीपसपदि चलिआये॥

दो० पन्नगारि खायेसकल क्षणमहं ब्याल वरूथ ।
भई बिगत माया तुरत हर्षे बानर यूथ॥
गहिगिरि पादपउपल बहु धाये कीश रिसाइ ।
चले तमीचर बिकल अति गढ़पर चढ़े पराइ ॥

मेघनाद की मूर्च्छा जागी । पितहिंबिलोकि लाजअतिलागी॥
तुरत गयो सोगिरिवर कन्दर । करनअजयमख्दसमनहठधर॥
सो सुधिपाइ बिभीषण कहई । सुनु प्रभु समाचार असअहई॥

मेघनाद मख करै अपावन । खल मायावी देव सतावन ॥
सो प्रभु सिद्ध होइ जो पाइहि । नाथबेगिरिपु जीतिनजाइहि ॥
सुनिरघुपतिअतिशयसुखमाना । बोलि लिये अंगद हनुमाना ॥
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई । यज्ञबिध्वन्स करहु तुमजाई ॥
तुम लक्ष्मण रण मारेहू ओही । देखिसभयसुर बड़दुख मोहीं ॥
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई । जेहिछीजै निशिचर सुनु भाई ॥
जामवन्त कपिराज बिभीषन । सेन समेत रहहु तीनों जन ॥
जब रघुबीर दीन्ह अनुशासन । कटिनिषंगकरबाण शरासन ॥
प्रभु प्रताप उरधरि रण धीरा । बोलेउ घनइव गिरागंभीरा ॥
जो तेहि आजु बधे बिनु आवों । तौरघुपति सेवक न कहावों ॥
जो शत शंकर करहिं सहाई । तदपि हतौं रघुबीर दुहाई ॥
दो० बन्दि राम पद कमल युग चले तुरन्त अनन्त ।
अंगद नील मयन्दनल संग सुभट हनुमन्त ॥
जाइ कपिन देखा सो बैसा । आहुतिदेत रुधिर अरु भैंसा ॥
तब कीशन कृत यज्ञ बिध्वंसा । जबन उठै तब करहिं प्रशंसा ॥
तदपि न उठै धरहिं कचजाई । लातनहतिहति चलहिंपराई ॥
लै त्रिशूल धावा कपि भागे । आवा राम अनुज के आगे ॥
आवत परम क्रोधकरि मारा । गर्जि घोर रवि बारहिंबारा ॥
कोपि मरुत सुत अंगद धाये । हति त्रिशूलउरधरणिगिराये ॥
प्रभु पर छांड़ेसि शूल प्रचंडा । शरहतकृत अनन्त युग खंडा ॥
उठि बहोरि मारुत युवराजा । हतेउकोपि तेहि धावन बाजा ॥
फिरे बीर रिपु मरै न मारा । पुनि धावाकरि घोर चिकारा ॥
धावत देखि क्रोध जनु काला । लक्ष्मण छांड़बिशिख कराला ॥
आवत देखि बज्र सम बाना । तुरत भयो खल अन्तर्द्धाना ॥
बिबिध बेषधरि करै लड़ाई । कबहुंकप्रकटकबहुं दुरिजाई ॥
तबत्रिशूलछांड़ेसि लक्ष्मण पर । काटिकीन्हशतखंडधरणिधर ॥
शिखर एक लै पुनि सो धावा । रामअनुज सो काटिखसावा ॥

दो० आयुधविविधप्रहारकिय रजसम कीन्हफणीश ।
हर्षि बिवश कपिरीछसब बिबुधसहित सुरईश ॥
बहुरि विविधशर छांड़न लागा । रणकारणछूटहिं जिमिनागा ॥
राम अनुज शर गरुड़ समाना । उमा ग्रसत छूटहिं अभिमाना ॥
देखि अजय रिपु डरपेउ कीशा । परम क्रोध तब भये अहीशा ॥
देखिय जिमि रबितेज समाना । फुकरतमनहुं ब्यालअनुमाना ॥
लक्ष्मण मन अस मंत्र दृढ़ावा । इहि पापिहि मैं बहुतखेलावा ॥
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा । शर संधान कीन्ह अतिदापा ॥
छांड़ा बाण तासु उर लागा । शीश भुजा काटे नृप नागा ॥
घन समानसो गर्जि अभागा । मरती बार कपट सब त्यागा ॥
दो० रामअनुजकहि रामकहि असकहि छांड़ेसि प्रान ।
धन्य शक्रजित मातु तव कहि अंगद हनुमान ॥
बिन प्रयास हनुमान उठाये । लंका द्वार राखि पुनि आये ॥
तासु मरण सुनि सुर गंधर्बा । चढ़ि बिमान आये नभ सर्बा ॥
बरषि सुसनदुन्दुभी बजावहिं । श्रीरघुबीर बिमलयश गावहिं ॥
जय अनन्त जय जगदा धारा । तुम प्रभु सर्व देव निस्तारा ॥
अस्तुतिकरिसुर सकलसिधाये । लक्ष्मण कृपा सिंधु पहंआये ॥
क्षेपक ॥
प्रभुहि बिलोकि शीशपद नाये । उठिप्रभुअनुज हर्षि उरलाये ॥
कृपा दृष्टि करि अनुजहि हेरा । बिगत भयोश्रम जबकर फेरा ॥
बाण बेंधि तन देखियत कैसे । कनक त्रोण शर पूरित जैसे ॥
मुखप्रसन्नता देखि छके सब । रिपुबधकहा बिभीषणहू तब ॥
धारेउ शीश आन प्रभु आगे । वानर भालु बिलोकन लागे ॥
प्रभु कौतुकी निरखिसोइशीशा । राखन कहेउ कोशला धीशा ॥
दो० प्रभु आयसुसुनिकीशपति राखेउ यतन कराय ।
कटकसहितरघुबंशमणि शोभितअतिदोउभाय ॥
कृपादृष्टि सब कटक निहारे । भये श्रम रहित राम बैठारे ॥

सुनहु उमा इहिबिधि रिपुमारे । सुर गन्धर्ब मुनिभये सुखारे ॥
अबसो सुनहु भुजा तेहि केरी । खग जिमि गईलंक शरप्रेरी ॥
मेघनाद आंगन में परी । बाण बेधि शोणित सन भरी ॥
देखत तहां सुलोचनि कैसी । रतिते रुचिर रूप गुण जैसी ॥
नाग सुता दशकन्ध पतोहू । बासवरिपुतिय छबिमयजोहू ॥
हेम सिंहासन सोहत बाला । सेवत विद्याधर त्रयकाला ॥
पूजत विविध बिनय करताही । मुख प्रमोदको सकत सराही ॥
तहं पति भुजा परी इहि भांती । मनहुं सकलसुखतरुकी कांती ॥

दो० तबनिजदासिन्हदेखितहं शोणिश्रवतभुजदण्ड।
भयउ समर आश्चर्यमय मनहुं अखंडन खण्ड ॥

सुनकर सकल सखी मुख बैना । तजि सिंहासन उठी सुनैना ॥
प्रेम सुभाय धुकधुकी धरकी । शूचकअशुभदहिनभुजफरकी ॥
होत महारण रावण रामहिं । बीर धुरीण मोर पिय तामहिं ॥
सकलसुरासुर सकहिं न जूझो । विधि बामतापरत नहिं बूझी ॥
इतना कहत गई चलि आपू । पतिभुजलखिकरिकोटिकलापू ॥
कंचन मणिगण भूषण सोई । महा बिटपसम आनन होई ॥
देखत मनहिंन आवत तेही । जासुप्रभाव सुनत किनलेही ॥
नींद नारि भोजन परि हरही । बारह बर्ष तासु कर मरही ॥

दो० करि बिचार सम टेकदै मैं पति देवत नारि ।
भुजलखि मेटहु दुचितही सुनकरदीन पसारि ॥

लखि रुख तासु सखी उठिधाई । सो तेहि खोज खरी लैआई ॥
दीन हाथ मणिमय अंगनाई । लिखनलषणकीरतिरुचिराई ॥
नींद नारि भोजन शत कोटी । तजत तासु महिमाअतिछोटी ॥
अक्षयअखंड अलख अविनाशी । अतुल अमित घटघटकेबासी ॥
प्रकटहिं पालहिं पुनि संहरईं । त्रिगुण रूप त्रय मूरतिधरईं ॥
जो कालहु कर काल भयंकर । बरणत शेष शारदा शंकर ॥
लीला तनु सर सेवक हेतू । जासु नाम भवसागर सेतू ॥

मुनि मन पुण्डरीक जाके घर। बचन बिबेक बिचार बुद्धिवर॥

दो० कोटिकल्पबरणत निगम अगमजासु गुणगाथ।
तम शरीरजड़ जीवबिनुकिमिबरणतलिखिहाथ॥

मम शिर गयो दरश रघुराई। तव प्रतीत लगिभुजा पठाई॥
इहिबिधिलिखेउसकलभुजबाता। परी भूमितव अतिबिकलाता॥
बांचिसकलभुजलिखितयथारथ। लक्ष्मण राम नाम परमारथ॥
त्रियास्वभाव तदपिबहुभांती। बिलखतसकलसखिनकरपांती॥
गुणगण साहस शील नाहको। कहि रोवतबलबिपुलबांहको॥
जेहि भुजबल सुरनाथ बिगोवा। सोभुज आजुसमर महिसोवा॥
मणिगण भूषण बसन बिसारत। महिलोटतकरतलशिरमारत॥
मगनबिपतिनिज तनसुधिनाहीं। दारुणबिपतिकहिनकेहिपाहीं॥
क्षणक प्रबोधसखी कोउकरहीं। बहुरि शोक दावानल जरहीं॥
क्षणक्षण उठतपरत धरणीतल। पुनिपुनिसबसराहपतिकोबल॥

दो० तिनमें सखी सयान इक कहि समुझावत बैन।
शोक छांड़ि पति देवता सुमतिकरौ मतिऐन॥

सुनकर सहसानन जन जाता। सत्यकहत तुम सखीसुमाता॥
विधि निर्मित दुख मोकहंलाहू। सुख परि पूर भवन सबकाहू॥
विजय राम लक्ष्मण कहंआवा। सुयश सकलमर्कट कुलपावा॥
कुलकलंक बड़लहेउ बिभीषन। कुलकुठारअस सुनेउनदीखन॥
छूटि बन्दि अस सुरगण केरी। निज निजपुर न दुहाई फेरी॥
मुनिपुलस्त्य कर भाकुलनाशा। अबरबिशशिसुखकरहिंप्रकाशा॥
तेजवन्त पावक परिहरि दुख। बहब समीर आजु अपनेसुख॥
सलिल गंगनिर्मल जल आजू। सुबशबसहिं सुरनायक राजू॥

दो० यम कुबेर दिगपाल सब प्रमुदित सुरनर नाग।
खाइअघाय बिहाय दुख पायसुयज्ञ बिभाग॥

इतना कह मन्दिर महं आई। देखत मणिगण धन बहुताई॥
सुरपतिभुवन सुपटतर नाहीं। जहंरिधिसिधितनधरेकमाहीं॥

देखत बिनयन मन अनुरागा । पतिपदप्रेम निपुणगण पागा ॥
देत दान मणि भूषण चीरा । धेनुबसन मन हाटक हीरा ॥
मणिमयशिविका रुचिरसुहाई । भुज बढ़ाइ पहिराइ बनाई ॥
आपन चढ़त भई पुनि आई । सुर दुर्लभ सुखसदनबिहाई ॥
बीतरागजिमितजतबिषयगन । तेंहितसभांतिदियोपतिपदमन ॥
शुक शारिका सुलोचन ज्याये । कनक पिंजरन राखि पढ़ाये ॥
ब्याकुलकहकहं जातसुनयना । सुन धीरज परिहरत सुबयना ॥
भयेबिकल खगमृग इहिभांती । अपर दशा कैसे कहि जाती ॥
प्रजालोग गृहतजि संग लागे । प्रेम उमंगि लोचन जलपागे ॥
दो० बाजन लगे निशान बहु ढोल दुंदुभीभेरि ।
पुरजन परिजन संग सब चले पालकी घेरि ॥
देखि भीर दशकन्धर द्वारे । सजग भये सब बीर प्रचारे ॥
जानेउ कटक रिपुनकर आवा । अस्त्र शस्त्र करगहिकर धावा ॥
धनु चढ़ाइ कटि तरकस बांधे । कोउ असिचर्मशरासन सांधे ॥
तोमर परशु प्रचण्ड गदागहि । रोखन चोखे शूलशक्ति गहि ॥
मारु मारु धरु धरु कहिधाये । नकटदशाननबिजय सुनाये ॥
गर्जत तर्जत गिरा गंभीरा । समर भयंकर निशिचर बीरा ॥
निपटहिं निकट पालकी आई । चीन्ह सकल भट रहे लजाई ॥
देखि जुहारि नाग पति कन्या । सतीशिरोमणित्रिभुवनधन्या ॥
दो० द्वारपाल दशकन्ध बहु खबर जनाई जाय ।
भयउरजायसुवेगि तब बचनकहत बिलखाय ॥
तुमहिं अछतअसदशा हमारी । सुखतजि भईशोक अधिकारी ॥
नभपथ ह्वैभुज मम गृह परा । बाणबेधि शोणित तन भरा ॥
देखि भुजा मनमें अति डरी । संशय जानि दीन्ह कर खरी ॥
लिखी रामलक्ष्मण महिमाइन । क्रमक्रमसों सबकथाकहीतिन ॥
ठगिसी रही बांचि गुण गाथा । जरहुं संग जो पाऊंमाथा ॥
रण कबन्ध भुज मम गृहआई । शिरतहं गयउ जहां रघुराई ॥

करहुसोयतनमिलहिमोहिंशीशा। तुम सामर्थ निशाचर ईशा॥
सुनत कुलिश सम गिरा बधूकी। जीवन आश दशानन भूकी॥
तदपि धीरधरिकरसिप्रबोधा। कहिकोउमोहिंसमानजगयोधा॥
दो० रामलषण सुग्रीवनल नील द्विविद हनुमन्त।
माथ बिभीषण ऋषभकर आनब मारि तुरन्त॥
अबलगि रहेउ भरोसा भारी। कुंभकर्ण घननाद सुरारी॥
हमहुंआजलगिकीन्ह न जूझा। इन सबकर पुरषारथ बूझा॥
मरेउ सो नर बानर के मारे। बात सुनत अतिलाज हमारे॥
गिनती कवन बीरमें तिनकी। अतिदुरदशाकीन्हकपिजिनकी॥
तजहु शोक कुल बधू पतोहू। उन समान जनिमानसिमोहू॥
पुत्रि बिलम्ब करौ घट चारी। देखहु मोर भयंकर मारी॥
आनि शीश तव शत्रुनकेरा। बिन प्रयास नहिं लावौं बेरा॥
भोगत जन्तु पराक्रम भोगा। नतुकिननिशिचर बनचरयोगा॥
दो० मेरु उखारन हारजे धरा धरत कर बीच।
तेभट खाये मशकशिशु काल कुटिलता नीच॥
क्रोधावेष प्रगल्भहि बोली। हृदय शोकतनु अचलन डोली॥
समाधान नहिं मानत सोई। सुनि प्रलाप परितोष न होई॥
नर बानर पुरुषारथ देखत। बड़ो प्रभाव छोट करि लेखत॥
कूदि सिंधु कपि लंका जारी। लघुकर मानत ताहि सुरारी॥
कुंभकर्ण अति काय महोदर। समपति गिरेउ समेत सहोदर॥
ते रिपु चहतदशानन जीती। देखहु महा मोह कर रीती॥
उतर देउं तौ पातक होई। कह बिबादकर सर्बस खोई॥
फिरहिराजकछु मोहिनकाजू। बिन पिय सकल नरककरसाजू॥
दो० तुरतहि उठीसुलोचना गइ मयतनया पास।
पदगहि रोवत सकलकह प्रकटशोकइतिहास॥
आदिहि ते सब कथा बखानी। सुनिसुनिरोवत रावण रानी॥
कहनिजपति भुजलिखतबहोरी। रामलषणमहिमा नहिंथोरी॥

कह्यो बहुरि दशकन्धरक्रोधा । मुयेबिडंबन कीन्हेसि बोधा ॥
सुनि निजपुत्रबधू की बानी । बोली दुखित मदोदरि रानी ॥
कहत सो मानहु सत्यसयानी । सुनीजो नारद मुनिकी बानी ॥
पाछिल बात भई सब सांची । अनुभवकीन्ह न एकहु बांची ॥
देविन होयमृषा ऋषि भाषत । अपने महा मोह मन राखत ॥
अगली कथा समास समेता । सुनुपुत्री ऋषि बरणेउ जेता ॥
बैर भाव दशकन्धर जूझब । प्राणहुगये नीति नहिं बूझब ॥
सिया शोक संकट से छूटहिं । बानर भालु राजघर लूटहिं ॥
सुरमन भूषण बसन विमाना । भोगकरहिं बनचर कुलनाना ॥
दो० राज्य बिभीषण पाइहैं अमर कल्प निरबाह ।
भावीबश दुख सुख जगत उपदेशिय कहु काह ॥
मुनिवर बचन मोहिं परतीती । अनुभव दोउहार अरु जीती ॥
अब पुत्री परिहरि सब शोका । पतिसंग बेगिसाध परलोका ॥
जाहु राम पहं पतिशिरलागी । तज संकोच आन किन मांगी ॥
आज न होइ लाजकर भूषण । समयहीनगुणगणियन दूषण ॥
है पुनि ससुर बिभीषण तोरा । बालितनय बालक सम मोरा ॥
एक नारि ब्रत रघुबर केरा । लषण सुयश तुमसुनेउघनेरा ॥
जामवन्त मंत्री सुग्रीवा । द्विविध मयंद महाबल सींवा ॥
जानहु ब्रह्मचर्य्य हनुमन्ता । शिवस्वरूप भव हरभगवन्ता ॥
सदा नीति रत राम नरेशा । तहां जात कहु कवन कलेशा ॥
दो० विदित तोरपति भुजलिखत लक्ष्मण रामप्रभाव ।
हमहूं ऋषि भाषित कहेउ अबविलम्बजनिलाव ॥
सुनत सासुमुखकर हितबानी । जाहु रामपहं असजियजानी ॥
बार बार बरणत शिरनाई । चलीजहां लक्ष्मण रघुराई ॥
देखत कटक भालु कपि केरा । सिंधु सुबेल महीधर घेरा ॥
उमगेउ मनो महोदधि दूसर । हरित पीत कपि धूमरभूसर ॥
व्योमलाल भाषत अनुहरी । मनहु लेत बड़वानल घेरी ॥

गिरितरुधर भुजसहस भयंकर । जहंतहं प्रकटहोइजनुजलधर ॥
लक्ष्मण शेष सुअंक शीशधर । कटकजलधिसोवत राघवबर ॥
अषवट जहं तहंबैठि बिभीषण । अससुकृतीकहुंसुना न दीखन ॥
दो० देखत डरत सुलोचना धीरज धरत बहोरि ।
महारज रघुबीर कहं बिनय सुनावो मोरि ॥
बानर सकल उठे अस बोली । अरिपुरते आवत इक डोली ॥
जानि परत रावण अब बूझा । भइ मतिमेघनाद जब जूझा ॥
हठ तजि सीतहि दीन पठाई । तजहु शोच अब मिटी लराई ॥
जिहिलगिप्रकटकीन्हपुरआगी । बांधेउ सेतु हेतु जेहि लागी ॥
सोइ सीता अब बिन श्रमपाई । जानहु बिधि अनुकूल सहाई ॥
विजय राम सुग्रीवहि आवा । सुयश बीर बानर कुल पावा ॥
बिरह राम लक्ष्मण कर छूटा । बिन कलेश लंका गढ़ टूटा ॥
युग युगकीरतिचलब हमारी । कहं राक्षस कहं लघुबनचारी ॥
दो० इहिबिधिचारुबिचारकरिनिश्चयकरिमनमाहिं ।
भयउ काज रघुराजकर बात दूसरो नाहिं ॥
पैठत कटक अतिहि सकुचाई । अनविनारि जनु परघरआई ॥
आगेहि जाइ देखि रघुबीरा । छबिश्यामल मय गौरशरीरा ॥
मरकतकनकछबिहि जनुनिंदत । धन्य सुजन महिमा तेबिंदत ॥
मत्त गयंद शुंड भुज दंडा । धनुषबाणअसिधरिय प्रचंडा ॥
उर बिशाल अति उन्नत कंधर । कंबु कंठ रेखा त्रय सुन्दर ॥
दशन पांतिकी कांति कहैको । लावत मन पटतरहि लहैको ॥
देखत अधरनकी अरुणाई । बिम्बा फल बन्धुक लजाई ॥
शुक तुंडक नासिका लजाई । थाकेउकबि पटतरहि न पाई ॥
दो० छबिमय गुणमय तेजमय राम उदधि अवगाह ।
जहां न पावत पारसुर किमि बरणे कबि थाह ॥
भृकुटी ललित कपोल सुहाये । शीश जटाकर मुकुट बनाये ॥
भाल बिशाल तिलकयुत सोहै । ध्यान समय मुनिमानस मोहै

बलकल बसन अरुण कटि बांधे । करशरसुभग शरासन कांधे ॥
बीरासन आसीन कृपाला । नव पल्लव प्रसून कर माला ॥
चरण सरोज बरणि नहिं जाई । जहं मुनिमधुकर रहे लुभाई ॥
प्रकट भई जिहि थलसे गंगा । श्रुतिपुराण कहकथा प्रसंगा ॥
नवत महेश विरंचि जाहिको । लोचन गोचर होत काहिको ॥
जन आरत भंजन जो कोई । भवसागर तारण कै सोई ॥

दो० प्रणतपाल बिरदावली जिन चरणनकी बान ।
शोक हरण संशय दलन करण सुमंगल खान ॥

कर जोरे अंगद हनुमाना । द्विविदमयंद कुमुद बलवाना ॥
जामवन्त कपिपतिबल शीला । ऋषभसुखेन सहितनलनीला ॥
महाबीर बानर सब राजत ।लषणबिभीषणदोउदिशिभ्राजत॥
मितिभाषितप्रभुचरणसुसेवक । चितवत रुख रघुनन्दन देवक ॥
सभामध्यसोहत अघमोचन । कोन्हेउसकलनिरखिनिजलोचन॥
करत दंडवत शिरधरि धरणी । तिहिकाचरितबिभीषणबरणी ॥
पुत्र बधू दशकन्धरकेरी । बड़ पतिब्रताजानिप्रभु हेरी ॥
मेघनाद की नारि सुशीला । असगतितवबिरोधकर लीला ॥
करत प्रमाण प्रेम नहिं थोरे । करुणा बचन कहत करजोरे ॥

दो० मुयेजान पति भुजहिं तव लिख समुझाई मोहिं ।
महाराज रघुवंश मणि याचन आई तोहिं ॥

छं० परसे चरणकर प्रेमपूरण प्रणतपाल खरारिके ।
जिहिनमत शंकरशेष सुर मुनि धरणिभंजनभारके ॥
प्रभुजानिसोबिनती सुलोचनि करतकहिबिनतीघनी ।
जयशोकहरणकृपालुजयजयजयतिजयरघुकुलमनी॥
प्रभुब्रह्मरूप स्वभावशीतलअतुलबल त्रिभुवनधनी।
जयहरणधरणीभारबाहु विशालखंडन खल अनी ॥
तव दोनबन्धु दयालु अपरमपार सबगुण आकरे ।
करुणानिधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे ॥

षटअष्ट लोक जो रचत पालत प्रलय सो माया सुरी ।
केहि भांति बरणौं नाथ गुण गण नारिजड़मतिबावरी ॥
जेइ चरण ईश महेश शारद श्रुति निरन्तर ध्यावहीं ।
हूं भूरि भाग सरोज पद सोइ हर्ष शिरसि लगावहीं ॥
छं० गहकर बाणी शारंगपाणी सव गुणखानी राम वली ।
सुर सुरभी रक्षक राक्षसभक्षकभक्तिहिरक्षकमानबली ॥
मैंरिपुसुतनारी जानअघारी अधिकारी नहिं दुखभारी ।
हरि बिरह दवारी अतिभयकारीसहबहुबारीदुखकारी ॥
तव शरणनआई जनसुखदाई रघुराई करुणा सागर ।
पति मस्तक पाऊं जरिसंग जाऊंशिरपाऊंशोभाआगर॥
पति ममतनत्यागीअतिबड़भागीअनुरागीजिनमुक्तिलई ।
ममता किमितासू बरणूं आसूजासुअचलजगपतिरही ॥
यहिबिधिपदपंकजसेव्यरमाअजशिरनमिदोउकरजोरिरही ।
सुनिपंकजलोचन बचनसुलोचनिलोचनमेंजलधारबही ॥
दो० अस प्रभु दीनबन्धु हरि कारणरहित दयाल ।
तुलसिदास शठ ताहिभज छांड़कपट जंजाल ॥
तुम अन्तरयामी भगवाना । नहितव आदिमध्यअवसाना ॥
करुणा बचन सुनत रघुबीरा । पुलकरोमभयोशिथिलशरीरा ॥
देहुं जियाय तोर पति आजू । करहू लंक कल्प शत राजू ॥
छांड़ि शोच अब मन हरषाहू । तुरत भवन अपने फिरजाहू ॥
सुनि अस सत्यसिंधुकर बानी । मनमें बनचर अतिभयमानी ॥
कहिन सकतकछुप्रभु रुखदेखी । कहा करब करतार बिशेषी ॥
सब देवन कर शोच न जाई । जो कर कृपा रामइहिज्याई ॥
दो० राजबिभीषण लंककरकिहिंबिधिकरिहहिंजाइ ।
समुझि बैर घननाद जब गहिहि शरासनधाइ ॥
मुखरुख देखि कपिन भयमाना । प्रणतपालभगवन्तसुजाना ॥
देखि बहुत रघुबर कर छोहू । बिनय करतदशकन्धपतोहू ॥

तुम उदार सब देवे लायक । करुणामय देखे रघुनायक ॥
हमहं बिचारि दीख मनमाहीं । जीवन ते अस मरण सराहां ॥
भुजबल जीति लोक बशकीन्हे । चादह भुवन भोगकरिलीन्हे ॥
रण तीरथ याचक बड़ चीन्हा । प्राणसुधनलक्ष्मणकरदीन्हा ॥
अब न उचित पतिदैडपहारा । तेहिपरअधिकसोदरशतुम्हारा ॥
हमहूं जाइ मरब सत साधी । मिलबतुमहिंजसमिलतसमाधी॥

दो० निर्मल गति अवसरभयउ सुनहुसत्य रघुबीर ।
तुमहिंमिलत नहिंहोयभव यथासिंधु गतिनीर ॥

मन की जाननहार सुजेवा । भवसागर तारहु यह खेवा ॥
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई । मेघनाद शिर दीन्ह मंगाई ॥
पाय कृतारथ मानेउ आपू । पिया बिरह संभव परितापू ॥
अंचल पोंछत मुख की धूरी । कहि ममप्राण सजीवन मूरी ॥
देख संदेह कहत सुग्रीवा । भुजगहिलिखतजीहबिनग्रीवा॥
हंसिहहि बदन तोहिंहै सांची । नातर निशिचर माया यांची ॥
कितअस ज्ञान मृतकभुजगावा । जो मुनिबर साधननहिंपावा ॥
प्रभु असकहेउ हंसबयहशीशा । करत कुतर्कन उचितकपीशा ॥

दो० शिर सों कहतसुलोचना हंसहु वेगि ममनाथ ।
नातर सत्य न मानिहैं लिखा जो तुम्हरे हाथ ॥

क्षणकबिलम्बकीन्ह नहिंबोला । मृतक बदनमूंदतनहिंखोला ॥
पुनिपुनि कहत सो नागकुमारी । श्रमितभयउ रणमेंकरिमारी ॥
लगे लषण शर क्षोभ बढ़ावा । प्रभुसमीप कसमोहिंलजावा ॥
जो मन बचन करम यह देही । पति देवता न आन सनेही ॥
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै । रहहिछाययशसुयश अमोलै ॥
जो जानत तव यह गति साईं । बोलि पठावत पितहिसहाईं ॥
सुनितियबचन हंसेउ तबशीशा । चौंके चकित भालु भटकीशा ॥
हंसेउ ठठाय बदन सब देखा । बिस्मयभयउसकलजिहिपेखा॥
कुलिश समान सुनानहिं जाई । रहेउसो बदनबहुरि अरगाई ॥

सकुच कपीशहि तोषेउ नारी । बड़ आश्चर्य्य भयोबनचारी ॥
पूंछत कपिपति पद शिरनाई । कारण कवन हंसाशिरसांई ॥
प्रभुकह सुन सुग्रीव कपीशा । शीश हंसे कर सुनहु अदीशा ॥
मनक्रम वचनपतिहि सेवकाई । तियहित इहिसमआनउपाई ॥
अस जियजानिकरहिंपतिसेवा । तिहिपर सानुकूल मुनिदेवा ॥
यह सतवंति अहिराजकुमारी । तेहि सतते हंसि शीशसुरारी ॥
सुनिप्रभुवचनकपिनसुखमाना । पुनिपुनि चरण गहेहनुमाना ॥
सुनु गिरिजा अस प्रभुप्रभुताई । केवल भक्तहिं देत बड़ाई ॥
जासु दृष्टि जग उपजत नाशा । असकौतुक कर केतिकआशा॥
दो० शीशपाइप्रभुचरणगहिबहुबिधि बिनयसुनाय।
आजकोदिन रणपरिहरहु ममहितकोशलराय ॥
बहुरि बिभीषणपगन परी सो । रघुपतिचरणदियेमनपुनिसो ॥
तुम पितु सम दशकन्धर भाई । इहिकुलको तोहिंलाजबड़ाई ॥
मुनि पुलस्त्य करि बारकदीपा । पायउ फल रघुबीर समीपा ॥
महा मोह वश अनभल माना । ज्ञानभयो तबगुणपहिंचाना ॥
युग युग करहु अकसटक राजू । सहितसुकीरतिसुकृतसमाजू ॥
सुमिरत तुमहिंसुजनगतिपावा । रघुपति चरितसंगकरगावा ॥
सुनत बिभीषण मनकरुणाभर । प्रकटनकहतसमयविरहाकर ॥
काल कर्म्मगति कह समुझाई । चली तुरत गुरु आयसु पाई ॥
दो० बाहरकरि कपि कटकते फिरेउ बिभीषण आप ।
बिसरेउ दशमुख बैरही हृदय अधिक सन्ताप ॥
शिर चढ़ाइ पालकी चढ़ी सो । रघुपतिकृपा प्रभाव बढ़ीसो ॥
हृदय राखि सूरति घन श्यामा । रसना रटत निरन्तर नामा ॥
सरित सिन्धु संगमजहं पावन । अससुधिपाय गयोतहंरावन॥
संग मदोदरि सब रनि वासू । मनो शोकरबि कीन्हप्रकासू ॥
पाय रजायसु सेवक धाये । चन्दन अगर सुगंध बहुलाये ॥
रचि दृढ़ दारुण चिता बनाई । जनु सुरलोक निशेनी लाई ॥

करिप्रणाम सब जन परितोषी । धीरजधरसि तासुमतिपोषी ॥
शिरभुजधरि बैठी करि आसन । भइ जनुयोगसिद्धिकरभाजन ॥
दो० देख अनलज्वालाबढ़ी लपट गगन लगिजाय ।
लखी न काहू जात तेहि सुरपुर पहुंची आय ॥
इति ॥
सुत बध सुना दशानन जबहीं । संभ्रममूर्च्छिपरा महितबहीं ॥
दुखित भयउलोचनभरिआवा । जनुनिजमणिअहिराजगंवावा ॥
हासुत सन्तत आज्ञाकारी । करि बिलापदशकन्धपुकारी ॥
शक्र आदि जीतेउ सब देवा । सुर मुनिबन्दि करायहुसेवा ॥
दूसर रहा न भुजबल दापा । स्वर्गभूमि तल तपेउ प्रतापा ॥
इहिबिधि कर बिलाप लंकेशा । भयउ तेज हत सुन उरगेशा ॥
मन्दोदरी रुदन करि भारी । उर ताड़ति बहुभांति पुकारी ॥
नगर लोग सबब्याकुलशोचा । सकलकहहिंदशकन्धरपोचा ॥
दो० तब दशकन्ध अनेक बिधि समुझाई सबनारि ।
नश्वर रूप प्रपंच सब देखहु हृदय बिचारि ॥
तिनहिंज्ञान उपदेशेउ रावन । आपन मन्दकथा अतिपावन ॥
पर उपदेश कुशल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥
तासु क्रियाकरि निशिचरनाहा । भयउ शोचबशअतिउरदाहा ॥
सचिव आइ सबलगे बुझावन । बादिबिषादकरियजनिरावन ॥
सुतबितनारि त्रिबिधसुख कैसे । उपजहिंघटा जाहिं नभजैसे ॥
तड़ित बिदितदेखिय घनमाहीं । रहैन थिरतहं तुरत छिपाहीं ॥
यहजियजानिसुनहु दशभाला । बचहिनकोउ जगआयेकाला ॥
अब प्रभु यतन बिचारहु सोई । रिपुकरनाश जवनबिधिहोई ॥
क्षेपक ॥
दो० लागेउ करन बिचारपुनि बहुप्रकार दशशीश ।
समुझिहृदय अहिरावणहिं आयउजहांगिरीश ॥
दण्डचारि तब तहं निशिबीती । सन्ध्याबन्दन कीन्हसप्रीती ॥

लाग्योकरन ध्यान दशशीशा । करि हर्षित संपुट भुज बीशा ॥
शंकर सेवक अति अनुरागी । सुन खगेश तेहिंते बड़ भागी ॥
मंत्रा कर्षण जपि दश भाला । अहि रावणचितडोल पताला ॥
लगेउकरन सो मन अनुमाना । केहिकारणदश मुखअकुलाना ॥
निश्चर नाहभुवन बश जाके । जीतन कहं न बीरकोउ ताके ॥
मन क्रम वचनआन नहिंसेवी । धरेउ ध्यान उर कामद देवी ॥
चलेउ बहुरि आयउसोतहंवां । शिवमण्डप रावण रह जहंवां ॥
निशिचरपतिकहितेहिशिरनायउ । करगहिनिजआसनबैठायउ ॥

दो० अहिरावण तब रावणहिं बूझी कुशलसप्रीति ।
प्रथमकही तेहि सब कथा जैसे भगिनिअनीति ॥

बधखर दूषणजिमि सुधिपाई । मृग मारीच कपट कृत माई ॥
कहेसि बहुरिसीताकर हरणा । लंकदहन हनुमत कर बरणा ॥
सेतुबांधिजिमिप्रभुचलिआयउ । बालिकुमार बिबाद सुनायउ ॥
अनीअकम्पनअरु अतिकाया । परे समरमहि सुनुअहि राया ॥
तातकुशल अबसबइ सिरानी । कटक निशाचर सकलनशानी ॥
कुम्भकरण घन नादहु मारे । राम लषण द्वइ मनुज बिचारे ॥
आनेहु बोलितोहिंनिज पासा । कहहु सुयतन होइरिपुनाशा ॥
सुनतशोचभाअहिरावण मन । बोला बचन सुहावन पावन ॥
सुन रावण जग नीतिपियारी । करे अनीति होय भय भारी ॥
बिना बिचारि रारि तुमठानी । कीन्ह सेन कुल सर्बस हानी ॥
मनुज प्रतापप्रभाव न जानेउ । सबतेबड़ तेहिलघुकरि मानेउ ॥
यदपि नयोग मोहिं असबाता । तदपिहरहुंतवलगिदोउ भ्राता ॥
लै पताल देबिहि बलि दैहौं । यश पूरण निशिचरकुललैहौं ॥
लैजैहौं तुम जानेउ तबहीं । रबिसमतेजहोइ निशि जबहीं ॥

दो० कहि अस बचन प्रबोध करि शीर्ष नाइ वलभाषि ।
आयउ रघुपति कटक तब निजदेबिहिउर राखि ॥

सूझननिजकर अतिअंधियारी । मर्कटभट जागहिं तहं भारी ॥

कहहिंजयतिजयजयतिकृपाला ।अतिहिअगमजहंनहिंगतिकाला
तहं मारुत सुत रचेउ उपाई । करि लंगूर कोटि कठि नाई ॥
सो शोभा इहि भांति सुनाई । भुजगराज कुंडली लगाई ॥
देखिय उन्नत शैल समाना । द्वार जहां तहं मुख हनुमाना ॥
देखि हृदय अहि रावण हारा । किमिरबिग्रहकरतिमिरपसारा॥
एको युक्ति न मन ठहरानी । कपट वेष तेहि कीन्ह भवानी ॥
बेष बिभीषण सब अनुहारी । पवन तनय पहं गाकलकारी ॥

दो० सहज प्रतापी पवनसुत पुनि सुरपति पतिदास ।
तिनहिं निदरचल रामपहं मूढ़ हृदयनहिं त्रास ॥

मरम न जान प्रभंजन जाता । कीन्हेसिगमन विभीषणभांता ॥
ठाढ़होहु बोलेउ सुनु भ्राता । चलेउ जहां कृपाल जनत्राता ॥
मैं रघुपति सन आयसु पाई । संध्या करन गयउं सुनु भाई ॥
तेहितें तुरत चलेउं प्रभुपाहीं । भइ बिलम्ब जनि रामरिसाहीं ॥
सत्य बचनकपिनिजमनमाना । सुनु खगेश भावी बलवाना ॥
कपट चतुरगति जानि न जाई । पर मन हरै हरहि धन भाई ॥
आयसु पाइ गयउ सो तहंवां । रहेफणीशअरुप्रभुदोउजहंवां ॥
कपिपति जामवंत नल नीला । वालीसुत सुखेन बल शीला ॥

दो० द्विविदमयंदरु कीशगण गय गवाक्ष कपिबीर ।
सहितविभीषण अपरभट सोये सब रणधीर ॥

तिनहिं मध्यरावण शशिराहू । एक संग सोवत फणिनाहू ॥
दक्षिणदिशि सोवत रघुनाथा । अनुज बामदिशितेहिपरहाथा ॥
प्रभुकर करपर राजत कैसे । जात रूप पंकज फणि जैसे ॥
कपि समूह जनु सागरक्षीरा । तहं सोये मानहुं दोउ बीरा ॥
शुभग बाण धनु धरे बनाई । लक्ष्मण सह समीप रघुराई ॥
अहि रावणमनकीन्ह प्रणामा । देखि राम सुन्दर घनश्यामा ॥
ब्रह्मादिकजेहिध्यान न पावहिं । मुनि महेश पूजा मनलावहिं ॥
करहिंविविध जपयोगबिरागी ।जपहिंनिरन्तरनिशिदिनजागी॥

सो प्रभुतेहि देखा भरिलोचन । कृपासिंधु सेवक भयमोचन ॥
बहुरिहृदय तेहिकीन्ह बिचारा । करहुंकाज रावण अनुसारा ॥
कछु निजमाया कृतगुण आई । कवनोभांति जाहिं दोउभाई ॥
दो० मोहन ते मोहे सकल मंत्रन ते मुख मूंदि ।
भयउअदृश्य उठाइकरि प्रभुहिचलेउ लैकूदि ॥
यहि बिधिगयउ दुहुंन लैसोई । नभमारग प्रकाश अतिहोई ॥
सो प्रकाश जब रावण देखा । कियप्रमाणतेहिबचनबिशेषा ॥
मनमहं हर्ष करहि अतिभारी । अहिरावण लैगा असुरारी ॥
लै निज लोक गयउ पलमाहीं । भयउशोर तबकपिदलमाहीं ॥
जागे बानर श्रीहत भारी । देखियजिमिसरिताबिनुबारी ॥
पुनिदेखियजिमिनिशिबिनुइन्दू । भेबानर जिमिउड़बिनुचन्दू ॥
रबि बिनुदिवस जीवबिनु देहा । जिमिदेखिय दीपकबिनुगेहा ॥
एकहि एक लगे तब बूझन । कहां गये त्रैलोक्य बिभूषन ॥
दो० शोधेउसबमिलिकटकतिन नहिंपाये दोउबीर ।
भेब्याकुलसबभालुकपि जिमिजलचरगतनीर ॥
सकलकहहिंयहबिधिकहकीन्हा।रघुपतिबिरहप्राणकतलीन्हा॥
शोकग्रसित धरिसकहिंनधोरा । कहां राम लक्ष्मण दोउबीरा ॥
करुणा करहिं कपीश अपारा । बनीबात बिधिकहा बिगारा ॥
कटक निशाचर सकल संहारी । रहा एक रिपु रावण भारी ॥
सोउ न रहत राम शर लागे । भाइउ हमसब परमअभागे ॥
कबहुंजोदशशिरअरिरणजोतहिं । उत्तरकवनदेब हम सीतहिं ॥
असकहि बिकल मूर्छि महिपरे । लागत बज्र शैल जिमिगिरे ॥
दशा बिभीषण कही न जाई । बिगत बत्स जनु धेनु लवाई ॥
दो० सहित पवनसुतऋक्षपति दुखमनभाबड़िभांति ।
खगपतिसूझनकतहु कछु तमअपारतिहिराति ॥
पवनतनय पुनि कह सबपाहीं । बिस्मय एक होत मनमाहीं ॥
कोउ इक आव बिभीषणबेषा । प्रभुके निकट जात हमदेखा ॥

पूछतबचन कहेसि अतिनीका । कपटनजानियनिशिचरजीका ॥
बचन सुनत बोलेउ लंकेशा । अहिरावण लैगा अवधेशा ॥
पन्नग लोक निवासी सोई । मम तनुबेष अवर नहिंकोई ॥
महाबली जानै सब माया । निश्चयतेहि दशशीशपठाया ॥
जेहि बल होइ तहां सो जाई । ताहि जीति आनै दोउभाई ॥
कहेउ भालुपति सुनुहनुमाना । तवबलतात सकलजगजाना ॥
वेगि सो यतन बिचारहु ताता । कृपासिंधु आनहु दोउभ्राता ॥
दो० बिलखिकहेउकपिपतिबहुरि सुनमारुतसुततात ।
बिनुरघुनायकजन्मधिग पलयुगसरिसबिहात ॥
यथातृपित बिनु बारिद बारी । रविबिनुजलजमीनबिनुबारी ॥
भट अशस्त्र रण अनी अनाथा । बह्नि अनिंधन गातसमाथा ॥
दीप अवर्त्ति सकल क्षणभंगी । तिमिहमसब देखियबजरंगी ॥
जिमि सीतासुधि भेषज आनी । तेहिप्रकार आनहु सुखदानी ॥
सुनत बचन मारुतसुत बोला । राखहुचितथिरकटकअडोला ॥
भुवन चारि दश तीनिहुंलोका । आनहुंप्रभुबल प्रभुतजुशोका ॥
अब तुम सजग रहेउ सबभाई । लरेहुकालसन जोचढ़िआई ॥
असकहि सकृतचलेउहनुमाना । गरजतप्रलयपयोधिसमाना ॥
चलत बाट इक तरुतर गयऊ । गीधिनगीध कहतअसभयऊ ॥
दो० नारि गर्भिणी गृध्रकर बोली पतिसन बैन ।
आनहुआमिष मनुजपिय खाउंहोइ जियचैन ॥
तासुबचनसुनि खगअसकहेऊ । अहिरावण रामहिं लैगयऊ ॥
देइहि बलि देविहि सो जाई । सोआमिष बड़भाग न पाई ॥
कवनेउ यतन देब मैं आनी । असकहिबिहगबामसनमानी ॥
जबहिं पवनसुत अससुधिपाई । चलेउ तहां सुमिरत रघुराई ॥
अभय प्लवंग पतालहि गयऊ । अहिरावणपुरप्रविशतभयऊ ॥
द्वारपाल मकरध्वज कीशा । कपिसन डाटिकहतबहुरीशा ॥
निदरिजातमोहिं तोहिंडरनाहीं । दीपहिजिमि न पतंगडराहीं ॥

जानेसिमोहिंनमरुतसुतबालक । स्वामिभक्तभंजनमुखकालक ॥

सो० सुनत बचन हनुमान बोलतभे बिस्मय बिबश ।
अरेमूढ़ अज्ञान मोरे सुत सपनेहु नहीं ॥

कहत बचन शठ संयुत खोरी । कामबिवशकबभइमतिमोरी ॥
ममसुत बनसि मूढ़ केहिकाजा । इतनाकहततोहिंनहिंलाजा ॥
केहिप्रकार तुव ममसुत भयऊ ।निजउत्पतिमोसनकिनकहऊ॥
सुनत कहहि मकरध्वज बचना । किहेउदाह रावणपुररचना ॥
जबआयउचलि उदधि समीपा । बहेउस्वेदतव तनकपिदीपा ॥
सो प्रस्वेद सागरमहं गयऊ । पियउमीन तेहिते मैं भयऊ ॥
यहि प्रकार मैं तव सुत ताता । गोवहुंनहिंनिजपितान माता ॥
अहिरावण सेवा मैं करहूं । राखहुंद्वार न कबहूं टरहूं ॥

दो० सत्य बचन हनुमानकहि पुनि पूछी सब बात ।
लावा लक्ष्मण रामकहं काह करत्त सो तात ॥

कहहु तात तेहि अस्थल नाऊं । जानचहौं मैं तव प्रभुठाऊं ॥
यह वृतान्त अस जानहु ताता । यहमैं श्रवणसुनेउं कछुबाता ॥
सीतापति अरु फणिपति साथा । सोलै आयउ निशिचरनाथा ॥
करत होम तेहि कारण आजू । देबिहि बलि देई नृपराजू ॥
जोकछुनिजश्रवणन सुनिपायउं । तातसकलसोतुमहिंसुनायउं ॥
निजप्रभुकाजलागि दुखसहेऊं । तुमसन सत्यबचन मैं कहेऊं ॥
जानकहहु तुम जान न देऊं । प्रभुआज्ञा तजि अयशनलेऊं ॥
सुनिअस पेलिचलेउ हनुमाना । भयउ क्रोध मकरध्वजजाना ॥

दो० तेहिमुष्टिक कपिकहं हनेउ पुनिमारेउ कपिताहि ।
हनहिं परस्पर एकइक बल समान घटनाहिं ॥

एकहि एक सकहि नहिंपारी । पिता पुत्र दोऊ भट भारी ॥
सुतहि लूम सन बांधि भवानी । चलेउबातसुत बिलंबनआनी ॥
धरि लघुरूप होम गृह देखा । जीव सजीवपरे नहिं लेखा ॥
तहं देबी कर मण्डप रहई । शोणितघट बहुकोकहिसकई ॥

बिबिधि भांति मेवा पकवाना । धरे आनि देवी अस्थाना ॥
मालिनि तहं प्रसून लै आई । सुमनमध्य प्रविशेउकपिराई ॥
सुमनहुं ते करि अति हलुकाई । लेतपानिजेहिजानि न जाई ॥
जब देविहि सो पुष्प चढ़ायउ । बिकटरूपतबकपिदिखरायउ ॥
दो० छुवत चरण देवीतुरत धरणी रही समाइ ।
मुख बगारि ठाढ़े भये कपि छबि लखतडराइ ॥
देवी प्रकट समुझ खल झारी । करहिंबिचार हृदयअतिभारी ॥
कहहिं कि देबि प्रकटभइआजू । बड़भागी भा निशिचर राजू ॥
करि प्रणाम पुनिपूजा करहीं । जो चढ़ावसो कपिमुखपरहीं ॥
जो जहं रही वस्तु समुदाई । बचीन कछू सकलकपिखाई ॥
कपि खिलारि कौतुकबिस्तारा । भाचह निशिचर कुलसंहारा ॥
अहिरावण उर भा सुख कैसे । चढ़े कांध पर बलिपशु जैसे ॥
जबहीं होम सिद्ध तेहि जाना । लक्ष्मण राम तुरततहंआना ॥
ठाढ़ कीन्ह प्रभुकहं तहं आनी । निशिचरबहुआयुधधरिपानी ॥
कोऊ गदा कोऊ धनु बाणा । शक्तिशूल धरिकोऊ कृपाणा ॥
दो० तोमर मुद्गर परशुअसि पासिपरिघ अरुवेत ।
शूल भुशुण्डी पटि परशु देखत बिसरत चेत ॥
माया बलते सकल बिचक्षण । अतिबिकारमय मूढ़कुलक्षण ॥
यहिबिधि सकलबीरतहंरहहीं । अहिरावण आज्ञा दृढ़गहहीं ॥
आयसु पाइ खड्ग तिन्हकाढ़े । मारनकहं प्रभु पर भेठाढ़े ॥
कोउकह राजनीति अनुसरहू । भरित्रयदण्डबिलंबअबकरहू ॥
पुनि असबचन मूढ़मतिकहहीं । सुमिरहुजोतुम्हरेहितु अहहीं ॥
नाहित कालआइ नियराना । निशास्वप्नसमदोउजनप्राना ॥
बोलहिं मूढ़ असम्भव बानी । सकुच लगै सोकहतभवानी ॥
दो० फणिपति चितवत रामतनराम चितवअहिराज ।
प्रभुकर कौतुक कहिय किमि सुनौदशाखगराज ॥
बिहंसिकीन्ह प्रभुहृदय बिचारा । जपै सकल जगनामहमारा ॥

जाना देवि रूप हनु माना। बिहंसिकहा तबराम सुजाना॥
कालु कौर तुमसुमिरहु रक्षक। भई तुम्हारि देवि तुव भक्षक॥
सुनत गिरा तिनमारन ठयऊ। घन समान कपिगर्जत भयऊ॥
निशिचरसकल त्रसितभेभारी। कहहिंवचन भयहृदयबिचारी॥
अहिरावणभलकीन्ह न काजू। आने कपट वेष सुर राजू॥
तेहिते देखि क्रुद्ध कृत आजू। अबभा सबकर मरण समाजू॥
संभ्रम बश तबनिशिचरझारी। बहुरि कीश गर्जेउ अतिभारी॥

दो० प्रकट रूप करि पवन सुत अट्टहास गम्भीर।
अतिभयत्रासित रजनिचर सुनहु उमामतिधीर॥

डगमगान निशिचर अभिमानी। मारुतवेग यथा नदि पानी॥
तेहिक्षण कपिलीन्हे दोउभाई। धुनत तूल निशिचरसमुदाई॥
छीनि कृपाणलीन्ह हनुमाना। काटत भुजशिर कृषीसमाना॥
खण्डखण्ड तबखलदल कीन्हा। गहिपदडारिअनलमहंदीन्हा॥
करि लंगूर कोट कपि राई। तेहिमहंधरिकोउभागिनजाई॥
इहि बिधि सबनिशिचर संहारे। अहिरावण लखि बचनउचारे॥
रे कपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं। अहि रावण तैं जानन मोहीं॥
जम्बुमालकहं जिमितैं मारा। अरु रावणसुत हतेउ बिचारा॥

दो० कालनेमि समनाहिं मैं करु कपि बचन प्रमान।
असकहि खड्गप्रहारकिय कपितन बज्रसमान॥

लै असितारि पवनसुत मारा। काटि शीश पावक महंडारा॥
आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीशा। लै पुनि चलेउलषणजगदीशा॥
मकरध्वज प्रणाम तब कीन्हा। बन्धन छोरि राजतेहि दीन्हा॥
इहां राज भोगहु तुम ताता। भजहुसदा ममप्रभुदोउभ्राता॥
असकहिकपिनिजदलसोआवा। हर्षेउ कटकसबनि सुखपावा॥
मृतकशरीरप्राण जिमिआवहि। मणिगणपाइफणीसुखपावहि॥
बिछुरि अलभ्य मिले जनुआई। तिमिहर्षे सबलखि दोउभाई॥
मिलेउ कपीशचरणधरि माथा। पुनिपद गहे निशाचरनाथा॥

दो० जामवन्त अंगदसहित मिले भालु अरु कीश ।
सनमानेकहि बचन प्रिय लषण कौशलाधीश ॥

बहुरि सबहिं भेंटे हनुमाना । कहहिं तात तुम राखे प्राना ॥
देवन सुमन वृष्टि तब कीन्हीं । प्रमुदितहृदय दुन्दुभीदीन्हीं ॥
अनुज सहित हर्षित रघुबीरा । कहेउबचनसुनु तनयसमीरा ॥
तव समाननहिंकोउहित कारी । सुरमुनिसिद्ध मनुज तनुधारी ॥
यश तुम्हारत्रिभुवनमहं भयऊ । सुनिप्रभुबचनचरणकपिनयऊ ॥
नाथ कीन्ह सब मैं केहि लेखे । तरणी चलत अगम जलदेखे ॥
तैसे सब प्रताप तव नाथा । सुनिअसमिलेकपिहिरघुनाथा ॥
कटक सहित हर्षे दोउ भाई ।तेहिअवसरसुखकिमिकहिजाई ॥

छं० कहिजाइसुखकिमितेहिसमयकर सुनहुगिरिजाचितधरे ।
रघुबीर रुख अवलोकि हर्षित आरती सुर गण करे ॥
अतिप्रेमसों मारुतसुवन यश गाइ बिबुधन अस कहा ।
नरनारि यह कीरति सुनत गावत लहत मंगल महा ॥

दो० करि बहु बिधि हरि आरती बाणी सत्य सुनाय ।
राम चरण अनुरागेउ अमर सुमन झरि लाय ॥

देवनिडरप्रभु गुणगणगावहिं । आरतहरकहं बिनयसुनावहिं ॥
बिबुधबिनयरघुपतिसुनिकाना । कहप्रभु सत्यसिंधु भगवाना ॥
चतुरानन बर दीन्ह अपेला । तेहि कारण यहबाढ्यो खेला ॥
नाहित लषण एक पल माहीं । राखत यातुधान कुल नाहीं ॥
अजहुं होय रण कौतुक भारी । निरखहुतुम सबशोचबिसारी ॥
अब जो रहेउ निशाचर शेषा । भटमहं जासु भुजा कररेखा ॥
तेरणमहि महं हतहुं प्रचारी । बिनुश्रम सबसों कहतखरारी ॥
शंभु कृपा अब संशय नाहीं । सुनिसुर अति हर्षे मनमाहीं ॥

दो० सत्य बचन सुनि रामके आनन्दित सुर यूह ।
चले कहत जय जयति प्रभुबर्षे सुमन समूह ॥

यह चरित्रशुचि सुभग सुहावा । खगपति राम कृपा मैं गावा ॥

अब हिय हरषि सुनहु द्विजराई । मानस कहहुं सुमिरि रघुराई ॥
याज्ञबल्क्य पदबन्दि सप्रीती । भरद्वाज बोले शुचि नीती ॥
यह चरित्रअति रुचिर सुहावा । सुनिममनाथ परमसुखपावा ॥
अहिरावण बधान्त भगवाना । चरित किये सो करहुबखाना ॥
सुनिमुनिबिनयऋषयपुलकाई । बोले हृदयसुमिरि गिरिराई ॥
प्रश्नतुम्हार तातअति पावन । सहजसुभग सज्जनमनभावन ॥
मानस हरि चरित्र सुठिनीका । सुनतकरत जोकोउमन फीका ॥
दो० सोईजग बंचक सुनहु जेहिमानस न सुहाय ।
भवसागरमहं भ्रमतसो अमितकलपचलिजाय ॥
मानससुनत न मनहिंअघाहीं । तासमधन्य अवर कोउनाहीं ॥
धन्यधन्यतुमसनकोउ आना । ललितचरितअतिसुनहुसुजाना ॥
रामलषण दल सहित बिराजे । जयतिरामकहिकपिगणगाजे ॥
राम सैन सुखमा अधिकाई । निगमागम जानेउ बुधभाई ॥
उहां दशानन सब सुधि पाई । दूत संदेश दीन्ह सब जाई ॥
अहिरावणकरबध सुनिकाना । भयउतेजहत अति दुखमाना ॥
बचनबज्र सम लागेउ ताही । संभ्रम मूर्च्छि परेउ महिमाही ॥
कटेपंख जिमि बिहग बिहाला । रंगचीरगत निशिहिम काला ॥
मुखसुखान लोचन जल बहई । बचन न आव शीशधुनिरहई ॥
दो० मय तनया तब आइपुनि बहुप्रकार समुझाइ ।
मान न मूरख काल बश परमक्रोध कहं पाइ ॥
नारि बचनसुनितेहिरिसबाढ़ी । उठि बैठेउ धरि धीरज गाढ़ी ॥
तेहि अवसर मंत्री यक आवा । करि आदर दशमुख बैठावा ॥
सिन्धुर नाद नाम बलवाना । वृद्धज्ञान मय परम सुजाना ॥
सदा बिभीषण करसंग ठयऊ । कबहूं दश मुख सभानगयऊ ॥
आवासो भल अवसर पाई । कहेसि नीतिरावणहिं बुझाई ॥
ज्ञानकथा दशमुख न सुहानी । तब बहिराइबात कह आनी ॥
करिबर नादहृदय असगुनेऊ । प्रभुदुहुताग हृदय पटबुनेऊ ॥

अब यहि कहौंसोसहजउपाई । जेहियहि मूल समूलनशाई ॥

दो० यह बिचारि बोलेउ सचिव सुनहुदनुजकुलराउ ।
धीर धरहु संशय बिगत कहहुंसोकरिय उपाउ ॥

अक्षा दिकन सुतन बल दूना । कस सुरारि मनमानहुं ऊना ॥
सचिवबचनसुनिदशमुखकहई । अब हमरे कुल को भटअहई ॥
अपने मनमहं करहु बिचारा । है नारान्तक तनय तुम्हारा ॥
मूल अभुक्त माहिं भा सोई । दियो बहाइ मरानहिं सोई ॥
शम्भु प्रसाद ताहि कछुभयऊ । पुर बिहवाबल नृपतादयऊ ॥
कोटि बहत्तर एक प्रभाऊ । राजा प्रजा भेद नहिं काऊ ॥
दूत पठाइ बुलावहु ताहीं । जीतिहि सो रिपुरणके माहीं ॥
दनुज अधीश चतुरचर पठवौ । धरहु धीरचित चिंता घटवौ ॥

दो० तासु मंत्र सुनि दशबदन हृदय प्रमोद अमान ।
धूमकेतु कहं बोलि ढिग समुझायउ सनमान ॥

धूमकेतु तुम परम सयाना । लै मम पाती करहु पयाना ॥
बसत जहां नारान्तक राजा । तहां न तात अवर कर काजा ॥
अवसर पाइ हेतु समुझाई । सपदि ताहि लै आनौ भाई ॥
आयसुपाइ चारतहं गवना । यहसुनिबिहंसिकह्योअहिदवना ॥
काकनाथ यह गाथ सुहाई । मोसन तात कहहु समुझाई ॥
नारान्तक उत्पत्ति यथा बिधि । पुरबिहवाबलगा कवनीसिधि ॥
सुमिरि काकपतिउर अवधेशा । मन प्रसन्नकर कह [illegible]केशा ॥
अति सुन्दरशुचियह संबादू । चितथिरकरिसुनिये उरगादू ॥

दो० नख चौगुण बसु ऊनतहं सप्त अकाश मिलाइ ।
इतने निशिचर एकदिन भे रावण पुर आइ ॥

पुर महं उपजेखल एक साथा । तबसुनिहरषा निशिचरनाथा ॥
निजगुरु बोलि चरण शिरनाई । बूझा मुदितसो कलशधराई ॥
भृगुनन्दन तबतेहि सनकहेऊ । आजु बालसब मूलन भयऊ ॥
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं । भये आजुजे तव पुर माहीं ॥

वैसुत सबनिजनिज पितुघाती । मुख देखत सुनसुर आराती ॥
घरराखे धन सहित बिनाशा । होइ अवशिनहिं उबरनआशा ॥
शुक्र बचनसुनि डरे निशाचर । कह करिये अतिबाद परस्पर ॥
निश्चयकीन्हप्रशवशिशुआजू । सौंपिय सिंधहिं अवर नकाजू ॥
दो० सपदि करहु सबकाज यह लावहुबाल बटोर ।
राखे होई हानि अति कह दश बदन बहोर ॥
सेवक दशमुख आयसु पाई । धाये तुरित चरण शिर नाई ॥
रावण आयसु नगर पुकारी । सुनहु सकलपुरनर अरु नारी ॥
आजु अभुक्त मूल भयेबालक । डारहु सागरसबकुल घालक ॥
बोरे सबनि बाल एक ठाईं । भावी बश मधु माखी नाईं ॥
पाय अधार वृक्ष बट बौरा । पावन लगे क्षीर चहुं ओरा ॥
पीवत क्षीर अब्द भर साती । पुष्ट भये खल निशिचर जाती ॥
पुनि सब एक संग तहं जाई । सुरसरि संगम भा जेहि ठाईं ॥
तहं शिवमन्दिर परमसुहावा । सबनिबिलोकिमुदितशिरनावा ॥
छं० शिरनाइमुदितबिलोकि शिवमन्दिरसुहावनपावनं ।
कछुदिनरहेतहंसकलपुनि उठिचलेसुन अहिदावनं ॥
रावणपुरी ते दिशाप्राची कोसशत रस चलिगये ।
बैठेजलधिमहं पाइथल बर शंभु चरणन चितदिये ॥
दो० जानतनहिं उत्पत्ति निज मनमहं करत बिचार ।
गे तेहिढिग जाकर बिदित रबिते छठवीं बार ॥
हरिअरिगुरुनिजशिष्यनचीन्हा । करत प्रणामआशिषादीन्हा ॥
कहिनिजनामसबनिसमुझावा । कुलगुरुजाना बिनय सुनावा ॥
निज उतपति बूझी शिर नाई । भृगुनन्दन सोसकल सुनाई ॥
सुनत अपन वृत्तान्त लजाने । लखिरुख भृगुनायकसनमाने ॥
करा प्रतोष मंत्र गुरु दीन्हा । शिक्षापाइ गमन तिन कीन्हा ॥
ज्ञानलहेउ सब संशय त्यागी । भे बिरंचि पद सब अनुरागी ॥
निराहार बैठे इक आसन । वर्ष सहसतपकिय उरगासन ॥

श्वास धार कृत बर्ष हजारा। रहे ऊर्ध्व मुख बिना अहारा॥
दो० एक पाद पुहमी दिये अपर अंग अनयास।
सबलपुष्टतनमनहरष सपनेहु भूख न प्यास॥
तप अति उग्र बिचार बिधाता। तिनढिगगमने मुखमुसकाता॥
हंसारूढ़ कमण्डल हाथे। श्वेत मुकुटशुचि चारिउमाथे॥
आनन चारि नयन वसु नीके। चारिउ भाल भस्मशुभटीके॥
उपमामयप्रभु सबजगअयना। भाष्योदया सदन बर बयना॥
मांगहु बर जो सब मनभावा। सुनेउसबनिबिधिपदशिरनावा॥
नाथ चहत हम यह बरदाना। हमहिंन कोउ जीतैमयदाना॥
एवमस्तु बिधि कहेउ बिचारी। आनपाणिनहिं मृत्यु तुम्हारी॥
हरिसुत है तुम्हार गुरु भाई। तेहिसन कियोन कबहुंलराई॥
दो० जो तेहिसनकरिहौ समर मरिहौ बचन प्रमान।
एकहि कह बरदान यह दै कह कृपा निधान॥
दियो नरान्तक कहं बरदाना। रहे अपरजे धरि उर ध्याना॥
तिनसनबरम्बू हिबिधिकहेऊ। सुनतप्रमोद सबनिउरलहेऊ॥
सुनिबिधिगिरासबनिकहस्वामी। देहु एक बर अंतर यामी॥
देवासुर संग्रामहिं माहा। जीतहिं हम यहबर सुरनाहा॥
असकहि रहे दनुज शिर नाई। तिनसनकहेउ बिरंचिबुझाई॥
तुम अजीत सबसन सबभांती। बानर भालु त्यागि दुइजाती॥
यहि बिधि सबकहं दै बरदाना। ब्रह्मलोक गे ब्रह्म सुजाना॥
बिधितेलहिबर तिन सुखबाढ़ा। लागे करन बहुरि तप गाढ़ा॥
दो० गिरागिरीश समेत सब जपहिं निरन्तर नाम।
जोरि युगलकर एकपद निशिदिन आठौ याम॥
बिनु प्रयास ठाढ़े सब भाई। क्षुधा तृषा निद्रा बिसराई॥
गुण सहस्र संबत सब ऐसे। गये बीति प्रथमहिं तपजैसे॥
सबनिशीश पुनिअवनी दीन्हा। उभयचरणऊरध कहं कीन्हा॥
जोरे करनिरोध कर श्वासा। जपहिं मंत्र शंकर बर आशा॥

मुनिगण तिनकर साधनदेखी । मनमहं मानत सकुचबिशेखी ॥
हरि इच्छाबल हृदय बिचारी । निरखिचले मुनिजपतपुरारी ॥
अयुत अब्द बीते खग नायक । भेप्रसन्न शिवजनसुखदायक॥
चढ़े बरद हिमसुता समेता । आये तिन तट कृपानिकेता ॥
दो० बोले तिनहिं प्रशंसि शिव मांगहु बरमन भाव ।
नारान्तक करि दण्डवत बोला सुन सुरराव ॥
मैं तप किहेउं दरश तबलागी । नाथदीनजन चित्त अनुरागी ॥
अब मांगत आवत मोहिंलाजा । ठाढ़रहा कहि निशिचरराजा ॥
मांगु सकुचतजि असहर कहेऊ । नारांतक तब मांगत भयऊ ॥
मोहिं बिभव अस देहु गोसांई । भूप प्रजा नहिं परहुंलखाई ॥
पुर अनयास बसहि ममनाथा । यहकहिरहा जोरि युगहाथा ॥
एवमस्तु कहि हर सुर ईशा । गमने भवन सहित बागीशा ॥
शिव प्रसाद नारांतक पावा । अंतरिक्ष पुर सपदि बसावा ॥
पुर बिहवाबल की रुचिराई । कहत कछू इक तुम सनगाई ॥
दो० ऋतु रवि दूने कोटि सों भवन बसे इक ठौर ।
जातरूपमयनगजटित अतिशोभित चहुं ओर ॥
योजन ढाई शत चकलाई । चौंसठ कोस उतंग सुहाई ॥
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुं फेरा । बिस्मय बिश्व कर्म्म मन घेरा ॥
चारि दुवार कुलिश पट रूरे । गढ़ भीतर चौहट निधि पूरे ॥
बणिक पद्मधनतुच्छ बखाना । बन उपबन सरितासरनाना ॥
बसतप्रजा पुर सघनअपारा । नारांतक गढ़ मध्य संभारा ॥
षोड़श कोस कोट चहुं ओरा । मणिमाणिकलागे नहिं थोरा ॥
हय गय रथ खच्चर समुदाई । कहिनजाइखगमृग बिपुलाई ॥
कोटि बहत्तर एकै साथा । बिद्या पढन लगे खगनाथा ॥
दो० हरिप्रेरिततेहि कालमहं दधिबलपहुंचा आइ ।
पुर बिहवाबलनिरखिसो कछुदिनरहालुभाइ ॥
भावीबश निशिचर संगकीशा । वर्ष एक पढ़ सुनहु मुनीशा ॥

गुरु इकबार कहेउ रिसियाई । हतिहसितैं आपन गुरु भाई ॥
बिनुअघसुनिदधिबलगुणशापा । बिदामांगि गवना करिदापा ॥
मारग मिले देव ऋषि तेही । गहे सुकंठ सुवनपग नेही ॥
लखि अशीष दै बूझातेही । दधिबल कवन काजगे जेही ॥
तब नारांतक पुर प्रभुताई । दधिबल नार दमुनिहिंसुनाई ॥
सुनी निशाचर संपति भारी । रहे ब्रह्म सुत हृदय बिचारी ॥
क्षणक देवऋषि कीन्ह गुमाना । बार बार सुमिरे भगवाना ॥
दो० दधिबलते नारद कहेउ सुनहुतात चित लाइ ।
तनुधरिजेहिहरिभक्तिनहिं जन्मबादिजगजाइ ॥
यह बिचारिभजु रामहिं ताता । उपजेव सुनत ज्ञानमुनिबाता ॥
ऋषिपद परसि आशिषा पाई । कपिपतिसुत गवने हरषाई ॥
सपदि कीशतबपहुंचाजहंवां । पयनिधिमध्यरुचिरगिरितहंवां ॥
धवलागिरि तेहि नामसुहावा । सुभगदेखिकपिबरमनभावा ॥
गौरि गिरीश सुमिरि गणराई । कीन्ह निवास बैठ हरषाई ॥
नारद ताहि देइ उपदेशा । गये बिरंचिहि धाम खगेशा ॥
उत दशमुख सुत बिद्या पाई । जहां तहां की बिबिध लराई ॥
बिन्दुनाम इक निशिचरआहा । सोखलरहाबितलथल माहा ॥
सो० अति रणधीर जुझार चढ़ेशक्रपरबलि बिपुल ।
कीन्हेउ समर अपारअब्दएक श्रुतिसन्तकह ॥
सप्तकोटि निशिचर संग ताके । असितमेरुसम खलभटबाके ॥
सुनासीर कोपेउ इकबारा । सब कहं समर मध्य संहारा ॥
भाजि बिन्दु केवल गृह गयऊ । तासुनारिनिशिचर सुखदयऊ ॥
सब निशि भोग कराखलपापी । उपजे बहु बालक परतापी ॥
सप्त कोटि सुत नाना नामा । ऊदर बक्र सकल बल धामा ॥
कोटि बहत्तर तनया जाके । लाजहिंमृगलोचनलखिताके ॥
तिनमहं बिन्दुमती इक सुंदरि । नभचारिनिरतिरूपनिरन्तरि ॥
निरखिबिन्दुनिजमनअनुमाना । नहिंनारांतकसमकोउ आना ॥

दो० यह बिचारि चित बिन्दु तब नारान्तकहि बुलाइ ।
बिन्दु मती आदिक सुता सुन्दर साज सजाइ ॥
सकल सुता इक संग बिवाही । यथायोग्य जेहिकहँजसचाही ॥
नारान्तक सब सेन समेता । करिबिवाहफिरिगयउनिकेता ॥
पुर बिहवाबलु कीन्ह बसेरा । प्रजा सहितसुखकरत घनेरा ॥
जो तियचहिय बिबुधगृहभाई । सो भावीबश निशिचर पाई ॥
नारि पतिब्रत जेहि घरमाहीं । तेहि प्रतापनिजअमर डराहीं ॥
बिन्दुमती बिद्यासम ताता । बुधजन सभाचरित बिख्याता ॥
नारान्तक उतपति मैं गावा । सुन खगेश पुनिचरितसुहावा ॥
पुनिपुनि हरिहर पदशिरनाई । गुरुसन सुनेउसोकहेउबुझाई ॥
दो० चारन दशमुखको तुरत मग चलि पहुंचो जाय ।
ग्रामान्तर योजन दुगल ठाढ़ भयउ हरषाय ॥
तेहि मारुत दिशिकाननभारी । पुरनलेत देखेउ तहँ बारी ॥
सकुचि समीप जाइ भा ठाढ़ा । बूझेसि ताहि धीर धरिगाढ़ा ॥
कवन रीति यहि पुरमहँ भाई । तरुपर चढ़त भूपसुत आई ॥
चारु बचन सुनि सोमुसकाना । कवननगरतु मबसतअयाना ॥
नारान्तक नृपकै यह बारी । तेहिकर सेवक मैं लघुचारी ॥
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा । कछुडरिपुनिनिजमारगलीन्हा ॥
लिये कनक घटसुखमा पूरी । बारिलेन आई तिय रूरी ॥
देखि भयउ तेहि संशय भारी । बूझा सत्य कहहु सुकुमारी ॥
दो० तुम्हरे पुरकह चेरिनहिं रानी कहहु स्वभाव ।
आइउ तुम जलभरन कहँ बोलेउत्याग डराव ॥
दूत बचन सुनि निशिचर चेरी । बोली हँसिकरि एकहि बेरी ॥
नारान्तक दासिन की दासी । हम ताकी दासी बिश्वासी ॥
सदा भरैं यहि सागर पानी । इहँआवहिं केहिकारण रानी ॥
कहिहउ और काहु अस बाता । पैहहु मार मुष्टिका लाता ॥
अस कहि गमनी लै जलनारी । तिन सँग धूम्रकेतु मगधारी ॥

गढ़ भीतर कीन्हेसि पैसारी । निरखे बिपुल कूप सरबारी ॥
नाना गज रथ खच्चर घोरा । फिरतबिलोकत पुर चहुं ओरा ॥
अन्तर गढ़ तेहि चारिदुवारा । तहां न चर पावहिं पैसारा ॥

छं० पावत नहींपैसारचरगति द्वारलगिफिरि आयऊ ।
यहिभांतिरावणदूतघटिकायुगलदिवसगँवायऊ ॥
मनमहँ विसूरत ठाढ़चौहटमध्यसो जब रहिगयो ।
निशिचर निकंदनहोनलगिबिधिताहिइक अवसरदयो ॥

सो० गमनो भूपति द्वार नृत्य करन इक कौतुकी ।
लीन्ह साथतेहिधार गढ़इमिकीन्ह प्रबेशचर ॥

बैठेउ सभा नरान्तक जाई । कोटि बहत्तर संयुत भाई ॥
ब्योम तीनि रस गुणबसु एका । अंकरीति लिखिगुणी बिबेका ॥
बन्दीजन नट कौतुक करहीं । प्रतिदिनकविकोविदउच्चरहीं ॥
रावण दूत सभा मों देखी । मनमहँ चकित भयो बिशेखी ॥
तव चारण मनअस अनुमाना । कोटि बहत्तर रूप न आना ॥
भूषण बसन सुआसन जोहा । देखि सुखद चारण मनमोहा ॥
यामदिवस गत अवसर पावा । नारान्तक कहँ शीश नवावा ॥
दीन्ह पत्रिका पद शिरनाई । कुशल तासु बूझी हरषाई ॥

दो० नारान्तक निज कुशल कहि बूझादशमुखहेतु ।
समाचार गढ़ लंक कर बरणेउ दूत सचेतु ॥

चर भाषित नारान्तक सुनेऊ । क्षणकमाहिंनिजकारणगुनेऊ ॥
पुनिपत्री निशिचर पति बांची । मानी चारबात सब सांची ॥
उठेउ सभाते हृदय रिसाई । गा निज भवन शोचसरसाई ॥
बिन्दुमती कहँ बांचि सुनाई । पितुपर भीर पत्रिका आई ॥
समाचर सुनि कह तेइ नारी । तुम जनि करहु रामसनरारी ॥
गहहु चरण पियअकसरजाई । रसनसुफलकरि बिनयसुनाई ॥
मांगि भक्तिवर प्रेमदृढ़ाई । निर्भय राज करहु गृहआई ॥
नारिबचन तेहि मनहिंनभावा । तव उठि कोटद्वार खलआवा ॥

दो० कहत बजाव निशानघन सजहु सेन चतुरंग।
जन्मभूमि जाबा चहहुं पितु चारन के संग ॥
आयसु दीन्ह नरान्तक राजा । लगे निशाचर सजनसमाजा ॥
अमित बाजि गज उष्टर नाना । रथ खच्चर खेचर बहु याना ॥
नाना अस्त्र शस्त्र गहि पानी । निशिचर अनीन जाइबखानी॥
जे सब संयुत साज सजाई । बिबिध निशान हने हरषाई ॥
कन्तजात निश्चय जियजानी । बिन्दुमती निजचित अनुमानी॥
राम बिरोध न यहि कल्याना । महूं संग अब करहुं पयाना ॥
भूषण बसन सुअंग बनाई । कन्त चरणगहि बिनय सुनाई ॥
सासु ससुर दर्शनहित नाथा । हमहूं चलब प्राणपति साथा ॥
दो० दशमुखसुतसुनि तियबचन हृदय परम सुखमानि ।
कहेउ चलहु सबसखिनसहप्रमुदित छांड़िगलानि ॥
सुनिपति बचन नारि हर्षानी । चली संगलै सखी सयानी ॥
लैदल नारान्तक पग धारा । अमितसेनको कहि सक पारा ॥
बुधजन कहतसुनहु खगराजा। अयुत सतावन बाजन बाजा ॥
धूम्र केतु कहं ढिग संग लीन्हे । अति आतुर गमना रिसकीन्हे ॥
चलत सगुन भलताहि नहोई। गनइन मृत्यु बिबश शठ सोई ॥
तासु पयान जानि दिगपाला। जियमहं संशय करतबिशाला ॥
कोलकूर्म अहिपति अतिडरहीं। पुनिपुनि रामचरण चितधरहीं ॥
समुझि रामबल संशय त्यागी। सुर बिदेश प्रभुपद अनुरागी ॥
दो० नारान्तक लंका तुरत दल समेत नियरान ।
दिगयोजनदल रहेउजब सुनु मुनीश सज्ञान ॥
इहां कृपाल रमेश खरारी । असित जलदसम सेन निहारी ॥
प्रभु सर्बज्ञ नीति हितसेतू । सचिव बोलिकह रघुकुल केतू ॥
सखा बिलोकहु दक्षिणओरा। गर्जत घन आवत नहिं थोरा ॥
उमा राम सब अन्तर्यामी । चरित हेतु बूझाअस स्वामी॥
रामबचनसुनि दशमुखभ्राता। कहहंसि गहिप्रभुपदजलजाता ॥

देवदेव नहिं दलजल बाहा । अहहि नरान्तक निशिचर नाहा ॥
बिहवाबलपुर बसत गुसांई । पठवा तेहि दशकन्ध बुलाई ॥
आवत धूम्रकेतु चर संगा । करत कुलाहल नाद उतंगा ॥
दो० तेहि संग गुणीअनेक प्रभु गावत हनत निशान ।
सेनसंग चतुरंगखल डोलत बिबिध दिशान ॥
कह प्रभाव तेहिसुनि भगवाना । बिहंसेप्रभु बलबुद्धि निधाना ॥
पाइ रामरुख पवन कुमारा । उठेहर्षि हिय गरजि प्रचारा ॥
सहित लषणप्रभु पद शिरनाई । धायेकहि जय जय रघुराई ॥
बातजात निशिचर समुदाई । देखि सपदि ढिग पहुंचेजाई ॥
कटकटाइ गरजे अति भारी । देखेउ इमि आवत बनचारी ॥
बूझेउ दूतहि निशिचर त्राता । यह आवत धावत कोभ्राता ॥
स्वर्ण शैल बिकरार शरीरा । गर्जत प्रलय जलद सम बीरा ॥
तबनारान्तक सन कह दूता । यहै पवन सुत बली अबूता ॥
दो० सिन्धु लांघि लंकाहिदहेसि पुनिहति अक्षकुमार ।
कालनेमि कहं मारिमग लावा मेरु उपार ॥
पुनि अहिरावण सह परिवारा । पैठि पताल सदल संहारा ॥
लैआवा तापस दोउ भाई । आवत अब तवढिग सोइभाई ॥
यहिकर भुजबल अहै अपारा । सुनि रिसानदशकराठकुमारा ॥
चाप चढ़ाइ सुधारेसि बाना । तजनन पाव गहेउ हनुमाना ॥
सोशर धनुष तोरिकपि डारा । पुनि रिसाय उर मुष्टिक मारा ॥
परा दशानन सुत महि कैसे । मिश्र रसातल केगिरि जैसे ॥
पवनपूत बल लूम पसारा । कोटिनरथ गहि तापर डारा ॥
रथ सारथी चूर्णसम भयऊ । बिधिबशतेहि करप्राणनगयऊ ॥
एक दण्ड अतिबिकल खल रहभूतल धुनिमाथ ।
पुनिशठ उठा संभारितन धायउ धनु धरि हाथ ॥
छांडेसि अगणित शायककोपी । क्षण इककीश कटकगा तोपी ॥
राम प्रताप प्रभंजन जाया । करगहि अरिशर तोरिबहाया ॥

देखि पवनसुत की प्रभुताई। बरषत सुमनबिबुधझरिलाई॥
जय जय पिंगअक्ष सुर भाषा। सुनिदशकन्धतनय मनमाषा॥
नारांतक अति हृदय रिसाई। कपि तट पहुंचा आतुर धाई॥
कहकलकीशजोकहु बलधरहू। मोसन मल्ल युद्ध रण करहू॥
गावहिं बिबुध तोरिभुजजोरा। निजउरसहु इकमुष्टिक मोरा॥
लागत ठाढ़ रहै जो बानर। तौजानहुं तव भुजबलआगर॥
सो० हरिसुनि ताकर बात रामदूत रिसिरोंकिउर।
अतिसकोपमुसक्यात क्षणकठाढ़सन्मुखरहेउ॥
तबतेहिकपि कहं मुष्टिकमारा। भयउतड़ितसम शब्दअपारा॥
टरा न तहं ते पग हनुमाना। हृदय ननिशिचर नेकुलजाना॥
दुइ मुष्टिक तेहि फेरि चलावा। तब मारुतसुत कोप बढ़ावा॥
किलकिलाय लंगूर लपेटा। डारि भूमितिन दीन्ह चपेटा॥
बिकलताहिकरि कपिअतिगाजे। भेब्याकुल निशिचरबहुभाजे॥
कोटिन्हनिशिचरकपिकरगहहीं। रामदूत कर कौतुक अहहीं॥
मर्दिमर्दि बहु बारिधि डारे। देखि देव जय जयतिपुकारे॥
एक दंड गत निशिचर जागा। बहुबिधि समरकरनसोलागा॥
छं० लागेउकरनपुनिसमरबहुबिधिनिजसुभटबहुफेरिकै।
खलकोटिकोटि प्रचण्डशायक कपिहिरणमहंघेरिकै॥
रणरंग रंजित बीर मारुतपूत पुनिपुनि गर्जही।
गहि गहि बिपुलदनुजहिं पछारत उरबिदारततर्जही॥
दो० सघनबाहिनी जलजबन जिमिकरिकृतउतपात।
रिपुनहनतति मिबायुसुत बिनुश्रमप्रमुदितगात॥
करत समर आयउ तेहिठामा। जहं नित होतरहा संग्रामा॥
लरत अकेल तहां हनुमाना। धायउ बालितनय बलवाना॥
ता पाछे कपि चमू अपारा। चले कहत जयकृपा अगारा॥
लीन्हे गिरिवरतरु पाषाना। जहं तहं करनलगे मैदाना॥
अंगद आइ पवनसुत पाहां। कहिजयरघुबरसनद्धिजनाहां॥

दोऊ भटइकसंग करि हूहा। हतन लगे अरिसेन समूहा॥
देखत भालुकीश कृतभारी। भागिचले निशिचर भयभारी॥
देखिअनीनिज त्रसित बहूता। भा अति कुपितदशाननपूता॥
छं० अतिकुपितभादशमुख सुवननिजभटनशपथदिवाइकै॥
फेरेउ सबनि करि कोपबोला जात कहहंपराइकै॥
बिधिदीन्ह बिबिध अहारकपिदलखातकसनअघाइकै।
बिनुभालुकपि महिकरहु पुनिहठ धरहुतापस धाइकै॥
दो० सुनिनारान्तक सरुषबच रजनीचरसमुदाय।
लागे लरन सकोप सब माया कपट कुभाय॥
मायातिमिर पसार अपारा। अस्त्र शस्त्र बहु भांति प्रहारा॥
शक्तिशूलबर बिशिष कराला। डारहिं रजतरु शैलबिशाला॥
गिरतऋक्ष कपिलागतशायक।उठहिंबहुरिकहिजयरघुनायक॥
निजदल बिकलबिलोकिखरारी। सत्यसिंधु इकशर संचारी॥
रिपुशर काटि तिमिरकरि दूरी। प्रभु शर हतेनिशाचर भूरी॥
हरि निषंग महंपुनिसो तीरा। प्रबिशे आइ सुनह मुनिधीरा॥
निरखि प्रकाशभालुअरुकोशा। गहिगिरितरुकहिजजगदीशा॥
निशिचर अनी मध्यगे जबहीं। दिये डारि गिरिरजतरुतबहीं॥
दो० मरेतमीचर कोटि षट जानि निशा परिवेश।
दलयुत अंगद पवनसुत चले जहांअवधेश॥
अंगद हनुमदादि कपिभालू। आये जहं रघुबीर कृपालू॥
प्रभुहि बिलोकि चरणशिरधरे। भेश्रम रहित सकल सुखभरे॥
अतिआदर प्रभुकिय सनमाना। सबकहं बैठन कहभगवाना॥
पुनि रजाइलैं थल निशिधाये। छबिबारिधिप्रभुपद शिरनाये॥
अंगद हनुमत निकट निवासी। रामचरण सुखमां गुणरासी॥
दोउभट करपरसत प्रभुपाऊ। देखिसुरन मनभा अतिचाऊ॥
हमहुं होतजग कीश स्वरूपा। पदगहि नित्त रहतनर भूपा॥
हरिनसिहाहिं सुमन झरलाये। निजनिजआश्रमअमरसिधाये॥

दो० बन्धु सचिव सेना सहित शोभित श्रीभगवान ।
तुलसिदास ते धन्य नर जे यहि ध्यान लुभान ॥
उत नारान्तक सेन समेता । गयउजहां दशकन्ध निकेता ॥
सुतहि सुरारि मिला पुलकाई । कुशल बूझि बैठेउ हरषाई ॥
देखि नरान्तक कै समुदाई । दशमुख शठ सब शोचदुराई ॥
जेहिंबिधि हरिलावा जगमाता । ताहिआदिकृत कृतबिख्याता ॥
कुम्भकरण घननाद निपाता । कहिंबिलखाअहिरावणघाता॥
पितु मन मलिननरान्तकदेखा । बोलाखल उर गर्ब बिशेखा ॥
तजहु सकल संशय बिबुधारी । करिहहुं प्रातसमर अतिभारी ॥
चमूकीश बिनुक्षितिकरि ताता । धरिहौं तापस होत प्रभाता ॥
छं० धरि आनि तापस भ्रात दोउपरभात बार न लाइहौं ।
धरिधरि बिपुल कपिभालुदीननिशाचरन अघवाइहौं ॥
भुजबलकहहुंनिजनहिं बहुतकरिरिपुनप्रकटदिखाइहौं ।
बिनु श्रमहिं तातनको बयरलै तव चरण शिरनाइहौं ॥
दो० सुनत बीसभुज सुत बचन बारबार उरलाइ ।
लाग करावन नृत्यजड़ गुणी समूह बुलाइ ॥
बिन्दुमती आदिक रनिवासू । सब चलिगईं मँदोदरि पासू ॥
सासुहिं मिलिबैठीं सब नारी । मयतनया करि आदरभारी ॥
बूझि परस्पर रावण घरनी । प्रभु यशताहिसुनायउबरनी ॥
देइ पतोहुन बास सुहावन । आपु लगी सुमिरनजगपावन ॥
शयनकरहु कहसुतहिनिशाचर । उठोआपुमतिमन्द अघाकर ॥
गा तेहि भवनकुटिल दशग्रीवा । जहँमयतनया सद्गुणसीवा ॥
आयउ पिय मन्दोदरि जानी । पाइसुअवसर गहिपगपानी ॥
पिय सुनायअतिकोमलबयना । लगीकहनजलभरियुगनयना ॥
दो० नाथ निगम आगमबिबुध कहतप्रकट यह बात ।
बुधजन सो जो आधेहू राखै सरबस जात ॥
तजहि न हठशठ सरबस खोवै । यद्यपि अन्त शीशधुनिरोवै ॥

सो बिचारि प्रभु परम सुजाना । मोरबचनसुनिकीजियकाना ॥
अजहुं करहु हठ दूरि गोसांई । अनुजभांतिमिलियेप्रभुजाई ॥
प्रथमहिं सीतहि देहु पठाई । पुनि तुम गवनहुपुत्रलखाई ॥
प्रभु पद गहि मांगहुबर येहू । पदपंकज रति बिमलसनेहू ॥
प्रियाबचनतेहि बिषसम लागा । सोगृहतजिगाअनतअभागा ॥
निजनारीकहिकटुअभिमानी । कीन्हशयननिशिगइबड़िजानी ॥
सो रजनीगत भयउ प्रभाता । जागे रघुबर त्रय जगत्राता ॥
दो० ऋक्षकीश जगदीश पद शीश नाइ रुख पाइ ।
धरिगिरितरुधावत भयउ कहिजयजय रघुराइ ॥
कपि घेरागढ़ यह सुनि काना । रावणसुतलखिनिपटरिसाना ॥
साजि बिपुलदलहनतनिशाना । गढ़तेचला निकरि बलवाना ॥
चारिद्वार करि कठिन लराई । बिशिषबरषिकपिदलबिचलाई ॥
निकरे निशिचर गढ़ते कैसे । शलभ समूह शैल ते जैसे ॥
मारुतसुत देखा कपि भाजे । कटकटाइ मति बिक्रम गाजे ॥
कपि लँगूर चहुंओर भँवाई । रोंकेखल निशिचर समुदाई ॥
पटकतमहि निशिचरफलदेलू । केतिक देतबिदिशिदिशि मेलू ॥
इकदिशि इमिहरिकृत संग्रामा । दिग दूजो अंगद बल धामा ॥
दो० निशिचर सेना उदधिसम मन्दर इव दोउ कीश ।
मथत देखि जय रतन लगि हंसे बिबुध सुरईश ॥
छं० इमिनिरखिपराक्रमकरतकीश भाक्रोधपरमरजनीचरीश ।
करिप्रलयकशठनेघोर शोर धरकुधर शस्त्र धाये कठोर ॥
इकबारमारकरशरसमूह किर्यबिकल अस्त्रहनिकीशजूह ॥
कोउटेरतकपिपतिचितउचोटकोउसुरतिकरतनिजधामओट,
बहुचलेकन्दरा शैलताक कोउदबकत इतउतपातझाक ॥
कोउदेत दुहाईलषणराम कोउकहतबिधाता भयोबाम ॥
यहिबीचनरान्तककरप्रधानतेहिधायगहेउयुवराजपान ॥
बहुभट लपटाने अंग संग सब संग उठेउअंगद उतंग ॥

नभकीशकीन्हकौतुकअभूत रबिमंडलपहुंचेउबालिपूत ।
अँग गारे जारेतपनि आंच पुनिआयउजहंसंग्रामराच ॥
यहनिरखिअपरयूथपपिशाच तुरआइगयेउसेनासमाज ।
लैबिषमशूलमारेसिप्रचण्ड उरलागिआनि अतिकठिनदंड ॥
महिपरेउ तनयतारा तुरन्त लखिदौरिपरेउ हनुमन्त सन्त ।
सोइशूलखैंचि मारेउप्रचण्ड होइगिरेउयूथपति सहसखंड ॥
सबचरितसुनेउरबिकुलदिनेश कहजाहुबेगि अहिराजशेश ।
चलेनाइ माथशंकरमनाइ धनुबांधिबांधि बिकराललाइ ॥
उरअंगदकरधरिसुमिरि रामश्रमबिगतभयउबलअतुलधाम ।

दो० बिगत भईमूर्च्छा तुरत बहुरि चलेउ युवराज ।
लक्ष्मणचाप टकारसुनि फिराकीश दलसाज ॥

सुनत टकोर शरासननिशिचर । बधिरभयेनहिंसुनतशब्दपर ॥
बर्षा बिशिष कीन्ह अहिनाथा । काटे पाणि पायँ बहुमाथा ॥
उड़हिं अकाश शीश भुज कैसे । धुनकत तूल रोम गण जैसे ॥
रुण्ड अशीशफिरहिं रणधरणी । यथा अकाल क्षुधारतकरणी ॥
इतकपि भालुबिजय अभिलाखे । उतहिंनिशाचरजयहितराखे ॥
मारुत सुत अंगद बल बीरा । समर बांकुरे अति रणधीरा ॥
सिंहनाद कीन्हा हरि दोऊ । भाजे कपि रण गाजे सोऊ ॥
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं । प्रमुदितभट कायरहियडरहीं ॥

छं० कायर डरहिं प्रमुदितसुभटसबलरत हारि न मानहीं ।
जहँतहँ गिरैं पुनिउठि फिरैं दुहुंओर जयति बखानहीं ॥
कौतुक बिलोकत बिबुधगण बिस्मयहरषउर आनहीं ।
रघुबीर सेननिपर सुमन झरि लाय बिनती ठानहीं ॥

दो० अति अद्भुतकरणी करहिं ऋक्षकीश बलभूरि ।
कर पद बिनुकर रैनिचर तिनमुख डारहिं धूरि ॥

बहुतनिके शिरतोरिचलावहिं । निजभुजबलरावणहिंजनावहिं ।
गये याम युग दिवस भवानी । नारान्तक अबसेन सिरानी ॥

मरे निशाचर अमित निहारी । रावणसुवन कोप करिभारी ॥
रथ समेत ऊपर नभ जाई । भयउ अदृश्यअस्त्र झरिलाई ॥
क्षणमहंकरिमूर्च्छितकपिसैना । पुनिशठगा जहँ राजिव नैना ॥
गरजा मनहु मेघ समुदाई । कहनलगा कटु बचन रिसाई ॥
होसिसजग निश्चरकुलद्रोही । बन्धुबैर लगि मारहुं तोही ॥
प्रभुकहँकटुककहतसुनिकाना । कोपेउ जामवन्त बलवाना ॥
दो० शूल एक तेहि छांड़ेऊ सो कर गहि ऋक्षेश ।
धाय तासुउर मारेऊ भाषि जयति अवधेश ॥
लागत शूल सो मूर्च्छितभयऊ । जामवन्त तबकरगहि लयऊ ॥
बार अमित महिमाहँ पछारा । बांधि गाड़ि बारू महँ डारा ॥
जागे सकल बली मुखऋच्छा । लगेकरनरणनिजनिजइच्छा ॥
जामवन्त यह हृदय बिचारा । मरै नहीं यहखल ममभारा ॥
बिधि इच्छाएनितहि इखारी । मुष्टिचारि उरमाहिं प्रचारी ॥
गहि पद संचारा गढ़ माहा । सपदिपराजहँ निशिचरनाहा ॥
दशौबदन हाहा करि धावा । नारान्तकहि हृदय तब लावा ॥
निरखि निशाचर गणसमुदाई । गढ़कहँगे सब संभ्रम धाई ॥
दो० कपिगणसमय प्रदोषलखि रामचरण धरिमाथ ।
ठाढ़ भये सब तन चितै दया दृष्टि रघुनाथ ॥
बिनुश्रमकीन्हसबनिजगदीशा । गये सुवास भालु अरु कीशा ॥
रुचिरासन आसीन रमेशा । ढिग बीरासन उरग नरेशा ॥
अंगद मारुत सुत प्रभु चरणा । लागपलोटनसुनहु अपरणा ॥
पुण्यपुंज अरु भाग्य निधाना । जिनपर नितप्रसन्नभगवाना ॥
वहां सुरारि सुवहिं पौढ़ाई । बिलखहिंतासुनारि समुदाई ॥
होत प्रभात नरांतक जागा । पितुबिलोकि लज्जारसपागा ॥
रथचढ़ि तुरत इकाकी धावा । नभपथसमरपुहुमि महँआवा ॥
कीश कटक यहमर्म न जाना । होइ लोपकीन्हेसिझरिबाना ॥
दो० धावहिं व्योमहिं भालुकपि ताहि न हेरैं नैन ।

घायलहोइ होइगिरहिंमहि भाषहिं आरत बैन ॥
बाण एक शत तड़ित समाना । छांड़ेसिशठजहंकृपानिधाना ॥
लागत बिएल कीश मुरझाने । बहुतक कायर देखि पराने ॥
भागि सेतढिग एक अयाना । टेरे फिरहिं न सुन हरियाना ॥
मारुत सुत अंगद सुग्रीवा । कुमुद मयंदद्विबिद बलसीवा ॥
ये सब वीर हांक दै धावहिं । नभपथ ताहि न खोजतपावहिं ॥
तब सब वीर एक मत ठाना । लैगिरितरुकियलंक पयाना ॥
दशमुख भवन तासु कंगूरा । बैठे कपि पसारि लंगूरा ॥
कर ते डारि देहिं पाषाना । बहुत दनुज भे चूर्ण समाना ॥
छं० भे चूर्ण निशिचर यूथ । गै निशिचरी भय गूथ ॥
मुखबीन आरत दीन्ह । भइ भवनरावणलीन्ह ॥
सुनिबोलिभट दशभाल । कहखाहुकीशकराल ॥
करि यत्न भागैं कीश । असकहेउबचदशशीश ॥
मम लहहु आयसु बीर । तुमहौ सकल रणधीर ॥
सो शूर मोकहं प्यार । जो खाय मर्कट धार ॥
जो जाय आयसु छोर । सोइजानिहौं रिपुमोर ॥
दो० एतु एतु गुण रजनिचर एक एक भुज जोर ।
रावण पांवन राखि शिर धाये करि रव घोर ॥
देखि लँगूर सकल हरषाने । मधुमाखी सम सब लपटाने ॥
कपि उर सुमिरिरमेश प्रतापा । डारे सबनि पटकिकरिदापा ॥
काचेघट सम दनुज बिदारी । जयतिराम जयलषणखरारी ॥
सुभटछुहनि पुनि फेरि लँगूरा । भूमि गिरावहिंकोटि कंगूरा ॥
अति बिशालगहि कंचन खंभा । जिमिप्रयासबिनु करुआरंभा ॥
लै ढाहत अपक्क घट जूहा । कपितिमितोरत दनुजसमूहा ॥
पुनि बिचारकरिहरि भटधाये । निशिचरनिकरमध्यचलिआये ॥
करि कोटिन बिनुनासाकाना । कर पदहीन कीन्ह रिपुनाना ॥
छं० रिपुकीन करपदहीन अगणित दीन बचन पुकारहीं ॥

गढ़तेनिकर निशिचरअखिलखलबिपिनबाटसिधारहीं ॥
पीपर परणसम घरणि लंका कम्पषट कीशनिकरा ॥
तोरे कपाट निपाटि अरि तिय केश खेंचत गहिकरा ॥

दो० भयउ कुलाहल लंक अति नारान्तक सुनि कान ।
नभते स्यंदन सहित शठ प्रकटिपरम रिसियान ॥

निरखि दशा निज नारिनकेरी । कहनलाग कटु गिराघनेरी ॥
शठ आयउ संग्राम बिहाई । लरततियनसँगलाजन आई ॥
अबलन पै बल भट न कराहीं । छांड़हुतियन लरहुममपाहीं ॥
सुनि मरकटान भयउसुखभारी । तजी निशाचरि दीनदुकारी ॥
भाजिभवनभयहुत गहि नारी । लीन्हकपिनकरशिलाउपारी ॥
शिल प्रहार हय स्यन्दन भंजा । आयुध तोरि सारथी गंजा ॥
धरि पछारि रावण हग देखा । कौतुककीशनिकीन्हबिशेखा ॥
लागे पदगहि खलन फिरावन । नाचहिं गाइ रामयश पावन ॥

दो० तोरत तिन तन पटकि महि कहत जयति रघुबीर ।
करत युद्धगत याम युग कीश छहैं रणधीर ॥

अस्ताचल रबि कीन्ह प्रवेशा । बन्देचरण जाइ अवधेशा ॥
श्याम सरोरुह प्रभु तनु देखी । पदधरिशिरसुखलहेउबिशेखी ॥
राम सबनि सादर सनमाना । को दयालु रघुबीर समाना ॥
कह प्रभु होहु थलनि आसीना । आयसुपाइ भये श्रमहीना ॥
भये बिगत श्रम बानर भालू । अनुजसहितमनमुदितकृपालू ॥
सुनहुउमा ता निशि रघुनायक । गावतजनगुणसबगुणदायक ॥
याम तीनि यामिनि गत जबहीं । उतनारान्तक जागेउ तबहीं ॥
शोच बिवश मींजत दोउ हाथा । लज्जितहृदयनिशाचरनाथा ॥

छं० लाजकै रथै संभारि बाजि साजि रुष्ट पुष्ट ।
शंकछांड़ि शस्त्र मांड़ि गाढ़वीर संग दुष्ट ॥
भेरि दुन्दुभी निशान गान काड कैत कर्त ।
धीर बीर अग्र गौन गाजि गाजि शब्दभर्त ॥

जीवं आश त्राश नाश बाज मोह खण्ड खण्ड ।
बंक शूर शंक दूर बीरता सपूर चण्ड ॥
बाजि नाग शोर घोर पूरिगे दशौं दिशान ।
धूरि पूरि मेघबोध शोधना परो अपान ॥
कूदि कूदि ब्योम पन्थ जाइ आइ जाइ भूमि ।
अस्त्र शस्त्र काढ़ि काटि क्रुद्ध क्रुद्ध झूमि झूमि ॥

दो० प्रलय मनहुंचाहत करन अनी तमीचर चण्ड ।
सुनु खगेशमर्कट बिकट जिमि धाये बरबण्ड ॥

छं० निहारि हर्ष कीश ऋक्ष फूलि फूलि शैलभे ।
बजाइ कटकटाइ हूह एक बारकै अभे ॥
उपारि भूधरा अपार वृक्ष अश्म शृंगहू ।
मरे निशाचरानि रुण्ड झुण्ड शुण्ड भंगहू ॥
रदी हरी मृगावती सवार उष्ट्र मण्डहू ।
मनो विचित्र बाहिनी दई मनोज खण्डहू ॥
हलै धरा बलै बिचारि भार धारि को सकै ।
सुनै पुकारि जयति राम शत्रु से नहीं धकै ॥
लंगूर शूलसे अकाश भीत उच्च औचर्यो ।
गिरै पयोद पौनते झपटि भेटते कर्यो ॥

सो० शब्द करत अतिघोर इमि पहुंच्यो दलभालुकपि ।
आयुध झरि अतिजोर परै लागि घनप्रलय सम ॥

सजगहोन कपि भालु न पाये । अतिशयनिकट तमीचरआये ॥
असितनिशाचरअतिअँधियारी । तापर करैं शत्रु कै मारी ॥
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे । जहँ तहँ एकनि एक पुकारे ॥
सम्मुख कोउ न करत लराई । कपिनमारिरणभूमि सोवाई ॥
गे अनेक भजि सिंधु समीपा । सेनविकललखिरघुकुलदीपा ॥
सजि शारंग तजा इक बाना । भाप्रकाशदिगतरणिसमाना ॥
लखितमबिगत भालुकपिहरषे । कटकटाइ धाये रिपु धरषे ॥

भिरे एक सन एक प्रचारी । लागे करन कठिन हठभारी ॥
दो० शीशशिलातरु करन धरि कांखन भरिभरिधूरि ।
गरजे भालु बली बदन धाय धाय नभ दूरि ॥
डारहिंगिरितरुनिशिचरशीशा । दधिघटसमफोरहिं भटकीशा ॥
चढ़हिं अनेक कन्धपर जाई । कार्टहिं कान दृगनिरजनाई ॥
तोरहिं शूल चाप नाराचा । अरिदल अस्त्र न एकौ बाचा ॥
शस्त्रहीन रिपु सेन पराई । देखि पवनसुत हँसेउ ठठाई ॥
बैठि अवनि अति लूम लफाई । अति उतंग दीरघ चौड़ाई ॥
तर्कित खसे निशाचर कैसे । पक्षहीन नभ ते खग जैसे ॥
गिरतकीशगहिचरणफिरावहिं । पटकिभू मिगाड़हिँ बिहँसावहिं॥
तुम्बरिसमअगणितभुजतोरत । अगणित रुण्ड सिंधुमहँबोरत ॥
दो० कोटि बयालिस तमीचर नारान्तक करघात ।
रामकृपा बलहति खलनि कपिनबिताईरात ॥
प्रभु तुणीर महँहरिशर जबहीं । प्रविशेंकीन्ह उदय रबितबहीं ॥
देखिकटक निजपरमबिशाला । नारान्तकभटकोटि कराला ॥
करिबहु शपथ लिये सँगवीरा । बर्षत शक्ति उपल गणतीरा ॥
शर अस्तंभन बिपुल पनारे । भयेअचलकपिटरहिं न टारे ॥
लै लै पाश निशाचर धाई । बांधत जिमि चुंगलिशुकपाई ॥
व्याध पींजरा सम बहु याना । भरेयान प्रतिअयुत प्रमाना ॥
जेकपि लखैं बिपुल बल बंका । ते मुर्च्छित फेंकें गढ़ लंका ॥
रावण देखि तनय की करणी । बन्दीजन जिमिभुजबलबरणी ॥
दो० हरि इच्छा जानै न कस सुतहिं सराहत मूढ़ ।
कालबिवशमतिसंभ्रमित सुनहुऋषयबुधिगूढ़ ॥
अंगद हनूमान जब जागे । नारान्तक सन जूझन लागे ॥
क्षण इक कीश न पायउ लरई । पुनिशर हति मूर्च्छा बशकरई ॥
याम युगल तेहिकर बरदाना । राखेउ तेहिकारण भगवाना ॥
रिपुहि खिलावत रघुकुल केतू । पालक बुधि बानी श्रुतिसेतू ॥

सो युग याम गये जब बीती। तब रघुबीर सजी जय रीती॥
हांक देइ कपि भालु जगाये। भये बिगत मूर्च्छा सब धाये॥
हनूमान अंगद जब जागे। राम लषण चरणन अनुरागे॥
प्रभुपद शोश रहे धरि कीशा। तब हँसि बोले श्रीजगदीशा॥
सो० विधि बाचा लखिआज तात तुमहिं मूर्च्छाभई।
पुनिकर्हिप्रभुरघुराज अबश्रमसपनेहुंअनतनहिं॥
तुमहिं सुमिरि अंगदहनुमाना। जिति हैं जगतमनुज संग्रामा॥
असवर जबहिं रमापतिभाखा। सुनतगिरा हरषे मृगशाखा॥
कहेउ बहोरि बचन रघुबीरा। सुनुअंगद हनुमत रणधीरा॥
तात तुरततुमउभय सिधावहु। लंकगये कपि तिन्हैं छुटावहु॥
सुनिदोउभटगहिशैलबिशाला। सुमिरि कोशलाधीश कृपाला॥
शपदि कीश गढ़ पर चढ़िगये। देखि लंक महँ खरभर भये॥
सकल कपिन कै मूर्च्छा बीती। तोरि पाश भजिरामसप्रीती॥
वायु सूनु युवराज निहारी। हरषे कहि जयजयति खरारी॥
दो० मेषवरूथहिपाइजिमि वृकगणकरहिं शिँगार।
तिमिमर्दहिंदनुजनसुभट्ट कीशभालुबरियार॥
याम एक बासर अवशेखा। कह अंगद कीशनतन देखा॥
चलिय तात अब जहँ सुरभूपा। देखिय पद पाथोज अनूपा॥
अंगद बचन पवनसुत भाये। शपदि सहितदलप्रभुपहँ आये॥
निशिचरकोटि नरान्तक संगा। करतर हे बहु बिधि रणरंगा॥
मायाकरि निजगातबचावहिं। जहँ तहँखलरावणयशगावहिं॥
अदितिनन्दलखितिनकरिमाया। सभय भये जाना रघुराया॥
दीन नाथ अनुजहिअनुशासन। उठेनमितगहिविशिषशरासन॥
अहिपति कहेउ तिष्ट क्षणएका। तैं कीन्हें रण खेल अनेका॥
छं० तैंकीन्हखेलअनेकबिधि अबतिष्ट खलरणभूथरा।
इमिकहि अहीशचढ़ायधनुशरकरननिशिचरदलमला॥
निजअनीनिरखिनिदानहरिहरसुवन धावारिसि भरा।

डारतअनेक नराच प्रभुपर शिला तरुवरभूधरा ॥
रघुबीरअनुजप्रवीर खलबलदलनश्रुतियशगावहीं ।
तरुउपलगिरिअरितीरउपरहिबाणलषणचलावहीं ॥
रिपुशस्त्र अस्त्रअनेकआयुधकनक करिकरि डारहीं ।
सुरगणप्रफुल्लितसुमनझरिकरिजयति लषण पुकारहीं ॥

दो० मायापति के अनुज सन माया करत अथान ।
लगत न एकौजानिजिय तबखलनिकटतुलान ॥

हनालषण उरपविसमशायक । लगतगिरेरणमहिअहिनायक ॥
पुनिखल दलभाप्रबलअपारा । भक्षण लाग भालुकपिधारा ॥
चले पराय कीश भयभीता । अब न बचब करिकालप्रतीता ॥
निशिचरधारिभालु कपि वेखा । लागे खान कपिन असदेखा ॥
कपिडर कीश भालुडर ऋक्षा । आपुआपुभयमिलन अनीक्षा ॥
कोउन काहु निकट नियराई । जो जेहिपाव ताहितेहिखाई ॥
पुनि शठसाधि बिभीषण रूपा । गहिअंगद हनुमत कपिभूपा ॥
काहु न यह माया कछु जानी । कपट मिलापबिभीषणठानी ॥

दो० तेहि अवसर जागे लषण देखे सेन विनाश ।
अहिरावणछलपवनसुत समुझतउड़ाअकाश ॥

गरजेउ जाय भयंकर भारी । फटेउहृदयसुनिनिशिचरझारी ॥
माया हत शर लषण पवारा । उघरे कपट कपाट अपारा ॥
नारान्तक कै माया बीती । गयउ यज्ञशाला अतिप्रीती ॥
खोजिसि सकल समग्री ताकी । कीन्हअरम्भविजयनिजजाकी ॥
यज्ञ आसुरी तेहि तब ठाना । पशु समूहबलिकारणआना ॥
भये निशा सुख श्रम वशसेना । फिरसुमिरि सबराजिव नैना ॥
तुरित अहीश राम पहँ आये । सहितअनी प्रभुपदशिरनाये ॥
कृपा अयन निरखे मृगशाखा । प्रभुश्रमछीनदीनअभिलाखा ॥

दो० टिकहुथलनिसबसेनकहा सुखसागररघुनाथ ।
पाय सुआयसुभालुकपि चलेसुमिरिश्रीनाथ ॥

तब रघुराज अनुज उर लावा । निज आसन समीप बैठावा ॥
मघवा सुत सुत अरु हनुमाना । इनसम भाग्यवंतनहिं आना ॥
अमलाम्बुज पदगहि निजपानी । परशे सबनि सनेह भवानी ॥
जामवंत लंकेश हरीशा । प्रभु समीपसबमुदित मुनीशा ॥
अनुज सखा नारान्तक करणी । युद्ध प्रबलता बहुबिधिबरणी ॥
शिव प्रताप तेहिअमित प्रतापा । मरण न दीन्हे बहु सन्तापा ॥
सुने बचन रघुपति मुसकाने । अतिसनेह हरिचरितबखाने ॥
सुनहु सकल हमशम्भुनआना । जिनहिं भेद ते बश अज्ञाना ॥
दो० जेसुमिरहिं शिव सहउमा ते जानहु मम प्रीय ।
शंकरभजहिंसोमोहिंभज मोहिंसो शंभुअतीय ॥
चारि पदारथ करतल ताके । बसहिं महेशउमा उर जाके ॥
जो ममप्रण शिवसदा निबाहा । सो जयदेब न संशय आहा ॥
सुख कलत्र जयबिजय बिभूती । शंकर सुमिरत होइ अकूती ॥
भक्ति मोरि शंकर आधीना । जलाधीन जिमि जीवनमीना ॥
कह आश्चर्य नरान्तक एहा । मोपर गिरिपति परमसनेहा ॥
सुमिरहु सदा विश्व इकसाथा । कपटत्यागि नावहु सबमाथा ॥
होइहि बिजय धीरमन धरहू । बेगि उपाव पाव सुख करहू ॥
शंभु उपासन कर मम दासा । तात हृदयधरि दृढ़ बिश्वासा ॥
दो० जो नरचाहत भक्तिमम सो छल कपट दुराइ ।
शिवा समेतगिरीशपद निशिदिन रहु मनलाइ ॥
मन क्रम बचन शम्भुपद आसा । करहिंताहिउरसबगुणबासा ॥
निर्भयकर जो हर पद नेहू । ता उर रमा सहित ममगेहू ॥
भववारिधि लांघहिंबिनु खेवहिं । यहबिचारिबुधजनभवसेवहिं ॥
भव भंजन यह हित उपदेशा । अनुजहि सखहिबुझावरमेशा ॥
ध्रुवबाणीसुनि अति सुखपावा । अहिपतिरामचरणशिरनावा ॥
अंगद हनूमान नल नीला । कपिपति अरुऋक्षेश सुशीला ॥
सहित बिभीषणराजन साता । सुनश्रीसुखहरयश बिख्याता ॥

रामहिं शिवहिं एक जे जाने । भय तजिनाम जपत हरषाने ॥
दो० कहतसुनत इतिहासशुचि निशिबीती युगयाम ।
खगपति आरतिदेवऋषि जितशोभित श्रीराम ॥
राम लषण सुख सीव बिराजे । मार अपार निहारत लाजे ॥
निरखिमानि मुनिहृदय सनाथा । उठेहरषि प्रभु रघुकुलनाथा ॥
शीश नाइ प्रभु आसन दीन्हा । आशिषपाइहरषिहितकीन्हा ॥
मुनि नीके हरि रूप बिलोका । यथाइन्दुलखिसुखलहकोका ॥
पुलकि गाततब कहऋषिराजा । सुनहु नाथ आयउंजेहिकाजा ॥
चतुरानन पठवा मोहिं स्वामी । यदपि कृपानिधिअन्तरयामी ॥
सदा अनाथ नाथ भगवाना । बिभवबिरंचिकरियपरिमाना ॥
जबलगि होनप्रभात न पावहि । तबलगिहरिहरसुतलैआवहि ॥
दो० जपत निरन्तर नाम तव सो जानहु भगवान ।
बिधिबरहित इतआनिये तेहिकहकृपानिधान ॥
नारान्तक बध है तेहि हाथा । दधिबलनाम भक्ततव नाथा ॥
नाथ बहुतयदिखलहिखिलावा । रण बिलोकिदेवनदुख पावा ॥
अब रघुबीर करहु सोइ बाता । बिनु प्रयासरिपुमरइप्रभाता ॥
तेइ सन तुमहिं न सोह लराई । दधिबलसनसुखकरहुबुलाई ॥
सबिनय नाइ शीशवर भाखी । गवने मुनिप्रभुछबिउरराखी ॥
नारद गये जबहिं बिधि लोका । बायु तनय तन रामबिलोका ॥
तात तुरत तुम गवनहु तहवां । बारिधि महँधौरागिरिजहँवां ॥
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये । बहुतदिवसचलि गयेसुभाये ॥
दो० अहै तपोबल तेजस्वी तात तासु ढिग जाइ ।
मन प्रसन्नकरि चतुरई आनहु बेगि बुलाइ ॥
पवनकुमार पाइ अनुशासन । चले बन्दिपद हरषि उदासन ॥
बेगवन्त धावा कपि कैसे । बर नराच दधि सुतसे तैसे ॥
लोक अर्द्ध घटिका तेहि ठामा । पहुंचे बायुपुत्र बल धामा ॥
देखि तरणिसम तासुप्रकासा । ठाढ़ भयउ कपि मंदिरपासा ॥

दण्ड युगलकपि इस्थितरहेऊ । हिय महँरामरामअसकहेऊ ॥
उतरु न होई होत प्रभाता । इत इनकर चितहरिपदराता ॥
क्षणइककपिमनकीन्हबिचारा । प्रभुपहँ चलिये कवनप्रकारा ॥
जो गृह सहित चलहुं लै एही । नहिं अस आयसु भक्तसनेही ॥
दो० बुधजन शीश शिरोर तन अति लजात मुनिराउ ।
ताहि जगावन हेत तब कीन्हे अमित उपाउ ॥
अचल ध्यानकपि तासुप्रमाना । तजिप्रवीणताभजिभगवाना ॥
राम चरण चितकपि बरदयऊ । दण्ड एक औरौ चलि गयऊ ॥
विधि प्रेरितदधिबल लघुशंका । करन उठेउ देखा भट बंका ॥
जय श्रीराम वायुसुतबोला । सुनिदधिबलनिजलोचनखोला ॥
बूझि हरिहि कीशहि उरलाई । कही परस्पर दोउ कुशलाई ॥
पुनि हनुमान कहेउसुनुभ्राता । चलहुबिलोकनत्रिभुवनत्राता ॥
सानुज नाथ सुखद पदकंजा । जिन मकरन्दशिलाअघगंजा ॥
जेहिलगितपकीन्हेउबहुकाला । सो तुमपर अनुकूल कृपाला ॥
दो० धूरजटी हृद मानसर बसत हंस इव जोइ ।
सादर तुमकहँलेन लगि पठवामोहिं प्रभुसोइ ॥
सुनिशुभ बचन सुकंठ कुमारा । हरिपहँ हरिसँगतुरतसिधारा ॥
आये नाथ निकट मृगशाखा । देखे पद जे हर हिय राखा ॥
रहेउ चरणगहिप्रीति समेता । दधिबलनिरखेउ कृपानिकेता ॥
सानुज हरषिमिले सुख पुंजा । तासु पाणिगहिनिजकरकंजा ॥
बैठे ताहि निकट बैठावा । तेहि अवसरसुकंठ तहँआवा ॥
निरखि तनयकपिपतिहरषाना । मिलतप्रेमनहिं जायबखाना ॥
गइ मणि पन्नग जनुपुनिपाई । देही देह मीन जल जाई ॥
सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेटे । अवगुण तीन ताहि क्षण मेटे ॥
सो० दधिबल बालि कुमार मिले परस्पर हरषिहिय ।
भयउ आइ भिनुसार न्हाइ सबनिप्रभुपदगहे ॥
जहँ तहँ समर करन बनचारी । चले कहत जय लषणखरारी ॥

उहां नरान्तक प्रात प्रबोधा । रथ चढ़ि चलेउ भयंकर योधा ॥
निशिचर हठीसुभट सँगताके । आयुध अखिलभयानक वाके॥
महि संग्राम निशाचर ठाढ़े । असित मेघसम अतिरिसबाढ़े ॥
करिमाया तेहिगात छिपावा । भयउ प्रकटतबप्रभुढिगआवा ॥
दधिबललखासखाचलिआयउ । भुजापसारिहरषिउठिधायउ ॥
नारान्तकहुं दीख गुरु भाई । मुदित मिले उरउभय अघाई ॥
भेंटिसप्रेम बूझि कुशलाता । निजनिजदशाकीन्हविख्याता॥
दो० हरिपतिपूतप्रवीणअति सुनितेहि मुखविख्यात ।
लगे बुझावन मित्रकहँ सुनहु वीरपति बात ॥
वंश स्वभाव सत्यकपि कहहीं । फलपियूष बिषबेलिनलहहीं ॥
समुझहु तातबिचारि निदाना । किहे अनीति न जगकल्याना ॥
पितु चरित्रसमुझहु मनमाहीं । राम विरोध कतहुँजय नाहीं ॥
तुम प्रवीण भा मतिभ्रम कैसे । कूप धसत बिक बाट अनैसे ॥
तुमहुँ कीन्ह दिन चारिलड़ाई । जानेउ भालु कीश बल भाई ॥
तजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना । कहहु पाहि रघुवर भगवाना ॥
सफलकरहुभव प्रभुपदपरशी । करिहैं अभय तोहिं समदरशी ॥
मानहु सीख मोरि सुखकारी । प्रणतपाल रघुवीर खरारी ॥
दो० शारंगी शर तरणिसम दश मुख वपु खग लेख ।
जरत राखु यह समयतुव करि विज्ञान विशेख ॥
सुनत वचन गुरु भ्राताकेरा । नारान्तक भा क्रोध घनेरा ॥
कहनलाग खल ताहि कुभांती । सहज सभीतकीश दिनराती ॥
बालिहि हतेउ जौन तपधारी । भा अंगद तिन्ह आज्ञाकारी ॥
दधिबल यह बानर कुलरीती । हमहेकरहिं न अरिसनप्रीति ॥
यहकहि प्रभु सम्मुखसोधावा । दधिबल लूमलपेटि टिकावा ॥
नारान्तक कह रे शठ बानर । तव तन नहीं मोर डरकादर ॥
छांड़हु मूढ़ समुझि गुरु भाई । कहि अस पेलिचलाकठिनाई॥
तबसुकंठ सुत क्रोधित भयऊ । सपदि कूदि आगे गहिलयऊ ॥

दो० नारान्तक दधिबल भिरे निरखि भालु अरु कीश ।
लगेकरन सँग निशिचरन कहि जय श्रीजगदीश ॥

छं० कपिशूरसंहारेशिलनिगारि । बहु मर्दिकरेसि कतापहारि ॥
भटबिहवाबलबासी जितेक । कपिमारिगिरायेबचे न एक ॥
रह एकाकी मनुजाद बीर । किय द्वन्द्वयुद्ध उरगाद धीर ॥
दोउलरतलहैंछबिएकभांति।गिरिकज्जलकंचनउभयगाति ॥
युगघटिका ऊपर एकयाम । दोउभिरेसमर बलयोगधाम ॥
पुनिभाअलक्षसो करतयुद्ध । बलवन्तउभय श्रमगतसक्रुद्ध ॥
कहषटप्रकारश्रुतियुद्धरीति । सुख मानेउ सुरदेखतसुप्रीति ॥
लखिपुत्रइकाकीपुलकिगात। कहबालिअनुज अतिहर्षबात ॥

दो० जाम्बवन्त सन बचन मृदु कहेउ सुकंठ पुकारि ।
कहहुतात दधिबलकबहिं दनुजहि डारिहिमारि ॥

समर करत लागी अति बारा । यह सुनिबोलेउ ऋक्षभुवारा ॥
क्षणक हृदय धरुधीर कपीशा । दधिबलंगुरुसनलहीअशीशा ॥
सो अवसर अब आन तुलाना । एकपलकमहँ मरिहिअयाना ॥
सुनिहरीश मनमहँ अति हरषे । तबहीं बिबुध सुमनबहु बरषे ॥
दधिबल धन्य भुजा बलतोरा । रण कौतूहल कीन्ह न थोरा ॥
हरिअस्तुतिसुनिहरिअरि कोपा।कपिहिसहित बलभयउअलोपा॥
योजन अयुत अष्ट नभ जाई । दधिबल सुमिरि हृदयरघुराई ॥
गहि मनुजाद भूमि पर डारा । करि चिकार तेहि मरतीबारा ॥

छं० मरतीसमय अति शब्दकरि दशमुखतनय हरिहरिकही ।
तजिअधमतनधरिसुभगबपुद्विजनाथ सुनिसोगतिलही ॥
जेहिहेतु सुरमुनि सिद्ध नानाभांतिजपतपमख किये ।
श्रीरामकरुणासिन्धु सो फल सहजहीं दनुजै दिये ॥

दो० देखि तासुगति बिबुधगण अभय भये खगराइ ।
प्रमुदित बरषे पुहप झरि रामचरण चित लाइ ॥

मरा नरान्तक दधिबल जानी । तोरितासुशिरगहिनिजपानी ॥

रुयड तासुगहि लंक सचारी । आपु चले जहँ नाथ खरारी ॥
निशा प्रवेश भूत बैताला । चढ़ि चढ़िबाहन बेष कराला ॥
जाइ समर महिसुखद समेता । उदर अघाइ गये सुनिकेता ॥
आयउ दधिबल प्रभुके पासा । देखि हरषिउठि रमा निवासा ॥
सानुजराम मिले अति प्रीती । परम प्रसाद नाथ नित रीती ॥
बैठे रघुकुल मणि दोउ भाई । सखा सुतहि निजढिग बैठाई ॥
हनुमदादि मरकट प्रभु पाहीं । नाइ माथ प्रमुदित मन माहीं ॥

दो० राम रजायसु पाय पुनि होइ बिगत श्रमकीश ।
तबदधिबल प्रभुचरण गहि आगेधरि अरिशीश ॥

समुझिकौतुकी रिपु सुत शीशा । सुनहु सुकयठकहो जगदीशा ॥
नारान्तक कर शीश धरावहु । यतन समेत नसेत चलावहु ॥
नाथ रजाय पाइ कपि राई । राखेउ सो शिर यतन कराई ॥
पुनिदधिबल हरिकीन्हबड़ाई । श्रीपति श्रीमुखबहु बिधि गाई ॥
जासु बड़ाई किय बड़ ईशा । सबहि सराहतसो जगदीशा ॥
दधिबल प्रभुअनुकूलबिलोकी । सफलजन्मलखिभयउबिशोकी ॥
प्रेम बारि लोचन कर जोरी । बोलेउ गिरा भक्ति रसबोरी ॥
जगदात्मा तुम्हार यह बाना । सन्तत करहु दीन मनमाना ॥

दो० बनचर पांवर सहज जड़ बुद्धि बिषम अज्ञान ।
बिरदस्वभाव कृपालुप्रभु सेवक सुयश बखान ॥

तव यशबिमल बिदितअवधेशा । कहत न पार पावश्रुति शेशा ॥
सो मैं प्रभु कहि सकहुं न कैसे । पर्णबणिक गजमणिगुणजैसे ॥
अस कहिहर हरिपद लपटाने । देखि प्रेमकपि बिबुधसिहाने ॥
अनअभिमानताहिप्रभु जाना । दीनदयाल बहुरि सन माना ॥
मांगुबच्छ जोबर मन भावा । सुनिदधिबलकरिबिनयसुनावा ॥
नाथ तुम्हार रूप गुण नामा । करहि निरन्तर ममउरधामा ॥
होइमुहिं प्रिय पदपंकज कैसे । कामिहिं बाम सूम धन जैसे ॥
एवमस्तु तुम कहँ बर येहू । ममइच्छा कछु औरो लेहू ॥

सो० बिहबाबल पुर राज करहुतात तुम मुदितमन ।
छांड़ि और सबकाज शिवाशम्भुपद भक्तिदृढ़ ॥
यहै काज शुभ संतत चहई । ज्वइस्वइ प्राणीममनरहई ॥
उमा राम कर यहै स्वभाऊ । जनपर प्रेम न कबहुं दुराऊ ॥
मोहिं निजरूप रमापति जानै । ताते बारम्बार बखानै ॥
जानेउ श्रीरघुबर स्वभाव जिन । सब तजि प्रेमभक्तिमांगीतिन ॥
रामभक्ति वारीश जासु उर । महिमातासुकहतश्रुतिबुधबर ॥
सर सरिता सब सुखद सुहाये । सहजहिंआवतबिनहिंबुलाये ॥
ताहि शुद्ध शिष दै रघुनाथा । पुनिप्रभुकीन्हतिलकनिजहाथा॥
सारंगी रुख सबही पावा । अंगदादि ताकहं शिरनावा ॥
दो० पाइ भक्तिबर राजबर प्रभु चरणन शिरनाइ ।
दधिबल पठयउतुरतहठ सुनहु ऋषयशुभभाइ ॥
तन मन रामचरण अनुरागे । दधिबल राजकरतभयत्यागे ॥
सेन सहित श्री राजिव नयना । राजतदेखि बिबुधचितचयना ॥
हनत दुन्दुभी बिबिध प्रकारा । पुहुपमालझरिकरत अपारा ॥
करि अस्तुति बर बिनय पुकारे । अदितिसूनु निजगेह सिधारे ॥
उतहि जहां बैठा दशभाला । बिनुशिर बपुसोपरा बिशाला ॥
देखि बिकल आपै उठि धावा । पहिंचानततेहिअतिदुखपावा ॥
हा नारांतक कहि खल परा । महा खंभार लंक गढ़ भरा ॥
मय तनया आदिक निशिचरीं । शोक समाज बिषादहिं भरीं ॥
दो० बिन्दुमती आदिक सकल नारान्तककी नारि ।
ब्याकुलमहिंलोटहिंपरी निजनिजदशाबिसारि ॥
करिबिलापजिमिनिशिचरनारी । सोनजातकहि सुननभचारी ॥
शोक जलधि लंका लघुतरणी । चढ़ीसकलनिशिचरकीघरणी ॥
बड़त जानि न कतहुं निबाहा । कहत मंदोदरि तब सबपाहा ॥
बिन्दुमती कर गहि बैठाई । नागसुता कै कथा सुनाई ॥
सुनतसुनयनाकी शुचि करणी । धारि धीर नारांतक घरणी ॥

सबनि बुझाय सासु पगलागी। तजिधनधामस्वामिअनुरागी ॥
मातु करहु सो यतनउताहुल। मिलहुंजाइजेहिपदनिजराउल ॥
सुन सुतवध न आन उपाऊ। जाउ जहां राजत रघुराऊ ॥
दो० जेहिबिधिगईसुलोचना तेहिगतितुमभयत्यागि।
निरखहुरघुपतिपदकमल लावहुपतिशिरमांगि ॥
सासुबचनसुनिजानिप्रभाता। उठिनिशिचरतियपुलकितगाता ॥
जात रूप मय यान मंगाई। निजकरगहि पतिदेह चढ़ाई ॥
चली अकेलि यानचढ़ि जबहीं। तासु सवति इकआई तबहीं ॥
नाम चित्ररेखा अस तासू। गुणगण सुभग बसैतन जासू ॥
सो करि बिनय चढ़ी तेहिसंगा। कीन्ह पयान रंगी शत रंगा ॥
रथ अकेल आवत कपि देखा। कायर डरपे हृदय बिशेषा ॥
आवत मानि सबल रिपु कोऊ। नल अरु नील सुभटबरदोऊ ॥
आये धाय सपदि तब आगे। युगलनारि तननिरखनलागे ॥
दो० समुझि बूझि वृत्तान्तदोउ फिरिआये प्रभुपास।
बन्दि कंजपद उभय कह सुनिये रमानिवास ॥
नाथ नरान्तक की दोउ नारी। आवतशरण प्रणत भयहारी ॥
सुनि रघुबीर हृदय मुसकाने। उतहि टिकावहु सखासयाने ॥
सुनि प्रभुबचन बहुरि सोधाये। कटकबिगत रथदूरि टिकाये ॥
बिन्दुमती चितरेखा दूनो। बिनयहमारि कीश असमूनो ॥
कहहु जाइ तुम प्रभुहि बुझाई। जेहिकारण हम दरशन पाई ॥
हम अबला कपि बिनवैं तोहीं। बूझि नाथसन कहबै मोहीं ॥
नारि बिनयसुनि कपिदोउभले। नीति बिचारि रामपहं चले ॥
बिनती नारि जाय नल बरणी। सुनिबिहंसेप्रभु तिनकैकरणी ॥
दो० परम मृदुल रघुनाथ चित कहत सन्त बुधवेद।
ताकहं देत न दरश प्रभु सुनु खगेश सो भेद ॥
प्रेम परीक्षा हित रघुनायक। कौतुककरतसमर सुखदायक ॥
नाथ सखा सब बहुरि बुझाई। पुनि नलनारिन पास पठाई ॥

कहकपि सुनहु नरान्तकनारी । दरशन तुमहिं न देतखरारी ॥
तुम गृहजाहु बचन मम मानो । बोली सोतिय बचन सयानो ॥
हम अबला दरशनहितआई । नयनसफलबिनुकिमिगृहजाईं ॥
यहिबिधिकरत बिनयदोउनारी । कोशन कटक कीन पैसारी ॥
आवतनिकट जानि रिपुरवनी । यद्यपिपतिब्रतहैं सुखभवनी ॥
तदपि नाथ तेहि दरशन देहीं । जाइ निकट बिनतीकी तेहीं ॥

दो० प्रभु सीतापतिजगतपति सुरनरपति रघुनाथ ।
देउदरश करुणायतन दीन बन्धु श्रुति माथ ॥

बोले राम न सो तिय बोली । बिमलज्ञानपतिब्रतअनुडोली ॥
नाथ सत्य यह नीति बखानै । पुरुष न परतिय सपनेहुंजानै ॥
प्राकृत पुरुषन की यह रीती । जिनके हृदय कपटपर प्रीती ॥
समदरशी कछु दोष न स्वामी । सो बिचारु प्रभु अन्तर्यामी ॥
आरत बन्धु बिलम्ब न कीजै । करुणाकर बर दरशन दीजै ॥
नहिं बोले प्रभु पुनि सो कहई । तवयशअसश्रुतिगावतअहई ॥
गौतम नारि राम तुम तारो । अधमजातिभिल्लनीनिस्तारी ॥
सुनि मम हृदय परी परतीती । अबप्रभुकसदेखियबिपरीती ॥

दो० तारितारिअधमनि अमित बारबार श्रमजान ।
ताते करत अनाकनी मोरि ओर भगवान ॥

प्रभु मुसकाहिं न उत्तर देहीं । ताकर प्रेम परीक्षा लेहीं ॥
बिकल उभय नारान्तक बाला । बारबारकरि बिनयबिशाला ॥
धर्म्म धुरंधर प्रभु अवतारा । केवल पतिब्रत धर्म्महमारा ॥
जो हम सत्यसत्य तुम स्वामी । द्रवहु बेगि उर अन्तर्यामी ॥
वृथाकरत कत प्रभु श्रुतिभाषा । पूजतनाथ न ममअभिलाषा ॥
लीनभयउ पतिप्राण राममहं । अर्द्धभाग हमकहहु जाइंकहं ॥
वृन्दा चरित नाथ सुधि करहू । बिनयहमारि बेगि उरधरहू ॥
बिनय प्रीति सब धर्म जनाई । परी प्रेमबश महि अकुलाई ॥

दो० पाहि पाहि रघुबंशमणि हतहु न बिरद प्रतीति ।

प्रीतम प्रीति न नरकडर तुमकहं नाथ अनीति ॥

सती निराश विनयसुनि बानी । पुलके दीनदयाल भवानी ॥
दुहुन लीन निज कटक बुलाई । परीं युगल प्रभु पदतरआई ॥
तिन्हैं उठाय राम बैठावा । जगदीश्वर मृदुबचनसुनावा ॥
बिन्दुमती तैं परम सयानी । पतिपदरति दृढ़हृदयसमानी ॥
बहुत करहुं का तवगुण गाना । मांगु बेगि बर जो मनमाना ॥
सुनत बचन लोचन जलबाढ़ीं । जोरि युगलकर दोऊ ठाढ़ीं ॥
प्रभु तव दानि वेद तर बरसे । पदजलजात देखिसुरसरिसे ॥
परम पवित्र भईं हम दोऊ । हमसमधन्य नारिनहिंकोऊ ॥

छं० कोधन्यहमसमनारिजगमहंसुनहु श्रीरघुनायकं ।
दैदरशकीन्हीपतितपावन नाथसुरअरिघायकं ॥
कृपासागर यश उजागर देहु बर सुर भावरं ।
जेहिमिलैंपतिकहंजाइबिनुश्रमबढ़ैतवयशश्रीधरं ॥

सो० यहकहिबिन्दुकुमारि सहितसौतिप्रभुपदपरी ।
तिन्हैंउठाइखरारि जगत्राता इमिकहतपुनि ॥

धरहु धीर तुम जनि अब डरहू । निजपतिलेहुभवनसुखकरहू ॥
कहेउ देव हम कहं यह नीका । हमहुंकहत अबभावतजीका ॥
गिरिजा सहित गिरीशबिरागी । नाथ तुम्हारदरश अनुरागी ॥
नारदादि सनकादिक जेते । जपतपकरहिंबिविधबिधितेते ॥
तेउ न कबहुं हमारी नाईं । देखहिं पद जलजात अघाईं ॥
हरि दरशन लवलेश प्रमाना । जगके सबसुख नाहिं समाना ॥
अमिय अघाइ गरल को खाई । बिनय हमारि यहै सुरसाईं ॥
देहु कन्त शिर सपदि मंगाईं । दया शील सागर रघुराईं ॥

दो० नारान्तक कर शीश तब दीन्ह मंगाइ रमेश ।
पाइस्वामिशिर मुदितह्वै बोलींदोउउरगेश ॥

नाथ बिनय हम औरौ करहीं । दाहबिनाहमकेहिबिधिजरहीं ॥
सुखसागर सुनि बचन प्रमाना । हनुमत अंगदादि भट नाना ॥

कहप्रभु सखा लंकमहं धावहु। चन्दन अगर भारबहु लावहु॥
पाइ राम अनुशासन धाये। लंका गढ़ गृह गृह सचुपाये॥
कपिन शोधि चन्दन बहुभारा। लाये जहं श्रीनाथ उदारा॥
कह रघुबीर सुनहु लंकेशा। तात यहै बड़ हित उपदेशा॥
बिन्दुमती जहं चाहत ठाऊ। दाहभार संग तुमतहं जाऊ॥
दशकन्धर कर बैर बिहाई। चिता चारु शुचि देहु बनाई॥
दो० रघुबर आज्ञा धारिशिर उठे दशानन भाइ।
अयुतभार चन्दन अगर तेहिसंगचले लिवाइ॥
जहां जरी मघवाजित नारी। तेही गहर सुचिता सवांरी॥
उहवां अपर सौति मनु नारी। बिन्दुमती मन भाव पियारी॥
मूर्च्छित परीं प्रथम सुधिनाहीं। चलींसुनतगति दुखमनमाहीं॥
चलीं चतुर्दश निशिचरि कैसे। निरखिदवास मृगीगण जैसे॥
हा हा बिन्दुमती पतिप्यारी। कहांगई तुव हमहिं बिसारी॥
पहुंची सह बिलाप तहं सोऊ। हर्षीं हृदय बिलोकत दोऊ॥
षोड़श निशिचरि भईं सभागी। मनबचक्रम पतिपदअनुरागी॥
सकलअन्हाय मृतकअन्हवाई। सुमिरत हृदय रामगति दाई॥
दो० उत दशकन्धर जगेउ शठ सुनेउ श्रवण सबहेतु।
संग मंदोदरि आदि तिय गवना लै खगकेतु॥
बाजत ढोल कपिन सुनिकाना। अपनेमन तिनअस अनुमाना॥
आव युद्धहित उत कोउ बीरा। हमकहं ठाढ़ करत यहतीरा॥
कीश अयुत तब प्रभुपहं आये। पूरण प्रेम चरण शिर नाये॥
नाथ उतहि दशकन्धर जाता। कीशएक कह सुनु जनत्राता॥
प्रभुकह कुमुद तुरिततुमधावहु। बेगिबिभीषण कहं लैआवहु॥
राम रजायसु शिर धरिधाये। सपदिबिभीषण पहं सो आये॥
तात तुमहिं रघुराज बुलावा। सुनत लंकपति आतुर आवा॥
हेतु पतोहुन कहि समुझावा। कुमुदसहित रघुपतिपहंआवा॥
दो० मोहनिशा तहं तरुणरबि तिनचरणन शिरनाइ।

भागवंत रावण अनुज बैठेउ प्रभु रुख पाइ ॥
दशमुखतियनसहित गा तहंवां । बिन्दुमती चितरेखा जहंवां ॥
देखत अति बिलखा बिबुधारी । करुणाकरत निशाचरि झारी ॥
सासु ससुर कहं देखि दुखारी । ज्ञान नवीन नरांतक नारी ॥
कहिशुचिगाथ सबन समुझाई । स्वामि समेत चितापर आई ॥
यथा योग्य बैठीं सब तैसे । पतिगृह रहत रहीं नितजैसे ॥
अग्नि दीन्ह ज्वाला अतिधाई । पहुंचीं सुरपुर सब तियजाई ॥
देखि दशा तिनकी सुररवनी । तिनहिंसराहिभवननिजगवनी ॥
रावणसहित युबति निजगेहा । गयउ भरो सासति संदेहा ॥
छं०संदेह सासत भरेउ रावण सहित दारनि गृह गयो ।
इमिमयसुतादिकनिशिचरिनिलखिबिकलबलमूर्छितभयो ॥
दशमाथगति देखत बिपुल बिलखैं निशाचर निशिचरी ।
संताप शोक बिलाप भय भ्रम कटक लंका महं परी ॥
दो० राम बिरोधिहिं जस उचित तसदिन पहुंचा आइ ।
सो बिचार करि लंकगढ़ उतरी बिपति बजाइ ॥
इहां देव देवायसु जाना । बरआसन शोभित भगवाना ॥
यथा योग्य बैठे मृगशाषा । सबकीन्हें प्रभुपद अभिलाषा ॥
रिपु बड़ मरेउ हर्ष सबके मन । पुनिपुनिहेरत सुभगश्यामतन ॥
तिनकीरुचिलखि दीनदयाला । शिवयश गावहु कहाकृपाला ॥
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई । गावहिं कपि कलकंठ लजाई ॥
डमरु भृङ्गि शृङ्गी कर तारी । घ्राण पाणि मुखते बनचारी ॥
गोंडर तन्तु बेणु मंजीरा । शंख मृदङ्ग नाद गंभीरा ॥
नृत्यत कीश भाव दिखरावत । शिवासहितशिवकीरत्तिगावत ॥
छं०शिव शिवाकीरति बिमल गावत भालुबानर सुखभरे ।
अहिनाथयुतरघुनाथ छबिनिरखत सकल चितपदधरे ॥
प्रभुदेखिकौतुक अनुजसहित सखनबखानत श्रीमुखम् ।
तुलसी पगे जेहिध्यान जे जनपाइहैं नितयश सुखम् ॥

सो० गतरजनी युग याम तब कौशन करुणा अयन ।
करिपूरण मनकाम सवनि कहेउ राजहुथलन ॥
बैठे निज निज थल रणधीरा । अनुजसहित राजत रघुबीरा ॥
सुखमा सीव सेन युत राजै । जयजयधुनि कपिभालुसमाजै ॥
उमा चरित यह रुचिर सुहावा । नाथकृपा मैं तुमहिं सुनावा ॥
अपर चरित गिरिराज कुमारी । सुनहुकहत तवप्रीतिनिहारी ॥
उहांमध्य निशि रावण जागा । कोउकोउसचिवसिखावनलागा ॥
उग्र सिखावन कहि बुध वाके । थके न कछु मन मानै ताके ॥
रावण मन औरै कछु लसई । मेटिकोसकैजोविधिउरबसई ॥
प्रभु बिरोध करि चह कल्याना । मोह बिवश सो शठअज्ञाना ॥
इति ॥
बचन सुनत तेइ कछु सुखमाना । कालबिबशजस तीरथज्ञाना ॥
इहिबिधि जलपतभाभिनुसारा । लगे भालु कपि चारिहुंद्वारा ॥
सुभट बुलाय दशानन बोला । रणसन्मुख जाकर मनडोला ॥
सो अबहीं बरु जाहु पराई । रण सन्मुख भागे न भलाई ॥
निज भुजबल मैं बैर बढ़ावा । देहौंउतर जो रिपुचढ़िआवा ॥
अस कहि मरुत बेग रथसाजा । बाजहिंसकल जुझाऊबाजा ॥
चले बीर सब अतुलित बली । जनु कज्जलगिरिआंधीचली ॥
अशकुन अमितहोहिंतेहिकाला । गनै न भुजबलगर्बबिशाला ॥
छं० अतिगर्बगनत न शकुनअशकुन श्रवहिंआयुधहाथते ।
भटगिरहिं रथते बाजि गज चिक्करतभाजतसाथते ॥
गोमायुगृद्ध शृगाल खर रव श्वानबोलहिंअतिघने ।
जनु काल दूत उलूक बोलहिं सकलपरमभयावने ॥
दो० ताहिकिसम्पति शकुनशुभ सपनेहु मनबिश्राम ।
भूत द्रोह रत मोह बश राम बिमुख रतकाम ॥
चली निशाचर अनी अपारा । चतुरंगिनी चमू बहु धारा ॥
बिबिध भांति बाहन रथ याना । बिपुलबरणपताकध्वजनाना ॥

चले मत्त गज यूथ घनेरे । मनहुं जलद मारुतके प्रेरे ॥
बरण बरण बर दैत्य निकाया । समर शूर जानहिं बहुमाया ॥
अति विचित्र बाहिनी बिराजी । बीर बसन्त सेन जनु साजी ॥
चलतकटक दिगसिन्धुर डगहीं । क्षुभितपयोधिकुधरडगमगहीं ॥
उठी रेणु रवि गयउ छिपाई । पवन थकित बसुधाअकुलाई ॥
पणव निशान घोररव बाजहिं । महाप्रलयके जनुघनगाजहिं ॥
भेरि नफीरि बाजु सहनाई । मारूराग शूर सुखदाई ॥
केहरि नाद बीर सब करहीं । निजनिजबलपौरुषअनुसरहीं ॥
कहै दशानन सुनहु सुभट्टा । मर्दहु भालु कपिनकर ठट्टा ॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई । असकहिसन्मुखफौजचलाई ॥
यहसुधि सकलकपिन जबपाई । धाये करि रघुबीर दुहाई ॥

छं० धाये बिशाल कराल मर्कट भालु काल समानते ।
मानहुं सपक्ष उड़ाहिं भूधर वृन्द नाना बाणते ॥
नखदशनशैलनकरनद्रुमगहिसबलशंकनमानहीं ।
जयरामरावणमत्तजग मृगराज सुयशसुनावहीं ॥

दो० दुहुंदिशि जयजयकारकरि निजनिजजोरीजानि ।
भिरेबीर इत रघुपतिहि उत रावणहिं बखानि ॥

रावण रथी बिरथ रघुबीरा । देखिविभीषण भयउअधीरा ॥
अधिक प्रीति उर भा संदेहा । बन्दिचरणकह सहितसनेहा ॥
नाथ न रथ नाहीं पदत्राना । केहिविधिजीतबरिपुबलवाना ॥
सुनहु सखाकह कृपानिधाना । जेहिजयहोइसोस्यन्दनआना ॥
शौरज धर्म्म जाहि रथ चाका । सत्यशील दृढ़ध्वजा पताका ॥
बल बिबेक दम पर हित घोरे । क्षमा दया समता रज जोरे ॥
ईश भजन सारथी सुजाना । बिरति चर्म्म सन्तोषकृपाना ॥
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा । बर बिज्ञान कठिनको दण्डा ॥
संयम नियम शिलीमुख नाना । अमलअचलमनत्रोणसमाना ॥
कवच अभेद बिप्र पद पूजा । इहिसमबिजय उपायनदूजा ॥

सखा धर्म्ममय अस रथ जाके । जीतनकहँ न कतहुं रिपुताके ॥

दो० महा घोर संसार रिपु जीति सकै को बीर ।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥
सुनत बिभीषण प्रभु बचन हर्षि गहे पद कंज ।
इहिबिधि मोहिंउपदेशकिय रामकृपा सुखपुंज ॥
उत प्रचार दशकन्धर इत अंगद हनुमान ।
लरतनिशाचरभालुकपिकरिनिजनिजप्रभुआन॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखहिं रण नभचढ़े बिमाना ॥
मैं हूं उमा रहेउँ तेहि संगा । देखत राम चरित रणरंगा ॥
सुभट समर रस दुहुंदिशिमाते । कपि जयशील राम बलताते ॥
एक एकसन भिरहिं प्रचारहिं । एक एक मर्दहिं महि पारहिं ॥
मारहिंकाटहिं धरणिपछारहिं । शीशतोरि गहिभुजाउपारहिं ॥
उदरबिदारहिं भुजाउपारहिं । गहिपदअवनिपटकिभटडारहिं॥
निशिचरभटमहिगाड़हिंभालू । ऊपर डारि देहिं बहु बालू ॥
बीरबली मुख युद्ध बिरुद्धा । देखिय बिपुल कालजनुक्रुद्धा ॥

छं० क्रुद्धे कृतान्त समान कपितन श्रवत शोणित राजहीं ।
मर्दहिं निशाचर कटकभट बलवंत जिमिघन गाजहीं ॥
मारहिं चपेटन काटि दांतन डारि लातन मीजहीं ।
चिक्करहिं मर्कट भालुछलबलकरहिं जेहिखलछीजहीं ॥
धरि गालफारहिं उरबिदारहिं गल अँतावरिमेलहीं ।
प्रहलाद पति जनुबिबिधतनुधरि समर अंगनखेलहीं ॥
धरुमारु काटिपछारु घोर गिरागगन महि भरि रही ।
जयरामजोतृणते कुलिशकरु कुलिशतेकरु तृणसही ॥

दो० निजदलबिचल बिलोकितब बीसभुजा दशचाप ।
चला दशानन कोपकरि फिरहु फिरहु करिदाप ॥

धावा परम क्रोध दशकन्धर । सन्मुख चले हूहकरि बन्दर ॥
गहिकर पादप उपल पहारा । डारहिं तेहिपर एकहिबारा ॥

लागहिं शैल बज्र तनु तासू । खण्डखण्ड होइ फूटहिं आसू ॥
चला न अचल रहा रथरोपी । रण दुर्मद रावण अति कोपी ॥
इतउतझपटि दपटिकपियोधा । मरदै लाग भयो अतिक्रोधा ॥
चले पराय भालु कपि नाना । त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
पाहि पाहि रघुबीर गुसाईं । यह खल आव कालकी नाईं ॥
तेहि देखे कपि सकल पराने । दशहु चाप शायक सन्धाने ॥

छं० संधानिधनुशरनिकरछांडेसि उरगजिमिउड़िलागहीं ।
रहपूरिशरधरणीगगनदिशिबिदिशिकहंकपिभाजहीं ॥
भाअतिकोलाहलबिकलदलकपिभालुबोलहिंआतुरे ।
रघुबीर करुणासिन्धु आरत बन्धु जन रक्षा करे ॥

दो० बिचलत देखा कपिकटक कटिनिषंग धनुहाथ ।
लक्ष्मण चले सकोप तब नाइ रामपद माथ ॥

रे खल का मारसि कपि भालू । मोहिं बिलोकु तोर मैं कालू ॥
खोजत रहेउँ तोहिं सुतघाती । आजु निपाति जुड़ावौं छाती ॥
कहि अस छांड़ेसि बाणप्रचंडा । लक्ष्मण कियेतुरत शतखंडा ॥
कोटिन आयुध रावण डारे । तिलप्रमाण प्रभुकाटिनिवारे ॥
पुनि निज बाणनकीन्हप्रहारा । स्यन्दन भंजि सारथी मारा ॥
शतशत शर मारे दशभाला । गिरिशृङ्गनजनुप्रबिशहिंब्याला ॥
पुनि शत शर मारे उर माहीं । परेउअवनितनसुधि कछुनाहीं ॥
उठा प्रबल पुनि मूर्च्छाजागी । छांड़ेसि ब्रह्मदत्त जो सांगी ॥

छं० जोब्रह्मदत्त प्रचण्ड शक्ति अनन्त उर लागी सही ।
परेउबिकलबीरउठावदशमुख अतुलबलमहिमारही ॥
ब्रह्माण्ड भुवनबिराज जाके एकशिर जिमि रजकनी ।
तेहि चहउठावन मूढ़रावण जाननहिं त्रिभुवनधनी ॥

दो० देखत धावा पवनसुत बोलत बचन कठोर ।
आवत तेहि उर महँ हनेउ मुष्टिप्रहार प्रघोर ॥

जानु टेकि कपिभूमि न परेऊ । उठासँभारि बहुरि रिसभरेऊ ॥

मुठिका एक ताहि कपि मारा । परेउ शैल जिमि बज्रप्रहारा ॥
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा । कपिबलबिपुलसराहनलागा ॥
धृक धृक धृक बल पौरुषमोही । जो तैं जियत उठा सुरद्रोही ॥
असकहिकपिलक्ष्मणकहँलावा । देखि दशानन बिस्मय पावा ॥
कहरघुवीर समुझि जियभ्राता । तुम कृतांत भक्षक सुरत्राता ॥
सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । गगन गई सो शक्ति कराला ॥
पुनि कोदण्ड बाण गहि धाये । रिपु सन्मुख अति आतुरआये ॥
छं० आतुरबहोरि बिभंजिस्यन्दन मारितेहिब्याकुलकियो ।
गिरेउ धरणि दशकंधरविकलतनु बाणशतवेधोहियो ॥
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लैगयो ।
रघुबीर बन्धु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरणन नयो ॥
दो० उहां दशानन बहुरि उठि करन लाग कछु यज्ञ ।
जय चाहत रघुपति बिमुख शठ हठ बश अति अज्ञ ॥
इहां बिभीषण सब सुधि पाई । सपदि जाय रघुपतिहि सुनाई ॥
नाथ करै रावण इक यागा । सिद्धभये नहिं मरिहि अभागा ॥
पठवहु नाथ बेगिभट बन्दर । करहिं विध्वंस आव दशकंधर ॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये । हनुमदादि अंगद सब धाये ॥
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका । पैठे रावण भवन अशंका ॥
जबहीं यज्ञ करत तेहि देखा । सकल कपिनभा क्रोध विशेखा ॥
रणते भागि निलज गृहआवा । इहां आइ बक ध्यान लगावा ॥
असकहि अंगद मारेउ लाता । चितवन शठ स्वारथमनराता ॥
छं० नहिं चितव जबकपिकोपितब गहिदशनलातनमारहीं ।
धरि केश नारि निकारि बाहर जबसोदीन पुकारहीं ॥
तब उठाकोपि कृतांत सम गहि चरण बानर डारहीं ।
इहिभांति यज्ञ विध्वंस करि कपिनेकु मनहिं नहारहीं ॥
दो० मख विध्वंस करि कपि सकल आये रघुपति पास ।
चला दशानन क्रोधकरि छांड़ी जियकी आस ॥

चलत होहिं तेहिअशुभ भयंकर । बैठहिं गृध्रउड़ाहिं शिरनपर ॥
भयउ काल वश कहा न माना । कहेसि बजावहुयुद्धनिशाना ॥
चली तमीचर अनी अपारा । बहुगजरथ पदचर असवारा ॥
प्रभु सन्मुख खल धावहिं कैसे । शलभ समूहअनलकहँ जैसे ॥
इहां देव सब बिनती कीन्ही । दारुणविपतिहमहिंइनदीन्ही ॥
अबजनि नाथ खेलावहु एही । अतिशय दुखित होतिबैदेही ॥
देवबचन सुनि प्रभु मुसकाना । उठि रघुबीर सधारेउ बाना ॥
जटा जूट बांधी दृढ़ माथे । सोहत सुमनबीच बिच गाथे ॥
अरुणनयन वारिदतनश्यामा । अखिल लोकलोचनअभिरामा॥
कटितट परिकर कसेनिषंगा । कर कोदण्ड कठिन शारंगा ॥

छं० शारंगकर सुन्दर निषंग शिलीमुखाकर कटि कस्यो ।
भुज दण्डपीन मनोहरायत उर धरासुरपद लस्यो ॥
कहदास तुलसी जबहिं प्रभुशरचापकर फेरनलगे ।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहिमहिसिंधु भूधरडगमगे ॥

दो० हर्षे देव बिलोकि छवि बरषहिं सुमन अपार ।
जयजय प्रभु गुण ज्ञानबल धाम हरण महि भार ॥

इहिके बीच निशाचर अनी । कसमसाति आई अतिघनी ॥
देखिचले सनमुख कपि भट्टा । प्रलय कालके जिमिघनघट्टा ॥
शक्ति शूल तलवारि चमक्कहिं । जनुदशदिशिदामिनीदमक्कहिं॥
गजरथ तुरंग चिकार कठोरा । गर्जत मनहु बलाहक घोरा ॥
कपि लंगूर विपुल नभ छाये । मनहुं इन्द्रधनु उगेउसुहाये ॥
उठी रेणु मानहुं जल धारा । बाण बुन्द भइ वृष्टिअपारा ॥
दुहुं दिशि पर्वत करत प्रहारा । बज्रपात जनु बारहिं बारा ॥
रघुपति कोपिबाण झरि लाई । घायल भे निशिचरसमुदाई ॥
लागत बाण बीर चिक्करहीं । घुर्मिघुर्मिअगणितमहिपरहीं ॥
श्रवहिं शैल जनु निर्झर बारी । शोणित सरकादर भयभारी ॥

छं० कादर भयंकर रुधिर सरिता बाढ़ि परम सुहावनी ।

दोउ कूलदल रथ रेतचक्र अवर्त्त बहति भयावनी ॥
जलजन्तु गजपदचर तुरंगरथ बिबिधबाहनकोगने ।
शरशक्ति तोमर परशु चाप तरंग चर्म कमठघने ॥
दो० बीर परे जनु तीरतरु मज्जा बह जनु फेन ।
कादर देखतडरहिंजिय सुभटन केमन चैन ॥
मज्जहिं भूत पिशाच बैताला । केलिकरहिं योगिनी कराला ॥
काक कन्धधरि भुजाउड़ाहीं । एकते एक छीनि धरि खाहीं ॥
एक कहहिं ऐसिउ बहुताई । शठ तुम्हार दारिद्र न जाई ॥
कहरत भट घायल तटगिरे । जहं तहं मनहुं अर्ध्द जल परे ॥
खैंचहिं आंत गृध्र तट भये । जनु बनशी खेलत चितदये ॥
बहु भट बहे चढ़े खग जाहीं । जिमिनावरिखेलहिं जलमाहीं ॥
योगिनिभरिभरिखप्परसांचहिं।भूतपिशाचबिबिधबिधिनाचहिं ॥
भटकपाल करताल बजावहिं। चामुन्डा नानाबिधि गावहिं ॥
जम्बुक निकरतहांकटकटहीं ।खाहिं अघाहिं हुआहिंदपटहीं ॥
कोटिनरुण्डमुण्डबिनुडोलहिं । शीशपरे महिं जय जय बोलहिं ॥
छं० बोलहिं जोजयजय रुण्डमुण्ड प्रचण्ड शिरबिनुधावहीं ।
परिणाम युद्ध अगुह्य बोलहिं सुभट सुरपुर पावहीं ॥
निशिचर बरूथनिमर्दि गर्जहिं भालुकपि दर्पित भये ।
संग्रामअंगन सुभटसोहहिं राम शर निकरन हये ॥
दो० हृदयबिचारेसि दशबदन भा निशिचर संहार ।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार ॥
देवन प्रभुहिं पयादेहिं देखा । उरउपजा अतिक्षोभ बिशेखा ॥
सुर पति निजरथ तुरतपठावा । हर्ष सहित मातलि लै आवा ॥
तेज पुंज रथ दिब्य अनूपा । बिहंसि चढ़े कोशलपुर भूपा ॥
चंचल तुरंग मनोहर चारी । अजरअमर मनसा गतिकारी ॥
रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी । धाये कपिबल पाइ बिशेखी ॥
सही न जाइकपिन की मारी । तब रावण माया विस्तारी ॥

सो माया रघुबीरहिं बांची। सब काहू मानी करि सांची॥
देखी कपिन निशाचर अनी। बहु अंगद कपि लक्ष्मणधनी॥
छं० बहुबालि सुत लक्ष्मणकपीश बिलोकिमर्कटअपडरे।
जनुचित्रलिखितसमेतलक्ष्मणजहँसोतहंचितवतखरे॥
निजसेनचकितबिलोकिहंसिधनुतानिशरकोशलधनी।
माया हरी हरि निमिषमहं हर्षी सकल मर्कट अनी॥
दो० बहुरि राम सब तन चितय बोले बचन गंभीर।
द्वन्द्व युद्ध देखहु सकल श्रमित भये अति बीर॥
असकहि रथ रघुनाथ चलावा। बिप्र चरण पंकज शिरनावा॥
तब लंकेश क्रोध करि धावा। गर्जि तर्जि प्रभुसन्मुख आवा॥
जीतेहु जो भट संयुग माहीं। सुनतापस मैं तिनसम नाहीं॥
रावण नाम जगत यश जाना। लोकप जेहि के बन्दीखाना॥
खरदूषण बिराध तुम मारा। हतेउ व्याधइव बालिबिचारा॥
निशिचर सुभट सकल संहारे। कुम्भकरण घननादहि मारे॥
आजु बैर सब लेउं निबाही। जोरणभूमि भागि नहिं जाही॥
आजु करौं खल काल हवाले। परेहु कठिन रावणके पाले॥
सुनि दुर्बचन कालवश जाना। कहेउबिहंसितबकृपानिधाना॥
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई। जनि जल्पसि देखबमनुसाई॥
छं जनिजल्पनाकरि सुयशनाशहिनीति सुनिशठकरुसमा।
संसारमहं पुरुष त्रिविध पाटल रसाल पनसःसमा॥
इकसुमनप्रद इकसुमनफल इकफलै केवल लागहीं।
इककहहिंकरतनकरहिं कहहींकरहिं यकनहिं बागहीं॥
दो० रामवचन सुनिविहंसिकह मोहिं सिखावहुज्ञान।
बैरकरत तव नहिंडरेहु अब लागत प्रिय प्रान॥
कहि दुर्बचन क्रोधि दशकन्धर। कुलिशसमानलागछांड़नशर॥
नानाकार शिलीमुख धाये। दिशिअरुविदिशिगगनमहंछाये॥
अनल बाण छाड़े रघुबीरा। क्षणमहं जरे निशाचर तीरा॥

छांड़ेसि तीव्र शक्ति खिसियाई । बाणसंग प्रभु फेरि पठाई ॥
कोटिन चक्र त्रिशूल पवांरे । तृणसमान प्रभु काटिनिवारे ॥
निफल होइं रावण शर कैसे । खलके सकल मनोरथ जैसे ॥
तब शतबाण सारथिहिमारेसि । परे भूमि जयराम पुकारेसि ॥
राम कृपा करि सूत उठावा । तब प्रभु परम क्रोध करपावा ॥

छं० भयेक्रुद्ध युद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोणशायक कसमसे ।
कोदण्डधुनिसुनिचण्ड अतिमनुजादि भयमारुतग्रसे ॥
मन्दोदरी उर कम्प कम्पत कमठ भूधर अतित्रसे ।
चिक्करहिंदिग्गज दशनगहिमहिदेखिकौतुकसुरहंसे ॥

दो० तान्यो चाप जो श्रवणलगि छांड़े बिशिख कराल ।
राम बाण नभ मग चले लहलहात जनु व्याल ॥

चले बाण सपक्ष जनु उरगा । प्रथमहिं हते सारथी तुरगा ॥
रथ विभंजि हतिकेतु पताका । गर्जा अति अन्तर बलथाका ॥
तुरतआनिरथचढ़िखिसियाना । छांड़ेसि अस्त्रशस्त्र विधिनाना ॥
विफल होइँ सब उद्यम ताके। जिमिपरद्रोह निरत मनसाके ॥
तब रावण दश शूल चलाये । वाजिचारि महिमारि गिराये ॥
तुरंग उठाइ कोपि रघुनायक । छांड़े अति कराल बहुशायक ॥
रावण शिर सरोज बनचारी। चले रघुनाथ शिलीमुखधारी ॥
दश दश बाणभालदश मारे। निसरिगये चलरुधिर पनारे ॥
श्रवत रुधिर धावा बलवाना । प्रभु पुनिकृत धनुशरसंधाना ॥
तीस तीर रघुबीर पवांरे । भुजन समेत शीश महिपारे ॥
काटतही पुनि भये नवीने । राम बहोरि भुजा शिर छीने ॥
कटित झटित पुनि नूतन भये । प्रभु बहुबार वाहु शिरहये ॥
पुनिपुनिप्रभुकाटहिंभुजशीशा । अति कौतुकी कोशला धीशा ॥
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू । मानहुं अमित केतु अरु राहू ॥

छं० जनु राहुकेतु अनेक नभपथ श्रवत शोणित धावहीं ।
रघुबीर तीरप्रचण्ड लागहिंभूमि गिरन न पावहीं ॥

इक एक शर शिर निकरछेदे नभ उड़तइमिसोहईं ।
जनुकोपिदिनकर करनिकर जहंतहं बिधुन्तुदपोहईं ॥
दो० जिमिजिमिप्रभुहततासुशिर तिमितिमिहोहिंअपार ।
सेवत बिषय बिबर्द्ध जिमि तिमि नितिनूतनमार ॥
दशमुख दीख शिरनकी बाढ़ी । बिसरा मरण भई रिसगाढ़ी ॥
गरजेउ मूढ़ महा अभिमानी । धायउ दशहु शरासन तानी ॥
समर भूमि दशकन्धर कोपा । बर्षिबाण रघुपति रथतोपा ॥
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ । जनुनिहारमहं दिनकर दुरेऊ ॥
हाहाकार सुरन्हसब कीन्हा । तबप्रभुकोपि धनुषकरलीन्हा ॥
शर निवारि रिपुके शिरकाटे । तेदिशिबिदिशि गगनमहिपाटे ॥
काटेशिर नभ मारगधावहिं । जयजयधुनिकहिभयउपजावहिं ॥
कहंलक्ष्मण हनुमन्त कपीशा । कहं रघुबीर कोशला धीशा ॥
छं० कहंरामकहि शिरनिकरधावहिंदेखिमर्कट भजिचले ।
सन्धानिशर रघुबंश मणि तब शरन शिरबेधे भले ॥
शिरमालिकागहिकालिकातहंवृन्दवृन्दनिसोंमिलीं ।
करिरुधिर सरमज्जन मनहुं संग्रामबट पूजनचलीं ॥
दो० पुनि रावण अति कोप करि छांड़ी शक्तिप्रचण्ड ।
सन्मुख चली बिभीषणहिं मनहुं काल कोदण्ड ॥
आवत देखि शक्ति अति भारी । प्रणतारत हरि बिरद संभारी ॥
तुरत बिभीषण पाछे मेला । सन्मुख राम सहेउ सो शेला ॥
लगी शक्ति मूर्च्छा कछु भई । प्रभुकृत खेल सुरन्ह बिकलई ॥
देखि बिभीषणप्रभु श्रमपायउ । गहिकरगदाक्रोधकरि धायउ ॥
रे अभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे । तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे ॥
सादर शिव कहं शीश चढ़ाये । एक एक के कोटिन पाये ॥
तेहिकारणखल अबलगिबांचा । अब तवकाल शीशपर नाचा ॥
राम बिमुखशठ चहसिसम्पदा । असकहि हनेसिमांझउर गदा ॥
छं० उरमांझ गदाप्रहारघोर कठोर लागत महिपर्‌यो ।

दशबदन शोणित श्रवतपुनिसंभारिधायो रिसिभर्यो ।
दोउभिरे अतिबलमल्लयुद्ध बिलोकि एकहिइकहनै ।
रघुबीरबलगर्बित बिभीषण मालन हिंताकहंगनै ॥
दो० उमा बिभीषण रावणहिं सन्मुख चितवकिकाउ ।
भिरत सो कालसमान अब श्रीरघुबीर प्रभाउ ॥
देखा श्रमित बिभीषण भारी । धावा हनूमान गिरिधारी ॥
रथ तुरंग सारथी निपाता । हृदय मांझ मारेउ तेहिलाता ॥
ठाढ़ रहा अति कम्पित गाता । गयउ बिभीषणजहं जनत्राता ॥
पुनि रावण तेहि हतेउ प्रचारी । चला गगन कपिपूंछ पसारी ॥
गहेसिपूंछकपि सहित उड़ाना । पुनिनभभिरेउप्रबलहनुमाना ॥
लरतअकाश युगल समयोधा । हनत एक एकहि करिक्रोधा ॥
शोभितनभ छलबलबहु करहीं । कज्जलगिरिसुमेरु जनुलरहीं ॥
बुधिबल निशिचर परै न पारा । तब मारुतसुतप्रभुहिंसंभारा ॥
छं० संभारिश्रीरघुबीरधीर प्रचारि कपिरावणहन्यो ।
महिपरतपुनिउठिलरतदेवनयुगलकहंजयजयभन्यो॥
हनुमन्त संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ।
रणमत्तरावणसकलसुभटप्रचंडभुजबलदलिमले॥
दो० राम प्रचारे कीश सब धाये कीश प्रचण्ड ।
कपिदलबिपुलबिलोकितेइकीन्हप्रकटपाखण्ड ॥
अन्तर्द्धान भयो क्षण एका । पुनिप्रकटेसि खलरूपअनेका ॥
रघुबर कटक भालु कपि जेते । जहं तहं प्रकटदशानन तेते ॥
देखे कपिन अमित दशशीशा । भागे भालु बिकल भटकीशा ॥
चले बलीमुख धरहिं न धीरा । त्राहित्राहि लक्ष्मण रघुबीरा ॥
दशदिशि कोटिन धावहिंरावन । गर्जहिंघोर कठोर भयावन ॥
डरे सकल सुर चले पराई । जयकी आश तजहुरे भाई ॥
सब सुर जिते एक दशकंधर । अब बहुभयेतकहु गिरिकंदर ॥
रहे बिरंचि शंभु मुनि ज्ञानी । जिननिजप्रभुकी महिमाजानी ॥

छं० जानहिं प्रताप ते रहेनिर्भय कपिन रिपु मानेउफुरे ।
चलेबिकल मर्कटभालु सकलकृपालु पाहिभयातुरे ॥
हनुमन्त अंगद नीलनल बलवन्त अति रणबांकुरे ।
मर्दहिं दशानन कोटिकोटिन्ह कपट भटके आंकुरे ॥
दो० सुर बानर देखे बिकल हंसे कोशलाधीश ।
साजिशरासन निमिषमहं हरेसकल दशशीश ॥
प्रभुक्षणमहं मायासब काटी । जिमिरबिउदयजाहितमफाटी ॥
रावण एक देखि सुर हर्षे । बिपुल सुमन पुनिप्रभुपर बर्षे ॥
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एकनि के टेरे ॥
प्रभुबल पाइ भालु कपि धाये । तरलतमकि संयुगमहं आये ॥
करत प्रशंसा सुर तेइ देखे । भयउ एक मैं इनके लेखे ॥
शठहु सदातुम मोर मरायल । असकहिगगनपंथ कहंधायल ॥
हाहाकार करत सुर भागे । शठहु जाहु कहं मोरे आगे ॥
देखि बिकल सुर अंगद धावा । कूदिचरण गहि भूमिगिरावा ॥
छं० गहिभूमिपार्‌योलातमार्‌योबालिसुतप्रभुपहं गयो ।
संभारि उठि दशकण्ठघोर कठोरकरिगर्जत भयो ॥
करि दाप धनुषचढ़ाइ दशसन्धानि शर बहुवर्षई ।
कियसकलभटघायलबियाकुलदेखिनिजबलहर्षई ॥
दो० तब रघुपति लंकेशके शीशभुजा शरचाप ।
काटेभये नवीन पुनि जिमि तीरथ के पाप ॥
शिर भुज बाढ़ि देखि रिपुकेरी । भालु कपिनरिसिभई घनेरी ॥
मरत न मूढ़ कटे भुज शीशा । धायेकोपि भालु अरु कीशा ॥
बालितनय मारुत नलनीला । द्विबिद मयन्दमहाबलशीला ॥
बिटप महीधर करहिंप्रहारा । सोइगिरितरुगहिकपिनसोमारा ॥
एकन नखगहि बपुष बिदारी । भागिचलहिं कलातन मारी ॥
तब नलनीलशिरनिचढ़िगयऊ । नखनि ललाटबिदारतभयऊ ॥
रुधिर बिलोकि सकोप सुरारी । तिनहिंधरनकहं भुजापसारी ॥

गहे न जाहिंशिरनिपरफिरहीं। जनुयुगमधुपकमलबनचरहीं॥
कोपि कूदिदोउ धरेसि बहोरी। महिपटकेसि गहिभुजामरोरी॥
पुनि सकोपिदशधनुकरलीन्हा। शरनिमारिघायलकपिकीन्हा॥
हनुमदादि मूर्च्छित सबबन्दर। पाइ प्रदोष हर्ष दशकन्धर॥
मूर्च्छित देखिसकल कपिबीरा। जामवन्त धावा रणधीरा॥
संग भालु भूधर तरु भारी। मारन लगे प्रचारि प्रचारी॥
भयो क्रोध रावण बलवाना। गहि पद महिपटके भटनाना॥
देखि भालुपतिनिजदल घाता। कोपि मांझ उर मारेसिलाता॥

छं० उरलात घात प्रचण्ड लागत बिकलरथते महिगिरा।
गहिभालबींसहुकरनिमानहुंकमलनिशिबसमधुकरा॥
मूर्च्छितबिलोकिबहोरिपदहतिभालुपतिप्रभुपहंगयो।
निशिजानिस्यन्दनघालितेहितबसूतयतनसुग्रहनयो॥

दो० मूर्च्छागइ कपि भालु तब सब आये प्रभु पास।
सकल निशाचर रावणहिं घेरिरहे अति त्रास॥

तेहि निशि महं सीता पहंजाई। त्रिजटा कहिसबकथाबुझाई॥
शिर भुज बाढ़ि सुनतरिपुकेरी। सीता उर भै त्रास घनेरी॥
मुख मलीनउपजी मन चिन्ता। त्रिजटा सन बोली तब सीता॥
होइहिकहाकहसिकिनमाता।केहिबिधिमरिहिबिश्वदुखदाता॥
रघुपति शर शिरकटे न मरई। बिधिबिपरीत चरितसबकरई॥
मोर अभाग्य जिआवत ओही। जेहिहौंहरिपदकमलबिछोही॥
जेइ कृतकनककपट मृग झूठा। अजहुं सो दैव मोहिं पररूठा॥
जेइबिधिमोहिंदुखदुसहसहावा। लक्ष्मणकहंकटुबचनकहावा॥
रघुपति बिरहबिषम शरभारी। तकितकिबारबारमोहिंमारी॥
ऐसेहु दुखजो राखु मम प्राना। सोबिधिताहिजिआवनआना॥
बहुबिधिकरत बिलापजानकी। करिकरिसुरतिकृपानिधानकी॥
कह त्रिजटा सुन राजकुमारी। उरशर लागत मरिहिसुरारी॥
ताते प्रभुउर हतहिं न तेही। इहिके हृदय बसत बैदेही॥

छं० इहिके हृदय बस जानकी ममजानकीउर बासहै ।
ममउदरभुवन अनेक लागतबाण सबको नासहै ॥
असतुनतहर्षबिषादउरअतिदेखिपुनित्रिजटाकहा ।
अबमरिहिरिपुइहिभांतिसुंदरितजहुतुमसंशयमहा॥

दो० काटत शिर होइहि बिकल छूटिजाइ तव ध्यान ।
तब रावणके हृदय शर मारहिं राम सुजान ॥

असकहि बहुप्रकार समुझाई । पुनित्रिजटानिजभवनसिधाई ॥
राम सुभाव सुमिरि बैदेही । उपजी बिरह व्यथा अतितेही ॥
निशिहिशशिहिनिन्दतबहुभांती । युगसम भई बिहातिनराती ॥
करतबिलाप मनहिं मनभारी । राम बिरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भयो बिरहउरदाहू । फरकेउ बाम नयनअरु बाहू ॥
शकुन बिचारि धरी उर धीरा । अबमिलिहहिं कृपालु रघुबीरा ॥
इहां अर्द्धनिशि रावण जागा । निजसारथिसन खीझनलागा ॥
शठ रणभूमि छुड़ायहु मोहीं । धृकधृक अधममन्दमति तोहीं ॥
तेइपदगहि बहुबिधिसमुझावा । भोरभये रथ चढ़ि पुनिआवा ॥
सुनि आगमन दशानन केरा । कपिदल खरभर भयउ घनेरा ॥
जहँ तहँ भूधर बिटपउपारी । धाये कट कटाइ भट भारी ॥

छं० धायेजोमर्कट बिकटभालु करालकर भूधर धरा ।
अतिकोपिकरहिंप्रहारमारतभजिचले रजनीचरा ॥
बिचलाइदलबलवन्तकीशनिघेरिपुनिरावणलियो ।
दशदिशिचपेटन्हमारिनखनबिदारितेहिब्याकुलकियो॥

दो० देखिमहा मरकटप्रबल रावणकीन्ह बिचार ।
अन्तरहितहोइ निमिषमहंकृतमाया बिस्तार॥

छं० जबकीन्हतेइ पाखंड । भये प्रकट जन्तुप्रचंड ॥
बैताल भूत पिशाच । करधरे धनुष नराच ॥
योगिनिगहे करवाल । इकहाथमनुजकपाल ॥
करिसद्यशोणितपान । नाचहिंकरहिंगुणगान ॥

धरुमारु बोलहिं घोर । रहिपूरि धुनि चहुंओर ॥
मुखबाय धावहिं श्वान । तब लगे कीश परान ॥
जहं जाहिं मर्कट भागि । तहं बरत देखहिं आगि ॥
भयबिकल बानर भालु । पुनि लाग बर्षनबालु ॥
जहंतहंथकित करिकीश । गर्जेउ बहुरि दशशीश ॥
लक्ष्मण कपीश समेत । भये सकल बीर अचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट मीजहिंहाथ ॥
इहिबिधिसकलबलतोरि । तेहिकीन कपट बहोरि ॥
प्रकटे बिपुल हनुमान । धाये गहे पाषान ॥
तिन राम घेरे जाइ । चहुंदिशि बरूथ बनाइ ॥
मारहु धरहु जनि जाइ । कटकटहिं पूंछ उठाइ ॥
दशदिशि लंगूर बिराज । तेहि मध्य कोशलराज ॥

छं० तेहिमध्य कोशलराजसुन्दर श्यामतनशोभासही ।
जनुइन्द्रधनुष अनेककिय बरबारि तुंग तमालही ॥
प्रभुदेखिहर्षबिषादउर सुरबदति जयजयजयकरी ।
रघुबीर एकहितीर कोपित निमिषमहं मायाहरी ॥
मायाबिगतकपिभालुहर्षे बिटपगिरि गहिसबफिरे ।
शर निकरछांड़ेराम रावण बाहुशिर पुनिपुनिहरे ॥
श्रीराम रावण समर चरित अनेककल्पजोगावहीं ।
शतशेषशारदनिगमकबि तेउतदपिपार न पावहीं ॥

दो० कहे तासु गुणगण कछुक जड़ मति तुलसीदास ।
निज पौरुष अनुसार जिमि मशक उड़ाहिंआकास ॥
काटि शीश भुज बार बहु मरै न भट लंकेश ।
प्रभु क्रीड़तमुनि सिद्ध सुर व्याकुल देखि कलेश ॥

काटत बढ़हिं शीश समुदाई । जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई ॥
मरै न रिपुश्रम भयउ बिशेषा । राम बिभीषण तन तब देखा ॥
उमाकाल सम जाकी इच्छा । सो प्रभु जनकी लेत परिच्छा ॥

सुन सर्बज्ञ चराचर नायक। प्रणतपालसुरमुनिसुखदायक ॥
नाभी कुंड सुधा बस वाके। नाथ जियत रावण बलताके ॥
सुनतबिभीषणबचन कृपाला। हर्षि गहे प्रभु बाण कराला ॥
अशकुनहोन लगे बिधि नाना। रोवहिं बहुश्रृगाल खरश्वाना ॥
बोलहिं खग अति आरत हेतू। प्रकट भये जहं तहं नभ केतू ॥
दशदिशि दाहहोनतब लागा। भये पर्ब बिनु रबि उपरागा ॥
मन्दोदरि उर कम्पित भारी। प्रतिमा श्रवहिं नयन बहबारी ॥
छं० प्रतिमाश्रवहिं पविपातनभ अतिबातवह डोलतमही।
बर्षहिंबलाहकरुधिरकचरज अशुभअतिसककोकही ॥
उतपातअमितबिलोकिनभसुर बिकलबोलहिंजयजये।
सुर सभयजानि कृपालुरघुपति चापशर जोरतभये ॥
दो० आकर्षेउधनु श्रवणलगि छांड़े शर एकतीश।
रघुनायक शायक चले मानहुं कालफणीश ॥
शायकएक नाभि शर शोषा। अपरलगे शिर भुज करिरोषा ॥
लै शिर बाहु चले नाराचा। शिरभुज हीन रुंड महिनाचा ॥
धरणिधसै धरधाव प्रचण्डा। तब शरहतिप्रभुकृत युगखण्डा ॥
गर्जेउ मरतघोर रवभारी। कहांराम रण हतौं प्रचारी ॥
डोली भूमिगिरत दशकन्धर। क्षुभितसिन्धु सहदिग्गज भूधर ॥
परेउ भूमि युग खंडबढ़ाई। चापिभालु मर्कट समुदाई ॥
मन्दोदरि आगे भुज शीशा। धरिशर चले जहां जगदीशा ॥
प्रविशे सबनिषंग महंजाई। देखिसुरन दुन्दुभी बजाई ॥
तासुतेज समानप्रभु आनन। हर्षे देव शम्भु चतुरानन ॥
जय धुनि पूरिरही नवखंडा। जयरघुबीर प्रबलभुज दंडा ॥
बर्षहिं सुमनदेव मुनिवृन्दा। जयकृपाल जयजयति मुकुन्दा ॥
छं० जयकृपाकन्द मुकुन्दहरिमर्दन निशाचरमदप्रभो।
खलदलबिदारणपरमकारणकारुणीकसदाबिभो॥
सुर सिद्ध मुनिगन्धर्बहर्षे बाजदुन्दुभि गहगही।

संग्राम अंगन राम अंगअनंग बहु शोभा लही॥
शिरजटामुकुटप्रसूनबिचबिचअतिमनोहरराजहीं।
जनुनीलगिरिपरतड़ितपटलसमेतउरगणभ्राजहीं॥
भुजदण्डफेरतशरशरासनरुधिरकणतनअतिबने।
जनुरायमुनिय तमालतरुबर बैठिबहुसुखआपने॥
दो० कृपादृष्टि करि दृष्टिप्रभु अभयकिये सुरवृन्द।
हर्षे बानरभालु कपि जय सुख धाम मुकुन्द॥
पतिशिरदीखजबहिमन्दोदरि। मूर्च्छितबिकलखसीधरणीपरि॥
युवति वृन्द रोवत उठि धाईं। तेहि उठाय रावण पहँल्याईं॥
पतिगतिदेखिसोकरतिपुकारा। छूटे केश न देह संभारा॥
उर ताड़ना करैं बिधि नाना। रोदन करैं प्रताप बखाना॥
तवबल नाथ डोलनित धरणी। तेज हीन पावक शशितरणी॥
शेष कमठसहिसकहिं नभारा। सो तनु आजु परामहिछारा॥
बरुण कुबेर सुरेश समीरा। रणसन्मुख धरुकाहु न धीरा॥
भुजबल जीतिकालयमसाईं। आजुसोपरेउ अनाथकिनाईं॥
जगतबिदित तुम्हारिप्रभुताई। सुतपरिजन बलबरणिनजाई॥
रामबिमुख अस हालतुम्हारा। रहा न कुलकोउरोवनिहारा॥
तवबश बिधि प्रपंचसब नाथा। सबदिगपतितोहिंनावहिंमाथा॥
अबतवशिर भुज जम्बुकखाहीं। रामविमुखयहअनुचितनाहीं॥
कालबिबश पतिकहा न माना। अगजगनाथमनुजकरिजाना॥
छं० जानेउमनुजकर दनुजकाननदहन पावकहरिस्वयं।
जिहिनमतशिव ब्रह्मादिसुरपियभजेहुनाकरुणामयं॥
आजन्म ते पर द्रोह रति पापोघमय तवतन अयं।
तुमहूं दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं॥
दो० अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिन्धु को आन।
मुनिदुर्लभ जोपरमगति तुमहिं दीन्ह भगवान॥
मन्दोदरी बचन सुनि काना। सुरमुनिसिद्धसबहिं सुखमाना॥

अज महेश नारद सनकादी । जे मुनिवर परमारथ बादी ॥
भरिलोचन रघुपतिहि निहारी। प्रेममगन सब भये सुखारी ॥
रोदन करत बिलोकेउ नारी । गयेबिभीषण मनदुख भारी ॥
बन्धु दशादेखत दुख भयऊ । तबप्रभु अनुजहि आयसुदयऊ ॥
लक्ष्मणतेहिबहुबिधिसमुझाये । सहितबिभीषणप्रभुपहंआये ॥
कृपादृष्टि प्रभुताहि बिलोका । करहुक्रियापरिहरिसबशोका ॥
कीन्ह क्रियाप्रभु आयसुमानी । बिधिवतदेशकाल गतिजानी ॥

दो० मयतनयादिक नारिसब देइँतिलांजलि ताहि ।
भवनगईं रघुबीरगुण गणबरणति मनमाहि ॥

आइ बिभीषण पुनिशिर नावा । कृपासिन्धु तबअनुजबुलावा ॥
तुम कपीश अंगद नलनीला । जामवन्त मारुतसुत शीला ॥
सबमिलिजाहु बिभीषणसाथा । सारेउतिलककहेउ रघुनाथा ॥
पिता बचन मैं नगरन जाऊं । आपुसरिसकपिअनुज पठाऊं ॥
तुरतचलेकपिसुनिप्रभु बचना । कीन्हीजाइ तिलककी रचना ॥
सादर सिंहासन बैठारी । तिलककीन्हअस्तुतिअनुसारी ॥
जोरिपाणि सबही शिरनाये । सहितबिभीषण प्रभुपहंआये ॥
तबरघुबीर बोलिकपिलीन्हे । कहिप्रियबचन सुखोसबकीन्हे ॥

छं० कीन्हेसुखी सबकहिसुबाणिबलतुम्हारेरिपुहयो ।
पायोबिभीषणराजतिहुंपुरयशतुम्हारोनितनयो ॥
मोहिंसहितशुभकीरतितुम्हारीपरमप्रीतिजोगाइहैं ।
संसार सिन्धुअपारपार प्रयासबिनु तरिजाइहैं ॥

दो० सुनतरामके बचनमृदु नहिं अघातकहिपुंज ।
बारहिंबार बिलोकिमुख गहेसकल पदकंज ॥

तब प्रभुबोलि लियेहनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहिसुनावहु । तासुकुशललै तुमचलिआवहु ॥
तबहनुमान नगर महं आये । सुनिनिशिचरी निशाचरधाये ॥
पूजाबहु प्रकार तिन कीन्ही । जनकसुता दिखाय पुनिदीन्ही ॥

दूरिहिते प्रणामकपि कीन्हा। रघुपति दूत जानकी चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपा निकेता। कुशल अनुज प्रभुसेन समेता ॥
सबबिधिकुशलकोशलाधीशा। मातु समर जीत्यो दशशीशा ॥
अबिचलराज बिभीषण पावा। सुनि कपिवचन हर्षउरछावा ॥
छं० अतिहर्षमनतनपुलकलोचन सजलपुनिपुनिकहरमा।
कादेउंतोहिंत्रैलोक्यमहं कपिकिमपिनहिं बाणीसमा ॥
सुन मातु मैं पायउं अखिलजग राज आज न संशयं।
रणजीति रिपुदल बन्धुयुत पश्यामिराम नमामियं ॥
दो० सुनसुत सदगुण सकलतव हृदय बसैं हनुमन्त।
सानुकूल रघुबंशमणि रहहिं समेत अनन्त ॥
अबसोइ यतनकरहु तुम ताता। देखौं नयन श्याममृदुगाता ॥
तब हनुमन्त राम पहं आये। जनकसुता करकुशलसुनाये ॥
सुनि बाणी पतंगकुल भूषण। बोलिलिये कपिराजबिभीषण ॥
मारुतसुत के संग सिधावहु। सादर जनक सुता लैआवहु ॥
तुरतहि सकलगये जहंसीता। सेवहिं सब निशिचरीबिनीता ॥
बेगिबिभीषणतिनहिंसिखावा। सादरतिनसीतहिं अन्हवावा ॥
दिव्य बसन भूषण पहिराये। शिविकारुचिरसाजिपुनिल्याये ॥
तेहि पर हर्षि चढ़ी बैदेही। सुमिरि राम सुखधाम सनेही ॥
बेत पाणि रक्षक चहुं पासा। चले सकल मनपरम हुलासा ॥
देखन भालु कीश बहु धाये। रक्षक कोटि निवारण आये ॥
कह रघुबीर कहा ममानहु। सीतहिसखा पयादेहि आनहु ॥
देखहिं कपि जननी की नाईं। बिहंसिकहा रघुबीर गुसाईं ॥
सुनिप्रभुबचन भालुकपिहरषे। नभते सुरन सुमन बहु बरषे ॥
सीतहि प्रथमअग्नि महंराखी। प्रकटकीन्ह चह अन्तर साखी ॥
दो० तेहि कारण करुणाअयन कहे कछुक दुर्बाद।
सुनत यातुधानी सकल लागीं करन बिषाद ॥
प्रभुके बचन शीश धरि सीता। बोली मन क्रमबचन पनीता ॥

लक्ष्मण होहु धर्म के नेगी । पावक प्रकट करहु तुमवेगी ॥
सुनि लक्ष्मण सीताकी बानी । विरह बिबेक धर्मरति सानी ॥
लोचन सजलजोरि कर दोऊ । प्रभुसनकछुकहिसकतनओऊ ॥
देखि रामरुख लक्ष्मण धाये । पावक प्रकट काठ बहुलाये ॥
प्रबल अनल बिलोकि बैदेही । हृदय हर्ष कछु भय नहिंतेही ॥
जो मनक्रम बचमम उरमाहीं । तजि रघुबीर आनगतिनाहीं ॥
तौ कृशानु सबकी गतिजाना । मोहिंहोहु श्रीखण्ड समाना ॥

छं० श्रीखंडसमपावकप्रकटकियसुमिरिप्रभुतेहिमहंचली ।
जय कोशलेशमहेश बन्दितचरण रजअतिनिर्मली ॥
प्रतिबिम्ब अवलोकितकलंक प्रचण्डपावक महंजरे ।
प्रभुचरित काहुनलखेउसुरमुनि सिद्धसबदेखहिंखरे ॥
तबअनलभूसुर रूपकरगहिसत्य श्रीश्रुतिबिदितसो ।
जिमिक्षीरसागरइन्दिरा रामहिंसमर्प्पीअगिनिसो ॥
सोइरामबामविभागराजित रुचिर अतिशोभाभली ।
नवनील नीरज निकट मानहुं कनकपंकज कीकली ॥

दो० हर्षि सुमन बर्षहिंबिबुध बाजहिं गगन निशान ।
गावहिं किन्नर अप्सरा नाचहिं चढ़ी बिमान ॥
श्रीजानकी समेत प्रभु शोभा अमित अपार ।
देखि भालुकपि हरषेउ जय रघुपति सुखसार ॥

तब रघुपति अनुशासन पाई । मातलिचले चरण शिरनाई ॥
आये देव सदा स्वारथी । बचन कहहिं जनु परमारथी ॥
दीन बन्धु दयाल रघुराया । देव कीन्ह देवन पर दाया ॥
विश्वद्रोहरतखल अतिकामी । निजअघगयउ कुमारग गामी ॥
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनासी । सदा एकरस सहज उदासी ॥
अकलअगुण अनवद्यअनामय । अजितअमोघएक करुणामय ॥
मीन कमठ शूकर नरहरी । बामन परशुराम बपुधरी ॥
जबजब नाथसुरन्ह दुखपावा । नाना तनु धरितुमहिंनशावा ॥

रावण पाप मूल सुर द्रोही । कामक्रोधमदरतिअति कोही ॥
सो कृपालु तवधाम सिधावा । यहहमरे मन अचरज आवा ॥
हम देवता परम अधिकारी । स्वारथ रततवभक्ति बिसारी ॥
भव प्रबाह सन्तत हमपरे । अबप्रभुपाहि शरण अनुसरे ॥
दो० करि बिनती सुरसिद्ध सब रहेजहंतहं करजोरि ।
अतिशय प्रेमसरोज बिधिअस्तुति करत बहोरि ॥
छं० जयरामसदासुखधामहरे । रघुनायक शायकचापधरे ॥
भवबारणदारुणसिंहप्रभो । गुणसागरनागरनाथबिभो ॥
तनकामअनेकअनूपछबी । गुणगावतसिद्धमुनींद्रकबी ॥
यशपावनरावननागमहा।खगनाथयथा करिकोपगहा ॥
जनरंजनभंजनशोकभयं । गतक्रोहसदा प्रभुबोधमयं ॥
अवतारउदारअपारगुनं । महिभारबिभंजन ज्ञानघनं ॥
अजब्यापकमेकमनादिसदा।करुणाकररामनमामिमुदा॥
रघुबंशबिभूषणदूषणहा । कृत भूपबिभीषण दीनरहा ॥
गुणज्ञाननिधानअमानअजं।नितरामनमामिबिभूबिरजं ॥
भुजदण्डप्रचण्डप्रतापबलं। खलबृन्दनिकन्दमहाकुशलं॥
बिनुकारणदीनदयालहितं।छबिधामनमामिरमासहितं ॥
भवतारणकारणकाजपरं । मनसम्भव दारुणदोषहरं ॥
शरचाप मनोहर तूणधरं । जलजारुणलोचनभूपबरं ॥
सुखमन्दिरसुन्दरश्रीरमनं । मदमारसुधा ममताशमनं॥
अनवद्यअखंड अगोचरगो । सबरूप सदासबहोइनसो ॥
इतिवेदबदन्तिनदन्तकथा। रविआतपभिन्ननभिन्नयथा ॥
कृतकृत्यबिभोसबबानरये । निरखन्ततवाननसादरये ॥
धृक जीवन देवशरीर हरे । तवभक्तिबिनाभवभूलिपरे ॥
अबदीनदयालकृपाकरिये । मतिमोरिबिभेदकरीहरिये ॥
जिहितेबिपरीतकृपाकरिये। दुखमेंसुखमानसुखीचरिये ॥
खलखण्डनमण्डनरक्षक्षम। पदपंकजसेवितशम्भुउमा ॥

नृपनायकदे बरदानमिदं। चरणाम्बुजप्रेमसदाशुभदं॥
दो० बिनय कीन्ह बहुभांति बिधि प्रेम प्रफुल्लित गात।
बदन बिलोकतराम कर लोचन नाहिं अघात॥
तिहिअवसर दशरथ तहंआये। तनयबिलोकिनयन जलछाये॥
सहितअनुजप्रणामप्रभुकीन्हा। आशिर्बाद पिता तब दीन्हा॥
तात सकल तवपुण्य प्रभाऊ। जीतेउ अजय निशाचर राऊ॥
सुनिसुतवचनप्रीतिअतिबाढ़ी। नयनसलिल रोमावलिठाढ़ी॥
रघुपतिप्रथम प्रेम अनुमाना। चितैपितहि दीन्हेउ दृढ़ज्ञाना॥
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा। दशरथ भेद भक्ति मन लावा॥
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं। तिन्हकहंरामभक्ति निजदेहीं॥
बार बार करिप्रभुहि प्रणामा। दशरथ हर्षि गये निज धामा॥
दो० अनुज जानकी सहित प्रभु कुशल कोशलाधीश।
छबिबिलोकि मनहर्षिअति अस्तुतिकर सुरईश॥
छं० जय राम शोभा धाम। दायक प्रणत बिश्राम।
धृततूण बर शर चाप। भुजदण्ड प्रबल प्रताप॥
जय दूषणारि खरारि। मर्दन निशाचर झारि।
यह दुष्ट मारेउ नाथ। भे देव सकल सनाथ॥
जयहरणधरणी भार। महिमा उदार अपार।
जयरावणारि कृपाल। किययातुधानबिहाल॥
लंकेश अतिबल गर्ब। किये बश्यसुर गन्धर्ब।
मुनिसिद्धनर खगनाग। हठि पन्थ सबके लाग॥
परद्रोह रत अति दुष्ट। पायोसो फल पापिष्ट।
अबसुनहु दीन दयाल। राजीवनयन बिशाल॥
मोहिंरहाअतिअभिमान। नहिंकोउ मोहिंसमान।
अब देखि प्रभु पदकंज। गतमान प्रद दुखपुंज॥
कोउ ब्रह्मनिर्गुण ध्याव। अब्यक्त जिहिश्रुतिगाव।
मोहिं भावकोशल भूप। श्रीराम सगुणस्वरूप॥

वैदेहि अनुज समेत । ममहृदय करहु निकेत ।
मोहिंजानियेनिजदास । दे भक्ति रमानिवास ॥
छं० देभक्ति रमानिवासत्रास हरणशरणसुखदायकं ।
सुखधाम रामनमामिकामअनेकछबिरघुनायकं ॥
सुरवृन्दरंजनद्वन्दभंजन मनुजतनु अतुलितबलं ।
ब्रह्मादि शंकर सेब्यराम नमामिकरुणा कोमलं ॥
दो० अबकरि कृपाबिलोकि मोहिं आयसुदेहु कृपाल ।
कहा करौं सुनिप्रिय वचन बोले दीन दयाल ॥
सुनिसुरपतिकपिभालु हमारे । परेभूमि निशिचरन्ह जो मारे ॥
ममहित लागितजे इन प्राना । सकल जिआउ सुरेश सुजाना ॥
सुनखगेश प्रभुको यह बानी । अतिअगाधजानहिंमुनिज्ञानी ॥
प्रभुचह त्रिभुवन मारि जिवाई । केवल शक्रहि दीन्हि बड़ाई ॥
सुधा बरषिकपिभालुजिवाये । हरषि उठेसब प्रभु पहं आये ॥
सुधा वृष्टिभइ दुहु दलऊपर । जिये भालुकपिनहिंरजनीचर ॥
रामाकारभये तिन्हके मन । गये ब्रह्म पद तजि शरीर रन ॥
सुरअंशिकसबकपिअरुरिच्छा । जिये सकल रघुपतिकी इच्छा ॥
राम सरिसको दीनहितकारी । कीन्हे मुक्त निशाचर झारी ॥
खलमल धामकाम रत रावन । गति पाई जो मुनिवर पावन ॥
दो० सुमनबरषि सबसुरचले चढ़िचढ़िरुचिरबिमान ।
देखि सुअवसर राम पहं आये शम्भु सुजान ॥
परमप्रीतिकरजोरि युग नयननलिनभरिबारि ।
पुलकिततनगदगदगिरा बिनयकरतत्रिपुरारि ॥
छं० मामभिरक्षयरघुकुलनायक।धृतवरचापरुचिरकरशायक ॥
मोहमहाघनपटलप्रभंजन । संशयबिपिन अनलसुररंजन ॥
अगुणसगुणगुणमंदिरसुन्दर।भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर॥
काम क्रोधमदगजपंचानन । बसहु निरन्तर जनमनकानन॥
बिषय मनोरथ पुंजकंजबन । प्रबल तुषार उदारपारमन ॥

भवबारिधि मन्दरपरमन्दर। कारय तारयसंश्रितदुस्तर॥
श्यामगातराजीव बिलोचन। दीनबन्धुप्रणतारतमोचन॥
अनुजजानकीसहित निरन्तर। बसहुरामनृपममउरअन्तर॥
मुनिरंजनमहिमंडलमण्डन।तुलसिदासप्रभुत्रासबिखण्डन॥
दो० नाथजबहिं कोशलपुर होइहि तिलक तुम्हार।
तबआउब हमसुनहुप्रभु देखनचरित उदार॥
करिबिनती जबशम्भु सिधाये। तब प्रभुनिकटबिभीषण आये॥
नाइचरणशिर कह मृदुबाणी। बिनयसुनियममशारंगपाणी॥
सकुल सदल प्रभुरावण मारा। पावन यशत्रिभुवन बिस्तारा॥
दीन मलीन हीन मति जाती। मोपर कृपाकीन्ह बहु भांती॥
अबजन गृह पुनीत प्रभुकीजै। मज्जनकरियसकलश्रमछीजै॥
देश कोश मन्दिर सम्पदा। देहु कृपालकपिन कहं मुदा॥
सबबिधिनाथमोहिंअपनाइय।पुनिमोहिंसहितअवधपुरजाइय॥
सुनत बचनमृदु दीनदयाला। सजल भयेहरिनयनबिशाला॥
दो० तोर कोश गृह मोर सब सत्य बचन सुनतात।
दशाभरतकीसुमिरिमोहिं पलक कल्पसमजात॥
तापस वेष शरीर कृश जपैं निरन्तर मोहिं।
देखोंवेगि सोयतन करि सखा निहारों तोहिं॥
जो जैहों बीते अवधि जियत न पाऊं बीर।
प्रीतिभरतकी समुझि प्रभुपुनिपुनिपुलकशरीर॥
सुनत बिभीषण बचनरामके। हर्षि गहे पदकृपा धामके॥
वानर भालु सकल हर्षाने। प्रभुपदगहिगुणबिमलबखाने॥
बहुरिबिभीषण भवन सिधाये। मणिगणबसनबिमानभराये॥
लै पुष्पक प्रभु आगे राखा। हंसिकै कृपासिन्धुअसभाखा॥
चढ़िबिमानसुनसखाबिभीषण। गगन जाइ बर्षहु पट भूषण॥
नभ पर जाइ बिभीषणतबहीं। बर्षि दिये पटभूषण सबहीं॥
जो जेहि मन भावै सो लेहीं। मणिमुख मेलि डारि कपिदेहीं॥

हंसत राम सिय अनुज समेता । परम कौतुकी कृपा निकेता ॥

दो० ध्यान न पावहिं जासु मुनि नेतिनेतिकहवेद ।
कृपासिन्धु सोइकपिनसों करतअनेक बिनोद ॥
उमा योग जप दान तप नाना ब्रत मखनेम ।
राम कृपानहिं करहिं तस जस निःकेवलप्रेम ॥

भालु कपिन पट भूषण पाये । पहिरिपहिरिरघुपतिपहं आये ॥
नानाजिनिसि देखिप्रभु कोशा । पुनिपुनिहंसत कोशलाधीशा ॥
चितै सबनि पर कीन्ही दाया । बोले मधुर बचन रघुराया ॥
तुम्हरे बल मैं रावण मारा । तिलकबिभीषणकहंपुनिसारा ॥
निजनिजगृहअबतुम सबजाहू । सुमिरहु मोहिंडरहुजनिकाहू ॥
बचन सुनत प्रेमाकुल बानर । जोरिपाणि बोले सब सादर ॥
प्रभुजो कहहु तुमहिं सबसोहा । हमरे हियउपजै सुनिमोहा ॥
दीन जानि कपि किये सनाथा । तुम त्रैलोक्य ईश रघुनाथा ॥
सुनिप्रभुबचनलाजहममरहीं । मशककबहुंखगपतिहितकरहीं ॥
देखि रामरुख बानर ऋच्छा । प्रेममगन नहिं गृहकीइच्छा ॥

दो० प्रभु प्रेरित कपिभालु सब रामरूप उर राखि ।
हर्षबिषाद समेत सब चले बिनय बहु भाखि ॥
जामवन्त कपिराज नल अंगदादि हनुमान ।
सहित बिभीषण अपरजे यूथप अति बलवान ॥
कहिनसकहिं कछुप्रेमबश भरिभरिलोचनबारि ।
सनमुख चितवहिं रामतन नयननिमेषनिवारि ॥

अतिशय प्रीति देखि रघुराई । लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई ॥
मनमहं बिप्र चरण शिरनावा । उत्तरदिशिहि बिमानचलावा ॥
चलत बिमान कोलाहल होई । जय रघुबीर कहै सब कोई ॥
सिंहासन अति उच्च मनोहर । सिय समेत बैठे प्रभु तापर ॥
राजत राम सहित भामिनी । मेरुशृङ्ग जनु घन दामिनी ॥
रुचिरबिमानचला अतिआतुर । कीन्ही सुमन वृष्टि हर्षे सुर ॥

परमसुखदचलित्रिबिधिबयारी । सागर सुरसरि निर्मलवारी ॥
शकुन होहिं सुन्दर चहुं पासा । मनप्रसन्न निर्मल आकाशा ॥
कह रघुबीर देख रण सीता । लक्ष्मणहत्यो इहां इन्द्रजीता ॥
अंगद हनूमान के मारे । रण महं परे निशाचर भारे ॥
कुम्भकर्ण रावण दोउ भाई । इहांहतेउं सुरमुनि सुखदाई ॥

दो० सुन्दरि सेतु देखु यह थापेउ शिव सुखधाम ।
सीता सहित कृपायतनशम्भुहि कीन प्रणाम ॥
जहं जहं कृपासिन्धु बन कीन्ह बास बिश्राम ।
सकलदेखाये जानकिहि कहिकहिसबकेनाम ॥

सपदिबिमान तहां चलिआवा । दण्डकबन जहं परमसुहावा ॥
कुम्भजादि मुनि नायक नाना । गये राम सबके अस्थाना ॥
सकल मुनिन सोंपाइ अशीशा । आये चित्रकूट जगदीशा ॥
तहं करि ऋषिन केर सन्तोखा । चला बिमान तहां ते चोखा ॥
बहुरि राम जानकी दिखाई । यमुना कलिमलहरणिसुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता । राम कहा प्रणामकरु सीता ॥
तीरथ पति पुनिदीख प्रयागा । देखत जाहि पापसब भागा ॥
देखि राम पावन पुनि बेनी । हरणशोक सुरलोक निशेनी ॥
देखी अवध पुरी अति पावनि । त्रिबिधतापभवदापनशावनि ॥

दो० तबरघुनन्दनसियसहितअवधहिकीन्हप्रणाम ।
सजल बिलोचनपुलकतन पुनिपुनिहर्षितराम ॥
बहुरि त्रिवेणी आय प्रभुहर्षित मज्जन कीन्ह ।
कपिनसमेतमहीसुरन्ह दानबिबिधबिधिदीन्ह ॥

प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई । धरिद्विजरूप अवध पुरजाई ॥
भरतहिकुशल हमारिसुनावहु । समाचारलै पुनिचलि आवहु ॥
तुरत पवनसुत गवनत भयऊ । तबप्रभु भरद्वाज पहं गयऊ ॥
नाना बिधिपूजा मुनि कीन्ही ।अस्तुतिकरिपुनिआशिषदीन्ही ॥
मुनिपदबन्दि युगुलकरजोरी । चढ़ि बिमान प्रभुचले बहोरी ॥

इहां निषाद सुना प्रभु आये। नाव नाव करि लोग बुलाये ॥
सुरसरि लांघि यान जब आवा। उतरातहं प्रभु आयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सुरसरी। बहुप्रकार करि चरणनपरी॥
दीन्ह अशीश मुदित मन गंगा। सुंदरि तव अहिवात अभंगा॥
सुनतहि गुहधावा प्रेमाकुल। आवा निकट परमसुख संकुल ॥
प्रभुहिं बिलोकि सहित बैदेही। परेउ अवनि तन सुधि नहिं तेही॥
परम प्रीति बिलोकि रघुराई। हर्षि उठाइ लीन्ह उरलाई ॥

छं० लिय हृदयलाइकृपानिधान सुजान राम रमापती ।
बैठारि परम समीप पूंछी कुशलसो करि बीनती ॥
अबकुशलपदपंकजबिलोकि बिरंचिशंकरसेव्यजे ।
सुख धाम पूरणकाम राम नमामिरामनमामिजे ॥
सबभांतिअधमनिषादसोहरि भरतज्योंउरलाइये ।
मतिमंद तुलसीदाससोप्रभु मोहवशबिसराइये ॥
यहरावणारिचरित्रपावन रामपद रतिप्रदसदा।
कामादिहरबिज्ञानकरसुर सिद्धमुनि गावहिंमुदा ॥

दो० समरबिजय रघुनाथके सुनहिं जेसंत सुजान ।
बिजयबिवेक बिभूतिनित तिनहिं देहिंभगवान ॥
यह कलिकाल मलायतन मनकरि देखुबिचार ।
श्री रघुनायक नामतजि नहिं कछु आनअधार ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबिमलवैराग्यसम्पादनोनामषष्ठःसोपानः ॥ ६ ॥

―――※―――

श्रीगणेशायनमः ॥

उत्तरकाण्ड ॥

श्लोक ॥

केकीकण्ठाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं शोभाढ्यं पीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्वदासुप्रसन्नं ॥पाणौनाराचचापंकपिनिकरयुतंबंधुनासेव्यमानं नौमीड्यं जानकीशंरघुवरमनिशंपुष्पकारूढ़रामं १कोशलेन्द्रपदकंजमंजुलौपद्मयोनिशितिकंठवन्दितौ॥ जानकीकरसरोजलालितौचिंतकस्यमनभृङ्गसंगिनौ २ कुंदइन्दुदरगौरसुन्दरंअम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदं ॥ कारुणीककलकंजलोचनंनौमिशंकरमनंगमोचनं ३ ॥

दो॰ रहा एकदिन अवधिकर अति आरतपुरलोग ।
जहं तहं शोचहिंनारिनर कृशतन रामवियोग ॥
शकुनहोहिं सुन्दर सकल मनप्रसन्न सबकेर ।
प्रभु आगमनजनाव जनु नगर रम्य चहुंफेर ॥
कौशल्यादिक मातुसब मन अनन्द असहोइ ।
आये प्रभुसिय अनुजयुतकहन चहतअसकोइ ॥
भरत नयन भुजदक्षिण फरकहिं बारहिं बार ।
जानि शकुन मनहर्ष अति लागे करन बिचार ॥

रहा एक दिन अवधि अधारा । समुझतमनदुखभयउ अपारा ॥
कारण कवन नाथ नहिं आये । जानिकुटिलप्रभुमोहिंबिसराये ॥
अहह धन्य लक्ष्मण बड़भागी । राम पदारविन्द अनुरागी ॥

कपटीकुटिलनाथ मोहिंचीन्हा । ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
जो करणी समुझैं प्रभुमोरी । नहिंनिस्तार कल्पशतकोरी ॥
जनअवगुण प्रभुमान नकाऊ । दीनबन्धु अति मृदुलसुभाऊ ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिंराम शकुनशुभहोई ॥
बीते अवधि रहे जो प्राना । अधमकवनजग मोहिसमाना ॥

दो० रामबिरह सागर महं भरत मगन मन होत ।
बिप्ररूप धरि पवनसुत आइगये जिमि पोत ॥
बैठे देखि कुशासन जटा मुकुट कृश गात ।
रामराम रघुपति जपत श्रवतनयन जलजात ॥

देखत हनूमान अति हर्षै । पुलक गात लोचनजल बर्षै ॥
मनमहं बहुत भांति सुखमानी । बोले श्रवण सुधासम बानी ॥
जासु बिरह शोचहु दिन राती । रटहु निरन्तर गुणगणपांती ॥
रघुकुलतिलकसुजनसुखदाता । आये कुशल देवमुनित्राता ॥
रिपुरणजीति सुयशसुर गावत । सीताअनुजसहितप्रभुआवत ॥
सुनतबचन बिसरे सब दूखा । तृषावन्तजनु पाय पियूखा ॥
को तुम तात कहां ते आये । मोहिंपरमप्रिय बचन सुनाये ॥
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना । नाममोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर । सुनतभरत भेंटे उठिसादर ॥
मिलत प्रेम नहिंहृदय समाता । नयनश्रवतजलपुलकितगाता ॥
कपि तवदरश सकलदुखबीते । मिले आजु मोहिंरामसप्रीते ॥
बार बार पूंछी कुशलाता । तोकहं काह देउंसुनु भ्राता ॥
यहि संदेश सरिस जग माहीं । करि बिचार देखा कछु नाहीं ॥
नाहिंन उऋण तात मैं तोहीं । अबप्रभुचरित सुनावहु मोहीं ॥
तब हनुमान नाइपद माथा । कहेसिसकलरघुपतिगुणगाथा ॥
कहुकपि कबहुं कृपालु गुसाईं । सुमिरत मोहिं दासकी नाईं ॥

छं० निजदासज्यों रघुबंशभूषण कबहुंमम सुमिरनकर्यो ।
सुनिभरतबचनबिनीतअतिकपिपुलकतनचरणनपर्यो ॥

रघुबीरनिजमुखजासुगुणगण कहतअगजग नाथजो ।
काहे न होइबिनीत परम पुनीत सद्गुण सिन्धुसो ॥

दो० राम प्राण प्रियनाथ तुम सत्य बचन मम तात ।
पुनिपुनि मिलत भरतसन प्रेम न हृदय समात ॥

सो० भरत चरण शिरनाइ तुरत गये कपि रामपहं ।
कही कुशल सब जाइ हर्षि चले प्रभु यान चढ़ि ॥

हर्षि भरत कोशलपुर आये । समाचार सब गुरुहिं सुनाये ॥
पुनि मन्दिर महं बात जनाई । आवत नगर कुशल रघुराई ॥
सुनत सकल जननीउठिधाईं । कहिप्रभुकुशल भरतसमुझाईं ॥
समाचार पुरवासिन पाये । नर अरु नारि हर्षि उठिधाये ॥
दधि दूर्बा रोचन फलफूला । नव तुलसीदल मंगल मूला ॥
भरि भरिथारहेम वरभामिनि । गावतचलीं सिन्धुरगामिनि ॥
जो जैसहि तैसहि उठि धावहिं । बालवृद्ध कोउसंग न लावहिं ॥
एक एक सन पूंछहिं धाई । तुम देखे दयालु रघुराई ॥
अवध पुरी प्रभु आवत जानी । भई सकल शोभा की खानी ॥
भा सरयू अति निर्मल नीरा । बहैसुहावनि त्रिबिधिसमीरा ॥

दो० हर्षित गुरु पुरजन अनुज भूसुर वृन्दसमेत ।
चलेभरत अतिप्रेममन सन्मुख कृपानिकेत ॥
बहुतकचढ़ीं अटारिन्हनिरखहिं गगनविमान ।
देखि मधुर स्वरहर्षित करहिं सुमंगलगान ॥
राका शशि रघुपति पुरी सिन्धुदेखि हर्षान ।
बढ़े कोलाहल करत जनु नारितरंग समान ॥

रबिकुलकमलदिवाकर आवत । नगरमनोहर कपिन देखावत ॥
सुन कपीश अंगद लंकेशा । पावन पुरी रुचिर यह देशा ॥
यद्यपि सबबैकुण्ठ बखाना । वेदपुराण विदित जग जाना ॥
अवधसरिसप्रियमोहिंनसोऊ । यह प्रसंग जानै कोउकोऊ ॥
जन्मभूमि ममपुरी सुहावनि । उत्तर दिशि सरयूबह पावनि ॥

जो मज्जहिं सो बिनहिं प्रयासा । मम समीपनरपावहिंबासा ॥
अतिप्रिय मोहिं इहां के बासी । मम धामदा पुरी सुखरासी ॥
हर्षे कपि सुनि प्रभुकी बानी । धन्यअवधजेहिरामबखानी ॥

दो० आवत देखे लोगसब कृपासिन्धु भगवान ।
नगर निकट प्रभुआयउ उतरे भूमि बिमान ॥
बहुरि कहेउ प्रभुपुष्पकहि तुम कुबेरपहंजाहु ।
प्रेरित रामचलेउ सो हर्ष बिरह अति ताहु ॥

आये भरत संग सब लोगा । कृशतन श्रीरघुबीरबियोगा ॥
बामदेव बशिष्ठ मुनि नायक । देखाप्रभुमहिधरिधनुशायक ॥
धाइ धरे गुरुचरण सरोरुह । अनुजसहितअतिपुलकतनोरुह ॥
भेंटे कुशल पूंछि मुनिराया । हमरेकुशलतुम्हारिहिदाया ॥
सकलद्विजनकहं नायउ माथा । धर्म धुरन्धर रघुकुल नाथा ॥
गहेभरतपुनि प्रभुपदपंकज । नवहिंजिनहिंशंकरसुरमुनिअज ॥
परे भूमि नहिं उठत उठाये । बलकरि कृपासिन्धु उरलाये ॥
श्यामल गात रोम भये ठाढ़े । नव राजीव नयन जलबाढ़े ॥

छं० राजीव लोचन श्रवतजलतन ललित पुलकावलिबनी ।
अतिप्रेमहृदयलगाइ अनुजहि मिलेप्रभु त्रिभुवनधनी ॥
प्रभुमिलत अनुजहिसोह मोपहं जातनहिंउपमा कही ।
जनुप्रेमअरु शृङ्गार तनुधरि मिलत बर सुखमालही ॥
पूछत कृपानिधि कुशलभरतहिं बचनवेगि न आवई ।
सुनि शिवा सो सुख बचनमनते भिन्न जान न पावई ॥
अबकुशल कोशलनाथ आरत जानिजन दरशनदियो ।
बूड़तबिरहबारिधिकृपानिधिकाढ़िमोहिंकरगहिलियो ॥

दो० पुनि प्रभु हर्षित शत्रुहन भेंटे हृदय लगाइ ।
लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि प्रेम न हृदय समाइ ॥

भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे । दुसह बिरह सम्भवदुखमेटे ॥
सीता चरण भरत शिर नावा । अनुज समेतपरम सुखपावा ॥

प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी । जनितबियोगबिपतिसबनासी ॥
प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कीन्ह कृपालु खरारी ॥
अमित रूपप्रकटे तेहिकाला । यथायोग्यमिलिसबहिंकृपाला ॥
कृपादृष्टि सब लोग बिलोकी । कियेसकलनरनारिविशोकी ॥
क्षणमहं सबहिंमिले भगवाना । उमा मर्म यहकाहु न जाना ॥
यहिबिधिसबहिंसुखीकरिरामा । आगे चले शील गुण धामा ॥
कौशल्यादि मातु सब धाईं । निरखिबच्छ जनु धेनुलवाईं ॥
छं० जनुधेनु बालक बच्छ तजिगृह चरनबन परबश गईं ।
दिनअन्त पुर रुख श्रवतथन हुंकार करिधावति भईं ॥
अतिप्रेम प्रभु सब मातु भेंटे बचन मृदुबहुबिधि कहे ।
गइबिषमबिपतिबियोगभवतिन्हहर्षसुखअगणित लहे ॥
दो० भेंटेउ तनय सुमित्रा राम चरण रति जानि ।
रामहिं मिलत केकयी हृदय बहुत सकुचानि ॥
लक्ष्मण सब मातन्ह मिले हर्षे आशिष पाइ ।
केकयिकहं पुनिपुनिमिले मनकर क्षोभ न जाइ ॥
सासुन सबहिं मिली बैदेही । चरणन लागि हर्ष अतितेही ॥
देहिं अशीश पूछि कुशलाता । होउअचल तुम्हारअहिवाता ॥
सबरघुपति पदकमलबिलोकी । मंगल जानि नयन जलरोकी ॥
कनक थार आरती उतारहिं । बारबार प्रभुगात निहारहिं ॥
नाना भांति निछावरि करहीं । परमानन्द हर्ष उर भरहीं ॥
कौशल्या पुनि पुनि रघुबीरहिं । चितवहिंकृपासिंधु रणधीरहिं ॥
हृदय बिचारति बारहिं बारा । कवन भांतिलंकापति मारा ॥
अतिसुकुमार युगल ममबारे । निशिचर सुभट महाबलभारे ॥
दो० लक्ष्मणअरुसीता सहित प्रभुहिंबिलोकहिंमात ।
परमानन्द मगनमन पुनि पुनि पुलकित गात ॥
लंकापति कपीश नल नीला । जामवंत अंगद शुभशीला ॥
हनुमदादि सब बानर बीरा । धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥

भरत सनेह शील ब्रत नेमा। सादर सबबरणहिं अतिप्रेमा ॥
देखि नगर बासिन की रीती । सकल सराहहिं प्रभुपदप्रीती ॥
पुनि रघुपतिनिज सखाबुलाये । मुनिपदलागहुसबहिंसिखाये॥
गुरु बशिष्ठ कुल पूज्य हमारे । इनकी कृपा दनुज रण मारे ॥
येसब सखा सुनियमुनि मोरे । भये समर सागर कहं बेरे ॥
मम हित लागि जन्म इन हारे । भरतहुतेमोहिं अधिकपियारे ॥
सुनिप्रभु बचन मगन सबभये । निमिषनिमिषउपजतसुखनये ॥

दो० कौशल्याके चरणन पुनि तिन नायउ माथ ।
आशिषदीन्हहर्षिहिय तुमप्रियजिमि रघुनाथ ॥
सुमन वृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकन्द ।
चढ़े अटारिन्ह देखहीं नगर नारि नर वृन्द ॥

कंचन कलश बिचित्र संवारे । सबनिधरेसजि निजनिजद्वारे ॥
बन्दनवार पताका केतू । सबन्हि बनाये मंगल हेतू ॥
बीथिन सकल सुगंधि सिंचाये । गजमणिरचि बहुचौकपुराये ॥
नाना भांति सुमंगल साजे । हर्ष निशान नगर बहु बाजे ॥
जहंतहं नारि निछावरि करहीं । देहिं अशीश हर्ष उर भरहीं ॥
कंचन थार आरती नाना । युवतीसाजि करहिंकलगाना ॥
करहिं आरती आरत हरके । रघुकुलकमलबिपिनदिनकरके ॥
पुर शोभा सम्पति कल्याना । निगम शेष शारदा बखाना ॥
तेऊ चरित देखि ठग रहहीं । उमातासुगुणनर किमिकहहीं ॥

दो० नारि कुमुदिनी अवधसर रघुपति बिरह दिनेश ।
अस्त भये बिकसित भई निरखि राम राकेश ॥
होहिंशकुनशुभबिबिधबिधि बाजहिंगगननिशान ।
पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान ॥

प्रभु जानी केकयी लजानी । प्रथम तासु गृह गये भवानी ॥
ताहिप्रबोधि बहुत सुखदीन्हा । तबनिजभवनगवनप्रभुकीन्हा ॥
कृपासिन्धु जब मन्दिर गयऊ । पुरनरनारि सुखीसब भयऊ ॥

गुरु बशिष्ठ द्विज लिये बुलाई। आजु सुघरी सुदिनसुखदाई ॥
सब द्विजदेहु हर्षि अनुशासन। रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन ॥
सुनि बशिष्ठ के बचन सुहाये। सुनतसकल बिप्रन मनभाये ॥
कहहिं बचनमृदु बिप्र अनेका। जगअभिराम रामअभिषेका ॥
अबमुनिवर बिलम्ब नहिं कीजे। महाराज कहं तिलककरीजै ॥

दो० तब मुनि कहेउ सुमन्त्रसन तुरत चलेशिरनाइ।
रथ अनेक गज बाजि बहु सकल संवारे जाइ॥
जहंतहं धावन पठै पुनि मंगल द्रब्य मंगाइ।
हर्ष समेत बशिष्ठ पद पुनि शिर नायउ आइ॥

अवधपुरी अति रुचिर बनाई। देवन सुमन वृष्टि झरि लाई ॥
राम कहा सेवकन्ह बुलाई। प्रथम सखन्ह अन्हवावहुजाई ॥
सुनत बचन जन जहंतहं धाये। सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ॥
पुनि करुणानिधि भरतहंकारे। निजकर जटा राम निरवारे ॥
अन्हवाये पुनि तीनिहु भाई। भक्तबछ्ल कृपालु रघुराई ॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई। शेष कोटि शतसकहिं न गाई ॥
पुनि निजजटा राम बिवराये। मुनि अनुशासनपाइ अन्हाये ॥
करि मज्जन भूषण प्रभु साजे। अंग अनंग कोटि छबि लाजे ॥

दो० सासुन सादर जानकिहि मज्जन तुरतकराइ।
दिब्यबसनबर भूषणनि अंगअंग सजे बनाइ॥
राम बाम दिशि शोभित रमारूप गुण खानि।
देखिसासु सबहर्षित जन्मसुफलनिज जानि॥
सुनखगेश तेहि अवसर ब्रह्मा शिव मुनिवृन्द।
चढ़ि बिमान आयेसकल सुरदेखन सुखकन्द॥

प्रभु बिलोकिमुनिमनअनुरागा। तुरत दिब्य सिंहासन मांगा ॥
रबिसम तेज बरणि नहिं जाई। बैठे राम द्विजन शिर नाई ॥
जनकसुता समेत रघुराई। देखि प्रहर्षे मुनि समुदाई ॥
वेद मंत्र द्विज बर उच्चारे। नभसुरमुनिजयजयतिपुकारे ॥

प्रथम तिलकबशिष्ठमुनिकीन्हा । पुनिसबबिप्रनआयसुदीन्हा ॥
सुत बिलोकि हर्षित महतारी । बार बार आरती उतारी ॥
बिप्रनदानबिबिध विधिदीन्हे । याचक सकलअयाचककीन्हे ॥
सिंहासन पर त्रिभुवन साईं । देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाईं ॥

छं० नभ दुन्दुभी बाजहिं बिपुल गन्धर्ब किन्नरगावहीं ।
नाचहिं अप्सरा वृन्द परमानन्द सुर मुनिपावहीं ॥
भरतादि अनुज बिभीषणांगद हनुमतादि समेतजे ।
गहे छत्र चामरब्यजनधनु असिचर्मशक्तिबिराजते ॥
सियसहितदिनकरबंशभूषण कामबहुछबि सोहहीं ।
नव अम्बुधर बरगातअम्बर पीतमुनिमन मोहहीं ॥
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषण अंग अंगन प्रतिसजे ।
अंभोज नयनबिशाल उरभुजधन्यनर निरखंतजे ॥

दो० यह शोभा समाज सुख कहत न बनै खगेश ।
बरणै शारद शेष श्रुति सो रस जानु महेश ॥
भिन्न भिन्न अस्तुतिकरि गे सुरनिजनिजधाम ।
बन्दी बेष बेद धरि आये जहं श्री राम ॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति आदर कृपा निधान ।
लखा न काहूमर्म कछु लगेकरण गुणगान ॥

छं० जय सगुण निर्गुणरूप रामअनूप भूप शिरोमने ।
दशकन्धरादिप्रचण्डनिशिचरप्रबलखलभुजबलहने ॥
अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुण दुखदहे ।
जय प्रणतपाल दयालप्रभुसंयुक्तशक्तिनमामिहे ॥
तवबिषय मायाबश सुरासुरनागनर अगजग हरे ।
भवपंथभ्रमितश्रमितदिवसनिशिकालकर्मगुणनभरे ॥
जेहि नाथ करिकरुणाबिलोकहुत्रिबिधदुखतेनिर्बहे ।
भव खेद छेदन दक्ष हम कहंरक्ष राम नमामिहे ॥
जे ज्ञानमान बिमत्ततवभव हरणि भक्तिन आदरी ।

ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हमदेखतहरी ॥
विश्वास करिसब आश परिहरि दासतव जेहोरहे ।
जपिनामतव बिनुश्रमतरहिंभव नाथरामनमामिहे ॥
जे चरण शिवअजपूज्यरजशुभ परसिमुनिपत्नीतरी ।
नखनिर्गता सुरबन्दिता त्रैलोक्यपावनि सुरसरी ॥
ध्वजकुलिश अंकुशकंजयुतपद फिरतकंटकजिनलहे ।
पद कंज द्वंद मुकुन्दराम रमेश नित्य भजामिहे ॥
अव्यक्तमूल मनादितरुत्वच चारिनिगमागम भने ।
षटकन्ध शाखा पंचबिंश अनेक पर्ण सुमन घनें ॥
फलयुगलबिधिकटुमधुरबेलिअकेलिजेहिआश्रितरहे ।
पल्लवित फूलत नवलनिति संसार बिटपनमामिहे ॥
जे ब्रह्म अजअद्वैत अनुभवगम्यमन पर ध्यावहीं ।
तेकहहु जानहुनाथहमतव सगुणयशनितिगावहीं ॥
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देवयहबर मांगहीं ।
मनकर्म बचनबिकारतजितव चरणहमअनुरागहीं ॥
दो० सबके देखत बेदन बिनती कीन्ह उदार ।
अन्तर्द्धान भये तब गये ब्रह्म आगार ॥
बैनतेय सुन शंभुतब आये जहं रघुबीर ।
बिनयकरतगद्गद गिरापूरितपुलकशरीर ॥
छं० जयराममरमारमनं शमनं । भवताप भयाकुलपाहिजनं ॥
अवधेश सुरेशरमेशबिभो । शरणागतमांगत पाहिप्रभो ॥
दशशीशबिनाशनबीसभुजा। कृतदूरिमहा महिभूरिरुजा ॥
रजनीचरवृन्द पतंग रहे । शरपावक तेज प्रचण्डदहे ॥
महिमण्डलमण्डनचारुतरं । धृत शायकचाप निषंगबरं ॥
मदमोहमहाममतारजनी । तमपुंज दिवाकर तेज अनी ॥
मनुजातकिरातनिपातकिये । मृगलोग कुभोगशरेनहिये ॥
हतनाथअनाथनिपाहिहरे । बिषयाबश पामरभूलिपरे ॥

बहुरोगबियोगन्हलोगहये। भवदंघ्रिनिरादर केफलये ॥
भव सिन्धु अगाधपरेनरते। पदपंकज प्रेम न जे करते ॥
अतिदीनमलीनदुखीनितहीं। जिनकेपदपंकजप्रीतिनहीं ॥
अवलम्बभवन्तकथाजिनके। भवभीतिकदापिनहींतिनके ॥
नहिंरागनरोषनमानमदा। तिनके सम बैभवबादिपदा ॥
मुनित्यागतयोगभरोससदा। इहिते तव सेवक होतमुदा ॥
करिप्रेमनिरंतर नेमलिये। पद पंकज सेवत शुद्धहिये ॥
सनमाननिरादरआदरही। सोइसन्तसुखीबिचरन्तमही ॥
मुनिमानसपंकजभृङ्गभजे। रघुबीर महारणधीर अजे ॥
तवनामजपामिनमामिहरी। भवरोग महामद मानअरी ॥
गुणशीलकृपापरमायतनं। प्रणमामि निरंतर श्री रमनं ॥
रघुनन्दनिकन्दनद्वन्दघनं। महिपालबिलोकियदीनजनं ॥

दो० बार बार बर मांगौं हर्षि देहु श्रीरंग।
पदसरोज अनपावनी भक्ति सदा सतसंग ॥
बरणि उमापतिराम गुण हर्षिगये कैलास।
तबप्रभुकपिनदिवायेसबबिधि सुखप्रदबास ॥

सुनखगपतियहकथासुहावनि। त्रिबिधितापभवदोषनशावनि ॥
महाराजकर शुभ अभिषेका। सुनतलहहिंनरबिरतिबिबेका ॥
जे सकामनरसुनहिंजेगावहिं। सुखसम्पतिनानाबिधिपावहिं ॥
सुरदुर्लभ सुखकरि जगमाहीं। अन्तकाल रघुपति पुरजाहीं ॥
सुनहिंबिमुक्त बिरतअरुबिषई। लहहिंभक्तिसुखसम्पतिनितई ॥
खगपति रामकथा मैं बरणी। सुमतिबिलासत्रासदुखहरणी ॥
बिरति बिबेक भक्तिदृढ़करणी। मोहनदी कहं सुन्दर तरणी ॥
नित नव मंगल कोशल पुरी। हर्षित रहहिं लोग सबकुरी ॥
नित नव प्रीति राम पदपंकज। सेवत जेहिशंकरसुरमुनिअज ॥
मंगन बहु प्रकार पहिराये। द्विजन दाननाना बिधिपाये ॥

दो० परमानन्द मगन कपि सबकहं प्रभुपद प्रीति।

जात न जानेउ दिवसनिशि गये मासषटबीति ॥

बिसरे गृह सपने सुधि नाहीं । जिमिपरद्रोह सन्तमनमाहीं ॥
तब रघुपति सब सखाबुलाये । आइसबहिं सादर शिरनाये ॥
प्रेमसमेत निकट बैठारे । भक्त सुखद मृदुबचन उचारे ॥
तुम अति कीन्हमोरि सेवकाई । मुखपर केहिबिधिकरौं बड़ाई ॥
तातेमोहिं तुम अतिप्रियलागे । ममहितलागिभवनसुखत्यागे ॥
अनुज राज सम्पति बैदेही । देह गेह परिवार सनेही ॥
सबमोहिंप्रियनहिंतुमहिंसमाना। मृषा न कहौं मोरयहबाना ॥
सब कहं प्रियसेवक यह नीती । मोरे अधिक दासपर प्रीती ॥

दो० अबगृहजाहु सखासब भजहु मोहिं दृढ़ नेम ।
सदासर्बगत सर्बहित जानिकरेहु अतिप्रेम ॥

सुनि प्रभु बचनमगनसबभये । कोहम कहा बिसरितनगये ॥
इकटक रहे जोरि कर आगे । कहिनसकतकछुअतिअनुरागे ॥
परम प्रीति तिनकरप्रभु देखी । कहाबिबिधबिधिज्ञानबिशेखी ॥
प्रभुसन्मुखकछु कहैनपावहिं । पुनिपुनिचरणसरोजनिहारहिं ॥
तब प्रभु भूषण बसन बनाये । नाना रंग अनूप सोहाये ॥
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराये । भरतबसन निज हाथबनाये ॥
प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये । लंकापति रघुपति मनभाये ॥
अंगद बैठि रहे नहिं डोले । प्रीतिजानि प्रभुताहि न बोले ॥

दो० जामवन्त नीलादि सब पहिराये रघुनाथ ।
हियधरिराम स्वरूप सब चले नायपदमाथ ॥
तब अंगदउठिनायशिर सजलनयन करजोरि ।
अति बिनती बोलेबचन मनहुं प्रेमरसबोरि ॥

सुन सर्बज्ञ कृपासुखसिन्धो । दीन दयाकर आरत बन्धो ॥
मरती बार नाथ मोहिं बाली । गयो तुम्हारे पगतर घाली ॥
अशरण शरण बिरदसम्भारी । मोहिंजनितजहुभक्तभयहारी ॥
मोरे प्रभु तुम गुरु पितुमाता । जाउंकहांतजि पद जलजाता ॥

तुमहिं बिचारि कहहु नरनाहा । प्रभु तजि भवन काज मम काहा ॥
बालक अबुध ज्ञान बल हीना । राखहु शरण जानि जनदीना ॥
नीच टहल गृह की सब करिहैं । पद बिलोकि भवसागर तरिहैं ॥
अस कहि चरण परे प्रभु पाहीं । अब जनि नाथ कहहु गृह जाहीं ॥

दो० अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुणासीव ।
प्रभु उठाय उर लायऊ सजल नयन राजीव ॥
निज उर माला बसन मणि बालितनय पहिराय ।
बिदा किये भगवान तब बहु प्रकार समुझाय ॥

भरत अनुज सौमित्र समेता । पठवन चले भक्तकृतचेता ॥
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा । फिरि फिरि चितवत प्रभु की ओरा ॥
बारबार करि दण्ड प्रणामा । मन अस रहन कहहिं मोहिं रामा ॥
राम बिलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि शोचत हंसि मिलनी ॥
प्रभु रुख देखि बिनय बहु भाखी । चले हृदय पद पंकज राखी ॥
अति आदर सब कपि पहुंचाये । भाइन सहित राम फिरि आये ॥
तब सुग्रीव चरण गहि नाना । भांति बिनय कीन्ही हनुमाना ॥
दिन दश करि रघुपति पद सेवा । तब फिरि चरण देखिहौं देवा ॥
पुण्य पुंज तुम पवन कुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥
अस कहि कपिपति चले तुरता । अंगद कहेउ सुनहु हनुमंता ॥

दो० करेहु दण्डवत प्रभु सन तुमहिं कहौं कर जोरि ।
बारबार रघुनायकहिं सुरति करायहु मोरि ॥
अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आये हनुमंत ।
तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भये भगवंत ॥
कुलिशहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।
चित खगेश रघुनाथ अस समुझि परै कहु काहि ॥

पुनि कृपाल लिय बोलि निषादा । दीन्हेउ भूषण बसन प्रसादा ॥
जाहु भवन मम सुमिरण करहू । मन क्रम बचन धर्म अनुसरहू ॥
तुम मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहहु पुर आवत जाता ॥

बचन सुनत उपजा सुखभारी । परेउचरण लोचन भरिबारी ॥
चरणकमलउरधरि गृह आवा । प्रभुप्रभावपरिजनहिंसुनावा ॥
रघुपति चरित देखि पुरबासी । पुनिपुनिकहहिंधन्यसुखरासी॥
राम राज बैठे त्रय लोका । हर्षितभयउ गयउसब शोका ॥
बैर न कर काहू सन कोई । राम प्रताप बिषमता खोई ॥
दो० बर्णाश्रम निजनिज धरम निरत बेद पथ लोग ।
चलहिंसदापावहिंसुखहिं नहिंभयशोक न रोग ॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा । रामराजनहिं काहुहिंब्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती । चलहिंसुधर्मनिरतश्रुतिनीती ॥
चारिउ चरण धर्म जग माहीं । पूररहा सपनेहु अघ नाहीं ॥
राम भक्ति रत नर अरु नारी । सकलपरमगतिके अधिकारी ॥
अलपमृत्यु नहिंकवनिउँ पीरा। सब सुन्दर सब निरुजशरीरा ॥
नहिदरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिंकोउअबुधनलक्षणहीना ॥
सब निर्दम्भ धर्म्म रतिधरणी । नरअरु नारिचतुरशुभकरणी ॥
सब गुणज्ञ सब पण्डित ज्ञानी । सब कृतज्ञ नहिंकपटसयानी ॥
दो० रामराज्य बिहंगेश सुनु सचराचर जगमाहिं ।
काल कर्मस्वभावगुण कृतदुख काहुहिनाहिं ॥
भूमि सप्त सागर मेखला । एकभूप रघुपति कोशला ॥
भुवन अनेक रोम प्रति जासू । यह प्रभुता कछु बहुतनतासू ॥
सो महिमा समुझत प्रभुकेरी । यह बर्णत हीनता घनेरी ॥
सोउमहिमा खगेशजिनजानी । फिरियहचरिततिनहुं रतिमानी॥
सोउ जानेकर फल यहलीला । कहहिंमहामुनिसुमतिसुशीला ॥
राम राज्यकर सुख सम्पदा । बरणिनसकहिं फणीशशारदा ॥
सब उदार सब पर उपकारी । द्विजसेवक सब नर अरुनारी ॥
एक नारि ब्रत रत नर झारी । ते मनबचक्रम पतिहितकारी ॥
दो० दण्ड यतिनकर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।
जीतहिं मनहिं सुनिय अस रामचन्द्रके राज ॥

फूलहिं फलहिं सदातरुकानन । रहहिं एकसंगगज पंचानन ॥
खग मृग बैर सहज बिसराई । सबनि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥
कूजहिं खगमृग नाना वृन्दा । अभयचरहिंबनकरहिंअनन्दा ॥
शीतल सुरभि पवनबह मन्दा । गुंजत अलिलेचलु मकरन्दा ॥
लता बिटप मांगे द्रुम स्रवहीं । मन भावते धेनु पय श्रवहीं ॥
ससि सम्पन्न सदा रह धरणी । त्रेता भै सतयुग की करणी ॥
प्रकटे गिरि नाना मणि खानी । जगदात्मा भूप पहिंचानी ॥
सरितासकल बहैं बर बारी । शीतलअमलस्वादसुखकारी ॥
सागर निज मर्य्यादा रहहीं । डारहिं रत्न तटनि नरलहहीं ॥
सरसिजसंकुलसकल तड़ागा । अतिप्रसन्नदशदिशाबिभागा ॥

दो० बिधु महि पूर पियूषन रबि तप तेज न काज ।
मांगे बारिद देहिं जल रामचन्द्र के राज ॥

कोटिन बाजपेय प्रभु कीन्हे । अमितदान विप्रन कहंदीन्हे ॥
श्रुति पथ पालक धर्म धुरन्धर । गुणातीत अरु भोग पुरन्दर ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता । शोभाखानि सुशील बिनीता ॥
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई । सेवत चरण कमल मनलाई ॥
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी । सबप्रकार सेवा बिधि लीनी ॥
निजकर गृह परिचर्याकरहीं । रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं ॥
जेहिबिधिकृपासिन्धुसुखमानहिं।सोइसियसेवाबिधिउरआनहिं॥
कौशल्यादि सासु गृह माहीं । सेवहिं सबै मान मद नाहीं ॥
उमा रमा ब्रह्माणि बन्दिता । जगदम्बा सन्तत मनन्दिता ॥

दो० जाकी कृपाकटाक्षसुर चाहत चितवनि सोइ ।
राम पदारबिन्द रत रहति स्वभावहिं जोइ ॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई । राम चरणरति प्रीतिसुहाई ॥
प्रभुपदकमल बिलोकतरहहीं । कबहुंकृपालहमहिंकछुकहहीं ॥
रामकरहिं भ्रातन पर प्रीती । नाना भांति सिखावहिंनीती ॥
हर्षित रहहिं नगर के लोगा । करहिंसकलसुरदुर्ल्लभभोगा ॥

अहनिशिविधिहि मनावत रहहीं । श्रीरघुवीरचरणरतिचहहीं ॥
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये । लवकुश वेद पुराणनगाये ॥
दोउ बिजयीबिनयीअति सुंदर । हरिप्रतिबिंबमनहुंगुणमंदर ॥
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन केरे । भये रूप गुण शील घनेरे ॥
दो० ज्ञान गिरा गोतीत अज मायागुण गोपार ।
सोइ सच्चिदानन्द घन करत चरित्र अपार ॥
प्रात काल सरयू करि मज्जन । बैठहिंसभासंग द्विजसज्जन ॥
बेद पुराण वशिष्ठ बखानहिं । सुनहिंरामयद्यपिसबजानहिं ॥
अनुजन संयुत भोजन करहीं । देखिसकलजननीसुखभरहीं ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई । सहित पवनसुत उपबनजाई ॥
पूछहिं बैठि राम गुण गाहा । कहहनुमानसुमतिअवगाहा ॥
सुनतबिमलगुणअतिसुखपावहिं । बहुरिबहुरिकैबिनयसुनावहिं ॥
सब के गृह गृह होय पुरांना । रामचरित सुन्दरबिधिनाना ॥
नरअरुनारिरामगुणगानहिं । करहिंदिवसनिशिजातनजानहिं ॥
दो० अवधपुरी बासिन्हकर सुखसम्पदा समाज ।
सहसशेषनहिंकहिसकहिंजहंनृपरामबिराज ॥
नारदादि सनकादि मुनीशा । दरशनलागिकोशलाधीशा ॥
दिनप्रति सकलअयोध्याआवहिं ।देखिनगरबिरागबिसरावहिं ॥
रत्न जटित मणि कनक अटारी । नानारंग रुचिर गच ढारी ॥
पुर चहुं पास कोट अति सुन्दर । रचे कँगूरा रंग रंग बर ॥
नव गृह सुन्दर निकर बनाई । मनहुं घेरि अमरावतिआई ॥
महि बहुरूप रुचिर गचकाँचा । जोबिलोकिमुनिवरमननाचा ॥
धवलधामऊपरनभ चुम्बत।कलशमनहुंशशिरबि द्युतिनिन्दत ॥
बहु मणि रचित झरोखन भ्राजैं ।गृहगृहप्रतिमणिदीपबिराजैं ॥
छं० मणिदीप राजहिं भवनभ्राजहिं देहरीबिद्रुम रची ।
सुन्दरमनोहरमंदिरायत अजिरअतिफटिकनखची ॥
मणिखंभभीतिबिरंचि बिरचितकनकमणिमरकतरचे ।

प्रति द्वारद्वार कपाटपुरट बनाय बहु बज्रनखचे ॥

दो० चारु चित्रशाला अमित गृह गृह रचे बनाइ ।
रामधाम जो निरखत मुनिमन लेत चुराइ ॥

सुमन बाटिका सबहिं लगाई । बिबिध भांतिकरियतनबनाई ॥
लता ललित बहुभांति सोहाई । फूलहिं सदा बसन्त कि नाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर । मारुत त्रिविधि सदाबहसुंदर ॥
नाना खग बालकन जिआये । बोलत मधुर उड़ात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत । भवनन पर शोभा अतिपावत ॥
जहंतहं देखहिं निजपरिछाहीं । बहु बिधिकूजहिं नृत्य कराहीं ॥
शुक शारिका पढ़ावहिं बालक । कहहुरामरघुपति जनपालक ॥
राजद्वार सबही बिधि चारू । बीथी चौहट रुचिर बजारू ॥

छं० बाजार रुचिर न बनै बरणत बस्तु बिनु गथ पाइये ।
जहं भूप रमानिवास तहंकीसम्पदा किमि गाइये ॥
बैठे बजाज सराफ बणिक अनेक मनहुं कुबेर ते ।
सबसुखी सबसुचरित्रसुन्दर नरयुवा शिशुजरठते ॥

दो० उत्तर दिशि सरयू बहै निर्मल जल गम्भीर ।
बांधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥

दूर फराक रुचिर सो घाटा । जहंजलपिवहिं बाजिगजठाटा ॥
पनिघट परम मनोहर नाना । तहां न पुरुषकरहिं अस्नाना ॥
राज घाट सबही बिधि सुंदर । मज्जहिं तहां बरण चारिउनर ॥
तीर तीर देवन कर मन्दिर । चहुंदिशि तिहिंके उपबनसुंदर ॥
कहुं कहुं सरितातीर निवासी । बसहिं ज्ञानरतमुनि सन्यासी ॥
जहं तहं तुलसी वृन्द सुहाये । बहुप्रकार सब मुनिनलगाये ॥
पुर शोभा कछु बरणिन जाई । बाहर नगर परम रुचिराई ॥
देखत पुरीअखिल अघ भागा । बन उपबन बापिका तड़ागा ॥

छं० बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहई ।
सोपानसुंदर नीर निर्मल देखिसुरमुनिमोहई ॥

बहुरंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजा रहीं ।
आरामरम्यपिकादि खगरव मनहुं पथिकहंकारहीं ॥
दो० रमानाथ जहं राजा सो पुर बरणि न जाइ ।
अणिमादिक सुखसम्पदा रही अवधपुर छाइ ॥
जहंतहंनर रघुपति गुणगावहिं । बैठि पररुपरइहै सिखावहिं ॥
भजहूप्रणतप्रतिपालक रामहिं । शोभाशीलरूप गुण धामहिं ॥
जलजविलोचनश्यामलगातहिं । पलकनयन इवसेवक त्रातहिं ॥
धृत शररुचिर चाप तूणीरहिं । सन्त कंजबनरवि रणधीरहिं ॥
काल कराल ब्यालखगराजहिं । नमत रामकाम ममताजहिं ॥
लोभमोह मृगयूथकिरातहिं । मनसिजकरिहरिजनसुखदातहिं ॥
संशय शोकनिबिड़तमभानुहिं । दनुजगहनबनदहनकृशानुहिं ॥
जनकसुता समेत रघुबीरहिं । कसनभजहुभंजन भवभीरहिं ॥
बहुबासना मशकहिमराशिहिं । सदाएक रसअजअविनाशिहिं ॥
मुनि रंजन भंजन महिभारहिं । तुलसिदासके प्रभुहिउदारहिं ॥
दो० इहि बिधि नगर नारिनर करहिं रामगुणगान ।
सानु कूल सन्तत रहत सबपर कृपा निधान ॥
जबते राम प्रताप खगेशा । उदित भयेअतिप्रबलदिनेशा ॥
परि प्रकाश रह्यो तिहुं लोका । बहुतनसुखबहुतनमनशोका ॥
जिनहिं शोकतेहि कहौं बखानी । प्रथमअविद्या निशासिरानी ॥
अघ उलूक जहं तहां लुकाने । कामक्रोध कैरव सकुचाने ॥
बिबिधि कर्म गुण कालसुभाऊ । ये चकोरसुखलहहिंनकाऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा । इनकहं सुखनहिंकवनिहुंओरा ॥
धर्म तड़ाग ज्ञान बिज्ञाना । येपंकज बिकसे बिधिनाना ॥
सुख सन्तोष बिराग बिबेका । बिगत शोक ये कोकअनेका ॥
दो० यह प्रताप रवि जासु उर जबप्रभु करहिंप्रकाश ।
पाछिल बाढ़हिं प्रथमजे कहेते पावहिं नाश ॥
भ्रातन सहित राम इक बारा । संग परम प्रियपवनकुमारा ॥

सुन्दर उपबन देखन गयऊ । सबतरु कुसमितपल्लवनयऊ ॥
जानि समय सनकादिक आये । तेजपुंज गुण शील सुहाये ॥
ब्रह्मानन्द सदा लव लीना । देखत बालक बहुकालीना ॥
धरे देह जनु चारिउ वेदा । समदरशीमुनि बिगतबिभेदा ॥
आसाबसनब्यसननहिं तिनहीं । रघुपतिचरितहोइ तहंसुनहीं ॥
तहां रहे सनकादि भवानी । जहंघट सम्भवमुनिबरज्ञानी ॥
रामकथा मुनि बहु बिधिबरणी । ज्ञानयोगपावकजिमिअरणी ॥

दो० देखि राममुनि आवत हर्षि दण्डवत कीन्ह ।
स्वागत पूंछि पीतपट प्रभु बैठन कहं दीन्ह ॥

कीन्ह दण्डवत तीनिउं भाई । सहितपवनसुत सुखअधिकाई ॥
मुनिरघुपतिछबिअतुलबिलोकी । भयेमगन मनसकत न रोकी ॥
श्यामलगात सरोरुह लोचन । सुन्दरता मन्दर भव मोचन ॥
इकटक रहे निमेष न लावहिं । प्रभुकरजोरे शीश नवावहिं ॥
तिनकी दशा देखि रघुबीरा । श्रवतनयनजलपुलकशरीरा ॥
करगहि प्रभु मुनिबर बैठारे । परम मनोहर बचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा । तुम्हरे दरश जाहिंअघखीशा ॥
बड़े भाग्य पाइय सत संगा । बिनहिं प्रयासहोहिंभवभंगा ॥

दो० सन्त संग अपबर्ग कर कामी भवकर पंथ ।
कहहिं सन्त कबि कोबिद श्रुतिपुराणसदग्रन्थ ॥

सुनिप्रभुबचन हर्षि मुनिचारी । पुलकगात अस्तुति अनुसारी ॥
जय भगवन्त अनन्त अनामय । अनघ अनेक एक करुणामय ॥
अजनिर्गुणजयजय गुणसागर । सुखनिधान तिहुंलोकउजागर ॥
जयइन्दिरा रमण जय भूधर । अनुपम यशअनादि शोभाकर ॥
ज्ञान निधान अमान मानप्रद । पावन सुयश पुराण वेदबद ॥
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन । नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्ब सर्ब गत सर्ब उरालय । बसहुसदा हमकहंप्रतिपालय ॥
द्वन्द विपतिभव फंदबिभंजन । हृदबसु राम काम मदगंजन ॥

दो० परमानन्द कृपा यतन तुम परि पूरण काम ।
प्रेम भक्ति अनपावनी देहु हमहिं श्रीराम ॥

देहु भक्ति रघुपति अन पावनि । त्रिविधतापभवदापनशावनि ॥
प्रणत काम सुर धेनु कल्पतरु । होइ प्रसन्नप्रभुदीजैयहबरु ॥
भव बारिधि कुंभज रघुनायक । सेवकसुलभसकलसुखदायक ॥
मन सम्भव दारुण दुखदारय । दीनबन्धु समता बिस्तारय ॥
आश त्रास ईर्षादि निवारक । बिनयबिबेकबिरतिबिस्तारक ॥
भूपमौलि मणि मण्डन धरणी । देहु भक्ति संसृति सरितरणी ॥
मुनि मन मानस हंस निरंतर । चरणकमलबन्दितअजशंकर ॥
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रक्षक । कालकर्मस्वभाव गुणभक्षक ॥
तारण तरण हरण सब दूषण । तुलसिदासप्रभुत्रिभुवनभूषण ॥

दो० बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित शिरनाइ ।
ब्रह्म भवन सनकादिगे अति अभीष्ट बर पाइ ॥

सनकादिक बिधिलोकसिधाये । भ्रातन राम चरण शिरनाये ॥
पूंछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं । चितवहिं सबमारुतसुतपाहीं ॥
सुना चहहिं प्रभु मुखकीबानी । जोसुनिहोयसकलभ्रमहानी ॥
अन्तरयामी प्रभु सब जाना । पूछत कहहु कहा हनुमाना ॥
जोरि पाणि तब कह हनुमंता । सुनिये दीन बन्धु भगवन्ता ॥
नाथ भरत कछु पूछन चहहीं । प्रश्नकरतमनसकुचत अहहीं ॥
तुम जानहुं कपि मोर सुभाऊ । भरतहि मोहिं नकछुदुराऊ ॥
सनिप्रभुबचन भरतगहिचरणा । सुनियनाथप्रणतारतिहरणा ॥

दो० नाथ न मोहिं संदेह कछु सपनेहु शोक न मोह ।
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु चिदानन्द संदोह ॥

करौं कृपानिधि एक ढिठाई । मैं सेवक तुम जनसुखदाई ॥
संतन की महिमा रघुराई । बहुबिधि वेदपुराणन्ह गाई ॥
श्रीमुखपुनि तुम कीन्ह बड़ाई । तिन्हपरप्रभुहिंप्रीतिअधिकाई ॥
सुनाचहौं प्रभुतिन्हकरलक्षण । कृपासिंधु गुणज्ञान बिचक्षण ॥

सन्त असन्त भेद बिलगाई । प्रणतपाल मोहिंकहियबुझाई ॥
सन्तन के लक्षण सुनु भ्राता । अगणित श्रुतिपुराणविख्याता ॥
संत असन्तन की असकरणी । जिमि कुठारचन्दन आचरणी ॥
काटै परसुमलय सुनि भाई । निजगुण देइ सुगन्ध बसाई ॥
दो० ताते सुरशीशनचढ़त जग बल्लभ श्रीखंड ।
अनल दाहि पीटतघनहिं परसु बदनयह दण्ड ॥
बिषय अलंपट शीलगुणाकर । पर दुख दुखसुखसुखदेखे पर ॥
सम अभूतरिपुबिमदबिरागी । लोभा मर्ष हर्ष भय त्यागी ॥
कोमल चितदीनन परदाया । मनबच क्रम ममभक्त अमाया ॥
सबहि मानप्रदआपुअमानी । भरत प्राणसम मम ते प्रानी ॥
बिगत काम ममनामपरायन । शान्त विरक्त बिदितमुदितायन ॥
शीतलता सुरलता मयत्री । द्विजपद प्रेम धर्म जनु यंत्री ॥
यह सबलक्षणबसहिंजासुउर । जानेहु तातसंत संतत फुर ॥
शमदमनियमनीतिनहिंडोलहिं । परुष वचन कवहूंनहिंबोलहिं ॥
दो० निन्दा अस्तुतिउभय सम ममता मम पद कंज ।
तेसज्जन मम प्राण प्रिय गुण मन्दिर सुखपुंज ॥
सुनहु असन्तन केर सुभाऊ । भूलेहुसंगति करियन काऊ ॥
तिन कर संग सदादुख दाई । जिमि कपि लहिं घालैहरहाई ॥
खलनहृदय अतितापबिशेखी । जरहिं सदा परसम्पति देखी ॥
जहं कहुं निन्दासुनहिं पराई । हर्षहिं मनहुं परी निधि पाई ॥
काम क्रोध मद लोभपरायन । निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥
बैर अकारण सब काहू सों । जो करुहित अनहित ताहूसों ॥
झूठै लेना झूठै देना । झूठै भोजन झूठ चबेना ॥
बोलहिंमधुरबचनजिमिमोरा । खाहिं महा अहिहृदय कठोरा ॥
दो० परद्रोही परदाररत परधन पर अपवाद ।
तेनर पामर पापमय देह धरे मनु जाद ॥
लोभै ओढ़न लोभै डासन । शिश्नोदर परयम पुरत्रासन ॥

काहूकी जो सुनहिं बड़ाई। श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
जब काहूकी देखहिं बिपती। सुखी होहिं मानहुं जग नृपती ॥
स्वारथ रत परिवारबिरोधी। लम्पट काम लोभ अतिक्रोधी ॥
मात पिता गुरु बिप्रनमानहिं। आपुगये अरुघालहिं आनहिं ॥
करहिं मोहबश द्रोह परावा। सत संगति हरि भक्तिन भावा ॥
अवगुण सिंधु मन्दमतिकामी। वेद बिदूषक परधन स्वामी ॥
बिप्र द्रोह पर द्रोह बिशेषी। दम्भ कपट जिय धरे सुवेषी ॥

दो० ऐसे अधम मनुजखल कृतयुग त्रेतानाहिं।
द्वापर कछुक वृन्दवहु होइहैं कलियुग माहिं।

परहित सरिस धर्म नहिंभाई। परपीड़ा समनहिं अघमाई ॥
निर्णय सकल पुराण वेदकर। कहेउं तातजानहिं कोबिदनर ॥
नर शरीर धरि जो परपीरा। करहिं तेसहहिंमहाभव भीरा ॥
करहिं मोहबश नर अघनाना। स्वारथ रत परलोक नशाना ॥
काल रूप मैं तिनकर ताता। शुभअरुअशुभ कर्मफल दाता ॥
अस बिचारि जोपरम सयाने। भजहिंमोहिं संसृत दुखजाने ॥
त्यागहिं कर्मशुभाशुभदायक। भजैंमोहिं सुरनर मुनिनायक ॥
सन्त असन्तन के गुण भाखे। तेन परहिं भवजिन लखिराखे ॥

दो० सुनहु तातमाया कृत गुणअरुदोष अनेक।
गुणयह उभयनदेखिये देखियसो अबिबेक ॥

श्री मुख बचन सुनतसबभाई। हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई ॥
करहिं बिनयअतिबारहिंबारा। हनूमान हिय हर्ष अपारा ॥
पुनि रघुपतिनिजमन्दिर गये। इहि बिधिचरित करतनितनये ॥
बार २ नारद मुनि आवहिं। चरित पुनीत रामकरगावहिं ॥
नित नवचरितदेखिमुनिजाहीं। ब्रम्हलोक सब कथाकहाहीं ॥
सुनिबिरंचिअतिशयसुखमानहिं। पुनिपुनितातकरहुगुणगानहिं ॥
सनकादिकनारदहिं सराहहिं। यद्यपिब्रम्हनिरत मुनिआहहिं ॥
सुनिगुणगानसमाधिबिसारी। सादर सुनहिंपरम अधिकारी ॥

दो० जीवन मुक्तब्रम्ह पर चरितसुनहिंतजिध्यान ।
जेहरि कथा नकरहिं रतितिनकेहृदयपषान ॥

एक बार रघुनाथ बुलाये। गुरुद्विज पुरबासी सब आये ॥
बैठे गुरु द्विजबर मुनिसज्जन । बोले बचन भक्त भय भंजन ॥
सुनहु सकलपुरजन ममबानी । कहौंन कछु ममता उरआनी ॥
नहिंअनीतिनहिं कछु प्रभुताई । सुनौ करहु जोतुमहिं सुहाई ॥
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई । मम अनुशाशन मानै जोई ॥
जो अनीति कछु भाषौं भाई । तौमोहिं बरजेहु भय बिसराई ॥
बड़े भाग्य मानुष तन पावा । सुर दुर्लभ सद ग्रन्थन गावा ॥
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा । पाइ न जेहिं परलोक सवांरा ॥

दो० सो परन्तु दुख पावई शिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहि कर्महिं ईश्वरहिं मिथ्या दोष लगाइ ॥

इहि तनुकर फलबिषयनभाई । स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥
नर तनु पाइ बिषय मन देही । पलटि सुधाते शठ बिषलेही ॥
ताहि कबहुं भल कहै नकोई । गुंजा गहै परसमणि खोई ॥
आकर चारिलाख चौरासी । योनिभ्रमतयहजियअविनासी ॥
फिरत सदा माया के प्रेरे । कालकर्म स्वभाव गुणघेरे ॥
कबहुंक करि करुणानरदेही । देत ईश बिनु हेतु सनेही ॥
नरतन भव बारिधि कह बेरे । संमुख मरुत अनुग्रह मेरे ॥
कर्ण धार सद गुरु दृढ़ नावा । दुर्लभ साज सुलभ करिपावा ॥

दो० जोनतरै भव सागरहिं नरसमाज अस पाइ ।
सोकृतनिन्दकमन्दमति आतमहनगतिजाइ ॥

जो परलोक इहां सुख चहहू । सुनि मम बचन हृदयदृढ़गहहू ॥
सुलभ सुखद यह मारग भाई । भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई ॥
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका । साधन कठिन नमनमहँ टेका ॥
करत कष्ट बहु पावत कोई । भक्ति हीन प्रिय मोहिंन सोई ॥
भक्ति स्वतंत्रसकलसुखखानी । बिन सतसंग न पावहिं प्रानी ॥

पुण्य पुंज बिनु मिलहिं न संता। सत संगति संसृति कर अंता॥
पुण्य एक जगमें नहिं दूजा। मनक्रम बचन बिप्रपद पूजा॥
सानुकूल तिहिपर सबदेवा। जो तजि कपट करै द्विज सेवा॥
दो० औरो एक गुप्त मत सबहिं कहौं करजोरि।
शंकर भजन बिना नर भक्ति नपावैमोरि॥
कहहु भक्तिपथकवन प्रयासा। योगन मखजप तप उपबासा॥
सरल सुभाव नमनकुटिलाई। यथा लाभ सन्तोष सदाई॥
मोर दास कहाइ नर आसा। करै तो कहहुकहा बिश्वासा॥
बहुत कहौं का कथा बढ़ाई। इहिआचरण वश्य मैं भाई॥
बैरनविग्रह आश न त्रासा। सुख मय ताहिसदासब आसा॥
अनारम्भ अनिकेत अमानी। अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा। तृणसम बिषय स्वर्ग अपबर्गा॥
भक्ति पक्षता नहिं शठ ताई। दुष्टकर्म सब दूरि बिहाई॥
दो० मम गुण ग्राम नामरत गत ममता मदमोह।
ताकर सुख सोइ जाने परमानँद सन्दोह॥
सुनत सुधा सम बचनरामके। सबन्हि गहेपद कृपाधामके॥
जननि जनक गुरुबन्धु हमारे। कृपानिधान प्राण ते प्यारे॥
तन धन धाम रामहितकारी। सबबिधि तुमप्रणतारति हारी॥
अस सिख तुमबिनुदेइनकोऊ। मात पिता स्वारथ रत ओऊ॥
हेतुरहित सब बिधि उपकारी। तुम तुम्हार सेवक असुरारी॥
स्वारथ मीत सकलजगमाहीं। सपनेहुं कोउ परमारथ नाहीं॥
सब के बचन प्रेमरस साने। सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने॥
निज निज गृहगे आयसु पाई। बरणत प्रभुकी गिरा सुहाई॥
दो० उमा अवध बासीनर नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्म सच्चिदानन्दघनरघुनायक जहँभूप॥
एक बार वशिष्ठ मुनि आये। जहां राम सुखधाम सुहाये॥
अतिआदर रघुनायककीन्हा। पदपखारि चरणोंदक लीन्हा॥

राम सुनहु मुनि कह करजोरी। कृपासिन्धु बिनती इकमोरी॥
देखि देखि आचरण तुम्हारा। होत मोह मम हृदय अपारा॥
महिमा अमित वेद नहिंजाना। मैंकेहिभांति कहौं भगवाना॥
उपरोहिती कर्म अति मन्दा। वेद पुराण स्मृति करनिन्दा॥
जबन लेउं तबहीं बिधि मोहीं। कहा लाभ आगे सुततोहीं॥
परमात्मा ब्रह्म नर रूपा। होइहैं रघुकुल भूषण भूपा॥

दो० तब मैं हृदय बिचार किय योग यज्ञ जप दान।
जेहि नित करियसोपाइये धर्म न इहसम आन॥

जपतप नियम योग ब्रतधर्मा। श्रुतिसम्भव नानाबिधिकर्मा॥
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन। जहंलगिधर्मकहैं श्रुतिसज्जन॥
आगम निगम पुराण अनेका। पढ़ै सुनै कर फल प्रभु एका॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर। सब साधनकर फलयह सुंदर॥
छूटै मल कि मलहि के धोये। घृतकिपावकोउ बारि बिलोये॥
प्रेमभक्ति जल बिनु रघुराई। अभ्यन्तर मल कबहुं न जाई॥
सोइ सरवज्ञ तज्ञसोइ पंडित। सोइगुणज्ञ बिज्ञान अखंडित॥
दक्ष सकल लक्षण युत सोई। जाके पद सरोज रति होई॥

दो० नाथ एकबर मांगौं मोहिं कृपाकरि देहु।
जन्म जन्म प्रभुपद कमल कबहुंघटै जनिनेहु॥

असकहिमुनि वशिष्ठगृहआये। कृपासिन्धुके मन अतिभाये॥
हनूमान भरतादिक भ्राता। संग लिये सेवक सुखदाता॥
पुनिकृपालु पुर बाहर गयऊ। गजरथ तुरंग मंगावत भयऊ॥
देखि कृपाकरि सकल सराहे। दियेउचितजिन्हजिन्हजोचाहे॥
हरण सकलश्रम प्रभुश्रमपाई। गये जहां शीतल अमराई॥
भरत दीन्ह निज बसनडसाई। बैठे प्रभु सेवहिं सबभाई॥
मारुतसुत मारुत तब करई। पुलकिगात लोचन जल भरई॥
हनूमान सम को बड़भागी। नहिं कोउरामचरण अनुरागी॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई। बार बार प्रभु निज मुखगाई॥

॥ दो० तेहि अवसर मुनिनारद आये करतल बीन ।
॥ गावन लागे रामगुण कीरति सदा नवीन ॥
मामव लोकय पंकज लोचन । कृपाबिलोकनि शोचबिमोचन ॥
नीलतामरस श्याम कामअरि । हृदयकंज मकरंद मधुपहरि ॥
यातुधान वरूथ बल गंजन । मुनिसज्जन रंजन अघभंजन ॥
भूसुरनवशशि वृन्द बलाहक । अशरणशरण दीनजनगाहक ॥
भुजबलबिपुलभारमहिखंडित । खरदूषण बिराध बधपण्डित ॥
रावणारि सुख रूप भूपबर । जयदशरथ कुलकुमुदसुधाकर ॥
सुयशपुराणविदितनिगमागम । गावतसुरमुनिसन्त समागम ॥
कारुणीक बाली मद खंडन । सबबिधि कुशलकोशलामंडन ॥
कलिमलमथननाममताहन । तुलसिदासप्रभुपाहिप्रणतजन ॥
॥ दो० प्रेमसहित मुनि नारद बरणि राम गुणग्राम ।
॥ शोभासिन्धु हृदयधरि गये जहां बिधिधाम ॥
गिरिजासुनहु बिषद यहकथा । मैं सबकही मोरिमति यथा ॥
राम चरित शत कोटि अपारा । श्रुति शारदा न बरणैं पारा ॥
राम अनन्त अनन्त गुणानी । जन्म कर्म अगणित नामानी ॥
जलशीकरमहिरज गणिजाहीं । रघुपतिचरितनबरणिसिराहीं ॥
बिमलकथायहहरिपददायिनि । भक्तिहोइसुनिअतिअनपायिनि ॥
उमाकहेउ सो कथा सुहाई । जो भुशुण्ड खगपतिहि सुनाई ॥
कछुकरामगुण कहेउंबखानी । अबकाकहैं सोकहहु भवानी ॥
सुनि शुभकथा उमा हरषानी । बोली अति बिनीत मृदुबानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनेउं रामगुण भवभयहारी ॥
॥ दो० तुम्हरी कृपाकृपायतन अब कृत कृत्य न मोह ।
॥ जानेउं राम प्रभाव प्रभु चिदानन्द सन्दोह ॥
॥ नाथ तवानन शशि श्रवत कथासुधा रघुबीर ।
॥ श्रवणपुटनिमन पानकियनहिं अघातमतिधीर ॥
राम चरित जे सुनत अघाहीं । रस बिशेष जाना तिन्हनाहीं ॥

जीवन मुक्त महामुनि जेऊ । हरिगुणसुनत अघात न तेऊ ॥
भवसागर चह पार जो पावा । राम कथा ता कहं दृढ़नावा ॥
बिषयिनकहंपुनिहरिगुणग्रामा । श्रवणसुखदअरुमनबिश्रामा ॥
श्रवणवंत असको जगमाहीं । जाहिन रघुपति कथा सुहाहीं ॥
ते जड़ जीव निजातम घाती । जिनहिंनरघुपति कथासुहाती ॥
हरि चरित्र मानस तुम गावा । सुनि मैं नाथ परम सुखपावा ॥
तुम जोकही यह कथा सुहाई । काकभुशुण्डि गरुड़ प्रतिगाई ॥

दो० बिरत ज्ञान बिज्ञान दृढ़ रामचरण अति नेह ।
बायसतन रघुपति भगत मोहिंपरम संदेह ॥

नर सहस्र महं सुनहु पुरारी । कोउ इकहोइ धर्म ब्रतधारी ॥
धर्म शील कोटिन महं कोई । बिषय बिमुख बिराग रतहोई ॥
कोटि बिरक्त मध्य श्रुतिकहई । सम्यक्ज्ञान सुकृत कोउलहई ॥
ज्ञानवन्त कोटिन महं कोई । जीवन मुक्त सुकृत कोइ होई ॥
तिनसहसनमहंसबसुखखानी । दुर्लभ ब्रह्म निरत बिज्ञानी ॥
धर्म शील बिरक्त अरु ज्ञानी । जीवन मुक्त ब्रह्म पर प्रानी ॥
सबते सो दुर्लभ सुर राया । राम भक्ति रतगत मदमाया ॥
सोहरि भक्ति काक किमि पाई । बिश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई ॥

दो० राम परायण ज्ञानरत गुणागार मतिधीर ।
नाथ कहहु केहिकारण पायउ काक शरीर ॥

यहप्रभु चरित पवित्र सुहावा । कहहु कृपालुकाककिमिपावा ॥
तुम केहि भांति सुनामदनारी । कहहुमोहिं यहकौतुक भारी ॥
गरुड़ महाज्ञानी गुणरासी । हरिसेवकअतिनिकट निवासी ॥
सो केहि हेतु काक सन जाई । सुनीकथा मुनिनिकर बिहाई ॥
कहहु कवनि बिधिभासम्बादा । दोउहरिभक्त काकउरगादा ॥
गौरिगिरा सुनि सरलसुहाई । बोले शिव सादर सुख पाई ॥
धन्यसती पावनि मति तोरी । रघुपतिचरण प्रीति नहिंथोरी ॥
सुनहु परमपुनीत इतिहासा । जोसुनिहोइ सकल भ्रमनासा ॥

उपजहिरामचरण बिश्वासा । भवनिधितरुनरबिनहिंप्रयासा ॥
दो० ऐसिय प्रश्न बिहंगपति कीन्हकाक सन जाइ ।
सोसब सादर कहतहौं सुनहुं उमा चितलाइ ॥
मैं जिमिकथासुनी भयमोचनि । सोप्रसंगसुनुसुमुखिसुलोचनि ॥
प्रथम दक्षगृह तव अवतारा । सतीनाम तब रहा तुम्हारा ॥
दक्ष यज्ञ तव भा अपमाना । तुमअतिक्रोध तजातहंप्राना ॥
मम अनुचरन कीन्हमखभंगा । जानहु तुमसो सकलप्रसंगा ॥
तब अतिशोच भयउ मन मोरे । दुखित भयउंबियोगप्रियतोरे ॥
सुन्दर गिरि बन सरिततड़ागा । कौतुक देखत फिरौं बिभागा ॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी । नील शैल इक सुन्दर भूरी ॥
तासु कनक मय शिखर सुहाये । चारि चारु मोरे मन भाये ॥
तेहिपर इकइक बिटपबिशाला । बट पीपर पाकरी रसाला ॥
शैलोपरि सुंदर सर सोहा । मणि सोपान देखिमनमोहा ॥
दो० शीतल अमल मधुर जल जलजबिपुल बहुरंग ।
कूजत कलरव हंस गण गुंजत नाना भृङ्ग ॥
तेहिगिरि रुचिर बसैखग सोई । तासुनाश कल्पांत न होई ॥
माया कृत गुण दोष अनेका । मोहमनोज आदि अबिबेका ॥
रहेउब्यापि समस्तजगमाहीं । तेहिगिरिनिकटगबहुंनहिंजाहीं ॥
तहंबसिहरिहिभजेजिमिकागा । सोसुन उमासहित अनुरागा ॥
पीपर तरु तर ध्यान सोधरई । जाप योग पाकर तर करई ॥
आंब छाहं करि मानस पूजा । तजिहरिभजनकाजनहिंदूजा ॥
बट तर कह हरि कथा प्रसंगा । आवहिं सुनन अनेक बिहंगा ॥
राम चरित बिचित्र बिधिनाना । प्रेमसहित करु सादरगाना ॥
सुनहिंसकलमतिबिमलमराला । बसहिंनिरंतर जोजेहिकाला ॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनन्द बिशेखा ॥
दो० तबकछुकाल मरालतनु धरि तहंकीन्ह निवास ।
सादर सुनि रघुपति चरित पुनि आयउंकैलास ॥

गिरिजाकहेउंसोसबइतिहासा। मैं जेहिसमयगयउं खगपासा ॥
अब सो कथा सुनहु जेहिहेतू । गयउ काकपहं खगकुल केतू ॥
जब रघुनाथ कीन्ह रणक्रीड़ा। समुझतचरितहोतमोहिं ब्रीड़ा ॥
इन्द्रजीत कर आपु बँधावा। तब नारदमुनि गरुड़ पठावा ॥
बंधन काटि गयउ उरगादा। उपजा हृदय प्रचंड बिषादा ॥
प्रभु बंधन समुझत बहुभांती। करत बिचार उरग आराती ॥
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीशा। माया मोह पार परमीशा ॥
सो अवतार सुनेउं जगमाहीं। देखा सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दो० भव बंधनसे छूटहीं नरजपि जाकरनाम ।
खर्ब निशाचर बांधेऊ नागफांससोइराम ॥

नाना भांति मनहिं समुझावा। प्रकटन ज्ञान हृदय भ्रमछावा ॥
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई। भयउ मोह बश तुम्हरी नाई ॥
ब्याकुल गयउ देवऋषिपाहीं। कहेसिजोसंशयनिजमनमाहीं ॥
सुनि नारदहिलागिअतिदाया। सुनु खग प्रबलरामकी माया ॥
जो ज्ञानिन्हकरचित अपहरई। बरिआई बिमोह बश करई ॥
जेहिं बहु बार नचावा मोहीं। सो ब्यापेउ बिहंगपति तोहीं ॥
महामोह उपजा मन तोरे। मिटहि न वेगि कहे खगमोरे ॥
चतुरानन पहं जाहु खगेशा। सोइ करहु जो देहिं उपदेशा ॥

दो० असकहि चलेदेव ऋषि करत रामगुण गान ।
हरिमाया बल बरणत पुनि पुनि परमसुजान ॥

तब खगपति बिरंचिपहंगयऊ। निज सन्देह सुनावत भयऊ ॥
सुनि बिरंचिरामहिं शिरनावा। समुझि प्रताप प्रेम उरछावा ॥
मनमहं करहिं बिचार बिधाता। मायाबश कवि कोबिद ज्ञाता ॥
हरिमाया कर अमितप्रभावा। बिपुल बार जो मोहिं नचावा ॥
अग जगमय जगममउपजाया। नहिं आश्चर्य मोह खगराया ॥
पुनि बोले बिधि गिरासुहाई। जानु महेश राम प्रभुताई ॥
बैनतेय शंकर पहं जाहू। तात अनत पूछहु जनि काहू ॥

तहां होय तव संशय हानी । चलाबिहंगपति सुनिबिधिबानी ॥
दो० परमातुर बिहंगपति तबआयउमम पास ।
जातरहेउं कुबेरगृह उमा रहेउ कैलास ॥
तेइं ममपद सादर शिरनावा । पुनि आपुन संदेह सुनावा ॥
सुनि ताकरि पुनीतमृदु बानी । प्रेम सहित मैं कहेउं भवानी ॥
मिलेउ गरुड़ मारगमहंमोहीं । कवनि भांति समुझावें तोहीं ॥
जब कछुकालकरियसतसंगा । तव यह होइ मोह भ्रम भंगा ॥
सुनिय तहां हरिकथा सुहाई । नाना भांति मुनिन्ह जो गाई ॥
जेहिमहं आदिमध्यअवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
नित हरि कथाहोइ जहं भाई । पठवें तोहिं सुनहु तहं जाई ॥
जाइहि सुनत सकल सन्देहा । होइहि रामचरण दृढ़ नेहा ॥
दो० बिनु सतसंगनहरिकथा तेहिबिनुमोहनभाग ।
मोह गये बिनु रामपद होइ न दृढ़ अनुराग ॥
मिलहिंनरघुपतिबिनुअनुरागा । किये योग जपज्ञान विरागा ॥
उत्तर दिशि सुन्दरगिरिनीला । तहंरह काकभुशुण्ड सुशीला ॥
राम भक्ति पथ परम प्रवीना । ज्ञानी गुण गृह बहु कालीना ॥
राम कथा सोइ कहै निरन्तर । सादरसुनहिंबिबिध बिहंगबर ॥
जाइ सुनहु तहं हरिगुण भूरी । होइहि मोह जनित दुखदूरी ॥
मैं जब सबतेहि कहा बुझाई । चले हर्षि मम पद शिरनाई ॥
ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपा मर्म सब पावा ॥
होइहि कीन्हकबहुंअभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ॥
कछुतेहिते पुनि मैं नहिं राखा । खग जानै खगही की भाखा ॥
प्रभु माया बलवंत भवानी । जाहिनमोह कवन असज्ञानी ॥
दो० ज्ञानी भक्ति शिरोमणि त्रिभुवनपति करजान ।
ताहि मोह माया प्रवल पामर करहिंगुमान ॥
शिव बिरंचि कहं मोहई कोहै बपुरा आन ।
असजियजानि भजहिंमुनि मायापतिभगवान ॥

गयउगरुड़ जहं बसै भुशुण्डी । मतिअकुण्ठ हरिभक्त अखण्डी ॥
देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ । माया मोह शोक भ्रम गयऊ ॥
करि तड़ाग मज्जन जलपाना । बटतर गयउ हृदय हर्षाना ॥
वृन्द वृन्द बिहंग तहं आये । सुने राम के चरित सुहाये ॥
कथा अरम्भ करै सो चाहा । ताही समय गयउ खगनाहा ॥
आवत देखि सकल खगराजा । हर्षेउ बायस सकल समाजा ॥
अतिआदर खगपतिकरकीन्हा । स्वागतपूछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा । मधुर बचन बोले तब कागा ॥

दो० नाथ कृतारथ भयउं मैं तव दर्शन खगराज ।
आयसु होइ सोकरौं अब प्रभुआयहु केहिकाज ॥
सदाकृतारथ रूप तुम कह मृदु वचन खगेश ।
जाकी अस्तुति सादर निजमुख कीन्ह महेश ॥

सुनहुतात जेहिकारणआयउं । सो सब भयउ दर्श तव पायउं ॥
देखि परम पावन तवआश्रम । गयउ मोह संशय नाना भ्रम ॥
अब श्रीरामकथाअति पावनि । सदा सुखद दुखपुंजनशावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोहीं । बार बार बिनवों प्रभु तोहीं ॥
सुनत गरुड़की गिरा विनीता । सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
भयउ तात मन परम उछाहा । कहै लाग रघुपति गुणगाहा ॥
प्रथमहिं अतिअनुरागभवानी । रामचरितसब कहेसिबखानी ॥
पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेसिबहुरि रावण अवतारा ॥
प्रभु अवतार कथा पुनिगाई । पुनिशिशुचरितकहेसिमनलाई ॥

दो० बालचरितकहिबिबिधबिधि मनमहंपरमउछाह ।
ऋषिआगमन कहेसि पुनि श्रीरघुबीर बिवाह ॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । पुनिनृप मरण राज रसभंगा ॥
पुरबासिन कर बिरह बिषादा । कहेसि राम लक्ष्मणसम्बादा ॥
बिपिन गवन केवट अनुरागा । सुरसरि उतरिनिवास प्रयागा ॥
बालमीकि प्रभु मिलनबखाना । चित्रकूट जिमिबस भगवाना ॥

सचिवागमन नगर नृप मरणा । भरतागमन प्रेमअति बरणा ॥
करि नृप क्रिया संग पुरबासी । भरत गये जहं प्रभु सुखरासी ॥
पुनिरघुपतिबहुबिधि समुझाये । लै पादुका अवध फिरिआये ॥
भरत रहनि सुरपतिसुतकरणी । प्रभुअरु अत्रिभेंट पुनि बरणी ॥
दो० कहि बिराध बधजाहि बिधि देहतजी शरभंग ।
बरणि सुतीक्ष्णप्रेमपुनि प्रभु अगस्त्य सतसंग ॥
कहि दण्डक बन पावनताई । गृध्र मयत्री पुनि तेइं गाई ॥
पुनि प्रभुपंचवटी कृत बासा । भंजेउसकल मुनिन करत्रासा ॥
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा । शूर्पणखा जिमि कीन्हकुरूपा ॥
खरदूषण बध बहुरि बखाना । जिमिसब मर्मदशानन जाना ॥
दशकन्धर मारीच बतकही । जेहिविधिभई सकल तेइंकही ॥
पुनि माया सीताकर हरणा । श्रीरघुबीर बिरह कछु बरणा ॥
पुनिप्रभुगृध्रक्रियाजिमिकीन्हीं । बधकवंधशवरिहिंगति दीन्हीं ॥
बहुरि बिरह बरणत रघुबीरा । जेहिबिधिगयउ सरोवर तीरा ॥
दो० प्रभु नारद सम्बाद कहि मारुतमिलन प्रसंग ।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्राण कर भंग ॥
कपिहितिलक करि प्रभुकृत शैल प्रवर्षण बास ।
बर्णत बर्षा शरद ऋतु राम रोष कपि त्रास ॥
जेहिविधिकपिपतिकीशपठाये । सीताखोज सकलदिशिधाये ॥
बिवर प्रवेश कीन्ह जेहिभांती । कपिन बहोरि मिलासंपाती ॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा । लांघत भयउ पयोधि अपारा ॥
लंका कपिप्रवेश जिमिकीन्हा । पुनिसीतहिं धीरजजिमिदीन्हा ॥
बन उजारि रावणहिं प्रबोधी । पुरदहि लांघेउ बहुरि पयोधी ॥
आये कपि सब जहं रघुराई । बैदेही की कुशल सुनाई ॥
सेन समेत यथा रघुबीरा । उतरे जाइ बारिनिधि तीरा ॥
मिलाविभीषणजेहिबिधिआई । सागर बियह कथा सुनाई ॥
दो० सेतुबांधि कपिसेन जिमि उतरे सागर पार ।

गयो बसीठी वीरवर जेहिबिधि बालिकुमार ॥
निशिचर कीश लड़ाई बरणेसिबिबिधप्रकार ।
कुम्भकरण घननाद कर बलपौरुष संहार ॥
निशिचरनिकरमरणबिधिनाना। रघुपति रावणसमरबखाना॥
रावण बध मन्दोदरि शोका । राज्य बिभीषण देव अशोका ॥
सीता रघुपति मिलनबहोरी । सुरन कीन्हअस्तुति करजोरी ॥
पुनि पुष्पक चढ़िसीयसमेता । अवध चले प्रभु कृपा निकेता ॥
जेहि बिधिरामनगरनिधराये। बायस बिशद चरित सबगाये ॥
कहेसि बहोरिराम अभिषेका। पुर बरणन नृप नीति अनेका ॥
कथा समस्त भुशुंड बखानी । जोमैं तुमसन कहा भवानी ॥
सुनि शुभरामकथाखगनाहा। बिगत मोह मन परम उछाहा ॥
सो० गयउमोरसन्देह सुनेउंसकलरघुपतिचरित ।
भयउ रामपदनेह तवप्रसादबायसतिलक ॥
मोहिंभयउअतिमोहप्रभुबंधनरणमहंनिरखि।
चितानन्द सन्दोह रामबिकल कारणकवन ॥
देखि चरितअतिनरअनुहारी। भयो हृदयमम संशय भारी ॥
सो भ्रम अबमैंहितकरिमाना । कीन्ह अनुग्रह कृपा निधाना ॥
जो अतिआतपव्याकुल होई। तरु छाया सुख जानै सोई ॥
जो नहिंहोतमोहअति मोहीं । मिलतेउं तात कवनबिधितोहीं ॥
सुनतेउं किमिहरिकथासुहाई । अतिबिचित्र सबबिधितुमगाई ॥
निगमागम पुराण मतएहा। कहहिं सिद्धमुनि नहिंसन्देहा ॥
सन्त बिशुद्धमिलहिंपुनितेही। चितवहिं रामकृपा करिजेही ॥
रामकृपा तव दरशन भयऊ। तव प्रसाद मम संशय गयऊ ॥
दो० सुनिबिहंगपतिबाणी सहित बिनय अनुराग ।
पुलक गात लोचनसजल मनहर्षे अतिकाग ॥
श्रोता सुमतिसुशीलअति कथारसिकहरिदास ।
पाइउमा यहगोप्यमत सज्जनकरहिंप्रकास ॥

बोलेउ काकभुशुंड बहोरी । नभग नाथ पर प्रीतिनथोरी ॥
सब बिधि नाथ पूज्यतुममेरे । कृपा पात्र रघुनायक केरे ॥
तुमहिं न संशयमोहन माया । मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया ॥
पठै मोह मिसुखगपतितोहीं । रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं ॥
तुम निज मोहकहाखगसाईं । सोनहिं कछु आश्चर्य गुसाईं ॥
नारद शिव बिरंचिसनकादी । जो मुनि नायक आतम बादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहिकेही । को जग काम नचाव न जेही ॥
तृष्णा केहिनकीन्ह बौराहा । केहिके हृदय क्रोध नहिंदाहा ॥

दो० ज्ञानी तापस शूर कबि कोबिद गुणआगार ।
केहिकै लोभ बिडंबना कीन्ह नयहि संसार ॥
श्रीमद बक्रनकीन्हकेहि प्रभुताबधिरनकाहि ।
मृग नयनी के नयनशरको असलागनजाहि ॥

गुण कृत सन्निपातनहिं केही । कोन मान मद व्यापेउ जेही ॥
यौबनज्वरकेहिनहिंबलकावा । ममता केहि करयशन नशावा ॥
मत्सर काहि कलंक नलावा । काहिन शोक समीर डोलावा ॥
चिंता साँपिनि काहिनखाया । कोजग जाहिन व्यापी माया ॥
कीट मनोरथ दारु शरीरा । जेहिन लाग घुन कोअसधीरा ॥
सुत बित नारिईर्षणा तीनी । केहिकी मतिइन्हकृतनमलीनी ॥
यह सबमाया कृत परिवारा । प्रबल अमितको बरणै पारा ॥
शिव चतुरानन देखि डराहीं । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दो० व्यापि रह्यो संसारमहँ मायाकटक प्रचंड ।
सेनापति कामादिभट दम्भ कपट पाखंड ॥
सोदासी रघुबीरकी समुझे मिथ्या सोपि ।
छुटै न रामकृपा बिनु नाथकहौं प्रण रोपि ॥

सो माया सब जगहिनचावा । जासु चरित लखिकाहु नपावा ॥
सो प्रभुभ्रूबिलास खगराजा । नाचनटी इव सहित समाजा ॥
व्यापक ब्रह्म अखंड अनन्ता । अखिल अमोघ एकभगवन्ता ॥

सोइ सच्चिदानन्द घनश्यामा । अज विज्ञान रूपगुणधामा ॥
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता । समदर्शी अनवद्य अजीता ॥
निर्गुण निराकार निर्मोहा । नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥
प्रकृति पार प्रभु सब उरबासी । ब्रह्मनिरीह बिरजअबिनाशी ॥
इहां मोहकर कारण नाहीं । रबिसम्मुखतमकबहुंनजाहीं ॥
दो॰ भक्त हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप ।
किये चरित पावनपरम प्राकृतनर अनुरूप ॥
यथा अनेकन बेष धरि नृत्यकरै नट कोइ ।
जोइजोइभावदिखावई आपु न होइ नसोइ ॥
अस रघुकुल लीला उरगारी । दनुज बिमोहनजनसुखकारी ॥
जे मति मलिन विषयबशकामी ।प्रभुपरमोहधरहिंइमिस्वामी ॥
नयन दोष जा कहं जब होई । पीत बरणशशि कहंकहसोई ॥
जब जेहिदिग्भ्रम होइ खगेशा । सोकह पश्चिमउगेउदिनेशा ॥
नौकारूढ़ चलत जग देखा । अचल मोहबशआपुहिलेखा ॥
बालक भ्रमहिंनभ्रमहिंगृहादी । कहहिं पररुपर मिथ्याबादी ॥
हरि विषयिक अस मोह विहंगा । सपनेहुनहिं अज्ञान प्रसंगा ॥
मायाबश मतिमंद अभागी । हृदयजमनिकाबहुबिधिलागी ॥
ते शठ हठ बश संशय करहीं । निज अज्ञान रामपर धरहीं ॥
दो॰ काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़परे तमकूप ॥
निर्गुणरूप सुलभ अति सगुण न जानै कोइ ।
सुगमअगमनानाचरित सुनिमुनिमनभ्रमहोइ ॥
सुनु खगपति रघुपतिप्रभुताई । कहौं यथा मतिकथा सुहाई ॥
ज्यहिबिधि मोहभयउप्रभुमोहीं। सो सबचरित सुनावोंतोहीं ॥
राम कृपा भाजन तुमताता । हरिगुणप्रीतिमोहिं सुखदाता ॥
ताते नहिं कछु तुमहिं दुरावों। परम रहस्य मनोहर गावों ॥
सुनहु रामकर सहज सुभाऊ । जन अभिमानन राखैं काऊ ॥

संसृति मूल शूल प्रद नाना । सकल शोकदायक अभिमाना ॥
तातें करहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अति भूरी ॥
जिमिशिशुतनव्रणहोइगुसाईं । मातु चिराव कठिनकी नाईं ॥
दो० यद्यपि प्रथम दुख पावै रोवै बाल अधीर ।
व्याधिनाशहितजननी गनैनसो शिशुपीर ॥
तिमिरघुपतिनिजदासकर हरहिंमानहितलागि ।
तुलसिदासऐसेप्रभुहिं कसनभजहुभ्रमत्यागि ॥
राम कृपा आपनि जड़ताई । कहौं खगेश सुनहु मन लाई ॥
जब जब राममनुजतनधरहीं । भक्त हेतु लीला बहु करहीं ॥
तब तब अवध पुरी मैंजाऊं । शिशुलीला बिलोकि हर्षाऊं ॥
जन्म महोत्सव देखौं जाई । बर्ष पांच तहँ रहौं लुभाई ॥
इष्ट देव मम बालक रामा । शोभा बपुष कोटि शत कामा ॥
निजप्रभुबदननिहारिनिहारी । लोचन सुफल करौं उर गारी ॥
लघुवायसबपुधरि हरिसंगा । देखौं बाल चरित बहु रंगा ॥
दो० लरिकाईं जहँजहँफिरहिं तहँतहँ संगउड़ाउं ।
जूठनि परै अजिरमहं सोउठायपुनि खाउं ॥
एकबार अतिशयप्रबल चरितकीन्हरघुबीर ।
सुमिरतप्रभुलीलासोई पुलकित भयोशरीर ॥
कहै भुशुंड सुनहुखगनायक । राम चरित सेवक सुखदायक ॥
नृप मन्दिरसुन्दर सब भांती । खचित कनक मणि नानाजाती ॥
बरणिन जायरुचिरअंगनाईं । जहं खेलहिं नित चारों भाई ॥
बाल बिनोद करत रघुराई । बिचरत अजिरजननि सुखदाई ॥
मरकत मृदुलकलेवरश्यामा । अंग अंग प्रतिछबि बहु कामा ॥
नव राजीवअरुणमृदु चरणा । पदपंकज नख शशि द्युतिहरणा ॥
ललितअंगकुलिशादिकचारी । नूपुर चारु मधुर रव कारी ॥
चारु पुरट मणि रचितबनाई । कटि किंकिणिकल मुखरसुहाई ॥
दो० रेखात्रय सुन्दरउदर नाभि रुचिर गम्भीर ।

उर आयत भ्राजतबिबिध बाल बिभूषणचीर ॥
अरुणपाणिनख करजमनोहर । बाहु बिशाल बिभूषण सोहर ॥
कन्ध बाल केहरि दरग्रीवां । चारु चिबुकआननछबिसीवां ॥
कलबल बचन अधर अरुणारे । दुइ दुइ दशन बिशदबरबारे ॥
ललित कपोल मनोहरनासा । सकलसुखदशशिकरसमहासा ॥
नील कंज लोचन भय मोचन । भ्राजतभाल तिलक गोरोचन ॥
बिकट भृकुटिसमश्रवणसुहाये । कुंचित कच मेचक छबिछाये ॥
पीतझीन झींगुलि तनसोहीं । किलकनिचितवनिभावतिमोहीं ॥
रूपराशि नृप अजिर बिहारी । नाचहिं निजप्रतिबिंबनिहारी ॥
मोसनकरहिंबिबिधबिधिक्रीड़ा । बरणत चरित होतमनव्रीड़ा ॥
किलकतमोहिंधरनजबधावहिं । चलौं भाजितब पूपदेखावहिं ॥
दो० आवत निकटहंसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं ।
जाउंसमीप गहन पद फिरि फिरि चितैपराहिं ॥
प्राकृत शिशु इव लीला देखि भयउ मोहिंमोह ।
कवन चरित्र करत प्रभु चितानन्द सन्दोह ॥
इतनामन आनत खगराया । रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया न दुखदमोहिं काहीं । आन जीव इव संसृति नाहीं ॥
नाथ इहां कछु कारण आना । सुनहुसोसावधान हरियाना ॥
ज्ञान अखण्ड एक सीताबर । माया वश्य जीव सचराचर ॥
जो सबके रहज्ञान एक रस । ईश्वर जीवहि भेद कहहुकस ॥
माया बश्य जीव अभिमानी । ईश बश्य माया गुण खानी ॥
परबशजीव स्वबश भगवन्ता । जीव अनेक एक श्रीकन्ता ॥
दुबिधा भेद अपी कृत माया । बिनुहरिजाइन कोटि उपाया ॥
दो० रामचन्द्र के भजन बिनु जो चहपदनिर्वाण ।
ज्ञानवन्त अपिसोपिनर पशुबिनु पूछबिषाण ॥
राकापति षोड़श उगहिं तारागण समुदाय ।
सकलगिरिन दवलाइये रबिबिनुरातिनजाय ॥

ऐसे बिनु हरि भजन खगेशा । मिटै न जीवन केर कलेशा ॥
हरिसेवकहिं न ब्याप अविद्या । प्रभु प्रेरित तेहिब्यापै विद्या ॥
ताते नाश न होइ दासकर । भेद भक्ति बाढ़ै बिहंग बर ॥
भ्रममयचकित राममोहिंदेखा । बिहँसे सोसुनिचरितबिशेखा ॥
तेहि कौतुक कर मर्म न काहू । जाना अनुज न मात पिताहू ॥
जानु पाणि धाये मोहिंधरणा । श्यामलगातअरुणमृदुचरणा ॥
तब मैं भागि चलेउं उरगारी । राम गहन कहं भुजापसारी ॥
जिमिजिमिदूरिउड़ाउं अकाशा । तिमितिमिभुजदेखौंनिजपासा॥
दो० ब्रह्मलोक लौं गयउं मैं चितवत पाछ उड़ात ।
युग अंगुलकरबीच रह राम भुजहिमोहिं तात ॥
सप्तावरण भेदकरि जहं लगि रहिगति मोरि ।
गयोंतहां प्रभुभुजनिरखि ब्याकुलभयों बहोरि ॥
मूंदेउं नयन त्रसित जब भयऊं । पुनि चितवतकोशलपुरगयऊं॥
मोहिं बिलोकि राम मुसकाहीं । बिहंसततुरतगयों मुखमाहीं ॥
उदर मांझ सुन अंडज राया । देखेउं बहु ब्रह्मांड निकाया ॥
अति विचित्र तहं लोक अनेका । रचना अमित एक ते एका ॥
कोटिन चतुरानन गौरीशा । अगणितउड़गणरबिरजनीशा॥
अगणित लोकपाल यमकाला । अगणित भूधरभूमिबिशाला ॥
सागर सरिता बिपिन अपारा । नाना भांति सृष्टि बिस्तारा ॥
सुरमुनिसिद्ध नाग नर किन्नर। चारि प्रकार जीव सचराचर॥
दो० जो नहिं देखा नहिंसुना जो मनमहं न समाइ ।
अस अद्भुत तहं देखेउं बरणि कवन विधिजाइ ॥
एक एक ब्रह्माण्ड महं रहेउं वर्ष शत एक ।
यहिविधि मैं देखत फिरेउं अण्ड कटाह अनेक ॥
लोकलोक प्रति भिन्नबिधाता । भिन्नविष्णुशिवमनुदिशित्राता ॥
नर गन्धर्व भूत बैताला । किन्नरनिशिचरपशुखगब्याला॥
देव दनुज गण नाना जाती । सकलजीव तहंआनहिं भांती ॥

महिसरिसागरसरगिरि नाना। सब प्रपंच तहं आनहि आना ॥
अंडकोश प्रति प्रति निजरूपा । देखेउं जिनिस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रतिभुवन निहारी । सरयू भिन्न भिन्न नरनारी ॥
दशरथ कौशल्यादिक माता । विविधरूप भरतादिकभ्राता ॥
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा । देखेउं बाल बिनोद अपारा ॥

दो॰ भिन्नभिन्न सबदेखेउं अतिबिचित्र हरियान ।
अगणित देखत फिरेउं मैं रामनदेखा आन ॥
सोइ शिशुपन सोइशोभा सोइकृपालरघुबीर ।
भुवन भुवनदेखत फिरेउंप्रेरित मोहसमीर ॥

भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका । बीते मनहुं कल्प शत एका ॥
फिरतफिरतनिजआश्रमआयउं । तहंपुनिरहिकछुकालगवांयउं ॥
निजप्रभुजन्मअवधसुनिपायउं । निर्भरप्रेम हर्षि उठि धायउं ॥
देखेउं जन्म महोत्सव जाई । जेहिविधिप्रथम कहा मैं गाई ॥
राम उदर देखेउं जगनाना । देखत बनै न जात बखाना ॥
तहंपुनि देखेउं राम सुजाना । मायापति कृपालु भगवाना ॥
करौं बिचार बहोरि बहोरी । मोहकलितब्यापित मतिभोरी ॥
उभय घरी महं मैं सब देखा । भयउंभ्रमित मनमोहबिशेखा ॥

दो॰ देखि कृपाल बिकलमोहिं बिहंसे तब रघुबीर ।
बिहंसतहो मुख बाहर आयउं सुन मतिधीर ॥
सोइ लरिकाईं मोहिं सनलगेकरन पुनि राम ।
कोटि भांति समुझायों मननलहै बिश्राम ॥

देखि चरित यहसो प्रभुताई । समुझत देह दशा बिसराई ॥
धरणि परेउं मुखआवन बाता । त्राहित्राहि आरत जनत्राता ॥
परमाकुल प्रभुमोहिं बिलोकी । निज माया प्रभुता तबरोंकी ॥
करसरोज प्रभु मम शिरधरेऊ । दीनदयाल दुसह दुखहरेऊ ॥
कीन्हराममोहिं विगत बिमोहा । सेवक सुखद कृपा सन्दोहा ॥
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी । मनमहं होइहर्ष अतिभारी ॥

भक्त बछलता प्रभुकै देखी । उपजा मम उरहर्ष बिशेखी ॥
सजल नयन पुलकित करजोरी । कीन्हीबहुविधिबिनयबहोरी॥
दो० सुनि सप्रेम मम बाणी देखि दीन निज दास ।
बचन सुखद गम्भीर मृदु बोले रमा निवास ॥
काकभुशुण्डी मांगुबर अतिप्रसन्न मोहिं जानि ।
अणिमादिकसिधिअपरनिधिमोक्षसकलसुखखानि॥
ज्ञान विवेक बिरति बिज्ञाना । मुनिदुर्लभगतिजोजगजाना ॥
आजु देउं सब संशय नाहीं । मांगुजो तोहिं भाव मनमाहीं ॥
सुनिप्रभुबचन बहुतअनुरागेडं । मनअनुमानकरनतबलागेडं ॥
प्रभुकह देन सकल सुखसही । भक्ति आपनी देन न कही ॥
भक्तिहीन गुणसुख सब ऐसे ।लवणबिना बहु व्यंजन जैसे ॥
भक्तिहीन सुख कवने काजा । असबिचारिबोलेउंखगराजा ॥
जों प्रभु कै प्रसन्न बर देहू । मोपर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मन भावत बर मांगौं स्वामी । तुम उदार उर अन्तरयामी ॥
दो० अबिरल भक्ति बिशुद्ध तव श्रुतिपुराण जोगाव ।
जेहि खोजत योगीश मुनि प्रभु प्रतापकोउ पाव ॥
भक्त कल्पतरु प्रणत हित कृपासिन्धु सुखधाम ।
सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु देहु दया करि राम ॥
एवमस्तु कहि रघुकुल नायक । बोलेबचन परम सुखदायक ॥
सुन बायस तैं परम सयाना । काहेन मांगसि असबरदाना ॥
सब सुख खानि भक्ति तैंमांगी। नहिंकोउतोहिंसमानबड़भागी॥
जो मुनि कोटि यत्ननहिंलहहीं । कैजप योग अनल तन दहहीं ॥
रीझेउं तोहिं देखि चतुराई । मांगेउभक्ति मोहिं अतिभाई ॥
सुनहु बिहंग प्रसाद अब मोरे । सबशुभ गुण बसिहैं उरतोरे ॥
भक्ति ज्ञान बिज्ञान बिरागा । जोसबचरित रहस्यबिभागा ॥
जानबतैं सबही कर भेदा । मम प्रसाद नहिंसाधनखेदा ॥
दो० माया सम्भव सकलभ्रम अब नहिं व्यापहिंतोहिं ।

जानेसिब्रह्म अनादिअज अगुण गुणाकरमोहिं॥
मोहिं भक्त प्रिय संतत अस बिचारि सुनकाग।
कायबचन मन ममचरण करहुअचलअनुराग॥
अब सुन परमबिमलममबानी। सत्यसुगम निगमादिबखानी॥
निज सिद्धांत सुनावौं तोहीं। सुनुमनधरिसबतजिभजुमोहीं॥
मम माया संभव संसारा। जीव चराचरबिबिध प्रकारा॥
सबमम प्रियसबमम उपजाये। सबते अधिकमनुजमोहिंभाये॥
तेहिमहँद्विजद्विजमहँश्रुतिधारी। तिन्हमहंनिगमधर्म अनुसारी॥
तिन्हमहंप्रियबिरक्तमुनिज्ञानी। ज्ञानिहुं ते अतिप्रिय बिज्ञानी॥
तेहितेपुनिमोहिंप्रियनिजदासा। जेहिगतिमोरिनदूसरिआसा॥
पुनि पुनिसत्य कहौंतोहिंपाहीं।मोहिंसेवकसमप्रियकोउनाहीं॥
भक्ति हीन बिरंचि किनहोई। सब जीवन महं अप्रियसोई॥
भक्तिवन्त अति नीचौ प्राणी। मोहिं परम प्रियसुनुममबाणी॥
दो० सुतसुशील सेवकसुमति कहुप्रियकाहिनलाग।
श्रुतिपुराण कहनीतिअस सावधान सुनकाग॥
एक पिता केबिपुल कुमारा। होइंप्रथक गुण शीलअचारा॥
कोउ पंडित कोउ तापसज्ञाता। कोउ धनवन्त शूर कोउदाता॥
कोउ सर्बज्ञ धर्मरत कोई। सबपर पितहिं प्रीतिसमहोई॥
कोउ पितु भक्तबचन मनकर्मा। सपनेहु जानन दूसर धर्मा॥
सो प्रियसुतपितुप्राणसमाना। यद्यपि सोसब भांति अयाना॥
इहिबिधि जीव चराचर जेते। त्रिजगदेव नर असुर समेते॥
अखिल बिश्वयहममउपजाया। सबपर मोरि बराबरि दाया॥
तिनमहं जोपरिहरिसबमाया। भजहिंमोहिंमनबच अरुकाया॥
दो० पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ।
सर्ब भावभजु कपटतजि मोहिंपरमप्रिय सोइ॥
सो० सत्यकहौंखगतोहिं शुचिसेवक ममप्राणप्रिय।
असबिचारिभजुमोहिं परिहरिआशभरोससब॥

कबहुं काल नहिं ब्यापै तोहीं । सुमिरेसु भजेसु निरंतरमोहीं ॥
प्रभु बचनामृतसुनि न अघाऊं । तनपुलकित मन अतिहर्षाऊं ॥
सोसुख जानै मन अरुकाना । नहिं रसनाप्रति जाइबखाना ॥
प्रभु शोभा सुख जानतनयना । कहिंकिमिसकैंतिन्हैंनहिंबैना ॥
बहु बिधि राममोहिं सिखदेई । लगे करन शिशु कौतुक तेई ॥
सजलनयनकछुमुख करिरूखा । चितै मातु तन लागे भूखा ॥
देखि मातु आतुर उठि धाई । कहिमृदुबचन लिये उरलाई ॥
गोद राखि कराव पय पाना । रघुपतिचरितललितकरिगाना ॥

सो॰ जेहिसुखलागिपुरारि अशिवभेष कृतशिवसुखद ।
अवधपुरी नरनारि तेहि सुखमहं संतत मगन ॥
सोई सुख लवलेश निजबारेक सपनेहु लहेउ ।
ते नहिं गणहिं खगेश ब्रह्मसुखहिं सज्जनसुमति ॥

मैं पुनिरह्यों अवधकछुकाला । देख्यों बाल बिनोद रसाला ॥
राम प्रसाद भक्ति बरपायउं । प्रभुपदबन्दिनिजाश्रमआयउं ॥
तबते मोहिं न ब्यापी माया । जबते रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्त चरित मैंगावा । हरिमायाजिमि मोहिंनचावा ॥
निज अनुभव अबकहौंखगेशा । बिनुहरिभजननजाहिंकलेशा ॥
राम कृपा बिनु सुनु खगराई । जानिन जाइ राम प्रभुताई ॥
जाने बिनु न होइ परतीती । बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥
प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढ़ाई । जिमि खगेशजलकीचिकनाई ॥

सो॰ बिनु गुरु होइकिज्ञान ज्ञानकि होइ बिरागबिनु ।
गावहिं वेदपुरान सुख किलहहिबिनुहरिभगति ॥
कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज सन्तोषबिनु ।
चलै कि जलबिनु नाव कोटियतन पचि २ मरै ॥

बिनु सन्तोष न काम नशाहीं । कामअछत सुखसपनेहुनाहीं ॥
रामभजन बिनु मिटहिंनकामा । थलबिहीनतरुकबहुंकिजामा ॥
बिना ज्ञान की समता आवै । कोउ अवकासकिनभबिनुपावै ॥

श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । बिनु महिगन्ध कि पावैकोई ॥
बिनु तप तेज किकरुबिस्तारा । जल बिनुरसकि होइसंसारा ॥
शीलकिमिलुबिनु बुधसेवकाई । जिमिबिनु तेज न रूपगुसाई ॥
निजसुखबिनुमन होइकिथीरा । परस किहोइ बिहीन समीरा ॥
कवनिउंसिद्धिकि बिनुबिश्वासा । बिनुहरिभजननभवभयनासा ॥

दो० बिनुबिश्वासभक्तिनहिं तेहिबिनु द्रवहिं नराम ।
रामकृपा बिनु सपन्हु मनकि लहै बिश्राम ॥

सो० असबिचारिमतिधीर तजिकुतर्क संशयसकल ।
भजहुराम रणधीर करुणाकर सुन्दरसुखद ॥

निजमति सरिस नाथ मैं गाई । प्रभु प्रतापमहिमा खगराई ॥
कह्यों नकछुकरि युक्तिबिशेखी । यह सब मैं निजनयननदेखी ॥
महिमा नामरूप गुण गाथा । सकलअमित अनन्तरघुनाथा ॥
निजरमतिमुनिहरिगुणगावहिं । निगमशेषशिवपार नपावहिं ॥
तुम्हैंआदिखग मशक प्रयन्ता । नभउड़ाहिंनहिंपावहिं अन्ता ॥
तिमिरघुपतिमहिमाअवगाहा । तातकबहुं कोउपाव किथाहा ॥
रामकाम शतकोटि सुभगतन । दुर्गा कोटि अमितअरिमर्दन ॥
शक्रकोटिशतसरिस बिलासा । नभशतकोटिअमितअवकासा ॥

दो० मरुतकोटिशतबिपुलबल रबिशतकोटिप्रकास
शशि शतकोटि सुशीतल शमनसकलभवत्रास ॥
कालकोटि शत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ।
धूम्र केतु शत कोटि सम दुराधर्ष भगवन्त ॥

प्रभु अगाध शतकोटि पताला । शमनकोटिशतसरिसकराला ॥
तीरथ अमितकोटि शतपावन । नामअखिल अघपुंजनशावन ॥
हिमगिरिकोटि अचलरघुबीरा ।सिन्धुकोटि शतसरिसगंभीरा ॥
कामधेनु शतकोटि समाना । सकल कामदायकभगवाना ॥
शारद कोटि अमित चतुराई ।बिधिशतकोटिअमितनिपुणाई ॥
बिष्णु कोटि शत पालन कर्ता । रुद्र कोटि शत सम संहर्ता ॥

धनद कोटि शत सम धनवाना। माया कोटि प्रपंच निधाना ॥
धराधरगण तकोटि अहीशा । निरवधिनिरुपमप्रभुजगदीशा ॥
छं० निरवधिनिरूपम रामसमनहिं आननिगमागमकहैं ।
जिमिकोटिशतखद्योतरबिकहं कहतअतिलघुतालहैं ॥
इहिभांतिनिज२मतिबिलास मुनीशहरिहिबखानहीं ।
प्रभुभावगाहकअति कृपालु सप्रेमसुनि सुखपावहीं ॥
दो० राम अमित गुणसागर थाह कि पावै कोइ ।
सन्तनसन जसकछुसुनेउं तुमहिंसुनायउंसोइ ॥
सो० भावबश्यभगवान सुखनिधान करुणा भुवन ।
तजिममतामदमान भजियरामसीता रमण ॥
सुनि भुशुण्ड के बचन सुहाये । हर्षित खगपति पंख फुलाये ॥
नयन नीर मन अति हर्षाना । श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥
पाछिल मोहसमुझि पछिताना । ब्रह्म अनादि मनुजकरिजाना ॥
पुनिपुनिकाग चरणशिरनावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥
गुरु बिनु भवनिधितरै न कोई । जो बिरंचि शंकर सम होई ॥
संशय सर्प ग्रसेउ मोहिं ताता । दुखद लहरि कुतर्कबहुब्राता ॥
तवस्वरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहिंजियायहुजनसुखदायक ॥
तव प्रसाद मम मोह नशाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥
दो० ताहिप्रशंसेउ बिबिधि बिधि शीश नाइ करजोरि ।
बचन सप्रेम बिनीत मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि ॥
प्रभु अपने अबिबेक ते पूछौं स्वामी तोहिं ॥
कृपासिन्धुसादर कहहु जानिदास निजमोहिं ।
तुम सर्बज्ञ तज्ञ तम पारा । सुमतिसुशील सरलआचारा ॥
ज्ञान बिरति बिज्ञान निवासा । रघुनायकके प्रिय तुमदासा ॥
कारण कवन देह यह पाई । तातसकल मोहिंकहहुबुझाई ॥
रामचरित सर सुन्दर स्वामी । पायहु कहां कहहुनभगामी ॥
नाथ सुनामैं अस शिव पाहीं । महाप्रलय महं क्षयतवनाहीं ॥

मृषा बचन नहिं शंकर कहहीं । सो मेरे मन संशय अहहीं ॥
अग जग जीव नाग नर देवा । नाथसकल जगकालकलेवा ॥
अंड कटाह अमित लयकारी । काल महादुरतिक्रम भारी ॥
सो० तुमहिंन ब्यापैंकाल अतिकराल कारणकवन ।
सोमोहिंकहहुकृपाल ज्ञानप्रभाव कियोगबल ॥
दो० प्रभुतव आश्रम आयउं मोर मोह भ्रमभाग ।
कारण कवनसोनाथअब कहहुसहितअनुराग ॥
गरुड़ गिरा सुनि हर्षेउ कागा । बोलेउबचनसहित अनुरागा ॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी । प्रश्नतुम्हारमोहिंअतिप्यारी ॥
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई । बहुतजन्मकी सुधिमोहिंआई ॥
सब निजकथा कहौं मैं गाई । तात सुनहु सादर मनलाई ॥
जप तप मख शमदम ब्रतदाना । बिरति बिबेक योग बिज्ञाना ॥
सबकर फल रघुपति पद प्रेमा । तेइ बिनु कोइ न पावै क्षेमा ॥
इहि तन राम भक्तिमैं पाई । ताते मोहिं ममता अधिकाई ॥
सो० पन्नगारिअसिनीति श्रुतिसम्मत सज्जनकहहिं ।
अतिनीचहुसनप्रीति करियजानिनिजपरमहित ॥
पाट कीट ते होइ ताते पाटाम्बर रुचिर ।
कृमि पालै सब कोइ परम अपावन प्राणसम ॥
स्वारथ सर्ब जीव कहं एहा । मनक्रम बचन रामपद नेहा ॥
सोइपावन सोइसुभग शरीरा । जोतनु पाइ भजिय रघुबीरा ॥
राम बिमुखलहि बिधिसमदेही । कबिकोबिद न प्रशंसहिंतेही ॥
रामभक्ति यहि तनमहं जामी । ताते मोहिंपरम प्रियस्वामी ॥
तजौं न तन निजइच्छामरणा । तनबिनुवेदभजननहिं बरणा ॥
प्रथम मोहमोहिंबहुत बिगोवा । रामबिमुखसुख कबहुंनसोवा ॥
नाना जन्म कर्म्म पुनिनाना । कियेयोग जपतप मखदाना ॥
कवन योनि जन्मेहुं जहं नाहीं । मैं खगेशभ्रमिभ्रमिजगमाहीं ॥
देखहु सबकरि कर्म्म गुसाईं । सुखी नभयउंअबहिंकी नाईं ॥

सुधिमोहिं नाथ जन्म बहुकेरी । शिवप्रसाद मति मोह न घेरी ॥
दो० प्रथमजन्मके चरितसब कहौं सुनहु बिहंगेश ।
सुनि प्रभु पद रति ऊपजै जाते मिटै कलेश ॥
पूरबकलपते एक प्रभु कलियुग मलकर मूल ।
नरअरुनारिअधर्मरत सकलनिगमप्रतिकूल ॥
तेहि कलियुग कोशलपुर जाई । जन्मत भयउं शूद्रतनु पाई ॥
शिवसेवक मनक्रम अरु बानी । आनदेव निन्दक अभिमानी ॥
धन मदमत्त परम बाचाला । उग्रबुद्धि उरदम्भ बिशाला ॥
यदपि रहेउं रघुपति रजधानी । तदपिनहींमहिमा कछुजानी ॥
अब जाना मैं अवध प्रभावा । निगमागम पुराणअसगावा ॥
कवनिहुं जन्म अवध बस जोई । रामपरायण सो फुर होई ॥
अवधप्रभाव जान तब प्राणी । जबउर बसहिं रामधनुपाणी ॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी । पापपरायण सब नर नारी ॥
दो० कलिमल ग्रसेउ धर्मसब गुप्तभये सद ग्रन्थ ।
दम्भिननिजमतकल्पिकर प्रकटकीन्हबहुपंथ ॥
भये लोग सब मोहबश लोभ ग्रसे शुभ कर्म ।
सुनुहरियानज्ञाननिधि कहौं कछुककलिधर्म ॥
वर्ण धर्म नहिं आश्रमचारी । श्रुति बिरोधरत सबनरनारी ॥
द्विजश्रुतिबंचक भूपप्रजाशन ।कोउनहिंमानुनिगम अनुशासन ॥
मारग सोइ जाकहं जो भावा । पण्डितसोइ जोगालबजावा ॥
मिथ्या रम्भ दम्भ रत जोई । ताकहं संत कहैं सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधन हारी । जोकरुदम्भ सो बड़ आचारी ॥
जो कछुझूठ मसखरी जाना । कलियुगसोइ गुणवन्तबखाना ॥
निराचार जो श्रुतिपथ त्यागी । कलियुग सोइ ज्ञानी बैरागी ॥
जाके नख अरु जटाबिशाला । सोइतापस प्रसिद्धकलिकाला ॥
दो० अशुभ वेष भूषणधरैं भक्ष्याभक्ष्य जेखाहिं ।
ते योगी ते सिद्धनर पूज्यते कलियुगमाहिं ॥

सो० जे अपकारी चार तिनकर गौरवमान्यता ।
मन क्रम बचनलबारते वक्ताकलिकालमहं ॥
नारि बिबशनरसकल गुसाईं । नाचहिं नट मरकट कीनाईं ॥
शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना । मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर काम लोभ रतक्रोधी । देव बिप्र गुरु सन्त बिरोधी ॥
गुण मन्दिर सुंदर पतित्यागी । भजहिंनारि परपुरुषअभागी ॥
सो भागिनी बिभूषण हीना । बिधवन कहं शृंगार नवीना ॥
गुरु शिष अंध बधिरकरलेखा । एक न सुनी एक नहिं देखा ॥
हरै शिष्य धनशोक नहरई । सो गुरु घोर नरकमहं परई ॥
मातपिताबालकन्ह बुलावहिं । उदरभरै सोइ कर्मसिखावहिं ॥
दो० ब्रह्मज्ञान बिनुनारिनर कहहिंन दूसरिबात ।
कौड़ी कारणमोहबश करहिंबिप्र गुरुघात ॥
बादशूद्र कह द्विजनसन हमतुमते कछुघाटि ।
जानै ब्रह्मसोबिप्रबरआंखिदिखावहिंडाटि ॥
परतिय लंपट कपट सयाने । मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
तेइ अभेद बादी ज्ञानी नर । देखा मैं चरित्र कलियुगकर ॥
आपु गये अरुआनहिंघालहिं । जोकोउश्रुतिमारगप्रतिपालहिं॥
कल्प कल्पभरि इकइक नर्का । परहिं जेदूषहिं श्रुतिकरितर्का ॥
जे बर्णाधम तेलि कुम्हारा । श्वपचकिरातकोल्ह कलवारा॥
नारि मुई गृह सम्पति नासी । मूड़ मुड़ाय भये सन्यासी ॥
तेबिप्रन सन पांव पुजावहिं । उभय लोकनिजहाथनसावहिं ॥
बिप्र निरक्षर लोलुप कामी । निराचार शठ वृषली स्वामी ॥
शूद्र करहिं जपतप ब्रत दाना । बैठि बरासन कहहिं पुराना ॥
सब नरकल्पितकरहिंअचारा । जाइन बरणि अनीतिअपारा ॥
दो० भयेवर्णसंकर कलिहि भिन्न सेतुसबलोग ।
करहिं पापदुखपावहीं भयरुजशोकबियोग ॥
श्रुति सम्मतहरिभक्तिपथसंयुतज्ञानबिबेक ।

तेन चलहिं नर मोह बश कल्पहिं पंथअनेक ॥
छं० बहुधामसंवारहिंयोगयती। बिषया हरलीन्हगई बिरती॥
तपसी धनवंत दरिद्रगृही । कलिकौतुकतातनजातकही॥
कुलवंतनिकारहिंनारिसती। गृह आनहिंचेरिहिंचोरगती॥
सुतमानहिंमातपितातबलौं। अबलानन दीखनहींजबलौं॥
ससुरारिपियारिलगीजबते। रिपुरूप कुटुम्ब भये तबते॥
नृप पापपरायणधर्मनहीं ।करुदण्ड बिदण्ड प्रजानितहीं॥
धनवंतकुलीनमलीनअपी । द्विज चिन्हजनेउ उघारतपी॥
नहिंमानपुराणहिवेदहिंजो। हरिसेवक संतसही कलिसो॥
कबिबृन्दउदारधुनीनसुनी। गुणदूषण ब्रातनकोपिगुनी॥
कलिबारहिंबारदुकालपरैं। बिनअन्नदुखी बहुलोगमरैं॥
दो० सुन खगेश कलिकपटहठ दम्भ द्वेषपाखंड ।
काम क्रोध लोभादिमद ब्यापिरहे ब्रह्मण्ड ॥
तापस धर्म करहिंनरजप तप मख ब्रतदान ।
देवन बरषै धरणि पर बये न जामहिं धान ॥
छं०अबलाकचभूषणभूरिक्षुधा। धनहीन दुखी ममताबहु धा॥
सुखचाह्नहिंमूढ़नधर्मरता । मतिथोरिकठोरिन कोमलता ॥
नरपीड़ितरोगनभोगकही। अभिमान बिरोधअकारणही ॥
लघुजीवनसंवतपंचदशा । कल्पान्तन नाश गुमानअशा॥
कलिकालबेहालकियेमनुजा।नहिंमानतकोउअनुजातनुजा॥
नहिंतोषबिचारनशीतलता। सबजातिकुजातिभयेमंगता॥
इरषापरुषाछललोलुपता । भरि पूरि रही समताबिगता ॥
सबलोगबियोगबिशोकहये। बर्णाश्रम धर्म अचारगये ॥
दमदानदयानहिंजानपरी । जड़ता परिपंचक तातघनी ॥
दो० सुनिब्यालारिकरालकलिमलअवगुण आगार ।
गुणहुबहतकलिकालकर बिनुप्रयास निस्तार ॥
कृतयुग त्रेता द्वापरहु पूजा मख अरुयोग ।

जोगतिहोइ सोकलि हरिहि नामतेपावहिंलोग ॥
कृतयुग सब योगी बिज्ञानी । करि हरिध्यान तरहिंभवप्रानी ॥
त्रेता बिबिध यज्ञ नर करहीं । प्रभुहि समर्पिकर्मभव तरहीं ॥
द्वापर करि रघुपति पदपूजा । नर भवतरहिं उपाय न दूजा ॥
कलिकेवलहरिगुणगणगाहा । गावत नर पावहिं भवथाहा ॥
कलियुग योगयज्ञनहिंज्ञाना । एक अधार राम गुण गाना ॥
सबभरोसतजि जोभजरामहिं । प्रेम समेत गावगुण ग्रामहिं ॥
सो भवतरु कछु संशयनाहीं । नामप्रताप प्रकट कलिमाहीं ॥
कलि कर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुण्यहोइ नहिं पापा ॥

दो० कलियुगसमयुग आननहिं जोनरकरुबिश्वास ।
गाइरामगुणगण बिमल भवतरुबिनहिंप्रयास ॥
प्रकट चारिपद धर्मके कलिमहं एक प्रधान ।
येन केन बिधि दीन्हे दान करै कल्यान ॥

कृतयुग धर्म होहिं सब केरे । हृदय राम माया के प्रेरे ॥
शुद्ध सत्व समता बिज्ञाना । कृत प्रभाव प्रसन्न मनजाना ॥
सत्व बहुत कछु रजरतिकर्मा । सबबिधि शुभ त्रेताकर धर्मा ॥
बहु रजसत्वस्वल्पकछुतामस । द्वापर धर्म हर्ष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुण थोरा । कलिप्रभाव बिरोध चहुं ओरा ॥
बुधयुग धर्म जानि मनमाहीं । तजि अधर्म रत धर्म कराहीं ॥
कालकर्म नहिं व्यापहिं ताही । रघुपतिचरण प्रीतिअतिजाही ॥
नटकृतकपट बिकटखगराया । नट सेवकहिं न व्यापै माया ॥

दो० हरिमायाकृतदोषगुण बिनुहरि भजन न जाहिं ।
भजियरामसबकामतजि असबिचारिमनमाहिं ॥
तेहि कलिकाल बर्षबहु बसेउं अवध बिहंगेश ।
परेउ दुकाल बिपत्तिबश तब मैं गयउं बिदेश ॥

गयउं उजैन सुनहु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गये काल कछु सम्पति पाई । तहंपुनि करौं शम्भु सेवकाई ॥

बिप्र एक वैदिक शिवपूजा । करै सदा तेहि काज न दूजा ॥
परम साधु परमारथबिन्दक । शम्भु उपासकनहिं हरिनिंदक ॥
सेवौं मैं तेहि कपट समेता । द्विज दयालु अतिनीतिनिकेता ॥
बाहिर नम्र देखि मोहिंसाईं । बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं ॥
शम्भुमंत्रमोहिंद्विजवरदीन्हा । शुभउपदेशविविधविधिकीन्हा ॥
जपौं मंत्र शिवमन्दिर जाई । हृदयदम्भ अहमिति अधिकाई ॥

दो० मैंखल मल संकुलमति नीच जातिबश मोह ।
द्विजहरिजन देखतजरौं करौं बिष्णु करद्रोह ॥
सो० गुरुनितमोहिं प्रबोध दुखितदेखिआचरणमम ।
मोहिंउपजैअतिक्रोध दम्भिहि नीतिकिभावई ॥

एक बार गुरु लीन्ह बुलाई । मोहिंनीति बहुभांति सिखाई ॥
शिव सेवाकर फल सुतसोई । अविरल भक्ति रामपद होई ॥
रामहिं भजहिंतातशिवधाता । नर पामर कर केतिक बाता ॥
जासुचरणशिवअज अनुरागी । तासुद्रोह सुख चहसि अभागी ॥
हर कहं हरिसेवकगुरुकहेऊ । सुनिखगनाथ हृदय ममदहेऊ ॥
अधम जाति मैं विद्या पाये । भयउं यथा अहि दूध पियाये ॥
मानीकुटिलकुभाग्य कुजाती । गुरुसन द्रोह करौं दिन राती ॥
अतिदयालुगुरुस्वल्पनक्रोधा । पुनिपुनि मोहिं सिखावसुबोधा ॥
ज्यहि ते नीच बड़ाई पावा । सोप्रथमहिंहठि ताहिनशावा ॥
धूम अनल सम्भव सुनभाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥
रज मगु परी निरादर रहई । सबकरपद प्रहार नित सहई ॥
मरुतउड़ाइ प्रथम तेहि भरई । पुनि नृप नयनकिरीटन्हपरई ॥
सुनखगपतिअससमुझिप्रसंगा। बुधन करहिं अधमनकरसंगा ॥
कविकोविद गावहिंअसनीती । खलसनकलहनभलसनप्रीती॥
उदासीन बरु रहिय गुसाईं । खलपरिहरिय श्वानकीनाईं ॥
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई । गुरु हितकहैं न मोहिंसुहाई ॥

दो० एक बार हर मन्दिर जपत रह्यउं शिवनाम ।

गुरुआये अभिमानते उठिनहिं कीन्ह प्रणाम ॥
सोदयालुनहिंकहेउकछु उर न रोष लवलेश ।
अतिअघगुरुअपमानता सहिनहिंसके महेश ॥
मन्दिर मांझ भई नभ बानी । रेहतभाग्य अधमअभिमानी ॥
यद्यपि तवगुरु स्वल्प न क्रोधा । अतिकृपालुचितसम्यकबोधा ॥
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं । नीति बिरोधसुहात न मोहीं ॥
जो नहिं करौं दंड शठ तोरा । भ्रष्ट होइ श्रुति मारगमोरा ॥
जो शठ गुरुसन ईर्षा करहीं । रौरवनरक कलपशत परहीं ॥
त्रिजगयोनि पुनिधरहिं शरीरा । अयुतजन्म भरिपावहिंपीरा ॥
बैठि रहेसि अजगरइव पापी । होसिसर्पखलमलमतिब्यापी ॥
महा बिटप कोटर महं जाई । रहुरे अधम अधोगति पाई ॥

दो० हाहाकार कीन्हगुरु सुनि दारुण शिवशाप ।
कंपितमोहिं बिलोकि अति उरउपजापरिताप ॥
करिदण्डवतसप्रेमगुरु शिवसम्मुख करजोरि ।
विनयकरतगदगदगिरा समुझिघोरगतिमोरि ॥

छं० नमामीश मीशाननिर्वाणरूपं बिभुंब्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपं ।
अजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहंचिदाकाशमाकाशबासंभजेहं ॥
निराकार मोंकारमूलंतुरीयं गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं ।
करालंमहाकाल कालंकृपालं गुणागार संसारपारंनतोहं ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरंगंभीरं मनोभूतकोटि प्रभासीशरीरं ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगालसद्भालबालेंदुकंठेभुजंगा॥
चलत्कुंडलं शुभ्रनेत्रंबिशालं प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ।
मृगाधीशचर्माम्बरंमुण्डमालं प्रियंशंकरं सर्बनाथंभजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भंपरेशं अखंडं अजंभानु कोटिप्रकाशं ।
त्रयीशूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेहंभवानीपतिं भावगम्यं॥
कलातीतकल्याणकल्पांतकारीसदासज्जनानन्ददातापुरारी ।
चिदानन्दसंदोहमोहापहारी प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथारी ॥

नयावत्उमानाथपादारबिन्दंभजंतीहलोके परेवानराणाम्
नतावत्सुखं यांति संतापनाशं प्रसीदप्रभोसर्वभूताधिवासं ॥
नजानामियोगं जपंनैवपूजां नतोहं सदा सर्वदा शम्भुतुभ्यं।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानंप्रभोपाहिशापान्नमामीशशंभो॥

रुद्राष्टक मिदं प्रोक्तं विप्रेण हर तुष्टये ।
येपठंतिनराभक्त्या तेषांशम्भुःप्रसीदति॥

दो० सुनि बिनती सर्वज्ञ शिव देखिबिप्र अनुरागु ।
पुनिमन्दिर बाणी भई हे द्विजबर बरमांगु ॥
जोप्रसन्न प्रभु मोहिं पर नाथ दीन पर नेहु ।
निजपद भक्ति देहु प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥
तवमाया बश जीवजड़ सन्तत फिरै भुलान ।
तेहिपरक्रोधनकरियप्रभु कृपासिन्धु भगवान ॥
शंकर दीनदयालु अब यहि पर होहु कृपाल ।
शापानुग्रह होइ जेहि नाथ थोरही काल ॥

इहिकर होइ परम कल्याना । सोइ करहुअब कृपानिधाना ॥
बिप्रगिरा सुनि परहित सानी । एवमस्तु इति भइ नभबानी ॥
यदपि कीन यह दारुण पापा । मैं पुनिदीन क्रोधकरि शापा ॥
तदपि तुम्हार साधुता देखी । करिहौंइहिपर कृपाबिशेखी ॥
क्षमाशील जे पर उपकारी । तेद्विजप्रियमोहिंयथाखरारी ॥
मोर शाप द्विज मृषा न होई । जन्म सहस्र पाव यह सोई ॥
जन्मतमरत दुसह दुख होई । इहिकहंस्वल्पनब्यापिहिसोई ॥
कौनिहुजन्ममिटिहिनहिंज्ञाना । सुनहु शूद्र मम बचनप्रमाना ॥
रघुपति पुरी जन्म तवभयऊ । पुनि तैं मम सेवा मनदयऊ ॥
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे । राम भक्ति उपजहि उरतोरे ॥
सुन मम बचन सत्य अबभाई । हरितोषक ब्रतद्विजसेवकाई ॥
अबजनि करसि बिप्रअपमाना । जानसि ब्रह्म अनन्तसमाना ॥
इन्द्र कुलिश ममशूल बिशाला । कालदण्ड हरिचक्र कराला ॥

जो इनकर मारा नहिं मरई । बिप्र रोष पावक सो जरई ॥
अस बिबेक राखेहु मनमाहीं । तुमकहं जगदुर्लभ कछुनाहीं ॥
औरौ एक आशिषा मोरी । अब्याहत गति होइहि तोरी ॥

दो० सुनिशिवबचन सप्रेमगुरु एवमस्तु इतिभाखि ।
मोहिंप्रबोधि गयउगृह शंभु चरण उरराखि ॥
प्रेरित काल बिंध्यगिरि जाइभयउं मैं ब्याल ।
बिनु प्रयास सोतनुतजेउं नाथ थोरही काल ॥
जोतनु धरौं सो तजौंपुनि अनायास हरियान ।
जिमि नूतन पट पहिरिकै नरपरिहरै पुरान ॥
शिवराखेउश्रुतिनीतिबिधि मैंन हिंपावक लेश ।
इहिबिधिधरेउंबिबिधितनुज्ञानन गयउ खगेश ॥

त्रिजगयोनि जोजो तनु धरेऊं । तहं तहंराम भक्ति अनुसरेऊं ॥
एकशूल मोहिं बिसरुन काऊ । गुरुकर कोमलशील सुभाऊ ॥
पर्म देह द्विजकर मैं पाई । सुर दुर्लभ पुराण श्रुतिगाई ॥
खेलौं तहां बालकन मीला । करौं सकलरघु नायकलीला ॥
प्रौढ़भये मोहिं पिता पढ़ावा । समुझौं सुनौं गुणौंनहिंभावा ॥
मनते सकल बासना भागी । केवल रामचरण लयलागी ॥
कहुखगेश असकवन अभागी । खरी सेव सुर धेनुहिं त्यागी ॥
प्रेममगन मोहिं कछु न सुहाई । हारेउ पिता पढ़ाय पढ़ाई ॥
भयेउ कालबश जबपितु माता । मैंबन गयेउं भजनजनत्राता ॥
जहंजहंबिपिन मुनीश्वर पावौं । आश्रम जाइजाइ शिरनावौं ॥
पूंछौं तिनहिं राम गुण गाहा । कहैं सुनौं हर्षित खगनाहा ॥
सुनतफिरौं हरिगुण अनुबादा । अब्याहत गति शंभु प्रसादा ॥
छूटी त्रिबिधि ईर्षणा गाढ़ी । एक लालसा उर अति बाढ़ी ॥
रामचरण पंकज जब देखौं । तबनिजजन्मसुफलकरिलेखौं ॥
जेहि पूंछौं सो मुनि असकहई । ईश्वर सर्व भूत मय अहई ॥
निर्गुण मतनहिं मोहिं सुहाई । सगुण ब्रह्मरति उरअधिकाई ॥

दो॰ गुरुके बचन सुरतिकरि रामचरण मनलाग ।
रघुपतियशगावतफिरौंक्षणक्षण नव अनुराग ॥
मेरु शिषर बटछाया मुनि लोमश आसीन ।
देखिचरण शिरनायउं बचनकहेउं अति दीन ॥
सुनिममबचनबिनीतमृदु मुनिकृपालखगराज ।
मोहिंसादरबूझतभयउद्विजआयउ केहि काज ॥
तबमैं कहेउं कृपानिधि तुम सर्बज्ञ सुजान ।
सगुण ब्रह्म अवराधना मोहिं कहहुभगवान ॥

तब मुनीश रघुपति गुणगाथा । कहेउकछुकसादरखगनाथा ॥
ब्रह्मज्ञान रत मुनि बिज्ञानी । मोहिं परम अधिकारीजानी ॥
लागे करन ब्रह्म उपदेशा । अज अद्वैत अगुण हृदयेशा ॥
अकल अनीह अनाम अरूपा । अनुभव गम्य अखंड अनूपा ॥
मन गोतीत अमल अवि नाशी । निर्बिकारनिरवधिसुखराशी ॥
सोतैं ताहि तोहिं नहिं भेदा । बारि बीचि इव गावहिंवेदा ॥
बिबिधभांतिमोहिंमुनिसमुझावा । निर्गुणमत ममहृदयनआवा ॥
पुनि मैं कहेउं नाइपद शीशा । सगुणउपासनकहहु मुनीशा ॥
रामभक्ति जल मम मन मीना । किमिबिलगाइमुनीशप्रवीना ॥
सोइ उपदेश कहहुकरि दाया । निज नयनन देखौं रघुराया ॥
भरि लोचन बिलोकि अवधेशा । तब सुनिहौं निर्गुणउपदेशा ॥
पुनिमुनिकह हरि कथा अनूपा । खंडिसगुणमतअगुणनिरूपा ॥
तबमैं निर्गुणमत करि दूरी । सगुण निरूपौं करिहठभूरी ॥
उत्तर प्रत्युत्तर मैं दीन्हा । मुनिउरभयउक्रोधकरचीन्हा ॥
सुन प्रभु बहुत अवज्ञा किये । उपजै क्रोधज्ञानिहु के हिये ॥
अति संघर्षण करै जो कोई । अनल प्रगट चन्दनते होई ॥

दो॰ बारहिबारसकोपि मुनि करहिं निरूपण ज्ञान ।
मैं अपने मन बैठि तब करौं बिबिध अनु मान ॥
क्रोधकि द्वैतक बुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अज्ञान ।

माया बश पर छिन्न जड़ जीव कि ईश समान ॥
कबहुँक दुख सबकर हितताके । तेहिकिदरिद्र परसमणिजाके ॥
कामी पुनि कि रहै निकलंका । परद्रोही कि होइ निःशंका ॥
बंशकिरहद्विज अनहित कीन्हे । कर्मकिहोहिं स्वरूपहि चीन्हे ॥
काहू सुमतिकि खलसंगजामी । शुभगतिपावकिपरतियगामी॥
राज कि रहै नीतिबिनु जाने । अघकि रहैहरिचरित बखाने ॥
भव किपरहिंपरमारथ बिंदक । सुखीकिहोहिं कबहुंपरनिंदक ॥
पावन यश किपुण्य बिनुहोई । बिनु अघ अयश कि पावैकोई ॥
लाभकिकछुहरि भक्तिसमाना । जेहि गावहिँ श्रुति संतपुराना ॥
हानि किजगइहिसमकछुभाई । भजिय न रामहिं नरतनुपाई ॥
अघ कि बिनातामसकछुआना । धर्मकिदया सरिस हरियाना ॥
इहिबिधिअमितयुक्तिमनगुनेऊं । मुनि उपदेश न सादरसुनेऊं ॥
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा । तब मुनिबोले बचन सकोपा ॥
मूढ़ परम सिखदेउं न मानसि । उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनसि ॥
सत्य बचन बिश्वास न करही । बायसइव सबहीसन डरही ॥
शठ सपक्ष तवहृदय बिशाला । सपदि होहु पक्षी चंडाला ॥
लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई । नहिंकछु भय न दीनता आई ॥

दो० तुरतभयउं मैं कागतब पुनिमुनि पद शिरनाइ ।
सुमिरि राम रघुबंशमणि हर्षितचलेउं उड़ाइ ॥
उमा जो राम चरण रत बिगतकाममद क्रोध ।
निजप्रभुमय देखहिंजगतकासनकरहिं बिरोध ॥

सुनिखगेशनहिंकछुऋषिदूषण । उर प्रेरक रघुबंश बिभूषण ॥
कृपासिंधु मुनि मति करभोरी । लीन्ही प्रेम परीक्षा मोरी ॥
मन क्रम बचन मोहिंजनजाना । मुनिमतिपुनि फेरी भगवाना ॥
ऋषिमम सहज शीलतादेखी । रामचरण बिश्वास बिशेखी ॥
अतिबिस्मयपुनि पुनिपछिताई । सादरमुनिमोहिंलीन्हबुलाई ॥
ममपरितोषविविधबिधिकीन्हा । हर्षित राममंत्र मोहिं दीन्हा ॥

बालक रूप रामकर ध्याना । कहेउमोहिंमुनिकृपानिधाना ॥
सुन्दर सुखद मोहिंअतिभावा । जो प्रथमहिं मैंतुमहिं सुनावा ॥
मुनिमोहिंकछुककालतहंराखा । रामचरित मानससब भाखा ॥
सादर मोहिं यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरासुहाई ॥
राम चरित सर गुप्त सुहावा । शम्भु प्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहिं निजभक्त रामकरजानी । ताते मैं सब कहेउं बखानी ॥
राम भक्ति जिनके उर नाहीं । कबहुंन तातकहिय तेहिपाहीं ॥
मुनिमोहिंबिबिधभांतिसमुझावा । मैं सप्रेम मुनिपद शिरनावा ॥
निजकरकमलपरसिममशीशा । हर्षित आशिष दीन्ह मुनीशा ॥
राम भक्ति अविरल उर तोरे । बसिहिसदा प्रसादअब मोरे ॥

दो० सदाराम प्रियहोव तुम शुभगुण भवन अमान ।
कामरूप इच्छामरण ज्ञान बिराग निधान ॥
जेहिआश्रमतुम बसबपुनि सुमिरत श्रीभगवन्त ।
व्यापिहि तहंन अबिद्या योजन यक पर्यन्त ॥

कालकर्म्म गुण दोष सुभाऊ । कछुदुखतुमहिंनव्यापिहिकाऊ ॥
रामरहस्य ललित बिधिनाना । गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
बिनुश्रम तुमसब जानब सोऊ । निति नव प्रेमराम पदहोऊ ॥
जो इच्छा करिहौ मन माहीं । हरि प्रसाद कछुदुर्लभ नाहीं ॥
सुनिमुनिआशिषसुनुमतिधीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥
एवमस्तु तव बच मुनि ज्ञानी । यह मम भक्त कर्म मन बानी ॥
सुनि नभगिरा हर्ष ममभयऊ । प्रेम मगन मन संशय गयऊ ॥
करि बिनती मुनि आयसु पाई । पदसरोज पुनिपुनि शिरनाई ॥
हर्षसहित इहि आश्रमआयउं । प्रभु प्रसाद दुर्लभ बरपायउं ॥
इहां बसत मोहिं सुन खगईशा । बीते कल्प सात अरु बीशा ॥
करौं सदा रघुपति गुण गाना । सादर सुनहिं बिहंग सुजाना ॥
जब जब अवध पुरी रघुबीरा । धरहिं भक्तहित मनुज शरीरा ॥
तब तब जाइ अवधपुर रहऊं । शिशुलीलाबिलोकिसुखलहऊं ॥

पुनि उर राखिरामशिशुरूपा । इहि आश्रम आवौंखग भूपा ॥
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई । काकदेह जेहि कारण पाई ॥
कहेउं तात सब प्रश्नतुम्हारी । रामभक्ति महिमा अतिभारी ॥

दो० तातेयह तनमोहिं प्रिय भयउ रामपद नेह ।
निज प्रभु दर्शन पायऊं गयउ सकल सन्देह ॥
भक्तिपक्ष हठकरिरहेउं दीन्ह महाऋषि शाप ।
मुनि दुर्लभ बर पायउं देखहु भजन प्रताप ॥

जे असभक्ति जानिपरिहरहीं । केवल ज्ञान हेतु श्रमकरहीं ॥
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी । खोजतआक फिरहिं पयलागी ॥
सुनु खगेश हरि भक्ति बिहाई । जे सुख चाहहिं आन उपाई ॥
ते शठ महासिन्धु बिनु तरणी । पैरिपारचाहत जड़ करणी ॥
सुनि भुशुण्डके बचन भवानी । बोलेउ गरुड़ हर्षि मृदु बानी ॥
तव प्रसाद प्रभु मम उरमाहीं । संशय शोक मोहभ्रम नाहीं ॥
सुनेउं पुनीत राम गुण ग्रामा । तुम्हरी कृपा लहेउं बिश्रामा ॥
एक बात प्रभु पूंछौं तोहीं । कहहुबुझाइ कृपानिधि मोहीं ॥
कहहिं संत मुनि वेद पुराना । नहिंकछु दुर्लभज्ञान समाना ॥
सो सुनितुमसन कहेउंगोसाईं । नहिं आदरेउ भक्ति की नाईं ॥
ज्ञानहिं भक्तिहि अन्तर केता । सकलकहहुप्रभु कृपानिकेता ॥
सुनि उरगारिबचन सुखमाना । सादरबोलेउ काक सुजाना ॥
ज्ञानहिं भक्तिहिनहिं कछुभेदा । उभयहरहिं भवसम्भव खेदा ॥
नाथमुनीश कहहिंकछु अन्तर । सावधानहोइसुनहु बिहंगबर ॥
ज्ञान बिराग योग बिज्ञाना । येसब पुरुषसुनहु हरियाना ॥
पुरुष प्रताप प्रबल सबभांती । अबला अबलसहज जड़जाती ॥

दो० पुरुष त्यागिसक नारिकहं जो बिरक्त मतिधीर ।
नहिंतो कामीबिषयबश बिमुख जो पद रघुबीर ॥

सो० सोमुनिज्ञाननिधान मृगनयनीविधुमुखनिरखि ।
बिकलहोहिं हरियान नारि बिरचि माया प्रकट ॥

यहां न पक्ष तात कछु राखौं । वेद पुराण सन्तमत भाखौं ॥
मोह न नारि नारिके रूपा । पन्नगारि यह नीति अनूपा ॥
माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ । नारिवर्ग जानै सब कोऊ ॥
पुनि रघुबीरहिं भक्ति पियारी । माया खलु नर्तकी बिचारी ॥
भक्तिहि सानुकूल रघुराया । तातेतेहि डरपति अतिमाया ॥
रामभक्ति निरुपम निरुपाधी । बसै जासुउर सदा अबाधी ॥
तेहि बिलोकि माया सकुचाई । करि न सकै कछुनिजप्रभुताई ॥
अस बिचारि जो मुनिबिज्ञानी । याचहिंभक्ति सकलगुणखानी ॥
दो० यह रहस्य रघुनाथकर वेगि न जानै कोइ ।
जाने ते रघुपति कृपा सपनेहुं मोह न होइ ॥
अवरौज्ञान भक्तिकर भेद सुनहु परबीण ।
जो सुनि होइ रामपद प्रीति सदा अवक्षीण ॥
सुनहु तात यह अकथकहानी । समुझतबनै न जात बखानी ॥
ईश्वर अंश जीव अबिनाशी । चेतन अमल सहज सुखराशी ॥
सोमाया वश भयउ गुसाईं । बंध्यों कीर मरकट की नाईं ॥
जड़ चेतनहिं ग्रंथि परि गई । यदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
तब ते जीव भयो संसारी । ग्रन्थि न छूट नहोइ सुखारी ॥
श्रुति पुराण बहु कहैं उपाई । छूटनअधिक अधिकअरुझाई ॥
जीव हृदय तम मोह विशेखी । ग्रन्थिछुटै किमि परैन देखी ॥
अस संयोग ईश जब करई । तबहुंकदाचित सोनिरुअरई ॥
सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । जोहरि कृपा हृदय बस आई ॥
जप तप संयम नियम अपारा । जो श्रुति कहै सुधर्म अचारा ॥
ये तृण हरित चरै जब गाई । भाव वत्स शिशुपाइ पन्हाई ॥
नो इन वृत्ति पात्र बिश्वासा । निर्मल मन अहीरनिजदासा ॥
परम धर्ममय पयदुहि भाई । अवटै अनल अकाम बनाई ॥
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै । धृतिसम जावन देइजमावै ॥
मुदिता मथै बिचारि मथानी । दम अधार रज सत्यसुबानी ॥

तब मथि काढ़िलेइ नवनीता । बिमलबिरागसुभगसुपुनीता ॥

दो० योग अग्निकर प्रकट तब कर्म शुभाशुभ लाइ ।
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत ममता मल ज़रिजाइ ॥
तब बिज्ञान निरूपिणी बुद्धि बिशद घृत पाइ ।
चित्त दिया भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ ॥
तीनि अवस्था तीनि गुण तेहि कपास ते काढ़ि ।
तूल तुरीय सवाँरि पुनि बाती करै सुगाढ़ि ॥

सो० यहिबिधि लेसै दीप तेज राशि बिज्ञान मय ।
जातहिं तासु समीप जरहिं मदादिक शलभसब ॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा । दीपशिखा सोइ परम प्रचंडा ॥
आतमअनुभव सुख सुप्रकाशा । तब भवमूल भेद भ्रम नाशा ॥
प्रबल अविद्या कर परिवारा । मोहआदि तम मिटै अपारा ॥
तब सोइ बुद्धि पाइ उजियारा । उरगृह बैठि ग्रन्थि निरवारा ॥
छोरन ग्रन्थि पाव जो सोई । तब यह जीव कृतारथ होई ॥
छोरत ग्रन्थि जानि खगराया । बिघ्न अनेक करै तब माया ॥
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई । बुद्धिहिं लोभ देखावै जाई ॥
कलबल छलकरिजाइ समीपा । अंचल बाति बुझावै दीपा ॥
होइ बुद्धि जो परम सयानी । तिन्हतनचितवनअनहितजानी ॥
जो तेहिबिघ्न बुद्धि नहिंबाधी । तौ बहोरि सुरकरहिं उपाधी ॥
इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना । जहं तहं सुर बैठे करि थाना ॥
आवत देखहिं बिषय बयारी । ते हठि देहिं कपाट उघारी ॥
जब सो प्रभंजन उर गृह जाई । तबहिं दीप बिज्ञान बुझाई ॥
ग्रन्थिनछूटि मिटा सोप्रकाशा । बुद्धिबिकलभइ बिषय बताशा ॥
इन्द्रिय सुरन्ह न ज्ञान सुहाई । बिषय भोग पर प्रीति सदाई ॥
बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी । तेहि बिधि दीपक बारबहोरी ॥

दो० तब फिरि जीव बिबिध बिधि पावै संसृतिक्लेश ।
हरिमाया अति दुस्तर तरिन जाइ बिहंगेश ॥

दो॰ कहत कठिनसमुझत कठिन साधनकठिनबिवेक ।
होइ घुणक्षर न्यायजो पुनि प्रत्यूह अनेक ॥
ज्ञानकिपन्थ कृपाण कि धारा । परत खगेश न लागै बारा ॥
जो निर्बिघ्न पंथ निर्वहई । सो कैवल्य परम पद लहई ॥
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद । सन्तपुराण निगमआगमबद ॥
राम भक्ति सो मुक्ति गुसाईं । अनइच्छित आवै बरिआईं ॥
जिमिथलबिनुजलरहिनसकाई । कोटिभांति कोउ करै उपाई ॥
तथा मोक्ष सुख सुन खगराई । रहिन सकै हरिभक्ति बिहाई ॥
अस बिचारि हरि भक्त सयाने । मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने ॥
भक्ति करत बिनु यतन प्रयासा । संसृति मूल अविद्या नासा ॥
भोजन करिय तृप्त हितलागी । जिमिसोअन्नपचेउजठरागी ॥
अस हरिभक्तिसुगम सुखदाई । को अस मूढ़ न जाहि सुहाई ॥
दो॰ सेवक सेब्य प्रभाव बिनु भव न तरिय उरगारि ।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धान्त बिचारि ॥
जो चेतन कहं जड़करै जड़हि करै चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनाथ कहं भजहिं जीव ते धन्य ॥
कहेउँ ज्ञान सिद्धान्त बुझाई । सुनहु भक्ति मणिकीप्रभुताई ॥
राम भक्ति चिन्तामणि सुंदर । बसै गरुड़ जाके उर अंतर ॥
परम प्रकाश रूप दिन राती । नहिंकछुचहियदियाघृतबाती ॥
मोह दरिद्रनिकट नहिंआवहि । लोभबातनहिंताहिबुझावहि ॥
प्रबल अविद्या तम मिटिजाई । हारत सकल शलभ समुदाई ॥
खलकामादि निकटनहिं जाहीं । बसै भक्तिमणि जेहिउरमाहीं ॥
गरल सुधासम अरिहितहोई । तेहिमणिबिनुसुखपावन कोई ॥
ब्यापहिं मानस रोग न भारी । जेहिकेबश सबजीव दुखारी ॥
रामभक्ति मणि उर बस जाके । दुख लवलेश न सपनेहुं ताके ॥
चतुर शिरोमणि तेजग माहीं । जे मणिलागिसुयतनकराहीं ॥
सो मणियदपि प्रकटजगअहई । रामकृपाबिनु कोउ नलहई ॥

सुगम उपाइ पाइबे केरे । नरहत भाग्य देत भट भेरे ॥
पावन पर्वत वेद पुराना । राम कथा रुचि राकर नाना ॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी । ज्ञान विराग नयन उर गारी ॥
भाव सहित जो खोदै प्रानी । पाव भक्ति मणिसब सुखखानी ॥
मोरे मन प्रभु अस बिश्वासा । रामते अधिक राम करदासा ॥
राम सिन्धु घनसज्जनधीरा । चन्दन तरुहरि सन्त समीरा ॥
सबकर फल हरि भक्तिसुहाई । सोबिनु सन्त न काहू पाई ॥
असबिचारि जो करुसतसंगा । राम भक्तितेहिसुलभ बिहंगा ॥

दो० ब्रह्मपयोनिधि मन्दर ज्ञान सन्त सुर आहि ।
कथा सुधामति काढ़हीं भक्ति मधुरता जाहि ॥
बिरतिचर्मअसि ज्ञानमद लोभमोह रिपुमारि ।
जय पाईसोइ हरिभगति देखखगेश बिचारि॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । जो कृपाल मोहिं ऊपर भाऊ ॥
नाथ मोहिं निज सेवक जानी । अष्ट प्रश्न ममकहहु बखानी ॥
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा । सबते दुर्लभ कवन शरीरा ॥
बड़ दुखकवन कवन सुखभारी । सो संक्षेपहि कहहु बिचारी ॥
सन्त असन्त मर्म तुमजानहु । तिन्हकरसहजसुभावबखानहु ॥
कवनपुण्यश्रुतिबिदितबिशाला । कहहु कवन अघपरमकराला ॥
मानस रोग कहहु सब गाई । तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई ॥
तात सुनहु सादर अति प्रीती । मैं संक्षेप कहौं यह नीती ॥
नर समान नहिंकवनिहुं देही । जीव चराचर याचत जेही ॥
नरक स्वर्ग अपवर्ग न सेनी । ज्ञान विराग भक्ति सुखदेनी ॥
सोतनु धरिहरिभजहिं नजेनर । होय विषयरत मन्दमन्दतर ॥
कंचन कांच बदलि शठ लेहीं । करते डारि परस मणिदेहीं ॥
नहिं दरिद्र सम दुखजग माहीं । सन्तमिलनसमसुखकछुनाहीं॥
पर उपकार बचन मन काया । सन्तसहजसुभाव खगराया ॥
सन्तसहहिं दुखपरहित लागी । परदुख हेतु असन्त अभागी ॥

भुरजातरुसम सन्त कृपाला । परहितसहनितबिपतिबिशाला ॥
सन इवखल परबंधनकरहीं । खालकढ़ाइबिपति सहिमरहीं ॥
खलबिनु स्वारथ परउपकारी। अहि मूषकइव सुनु उरगारी ॥
परसम्पदाविनाशिनशाहीं । जिमिकृषिहतिहिमउपलबिलाहीं ॥
दुष्ट उदय जग आरति हेतू । यथा प्रसिद्ध अधम ग्रहकेतू ॥
सन्तउदय सन्तत सुखकारी । विश्वसुखद जिमि इन्दुतमारी ॥
परम धर्मश्रुतिबिदितअहिंसा । परनिंदा सम अघ न गिरिसा ॥
हरि गुरु निन्दक दादुर होई । जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥
द्विजनिंदकबहुनरकभोगकरि । जग जन्मैं बायस शरीरधरि ॥
सुर श्रुति निंदकजोअभिमानी । रौरव नरक परहिं तेप्रानी ॥
होहिं उलूक सन्त निन्दारत । मोहनिशा प्रियज्ञान भानुगत ॥
सबकीनिन्दा जो जड़ करहीं । ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
सुनहु तात अब मानस रोगा । जेहिते दुखपावहिं सबलोगा ॥
मोह सकलब्याधिन करमूला । तेहितेपुनि उपजहिं बहुशूला ॥
काम बात कफ लोभ अपारा । क्रोधपित्त नित छाती जारा ॥
प्रीति करहिं जो तीनों भाई । उपजै सन्निपात दुखदाई ॥
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना । तेसब शूल नामको जाना ॥
ममता दद्रु कण्डु इरषाई । कुष्ठ दुष्ट तामस कुटिलाई ॥
अहंकार जो दुखद डहरुआ । दम्भकपट मदमान नहरुआ ॥
तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी । त्रिबिधिईर्षणा तरुण तिजारी ॥
युगबिधिज्वर मत्सरअविवेका । कहंलगि कहौं कुरोग अनेका ॥

दो० एक ब्याधिते नर मरहिं येअसाध्य बहुब्याधि ।
सन्तत पीड़हिंजीवकहं सोकिमिलहहिंसमाधि ॥
नेम धर्म आचार तप ज्ञान यज्ञ जपदान ।
भेषज पुनिकोटिन्ह करहिं रुजनजाहिं हरियान ॥

यहिबिधि सकलजीवजगरोगी । शोकहर्षभय प्रीति बियोगी ॥
मानस रोग कछुक मैं गाये । हैं सबकेलखि बिरलन्हिपाये ॥

जाने तें छीजहिं कछु पापी । नाश न पावहिं जनपरितापी ॥
बिषय कुपन्थ पाइ अंकुरे । मुनिन्ह हृदय का नर बापुरे ॥
राम कृपा नाशहिं सब रोगा । जो इहि भांति बनै संयोगा ॥
सदगुरु बैद्य बचन बिश्वासा । संयम यह न बिषय कीआशा ॥
रघुपति भक्ति सजीवन मूरी । अनूपान श्रद्धा मति रूरी ॥
इहिबिधि भले कुरोग नशाहीं । नाहिंतोयतन कोटिनहिंजाहीं ॥
जानियतबयह बिरुजगोसाईं । जबउरबल बिरागअधिकाईं ॥
सुमति क्षुधा बाढ़ै नित नई । बिषय आश दुर्बलता गई ॥
बिमल ज्ञानजलपाइ अन्हाई । तबरहु रामभक्ति उरछाई ॥
शिवअजशुकसनकादिकनारद । जोमुनिब्रह्म बिचारबिशारद ॥
सबकर मत खग नायक एहा । करिय रामपद पंकज नेहा ॥
श्रुति पुराण सदग्रंथ कहाहीं । रघुपति भक्तिबिनासुखनाहीं ॥
कमठ पीठ जामहिं बरुबारा । बंध्यासुत बरु काहुहि मारा ॥
फूलहि नभ बरु बहुबिधिफूला । जीवनलहसुखप्रभुप्रतिकूला ॥
तृषा जाइ बरु मृग जलपाना । बरुजामहिं शशशीशबृषाना ॥
अन्धकार बरु रबिहि नशावै । राम बिमुखसुखजीवन पावै ॥
हिमते प्रकट अनल बरु होई । बिमुख रामसुख पावन कोई ॥

दो० बारिमथे बरु होइ घृत सिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरिभजननभवतरिय यहसिद्धांत अपेल ॥
मशकहिकरहिंबिरंचि प्रभुअजहिंमशकतेहीन ।
असबिचारि तजिसंशय रामहिंभजहिंप्रवीन ॥

कहेउं नाथ हरिचरितअनूपा । ब्याससमास स्वमतिअनुरूपा ॥
श्रुति सिद्धांत इहै उर गारी । रामभजिय सब काम बिसारी ॥
प्रभु रघुपति तजिसेइयकाही । मोसे शठ पर ममता जाही ॥
तुम बिज्ञान रूप नहिं मोहा । कीन्ह नाथ मोपरअतिछोहा ॥
पूंछेउ रामकथा अति पावनि । शुकसनकादिशम्भुमनभावनि ॥
संत संगति दुर्लभ संसारा । निमिष दण्ड भरि एकोबारा ॥

देखु गरुड़ निजहृदयबिचारी । मैं रघुबीर चरण अधिकारी ॥
शकुनाधम सबभांतिअपावन । प्रभुमोहिंकीन्हविदितजगपावन

दो० आजु धन्य मैं धन्यअति यद्यपि सब बिधिहीन ।
निजजन जानिराममोहिं संग समागम दीन ॥
नाथ यथा मति भाषेउं राखेउं कछु नहिंगोय ।
चरित सिन्धु रघुनाथकर थाह कि पावै कोय ॥

सुमिरि रामके गुणगणनाना । पुनिपुनिहर्ष भुशुण्ड सुजाना ॥
महिमा निगमनेति कहिगाई । अतुलित बलप्रताप प्रभुताई ॥
शिव अजपूज्य चरण रघुराई । मोपर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस सुभाव कहुंसुनौंनदेखौं । केहिखगेश रघुपति समलेखौं ॥
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी । कबिकोबिद बिरक्त संन्यासी ॥
योगी सुर अरु तापस ज्ञानी । धर्म निरत पण्डित बिज्ञानी ॥
तरहिं न बिनु सेयेममस्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥
शरण गये मोसेउ अघ राशी । होहिंशुद्ध नमामि अविनाशी ॥

दो० जासु नाम भवभेषज हरण घोर त्रयशूल ।
सोकृपालमोहिंतोहिंपर सदारहहिंअनुकूल ॥
सुनि भुशुण्डके बचन बर देखि राम पदनेह ।
बोले गरुड़ सप्रेम अति बिगत मोहसन्देह ॥

मैं कृत कृत्य भयउं तव बानी । सुनि रघुबीर भक्ति रससानी ॥
राम चरण नूतन रति भई । माया जनित बिपति सबगई ॥
मोह जलधिबोहिततुमभयऊ । मोकहंनाथ बिबिध सुखदयऊ ॥
मो सन होइ न प्रत्युप कारा । बन्दौं तव पद बारहिं बारा ॥
पूरण काम राम अनुरागी । तुमसमतात न कोउबड़भागी ॥
संत बिटपसरिता गिरधरणी । परहितहेतु इन्हनकी करणी ॥
संत हृदय नवनीत समाना । कहा कबिनपै कहिनहिंजाना ॥
निज परिताप द्रवै नवनीता । परदुखद्रवहि सुसन्त पुनीता ॥
जीवन जन्म सुफलममभयऊ । तवप्रशाद सबसंशय गयऊ

जानेहु मोहिं सदानिजकिंकर । पुनिपुनि उमाकहै सुविहंगवर ॥

दो० तासुचरण शिरनाइकरि प्रेम सहितमति धीर ।
गरुड़ गयो वैकुंठतब हृदय राखि रघुबीर ॥
गिरिजासंत समागम सम न लाभ कछुआन ।
बिनु हरि कृपा होइ नहिं गावहिं वेद पुरान ॥

कहेउं परम पुनीत इतिहासा । सुनत श्रवणछूटहिं भवपासा ॥
प्रणात कल्पतरु करुणा पुंजा । उपजै प्रीति राम पद कंजा ॥
मनबच कर्म जनित अघजाई । सुनै जो कथा श्रवण मनलाई ॥
तीर्थ अटन साधन समुदाई । योग बिराग ज्ञान निपुणाई ॥
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना । संयम नियम यज्ञ जप नाना ॥
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई । विद्या विनय बिवेक बड़ाई ॥
जहं लगि साधन वेद बखानी । सबकरफल हरि भक्तिभवानी ॥
सोइ रघुनाथ भक्ति श्रुतिगाई । राम कृपा काहू यक पाई ॥

दो० मुनिदुर्लभहरिभक्ति नर पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि बिश्वास ॥

सोइ सर्वज्ञ गुणी सोइ ज्ञाता । सोइ महि मंडन पण्डित दाता ॥
धर्म परायण सोइ कुलत्राता । रामचरण जाकर मन राता ॥
नीतिनिपुण सोइपरम सयाना । श्रुति सिद्धांत नीक तेइ जाना ॥
सोइकवि कोविदसोइरणधीरा । जो छल छांड़ि भजै रघुबीरा ॥
धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी । धन्य सो देश जहां सुरसरी ॥
धन्य सो भूप नीति जो करई । धन्य सो द्विजनिज धर्म नटरई ॥
सोधनधन्य प्रथम गतिजाकी । धन्य पुण्यरतिमति सोइजाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा । धन्य जन्म द्विज भक्तिअभंगा ॥

दो० सो कुलधन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत ।
श्रीरघुबीर परायण जेहि नर उपज बिनीत ॥

मति अनुरूप कथा मैं भाखी । यद्यपि प्रथम गुप्तकरि राखी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई । तब मैं रघुपति कथा सुनाई ॥

यहनहिंकहियशठ हिहठशीलहि । जोमनलाइनसुनहरिलीलहि ॥
कहियनलोभिहिक्रोधहिकामिहिं जोनभजैसचराचरस्वामिहिं ॥
द्विजद्रोहिहि न सुनाइय कबहूं । सुरपतिसरिस होइनृप जबहूं ॥
राम कथाके ते अधिकारी । जिनके सतसंगतिअतिप्यारी ॥
गुरु पद प्रीति नीतिरत जोई । द्विज सेवक अधिकारी सोई ॥
ताकहं यह बिशेष सुखदाई । जाहि परम प्रिय श्रीरघुराई ॥

दो० राम चरण रति जो चहै अथवा पद निर्वान ।
भाव सहित जो यहकथा करै श्रवण पुटपान ॥

राम कथा गिरिजा मैं बरणी । कलिमल शमनमनोमलहरणी ॥
ससृति रोग सजीवन मूरी । रामकथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
इहि महंरुचिर सप्त सोपाना । रघुपति भक्तिकेर पथनाना ॥
अतिहरि कृपा जाहिपर होई । पांवदेइ यहि मारग सोई ॥
मन कामना सिद्ध नर पावै । जोयहकथा कपट तजिगावै ॥
कहहिंसुनहिं अनुमोदनकरहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥
सुनि सबकथा हृदय अतिभाई । गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथकृपा मम गत संदेहा । राम चरण उपजा नव नेहा ॥

दो० मैं कृत कृत्य भयउं अब तव प्रसाद बिहंगेश ।
उपजी राम भक्ति दृढ़ बीते सकल कलेश ॥

यह शुभ शंभु उमा सम्वादा । सुखदसदा अरुशमनविषादा ॥
भव भंजन गंजन सन्देहा । जन रंजन सज्जन प्रिययेहा ॥
राम उपासक जे जगमाहीं । इहिसमप्रियतिनकहंकछुनाहीं ॥
रघुपतिकृपा यथा मति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
इहि कलिकाल न साधन दूजा । योग यज्ञजप तप व्रतपूजा ॥
रामहिं सुमिरियगाइय रामहिं । सन्ततसुनियरामगुणग्रामहिं ॥
जासु पतित पावन बड़बाना । गावहिंकविश्रुतिसन्तपुराना ॥
ताहिभजिय तजिमन कुटिलाई । रामभजे केहिंगति नहिंपाई ॥

छं० पाई नगति केहिपतित पावनरामभजुसुनु शठमना ॥

गणिका अजामिल गृद्ध व्याध गजादि खलतारेघना ॥
आभीर यमन किरात खलश्वपचादि अतिअघरूपजे ।
कहि नामबारेकतेपि पावन होत राम नमामिते ॥
रघुबंशभूषण चरितयहनरकहहिं सुनहिं जेगावहीं ।
कलिमलमनोमलधोइ बिनुश्रम रामधाम सिधावहीं ॥
शतपंच चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं ।
दारुण अविद्या पंच जनित बिकारश्रीरघुपतिहरैं ॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथपर कर प्रीतिजो ।
सो एकराम अकाम हित निर्वाणपदसम आनको ॥
जाकी कृपा लव लेशते मतिमंद तुलसीदासहूं ।
पायो परम बिश्राम राम समान प्रभु नाहींकहूं ॥
दो० मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघुबीर ।
अस विचारि रघुबंश मणि हरहु बिषम भवपीर ॥
कामिहिंनारिपियारि जिमि लोभिहिं प्रिय जिमिदाम ।
ऐसे होइकै लागहू तुलसी के मन राम ॥

इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसनेबिमलवैराग्य
सम्पादनोनामसप्तमस्सोपानः ॥

इति

——※——

अथआरतीश्रीरामायणजीकी ॥

आरति श्री रामायणजीकी । कीरतिकलितललितसियपीकी ॥
टेक॥गावतब्रह्मादिकमुनिनारद । वालमीकि बिज्ञानबिशारद ॥
शुकसनकादि शेष अरु शारद । बरणिपवनसुतकीरतिनीकी १
संतत गावत शम्भु भवानी । औ घटसंभव मुनिवरज्ञानी ॥
व्यास आदि कविपुंग बखानी । काकभुशुण्डि गरुड़केहीकी २
चारिउ वेद पुराण अष्ट दश । छइउशास्त्रसबग्रन्थनिकोरस ॥
तन मन धन संतनको सर्बस । सारअंश सम्मत सबहीकी ३
कलिमलहरणि बिषयरसफीकी । सुभगशिंगार मुक्तियुवतीकी ॥
हरणि रोग भव भूरि अमीकी । तातमात सबबिधितुलसीकी४

श्लोक ॥

यःपृथ्वीभरवारणायदिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः ।
संजातःपृथिवीतलेरविकुले मायामनुष्योऽव्ययः ॥
निश्चक्रं हतराक्षसः पुनरगा द्ब्रह्मत्वमाद्यंस्थिरा ।
कीर्तिम्पापहरांविधायजगतांतंजानकीशंभजे १ ॥
यत्पूर्वंप्रभुनाकृतंसुकबिना श्रीशम्भुनादुर्गमं ।
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्नोतुरामायणं ॥
मत्वातद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशांतये ।
भाषाबद्धमिदंचकारतुलसीदासस्तथामानसं २ ॥
पुण्यम्पापहरंसदासुखकरं बिज्ञान भक्ति प्रदं ।
मायामोहभवापहंसुबिमलं प्रेमाम्बुपूरंशुभम् ॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये ।
तेसंसारपतंगघोर किरणैर्दह्यन्तिनोमानवा ः ३ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीरामचंद्रकेचतुर्दशवर्षबनबासकीजंत्री ॥

विश्वामित्रके साथ श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी श्रीअ-
योध्याजीसे जाकर ऋषिका यज्ञसम्पूर्णकरके सहित विश्वा-
मित्र और लक्ष्मणजीके मिथिलापुरमें गयेवहां राजाजनककी
यज्ञशालामें धनुर्भंगकिया और श्रीजानकीजीने जयमाल श्री
रामचन्द्रजीके गलेमें डाली तबराजाजनककी आज्ञानुसार दो
दूत श्रीअयोध्याजीमें दशरथ महाराजके पासजाकरसर्ववृत्तांत
धनुष तोड़ने और जानकीजीके जयमाल पानेकाकहसुनाया ॥
उस दिनतक १५ पंचदशदिन श्रीरघुनाथजीकोसहित लक्ष्म-
णा और विश्वामित्रके श्री अयोध्यासे गये व्यतीत हुयेथे और
श्रीरामचन्द्र और जानकीजीका विवाह हिमऋतु अगहनमास
शुक्लपक्ष पञ्चमीतिथि वृश्चिकके सूर्य और मीनलग्न में
हुआ विवाहके समय १५ वर्षके श्रीरघुनाथजी और ६ वर्षकी
जानकीजी थीं और विवाह के पीछे श्रीअयोध्याजी में श्री
रामचन्द्रजी ने १२ वर्ष निवास करके सहित जानकी और
लक्ष्मणजीके वनको पयान किया ॥

नीचे लिखीहुई जंत्रीश्रीमद्रामचरित्रकीहै इसमें वे चरित्र जोभगवान्
ने चतुर्दश वर्ष बनवास में किये वे तबदिनोंकी संख्या से लिखे हैं

(१) श्रीरामलक्ष्मण और जानकीजीने श्रीअयोध्याजीसे गमन करके तीनदिन
जलमात्र पानकिया तब श्रीरामजीकीआयु२७ वर्ष और जानकीजीकी१८वर्षकीथी ॥

(२) चतुर्थदिवस रामलक्ष्मण और जानकीजीने शृंगबेर पुर में पहुँचकर
फल खाये ॥

(३) पांचवेंदिन राम लक्ष्मण जानकी श्रीगंगाजी पार उतरकर भरद्वाज तथा

बाल्मीकिजीको मिलकर चित्रकूट पहुंचे और जयन्तका नेत्र भंगकिया और वहां कुछ दिन निवास किया॥

(४) रामलक्ष्मण जानकी चित्रकूट से चलकर विराधबध शरभंग सुतीक्ष्ण से मिल अगस्त आज्ञानुसार पंचबटी में पहुंचकर १२ वर्ष निवास किया और १३ वर्ष के प्रारम्भ में शूर्पणखाकी नाक छीनकर खरदूषण को मारा॥

(५) माघ शुक्ल८केदिन श्रीजानकीजी को मध्याह्न समय रावण हर लेगया॥

(६) पांचवें मास श्रीराम लक्ष्मणजी ने मारीच बधकर श्रीजानकी जीके विरह में जटायू का उद्धारकर कबन्धमार शवरी की सद्गतिदे अषाढ़ महीने में सुग्रीव को मिले॥

(७) ४ मासतक श्रीराम लक्ष्मणजी ने बालि को मारकर सुग्रीव को राज्य दे प्रवर्षण पर्वतपर निवास किया॥

(८) मार्गशिर में कृष्ण ११ को हनुमान् बानरों सहित सीताजीको खोजते २ बिवर प्रवेश करके सिन्धु तटपर पहुंचे वहां सम्पाति से सीताकी सुधिपाय सिन्धु फांद पार पहुंचे॥

(९) मार्गशिर कृष्ण १३ को श्रीहनुमान् ने श्रीजानकीजीको मिल मुद्रिका दे अशोकबन उजारा॥

(१०) मार्गशिर कृष्ण १४ को हनुमान्जी अक्षयकुमारादि राक्षसमार लंकादाह करके सीताजीसे चूड़ामणिले सिन्धुको उतर अपना सेना में आये॥

(११) मार्गशिर शुक्ल ६ को हनुमान्जी सेना सहित समुद्र तट से पयान का पांचदिन मार्ग में व्यतीतकर किष्किन्धा में पहुंचे॥

(१२) मार्गशिर शुक्ल ७ को हनुमान्जीने श्रीरामचंद्रजी को प्रणामकर चूड़ामणि दे सीता सुध कह सुनाई श्रीजानकी जी के हरजाने के १० मास पीछे फिर श्रीरामचंद्रजीने सुधपाई॥

(१३) मार्ग शुक्ल ८ को श्रीरामचंद्रजीने सेना सहित मध्याह्न समय उत्तराफाल्गुणिनक्षत्र में लंकाकी ओर पयान किया॥

(१४) मार्गशिर १५ पूर्णमासी को श्रीरामादि सातदिन मार्ग में रहकर समुद्र तटपर पहुंचे॥

(१५) पौषबदीकृष्ण १ से ३ तक श्रीरामादि सेनाने समुद्रतीरपर निवासकिया॥

(१६) पौषबदी कृष्ण ४ को श्रीविभीषण जी श्रीरामजी की शरण आये॥

(१७) पौषबदी ५ से ८ तक श्रीरामचंद्रजी समुद्र के आगे विनय करते रहे॥

(१८) पौषबदी ९ को विप्ररूप सिन्धु श्रीरघुनाथजी की शरण आया॥

(१९) पौषबदी १० को सेतु बांधने का प्रारम्भ किया और १० दश योजन लम्बा तिस दिन बांधा॥

(२०) पौषबदी ११ के दिन बीस योजन सेतु बांधा॥

(२१) पौषबदी १२ के दिन तीस योजन सेतुबांधा ॥

(२२) पौषबदी १३ के दिन चालीस योजन सेतु बांधा सब १०० योजन और १० योजन चौड़ा सेतु तयार किया ॥

(२३) पौषकृष्ण १४ से शुक्ल २ तक श्रीरघुनाथजी सब सेना समेत सिन्धु पार उतरे इस सेना में अठारह पद्म यूथ पति थे ॥

(२४) पौषसुदि ३ से १० तक श्रीरघुनाथजीने लंकाको घेरलिया ॥

(२५) पौषसुदि ११ कोशुक सारणमंत्रीरावणके श्रीरघुनाथजीकीसेनादेखनेआये॥

(२६) पौष सुदि १२ को श्रीरघुनाथजीने अपनी सेनाको चार अनी किया और इस दिन श्रीरघुनाथजीने एक बाण से रावण के मुकुट और छत्र मन्दोदरि के कर्ण भूषण पृथ्वी पर गिरादिये ॥

(२७) पौषसुदि १३ से १५ तक रावणकी सेना सन्नद्धबद्ध हुई ॥

(२८) माघबदि १ को अंगदजी लंकामें जाय रावण को बहुत समझाय फिर रघुनाथजीके पास आये ॥

(२९) माघबदि २ से ६ तक श्रीराम रावण दोनों की सेनाका महायुद्ध हुआ और मेघनादने नागफांस डाली ॥

(३०) माघबदि १० को गरुड़ नागफांस काट निजलोक को गये ॥

(३१) माघबदि ११ से १२ तक बहुत युद्ध होकर धूम्रलोचन दैत्य मारागया॥

(३२) माघबदि १३से अमावस तक नीलादि दैत्य मारे गये ॥

(३३) माघसुदि १ से ४ तक रावण बानरोंसे लड़कर लंकाको चलागया ॥

(३४) माघसुदि ५ से ८ तक रावण ने अपने भ्राता कुम्भकर्ण को जगाया ॥

(३५) माघसुदि ९ से १४ तक कुम्भकर्ण श्रीरघुनाथजी से लड़ता रहा और अन्तको मारागया ॥

(३६) माघसुदि १५को रावण कुम्भकर्णके मारेजानेसे शोकवालाहो नहींलड़ा ॥

(३७) फाल्गुन बदि १ से ५तक श्रीरामजीने नारान्तकादि दैत्योंका बधकिया ॥

(३८) फाल्गुनबदि ५से८तक बहुतदैत्यरावणकेश्रीरघुनाथजीके हाथसेमारेगये ॥

(३९) फाल्गुनबदि८से१३तकश्रीरघुनाथजीकेहाथसे कुम्भनिकुम्भ दैत्यमारेगये ॥

(४०) फाल्गुन बदि १४ से शुक्ल २तक जुमक दैत्य सेना दैत्योंकीसेना सहित श्रीरामजीके हाथ से कालवश हुआ ॥

(४१) फाल्गुन सुदि ३ से १३ तक श्रीलक्ष्मणजीने मेघनाद को बध किया ॥

(४२) फाल्गुन सुदि १४ को रावण ने पुत्रके शोकमें युद्ध नहीं किया ॥

(४३) फाल्गुन १५ पूर्णमासीको रावण समर भूमिमें लड़ने को आया ॥

(४४) चैत्रबदी १ से ८ तक रावण ने श्रीरघुनाथजी से बहुत युद्ध किया और सब सेनापति मृत्यु को प्राप्त हुये ॥

(४५) चैत्रबदि ६ लक्ष्मणजी रावण के हाथसे शक्ति लगने से मूर्च्छित होगये इसीदिन श्रीहनुमान्‌जीके सञ्जीवनलाने से लक्ष्मणजी सचेत हुये ॥

(४६) चैत्रबदि १० रावण और रघुनाथजीका बहुत युद्ध हुआ ॥

(४७) चैत्रबदि ११ श्रीरघुनाथजीके वास्ते इंद्र रथलाया ॥

(४८) चैत्रबदि १२ श्रीरामजी रथारूढ़ होकर समर भूमिमें आये ॥

(४९) चैत्रबदि १२ से १४ तक श्रीरघुनाथजीने रावण की बहुत सेना और दैत्योंके समेत बध किया और १८ रोज रावण लड़कर कालवश हुआ ॥

(५०) चैत्रशुदि १५ रावणका शरीर दाह किया गया ॥

(५१) बैशाख बदि १ को श्रीरमादिने शत्रुबध होनेसे बहुत उत्साह किया और इंद्रसे अमृत मँगवाकर मृत्य हुये बानरों को जीवित किया ॥

(५२) बैशाख बदि २को लक्ष्मणजीने श्रीरघुनाथजीकी आज्ञानुसार बिभीषणको राजतिलक लंकामें जाकर बड़े उत्साह से दिया ॥

(५३) बैशाख बदि ३ को श्रीसीताजी ने श्रीरामजीकी आज्ञानुसार अग्नि में प्रवेश किया और जानकी १४ मास १० दिन लंका में रहीं ॥

(५४) बैशाख बदि ४ को श्रीरघुनाथजीने जानकीजी और लक्ष्मणजी और हनुमदादिसहित बिमानारूढ़हो श्रीअयोध्याजीकी ओर गमन किया ॥

(५५) बैशाख बदि ५ को श्रीरामजी सहित समाज के प्रयागराज में आये ॥

(५६) बैशाखबदि ६ को श्रीरामजी सहित समाज नन्दीग्राम में श्रीभरतजी के पास आये बड़े आनन्द हर्ष से भेंटे और १४ वर्ष बनबास के ब्यतीत हुये ॥

(५७) बैशाखबदि ७ को श्रीमन्महाराजाधिराज रघुनाथजी समेत श्रीजानकीजीके सिंहासन पर बैठे तब आयु श्रीरामचंद्र की ४१ बर्ष की और जानकी जीकी ३२ बर्ष की थी ॥

(१) भाद्रपद ६ नवमी को श्रीजानकीजीके गर्भहुआ ॥

(२) चैत्र द्वादशी १२ को लक्ष्मणजी श्रीरघुनाथजीकी आज्ञानुसार श्रीसीताजी को बनमें छोड़ आये तब सप्तमासका गर्भ था ॥

(३) आषाढ़ ६ नवमी लवकुश जन्मे ६६६ वर्ष श्रीजानकीजी बनबास रहीं और ११००० वर्ष श्रीराजाधिराज रामचंद्र ने राज्य किया ॥

यह जंत्री श्रीरामचन्द्र बनयात्रा दिनावलि रामभक्तों वा सज्जनों के वास्ते भक्तजनोद्धारक श्रीगुरुजी महाराज श्रीयुत पंडित श्रीरामजी कपूरथला निवासी की कृपासे श्रीमत्पंडित मुरारीरामजीके पुत्र मिश्र गंगाराम संगर ब्राह्म कपूरथला निवासीने संग्रह किया ॥

———

श्री गणेशायनमः ।

सप्तदेवस्तुति

—*—

...स्तुति आरती ॥

...कट दूर करो तुम मेरो जि सिर वित मखीशा ।
जै... ईश । (टे) विघन निवारन काज सँवारन तुम सबके सुखदाता ।
ज...न दुखभञ्जन हो शिव गौरी ताता (१) एकदन्त करि
व...हावे मूसे असवारी । ऋद्धि सिद्धि दोउ सहित विराजे
छ... अतुलित भारी (२) इन्द्रादिक सब देवन पूजैं गणनाचैं
भी । तूर्य ढोल मृदंग बजावैं जैजै बलबीरा (३) तुमसम दीन
द...न कोई वेग कृपा करियो । रामगंग इक शरण तुम्हारी
स... सब हरियो (४) जै लंबोदर ईशा ॥

सूर्यस्तुति आरती ॥

जै रजनी तमहारी । जड़ चेतन के प्राण अधारा तीनलोक
हितकारी (टेक) नीलवर्ण वरबाजि विशाला रथको राज
... ज्योतिस्वरूप अनूप दिवाकर शोभा अमितलहे (१) कानन
...ड़ल जगमगछाजे ज्योति कलाचहुँओरा । सुन्दरबदन सदन
... मङ्गल मनभिज मनचोरा (२) गणेश महेश करैं गुणगाना
...न्दन धूपसजैं । अगरु कपूर सुहावत बाती मेरी बीन बजैं (३)
...गर्जियारक मोहनिशि घालक प्रकटप्रभावखरो । रामगङ्गपै
...पाकर स्वामी हियतम नाशकरो (४) जै रजनी तमहारी ॥

दुर्गास्तुति आरती ॥

जै जननी सुख दैनी । मङ्गल करणि अमङ्गल हरणि तप
... (टेक) शुक्लवर्ण अरुण तन वस्त्र भूषण भरि
...निश्रेनी

...। नर... [illegible] ...सम वारि... मृगमन ...
बेंदीभाल जाल मणिमाला नाक बुलाक लसे ...
सुनि मुनि मनमोहे धीरज ध्यान नसे (२) नूपुधुनि
विराजे असुर संहार करे । रक्त बीज सम नीच ...
सकल दरे (३) सुरेश महेश अंत नहिँ पावैं ... महि...
बनी । जग करणी इक क्षण में हरर... गया ॥ ...
जानु युगल कर जोर करतहूं बिनती ... बहुत ...
सुधि जनि भूलो निजहियवरमाहीं (५) जै जननी ... है ॥

शिवस्तुति आरती ॥

जै गिरिजा हितकारी । जटा जूट गल रुंडन माल...
शिरधारी (टेक) श्वेत वर्ण तन भस्मलसतहै मृगअंबरधा...
भूषण भूरि भुजग छवि छाई सहित उमा प्यारी (१) ...
त्रिनयन भाल शशि बालक आनन पांचबने । भानु कोटि...
बदन सुहावन भृकुटी धनुष तने (२) करधर डमरु त्रि...
त्रिशूला बाहन वरदतरे । भूत प्रेत संहिसेन अपारा भयंकर...
धरे (३) ब्रह्मादिक सुर असुरन नागा अस्तुति वेदकरे ...
लक डमरूडफ धुनि झांझर जैभव ईशहरे (४) हे जगदी...
ईश्वर स्वामी प्रभुतुम अन्तर यामी । रामगङ्ग स्वत्वे जनिभू...
अति मूरख कामी (५) जै गिरिजा हितकारी ॥

महावीरस्तुति आरती ॥

जै अञ्जनी सुतबीरा । बल प्रताप जग रेख तुम्हारी प्रथ...
रणधीरा (टेक) रक्तवर्ण तरुणातन तेजा गिरिसम देहलसे
गमन दमन मद चलन खगेशा वलनिधि असुर खसे (१) रवि
को फल भल जानयो ताहि कियो भक्षा । देवन ग्राहि करी
छांड्योवेगकरीरक्षा(२)लछमणमूर्छितपरे रणमाहींरघुवर
कभरे । लाये सजीवनजीवनकीनो देवन दुगन मारे (३) रा...



…र्केचतुर्दश … थी।

श्रीग…

को फल भल जानयो …

छांड्योवेगकरीरक्षा(२)लछमणमूर्छितपरे रणमाहींरघुबर

कभरे। लाये सजीवनजीवनकीनो देवन सुमन झारे (३) रा…